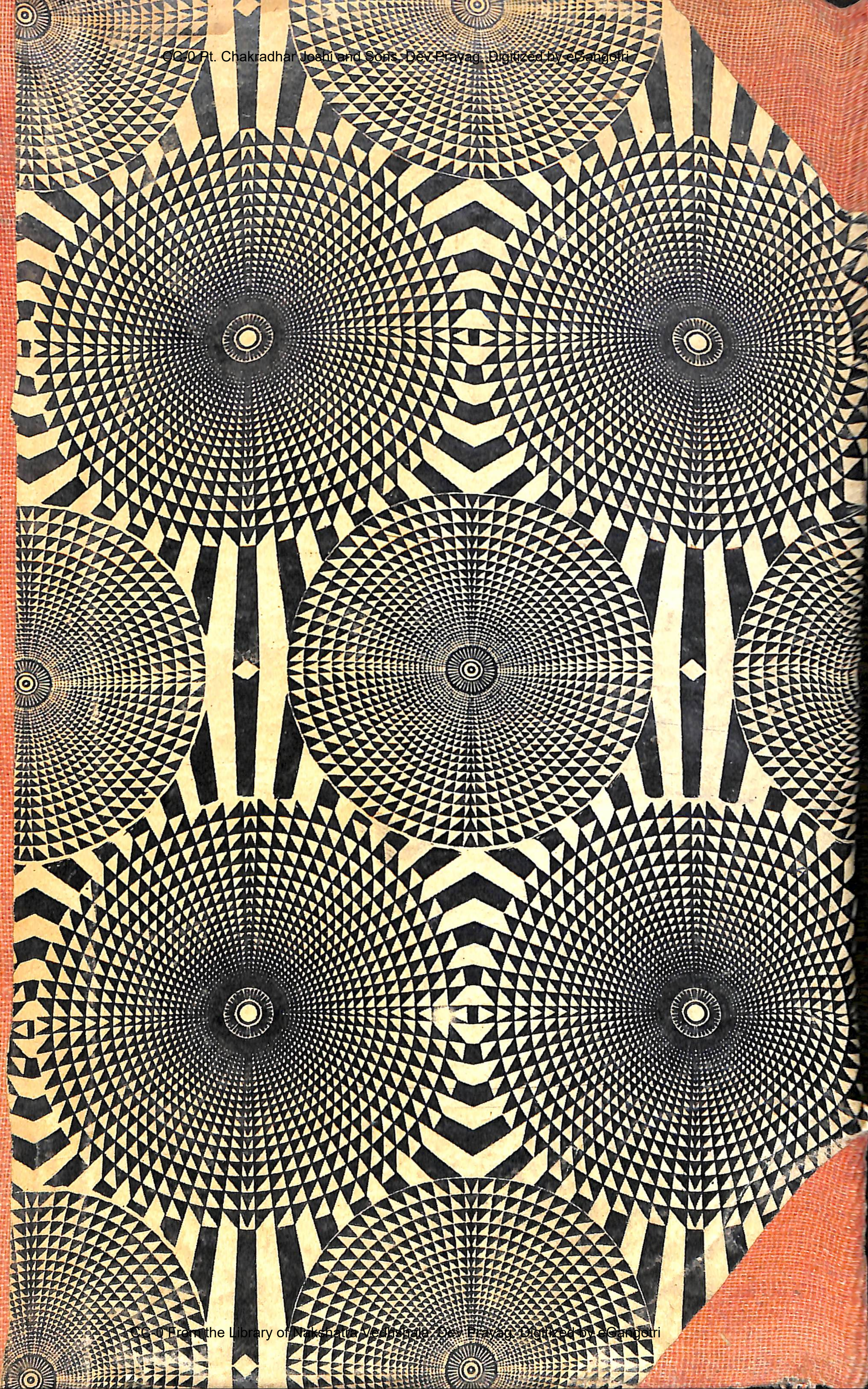


इसपुस्तकमेंमदायेसत्

५)

...वादि ग्राह मे मनुको व दस्मामाताम सिद्धाकियाहै ४७ २५७

...पृ. देवनिवासस्थान २७४ पृ. नयपुरीनामावेराणीकी

...वानते सिद्धहोनो ३७८ शिवप्रदोषव्रतनिन्दा शिवपुराण

...पुराणोवैराणीनिन्दा २८८ पृ. नाथोंकीनिन्दाहै ३८४ पृ.

...रोजस्तुति २९३ ब्रह्मसमाजनिन्दा ३६५ भावतनिन्दाहै

...दुर्गानिन्दा ३६२ महाभारतस्वीकारकियाहै ११९।१।७८

...पी ... जाताहै॥ भगवादिस्वतन्त्रकी स्तुति ८६ पंक्तिः२

...तेरा ... पं. ... दातं ३५ ... ७८ पितापुत्रको

... १३२।१९ ... १३८।१२८ मनुस्मृ

...४७ गोगधी १४८ गोमारणा १४८।१३।३ जलतेसमेत

... १३।४ अतिमादि सिद्धि है १३८ । संध्याकाध्यानकरे

...आह संध्यानहिहै १३। पं४

जी

अक्षयनिधि
सरकारी
वान्
साद

वरन्
र उसे

से ऊपर
है।

निम्न

की तरफ
लिये दे
था।
वान् के

मन्दिरों
ण आदि

वाले फाटक
दे में आपकी

की रसीद का
अवश्य लिखें।

दर समिति

अथसत्यार्थप्रकाश

———०००———

श्रीस्वामीदयानंदरचित

श्री राजा जयकृष्णदास बहादुर सी एस आई

की

आज्ञाऽनुसार

मुनशी हरिवंशलाल के अधिकार से इस्टार

प्रेस महल्लः रामापुर में छापी गई ॥

सन १८७५ ई०

बनारस



लीबार १००० पुस्तकें   मोल फ़ीपुस्तक ३)

निवेदन १

यहपुस्तकश्रीस्वामीदयानंद सरस्वती नेमेरे व्ययसेरचीहै श्र
मेरे ही व्ययसे यह मुद्रित हुईहै उक्त स्वामी जीने इस्का रच
धिकारमुझकोदेदियाहै औरउस्कामैंअधिष्ठाताहूं औरमेरीओर
इसपुस्तककी रजिष्टरीकानून २० सन १८४७ ई०केअनुसार हु
है सिवायमेरेवामेरीआज्ञाके इसपुस्तककेछापने काकिसीकोअधि
कारनहींहै

द० श्रीराजाजयकृष्णदासबहादुर सी एस आ

निवेदन २

जिसपुस्तकके आदिऔरअंतमे मेरेहस्ताक्षर और मोहरनहीं श
चोरीकीहै औरउस्का क्रयविक्रयनहीहोसक्ता

द० श्रीराजाजयकृष्णदासबहादुर सी एस आ

निवेदन ३

इसपुस्तकके पाठकोंसेमेरीयह बिनयपूर्वकप्रार्थनाहै किइसग्रंथके छ
पवानेसेमेराअभिप्राय किसीबिशेषमतकेखंडनमंडन करनेकानहीं
किन्तुइस्का मुख्यप्रयोजनयहहै किसज्जनऔर बिद्वानलोगइस्को
पक्षपातरहित होकरपढें और बिचारें औरजिनबिषयोंमेउनकोद
यानन्द स्वामीके सिद्धांतोंमेसम्मतिनहोउनबिषयोंपरअपनीअनुम
तिप्रबल प्रमाणपूर्वकलिखेंजिससेधर्मकानिर्णय औरसत्या सत्यकी
बिवेचना होसुखसेशास्त्रार्थकरनेमें किसीबातकानिर्णय नहीं
परन्तु लिखनेसेदोनोंपक्षोके सिद्धांतज्ञातहोजातेहैं औरसत्य
कानिर्णयहोजाताहै इसलिये आशाहै किसबपंडित औरमह
पुरुषइस्कीयथावत समालोचनाकरैंगें औरयहनसमझैंगे कि
कोकिसी बिशेषमतकी निन्दा अभिप्रेत हो छापनेमेंशीघ्रत
रण इसग्रंथमेंबहुत अशुद्धता रहगयीहैं आशाहैपाठक ग य
अपराधकोक्षमा करेंगे

अथसत्यार्थ प्रकाशकासूचीपत्र प्रारंभः प्रथमसमुल्लास

यह पूर्वार्ध का सूचीपत्र समाप्त हुआ इस
केआगे उत्तरार्द्धकासूचीपत्र किया जाताहै

शुद्धपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	१२	मिदं	मिदञ्चं
४	२७	साम	नाम
२६	१६	श्रष्ट	श्रेष्ठ
५२	२४	धर्मान्नप्रम दितव्यं	धर्मान्न प्रमदितव्यं भूत्यै नप्रमदितव्यं
७९	१५	जगदीशी	जागदीशी
९७	६	शत्रुओं	शत्रुओंसे
११६	०	बेष्या	बेश्या
१३५	७	गृस्थ	गृहस्थ
१५३	५	गार्मी	गार्गी
१५५	२१	अपध्येय	अपने
१६५	१७	अल्पान्नव्य वदूसकाश्र र्थकूटगय सो शुद्धवालोपं क्तीमे लोखा है	अल्पान्न भोजनएकान्त स्थानमे वास इन्होंसे विषयोमे प्रवर्त्त भई इन्द्रियोकानिवर्त्त करदे
१६७	२	अहिंसमे	अहिंसये
१७०	१४	अहिंस	हिंसा
१७९	१९	बीच्ययय	बीच्य
२१९	१७	विद्याकि कोका	विद्यादिकोंका
२२४	१३	अणनामा	अप्रमाणनाम
२२३	२	होभीजातेहै	पृथक्भीवेहोजातेहैं
२३३	१५	परमेश्वरके	सदापरमेश्वरके
२३५	१५	क्षतससमा	क्षतकंसमा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३६	३	अभिमा	अणिमा
२३६	२७	दोषण	दोष
२३९	२७	सगीरसे	सरीरीसे
२४४	२	हृतं	हृतछं
२४४	२	एसे	ऐसेछं
२४८	२४	पश्या	यस्य
२५०	२५	नवित	नवनीत
२५१	२४	तुपर	तूप
२७२	१५	नही	नहीहोता
२७३	२३	लिंगक	लिंगके
२७४	२०	भयसा	भयछंसा
२८०	१०	अवेगा	आवेगा
२८०	२७	सुख	सुखवा
२८५	१४	साकिल्य	साकल्ये
२८५	२६	प्रतिघन	प्रतिमं
२८६	१३	होवै उत्तम	होवै उत्तमसेउत्तम
२८८	२१	कुस्तु	कुस्ती
२८८	२६	रा	राजा
२८८	२७	हतेहै	होतेहैं
२८९	३	चयो	अस्थये
२९१	७	पागा	पायो
२९२	२७	अकाश	आकाश
२९३	२१	पाल	पहिले
२९४	१०	जवमे	जीवमे
२९४	१९	मरणका	मरणकाजो
३०३	१	होक्तीहै	होसक्तीहै

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३०३	६	वैला	वैलादिक
३०३	१६	होतीन	होतीनही
३०४	१०	मलि	मेलि
३०५	६	कान्या	कान्य
३०५	२५	आचारण	आचरण
३०८	१२	विध्येस्याय	विधास्यामः
३१२	१२	करणेलगे	करनेलगे
३१४	२०	वेदादिकौक	वेदादिकोंके
३२२	७	दशमे	देशमे
३२२	८	दरिद्रमे	दरिद्रसे
३२२	८	वरतप्रता	वर्त्तकेप्रताप
३३२	१	घातककन्या	घातकन्या
३३६	५	भयकेरहनेसे	भयकेकरणेसे
३३६	२०	खंडनही	क्योखण्डननही
३३७	१०	निलगा	निकलेगा
३४२	६	ऐकचक्र	एकचक्र
३४२	११	संस्तार:	संस्काराः
३४४	१३	यागी	योगी
३४६	१३	यावत्पातति	यावत्पतति
३४६	१६	लंग्रा	फलंग्रा
३४८	२२	मुद्रादीक	मुद्रादिक
३५२	२५	दर्श	दर्शन
३५५	२६	हिलनेका	हलनेका
३६२	२७	किरीकी	किसीकी
३६३	६	पुराणादिक केआगेछूटगया	

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
		सोलिखाहैशुद्ध	
		पंक्तीसे	श्रौरसबतंत्रग्रंथ
३६४	४	फरऐसा	फेरऐसा
३६४	२५	पुषना	पूछना
३७०	१४	लिख	लिखैगो
३७३	८	देशलोक	देवलोक
३८५	२५	श्रौर	श्रौरघुमायाकरै
३८५	२६	यरेदिन	योरेदिन
३९२	१०	सवगएथे	सबहोगयेथे
०	१९	सासदा	सोसदा
३९४	१६	मनमसे	मनसे
४०१	११	कसी	ऐसी
४०२	१७	अन्याजहै	अन्यायहै
०	१९	मतलके	मतलबकी
४०३	६	मन:	तत:

अथ सत्यार्थप्रकाश ॥

ओ३म्० शन्नोमित्र: शम्बरुण: शन्नोभव त्वर्यमा शन्नइन्द्रो बृहस्पति: शन्नो विष्णुरुरुक्रम: नमोब्रह्मणे नमस्ते वायोत्वमेव प्रत्यक्षम्ब्रह्मासित्वा मेवप्रत्यक्षम्ब्रह्मवदिष्यामि ऋतम्वदिष्यामि सत्यम्वदिष्यामि तन्मामवतु तद्वक्तारमवत्व वतुमामवतु वक्तारम् ओ३म् शान्ति श्शान्तिश्शान्ति: ॥ १ ॥

ओ३म्। यह जो ॐकार सो बहुत उत्तम परमेश्वर का नाम है क्योंकि तीन जे अ उ और म् अक्षर इसमें हैं वे सब मिलके एक ओम् अक्षर हुआ है इस एक अक्षर से बहुत परमेश्वर के नाम आते हैं जैसे अकार से विराट् अग्नि और विश्व इत्यादिकों का ग्रहण किया है उकार से हिरण्यगर्भ वायु और तैजसादिकों का ग्रहण किया है। मकार से ईश्वर आदित्य और प्राज्ञादिकों का वेदादिक शास्त्रों में स्पष्ट व्याख्यान किया है ये सब नाम परमेश्वरहीं के हैं जो कोई ऐसा कहै कि परमेश्वर से भिन्न अर्थों का ग्रहण क्यों नहीं होता है उस्से पूछना चाहिए कि विराट् और अग्नि इत्यादिक जितने नाम हैं वे सब मनुष्य पृथिव्यादिक भूत देवलोक में रहने वाले जे देव और वैद्यकशास्त्र

में शुंथ्यादिकों के भी लिखे हैं और वे परमेश्वर के भी नाम हैं इन सभों में आप किन का ग्रहण करते हैं जो आप कहैं कि हमतो देवों का ग्रहण करते हैं अच्छा तो आप के ग्रहण करने में क्या प्रमाण है देव सब प्रसिद्ध हैं और वे उत्तम भी हैं इस्से मैं उन का ग्रहण कर्ता हूं मैं आप से पूछता हूं कि परमेश्वर क्या अप्रसिद्ध है और परमेश्वर से कोई उत्तम भी है जो आप इस प्रमाण से उन का ग्रहण कर्तै हैं और परमेश्वर तो कभी अप्रसिद्ध नहीं होता है उस के तुल्य कोई नहीं है तो उत्तम कैसे कोई होगा इस्से यह आप का कहना मिथ्याही है आपके कहने में बहुत से दोष भी आवेंगे जैसे कि भोजन के लिये भोजन करने का पदार्थ किसी ने किसी के पास प्रीति से रखके कहा कि आप भोजन करैं और वह उसको त्याग के अप्राप्त भोजन के लिए जहां तहां भ्रमण करै उसको बुद्धिमान न जानना चाहिए क्योंकि वह उपस्थित नाम समीप आया जो पदार्थ उसको छोड़ के अनुपस्थित नाम अप्राप्त जो पदार्थ उस्की प्राप्ति के लिए श्रम कर्ता है इसी से वह पुरुष बुद्धिमान नहीं है ॥ किञ्च । उपस्थितं परित्यज्य अनुपस्थितं याचतइति बाधितन्यायः । वैसाही आप का कथन हुआ क्योंकि उन नामों के जे उपस्थित अर्थ मनुष्य शुंथ्यादिक औषधियों का परित्याग आप कर्तै हैं और अनुपस्थित जे देव उनके ग्रहण में आप श्रम कर्तै हैं इसमें कुछ भी प्रमाण वा युक्ति नहीं है और जो आप ऐसा कहैं कि जहां जिसका प्रकरण है वहां उसी का [illegible] योग्य है जैसे किसी को कहा कि सैन्[illegible] [illegible] [illegible] उसको समय का [illegible]

जो गमन समय में लवण को लेआवै और भोजन समय में घोड़े को ले आवै तब उसका स्वामी उसपर क्रुद्ध होके कहेगा कि तूं निर्बुद्धि पुरुष है क्यों कि गमन समय में लवण का क्या प्रयोजन है और भोजन समय में घोड़े का क्या प्रयोजन है जहां जिसको लेआना चाहिये वहां उसको क्यों तूं नही ले आया इस्से तूं मूर्ख है मेरे पास से चला जा इस्से क्या आया कि जहां जिस का ग्रहण करना उचित होय वहां उसी का ग्रहण करना योग्य है यह बात तो आपने अच्छी कही कि ऐसाही जानना चाहिए और करना भी चाहिए हम लोगों को जहां जिसका ग्रहण करना उचित है वहां उसी का ग्रहण करना चाहिए कि। ओमित्येतदक्षरमुद्गीथ मुपासीत। यह छान्दोग्य उपनिषद का बचन है और॥ ओमित्येतदक्षरमिदम् सर्वन्तस्योपव्याख्यानम्। यह मांडूक्य उपनिषद का बचन है॥ ओ३म्खम्ब्रह्म। यह यजुर्वेद की संहिता का बचन है॥ ब्रवीम्यो मेतत्। यह कठोपनिषद का बचन है॥ प्रशासितारंसर्वेषा मणी यांसमणोरपि। रुक्माभंस्वप्नधीगम्यं विद्यात्तंपुरुषम्परम्॥ एतम ग्निम्वदन्त्येके मनुमन्येप्रजापतिम्। इन्द्रमेकेपरेप्राण मपरेब्रह्म-शाश्वतम्॥ ये दोनों मनुस्मृति के श्लोक हैं। सब्रह्मासविष्णु स्सरुद्रस्सशिवस्सोऽक्षर स्सपरमस्स्वराट्सइन्द्र स्सकालाग्निस्सचन्द्र मा: इत्यादिक कैवल्योपनिषद के बचन हैं। अग्निमीडेपुरोहि तं यज्ञस्यदेवमृत्विजम्। होतारंरत्नधातमम्॥ यह ऋग्वेद की आदि ... का मन्त्र है॥ भूरसिभूमिरस्यदितिरसिविश्वधायाविश्व प्राज्ञादिकों का वद।। ...वीं यच्छपृथिवीं दृंहपृथिवीं माहिंसी: सब नाम परमेश्वरही के है ... से भिन्न अर्थों का ग्रहण क्यों नहीं हो... ...का मन्त्र है। ...पूछना चाहिए कि विराट् और अग्नि इत्यादिक जितने नाम हैं वे सब मनुष्य पृथिव्यादिक भूत देवलोक में रहने वाले जो देव और वैद्यकशास्त्र

मन्त्र है इत्यादिक प्रकरणों में इन वचनों से और इन के ठीक ठीक अर्थों के जानने से परमेश्वरही का ग्रहण होता है क्योंकि ओंकार और अग्न्यादिक नामों के मुख्य अर्थसे परमेश्वर काही ग्रहण होता है निरुक्त व्याकरण और कल्प सूत्रादिक ऋषि मुनियों के किये व्याख्यानों से वैसेही ब्रह्मादिकों के किए संहि-तात्रों के शतपथादिक ब्राह्मण वेदों के व्याख्यान से भी और छः शास्त्रों में भी परमेश्वर का ग्रहण देखने में आता है उन नामों के अर्थों से और उसी तरह के विशेषणों से भी परमेश्वर का ग्रहण होता है और का नहीं होता इस्से क्या आया कि जहां जहां प्रार्थना स्तुति सर्वज्ञादि विशेषण और उपासना लिखी है वहां वहां परमेश्वर काही ग्रहण होता है यह सिद्ध हुआ और जहां २ ऐसे प्रकरण हैं कि॥ ततोविराडजायत विराजो अधिपूरुषः श्रोत्राद्वायुश्चप्राणश्च मुखादग्निरजायत। तस्माद्देवाऽअजायन्त पश्चाद्भूमिमथोपुरः॥ ये सब वचन यजुर्वेद को संहिता के हैं॥ तस्माद्वा एतस्मादा त्मनआकाशस्संभूतः। आकाशाद्वायुः वायोरग्निः अग्ने रापः अद्भ्यःपृथिवी पृथिव्याओषधयः ओषधिभ्यो अन्नम् अन्नात्पुरुषः सवाएषपुरुषोऽन्नरसमयः। यह तैत्तिरोयो पनिषद् का बचन है॥ इत्यादिक प्रकरणों में विराट् इत्यादिक नामों से परमेश्वर का ग्रहण किसी प्रकार से भी नहीं होता क्योंकि परमेश्वर का जन्म और मरण कभी नहीं होता है। इस्से इसी प्रकार के प्रकरणों में विराट् इत्यादिक नामों से और जन्मादिक विशेषणों से भी परमेश्वर का ग्रहण शिष्टलोगों को कभी न करना चाहिये विराट् इत्यादिक नामों का अर्थ कर्ता हूं जिस्से इन नामों से परमेश्वर का ग्रहण हो॥ रा-जृदीप्तौ इस धातु से विराट् शब्द सिद्ध होता है। विविधन्नाम चराचरञ्जगत् राजते नाम प्रकाशते सविराट् विविध अर्थात् बहु प्रकार के जगत् को जो प्रकाश करै उका साम विराट् है

अञ्चुगतिपूजनयोः । इस धातु से अग्नि शब्द सिद्ध होता है ॥ गतेस्त्रयोऽर्थाः ज्ञानंगमनम्प्राप्तिश्चेति पूजनन्नामसत्कारः अञ्चति अच्यतेवासोऽयमग्निः । जो ज्ञान स्वरूप सर्वज्ञ जानने प्राप्ति होने और पूजा के योग्य है उसका नाम अग्नि है ॥ विशप्रवेशने इस धातु से विश्व शब्द सिद्ध होता है ॥ विशंतिसर्वाणिभूतानि आकाशादीनियस्मिन्सविश्वः । प्रवेश करते हैं सब आकाशादिक भूत जिसमें उसका नाम विश्व है इत्यादिक नाम अकार से लिये जाते हैं ॥ हिरण्यन्तेजसो नाम हिरण्यानि सूर्यादीनितेजांसि गर्भेयस्य सहिरण्यगर्भः । अथवा हिरण्यानां सूर्यादीनान्तेजसाङ्गर्भः हिरण्यगर्भः । हिरण्यगर्भ शब्द का यह अर्थ है कि जिस्से सूर्यादिक तेज वाले पदार्थ उत्पन्न होके जिसके आधार रहते हैं उसका नाम हिरण्यगर्भ है अथवा सूर्यादिक तेजों का जो गर्भ नाम निवास स्थान उसका नाम हिरण्यगर्भ है इसमें यह यजुर्वेद का मन्त्र प्रमाण है ॥ हिरण्यगर्भःसमवर्त्तताग्रे भूतस्यजातःपतिरेकआसीत् । सदाधारपृथिवींद्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषाविधेम ॥ इत्यादिक मन्त्रों से परमेश्वर काही ग्रहण होता है ॥ वागतिगन्धनयोः । इस धातु से वायु शब्द सिद्ध होता है ॥ गन्धनंहिंसनं वातिसोऽयंवायुः चराचरञ्जगद्धारयतिवासवायुः । जो चराचर जगत् का प्रलय करै अथवा धारण करै और सब बलवानों से बलवान होय उसी का नाम वायु है ॥ तिजनिशाने इस धातु से तैजस शब्द सिद्ध होता है जो अपने से आपही प्रकाशित होय और सूर्यादिक तेजों का प्रकाश करने वाला होय उसका नाम तैजस है इत्यादिक नामों का उकार से ग्रहण होता है । ईशऐश्वर्ये इस धातु से ईश्वर शब्द सिद्ध होता है ईष्टेअसौईश्वरः सर्वैश्वर्यवान् योभवेत् सईश्वरः । जो सत्यविचारशील नाम सत्य जिसका ज्ञान है अनन्त जिसका ऐश्वर्य है उसका नाम ईश्वर है ॥ दोऽवखण्डने । इस धातु से दिति शब्द

सिद्ध होता है अवखण्डनन्नामविनाशः । उससे क्तिन् प्रत्यय करने से दिति शब्द सिद्ध होता है दिति किसका नाम है कि जिसका विनाश होता है उससे नवनञ् समास हुआ तब अदिति शब्द हुआ अदिति नाम जिसका कभी नाश न होय । जो अदिति है वही आदित्य है ज्ञा अवबोधने धातु है उससे प्राज्ञ शब्द सिद्ध हुआ प्रकृष्टश्चासौज्ञश्चप्रज्ञः प्रज्ञएवप्राज्ञः जो ज्ञानी और सब ज्ञानियों से उत्तम ज्ञानवान् है उसका नाम प्राज्ञ है प्रजानाति वा चराचरञ्जगत् सप्रज्ञः प्रज्ञएवप्राज्ञः सब पदार्थों को यथावत् जो जानता है उसका नाम प्राज्ञ है जैसा कि परमेश्वर का ओंकार उत्तम नाम है वैसा कोई भी नहीं इसका बहुत थोड़ा अर्थ किया गया है क्योंकि ओंकार की व्याख्या मे और बहुत से अर्थ लिये जाते हैं यह ॐकार वा नव नामों से अर्थ तो किया गया वे नव नाम परमेश्वर केही हैं और इस मन्त्र में जितने मित्रादिक नाम हैं उन का अर्थ अब आगे किया जाता है क्योंकि जो प्रार्थना स्तुति और उपासना होती है सो श्रेष्ठही की होती है श्रेष्ठ जो अपने से गुणो में और सत्य सत्य व्यवहारों में अधिक है सोई श्रेष्ठ होता है उन सब श्रेष्ठों में भी परमेश्वर अत्यन्त श्रेष्ठ है क्योंकि परमेश्वर के तुल्य कोई भी न हुआ न है और न होगा जो तुल्य नहीं तो अधिक कैसे होगा कभी न होगा क्योंकि परमेश्वर के न्याय दया सर्वसामर्थ्य और सर्वज्ञान इत्यादिक अनन्त गुण हैं और वे सर्वदा सत्यही हैं इससे सब मनुष्य लोगों को प्रार्थना स्तुति और उपासना परमेश्वरही की करनी चाहिये परमेश्वर से भिन्न किसी की कभी न करनी चाहिये ब्रह्मा विष्णु महादेवादिक देव और दैत्य दानवादिक भी परमेश्वरही में विश्वास कर्त्ते हैं उसी की प्रार्थना स्तुति और उपासना कर्ते हैं और किसी की भी नहीं कर्ते इसका बिचार अच्छी रीति से उपासना और मुक्ति के

विषय में लिखा जायगा पूर्वपक्ष मित्रादिक नामों से सखा और इन्द्रादिक देवों के प्रसिद्ध व्यवहार देखने से उन का ग्रहण करना चाहिये उत्तरपक्ष उन का ग्रहण करना योग्य नहीं क्योंकि जो किसी का मित्र है वही और का शत्रु भी है और किसी से उदासीन भी वह देखने में आता है परमेश्वर तो सब जगत् का मित्रही है और कोई से उदासीन भी नहीं इस से जो व्यवहार में किसी का मित्रहोने किसी का शत्रुहोने और किसी से उदासीन होने से उसका ग्रहण करना योग्य नहीं इस में महाभाष्य के वचन का प्रमाण भी है। प्रधानाप्रधानयोः प्रधाने कार्यसम्प्रत्ययः गौणमुख्ययोर्मुख्येकार्यसम्प्रत्ययः ॥ इसका अर्थ यह है कि प्रधान और अप्रधान गौण और मुख्य के बीच मेंसे प्रधान और मुख्यही का ग्रहण होता है जैसे कि किसी से किसी ने पूंछा कि यह कौन जाता है उसने उस्से कहा कि राजा जाता है इसमें बिचार करना चाहिये कि राजा के साथ बहुत से भृत्य हाथी घोड़े और रथ भी जाते थे परन्तु राजा के सामने उनका ग्रहण नहीं भया न होता है न होगा किंतु राजाही का हुआ क्योंकि प्रधान और मुख्य के सामने अप्रधान और गौणों का ग्रहण नहीं होता है वैसेही जो परमेश्वर सभों में प्रधान और सभों मे मुख्यही है मित्र शत्रु और उदासीन किसी काभी नहीं इसी से परमेश्वरही का मित्रादिक शब्दों से ग्रहण करना उचित है। वृञ्वरणे वरईप्सायाम् ॥ इन दो धातुओं से वरुण शब्द सिद्ध होता है वृणोतिसर्वान्शिष्टान् मुमुक्षून्मुक्तान्धर्मात्मनोयस्सवरुणः। अथवा व्रियतेशिष्टैः मुमुक्षुभिः मुक्तैः धर्मात्मभिः यः सवरुणः परमेश्वरः अथवा वरयतिशिष्टादीन् वर्यते वा शिष्टादिभिः सवरुणः परमेश्वरः जो वृणोति नाम स्वीकार कर्ता है शिष्ट मुमुक्षु और धर्मात्माओं को उसका नाम वरुण है सो वरुण नाम परमेश्वर का है। व्रियते नाम शिष्टादिक जिसका

स्वीकार कर्ते हैं उसका नाम वरुण है अथवा वरयति नाम जो सब को प्राप्त हो रहा है उसका नाम वरुण है वर्यते नाम और जो सब श्रेष्ठ लोगों को प्राप्त होने के योग्य होय उसका नाम वरुण है और यह भी अर्थ होता है कि वरुणो नाम वरः वरो नाम श्रेष्ठः जो सभों से श्रेष्ठ होय उसका नाम वरुण है वैसा परमेश्वरही है और दूसरा कोई भी नहीं। ऋगतिप्रापणयोः इस धातु से अर्यमा शब्द सिद्ध होता है जो सभों के कर्मों की यथावत् व्यवस्था को जाने और पाप पुण्य करने वालों को यथा वत् पाप और पुण्यों की प्राप्ति का सत्य सत्य नियम करै उसी का नाम अर्यमा है इदि परमैश्वर्यं इस धातु से इन्द्र शब्द की सिद्धि होती है इन्दति परमैश्वर्यवान् योभवति सइन्द्रः जिसका परम ऐश्वर्य होय उससे अधिक किसी का भी ऐश्वर्य न होवै उसका नाम इन्द्र है वृहत् शब्द है इसके आगे पति शब्द का समासहै। वृहतामहतामाकाशादीनांपतिःसवृहस्पतिः। जो बड़ों से भी बड़ा और सब आकाशादिक और ब्रह्मादिकों का जो स्वामी है उसका नाम वृहस्पति है। विष्लृव्याप्तौ॥ इस धातु से विष्णु शब्द सिद्ध हुआ है। विवेष्टिनामव्याप्नोतिचराचरञ्ज गत्सविष्णुः उरु नाम महान् क्रमः पराक्रमोयस्यसउरुक्रमः जो सब जगत् में व्यापक होय उरुक्रम नाम अनन्त पराक्रम जिस का है उसका नाम उरुक्रम वही विष्णु है वृहवृहिवृद्धौ। इन धातुओं से ब्रह्म शब्द सिद्ध होता है जो सबके ऊपर बिराजमान होय और सब से बड़ा होय उसका नाम ब्रह्म है वायु का अर्थ तो ओंकार के अर्थ से किया है वहीं जान लेना चाहिये शम् नाम है सुखका और कल्याण का भी नः यह पद से हम सब लोगों का ग्रहण होता है हे परमेश्वर ओंकारादिक जितने नाम हैं वे आपही के हैं आप प्रत्यक्षही ब्रह्म हैं। त्वामेवप्रत्यक्ष ब्रह्मवदिष्यामि॥ आपही को मैं प्रत्यक्ष ब्रह्म कहूंगा प्रत्यक्ष नाम

सब जगह में आप नित्यही प्राप्त हो ऋतम्बदिष्यामि । आप की जो यथार्थ आज्ञा है उसी को मैं कहूंगा और उसी कोही मैं करूंगा सत्यम्बदिष्यामि । और सत्यही कहूंगा और करूंगा भी तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु । ऐसा जो मैं आपकी आज्ञा को कहने वाला और करने वाला मेरी आप रक्षा करैं और उस आज्ञा से मेरी बुद्धि विरुद्ध न होय । उसी आज्ञा को मैं जो कहने वाला उसी आज्ञा से मैं विरुद्ध कभी न कहूं क्योंकि जो आप की आज्ञा है धर्म रूपोही है जो उससे विरुद्ध सो अधर्म है उसी आज्ञा को कहूं और करूं भी वैसी आप कृपा करैं जब मैं उस आज्ञा को यथावत कहूंगा और करूंगा भी तब उस का मुख्य फल यही है कि आप की प्राप्ति का होना अवतुमाम-वतुवक्तारम् । यह फिर जो दूसरी बार पाठ है मन्त्र में वह आदर के वास्ते है जैसे कि किसी ने किसी से कहा त्वंग्रामङ्-च्छगच्छ । यह कहने से क्या जाना जाता है कि तूं ग्राम को शीघ्रही जा वैसेही दूसरी बार पाठ से आप मेरी अवश्यही रक्षा करैं और ॐशान्तिश्शान्तिश्शान्तिः । यह जो तीन बार पाठ है उसका अभिप्राय यह है कि अध्यात्मताप जो शरीर में रोगा-दिकों से होता है दूसरा शत्रु व्याघ्र और सर्पादिकों से जो होता है उसका नाम आधि भौतिक है तीसरा ताप वह है कि वृष्टि का अत्यन्त होना और कुछ भी वृष्टि का न होना अति शीत वा उष्णता का होना उसका नाम आधि दैविक ताप है हम लोगों की यह प्रार्थना है कि जगत के तीनों तापों की निवृत्ति आप की कृपा से होजाय भवान्शन्नोभवतु । आप हम लोगों के अर्थात सब संसार के कल्याण करने वाले हो आप से भिन्न कोई भी कल्याण कारक अथवा कल्याण स्वरूप नहीं है इससे आप सेही प्रार्थना है कि सब जीवों के हृदय में आपही आप प्रकाशित होवैं इस मन्त्र का संक्षेप से अर्थ पूर्ण होगया और

आगे अन्य नामों के भी अर्थ लिखे जाते हैं॥ सूर्यआत्माजगतस्तस्थुषश्च। यह बचन यजुर्वेद का है जगत नाम प्राणियों का जो कि चलते फिरते हैं तस्थुष अप्राणि नाम स्थावर जे कि पर्वत वृक्षादिक हैं उन सभों का जो आत्मा होय उसका नाम सूर्य है अतसातत्यगमने। धातु है इस्से आत्म शब्द सिद्ध हुआ अततिसर्वत्रव्याप्नोतीत्यात्मा। जो सब जगतमें व्यापक होय उस्का नाम आत्मा है और परश्चासावात्माचपरमात्मा। जो सब जीवात्माओं से श्रेष्ठ होय उसका नाम परमात्मा है ईश्वर नाम सामर्थ्य वाले का है जो सब ईश्वरों में परम श्रेष्ठ होय उस्का नाम परमेश्वर है ब्रह्मादिक देवों में एक से एक ऐश्वर्यवाला है जैसा कि मनुष्यों में एक से एक ऐश्वर्यवाला है वैसेही ब्रह्मादिक देवों में जो सब से श्रेष्ठ होय और चक्रवर्त्त्यादिक राजाओं से परम नाम श्रेष्ठ होय उसका नाम परमेश्वर है जो सब ईश्वरों का ईश्वर होय और जिसके तुल्य ऐश्वर्यवाला कोई भी न होय उसी का नाम परमेश्वर है षुञ्अभिषवे षूङ्प्राणिगर्भविमोचने। इन दो धातुओं से सविता शब्द सिद्ध होता है॥ अभिषवःउत्पादनम् प्राणिगर्भविमोचनञ्च। सुनोति सूते वा उत्पादयति चराचरञ्जगत्ससविता। जो सब जगत् की उत्पत्ति करै उसका नाम सविता है॥ दिवुक्रीड़ाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु॥ इस धातु से देव शब्द की सिद्धि होती है। दीव्यतिसदेवः॥ दीव्यति नाम स्वयं जो प्रकाश स्वरूप होय और जो सब जगत को प्रकाश कर्ता है इस्से परमेश्वर का नाम देव है॥ क्रीडतेसदेवः क्रीड़ते नाम अपने आनन्द से अपने स्वरूप में आपही जो क्रीड़ा को करै अथवा क्रीड़ा मात्र से अन्य की सहायता के बिना जगत् को क्रीड़ाकी नाईं जो रचै वा सब जगत् के क्रीड़ाओं का आधार जो होय इस्से परमेश्वर का नाम देव है॥ विजिगीषतेसदेवः विजिगीषते

नाम सब का जीतनेवाला और आपतो सदा अजेय है जिसको कोई भी न जीतसके इसे परमेश्वर का नाम देवहै व्यवहारयति सदेवः व्यवहारयति नाम न्याय और अन्याय व्यवहारों का जो ज्ञापकनाम उपदेष्टा और सब व्यवहारों का जो आधार भी है इसे परमेश्वर का नाम देव है द्योतयतिनाम। सब प्रकाशों का आधार जो अधिकरण है इसे परमेश्वर का नाम देव है॥ स्तूयतेसदेवः। स्तूयते नाम सब लोगों को स्तुति करने के योग्य होय और निन्दा के योग्य कभी न होय इसे परमेश्वर का नाम देव है॥ मोदयतिसदेवः। मोदयति नाम आप तो आनन्द स्वरूपही है औरों को भी आनन्द करावै जिसको दुःख का लेश कभी न होय इसे भी परमेश्वर का नाम देव है॥ माद्यतिस-देवः। माद्यति नाम आप तो हर्ष स्वरूप होय जिसको शोक का लेश कभी न होय औरों को भी हर्ष करावे इसे भी पर-मेश्वर का नाम देव है॥ स्वापयतिसदेवः। स्वापयति नाम प्रलय में सभों को शयन अव्यक्त में जो करावै इसे परमेश्वर का नाम देव है॥ कामयते काम्यतेवासदेवः। कामयते काम्यते नाम जिसके सब काम सिद्ध होयँ और जिसकी प्राप्ति की कामना सब शिष्ट लोग करैं इसे भी परमेश्वर का नाम देव है॥ ग-च्छतिगम्यतेवासदेवः। गच्छति गम्यते नाम जो सभों में गत नाम प्राप्त होय जानने के योग्य होय उसको कहते हैं देव देव नाम परमेश्वर का है देव शब्द के एकादश अर्थ हैं॥ कुविआ-च्छादने। इस धातु से कुबेर शब्द सिद्ध होता है जो आकाशा-दिकों का आच्छादक है उसका नाम कुबेर है इसे परमेश्वर का नाम कुबेर है॥ पृथुविस्तारे। इस धातु से पृथिवी शब्द सिद्ध हुआ जो सब आकाशादिकों से विस्तृत है उसका नाम पृथिवी है इसे परमेश्वर का नाम पृथिवी है॥ जलप्रतिघाते। इस धातु से जल शब्द सिद्ध होता है॥ प्रतिहन्तिअव्यक्तपरमाण्वादीनिप-

रत्यरंतज्जलम् । जो अव्यक्त से व्यक्त को और एक परमाणु से दूसरे परमाणु को अन्योन्य संयोग और वियोग के वास्ते जो हनन और प्रतिहनन करने वाला होय उसका नाम जल है इस्से परमेश्वर का नाम जल है हनन नाम एक से एक को मिलाना प्रतिहनन नाम दूसरे से तीसरे को मिलाना तीसरे को चौथे से मिलाना जगत की उत्पत्ति समय में सभों का संयोग करने वाला और प्रलय समय में वियोग का करनेवाला वैसा परमेश्वरही है दूसरा कोई भी नहीं ॥ जनीप्रादुर्भावे । लाआदाने इन धातुओं से भी जल शब्द सिद्ध होता है जनयति नाम उत्पादयतिसर्वञ्जगत् तज्जम् लातिगृह्णाति नाम आदत्ते चराचरञ्जगत्तल्लम् जञ्चतल्लञ्चतज्जलम् ॥ ब्रह्म ज शब्द से सभों का जनक और ल शब्द से सभों का धारण करने वाला उसका नाम जल, जल नाम परमेश्वर का है काष्टदीप्तौ । उस्से आकाश शब्द सिद्ध होता है ॥ आसमन्तात् सर्वतः सर्वञ्जगत्प्रकाशतेसआकाशः । जो परमेश्वर सब जगह से और सब प्रकार से सभों को प्रकाशता है इस्से परमेश्वर का नाम आकाश है ॥ अदभक्षणे । इस्से अन्न शब्द सिद्ध होता है ॥ अत्तिभक्षयतिचराचरञ्जगत्तदन्नम् । जो चराचर जगत् का भक्षक है और काल को भी खाके पचा लेता है उसका नाम अन्न है इसमें प्रमाण है ॥ अद्यतेऽत्तिचभूतानि तस्मादन्नन्तदुच्यते । यह तैत्तिरीयोपनिषद् का वचन है ॥ अहमन्नमहमन्नमहमन्नम् अहमन्नादोऽहमन्नादोऽहमन्नादः । यह भी उसी उपनिषद में है ॥ अन्नमत्तीत्यान्नादः । अन्न शब्दसे चराचर जगत् का जो ग्राहक उसका नाम अन्नाद है यह वचन परमेश्वरही का है क्योंकि मैं अन्न हूं मैंहीं अन्नाद हूं तीन बार इस श्रुति में पाठ आदर के वास्ते है जैसे कि त्वंग्रामङ्गच्छगच्छगच्छ । इस्से क्या लिया जाता है कि शीघ्रही तूं ग्राम को जा और कहीं भी ठहरना

नहीं इस प्रकार के व्यवहारों में जो बहुत बार का कहना है सो जैसे अनर्थक नहीं वैसे इसमें भी अनर्थक नहीं इस बिषयमें व्यासजी का सूत्र भी प्रमाण है ॥ अत्ताचराचरग्रहणात्। अत्ता नाम खाने वाले का है उसी का नाम अन्नाद है चराचर नाम जड़ और चेतन सब जगत उसके ग्रहण करने से परमेश्वर का नाम अत्ता और अन्नाद है जैसे कि गूलर के फल में कृमि उत्पन्न होके उसी में रहते हैं और उसी में नाश हो जाते हैं इस्से परमेश्वर का नाम अत्ता अन्न और अन्नाद है वसनिवासे इस धातु से वसु शब्द सिद्ध होता है ॥ वसन्तिसर्वाणिभूतानिय स्मिन्सवसुः। अथवा सर्वेषुभूतेषुयोवसतिसवसुः। सब आकाशादिक भूत जिसमें रहते हैं उसका नाम वसु है अथवा सब भूतों में जो बास कर्ता है उसका नाम वसु है इस्से वसु परमेश्वर का नाम है॥ रुदिर्अश्रुविमोचने। रुदेर्णिलोपश्च इस धातु से और इस सूत्र से रुद्र शब्द सिद्ध होता है ॥ रोदयत्यन्यायकारिणोजनान्सरुद्रः। रोवाता है दुष्ट कर्म करने वाले जीवों को जो उसका नाम रुद्र है इसमें यह श्रुति का भी प्रमाण है ॥ यन्मनसाध्ययति तद्वाचावदति यद्वाचावदति तत्कर्मणाकरोति यत्कर्मणाकरोति तदभिसम्पद्यते । यह यजुर्वेद के ब्राह्मण को श्रुति है इसका यह अर्थ है कि जो जीव मन से विचारता है वही बचन से कहता है उसी को कर्त्ता है और जिस्को कर्ता है उसी कोही प्राप्त होता है ऐसी परमेश्वर की आज्ञा है कि जो जैसा कर्म करै सो वैसाही फल पावै इस आज्ञा को कहने वाला परमेश्वर है उसकी आज्ञा सत्यही है इस्से जो जैसा कर्ता है सो वैसाही प्राप्त होता है इस्से क्या आया कि दुष्ट कर्मकारी जितने पुरुष हैं वे सब दुष्ट कर्मों के फल प्राप्त होके रोदनहीं कर्ते हैं इस कारण से परमेश्वर का नाम रुद्र है नारायण भी नाम परमेश्वर का है ॥ आपोनाराइतिप्रो

का आपोवैनरसूनवः । तायदस्यायनंपूर्वं त्तेननारायणःस्मृतः ॥ यह श्लोक मनुस्मृति का है आप नाम जल का है और नारसंज्ञा भी जलकी है और वे प्राण जलसंज्ञक हैं वे सब प्राण जिसका अयन नाम निवासस्थान है इससे परमेश्वर का नाम नारायण है सूर्य का अर्थ तो कर दिया है ॥ चदिआल्हादे । इस धातु से चन्द्र शब्द सिद्ध होता है ॥ चन्दतिसोयञ्चन्द्रः । जो आल्हाद नाम आनन्द स्वरूप होय और जो मुक्त पुरुष जिसको प्राप्त हो के सदा आनन्द स्वरूपही रहै उस्को दुःखका लेश कभी न होवे इससे परमेश्वर का नाम चन्द्र है ॥ मगिधातुर्गत्यर्थः । मङ्गरलच् इससे मङ्गल शब्द सिद्ध हुआ ॥ मङ्गतिसोयंमङ्गलः । जो आपतो मङ्गल स्वरूपही हैं और सब जीवों के मङ्गल का वही कारण है इससे परमेश्वर का नाम मङ्गल है ॥ बुधअवगमने । इस धातु से बुध शब्द सिद्ध होता है ॥ बुध्यतेसोयंबुधः । जो आप तो बोध स्वरूप होय और सब जीवों के बोधों का कारण होय इससे परमेश्वर का नाम बुध है बृहस्पति का अर्थ प्रथम कर दिया है ॥ ईशुचिरपूतीभावे । इस धातु से शुक्र शब्द सिद्ध होता है शुचिनीम । अत्यन्त पवित्र का जो आपतो अत्यन्त पवित्र होय औरों के पवित्रता का कारण होय इससे परमेश्वर का नाम शुक्र है चरगतिभक्षणयोः । इस धातु से शनैस् अव्यय पूर्व पदसे शनैश्चर शब्द सिद्ध होता है जो अत्यन्त धैर्यवान् होय और सब संसार के धैर्य का कारण होय इससे परमेश्वर का नाम शनैश्चर है रहत्यागे । इस धातु से राहु शब्द सिद्ध होता है जो सब से एकान्त स्वरूप होय जिसमें कोई भी मिला न होय और सब त्यागियों के त्याग का हेतु होय इससे परमेश्वर का नाम राहु है ॥ कित निवासेरोगापनयनेच । इससे केतु शब्द सिद्ध होता है जो सब जगत् का निवासस्थान होय और सब रोगोंसे रहित होय मुमुक्षुओं के जन्म मरणादिक रोगों के नाशका हेतु होय

इससे परमेश्वर का नाम केतु है ॥ यजदेवपूजासङ्गतिकरणदानेषु इस धातु से यज्ञ शब्द सिद्ध होता है ॥ इज्यतेसर्वैर्ब्रह्मादिभिर्जनैस्सयज्ञः । सब ब्रह्मादिक जिसकी पूजा कर्ते हैं उसका नाम यज्ञ है ॥ यज्ञोवैविष्णुरितिश्रुतेः । यज्ञ का नाम विष्णु है और विष्णु नाम है व्यापक का इस श्रुति से भी परमेश्वर का नाम यज्ञ है ॥ हुदानादनयोः । इस धातु से होम शब्द सिद्ध होता है ॥ हूयतेसोयंहोमः । जो दान नाम देने के योग्य है और अदन नाम ग्रहण करने के योग्य है उसका नाम होम है सब दानों से परमेश्वर का जो दान नाम उपदेश का करना और सब ग्रहणों से जो परमेश्वर का ग्रहण नाम परमेश्वर में दृढ़ निश्चय का करना इस दान से वा ग्रहण से कोई भी उत्तमदान वा ग्रहण नहीं है इस्से परमेश्वर का नाम होम है ॥ बन्धबन्धने इस धातु से बन्धु शब्द सिद्ध होता है जिसने सब लोक लोकांतर अपने २ स्थान में प्रबन्ध करके यथावत् रक्खे हैं और अपने २ परिधि के ऊपर सब लोक भ्रमण करैं इस प्रबन्ध के करने से किसी से किसी का मिलना न होय जैसे कि बन्धु बन्धु का सहायकारी होता है वैसेही सब पृथिव्यादिकों का धारण करना और सब पदार्थों का रचन करना इस्से परमेश्वर का नाम बन्धु है पा पाने पारक्षणे । इन दो धातुओं से पिता शब्द सिद्ध होता है जैसे कि पिता अपनी प्रजा के ऊपर कृपा और प्रीति को कर्त्ताही है तैसे परमेश्वर भी सब जगत के ऊपर कृपा और प्रीति कर्ता है इस्से परमेश्वर का नाम सब जगत् का पिता है पितॄणांपितापितामहः । जितने जगत में पिता लोग हैं उन सभों के पिता होने से परमेश्वर का नाम पितामह है ॥ पितामहानांपिता प्रपितामहः । जगत में जितने पिताओं के पिता हैं उन सभों के पिता के होने से परमेश्वर का नाम प्रपितामह है ॥ मा माने माङ्माने शब्देच । इन दो धातुओं से माता शब्द

सिद्ध होता है जैसे कि माता अपनी प्रजाका मान कर्ती है और लाड़न कर्ती है तैसेही सब जगत का मान और लाड़न अत्यन्त कृपा और प्रीति करने से परमेश्वर का नाम माता है॥ श्रोत्रस्यश्रोत्रंमनसोमनो यद्वाचोहवाचंसउप्राणस्यप्राणः। चक्षुसश्चक्षुरतिमुच्यधीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृताभवन्ति॥ यह केनोपनिषद् का वचन है इसका यह अभिप्राय है कि जैसे श्रोत्रादिक अपने २ विषय को ग्रहण कर्ते हैं तथा सबश्रोत्रादिकों का और श्रोत्रादिक विषयों को उनकी क्रिया को भी यथावत् जानता है इस्से परमेश्वर का नाम श्रोत्रका श्रोत्र है तथा मन का मन वाणी को वाणी प्राण का प्राण और चक्षु का चक्षु इस्से परमेश्वर के नाम श्रोत्र मन वाणीप्राण और चक्षु ये सब हैं बोधयन् बुद्धिर्भवति चेतयन्चित्तम्भवति। नाम सब को चेताने वाले हैं इस्से परमेश्वर का नाम चित्त और बुद्धि है॥ अहङ्कुर्वन्नहङ्कारोभवति। नाम अहङ्करोतीत्यहङ्कारः जो अव्याकृतादिक सब जगत् का मैंहीं कर्ता हूं ऐसा जो ज्ञान का होना इस्से परमेश्वर का नाम अहङ्कार है॥ जीवप्राणधारणे। इस धातुसे जीव शब्द सिद्ध होता है॥ जीवयतिसर्वान्प्राणिनःसजीवः। जो सब जीव और प्राणों का जीवन् धारण करने वाला है इस्से परमेश्वर का नाम जीव है॥ आप्लृव्याप्तौ। इस धातु से अप् शब्द सिद्ध होता है सब जगत में व्यापक होने से परमेश्वर का नाम आप है॥ जनीप्रादुर्भावे इस्से अज शब्द सिद्ध होता है॥ नजायतइत्यजः। जिसका जन्म कभी न हुआ न है और न होगा इस्से परमेश्वर का नाम अज है॥ सत्यंज्ञानमनन्तंब्रह्म। यह तैत्तिरीयोपनिषद का वचन है॥ अस्तीतिसत् सतेहितंसत्यम्। जो सब दिन रहे जिसका नाश कभी न होय॥ इस्से परमेश्वर का नाम सत्य स्वरूप है और ज्ञान स्वरूप होने से परमेश्वर का नाम ज्ञान है जिसका अन्त नाम सीमा कभी नहीं अर्थात

देश काल और वस्तु का परिच्छेद नहीं जैसे कि मध्यदेश में दक्षिण देश नहीं दक्षिण देश में मध्यदेश नहीं भूतकाल में भविष्यत्काल नहीं और दोनों में वर्तमान काल नहीं तैसेही पृथिवी आकाश नहीं और आकाश पृथिवी नहीं ऐसा भेद परमेश्वर में नहीं है ऐसा ब्रह्मही है किन्तु सब देशों सब कालों और सब वस्तुओं में अखण्ड एक रस के होने से और कोई भी जिसका अन्त न लेसके इससे परमेश्वर का नाम अनन्त है टुनदिसमृद्धौ। इससे आनन्द शब्द सिद्ध होताहै जो सब समृद्धिमान् सदा आनन्द स्वरूप और मुमुक्षु मुक्तों को जिस की प्राप्ति से सब समृद्धि और नित्यानन्द के होने से परमेश्वर का नाम आनन्द है॥ सत् शब्द का अर्थ सत्य शब्द के व्याख्यान में जान लेना और ज्ञान शब्द के व्याख्यान से चित् शब्द का अर्थ जान लेना इससे परमेश्वर को सच्चिदानन्द स्वरूप कहते हैं॥ शुन्धशुद्धौ। इससे शुद्ध शब्द सिद्ध होता है जो आप तो शुद्धहोय जिसको कुछ मलीनता के संयोग का लेश कभी न होय और सब शुद्धियों के हेतु के होने से परमेश्वर का नाम शुद्ध है बुध अवगमने। इस धातु से बुद्ध शब्द सिद्ध होता है जो सब बोधों का परमावधि नाम परम सीमा के होने से परमेश्वर का नाम बुद्ध है॥ मुचॢमोचने। इस धातु से मुक्त शब्द सिद्ध होता है जो आप तो सदा मुक्त स्वरूप होय और सब मुक्त होने वालों के मुक्ति के साक्षात् हेतु होने से परमेश्वर का नाम मुक्त है॥ सदकारणवन्नित्यम्। जो सत् स्वरूप होय और कारण जिसका कोई भी नहीं इससे परमेश्वर का नाम नित्य है ये सब मिलके ऐसा एक नाम हो जायगा॥ नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावः। जो स्वभावही से नित्य शुद्ध बुद्ध और मुक्त के होने से परमेश्वर का नाम नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव है॥ डुकृञ्करणे। इस धातु से निराकार शब्द सिद्ध होता है॥ निर्गतः आकारोयस्मात्स-

निराकारः। जिसका आकार कोई भी नहीं इससे परमेश्वर का नाम निराकार है ॥ अञ्जनं मायाऽविद्ययोर्नाम निर्गतमञ्जनंयस्मात् सनिरञ्जनः। माया नाम छल और कपट का है क्योंकि यह पुरुष मायावी है इससे क्या जाना जाता है कि यह छली और कपटी है अविद्या अज्ञान का नाम है जिसको माया और अविद्या का लेश मात्र सम्बन्ध कभी न हुआ न है और न होगा इससे परमेश्वर का नाम निरञ्जन है ॥ गणसंख्याने। इस धातु से गण शब्द सिद्ध होता है इसके आगे ईश शब्द रखने से गणेश शब्द सिद्ध होता है ॥ गणानांसमूहानांजगतामीशस्सगणेशः। जो सब गणों का नाम संघातों का अर्थात सब जगतों का ईश नाम स्वामी होने से परमेश्वर का नाम गणेश है ॥ विश्वस्यईश्वरःविश्वेश्वरः। विश्वनाम सब जगत का ईश्वर होने से परमेश्वर का नाम विश्वेश्वर है ॥ कूटेतिष्ठतीतिकूटस्थः। जिसमें सब व्यवहार होय आप सब व्यवहारों में व्याप्त होय और सब व्यवहार का आधार भी होय परन्तु जिसके स्वरूप में व्यवहार का लेश मात्र भी विकार न होनेसे परमेश्वर का नाम कूटस्थ है जितने देव शब्द के अर्थ लिखे हैं वेही अर्थ देवी शब्द के जान लेना चाहिये ॥ शक्लृशक्तौ शक्नोतिययासाशक्तिः। जो सब पदार्थों को रचने का सामर्थ्य जिसमें है इससे परमेश्वर का नाम शक्ति है ॥ लक्षदर्शनाङ्कनयोः। इससे लक्ष्मी शब्द सिद्ध होता है लक्षयति नाम दर्शयति चराचरञ्जगत् सालक्ष्मीः जो सब जगत् को उत्पन्न करके देखावै उसका नाम लक्ष्मी है ॥ अङ्कयति चिन्हयति वा चराचरञ्जगत्सालक्ष्मीः। जो सब जगत के चिन्हों को अर्थात नेत्र नासिकादिक और पुष्प पत्र मूलादिक एक से एक विलक्षण जितने चिन्ह हैं उनके रचने और प्रकाशक के होने से परमेश्वर का नाम लक्ष्मी है ॥ लक्ष्यतेवेदादिभिश्शास्त्रैर्ज्ञानिभिश्चसापिलक्ष्मीः। वेदादिक शास्त्र और ज्ञानियों

का लक्ष्यनाम दर्शन के योग्य होने से परमेश्वर का नाम लक्ष्मी है ॥ सृगतौ । इस से सरस् शब्द से मतुप् और ङीप् प्रत्यय के करने से सरस्वती शब्द सिद्ध होता है सरोनाम विज्ञानम् विज्ञानंनाम विविधंयत्ज्ञानम् तत्विज्ञानम् सरस् शब्द विज्ञान का वाचक है विविधनाम नानाप्रकार शब्द शब्दों का प्रयोग और शब्दार्थ सबन्धों का यथावत् जो ज्ञान उसका नाम विज्ञान है ॥ सरोनाम विज्ञानंविद्यतेयस्याः सासरस्वती । सर नाम विज्ञान सो अखण्डित विद्यमान है जिसको उसका नाम सरस्वती है वैसा परमेश्वरही है इस से सरस्वती नाम परमेश्वर का है ॥ सर्वाःशक्तयोविद्यन्तेयस्यससर्वशक्तिमान् । जिसको सब शक्ति नाम सब सामर्थ्य विद्यमान होय उसका नाम सर्व शक्तिमान् है अर्थात जो किसी का लेशमात्र सामर्थ्य का आश्रय न लेवै और सब जगत उसका आश्रय कर्ता है इस से परमेश्वरका नाम सर्व शक्तिमान् है धर्म न्याय और पक्षपात का त्याग ये तीन नाम एक अर्थ के वाचक हैं ॥ प्रमाणैरर्थपरीक्षणंन्यायः । यह न्यायशास्त्र सूत्रों के ऊपर वात्स्यायन मुनिकृत भाष्य का बचन है जो प्रत्यक्षादिक प्रमाणों से सत्य सत्य सिद्ध होय उसका नाम न्याय है ॥ न्यायङ्कर्तुंशीलमस्यसोऽयंन्यायकारी । जिसका न्याय करनेही का स्वभाव होय और अन्याय करने का लेश मात्र सम्बन्ध कभी न होय ऐसा परमेश्वरही है इस से परमेश्वर का नाम न्यायकारी है ॥ दय दान गति रक्षण हिंसादानेषु । इस धातु से दया शब्द सिद्ध होता है ॥ दय्यतेयासादया । दान नाम अभय का देना गतिनाम यथावत् गुण दोषों का विज्ञान रक्षण नाम है सब जगत की रक्षा का करना हिंसा नाम दुष्ट कर्मकारियों को दण्ड का होना आदान नाम सब जगत के ऊपर वात्सल्य से कृपा का करना इसका नाम दया है ॥ दयाविद्यतेयस्यसदयालुः । उस दया के नित्य विद्यमान होने से

परमेश्वर का नाम दयालु है ॥ सदेवसोम्येदमग्रआसीदेकमेवा द्वितीयम् । यह छांन्दोग्योपनिषद् का बचन है इस्का अभिप्राय यह है कि हे सोम्य हे श्वेतकेतो श्वेतकेतु के जो पिता उद्दालक वे उस्से कहते हैं अग्रे नाम सृष्टि जब उत्पन्न नहीं भई थी तब एक अद्वितीय ब्रह्म परमेश्वरही था और कोई भी नहीं था वैसा कोई परमेश्वर से भिन्न न हुआ न है और न होगा सदेव नाम जिस्का नाश किसी काल में कभी न होय ॥ इस्से श्रुति में सदेव यह बचन का पाठ है ॥ एकम् एव और अद्वितीयम् ये तीनों शब्दों से यह अर्थ जाना जाता है कि ॥ सजातीयविजाती यस्वगतभेदशून्यंब्रह्मास्तीति । सजातीय भेद यह है कि मनुष्यसे भिन्न दूसरे मनुष्यों का होना विजातीय भेद यह है कि मनुष्य से भिन्न विजातीय पाषाण और स्वगत भेद यह है कि जैसे मनुष्य में नाक कान सिर पांव एक से एक भिन्न अवयव हैं तैसेही परमेश्वर में तीन प्रकार के भेद नहीं जब सजातीय परमेश्वर से भिन्न कोई दूसरा वैसाही परमेश्वर होय तब तो सजातीय भेद होय ऐसा दूसरा कोई परमेश्वर नहीं है इस्से परमेश्वर में सजातीय भेद नहीं है जैसे परमेश्वर का न्याय-कारित्वादि गुण स्वाभाविक हैं तैसाही परमेश्वर से भिन्न अ-न्यायकारित्वादि विशिष्ट गुणवान् दूसरा विरुद्ध स्वभाव परमे-श्वर होय तब तो परमेश्वर में विजातीय भेद आसकै जैसा कि खुदा के विरुद्ध शैतान ऐसा कभी नहीं इस्से परमेश्वर में वि-जातीय परिच्छेद नहीं परमेश्वर निराकार और निरवयव है वैसेही कोई प्रकार का भेद नहीं है इस्से परमेश्वर में स्वगत परिच्छेद नहीं इस्से परमेश्वर का नाम अद्वितीय है यही अद्वैत शब्द का अर्थ है ॥ द्वयोर्भावोद्विताद्वितैवद्वैतम् नविद्यतेद्वैतंयस्मि न्यस्यवातदद्वैतम् । दोनों विद्यमान ईश्वरों का जो होना उस्का नाम द्विता है द्विता जिसको कहते हैं उसी का नाम द्वैत है

नहीं है विद्यमान द्वैत जिस्में जिसको वा उसका नाम अद्वैत है अद्वितीय और अद्वैत परमेश्वरही का नाम है ॥ निर्गताः जन्मादयः अविद्यादयः सत्त्वादयः गुणाः यस्मात् सनिर्गुणः परमेश्वरः । जगत् के जन्मादिक अविद्यादिक और सत्वादिक गुणों से भिन्न हैं अर्थात जगत के जितने गुण हैं वे परमेश्वर में लेश मात्र सम्बन्ध से भी नहीं रहते इस्से परमेश्वर का नाम निर्गुण है सच्चिनन्दादिगुणैः सहवर्तमानत्वात्सगुणः अपने नित्य स्वाभाविक सच्चिदानन्दादिक गुणों से सदा सहवर्तमान होनेसे परमेश्वर का नाम सगुण है कोई भी संसार में ऐसी वस्तु नहीं है जो कि केवल निर्गुण अथवा सगुण होय जैसे कि पृथिवी में गन्धादिक गुणों के योग होने से सगुण है और वही पृथिवी चेतन और आकाशादिकों के गुणों से रहित होने से निर्गुण भी है वैसेही अपने सर्वज्ञादिक गुणों से सदा सहित होनेसे परमेश्वर का नाम सगुण है और उत्पत्ति स्थिति नाश जड़त्वादिक जगत के गुणों से रहित होने से परमेश्वर निर्गुण भी है वैसे सब जगहों में विचार कर लेना ॥ सर्वजगतोन्तर्यन्तुं शीलमस्यसोऽन्तर्यामी । जो सब जगत के भीतर बाहर और मध्य में सर्वत्र व्याप्त होके सब को जानते हैं और सब जगत को नियम में रखने से परमेश्वर का नाम अन्तर्यामी है न्यायकारी नाम के अर्थ में धर्म शब्द की व्याख्या कर दी है उस्से जानलेना धर्मेण राजते सधर्मराजः अथवाधर्मंराजयतिप्रकाशयति सधर्मराजः । धर्म न्याय का और न्याय पक्षपात के त्याग का नाम है तिस धर्म से सदा प्रकाशमान होय अथवा सदा धर्म का प्रकाशकरने से परमेश्वरका नाम धर्मराज है ॥ सर्वञ्जगत्करोतीतिसर्वजगत् कर्त्ता सो सब जगत् का करने वाला होने से परमेश्वर का नाम सर्व जगत् कर्ता है ॥ निर्गतंभयंयस्मात्सनिर्भयः । जिसको किसी से किसी प्रकार का भय नहीं होता है इस्से परमेश्वर का नाम

निर्भय है ॥ नविद्यतेआदिःकारणंयस्यसःअनादिः । जिसका कारण कोई भी नहीं और अपने तो सब जगत का आदि कारण है इस्से परमेश्वर का नाम अनादि है ॥ अणोरणीयान्महतोमहीयान् । यह मुण्डकोपनिषद् का बचन है जो सब सूक्ष्म पदार्थों से अत्यन्त सूक्ष्म के होने से परमेश्वर का नाम सूक्ष्म है और जो सब बड़ों में अत्यन्त बड़ा है इस्से परमेश्वर का नाम महान् है सब कल्याण गुणों से सदा युक्त रहने से परमेश्वर का नाम शिव है ॥ भगोविद्यतेयस्यसभगवान् । जो अनन्त ज्ञान अनन्त वैराग्यादिक नित्य गुणों से युक्त होने से परमेश्वर का नाम भगवान् है ॥ मानयतिचराचरञ्जगत् । अथवा सर्ववेदादिभिश्शास्त्रैः शिष्टैश्चमन्यतेयः समनुः । जो सब जगत का मान करै अथवा सब वेदादिक शास्त्र और शिष्टलोक जिसको अत्यन्त मानैं इस्से परमेश्वर का नाम मनु है ॥ चिन्तितुंयोग्यश्चिन्त्यःनचिन्त्योऽचिन्त्यः । जो विषयासक्त पुरुषों से चिन्तने में नाम सम्यक् जानने में नहीं आते इस्से परमेश्वर का नाम अचिन्त्य है परन्तु ऐसा ज्ञान ज्ञानियों को होता है कि सर्वव्यापक जो परमेश्वर सो हृदय देश में भी है उस हृदयस्थ व्यापक परमेश्वर को जानने से सब अनन्त जो परमेश्वर उस्का ज्ञान निश्चित होता है जैसा मेरे हृदय में परमेश्वर है वैसाही सर्वत्र है जैसे कि समुद्र के जल का एक बिन्दु जीभ के ऊपर रखने से उसके स्वादादिक गुणों के जानने से सब समुद्र के जल का ज्ञान हो जाता है वैसेही परमेश्वर का दृढ़ ज्ञान ज्ञानियों को हो जाता है ॥ प्रमातुंयोग्यः प्रमेयः नप्रमेयः अप्रमेयः । जो परिमाणों से जिस्का परिमाण तौलन नहीं होता इतनाहीं परमेश्वर में सामर्थ्य है ऐसा कोई भी नहीं कह सक्ता और न जान सक्ता है इस्से परमेश्वर का नाम अप्रमेय है ॥ प्रमदितुंनाम उन्मदितुंशीलमस्यसप्रमादी नप्रमादी अप्रमादी । जिस्का प्रमाद नाम उन्मत्तता

के लेशमात्र का भी सम्बन्ध नहीं है इससे परमेश्वर का नाम अप्रमादी है॥ विश्वंविभर्तीतिविश्वम्भरः। जो विश्व का धारण और पोषण का कारण होने से परमेश्वर का नाम विश्वम्भर है कलसंख्याने। इस धातु से काल शब्द सिद्ध होता है॥ कलयतिसर्वञ्जगत् सकालः जो सब जगत की संख्या और परिमाण को आदि अन्त मध्य को यथावत् जानने से परमेश्वर का नाम काल है उसका काल कोई भी नहीं है और वह काल का भी काल है॥ प्रीञ्तर्पणेकान्तौच। इस धातु से प्रिय शब्द सिद्ध होता है॥ प्रीणातिसर्वान्धर्मात्मनः। अथवा प्रीयतेधर्मात्मभिःसप्रियः। जो सब शिष्टों को और मुमुक्षुओं को अपने आनन्द से प्रसन्न करदे अथवा जिस्को प्राप्त होके सब जीव प्रसन्न हो जांय इससे परमेश्वर का नाम प्रिय है शिव नाम कल्याण का है जो आप तो कल्याण स्वरूप होय और जिस्को प्राप्त होके जीव भी कल्याण स्वरूप होय इससे परमेश्वर का नाम शिवशङ्कर है इतने सौ १०० नाम परमेश्वर के विषय में लिख दिये परन्तु इन से भिन्न भी बहुत अनन्त नाम हैं उन का इसी प्रकार से सज्जन लोक विचार कर लेवें कुछ थोड़ा सा परमेश्वर के विषय में मैंने लिखा है किन्तु वेदादिक शास्त्रों में परमेश्वर के विषय में जितना ज्ञान लिखा है उसके आगे मेरा लिखना ऐसा है कि समुद्र के आगे एक बिन्दु भी नहीं और जो यह लिखा है सो केवल उन वेदादिक शास्त्रों के पढ़ने पढ़ाने की प्रवृत्ति के लिये लिखा है जब सब लोक उन शास्त्रों के पठन पाठन में प्रवृत्त होंगे और जब उन शास्त्रों को ऋषि मुनियों के व्याख्यान की रीति से पढ़के बिचारेंगे तब सब लोगों को परमेश्वर और अन्य पदार्थों का भी यथावत् ज्ञान होगा अन्यथा नहीं इस प्रकरण का नाम मङ्गलाचरण है ऐसा कोई कहे कि मङ्गलाचरण आदि मध्य और अन्तमें किया जाता है ऐसा आप

भी करेंगे वा नहीं ऐसा हमको करना योग्य नहीं क्योंकि वह बात मिथ्या है आदि मध्य और अन्तमें जो मङ्गल करेगा तो आदि और मध्यके बीचमें अन्त और मध्य के बीच में अमङ्गल ही को लिखेगा इससे यह बात मिथ्या है किन्तु शिष्टों को तो सदा मङ्गलही का आचरण करना चाहिये और अमङ्गल का कभी नहीं इसमें कपिल ऋषि का प्रमाण भी है ॥ मङ्गलाचरणंशिष्टाचारात् फलदर्शनाच्छ्रुतितश्चेति । इस सूत्र का यह अभिप्राय है कि मङ्गलनाम सत्य सत्य धर्म जो ईश्वर की आज्ञा उसका यथावत् आचरण उसका नाम मङ्गलाचरण है उस मङ्गलाचरण के करने वाले उनका नाम शिष्ट है उस शिष्टाचार के हेतु से मङ्गलही का आचरण करना चाहिये और जो मङ्गल को आचरण करने वाले हैं उन को मङ्गल रूपही फल होता है अमङ्गल कभी नहीं और श्रुति से भी यही आता है कि मङ्गलही का आचरण करना चाहिये ॥ यान्यनवद्यानिकर्माणि तानिसेवितव्यानिनोइतराणीति । इसका यह अभिप्राय है कि अनवद्य नाम श्रेष्ठहीका है धर्मरूपही मङ्गलकर्म करना चाहिये अधर्म रूप अमङ्गल कर्म कभी न करना चाहिये इससे क्या आया कि आदि अन्त और मध्यहीं में मङ्गलाचरण करना चाहिये यह बात मिथ्या जानी गई कि सदा मङ्गलाचरणही करना चाहिये अमङ्गल का कभी नहीं और आज काल के पण्डित लोक जो कि मिथ्या ग्रन्थ रचते हैं सत्यशास्त्रों के ऊपर मिथ्या टीका रचते हैं उन के आदि में जो श्रीगणेशायनमः शिवायनमः सीतारामाभ्यान्नमः दुर्गायैनमः राधाकृष्णाभ्यांनमः बटुकायनमः श्रीगुरुचरणारविन्दाभ्यान्नमः हनुमतेनमः । भैरवायनमः ॥ इत्यादिक लेख देखने में आते हैं इनको बुद्धिमान् मिथ्याही जान लेवें क्योंकि वेदों में और ऋषि मुनियों के किये ग्रन्थों में किसी स्थान में भी ऐसे लेख देखने में नहीं आते हैं

ऋषि लोक अथ शब्द का और ॐकार शब्द का पाठ आदि में कर्ते हैं सो अधिकारार्थ अधिकारार्थ नाम इतनी विद्या होने से इस शास्त्र पढ़ने का अधिकारी होता है वा आनन्तर्यार्थ आनन्तर्यार्थ नाम एक शास्त्र को करके उसके पीछे दूसरे का जो रचना अथवा एक कर्म करके दूसरे कर्म को करना इस वास्ते ॐकार और अथ शब्द का पाठ ऋषि मुनि लोग कर्ते हैं ॐकारंवेदेषु अथकारंभाष्येषु यह कात्यायन मुनिकृत प्रातिशाख्य का बचन है वैसेही मैं दिखाता हूं अथशब्दानुशासनम् अथेत्ययंशब्दोऽधिकारार्थः प्रयुज्यते यह व्याकरण महाभाष्य के प्रारम्भ का बचन है ॥ अथातोधर्मजिज्ञासा । यह भी मीमांसा शास्त्र के आरम्भ का बचन है ॥ अथातोधर्मंव्याख्यास्यामः । यह वैशेषिक दर्शन शास्त्र का प्रथम सूत्र है ॥ प्रमाणप्रमेयेत्यादि ॥ यह न्यायदर्शन शास्त्र के आरम्भ का बचन है ॥ अथयोगानुशासनम् यह पातञ्जलदर्शन के प्रारम्भ का बचन है ॥ अथत्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः । यह साङ्ख्यदर्शन शास्त्र के आरम्भ का बचन है ॥ अथातोब्रह्मजिज्ञासा । यह वेदान्तशास्त्र के प्रारंभ का बचन है ॥ ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत । यह छान्दोग्य उपनिषद के प्रारम्भ का बचन है ॥ ओमित्येतदक्षरमिदंसर्वन्तस्योपव्याख्यानम् । यह माण्डूक्यउपनिषद का बचन है इत्यादिक और भी जानलेने, देखना चाहिए कि ऋषि लोगोंने और बेदों मेंभी अथ और ॐकार अग्न्यादिक भी चारों बेदों के आरम्भ में अग्नि तथा इट् और शम् ये शब्द देखने में आते हैं परन्तु श्रीगणेशायनमः इत्यादिक बचन किसी बेद में और ऋषियों के ग्रन्थों में भी नहीं देखने में आते हैं इससे क्या जाना जाता है कि वेदादिक शास्त्रों से और ऋषि मुनियों के किये ग्रन्थों से भी यह नवीन लोगों का प्रमादही है ऐसाही शिष्ट लोगों को जानना चाहिये और वैदिक लोक हरिःओम् इस

शब्द का पठन पाठन के आरम्भ में उच्चारण करते हैं यह सत्य है वा नहीं। यह भी मिथ्याही है क्योंकि ओंकारका तो ऋषि ग्रन्थों के प्रारम्भ में पाठ देखने में आता है परन्तु हरिः शब्द का पाठ कहीं देखने में नहीं आता है इससे हरिः शब्द का पाठ तो मिथ्याही है पूर्वोक्त प्रातिशाख्य के प्रमाण से ओंकार तो उचितही है यह प्रकरण तो पूर्ण होगया इससे आगे शिक्षा के विषय में लिखा जायगा॥ इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते प्रथमः समुल्लासः सम्पूर्णः॥ १॥

अथशिक्षांवक्ष्यामः। मातृमान्पितृमानाचार्यवान्पुरुषोवेद इतिश्रुतिः। प्रथम तो सब जनों को माता से शिक्षा होनी उचितहै जन्म से लेके तीनबर्ष अथवा पांचवर्ष पर्यन्त अपने संतानों को सुशिक्षा अवश्य करै प्रथम तो सुश्रुत और चरक जो वैद्यक शास्त्र ग्रन्थ हैं उनकी रीति से शरीर के स्वभाव के अनुकूल दुग्धादिकों में ओषधों को मिला के वा संस्कार करके पुत्रों को और कन्याओं को पिलावै अथवा जो स्त्री उनको अपना दूध पिलावै सोई स्त्री उन श्रेष्ठ पदार्थों का भोजन करै जिस्से कि उसीके दूध में उनका अंश आजायगा जिस्से बालकों के भी शरीर की पुष्टि बल और बुद्धि वृद्धि होय और शुद्ध स्थान में उनको रखना चाहिये शुद्ध सुगन्ध देश में बालकों को भ्रमण कराना चाहिये जब उनका जन्म होय उसी दिन अथवा दूसरे तीसरे दिन धनाढ्य लोग और राजा लोग दासी वा अन्य स्त्री की परीक्षा करके कि उसके शरीर में रोग न होय और दूध में भी रोग न होय उसके पास बालक को रख देवैं और वही स्त्री उनका पालन करै परन्तु माता उस स्त्री के और बालकों के भी शिक्षा के ऊपर दृष्टि रक्खै और जो असमर्थ लोग हैं जिनको दासी वा अन्यस्त्री रखने का सामर्थ्य न होय तो छेरी

अथवा गाय वा भैंसी के दूध से बालकों का पोषण करैं जहां छेरी आदिकों का अभाव होय वहां जैसा होसके वैसा करैं और अञ्जनादिकों से नेत्रादिकों कोभी पुष्टिसे रोग निवारणार्थ करैं परन्तु बालकों की जो माता है सो उन्हीं को दूध कभी न देवै स्त्रीके दूध देने से स्त्रीका शरीर निर्बल और क्षीण होजायगा जो स्त्री प्रसूत हुई वह भी अपाने शरीर की रक्षा के लिये श्रेष्ठ भोजनादिक करै जो कि औषधवत् होय जिस्से फिर भी युवावस्था की नाईं उसका शरीर होजाय और दूध के रक्षा के वास्ते उक्त वैद्यकशास्त्र में जैसा वह औषध सो यथावत् संपादन करके स्तन के ऊपर लेपन करके उस मार्ग को रोकदेवै जिस्से कि दूध न निकल जाय इस्से स्त्रीका शरीर फिरभी पूर्ण बलवान् होजाय जैसे कि युवती का शरीर उसके तुल्य उसका भी शरीर होजायगा इस्से जो सन्तान होगा सो वैसाही फिर बलवान् और निरोग होगा जो उक्त वैद्यकशास्त्र में जैसी कि रीति लिखी है उसी प्रकार के लेपन से योनि का संकोच और योनि का शोधन भी स्त्री लोग करैं इस्से अपने पति का भी बल क्षीण न होगा जब कुछ बालक लोग समर्थ होंय तब उनको चलने बैठने मलमूत्र के त्याग और शौच नाम पवित्रता की शिक्षा करैं और हस्त पाद मुख नेत्रादिकों की सुचेष्टा की शिक्षा करैं जिस्से कि किसी अङ्ग से वे बालक लोग कुचेष्टा न करैं और खाने पीने की भी यथावत् शिक्षा करैं बालक को जिह्वा का शोधन करावैं क्योंकि कोमल जिह्वा के होने से अक्षरों का उच्चारण स्पष्ट होगा औषधों से और दन्तधावन से फिर बालक को बोलने की शिक्षा करैं तब माता श्रेष्ठ वाणी से स्थान और प्रयत्न के साथ भाषण करैं जैसे कि प इसका ओष्ठ तो स्थान है और दोनों ओष्ठों का मिलाना सो स्पर्श प्रयत्न है ओष्ठ स्थान के और स्पर्श प्रयत्न के बिना पकार का शुद्ध उच्चारण कभी न होगा

ऐसेही सब वर्णों का स्थान और प्रयत्न ह्रस्व और दीर्घ विचार के माता उच्चारण करै वैसाही बालकों को करावे जिस्से कि वे बालक शुद्ध उच्चारण करैं गमन, आसन, सोना, बैठना, इस्को भी शिक्षा माता करै जिस्से कि सब कर्म युक्त युक्तही करैं और यह भी उपदेश उनको माता करै कि माता पिता तथा ज्येष्ठ बन्धादिक मान्य लोगों को नमस्कार बालक लोग करैं रोदन हास्य और क्रीड़ासक्तक भी वे न होवैं बहुत हर्ष शोक भी न करैं उपस्थ इन्द्रिय को हस्तसे नेत्र नासिकादिकों के बिना प्रयोजन से मर्द्दन अथवा स्पर्श न करैं क्योंकि निमित्त से बिना उपस्थेन्द्रिय का मर्द्दन और बारम्बार स्पर्श के करने से वीर्य की क्षीणता होगी और हस्त दुर्गन्ध युक्त भी होगा इस्से व्यर्थ कर्म करना न चाहिये इतनी शिक्षा बालकों को पांचवर्ष तक करना चाहिये उसके पीछे माता और पिता अक्षर लिखने की और पढ़ने की शिक्षा करैं देवनागराक्षर और अन्यदेशों के भाषाक्षरों का लिखने पढ़ने का अभ्यास ठीक २ करावें स्पष्ट लिखने पढ़ने का अभ्यास होजाय इस्से यह भी अवश्य शिक्षा करना चाहिये और भूत प्रेतादिक हैं ऐसा विश्वास बालक लोग कभी न करैं क्योंकि यह बात मिथ्याही है जब भूत प्रेतादिकों की बात सुनके उनके हृदय में मिथ्या भय होजाता है तब किसी समय में अन्धकार होनेसे शृगालादिक पशु पक्षि और मूषक मार्जारादिक अथवा चोर वा अपने शरीर की छाया देखने से शृगालादिकों के भागने का शब्द सुनके उसके हृदय में पूर्व सुनने के संस्कार के होने से अत्यन्त भूत प्रेतादिकों का विश्वास होने से भयभीत होके कम्प और ज्वरादिक होते हैं इस्से बहुत दुःख से पीड़ित होते हैं इस्से यह शङ्का का बहुत रीति से निवारण करना चाहिये जिस्से कि उनको कभी भूत प्रेतादिकों के होने में निश्चय न होय वैद्यक शास्त्र में बहुत से मानस

रोग लिखे हैं वे जब होते हैं तब उन्मत्त होके अन्यथा चेष्टा मनुष्य कर्ता है तब निर्बुद्धि लोग जानते हैं और कहते हैं कि इसके शरीर में भूत वा प्रेत आगया है फिर वे मिलके बहुत से पाखण्ड कर्ते हैं कि मैं मन्त्र से झाड़ झूड़ के पांच रुपैया मुझको दे तो अभी निकाल देऊं फिर उनके सम्बन्धी लोग उन पाखण्डियों से कहते हैं कि हम पांच रुपैया देंगे परन्तु इसके भूत को जल्दी आप लोग निकाल देवैं फिर वे मिल के मृदङ्ग झांझ इत्यादिकों को लेके उसके पास आके बजाते गाते हैं फिर एक कोई पाखण्ड से उन्मत्त होके नांचता कूदता है कि इसके शरीर में बड़ा भूत प्रविष्ट हुआ है वह भूत कहता है कि मैं न निकलूंगा इसका प्राण लेही के निकलूंगा वह नांचने कूदने वाला कहता है कि मैं देवी वा भैरव हूं मुझ को एक बकरा और मिठाई, वस्त्र देओ तो मैं इस भूत को निकाल देऊं तब उनके सम्बन्धी कहते हैं कि जो तुम चाहो सो लेलो परन्तु इस भूत को आप निकाल देवैं सब लोग उस उन्मत्त के गोड़ पैं गिर पड़ते हैं तब तो उन्मत्त बहुत नांचता कूदता है परन्तु कोई बुद्धिमान् उसको एक थपेड़ा वा एक जूता मार देवै तब शीघ्रही उसकी देवी वा भैरव भाग जाते हैं क्योंकि वह केवल धूर्त धनादिक हरण करने के लिये पाखण्ड कर्ता है जो नाममात्र तो पण्डित हैं ज्योतिश्शास्त्र का अभिमान कर्के कहते हैं कि सूर्यादि ग्रह क्रूर इनके ऊपर आये हैं इस्से यह पुरुष पीड़ित है परन्तु इसके ग्रहों को शान्ति के लिये दान पाठ और पूजा जो करावै तो ग्रहों को शान्ति होजाय अन्यथा शान्ति न होगी उनको बहुत पीड़ा होगी और इनका मरण होजाय तो आश्चर्य नहीं इनसे कोई पूंछे कि सूर्यादिक ग्रह सब आकाश में रहते हैं वे सब लोक हैं जैसा कि पृथिवी लोक है कैसे वे पीड़ा कर सकते हैं और जो तापादिक उनके तेज हैं सब के ऊपर

समानही प्रकाश है कैसे एक के ऊपर क्रूर होके दुःख दे और दूसरे को शान्त होके सुख दे यह बात कभी नहीं हो सक्ती है जितने धनाढ्य और राजा लोग हैं उनके ऊपर सब मिलके आपके ऊपर क्रूर ग्रह आये हैं ऐसा कहते हैं क्योंकि दरिद्रों से तो इतना धन नहीं मिल सकता है इससे उन धनाढ्यों के पास जाके बारम्बार ग्रहों की कथा से भय देखा के बहुत धन को हरण कर लेते हैं जो कोई बुद्धिमान् उनसे ऐसा कहे कि आप पण्डित लोग अपने घरमें ग्रहों की शान्ति के लिये पूजा पाठ दान वा पुण्य क्यों नहीं कराते हैं तब वे सब पुरोहित पण्डितादिक मिलके कहते हैं कि तूं नास्तिक होगया इस रीति से भय देखाके उनको उपदेशादिक बहुत प्रकार कहके उसी मार्ग में लेआते हैं परन्तु कोई बुद्धिमान् होता है सो उनके जाल में नहीं आता है वैसेही मुहूर्त विषय अथवा यात्रा में जाल रचते हैं धन लेने के लिये तथा जन्मपत्र का जो रचन होता है सो भी मिथ्या है वह जन्मपत्र नहीं है किन्तु शोकपत्र है ऐसा जानना चाहिये क्योंकि जन्मपत्र रचके पण्डित उसका फल उनके पास आके कहते हैं इस बालक का १० वां वर्ष अथवा २० वां वर्ष जब आवेगा तब इसके ऊपर बहुत से क्रूर ग्रह आवेंगे यह बहुत सी पीड़ा पावेगा यह मरजावे तो भी आश्चर्य नहीं इस बात को सुनके बालक के माता अथवा पितादिक शोकातुर हो जाते हैं इससे इस पत्र का नाम शोक पत्रही रखना चाहिये कभी इसके ऊपर बिश्वास न करना चाहिये इसको बुद्धिमान् मिथ्याही जानें रोग निवृत्ति के लिये औषधादिक अवश्य करें इस रीति से बालकों का प्रथमही माता वा पिता को शिक्षा का निश्चय करना वा कराना उचित है मारण मोहन उच्चाटन वशीकरणादिक बिषय में सत्यत्व प्रतिपादन कहते हैं सो भी मिथ्या जानना चाहिये और तांबे का सोना कर्ता हैं

पारे को चांदी बनाता है यह भी बात मिथ्या जानना चाहिए फिर उन बालकों को हृदय में अच्छी रीति से यह बात निश्चय कराना चाहिये कि वीर्य की रक्षा करने में निश्चित बुद्धि होय क्योंकि वीर्य की रक्षा से बुद्धि बल पराक्रम और धैर्यादिक गुण अत्यन्त बढ़ते हैं इससे बालकों को बहुत सुख की प्राप्ति होती है इसमें यह उपाय है कि बिषयों की कथा और बिषयी लोगों का सङ्ग बिषयों का ध्यान कभी न करैं श्रेष्ठ लोगों का सङ्ग विद्या का ध्यान और विद्या ग्रहण में प्रीति सदा होने से बिषयादिकों में कभी प्रवृत्त न होंगे जब तक ब्रह्मचर्य की पूर्ति और बिवाह का समय न होय तब तक उन बालकों का माता पितादिक सर्वथा रक्षा करैं और ऐसा यत्न करैं कि जिसमें अपने बालक मूर्ख न रहैं किसी प्रकार से भ्रष्ट भी न होंय ऐसे ७ सात वर्ष वा ८ आठवर्ष तक माता पिता यत्न करैं प्रथम जो श्रुति लिखी थी कि मातृमान् नाम माता शिक्षितः प्रथम माता से उक्त प्रकार से अवश्य शिक्षा होनी चाहिये पितृमान् नाम पिता से भी शिक्षा होनी चाहिये आचार्यवान् नाम पांचबर्ष के पीछे वा ८ आठबर्ष के पीछे आचार्य की शिक्षा होनी चाहिये जब तीनों से यथावत् शिक्षित पुत्र वा कन्या होंगे तब शिष्ट होंगे अन्यथा पशुवत् होंगे मनुष्य गुण जे हैं विद्यादिक वे कभी न आवेंगे और बिद्या रूप धन की सन्तान को प्राप्ति कराना यही माता पिता और आचार्य का मुख्य फल है कि उनका लाड़न कभी न करना कराना चाहिये क्योंकि लाड़न में बहुत से दोष हैं और ताड़न में बहुत से गुण हैं इसमें व्याकरण महाभाष्य की कारिका का प्रमाण है ॥ सामृतैःपाणिभिर्घ्नन्ति गुरवोनविषोक्षितैः ; लाड़नाश्रयिणोदोषा स्ताड़नाश्रयिणोगुणाः ॥ इसका यह अर्थ है कि सामृतैः नाम अमृत के तुल्य ताड़न है जैसा कि हांथ से किसी को कोई अमृत देवै वैसाही बालकों का ताड़न

है क्योंकि जो व ताड़न से श्रेष्ठ शिक्षा को और सद्विद्या को ग्रहण करेंगे तब उनको प्रतिष्ठा सुख और मान सर्वत्र प्राप्त होगा उस्से धन और आजीविका भी उनको सर्वत्र होगी वे बहुत सुखी होंगे साम्रतैः पाणिभिर्घ्नन्ति नाम सदा गुरु लोक ताड़ना कर्ते हैं न विषोक्षितैः नाम विष से युक्त जो हाथ उस्से जो स्पर्श वह दुःखही का हेतु होता है वैसा अभिप्राय उनका नहीं है किन्तु हृदय में तो कृपा परन्तु केवल गुण ग्रहण कराने के लिये माता पिता तथा गुर्वादिक ताड़न कर्ते हैं क्योंकि लाड़ना श्रयिणोदोषाः नाम जो अपने सन्तानों का लाड़न करेंगे तो वे मूर्ख रहजांयगे पीछे जो कुछ उनके अधिकार में धन वा राज्य रहेगा उसका वे न पालन करेंगे न अधिक वृद्धि होगी उन पदार्थों का नाशही करदेंगे फिर वे अत्यन्त दुःखी होजांयगे और दूसरे के आधीन रहैंगे यह दोष माता पिता तथा गुर्वादिकों का गिना जायगा इस्से क्या आया कि उनका लाड़न क्या किया किन्तु उनको मारही डाला ताड़ना श्रयिणोगुणाः नाम अवश्य सन्तानों को गुण ग्रहण कराने के लिए सदा ताड़नहीं कराना चाहिये क्योंकि ताड़न के बिना वे श्रेष्ठ स्वभाव और श्रेष्ठ गुणों को कभी ग्रहण न करेंगे इस्से वैसाही करना चाहिये जिस्से अपने सन्तान उत्तम होंय उनको विद्या और श्रेष्ठ गुणों काही आभूषण धारण कराना चाहिये और सुवर्णादिकों का कभी नहीं क्योंकि विद्यादिक गुण का जो आभूषण धारना है सोई आभूषण उत्तम है और सुवर्णादिकों का आभूषण का जो धारण है उसमें गुण तो नहीं है किन्तु दोषही बहुत से हैं क्योंकि चौरादिक भी उनको मारके आभूषणों को लेजाते हैं और आभूषणों को धारण करने वाले को बहुत अभिमान रहता है जो कोई उसके सामने विद्यावान् भी पुरुष होय तो भी वह तृण के बराबर उसको गणना करेगा

और अभिमान से गुण ग्रहण भी न करैगा और जब वे सोते हैं तब चोर आके उनको मार डालते हैं अथवा अङ्ग भङ्ग करके आभूषण लेजाते हैं इस्से सुवर्णादिकों का आभूषण धारना उचित नहीं और कभी चोरी न करैं किसी का पदार्थ उसको आज्ञा के बिना एक तृण वा पुष्प भी ग्रहण न करैं क्योंकि जो तृण की चोरी करेगा सो सब की चोरी करेगा फिर उसको राजगृह में दण्ड होगा अप्रतिष्ठा भी होगी और निन्दा होगी उसका विश्वास कोई भी न करेगा इस्से मनसे भी कभी चोरी करने की इच्छा न करनी चाहिये और मिथ्या भाषण भी करना न चाहिये क्योंकि मिथ्या भाषण जो करेगा सो सब पाप कर्मों को भी करेगा और उसका विश्वास कोई भी न करेगा प्रतिज्ञा भी मिथ्या न करनी चाहिये प्रथम तो बिचार करके प्रतिज्ञा करनी चाहिये जब प्रतिज्ञा की तब उसका पालन यथावत् करना चाहिये प्रतिज्ञा क्या होती है कि नियम से जो कहना उस वक्त मैं आपके पास आऊंगा वा आप मेरे पास आवैं इस पदार्थ को मैं देऊंगा वा लेऊंगा सो जैसा कहै वैसाही प्रतिज्ञा पालन करै अन्यथा कभी न करै प्रतिज्ञा की जो हानि है सो मनुष्य का महादोष है इस्से प्रतिज्ञा की हानि कभी न करनी चाहिये अभिमान कभी न करना चाहिये अभिमान नाम अहङ्कार का है मैं बड़ा हूं मेरे सामने कोई कुछ भी नहीं इस्से क्या होगा कि कभी वह गुण ग्रहण तो न करेगा परन्तु मूर्खही रहजायगा छल कपट वा कृतघ्नता कभी न करनी चाहिये क्यों कि छल, कपट, और कृतघ्नता से, अपनाही हृदय दुःखित होता है तो दूसरे की क्या कथा और उसका उपकार कोई भी न करेगा छल कपट और कृतघ्न तो उसको कहते हैं कि हृदय में तो और बात बाहर और बात कृतघ्नता नाम कोई उपकार करै उस उपकार को न मानना सो कृतघ्नता कहाती है क्रोध

५

भी कभी न करना क्रोध से अपने अपनीही हानि करदेवै और को भी हानि करले इस्से क्रोध भी न करना चाहिये किसी से कटुक वचन न कहै किन्तु मधुर वचनही सदा कहै बिना बोलाये किसी से बोले नहीं और बहुत बकवाद कभी न करै जितना कहना चाहिये इतनाही कहै जिस्से कहना वा सुनना सो नम्रता सेही करै अभिमान से कभी नहीं किसी से बाद बिवाद न करै नेत्र नासिकादिकों से चपलता कभी न करै जहां किसी के पास जाय वहां उसको पहिलेही नमस्कार करै और नीच आसन में बैठे न किसी को आड़ होय न किसी को दुःख होय न कोई उसको उठावै जिस्से गुण ग्रहण करै उसको पूर्व नमस्कार करै उस्से बिरोध कभी न करै उसको प्रसन्न करके जैसे गुण मिले वैसाही करै पीछे भी मरण तक उसके गुण को माने जिस गुण को ग्रहण करै उस गुण को आच्छादन कभी न करै किन्तु उस गुण का प्रकाशही करना उचित है किसी पाखण्डी का विश्वास कभी न करै सदा सज्जनों का सङ्ग करै दुष्टों का कभी नहीं अपने माता और पिता वा आचार्य की आज्ञा पालन सदा करै परन्तु जो आज्ञा सत्यधर्म सम्बन्धी होय तो करै और जो धर्म विरुद्ध आज्ञा होय तो कभी न करै परन्तु सेवा के लिये जो माता पिता और आचार्य आज्ञा देवैं उसको अपने सामर्थ्य के योग्य जरूर करै और माता पिता धर्म सम्बन्धी श्लोकों को अथवा निघंटु वा अष्टाध्यायी को कण्ठस्थ करा देवैं परन्तु सत्य सत्य धर्म के विषय में और परमेश्वर के विषय में दृढ़ निश्चय करा देवैं जैसे कि पहिले प्रकरण में परमेश्वर के विषय में लिखा है वैसा उसी को उपासना में दृढ़ निश्चय करा देवैं और वस्त्र धारने की यथावत् शिक्षा कर देवैं जैसा कि धारना चाहिये भोजन की भी जितनी क्षुधा होय इस्से कुछ न्यून भोजन करैं जिस्से कि उनके शरीर में रोग न होय गहरे जल में कभी

स्नान के लिये प्रवेश न करैं क्योंकि जो गम्भीर जल होगा और तरना न जानेगा तो डूब के मर जायगा अथवा जलजन्तु होगा तो खालेगा वा काटलेगा इस्से दुःखही होगा सुख कभी न होगा इसमें मनुस्मृती का प्रमाण भी है ॥ नाविज्ञातेजलाशये। इस्का यह अभिप्राय है कि जिस जल की परीक्षा यथावत् जो न जाने सो स्नान के लिये उसमें प्रवेश कभी न करै किन्तु जल के तट पै बैठ के स्नान करै और बहुत कूदना फांदना न करै जिस्से कि हाथ पैर टूट जाय ऐसा न करै और मार्ग में जब चले तब नीचे दृष्टि करके चलैं क्योंकि कांटा और नीचा ऊंचा जीवजंतु देखके चलै जल को छान के पिये और बचन को बिचार के सत्यही बोले जो कुछ कर्म करै उसको पहिले बिचारही के आरंभ करै इस्से क्या सुख वा दुःख हानि वा लाभ होगा किस रीति से इसको करना चाहिये कि जिस रीति से परिश्रम तो न्यून होय और उसकी सिद्धि अवश्य होय इस रीति से बिचार करके कर्म का आरम्भ करना चाहिये इसमें मनुस्मृति के बचन का प्रमाण भी है ॥ दृष्टिपूतंन्यसेत्पादं वस्त्रपूतंजलंपिबेत्। सत्य पूतांवदेद्वाचं मनःपूतंसमाचरेत् ॥ दृष्टिपूतं नाम आंख से देख देख के आगे चले, वस्त्रपूतं नाम वस्त्र से छान के जल को पीवै क्योंकि जल में केश अथवा तृण वा जीव रहते हैं छानने से शुद्ध होजाता है इस्से जल छानही के पीना चाहिये, सत्यपूता म्वदेद्वाचम् नाम सत्य से दृढ़ निश्चय करके यही कहना सत्य है तब बिचार करके मुख से निकालना चाहिये क्योंकि बचन निकाला जो गया सो जो मिथ्या होजायगा तब बुद्धिमान् लोग उसको जान लेंगे कि यह बिचारशून्य पुरुष है इस्से बिचार करके सत्यही कहना चाहिये, मनःपूतंसमाचरेत् नाम मनसे बिचार करके कर्म का आरम्भ करना चाहिये कि भविष्यत्काल में इसका फल क्या होगा ऐसा जो बिचार करके कर्म न करेगा

उसको पश्चातापही होगा और सुख न होगा इस्से जो कुछ करना चाहिये सो विचार के करना चाहिये इस रीति से आठ वर्षतक बालकों को शिक्षा होनी चाहिये जो कुछ और शिक्षा लिखी है सत्य भाषणादिक सो तो सब को करना उचित है जिन के सन्तान सुशिक्षित होंगे वेही सुख पावेंगे और जिनके सन्तान सुशिक्षित न होंगे वे कभी सुख न पावैंगे यह बाल शिक्षा तो कुछ कुछ शास्त्रों के आशयों से लिख दी परन्तु सब शिक्षा का ज्ञान जब वेदादिक सत्य शास्त्रों को पढ़ेंगे और विचारेंगे तब होगा इसके आगे ब्रह्मचर्याश्रम और गुरु शिष्य को शिक्षा लिखी जायगी उसी के भीतर पढ़ने पढ़ाने की शिक्षा भी लिखी जायगी ॥ इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषाविरचिते द्वितीयःसमुल्लासः सम्पूर्णः ॥ २ ॥

अथाध्ययनाध्यापानविधिंव्याख्यास्यामः । आठ वर्ष का पुत्र और कन्याओं को पाठशाला में पढ़ने के लिये आचार्य के पास भेज देवैं अथवा पांचवे वर्ष भेजदेवैं घरमें कभी न रक्खैं परंतु ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य इनके बालकों का यज्ञोपवीत घरमें होना चाहिये पिता यथावत् यज्ञोपवीत करै पिताही उनको गायत्री मन्त्र का उपदेश करै गायत्री मन्त्र का अर्थ भी यथावत् जना देवै गायत्री मन्त्र में जो प्रथम ॐकार है उसका अर्थ प्रथम समुल्लास में लिखा है वैसाही जान लेना ॥ भूरितिवै-प्राणः भुवरित्यपानः स्वरितिव्यानः । यह तैत्तिरीयोपनिषद का वचन है ॥ प्राणयतिचराचरञ्जगत्सप्राणः । जो सब जगत् के प्राणों का जीवन कराता है और प्राण से भी जो प्रिय है इस्से परमेश्वर का नाम प्राण है सो भूः शब्द प्राण का वाचक है और भुवः शब्द से अपान अर्थ लिया जाता है ॥ अपानयति सर्वंदुःखंसोपानः । जो मुमुक्षुओं को और मुक्तों को सब दुःखसे छोड़ा के आनन्द स्वरूप रक्खै इस्से परमेश्वर का नाम अपान

है सो अपान भुवः शब्द का अर्थ है व्यानयतिसव्यानः। जो सब जगत् के विविध सुख का हेतु और विविध चेष्टा का भी आधार इस्से परमेश्वर का नाम व्यान है सो व्यान अर्थ स्वः शब्द का जानना तत् यह द्वितीया का एक बचन है सवितुः षष्ठी का एक बचन है वरेण्यं द्वितीया का एक बचन है॥ भर्गः २ का एक बचन है॥ देवस्य ई का एक बचन है धीमहि क्रिया पद है धियः द्वितीया का बहुबचन है यः प्रथमा का एक बचन है नः षष्ठी का बहु बचन है, प्रचोदयात् क्रिया पद है, सविता शब्द का और देव शब्द का अर्थ प्रथम समुल्लास में कह दिया है वहीं देख लेना॥ वर्तुमर्हंवरेण्यं। नाम अति श्रेष्ठम् भर्गो नाम तेजः तेजोनाम प्रकाशः प्रकाशोनाम विज्ञानम् वर्तुंनाम स्वीकार करने को जो अत्यन्त योग्य उसका नाम वरेण्य है और अत्यन्त श्रेष्ठ भी वह है धी नाम बुद्धि का है नः नाम हमलोगों की प्रचोदयात् नाम प्रेरयेत् हे परमेश्वर हेसच्चिदानन्दानन्त स्वरूप हेनित्य शुद्धबुद्ध मुक्त स्वभाव हेकृपानिधे हेन्यायकारिन्हेअज हे निर्विकार हेनिरञ्जन हेसर्वान्तर्यामिन् हेसर्वाधार हेसर्वजगत्पितः हेसर्वजगदुत्पादक हेअनादे हेविश्वम्भर सवितुर्देवस्य तवयद्वरेण्यं भर्गः तद्वयंधीमहि तस्य धारणं वयं कुर्वीमहि हेभगवन् यः सविता देवः परमेश्वरः सभवान् अस्माकंधियः प्रचोदयादित्यन्वयः हे परमेश्वर आप का जो शुद्ध स्वरूप ग्रहण करने के योग्य जो विज्ञान स्वरूप उसको हम लोग सब धारण करैं उसका धारण ज्ञान उसके ऊपर विश्वास और दृढ़ निश्चय हमलोग करैं ऐसी कृपा आप हम लोगों पर करैं जिस्से कि आप के ध्यान में और आप की उपासना में हम लोग समर्थ होंय और अत्यन्त श्रद्धालु भी होंय जो आप सविता और देवादिक अनेक नामों के वाच्य अर्थात अनन्त नामों के अद्वितीय जो आप अर्थ हैं नाम सर्वशक्तिमान् सो आप हमलोगों की बुद्धियों

को धर्म विद्या मुक्ति और आप की प्राप्ति में आपही प्रेरणा करैं कि बुद्धि सहित हम लोग उसी उक्त अर्थ में तत्पर और अत्यन्त पुरुषार्थ करने वाले होंय इस प्रकार की हम लोगों की प्रार्थना आप से है सो आप इस प्रार्थना को अङ्गीकार करैं यह संक्षेप से गायत्री मन्त्र का अर्थ लिख दिया परन्तु उस गायत्री मन्त्र का बेद में इस प्रकार का पाठ है ॥ ॐभूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्व्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् । इस मन्त्र को पुत्रों को और कन्याओं को भी कण्ठस्थ करा देवें और इसका अर्थ भी हृदयस्थ करादेवें परंतु कन्या लोगों को यज्ञोपवीत कभी न कराना चाहिये और संस्कार तो सब करना चाहिये योगशास्त्र को रीति से प्राणों के और इन्द्रियों के जीतने के लिये उपाय का उपदेश करैं सो यह योगशास्त्र का सूत्र है ॥ प्रच्छर्द्दनविधारणाभ्यांवाप्राणस्य । इसका यह अर्थ है कि छर्द्दन नाम वमन का है जैसे कि मक्खी वा और कुछ पदार्थ खाने से उदर से मुख द्वारा अन्न बाहर निकल जाता है और प्रकृष्टञ्चतच्छर्द्दनञ्च प्रच्छर्द्दनम् अत्यन्त जो बल से वमन का होना उसका नाम प्रच्छर्द्दन है ॥ विधारणंनाम विरुद्धञ्चतद्धारणञ्च विधारणम् । जैसे कि उस अन्न का धारण पृथिवी में होता है उसको देख के घृणा होती है तो ग्रहण की इच्छा कैसे होगी कभी न होगी यह दृष्टान्त हुआ परन्तु दृष्टान्त इसका यह है कि नाभि के नीचे से अर्थात मूलेन्द्रिय से लेके धैर्य से अपान वायु को नाभि में लेआना नाभि से अपान को और समान को हृदय में लेआना हृदय में दोनों वे और तीसरा प्राण इन तीनों को बल से नासिका द्वार से बाहर आकाश में फेंक देना अर्थात जो वायु कुछ नासिका से निकलता है और भीतर जाता है उन सब का नाम प्राण है उसको मूलेन्द्रिय नाभि और उदर को ऊपर उठाले तब तक वायु न निकले पीछे हृदय में इकट्ठा करके

जैसे कि वमन में अन्न बाहर फेंका जाता है वैसे सब भीतर के वायु को बाहर फेंक दे फिर उसको ग्रहण न करै जितना सामर्थ्य होय तब तक बाहरही वायु को रोक रक्खै जब चित्त में कुछ क्लेश होय तब बाहर से वायु को धीरे धीरे भीतर लेजाय फिर उसको वैसाही बारम्बार २० बार भी करेगा तो उसका प्राण वायु स्थिर होजायगा और उसके साथ चित्त भी स्थिर होगा बुद्धि और ज्ञान बढ़ेगा बुद्धि इस प्रकार की तीव्र होगी कि बहुत कठिन विषय को भी शीघ्र जान लेगी शरीर में भी बल पराक्रम होगा और वीर्य भी स्थिर होगा तथा जितेन्द्रियता होगी सब शास्त्रों को बहुत थोड़े काल में पढ़लेगा इस्से यह दोनों उपदेशों को यथावत् अपने सन्तानों को करदे फिर उस्को आचमन का उपदेश करै हाथ में जल लेके गायत्री मन्त्र मन से पढ़के तीनबार आचमन करै ॥ अंगुष्ठमूलस्यतले ब्राह्मन्तीर्थं प्रचक्षते । कायमङ्गुलिमूलेऽग्रे दैवंपित्र्यंतयोरधः ॥ अंगुष्ठ मूल के नीचे तल नाम हथेली का जो मध्य है उस्का नाम ब्राह्मतीर्थ है कनिष्ठिका के मूल में जो रेखा है उसका नाम प्राजापत्य तीर्थ है अंगुलियों का जो अग्रभाग है उसका नाम देवतीर्थ है तर्जनी और अंगुष्ठ इन दोनों के मूल जो बीच है उसका नाम पितृतीर्थ है आचमन समय में ब्राह्मतीर्थ से आचमन करै इतने जल से आचमन करै कि हृदय के नीचे पर्यन्त वह जल जाय उस्से क्या होता है कि कण्ठ में कफ और पित्त कुछ शान्त होगा फिर गायत्री मन्त्र को तो पढ़ता जाय और अंगुली से जल का छींटा शिर और नेत्रादिकों के ऊपर देवे इस्से क्या होगा कि निद्रा और आलस्य न आवेगा जैसे कि कोई पुरुष को निद्रा और आलस्य आता होय तो जलके छींटा से निवृत्त हो जाता है तैसे यहां भी होगा पीछे गायत्री मन्त्र से उपस्थान करै उपस्थान नाम परमेश्वर की प्रार्थना और अघमर्षण करै

अघमर्षण उसका नाम है कि पाप करने की इच्छा भी न करना चाहिये संक्षेप से संध्योपासन कह दिया परन्तु यह दोनों बात एकान्त में जाके करना चाहिये क्योंकि एकान्त में चित्त की एकाग्रता होती है और परमेश्वर की उपासना भी यथावत् होती है इसमें मनुस्मृति का प्रमाण भी है ॥ अपांसमीपेनियतो नैत्यकंविधिमास्थित: । सावित्रीमप्यधीयीत गत्वाऽरण्यंसमाहित: ॥ इसका यह अभिप्राय है कि जल के समीप जाके और जितनी आचमन प्राणायामादिक क्रिया उनको करके बनके शून्य देश में बैठके गायत्री को मनसे यथावदुच्चारण करके एक एक पद का अर्थ चिन्तन करके और प्राणायाम से प्राण चित्त और इन्द्रियों की स्थिरता करके परमेश्वर की प्रार्थना और स्वरूप विचार से उक्त रीति से उसमें मग्न होजाय नाम समाधिस्थ होजाय ऐसेही नित्य दो बार द्विज लोक प्रात:काल और सायङ्काल करैं एक घण्टा तक तो अवश्यही करैं इससे बहुत सा सुख और लाभ भी होगा फिर वह पुत्रों को अग्निहोत्र का आचार सिखावै एक चतुष्कोण मिट्टी की वा तांबे की बेदि रच ले ☐ ऊपर चौड़ी नीचे छोटी ऊपर तो १२ अंगुल नीचे चार ४ अंगुल रहै ऐसी रचके चन्दन वा पलाश आम्रादिक श्रेष्ठ काष्ठों को लेके उस बेदि के परिमाण से खण्ड खण्ड कर लेवै वेदी अच्छी शुद्ध करके उस बेदी में काष्ठों को यथावत् रक्खै उसके बीच मे अग्नि रखदे उसके ऊपर फिर काष्ठ रख दे रख कर अग्नि प्रदीप्त करै और एक चमसा रचले हाथ की कोणी से कनिष्ठिका के अग्रपर्यन्त परिमाण से और इस प्रकार की प्रोक्षणीपात्र रचले ⊂⊃ । उससे डेढ़ा प्रणीता पात्र रचले—[] एक घृत पात्र रचले ० प्रणीता में तो जल रक्खै पीछे उसमें से जब जब कार्य होय तब तब प्रोक्षणी में प्रणीता से जल लेके चमसा को और घृत के पात्र को नित्य शुद्ध करै

और कुशा को भी रखले जब जब होम करने का समय आवे तब सब पात्र को शुद्ध करके घृतपात्र में घृत को लेके अङ्गारों के ऊपर तपावे फिर उतार के आंख से देखके उसमें कुछ केश वा और जीव पड़े हों तो उनको कुशाग्र से निकाल देवे पीछे अग्नि को प्रदीप्त करके चमसा में घृत को लेके ॐभूरग्नयेस्वाहा इदमग्नये इदन्नमम । इस मन्त्र से जो काष्ठ अग्नि से प्रदीप्त होय उसके बीच में एक आहुति देवे ॥ ॐभुवर्वायवेस्वाहा इदं वायवे इदन्नमम । इससे दूसरी आहुति देवे । ॐस्वरादित्याय स्वाहा इदमादित्याय इदन्नमम । इससे तीसरी आहुति देवे ॥ ॐभूर्भुवः स्वः अग्निवाय्वादित्येभ्यःस्वाहा इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः इदन्नमम । इससे चौथी आहुति देनी ॥ ॐसर्वंवैपूर्णंस्वाहा । इससे पांचवी आहुति देवे ॥ और जो अधिक होम करना होय तो गायत्री मन्त्र से करदे ऐसेही संध्योपासन के पीछे नित्य दो वार अग्निहोत्र सब करैं ॐकार भू आदिक और अग्न्यादिक जितने इन मन्त्रों में नाम हैं वे सब परमेश्वरही के हैं उनका अर्थ प्रथम प्रकरण में कह दिया है वहां जान लेना चाहिये और जो इसमें तीन वार पाठ है सो प्रथम जो अग्नयेस्वाहा इसका यह अर्थ है कि जो कुछ करना सो परमेश्वर के उद्देशही से करना इदमग्नये दूसरा जो पाठ है उसका यह अभिप्राय है कि सब जगत् परमेश्वर के जनाने के लिये है क्योंकि कार्य जो होता है सो कारणही वाला होता है इदन्नमम यह जो तीसरा पाठ है सो इस अभिप्राय से है कि यह जो जगत है सो मेरा नहीं है किन्तु परमेश्वरही का रचा है किस लिये कि हम लोगों के सुख के लिये परमेश्वर ने कृपा करके सब पदार्थ बनाये हैं हम लोग तो भृत्यवत् हैं परमेश्वरही इस जगत् का स्वामी है क्योंकि जो जिसका पदार्थ होता है उसका वही स्वामी होता है और जो इन मन्त्रों में स्वाहा शब्द है

उसका यह अर्थ है स्वम् आह सा स्वाहा अथवा स्वा नाम स्वकीया वाक् आह सा स्वाहा स्वम् नाम अपना जो हृदय सो सत्यही है जैसा जो कर्त्ता है वैसाही सो जानता है आह नाम कहने का है जैसा कि हृदय में होय वैसाही वाणी से कहै ऐसी परमेश्वर की आज्ञा है संध्योपासन अग्निहोत्र तर्पण बलि वैश्व देव और अतिथि सेवा पंच महा यज्ञों के प्रयोजन पीछे लिखेंगे अग्निहोत्र के आगे तर्पण करैं॥ नित्यं स्नात्वा शुचिः कुर्याद्देव-र्षिपितृतर्पणम्। यह मनुस्मृति का बचन है॥ अथदेवतर्पणम् ॐब्रह्मादयोदेवास्तृप्यन्ताम् १ ॐ ब्रह्मादिदेवपत्न्यस्तृप्यन्ताम्॥१॥ ॐ ब्रह्मादिदेवसुतास्तृप्यन्ताम् १ ॐ ब्रह्मादिदेवगणास्तृप्यन्ताम् १ इतिदेवतर्पणम्। अथर्षितर्पणम्। ॐ मरीच्यादयऋषयस्तृप्यन्ताम् २ ॐ मरीच्याद्यृषिपत्न्यस्तृप्यन्ताम् २ ॐ मरीच्याद्यृषिसुतास्तृप्यन्ताम् २ ॐ मरीच्याद्यृषिगणास्तृप्यन्ताम् २ इत्यृषितर्पणम्। अथ पितृतर्पणम्। ॐ सोमसदः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ वर्हिषदः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ हविर्भुजः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ आज्यपाः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ सुकालिनः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ यमादिभ्योनमः यमादींस्तर्पयामि ३ ॐ पित्रे स्वधानमः पितरन्तर्पयामि ३ ॐ पितामहायस्वधानमः पितामहन्तर्पयामि ३ ॐ प्रपितामहायस्वधानमः प्रपितामहन्तर्पयामि ३ ॐ मात्रे स्वधानमः मातरंतर्पयामि ३ ॐ पितामह्यैस्वधानमः पितामहींस्तर्पयामि ३ ॐ प्रपितामह्यै स्वधानमः प्रपितामहींस्तर्पयामि३ ॐ अस्मत्पत्न्यैस्वधानमः अस्मत्पत्नींस्तर्पयामि ३ ॐ सम्बन्धिभ्योमृतेभ्यः स्वधानमः सम्बन्धीन्मृतांस्तर्पयामि ३ ॐ सगोत्रेभ्योमृतेभ्यः स्वधा नमः सगोत्रान्मृतांस्तर्पयामि ३ इतितर्पणविधिः। पित्रादिकों में जो कोई जीता होय उसका तर्पण न करै और जितने मरगये होय उनका तो अवश्य करै॥ उद्धृतेदक्षिणेपाणा वुपवीत्युच्यते-

द्विजः । सव्ये प्राचीनआवीति निवीतिःकण्ठसज्जने॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अर्थ है कि जैसे वामस्कन्ध के ऊपर यज्ञोपवीत सदा रहताही है परन्तु उस यज्ञोपवीत को दहिने हाथ के अंगुठा में लगाले इस क्रिया के करने से द्विजों का नाम उपवीती होता है सो सब देव कर्मों को उपवीती होके करैं पूर्वाभिमुख होके देवतर्पण करै और देवतीर्थ से कण्ठ में जब यज्ञोपवीत रक्खै और दोनों हाथ के अंगुष्ठा मे यज्ञोपवीत को लगाने से द्विजों की निवीति संज्ञा होती है ब्राह्मतीर्थ से उत्तराभिमुख होके ऋषि तर्पण करना चाहिये और दक्षिण-स्कन्ध में यज्ञोपवीत रक्खै और वाम अंगुष्ठ में यज्ञोपवीत लगाने से द्विजों का नाम प्राचीनावीती होता है दक्षिणाभिमुख प्राचीनावीति और पितृतीर्थ से पितृकर्म तर्पण और श्राद्धकरना चाहिये देवतर्पण में एक बार मन्त्र पढ़के एक अंजलि देवैं ऋषि तर्पण में दोबार मन्त्र पढ़के दो अंजलि देवैं दूसरी बार मन्त्र पढ़के दूसरी अंजलि देवै और पितृतर्पण में एक बार मन्त्र पढ़के एक अंजलि देवै दूसरी बार मन्त्र पढ़के दूसरी अंजलि देवै और तीसरी बार मन्त्र पढ़के तीसरी अंजलि देवै ॥ अथवलिवैश्वदेवम् । वैश्वदेवस्यसिद्धस्य गृह्येऽग्नौविधिपूर्वकम् । आभ्यःकुर्याद्देवताभ्यो ब्राह्मणोहोममन्वहम् ॥ ओं अग्नयेस्वाहा ओं सोमाय स्वाहा ओं अग्नीषोमाभ्यांस्वाहा ओं विश्वेभ्योदेवेभ्यःस्वाहा ओं धन्वन्तरयेस्वाहा ओं कुह्वैस्वाहा। ओं अनुमत्यैस्वाहा ओं प्रजापतयेस्वाहा ओं सहद्यावापृथिवीभ्योस्वाहा । मृत्तिका की चतुष्कोण वेदी वा तांबे की रचके लवणान्न को छोड़के जो कि भोजन के लिये पदार्थ बना होय उससे उसमें दशाहुति देवैं ⬚ पीछे इस प्रकार की रेखाओं से कोष्ठ रचके यथा क्रमसे उस २ दिशाओं में भागों को रखदे अपनी २ जगह में ओं सानुगायेन्द्रायनमः इससे पूर्वदिशा में भागदेना ओं सानुगाययमायनमः । दक्षिण

दिशा में भाग रक्खै ओं सानुगायवरुणायनमः। इस मन्त्र से पश्चिम दिशा में भाग रक्खै ओं सानुगायसोमायनमः। इस मन्त्र से उत्तर दिशा में भाग रक्खै ओं मरुद्भ्योनमः। इस मन्त्र से द्वार में भाग रक्खै ओंअद्भ्योनमः। इस मन्त्र से वायव्यकोण में भाग रक्खै ओं वनस्पतिभ्योनमः। इस मन्त्र से अग्निकोण में भाग रक्खै ओं श्रियैनमः। इस मन्त्र से ऐशान्यकोण में भाग रक्खै ओं भद्रकाल्यैनमः। इस मन्त्र से नैर्ऋत्यकोण में भाग रक्खै ओं ब्रह्मपतयेनमः। ओं वास्तुपतयेनमः॥ इन दो मन्त्रों से कोठा के बीच में भाग रक्खै ओं विश्वेभ्योदेवेभ्योनमः। ओं दिवाचरेभ्योभूतेभ्योनमः। ओं नक्तंचारिभ्योभूतेभ्योनमः। इन मन्त्रों से ऊपर हाथ करके कोष्ठ के बीच में तीनों भाग रख देवै ओं सर्वात्मभूतयेनमः। इस मन्त्र से कोष्ठ के पीछे भाग रक्खै अपसव्य करके ओं पितृभ्यःस्वधानमः इस मन्त्रसे कोष्ठ के भीतर दक्षिणदिशा में भाग रक्खै इन सोलहों भागों को इकट्ठा करके अग्नि में रखदे श्वभ्योनमः पतितेभ्योनमः श्वपग्भ्योनमः पाप रोगिभ्योनमः वायसेभ्योनमः कृमिभ्योनमः। इन छः मन्त्रों से शाक दाल इत्यादिक सब अन्न मिला के भूमि में छः भाग को रखके कुत्ता वा मनुष्यादिकों को देवै॥ इति बलिवैश्वदेवम्।

इसके पीछे अतिथि की सेवा करनी चाहिये अतिथि दो प्रकार के हैं एक तो विद्याभ्यास करने वाले दूसरे पूर्ण विद्यावाले नाम त्यागी लोग जो कि पूर्ण विद्यावाले पूर्ण वैराग्य और पूर्णज्ञान सत्यवादी जितेन्द्रिय भोजन के समय प्राप्त जो होय उनका सत्कार अन्न जल और आसनादिकों से करै पीछे गृहस्थ लोग भोजन करें वा साथ में भोजन करावें अथवा भोजन के पीछे भी आवै तो भी सत्कार करना चाहिये नित्य पंच महायज्ञ करना चाहिये इनके करने में क्या प्रयोजन है इसका यह उत्तर है कि जिस्से इनको करना चाहिये प्रथम तो जिसका

नाम संध्योपासन है सो ब्रह्मयज्ञ है उसके दो भेद हैं पढ़ना पढ़ाना जप परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना यह सब मिलके ब्रह्मयज्ञ कहाता है इसका फल तो बहुत लोग जानते हैं और कुछ लिख भी दिया है अब लिखना आवश्यक नहीं इसके आगे दूसरा अग्निहोत्र है और अग्निहोत्र का करना अवश्य है अग्निहोत्र से किस की पूजा होती है उत्तर परमेश्वर की पूजा होती है और संसार का उपकार होता है अग्निहोत्र में जितने मन्त्र हैं वे तो परमेश्वर के स्वरूप स्तुति प्रार्थना और उपासना के वाचक हैं इस्से परमेश्वर की उपासना आती है और संसार का इस्से क्या उपकार है कि वेद ब्राह्मण और सूत्र पुस्तकों में चार प्रकार के पदार्थ होम के लिखे हैं एक तो जिसमें सुगन्ध गुण होय जैसे कि कस्तूरी केशरादिक और दूसरा जिसमें मिष्ट गुण होय जैसे कि मिश्री शर्करादिक और तीसरा जिसमें पुष्टिकारक गुण होय जैसा कि दूध घी और मांसादिक और चौथा जिसमें रोग निवृत्तिकारक गुण होय जैसा कि वैद्यकशास्त्र की रीति से सोमलतादिक औषधियां लिखी हैं उन चारों का यथावत् शोधन उनका परस्पर संयोग और संस्कार करके होम करैं सायं और प्रातः क्योंकि संध्याकाल और प्रातःकाल में मलमूत्र त्याग सब लोग प्रायः कर्त्ते हैं उसका दुर्गन्ध आकाश और वायु में मिलके वायु को दुष्ट करदेता है दुष्ट वायु के स्पर्श से अवश्य मनुष्यों को रोग होता है जैसे कि जहां २ मेला होता है जिस जिस स्थान में दुर्गन्ध अधिक है उस २ स्थान में रोग अधिक देखने में आता है और दुर्गन्ध और दुष्ट वायुसे जिस्को रोग होता है वही पुरुष उस स्थान को छोड़ के जहां सुगन्ध वायु होय उस स्थान में जाने से रोग की निवृत्ति देखने में आती है इस्से क्या निश्चित जाना जाता है कि दुर्गन्ध युक्त वायु से बहुत से रोग होते हैं

सब लोगों के मलसे जितना दुर्गन्ध होगा जब सब लोग उक्त सुगन्धादिक द्रव्यों का अग्नि में होम करेंगे उस दुर्गन्ध को निवृत्त करके वायु को शुद्ध करदेगा उस्से मनुष्यों का बहुत उपकार होगा रोगों के न होने से फिर वे सुगन्धादिकों के परमाणु मेघमण्डल और जलमें जाके मिलेंगे उनके मिलने से सबको शुद्ध करदेंगे जोकि सूर्य की उष्णता का सुगन्ध दुर्गन्ध जल तथा रस के संयोग होने से सब अवयवों को भिन्न २ कर देता है जब अवयव भिन्न २ होते हैं तब लघु होजाते हैं लघु होने से वायु के साथ ऊपर चढ़ जाते हैं जहां पृथ्वी से ऊपर ५० क्रोश तक वायु अधिक है इस्से ऊपर वायु थोड़ा है उन दोनों के सन्धि में वे सब परमाणु रहते हैं उस्से नीचे भी कुछ रहते हैं जब की सुगन्ध दुर्गन्ध जल को वा रस को हमलोग मिलाते हैं तब वह पदार्थ मध्यस्थ होता है वैसाही वह जल मध्यस्थ होता है जब सुगन्धादिक गुण युक्त जो धूम है उसके परमाणु में अधिक तो जल है तथा अग्नि कुछ पृथ्वी वायु और ये चार मिले हैं परन्तु वेभी वैसे सुगन्धादिक गुण युक्त हैं वे जब मध्यस्थ जल के परमाणु में जाके मिलते हैं तब उनको सुगन्धादिक गुणयुक्त कर देते हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं और जो कोई इस विषय में ऐसी शंका करै कि वह जल तो बहुत है होम के परमाणु थोड़े हैं कैसे उस सब जल को वे शुद्ध करेंगे उस्का यह उत्तर है कि जैसे बहुत से शाक में अथवा बहुत सो दाल में थोड़ी सी सुगन्धित इलायची इत्यादिक और थोड़ा सा घी करछुल में वा पात्र में रखके अग्नि में तपाने से जब वह जलता है तब धूम उठता है फिर उसको दाल के पात्र में मिला के मुख बन्द करदे और छौंक देदे वह सब धूम जल होके सब अंशों में मिल जाता है फिर वह सुगन्ध और स्वादयुक्त होता है वैसेही थोड़े भी होम के परमाणु सब मध्यस्थ जल के पर-

माणु को शुद्ध करदेंगे फिर जब उसी जल की दृष्टि होगी और वही जल भूमि पर आवैगा उस जल के पीने से वा स्नान करने से रोग की निवृत्ति होजायगी और बुद्धि बल पराक्रम नैरोग्य बढ़ेंगे वैसेही उसी जल से अन्न घास वृक्ष और फल दूध घी इत्यादिक जितने पदार्थ होंगे वे सब उत्तमही होंगे उनके सेवने से भी जितने जीव हैं वे सब अत्यन्त सुखी होंगे और जो होम करने वाले हैं वे भी अत्यन्त सुख पावेंगे इस लोक में अथवा परलोक में क्योंकि अग्नियुक्त सुगन्ध के परमाणु को नासिका द्वार से जब भीतर मनुष्य ग्रहण करता है मल मूत्र त्याग समय में दुर्गन्ध युक्त जितने परमाणु मस्तक में प्राप्त हुये थे उनको निकाल देंगे वा सुगन्धित करदेंगे तब उस मनुष्य के शरीर में सर्दी और आलस्य न होंगे उस्से फूर्त्ति और पुरुषार्थ बढ़ेंगे पुष्प वा अतर के सुगन्ध से यह फल न होगा क्योंकि इस सुगन्ध में अग्नि के परमाणु मिले नहीं वे सब जगत् के उपकारक हैं इस्से उनको भी अवश्य सुख रूप उपकार होगा उस पुण्य से और जब अश्वमेधादिक यज्ञ होय तब तो असंख्य सब जीवों को सुख होय इस्से सब राजा धनाढ्य और विद्वान् लोग इसका आचरण अवश्य करैं॥ तर्पण और श्राद्ध में क्या फल होगा इसका यह समाधान है कि॥ तृप प्रीणने प्रीणनं तृप्तिः। तर्पण किसका नाम है कि तृप्ति का और श्राद्ध किसका नाम है जो श्रद्धा से किया जाता है मरे भये पिचादिकों का तर्पण और श्राद्ध करता है उस्से क्या आता है कि जीते भये को अन्न और जलादिकों से सेवा अवश्य करनी चाहिये यह जाना गया दूसरा गुण जिनके ऊपर प्रीति है उनका नाम लेके तर्पण और श्राद्ध करेगा तब उसके चित्तमें ज्ञान का संभव है कि जैसे वे मरगये वैसे मुझको भी मरना है मरण के स्मरण से अधर्म करने में भय होगा धर्म करने में प्रीति होगी

तीसरा गुण यह है कि दायभाग बांटने में सन्देह न होगा क्योंकि इसका यह पिता है इसका यह पितामह है इसका यह प्रपितामह है ऐसेही छः पीढ़ी तक सभों का नाम कण्ठस्थ रहैगा वैसेही इसका यह पुत्र है इसका यह पौत्र है इसका यह प्रपौत्र है इस्से दायभाग में कभी भ्रम न होगा चौथा गुण यह है कि विद्वानों का श्रेष्ठ धर्मात्माओं होको निमन्त्रण भोजन दान देना चाहिये मूर्खों को कभी नहीं इस्से क्या आता है कि विद्वान् लोग आजीविका के बिना कभी दुःखी न होंगे निश्चिन्त होके सब शास्त्रों को पढ़ावैंगे और बिचारेंगे सत्य २ उपदेश करेंगे और मूर्खों का अपमान होने से मूर्खों को भी विद्या के पढ़ने में और गुण ग्रहण में प्रीति होगी पांचवां गुण यह है कि देवऋषि पितृ संज्ञा श्रेष्ठों की है देवसंज्ञा दिव्य कर्म करने वालों की है पठन पाठन करने वालों को तो ऋषि संज्ञा है और यथार्थ ज्ञानियों की पितृ संज्ञा है उनको निमन्त्रण देगा तब उनसे बात भी सुनेगा प्रश्न भी करेगा उस्से उनको ज्ञान का लाभ होगा छठवां प्रयोजन यह है कि श्राद्ध तर्पण सब कर्मों में वेदों के मन्त्रों को कर्म करने के लिये कण्ठस्थ रक्खेंगे इस्से उस पुस्तक का नाश कभी न होगा फिर कोई उस विद्या का बिचार करेगा तब पदार्थ विद्या प्रगट होगी उस्से मनुष्यों को बहुत लाभ होगा सातवां प्रयोजन यह है कि ॥ वसून्वदन्तिवैपितॄन् रुद्रांश्चैवपितामहान्। प्रपितामहांस्त्वादित्यान् श्रुतिरेषासनातनी ॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि वसु जो है सोई पिता है जो रुद्र है सोई पितामह है जो आदित्य है सोई प्रपितामह है ये तीनों नाम परमेश्वरही के हैं इस्से परमेश्वर होकी उपासना तर्पण से और श्राद्ध से आई पितृ कर्म में स्वधा जो शब्द है उसका यह अर्थ है कि स्वन्दधातीति स्वधा अपने जनों को ज्ञानादिकों से धारण करै अथवा पोषण करै उसका

नाम है स्वधा स्वधा नाम है परमेश्वर का किन्तु अपनेही पदार्थ को धारण करना चाहिये औरों के पदार्थ का धारण न करना चाहिये अन्याय से अथवा अपनेहीं पदार्थ से प्रसन्नता करनी चाहिये छल कपट वा परपदार्थ से पुष्टि की इच्छा न करनी चाहिये इस प्रकार का स्वाहा और स्वधा का अर्थ शतपथ ब्राह्मण पुस्तक में लिखा है इतने सात प्रयोजन तो कह दिये और भी बहुत से प्रयोजन हैं बुद्धिमान् लोग बिचार से जान लेवैं और बलि वैश्व देव का प्रयोजन तो होम के नाईं जान लेना फिर यह भी प्रयोजन है कि भोजन के समय बलि वैश्व देव करैंगे वेभी सुगन्ध से प्रसन्न हो जांयगे और वह स्थान सुगन्ध युक्त होने से मक्खी मच्छरादिक जीव सब निकल जांयगे उस्से मनुष्यों को बहुत सुख होगा यह प्रयोजन अग्निहोत्रादिक होम का भी जान लेना और अतिथि सेवा से बहुत गुणों को प्राप्ति होगी इत्यादिक बहुत से प्रयोजन हैं इस्से अपने पुत्रों को पिता सब उपदेश करदे उपदेश करके आचार्य के पास अपने सन्तानों को भेजदे कन्याओं की पाठशाला में पढ़ाने वाली और नौकर चाकर सब स्त्रीही लोग रहैं पांचवर्ष का बालक भी वहां न जाय वैसेही पुत्रों की पाठशाला में सब पुरुषही रहैं पुरुष की पाठशाला में पांचवर्ष की कन्या भी न जाय वे कन्या और पुत्र इनका परस्पर मेलभी न होय ॥ ब्राह्मणस्त्रयाणांवर्णानामुपनयनङ्कर्त्तुमर्हति । राजन्योद्वयस्यवैश्यो वैश्यस्यैवेतिशूद्रमपि कुलगुणसम्पन्नं मन्त्रवर्जमनुपनीत मध्यापयेदित्येके ॥ यह सुश्रुत के सूत्र स्थान के द्वितीयाध्याय का वचन है ब्राह्मण का अधिकार तीन वर्णों के बा[ल]कों को यज्ञोपवीत कराने का है क्षत्रिय को क्षत्रिय और [वैश्य] इन दो वर्णों के बालकों को यज्ञोपवीत कराने का [अधिकार] है और वैश्य को वैश्यवर्णही का यज्ञोपवीत कराने का [अधि]कार है और शूद्र

लोगों की कन्या भी कन्याओं के पाठशाला में पढ़ें शूद्रों के बालक यज्ञोपवीत के बिना सब शास्त्रों को पढ़ें परन्तु वेद की संहिता को छोड़के उनके जे आचार्य हैं वे प्रतिज्ञा पूर्वक नियम बांधें प्रथम तो काल का नियम करें॥ षट्त्रिंशदाब्दिकंचर्यं गुरौत्रैवेदिकंव्रतम्। तदर्द्धिकंपादिकंवा ग्रहणान्तिकमेववा॥ ब्रह्मचर्याश्रम का नियम २५।३०।४०।४४।४८ वर्ष तक है अथवा उसका अर्द्ध १८ अथवा ९ नववर्ष अथवा जबतक पूर्ण विद्या न होय तब तक यह मनुस्मृति का श्लोक है पूर्वोक्त सुश्रुत में शरीर की अवस्था धातुओं के नियम से ४ प्रकार की लिखी है॥ वृद्धिर्यौवनंसंपूर्णता किञ्चित्परिहाणिश्चेति। षोड़श वर्ष से २५ वर्ष तक धातुओं की वृद्धि होती है और २५ वर्ष से आगे युवाऽवस्था का प्रारम्भ होता है अर्थात सब धातु क्रमसे बलको ग्रहण करते हैं उनके बल की अवधि ४० वें वर्ष सम्पूर्ण होती है उत्तम पुरुष के ब्रह्मचर्य का नियम ४० वर्ष तक होता है और छान्दोग्य उपनिषद में ४४ वा ४८ वर्ष तक ब्रह्मचर्य जो कर्त्ता है वह पुरुष विद्या पराक्रम और सब श्रेष्ठ गुणों में उत्तमों में भी उत्तम होगा और ३० से ३६ वर्ष तक मध्यम ब्रह्मचर्य का नियम है और २५ से ३० वर्ष तक न्यून से न्यून ब्रह्मचर्य का नियम है इस्से न्यून ब्रह्मचर्य का नियम कभी न होना चाहिये जो कोई इस्से न्यून ब्रह्मचर्याश्रम करेगा अथवा कुछ भी न करेगा उस को धैर्यादिक श्रेष्ठ गुण कभी न होंगे सदा रोगी, भ्रष्टबुद्धि, विद्याहीन, कुत्सित, कर्मकारीही होगा क्योंकि जिसके धातुओं की क्षीणता और बिषमता शरीर में होगी उस मनुष्य को किसी रीति से सुख न [illegible] और कन्याओं का २० से २४ वर्ष तक उत्तम ब्रह्मचर्य [illegible] से १६ वर्ष से आगे २० वर्ष तक मध्यम ब्रह्मचर्याश्रम का [illegible] यह और १६ वें वर्ष से १७ वा १८ वर्ष तक अधम ब्रह्मचर्य का काल है १६ वर्ष से न्यून कन्याओं का ब्रह्म-

चर्य कभी न होना चाहिये जो कोई कन्या १६ वर्ष से न्यून ब्रह्मचर्याश्रम को करेगी वह विद्या, बुद्धि, बल, पराक्रम, धैर्यादिक गुणों से रहित और रोगादिक दोषों से युक्त होगी सदा दुःखी ही रहेगी इससे ब्रह्मचर्याश्रम पुरुषों को वा कन्याओं को न्यून कभी न करना चाहिये ॥ पञ्चविंशेततोवर्षे पुमान्नारीतु षोड़शे समत्वागतवीर्य्यौतौ जानीयात्कुशलोभिषक् ॥ यह सुश्रुत का वचन है इसका यह अर्थ है कि १६ वर्ष से न्यून कन्या का बिवाह कभी न करना चाहिये और २५ वर्ष से न्यून पुरुषों का भी न करना चाहिये और जो कोई इस बात का व्यतिक्रम करै कि १६ वर्ष से पहिले कन्याओं का बिवाह करै और २५ वर्ष से पहिले पुत्रों का बिवाह करै उसको राजा दंड दे उनके माता पिता को भी और जो कोई अपने सन्तानों को पाठशाला में पढ़ने के लिये न भेजै उसको भी राजा दण्ड देवै क्योंकि सब लोगों का सत्य व्यवहार और धर्म व्यवहार की व्यवस्था राजा ही के अधीन है जिस देश का जो राजा होय उसी को इस व्यवस्था को प्रीति से पालन करना चाहिये सो गुरु जो आचार्य यह प्रथम तो उक्त नियम को करावै आगे और नियमों को भी । ऋतंचस्वाध्याय प्रवचनेच सत्यञ्चस्वाध्याय प्रवचनेच तपश्चस्वाध्याय प्रवचनेच दमश्चस्वाध्याय प्रवचनेच शमश्चस्वाध्याय प्रवचनेच अग्नयश्चस्वाध्याय प्रवचनेच अग्निहोत्रञ्च स्वाध्याय प्रवचनेच अतिथयश्च स्वाध्याय प्रवचनेच मानुषञ्च स्वाध्याय प्रवचनेच प्रजाचस्वाध्याय प्रवचनेच प्रजनश्चस्वाध्याय प्रवचनेच प्रजातिश्च स्वाध्याय प्रवचनेच ॥ यह तैत्तिरीयोपनिषद् का वचन है ऋत नाम है यथार्थ और सत्य २ ज्ञान का ब्रह्मचारी लोग और अध्यापक लोग सत्य २ बात को प्रतिज्ञा करैं कि सत्य २ ही को मानेंगे मिथ्या को कभी नहीं और कभी असत्य को न सुनेंगे न कहेंगे स्वाध्याय नाम पढ़ना प्रवचन नाम पढ़ाना सत्य २ पढ़ेंगे

और सत्य २ पढ़ावेंगे सत्यही कर्म करेंगे और करावेंगे तप नाम धर्मानुष्ठान का है सदा धर्मही करेंगे और अधर्म कभी नहीं हम लोग जितेन्द्रिय होंगे किसी इन्द्रिय से कभी परपदार्थ और पर स्त्री ग्रहण न करेंगे इसका नाम दम है शम नाम अधर्म की मनसे इच्छा भी न करनी अग्नयश्च नाम अग्नि में जगत् के उपकार के लिये सदा हम लोग होम करेंगे अग्नि-होत्रञ्च नाम अग्निहोत्र का नियम सब दिन पालेंगे अतिथियों की सेवा सब दिन करेंगे मानुषञ्च नाम मनुष्यों में जैसा जिस्से व्यवहार करना चाहिये वैसाही करेंगे बड़ा छोटा और तुल्य इनको जैसा मानना चाहिये वैसा उसको मानेंगे और जिस रीति से प्रजा की उत्पत्ति करनी चाहिये प्रजा का व्यवहार और पालन जैसा करना चाहिये धर्म से वैसाही करेंगे प्रजनश्च नाम वीर्यप्रदान जो करेंगे सो धर्मही से करेंगे प्रजातिश्च नाम जैसा कि गर्भ का पालन करना चाहिये और जन्म के पीछे भी जैसा पालन करना चाहिये वैसाही पालन उसका करेंगे परन्तु ऋतादि करेंगे स्वाध्याय प्रवचन का त्याग कभी नहीं करेंगे स्वाध्याय पढ़ना प्रवचन नाम पढ़ाना ऋतादिकों का ग्रहणही पूर्वक स्वाध्याय और प्रवचन को सदा करना चाहिये इसका बिचार सब दिन करेंगे इसके छोड़ने से संसार की बहुत सी हानि होजाती है इस प्रकार से शिष्यों के प्रति पुरुष कन्याओं को स्त्री और पुरुषों को पुरुष शिक्षा करैं । वेदमनूच्याचार्योन्ते-वासिन मनुशास्ति सत्यम्वदधर्मंचर स्वाध्यायान्माप्रमदः आचा-र्याय प्रियंधनमाहृत्य प्रजातन्तुम्माव्यवच्छे त्सीः सत्यान्नप्रमदित-व्यम् धर्मान्नप्रमदितव्यम् कुशलान्नप्रमदितव्यम् स्वाध्यायप्रवचना भ्यांनप्रमदितव्यम् १ देवपितृकार्याभ्यांनप्रमदितव्यम् मातृदेवो-भव पितृदेवोभव आचार्यदेवोभव अतिथिदेवोभव यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि नोइतराणि यान्यस्माकंसुचरितानि

तानित्वयोपास्यानि नोइतराणि येकेचास्मच्छ्रेयां सोब्राह्मणास्तेषांत्वयासनेन प्रश्वसितव्यम् श्रद्धयादेयम् अश्रद्धयादेयम् श्रियादेयम् ह्रियादेयम् भियादेयम् संविदादेयम् अथयदितेकर्म विचिकित्सा वा वृत्त विचिकित्सावास्यात् ३ ये तत्रब्राह्मणाः सम्मदर्शिनः युक्ता अयुक्ताः अलुक्षाधर्मकामाः स्युः यथातेतत्रवर्तेरन् तथातत्रवर्त्तेथाः एषआदेश एषउपदेश एषावेदोपनिषत् एतदनुशासनम् एवमुपासितव्यम् एवमुचैतदुपास्यम् ११ यह तैत्तिरीयोपनिषद् का बचन है इसी प्रकार से गुरु लोग शिष्यों को उपदेश करैं हे शिष्य तूं सब दिन सत्यही बोल और धर्महीको कर स्वाध्याय नाम पढ़ने में जैसे तुमको बिद्या आवै वैसेही कर जब तक विद्या तुमको पूर्ण न होय तब तक ब्रह्मचर्य का त्याग न करना फिर जब बिद्या और ब्रह्मचर्य भी पूर्ण होजाय तब जैसा तुमारा सामर्थ्य होय वैसा उत्तम पदार्थ आचार्य को देके प्रसन्न करना चाहिये और आचार्य भी उनको शीघ्र बिद्या होय वैसाही करै केवल अपनी सेवा के लिये सब दिन श्रममें न रक्खैं कृपा करके विद्या पढ़ावैं छल कपट आचार्य लोग कभी न करैं क्योंकि सत्यगुणों का प्रकाशही करना उचित है सब शिष्ट लोगोंको जब ब्रह्मचर्य और पूर्ण विद्या भी हो जाय तब उनको बिवाह करना उचित है प्रजा का छेदन करना उचित नहीं और सत्य से प्रमाद न करना चाहिये अर्थात सत्य को छोड़ के असत्य से कोई व्यवहार न करना चाहिये धर्मही से सब व्यवहारों को करना चाहिये धर्म से बिरुद्ध कोई कर्म न करना चाहिये कुशलता को सब दिन ग्रहण करना चाहिये और दुराग्रह अभिमान को कभी न करना चाहिये नम्रता शरलता से सदा गुण ग्रहण करना चाहिये भूति नाम सिद्धि इनकी प्राप्ति में पुरुषार्थ सदा करना चाहिये और पढ़ने पढ़ाने से रहित कभी न होना चाहिये सब दिन पढ़ने पढ़ानेका पुरु-

कार्यही करना चाहिये देवकार्य नाम अग्निहोत्रादिक पितृकार्य नाम श्राद्ध तर्पणादिक उसको कभी न छोड़ना चाहिये माता पिता अतिथि और आचार्य इनकी सेवा कभी न छोड़नी चाहिये क्योंकि उनों ने जो पालन किया है वा विद्या दी है अथवा सत्य जो उपदेश करते हैं इस उपकार को कभी न भूलना चाहिये इनको अवश्य मानना चाहिये और जितने धर्मयुक्त कर्म हैं उनको करना चाहिये और पाप कर्मों को कभी न करना चाहिये माता पिता आचार्य और अतिथि भी शास्त्र प्रमाण से धर्म विरुद्ध जो उपदेश करैं अथवा पाप कर्म करावैं उनको कभी न करना चाहिये और उनके जो सुकर्म हैं उनको तो अवश्य करना चाहिये उनके जो दुष्टकर्म हैं उनको कभी न करना चाहिये वैसेही मातादिक उपदेश करैं कि हमलोग जो सुकर्म करैं उनको तो तुम लोगों को अवश्य करना चाहिये हमलोग जो दुष्टकर्म करैं उनको कभी न करना चाहिये जो मनुष्य लोगों के बीचमें विद्या वाले धर्मात्मा और सत्यवादी होंय उनका सब दिन सङ्ग करना चाहिये उनसे गुणग्रहण करना चाहिये उनके बचन में और उनमें अत्यन्त श्रद्धा करनी चाहिये शिष्य लोग जब सुपात्र और धर्मात्मा मिलें तब श्रद्धा से उनको जो प्रियपदार्थ हो उसको देवैं अथवा अश्रद्धा से भी देना चाहिये श्री नाम लक्ष्मी से देवैं दारिद्र्य होवै तो भी दान की इच्छा न छोड़नी चाहिये लज्जा और प्रतिज्ञा से भी देना चाहिये अर्थात् किसी प्रकार से देना चाहिये दान का बंधक भी न करना चाहिये परन्तु श्रेष्ठ सुपात्रों को देना चाहिये कुपात्रों को कभी नहीं किसी को अन्याय से दुःख न देना चाहिये सब लोगों को बन्धुवत् जानना चाहिये और सब लोगों से प्रीति करनी चाहिये किसी से विवाद न करना चाहिये सत्य का खण्डन कभी न करना चाहिये और जो तुमको किसी विषय

वा किसी पदार्थ विद्या में सन्देह होय तब तुम लोग ब्रह्मवित् पुरुषों के पास जाओ वे कैसे होंय कि सर्वशास्त्रवित् निर्वैर पक्षपात कभी न करैं वे युक्त अर्थात् योगी अथवा तपस्वी होंय रूक्ष नाम कठोर स्वभाव न होंय और धर्म काम में सम्पन्न होंय उनसे पूछ के संदेह निवृत्ति कर लेना वे जिस प्रकार से धर्म में वर्तमान करैं वैसाही तुमको धर्म में वर्त्तमान होना चाहिये यही आदेश है आदेश नाम परमेश्वर की आज्ञा है यही उपदेश है उपदेश नाम इसी का उपदेश कहना योग्य है यही वेदोपनिषत् है नाम वेदों का सिद्धान्त है और यही अनुशासन है अनुशासन नाम सुनियम और शिष्टाचार है ऐसेही धर्म की उपासना करनी चाहिये इसी प्रकार जानना भी चाहिये इसी प्रकार कहना भी चाहिये गुरु शिष्य को परस्पर ऐसा वर्त्तमान करना चाहिये ॐसहनाववतु सहनौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै तेजस्विना वधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॐ शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः सहनाम परस्पर रक्षा करैं गुरु तो शिष्यों की कुकर्मों से रक्षा करैं और शिष्य लोग गुरू की आज्ञा पालन और गुरू की सेवा से रक्षा करैं सहैव परस्पर भोग करैं अर्थात जो शिष्य लोग कोई उत्तम अन्न पान वस्त्रादिकों को प्राप्त होंय सो पहिले गुरू को निवेदन करके शिष्य लोग भोजनादिक करैं सहनाम परस्पर वीर्य को करैं वीर्य नाम पराक्रम नाम सत्य २ जो विद्या उसको बढ़ावैं जब गुरु यथावत् परिश्रम से विद्या दान करैंगे तब उनको भी विद्या तीव्र होगी शिष्य लोग यथावत् परिश्रम से और सुविचार से विद्या ग्रहण करैंगे तब उनकी भी सत्य २ विद्या तीव्र होगी ऐसे सब गुरु शिष्य विचार करैं कि हम लोगों का पढ़ना पढ़ाना तेजस्वी नाम प्रकाशित होय जिसका शिष्य विद्यावान् नहीं होता उसका जो गुरू है उसी की निन्दा होती है बहुत से एक गुरू के पास पढ़ते हैं उनमें

से कितने तो विद्यावान् होते हैं और कितने नहीं गुरु तो यथावत् पढ़ावेंगे और कोई शिष्य यथावत् विद्या को ग्रहण न करेगा तब तो उस शिष्य की निन्दा होगी इस से इस प्रकार का पढ़ना पढ़ाना करना चाहिये कि सत्य २ विद्या का प्रकाश होय और अविद्या जो अन्धकार उसका नाश होय॥ कामात्मतान-प्रशस्ता नचैवेहास्त्यकामता। काम्योहिवेदाधिगमः कर्मयोगश्च वैदिकः॥ मनुष्यों को विषयों में जो कामात्मता नाम अत्यन्त कामना सो श्रेष्ठ नहीं और अकामता नाम कोई पदार्थ की इच्छा भी न करनी वह भी श्रेष्ठ नहीं क्योंकि विद्या का जो होना सो इच्छाही से है धर्म विद्या और परमेश्वर की उपासना की तो कामना अवश्यही करना चाहिये क्योंकि॥ काम्योहिवेदाऽधिगमः। वेद विद्या की जो प्राप्ति है सो कामनाऽधीनही है और वैदिक कर्म जितने हैं वेभी कामनाऽधीनही हैं इस से श्रेष्ठ पदार्थों की कामना सदा करनी चाहिये और अश्रेष्ठ पदार्थों की कामना कभी नहीं॥ सङ्कल्पमूलः कामोवैयज्ञाः सङ्कल्पसम्भवाः व्रतानियमधर्माश्चसर्वे सङ्कल्पजाः स्मृताः काम का मूल सङ्कल्प है अर्थात सङ्कल्पही से काम की उत्पत्ति होती है हृदय से वाह्य पदार्थ की प्राप्ति की सूक्ष्म जो इच्छा उसको सङ्कल्प कहते हैं ब्रह्मचर्यादिक जितने व्रत हैं वे भी कामही से सिद्ध होते हैं पांच प्रकार के यम होते हैं अहिंसा सत्यास्तेय ब्रह्मचर्या परिग्रहायमाः। यह योगशास्त्र का सूत्र है इसका यह अर्थ है कि अहिंसा नाम कोई से कभी वैर न करना सत्य जैसा हृदयमें है वैसाही वचन कहना अस्तेय नाम चोरी का त्याग बिना आज्ञा से किसी का पदार्थ न ग्रहण करनाब्रह्मचर्य नाम विद्या बल बुद्धि पराक्रम को यथावत् प्राप्ति करनी अपरिग्रह नाम अभिमान कभी न करना धर्म नाम न्याय का न्याय नाम पक्षपात का त्याग करना जैसे कि अपना प्रिय पुत्र भी दुष्ट कर्म के

करने से मारा जाता होय तोभी मिथ्या भाषण न करै॥ अकामस्यक्रियाकाचि दृश्यतेनेहकर्हिचित्। यद्यद्धिकुरुतेकिञ्चित्तत्तत्कामस्यचेष्टितम्॥ जिस पुरुष को कामना न होय तो उसको नेत्रादिकों की कुछ चेष्टा भी न होय इस्से जो २ शरीर में कुछ भी चेष्टा होती है सो २ कामही से होती है ऐसाही निश्चय जानना इस्से क्या आया कि काम के बिना कोई भी शरीर धारण नही करसक्ता और खाना पीना भी नहीं कर सक्ता इसलिये श्रेष्ठ पदार्थों की कामना सब दिन करनीही चाहिये दुष्ट पदार्थों की कभी नहीं और जो पुरुषार्थ को छोड़ेगा सो तो पाषाण और काष्ठ की नांई होगा इस्से आलस्य कभी न करना चाहिये और पुरुषार्थ को छोड़ना भी नहीं॥ आचारःपरमोधर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त्त एवच। तस्मादस्मिन्सदायुक्तो नित्यंस्यादात्मवान्द्विजः॥ शास्त्र को पढ़के सत्य धर्मों का आचरण जो न करै उसका पढ़ना व्यर्थही है सोई परम धर्म है परन्तु वह आचार बेदादिक सत्य शास्त्रोक्त और मनुस्मृत्युक्तही लेना तिस हेतु से इस आचरण नाम धर्माचरण में द्विज लोग अर्थात सब मनुष्य लोग युक्त होंय॥ आचाराद्विच्युतोविप्रो नवेदफलमश्नुते। आचारेणतुसंयुक्तः संपूर्णफलभाग्भवेत्॥ जो पुरुष वेदोक्त आचार को नहीं करता उसका जो बिद्या का पढ़ना है उसका फल वह नहीं पाता और जो बेदादिकों को पढ़के यथोक्त आचार करता है उसको संपूर्ण सुख रूप फल होता है॥ योऽवमन्येततेमूले हेतुशास्त्राश्रयात्द्विजः। ससाधुभिर्बहिष्कार्यो नास्तिकोबेदनिन्दकः॥ कुतर्क से जो कोई मनुष्य श्रुति नाम बेद स्मृति नाम धर्मशास्त्र ये दोनों धर्म के प्रकाशक हैं और धर्म के मूल हैं इनको जो न मानै उसको सज्जन लोग सब अधिकारों से बाहर कर देवैं क्योंकि वह नास्तिक है जो बेद नाम बिद्या की निन्दा करता है सोई पुरुष नास्तिक होता है॥ बेदःस्मृतिःसदाचारः स्वस्यचप्रि-

यमात्मनः। एतच्चतुर्विधम्प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्॥ श्रुति स्मृति सत्पुरुषों का आचार और अपने हृदय की प्रसन्नता नाम जितने पाप कर्म हैं उनकी इच्छा जब पुरुषों को होती है तब उसी समय भय, शङ्का और लज्जा से हृदय में अप्रसन्नता होती है और जितने पुण्य कर्म हैं उनमें नहीं होती इस्से जिस २ कर्म में हृदय का अन्तर्यामी प्रसन्न होय वही धर्म है और जिसमें अप्रसन्न होय वही अधर्म जानना इसके उदाहरण चौरजारादिक हैं इसको साक्षाद्धर्म का ४ प्रकार का लक्षण कहते हैं॥ अर्थकामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानंविधीयते। धर्मजिज्ञासमानानां प्रमाणम्परमंश्रुतिः॥ जो मनुष्य अर्थोंमें नाम धनादिकों में आसक्त नाम लोभ नहीं कर्त्ते हैं और कामनाम विषयासक्ति में जो आसक्त नहीं नाम फसे नहीं हैं उन्हीं को धर्म का ज्ञान होता है अन्य को कभी नहीं परन्तु जिनको धर्म जानने को इच्छा होय वे वेदादिक शास्त्र पढ़ें और विचारैं उनको बिना पढ़ने से धर्म का यथार्थ ज्ञान न होगा॥ वेदास्त्यागश्चयज्ञाश्च नियमाश्चतपांसिच। नविप्रदुष्टभावस्य सिद्धिङ्गच्छन्तिकर्हिचित्॥ वेद, विद्या, त्याग, यज्ञ, नियम और तप इतने विप्र दुष्ट नाम अजितेन्द्रिय पुरुष को कभी सिद्ध नहीं होते। इस्से जितेन्द्रियता का होना सब मनुष्यों को आवश्यक है जितेन्द्रिय का लक्षण क्या है कि॥ श्रुत्वास्पृष्ट्वाचदृष्ट्वाच भुक्त्वाघ्रात्वाचयोनरः। नहृष्यतिग्लायतिवा सविज्ञेयोजितेन्द्रियः॥ जिस पुरुष को अपनी निंदा सुनके शोक न होय और अपनी स्तुति सुनके हर्ष न होय तथा दुष्टस्पर्श, दुष्टरूप, दुष्टरस और दुष्टगन्ध को पाके शोक न होय और श्रेष्ठस्पर्श, श्रेष्ठरूप, श्रेष्ठरस और श्रेष्ठगन्ध को प्राप्तहोके जिसको हर्ष नहीं होता उसको जितेन्द्रिय कहते हैं अर्थात सब मनुष्यों को यही योग्यता है कि न हर्ष करना चाहिये न शोक किन्तु न शोक में गिरै न हर्ष के मध्यही में सदा बुद्धि को रक्खै

यही सुखका स्थान है ॥ ब्रह्मारम्भेऽवसानेच पादौग्राह्यौगुरोः सदा। संहत्यहस्तावध्येयं सहिब्रह्माञ्जलिःस्मृतः ॥ जब शिष्य गुरू के पास पढ़ने का नित्य आरम्भ करैं तब आदि और अन्त में गुरू को नमस्कार और पादस्पर्श करैं जब तक पढ़ैं तथा गुरू के सन्मुख रहैं तब तक हाथही जोड़ के रहैं इसी का नाम ब्रह्माञ्जलि है जब गुरू उठै तब आपही पहिले उठै जो आप बैठा होय और गुरू आवैं तब अपने उठके सन्मुख जाके गुरू को शीघ्रही नमस्कार करै और उत्तम आसन पर बैठावै आप नीचे आसन पर बैठे और नम्र होके पूंछे अथवा सुनै ॥ नापृष्टःकस्यचिद्ब्रूया न्नचान्यायेनपृच्छतः। जानन्नपिहिमेधावी जड़वल्लोकआचरेत् ॥ जब तक कोई न पूंछे तब तक कुछ न कहै और जो कोई हठ, छल और कपट से पूंछे उस्से कभी न कहै जाने तो भी मूर्खों के सामने मौनही रहना ठीक है क्योंकि शठ लोग कभी न मानेंगे इस्से उनसे कहना व्यर्थही है ॥ अधर्मेणचयःप्राह यश्चाधर्मेणपृच्छति। तयोरन्यतरःप्रैति विद्वेषम्वाधिगच्छति ॥ जो कोई अधर्म से कहता और जो अधर्म से पूंछता है नाम छल, कपट, दोनों का विरोध होने से किसी का मरण अथवा विद्वेष होजाय तो अवश्य होगा इस्से गुरू शिष्य अथवा कोई मनुष्य जो इस शिक्षा को मानेगा और यथावत् करेगा उसको बड़ा सुख होगा ॥ आचार्यपुत्रःशुश्रूषु र्ज्ञानदोधार्मिकःशुचिः। आप्तःशक्तोऽर्थदःसाधुः स्वोध्याप्यादशधर्मतः ॥ आचार्य का पुत्र शुश्रूषु नाम सेवा का करने वाला तथा ज्ञान का देने वाला वा धार्मिक शुचि नाम पवित्र आप्त नाम पूर्ण काम और शक्त नाम समर्थ अर्थद नाम अर्थ का देनेवाला साधु नाम सत्य मार्ग में चलने वाला और सत्य का उपदेश करने वाला इन दश पुरुषों को विद्वान् धर्म और परिश्रम से पढ़ावै जिस्से कि वे विद्यावान् होंय क्योंकि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र

और उन सभों की स्त्री वे सब जब तक विद्या वाले न होंगे तब तक यथावत् बुद्धि, बल, पराक्रम, नैरोग्य और धर्म की उन्नति कभी न होगी आर्यावर्त्त देश की उन्नति तभी होगी जब विद्या का यथावत् प्रचार होगा और जब तक उक्त आचार में प्रवृत्त न होंगे तब तक सुख के दिन कभी न आवेंगे क्योंकि ब्राह्मण और सम्प्रदायिक लोग पढ़के यथावत् धर्म में निश्चित तो नहीं होते किन्तु अपनी २ आजीविका और अपना २ सम्प्रदाय जो वेद विरुद्ध पाखण्ड उनही को बढ़ावेंगे और जीविका के लोभ से सब दिन छल कपटही में रहेंगे कभी धर्म में चित्त न देंगे न धर्म को जानेंगे क्योंकि उनको पाखण्डही से सुख मिलता है इससे पाखण्डही को पढ़ावेंगे धर्म को कभी नहीं जब क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र पढ़ेंगे उनको आजीविका नाश का भय तो नहीं है इससे कभी छल कपट से असत्य न कहेंगे इससे सत्यही सत्य प्रवृत्ति होगी और वे क्षत्रियादिक जब तक न पढ़ेंगे तब तक आर्यावर्त्त देश बासियों के मिथ्याचार और पाखण्डों का नाश कभी न होगा जो राजा और जितने धनाढ्य लोग हैं उनको तो अवश्य सब शास्त्रों को पढ़ना चाहिये क्योंकि उनके पढ़े बिना कोई प्रकार से भी विद्या का प्रचार धर्म की व्यवस्था और आर्यावर्त्त देश की उन्नति कभी न होगी उनकी बहुतसी हानि भी होगी क्योंकि उनके अधिकार में राज्य धन और बहुत से पुरुष रहते हैं जब वे विद्यवान्, बुद्धिमान्, जितेन्द्रिय और धर्मात्मा होंगे तब उनके राज्य में धर्म और विद्या का प्रचार होगा उनका धन अनर्थ में कभी न जायगा और उनके सङ्गी सब श्रेष्ठ धर्मात्मा होंगे इससे सब देशस्थों का उपकार होगा केवल आर्यावर्त्त बासियों का नहीं किन्तु सब देशस्थ मनुष्यों को ऐसाही करना उचित है कि पक्षपात का छोड़ना सत्य का ग्रहण करना और जितने मत हैं वे सब मूर्खोंही के

कल्पित हैं और बुद्धिमानों का एकही मत अर्थात सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना है इस्से क्या आया कि जो लाभ विद्या के प्रचार से होता है ऐसा लाभ कोई अन्य प्रकार स नहीं होता ये सब श्लोक मनुस्मृति के हैं जो पढ़ना अथवा पढ़ाना सो शास्त्रोक्त प्रत्यक्षादिक प्रमाणों से सत्य २ परीक्षित करकेही पढ़ना और पढ़ाना भी ॥ इन्द्रियार्थ सन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमव्यपदेश्यमव्यभिचारि व्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम् ॥ यह गोतम मुनि का सूत्र है सो प्रत्यक्ष सब को अवश्य मानना चाहिये ॥ अक्षस्य २ प्रतिविषयंवृत्तिः प्रत्यक्षम् । अक्ष नाम इन्द्रिय का है इन्द्रिय इन्द्रिय के प्रति विषय ग्रहण करने वाली जो वृत्ति तज्जन्य जो ज्ञान उसको प्रत्यक्ष कहते हैं सो जब किसी बाह्य व्यवहार की जीव को इच्छा होती है तब मन को संयुक्त होके जीव प्रेरणा कर्त्ता है तब मन इन्द्रियों को अपने २ विषयों के प्रति प्रेरता है तब इन्द्रियों का और विषयों का सन्निकर्ष होता है अर्थात सम्बन्ध होता है सम्बन्ध किसका नाम है कि उन उन इन्द्रिय और विषयों का जो यथावत् वृत्ति नाम वर्तमान का होना अथवा ज्ञान का होना उसका नाम है सन्निकर्ष सन्निकर्षोवृत्तिर्ज्ञानं वा । यह वात्स्यायन भाष्य का बचन है इस पुस्तक में बारम्बार न लिखा जायगा परंतु ऐसा जानना कि जो कुछ लिखा जायगा सो गौतम सूत्रादि के अनुसारही से और वात्स्यायनादिक मुनि के भाष्यों के अभिप्राय से लिखा जायगा इसमें जिसको शङ्का अथवा अधिक जानना चाहे सो उन ग्रन्थों में देख ले वैसा प्रत्यक्षज्ञान ठीक २ यथावत् तत्त्वस्वरूप जानना उसके भिन्न जो होगा उसको भ्रम नाम अज्ञान कहा जायगा जैसे कि ॥ व्यवस्थित: पृथिव्यांगन्धः अप्सु रसः रूपन्तेजसि वायौ स्पर्शः । ये सूत्र और अभिप्राय वैशेषिक सूत्रकार मुनि के हैं इन्द्रियों से गुणही का ग्रहण होता है द्रव्य का कभी नहीं क्यों-

कि ॥ श्रोत्रग्रहणोयोऽर्थः सशब्दः। यह वैशेषिक का सूत्र है ऐसे सब सूत्र हैं हम लोग श्रोत्र नाम कर्णेन्द्रिय से शब्दही का ग्रहण कर्ते हैं और स्पर्शादिकों का नहीं ऐसेही स्पर्शेन्द्रिय से स्पर्शही का ग्रहण कर्ते हैं तथा नेत्र से रूप का जीभ से रस का और नासिका से गन्ध का ये शब्दादिक आकाशादिकों के गुण हैं गुणोंही को इन्द्रियों से ग्रहण करते हैं आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इनका ग्रहण इन्द्रियों से कभी नहीं होता मन से तो जीव आकाशादिकों का प्रत्यक्ष ग्रहण कर्त्ता है क्योंकि जो जिसका स्वाभाविक गुण है वह उस्से भिन्न कभी नहीं होता जैसे कि पृथ्वी का स्वाभाविक गुण गन्ध है सो पृथ्वी से भिन्न कभी नहीं रहता और गन्ध से पृथ्वी भी भिन्न नहीं रहती इन दोनों के सम्बन्ध से जीव को गन्ध के ज्ञान होने से पृथ्वी काभी प्रत्यक्ष होता है वैसेही रस, रूप, स्पर्श और शब्दों का जीभ, नेत्र, त्वक् और श्रोत्र से ग्रहण होने से जल, अग्नि, वायु और आकाश का भी मनसे जीव को प्रत्यक्ष होता है सो प्रत्यक्ष किस प्रकार का लेना कि पृथ्वी में जल, अग्नि और वायु के सम्बन्ध होने से रस, रूप और स्पर्श भी ये तीनों गुण देख पड़ते हैं परन्तु तीन गुण स्पर्शादिक वायु आदिकों के संयोग निमित्तही से हैं वैसेही जल में रूप और स्पर्श मिले हैं तथा अग्नि में स्पर्श और वायु में शब्द आकाश में कोई नहीं एक शब्दही अपना स्वाभाविक गुण है वायु में जो शब्द है सो आकाश के संयोग निमित्त से और जल में जो गन्ध है सो पृथ्वी के संयोग से है ऐसेही अन्यत्र जान लेना सो प्रत्यक्ष ज्ञान ऐसा लेना कि अव्यपदेश्य नाम संज्ञा से जो होता है जैसे कि घट एक पदार्थ की संज्ञा है इस संज्ञा से जिसका नाम कि घट है वह घट शब्द के उच्चारण से कि तू घड़े को ला जब वह घड़ा लेने को चला जिसवक्त उसने घड़े को देखा उस वक्त जो घट संज्ञा सो उस

को न देख पड़ी किन्तु जैसी घटकी आकृति और रूप वही तो देख पड़ा और घट शब्द नहीं फिर वह घड़े को लेके जिसने आज्ञा दी थी उसके पास घड़े को रखके बोला कि यह घड़ा है उसने घड़े को प्रत्यक्ष देखा परन्तु उसमें घड़ा ऐसा जो नाम उसको उसने भी न देखा के जो संज्ञा बिना पदार्थ मात्र का ज्ञान होना उसको अव्यपदेश्य कहते हैं और जो व्यपदेश्य ज्ञान है सो तो शब्द प्रमाण में है प्रत्यक्ष में नहीं और दूसरा प्रत्यक्ष ज्ञान का अव्यभिचारि यह विशेषण है सो जानना चाहिये व्यभिचारिज्ञान इस प्रकार का होता है कि अन्य पदार्थ में भ्रम से अन्यपदार्थ का ज्ञान होना जैसे कि लकड़ी के स्तम्भ में पुरुष का ज्ञान रज्जु में सर्पका सीपमें चांदी और पाषाणादि मूर्त्ति में देव का ज्ञान इत्यादिक ज्ञान सब व्यभिचारि हैं उस समय में तो यथार्थ भ्रमसे देखने में आते हैं परन्तु उत्तरकाल में स्तम्भादिकों का साक्षात् प्रत्यक्ष निर्भ्रम तत्त्वज्ञान के होने से पुरुषादिकों का जो भ्रम से ज्ञान हुआ था सो नष्ट होजाता है इससे क्या आया कि जिस ज्ञान का कभी व्यभिचारि नाम नाश न होय उसको कहते हैं अव्यभिचारि ज्ञान सो प्रत्यक्ष अव्यभिचारिही लेना अन्य नहीं और इस प्रत्यक्ष का तीसरा विशेषण व्यवसायात्मक है व्यवसाय नाम है निश्चय का और जो जिसका तत्त्व स्वरूप है उसका नाम है आत्मा जबतक उस पदार्थ का तत्त्व नाम स्वरूप निश्चय न होय तब तक व्यवसायात्म ज्ञान नहीं होता और जब उसके स्वरूप का यथावत् ज्ञान का निश्चय होता है उसको व्यवसायात्मक कहते हैं जैसे कि दूर से श्वेत बालुका देखी अथवा घोड़ा देखा उसके नेत्र से सम्बन्ध भो भया परन्तु उसके हृदय में निश्चय न हुआ कि यह वस्त्र अथवा बालू अथवा और कुछ है यह घोड़ा अथवा गैया अथवा और कुछ है जब तक यथावत् वह निकट से न देखेगा

तब तक सन्देह की निवृत्ति न होगी और जब तक सन्देह की निवृत्ति न होगी तब तक सन्देहात्मक नाम भ्रमात्मक ज्ञान रहेगा उसको प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं जानना और जो सत्य २ दृढ़ निश्चित तत्वज्ञान है उसको उक्त प्रकार से प्रत्यक्ष ज्ञान जानना इस प्रकार से थोड़ा सा प्रत्यक्ष के विषय में लिखा परंतु जिसको अधिक जानने की इच्छा होय सो षड्दर्शनों में देख लेवै इस्से आगे दूसरा अनुमान प्रमाण है॥ अथतत्पूर्वकं त्रिविधमनुमानं पूर्ववच्छेषवत्सामान्यतोदृष्टञ्च। यह गौतममुनि का सूत्र है अथ नाम प्रत्यक्ष लक्षण लिखने के अनन्तर अनुमान लक्षण का प्रकाश कर्ते हैं तत्पूर्वक नाम प्रत्यक्ष पूर्वक जिसमें पहिले प्रत्यक्ष का होना आवश्यक होय और अनुमान पीछे मान नाम ज्ञान होना उसका नाम अनुमान है सो अनुमान प्रत्यक्ष पूर्वकही होता है अन्यथा नहीं यह अनुमान तीन प्रकार का होता है एक तो पूर्ववत् दूसरा शेषवत् तीसरा सामान्य तो दृष्ट पूर्ववत् इसका नाम है कि जहां कारण से कार्य का ज्ञान होना जैसे बादल के बिना वृष्टि कभी नहीं होती सो बादलों की उन्नति गर्जना और विद्युत् इनको देखके अवश्य वृष्टि होगी ऐसा ज्ञान होता है तथा परमेश्वर के बिना सृष्टि कभी नहीं होती क्योंकि रचना करने वाले के बिना रचना कभी नहीं होती और बादल जो है सो वृष्टि का कारण है परमेश्वर जो है सो जगत् का कारण है यह पूर्ववत् अनुमान है और शेषवत् यह है कि जहां कार्य से कारण का ज्ञान होना जैसे कि पहिले नदी में थोड़ा प्रवाह वेग भी न्यून अथवा सूखी देखते थे फिर जब वह पूर्ण हुई देख के उसके प्रवाह का शीघ्र चलना वृक्ष काष्ठ घासादिक बहे जाते देख के अवश्य ज्ञान होता है कि वृष्टि ऊपर कहीं भई है इस संसार को रचना देख के अवश्य रचना करने वाला परमेश्वरही है इसका नाम शेषवत् अनुमान है तीसरा

सामान्य तो दृष्ट अनुमान है जैसे कि चलकेही स्थान से स्थानान्तर में जाता है किसी पुरुष को अन्य स्थान में कहीं बैठा देखा फिर दूसरे काल में अन्य स्थान में उसी पुरुष को बैठा देखा इस्से देखने वाले ने क्या जाना कि यह पुरुष इस स्थानसे चलकेही आया है क्योंकि बिना गमन स्थान से स्थानान्तर में कोई भी नहीं जा सक्ता ऐसा सामान्य से नियम है इस प्रकार का सामान्य से दृष्ट अनुमान है उसका गमन तो उसने देखा नहीं परन्तु उसको गमन का ज्ञान होगया अथवा पूर्ववत् नाम किसी स्थान में अग्नि नाम अङ्गारे को काष्ठादिकों में मिलाहुआ और उसमें धूम भी निकलता हुआ देखाया उसने जान लिया कि अग्नि और काष्ठादिकों का संयोग जब होता है तब धूम अवश्य निकलता है फिर किसी समय उसने दूर स्थान में धूम को देखा देखने से उसको ज्ञान भया कि वहां अग्नि अवश्य है इस प्रकार का अनेकबिधि पूर्ववत् अनुमान होता है सो जान लेना शेषवत् नाम किसी ने बुद्धि से बिचार करके कहा कि यह पुरुष उत्तम पण्डित है इस्से क्या आया कि अन्य ऐसा कोई पण्डित नहीं और मूर्ख भी बहुत से हैं इस स्थान में बिना कहने से ऐसा जाना गया ऐसे अन्य भी बहुत प्रकार का शेषवत् अनुमान जान लेना सामान्य दृष्ट नाम जैसे कि मनुष्य के शिर में प्रत्यक्ष शृङ्ग के नहीं देखने से अदृष्ट मनुष्यों के शिर में भी शृङ्ग का नहीं होना ऐसा निश्चित जाना जाता है इस्का नाम सामान्य से दृष्ट अनुमान है इस्से आगे तीसरा उपमान प्रमाण है॥ प्रसिद्ध साधर्म्यात्साध्यसाधनमुपमानम्। यह गौतम मुनि का सूत्र है प्रसिद्ध नाम प्रगट साधर्म्य नाम तुल्य धर्मता एक का दूसरे से होना साध्य नाम जिसको जनावै साधन नाम जिस्से जनावै जिसकी उपमा जिस्से की जाय उसका नाम उपमान प्रमाण है किसी ने किसी से पूछा कि गवय नाम नीलगाय

किस प्रकार की होती है उसने उसे उत्तर दिया कि जैसी यह गाय होती है वैसाही गवय होता है उसने उसके उपदेश को हृदय में रख लिया फिर उसने कभी कालान्तर में किसी स्थान में बन में वा अन्यत्र उस पशु को देखके जान लिया कि यही नीलगाय है क्योंकि गाय के तुल्य होने से ज्ञान का निश्चय होगया अथवा किसीने किसीसे कहा कि तू देवदत्त नाम मनुष्य के पास जा तब उसने उस्से पूछा कि देवदत्त कैसा है उसने उस्से कहा कि जैसा यह यज्ञदत्त है वैसाही देवदत्त है फिर वह वहां गया उसने यज्ञदत्त के तुल्य देवदत्त को देखके निश्चय जान लिया कि यही देवदत्त है तब देवदत्त ने कहा कि आपने मुझको कैसे जाना उसने कहा मुझसे किसी ने कहा था कि यज्ञदत्तही के समान देवदत्त है उस यज्ञदत्त के समान होने से आपको मैंने जान लिया इसका नाम उपमान प्रमाण है चौथा शब्द प्रमाण है ॥ आप्तोपदेशः शब्दः । यह गौतममुनि का सूत्र है ॥ आप्तः खलुसाक्षात् कृतधर्मा यथादृष्टस्यार्थस्य चिख्यापयिषया प्रयुक्त उपदेष्टा साक्षात् करण मर्थस्याप्तिस्तया प्रवर्तत इत्याप्तः ऋष्यार्यम्ले च्छानां समानंलक्षणम् ॥ यह वात्स्यायन मुनि का भाष्य है आप्त किसको कहते हैं कि साक्षात् कृतधर्मा जिसने निश्चय करके धर्मही कियाथा करता होय और करै अधर्म कभी नहीं और जिसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोकादिक दोषों का लेश कभी न होय विद्यादिक गुण सब जिसमें होंय बैर किसी से न होय पक्षपात कभी न करै और सब जीवों के ऊपर कृपा करै अपने हृदय में सत्य २ जानने से जैसा सुख भया वैसाही सब जीवों को सत्य २ उपदेश जनाने से सुख प्राप्त कराने की इच्छा से जो प्रेरित होके उपदेश करै और आप्ति उसका नाम है कि जो जैसा पदार्थ है उसका वैसाही ज्ञान का होना उस आप्ति से युक्त होय नाम सब काम जिसके पूर्ण होंय छल, कपट

और लोभ से जो कभी प्रवृत्त न होय किन्तु एक परमेश्वर की आज्ञा जो धर्म और सब जीवों के कल्याण के उपदेश की इच्छा जिसको होय उसको आप्त कहते हैं सब आप्तों में भी आप्त परमेश्वर है उस आप्त परमेश्वर का और उस प्रकार के उक्त आप्त मनुष्यों का जो उपदेश है शब्द प्रमाण उसको कहते हैं उसी का प्रमाण करना चाहिये इनसे विपरीत मनुष्यों के उपदेश का कभी प्रमाण न करना चाहिये आप्त कोई देश विशेष में होता है अथवा सब देशों में होता है इसका यह उत्तर है कि ऋष्यार्यम्लेच्छानांसमानंलक्षणम्। ऋषि नाम यथार्थ मंत्रद्रष्टा यथार्थ पदार्थों के विचार के जानने वाले उत्तर में हिमालय और दक्षिण में विन्ध्याचल पूर्व में समुद्र और पश्चिम में समुद्र इन चारों के अवधि पर्यन्त देश में रहने वाले मनुष्यों का नाम आर्य्य है इस देश से भिन्न देशों में रहनेवाले मनुष्यों का नाम म्लेच्छ है म्लेच्छ नाम निन्दित नहीं है किंतु म्लेच्छअव्यक्तेशब्दे। इस धातु से म्लेच्छ शब्द सिद्ध होता है उसका अर्थ यह है कि जिन पुरुषों के उच्चारण में वर्णों का स्पष्ट उच्चारण नहीं होता उनका नाम म्लेच्छ है सब देशों में और सब मनुष्यों में आप्त होने का सम्भव है असम्भव कभी नहीं अर्थात् ऋषि आर्य्य और म्लेच्छ इनमें आप्त अवश्य होते हैं क्योंकि जो किसी मनुष्यों में उक्त प्रकार का लक्षण वाला मनुष्य होगा उसी का नाम आप्त होगा यह नियम नहीं है कि इस देश में होय और अन्य देश में न होय आर्य्य नाम है श्रेष्ठ का और जो हिन्दू नाम इनका रक्खा है सो मुसल्मानों ने ईर्षा से रक्खा है उसका अर्थ है दुष्ट, नीच, कपटी, छली और गुलाम इससे यह नाम भ्रष्ट है किंतु आर्य्यों का नाम हिन्दु कभी न रखना चाहिये॥ आसमुद्रात्तुवैपूर्वादासमुद्रात्तुपश्चिमात्। तयोरेवान्तरंगिर्य्योरार्य्यावर्त्तम्विदुर्बुधाः॥ आर्य्यैरावर्त्तः सआर्य्यावर्त्तः जो

देश आर्य्यों से नाम श्रेष्ठों से आवर्त्त नाम युक्त होय उसका नाम आर्य्यावर्त्त देश है सो देश हिमालयादिक अवधि से कह दिया सो जान लेना वह शब्द प्रमाण दो प्रकार का होता है सू० सद्विधोदृष्टाऽदृष्टार्थत्वात्। जिस शब्द का अर्थ प्रत्यक्ष देख पड़ता है सो तो दृष्टार्थ शब्द है और जिस शब्द का श्रवण तो प्रत्यक्ष होता है और उसका अर्थ प्रत्यक्ष देखने में नहीं आता उसका नाम अदृष्टार्थ शब्द है जैसे कि स्वर्गादिक शब्दों का अर्थ देखने में नहीं आता इस प्रकार के शब्द का नाम अदृष्टार्थ शब्द है दृष्टार्थ शब्द यह है कि जैसा पृथिव्यादिक इतने प्रत्यक्षादि के ४ प्रकार के भेद हैं एक तो प्रमाता होता है कि जो पदार्थ को प्रमाणों से जान लेता है जिसका नाम जीव है प्रमाणों का करने वाला प्रमिणोति सप्रमाता येनार्थं प्रमिणोतितत्प्रमाणम् जिस्से अर्थ को यथावत् जाने उसका नाम प्रमाण है प्रत्यक्षादिक तो कह दिये जैसे कि नेत्र से जीव जो है सो रूप को जान लेता है योऽर्थः प्रतीयतेतत्प्रमेयम्। जिसको प्रतीति होती है उसका नाम प्रमेय है जैसा कि रूप नेत्र से देखा गया यदर्थविज्ञानंसा प्रमितिः। जो अर्थ का यथावत् तत्त्व विज्ञान होना उसका नाम प्रमिति है प्रमाता प्रमाण, प्रमेय, और प्रमिति इन चार प्रकार की विद्या को भी यथावत् जान लेना चाहिये और भी ४ प्रकार की जो विद्या है उसको जानना चाहिये हेयम् नाम त्याग करने के जो योग्य होय जैसे कि अधर्म और ग्राह्य नाम ग्रहण करने के योग्य जैसा कि धर्म दूसरा तस्यनिवर्तकम् नाम हेय जो अधर्म उसकी निवृत्ति का जो ज्ञान से करना और पुरुषार्थ से तस्य प्रवर्तकम् ग्राह्य जो धर्म उसकी जो प्रवृत्ति हृदय में विचार से और पुरुषार्थ से होनो तीसरा हानमात्यन्तिकम् जो हेय अधर्म का अत्यन्त त्याग कर देना पुरुषार्थ से और विचार से स्थान मान मात्यन्तिकम् नाम ग्राह्य जो धर्म उसकी दृढ़स्थिति हृदय

में हो जानी कि हृदय और आचरण से धर्म का नाश कभी न होय चौथा तस्योपायोऽधिगन्तव्यः । हेय जो अधर्म उसके त्याग के उपाय को प्राप्त होना और धर्म के ग्रहण के उपाय को प्राप्त होना वह उपाय सत्पुरुषों का सङ्ग, श्रेष्ठबुद्धि और सद्विद्या के होने से प्राप्त होता है इतने ४ अर्थ पद होते हैं इनका सम्यक् जानने से निःश्रेयस जो मोक्ष नाम नित्यानन्द परमेश्वर की प्राप्ति और जन्म मरणादिक दुखों की अत्यन्त निवृत्ति होजाती है इस्से इस ४ प्रकार की विद्या को भी सज्जनों को अवश्य जानना चाहिये ४ प्रकार के जो प्रमाण हैं उनका विषय लिखा गया और इनकी परीक्षा भी संक्षेप से इस्से आगे लिखी जाती है सो जान लेना ॥ प्रत्यक्षादी नाम प्रामाण्यं त्रैकाल्यासिद्धेः । इत्यादिक परीक्षा में गोतममुनि प्रणीत सूत्रोंही को लिखेंगे सो आप लोग जान लेवैं प्रत्यक्षादिकों का प्रमाण नहीं है क्योंकि तीन कालों की असिद्धि के होने से पूर्वा पर सहभाव नियम के भङ्ग होने से कि पहिले प्रमाण होता है वा प्रमेय देखना चाहिये कि पहिले जो प्रमाण सिद्ध होय और पीछे प्रमेय तो बिना प्रमेय के प्रमाण किसका होगा वा पहिले प्रमेय होय प्रमाण पीछे होय तो बिना प्रमाण के प्रमेय कैसे जाना जायगा और जो सङ्ग में दोनों का ज्ञान होय तो बिना प्रमेय से प्रमाण की उत्पत्तिही नहीं इस्से किसी प्रकार से भी प्रत्यक्षादिकों का प्रमाण नहीं होसक्ता तथाहिपूर्वंहि प्रमाणसिद्धौनेन्द्रियार्थसन्निकर्षात्प्रत्यक्षोत्पत्तिः । यह गोतममुनि का सूत्र है जैसे कि गन्धादि विषय का जो प्रत्यक्ष ज्ञान सो गन्धादिकों का और नासिकादिक इन्द्रियों का सम्बन्ध होने से प्रत्यक्ष की उत्पत्ति होती है अन्यथा नहीं और जो कोई कहै कि पहिले प्रमाण की उत्पत्ति होती है पीछे प्रमेय की अच्छा तो गन्धादिकों का तो सम्बन्ध भी उत्पन्न नहीं भया उनके सम्बन्ध के

बिना प्रत्यक्ष की उत्पत्तिही नहीं होती फिर इन्द्रियार्थ सन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमित्यादि प्रत्यक्ष का जो लक्षण किया है सो व्यर्थ हो जायगा क्योंकि आप ने प्रमाण की उत्पत्ति प्रमेय के सम्बन्ध से पूर्वही मानी है इस्से आपके मतमें यह दोष आवेगा अच्छा तो मैं प्रमेयों के सम्बन्ध के पीछे प्रमाणों की उत्पत्ति मानता हूं फिर क्या दोष आवेगा अच्छा सुनो सूत्र ॥ पश्चात्सिद्धौनप्रमाणेभ्यः प्रमेयसिद्धिः। पहिले प्रमेय की सिद्धि मानेंगे तो प्रमाणोंही से प्रमेय की सिद्धि होती है यह जो आप का कहना सो मिथ्या होजायगा जो आप एक सङ्ग प्रमाण और प्रमेय मानेंगे तो भी यह दोष आवेगा सूत्र ॥ युगपत्सिद्धौप्रत्यर्थनियतत्त्वात्क्रमवृत्तित्त्वाभावोबुद्धीनाम्। यह जो बुद्धि है सो एक विषय को जान कर दूसरे विषय को जान सक्ती है दोनों को एक समय में नहीं जान सकती जैसे कि एक वस्त्र को देखा देख के जब रूप की बुद्धि होती है तब इतना यह वस्त्र भारी है उसको न जानैगी और जब भार का मन बिचार करता है तब रूपका नहीं कर सकता जब रूप का तब भार का नहीं ॥ सूत्र। युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसोलिङ्गम्। एक काल में दोनों ज्ञान को न ग्रहण करै किन्तु एक को ग्रहण करके फिर दूसरे को ग्रहण करै उसी का नाम मन है वैसेही प्रमाण और प्रमेय एककाल में दोनों का ज्ञान कभी नहीं होता जिस समय प्रमाण का ज्ञान होता है उस समय प्रमेय का नहीं जिस समय प्रमेय का ज्ञान होता है उस समय प्रमाण का नहीं यह सब जीवों को अनुभव सिद्ध बात है इस बात में आप के कहने से दोष आवेगा ऐसा भी कहना आप को उचित नहीं इस पूर्वपक्ष का यह समाधान है कि ॥ सूत्र। उपलब्धिहेतोरुपलब्धिविषयस्यचार्थस्यपूर्वापरसहभावानियमाद्यथादर्शनविभागवचनम् ॥ भाष्य उपलब्धि का हेतु नाम प्रकाशक जिस्से कि ज्ञान होता

है और उपलब्धि का विषय जिसका ज्ञान होता है जैसा कि घटादिक इनका पूर्वा पर सह भाव नाम यह इस्से पूर्व वा यह पर ऐसा नियम नहीं सर्वत्र देखने में आता इस्से जैसा जहां योग्य होय वैसा वहां लेना चाहिये देखना चाहिये कि सूर्य का दर्शन तो पीछे होता है और दो घड़ी रात्रि से पहिलेही प्रकाश हो जाता है उस्से वस्त्रादिक पदार्थों का पहिलेही दर्शन होजाता है जब दीप को जलाते हैं तब दीप का दर्शन तो पहिले होता है फिर दीप के प्रकाश से अन्य सब पदार्थों का दर्शन पीछे होता है सूर्य और दीप अपना प्रकाश आपही करते हैं और अन्य पदार्थों का भी एक कालमें प्रकाश करते हैं यह तो दृष्टान्त हुआ वैसाही प्रमाणों के दृष्टान्त में जानना चाहिये कहीं तो पहिले प्रमाण होता है कहीं प्रमेय अन्य समय में दोनों एकही सङ्ग में होते हैं जैसे कि ॥ सूत्र। त्रैकाल्यासिद्धेः प्रतिषेधानुपपत्तिः। आपने प्रत्यक्षादिक प्रमाणों का जो निषेध किया सो तीनों कालों को मान के किया अथवा नहीं जो आप भूत काल नाम बीते भये कालमें प्रमाणों की सिद्धि न मानेंगे तो आपने निषेध किसका किया और जो भविष्यत्काल में होने वाले प्रमाणों का आपने निषेध किया तो प्रमाण उत्पन्न भी नहीं भये पहिले निषेध कैसे होगा और जो वर्तमान कालमें प्रत्यक्षादि प्रमाण सिद्ध हैं तो सिद्धों का निषेध कोई कैसे करेगा ॥ सूत्र। सर्वप्रमाणप्रतिषेधाच्च प्रतिषेधानुपपत्तिः। किसी प्रमाण को आप न मानेंगे तो आपके प्रतिषेध की प्रमाण से सिद्धि कैसे होगी जब प्रतिषेध में कोई प्रमाण नहीं है तब प्रतिषेध अप्रमाण होगा तब कोई शिष्ट इस प्रमाण के निषेध को न मानेगा वह आप का निषेधही व्यर्थ होगया इस्से आप को भी प्रमाणों को अवश्य मानना चाहिये ॥ सूत्र। त्रैकाल्याप्रतिषेधश्च शब्दादातोद्यसिद्धिवत्तत्सिद्धेः

तीन कालों का निषेध नहीं हो सकता जैसे कि बीण अथवा वांसुलि वा कोई वादित्र कोई दूर बजाता होय उनका शब्द दूसरे सुनके पूर्व सिद्ध वादित्र को जान लिया जाता है कि यह वीणा का शब्द है और जब वीणा देखो तब भविष्यत्काल में जो होने वाला शब्द उसको जान लिया कि वीण आगे बजाने से शब्द होगा और जब सन्मुख बीण को और उसके शब्द को भी एक काल में देखता और सुनता है तब वीण और वीण के शब्द को भी जान लेता है वैसीही व्यवस्था प्रमाणों की जान लेना ॥ सूत्र । प्रमेयताचतुलाप्रामाण्यवत् । जैसे कि तुला पदार्थों के तौलने के लिये प्रमाण की नाईं है तुलासेही घृतादिक द्रव्यों को तौल के प्रमाण कर लेते हैं इसमें तुला तो प्रमाण स्थानी है और घृतादिक प्रमेय स्थानी हैं परन्तु वही तुला दूसरी तुला से तौली जाय तब प्रमेय संज्ञा भी उसको होती है वैसेही जब प्रत्यक्षादिक प्रमाणों से रूपादिक विषयों को चक्षुरादिकों से हम लोग देखते हैं तब तो प्रत्यक्षादिक और चक्षुरादिक प्रमाण हैं रूपादिक विषय प्रमेय हैं और जब प्रत्यक्षादिक क्या होते हैं ऐसी आकांक्षा होगी तब वेही प्रमेय हो जांयगे क्योंकि ऐसे लक्षण वाले को प्रत्यक्ष प्रमाण कहना और ऐसा लक्षण जिसका होय वह अनुमान होता है इत्यादिक सब जान लेना तीन प्रकार से शास्त्र की प्रवृत्ति होती है १ एक उद्देश, २ दूसरा लक्षण, और ३ तीसरी परीक्षा, उद्देश इसका नाम है कि नाम मात्र से पदार्थ की गणना करनी जैसा कि द्रव्य गुण कर्म सामान्य विशेष और समवाय लक्षण इसका नाम है कि निश्चित जो जिसका धर्म है उससे पृथक् कभी न होय जैसा कि पृथिवी में गन्ध जलमें रस इत्यादिक गन्धही पृथिवी को जनाता है और गन्धही से पृथिवी जानी जाती है गन्ध रसादिकों से विशेष है और गन्ध से रसादिक

विशेष हैं परस्पर ये गन्धादि वे निवर्तक और ज्ञापक हो जाते हैं इसे गन्ध पृथ्वी का लक्षण है और रसादिक जलादिकों के लक्षण हैं। गन्ध का लक्षण नासिका, नासिका का लक्षण मन, मन का लक्षण आत्मा, आत्मा का लक्षण भी आत्माही है और कोई नहीं लक्षण का भी लक्षण होता है वा नहीं लक्षण का लक्षण कभी नहीं होता जो कोई लक्षण का लक्षण कहता है सो मूर्ख पुरुष है वा जिसने ग्रन्थ में लिखा है वह भी मूर्ख पुरुष है क्योंकि पृथ्वी का लक्षण गन्ध है गन्ध का लक्षण नासिका सो नासिका के प्रति गन्ध लक्ष्य है क्योंकि नासिकाही से गन्ध जाना जाता है और नासिका मन से जानी जाती है इसे नासिका का लक्षण मन है नासिका मन का लक्ष्य है मन का लक्षण आत्मा है क्योंकि आत्माही से मन जाना जाता है आत्मा के प्रति मन लक्ष्य है क्योंकि मेरा मन सुखी वा दुःखी है सो आत्मा मन कोही जान के कहता है इसे मन आत्मा का लक्ष्य है आत्मा और परमात्मा परस्पर लक्ष्य और लक्षण हैं क्योंकि आत्मा परमात्मा को जान सक्ता है और अपने को आप भी जान लेता है तथा परमात्मा सब काल में आत्माओं को जानता है और आप को भी आप सदा जानता है वे अपने आपही के लक्ष्य और लक्षण भी हैं इसे आगे जो तर्क करना है सो मूढ़ही का धर्म है क्योंकि इसके आगे जो तर्क कुतर्क करता है उसका ज्ञान और बुद्धि नष्ट होजाती है इसे सज्जनों को और बुद्धिमानों को अवश्य जानना चाहिये कि यही ज्ञान की परम सीमा है और यही परम पुरुषार्थ है जो कोई लक्षण का लक्षण कहता है उसके मत में अनवस्था दोष प्रसङ्ग आवेगा कहीं भी अवस्था न होगी क्योंकि लक्षण का लक्षण उसका लक्षण २ ऐसा वाद करता २ मर जायगा कुछ हाथ नहीं आवेगा और जैसा कि लक्षण का लक्षण करता है वैसा लक्ष्य का लक्ष्य

उसका लक्षण २ यह भी अनवस्था दूसरी उसके मतमें आवेगी इस्से बुद्धिमानों को ऐसी बात न कहनी चाहिये और न सुननी चाहिये कुछ थोड़ी सी प्रमाणों के बिषय में परीक्षा लिख दी है और अधिक जानने की जिसको इच्छा होय वह गोतमसूत्र के २ ध्याय से लेके ५ पंचमाध्याय की पूर्त्ति पर्य्यन्त देख लेवै इतने ४ प्रमाण हैं परन्तु ४ चारों में और ४ चार प्रमाण मानना चाहिये॥ नचतुष्ट्वमैतिह्यार्थापत्तिसम्भवाभावप्रामाण्यात्। यह गोतममुनि का पूर्वपक्ष का सूत्र है ४ चारही प्रमाण नहीं किन्तु ८ आठ प्रमाण हैं ऐतिह्य नाम जो बहुत काल से सुनते सुनाते चले आये उसका नाम ऐतिह्य है अर्थापत्ति किसी ने किसी से कहा कि बादल के होनेही से दृष्टि होती है इस्से क्या आया कि बिना बादल से दृष्टि नहीं होती इसका नाम अर्थापत्ति है सम्भव नाम मण के जानने से आधा मण पसेरी सेर और छटांक को जो बिचार से ज्ञान होजाय उसका नाम सम्भव है क्योंकि मण ४० सेर का होता है उसका आधा २० सेर होगा २० सेर के चतुर्थांश की पसेरी होगी उस्का ५ पांचवां अंश सेर होगा सेर का १६ सोलहवां अंश छटांक होगा ऐसा बिचार करने से जो ज्ञान होता है उसका नाम सम्भव है यह सप्तम प्रमाण है आठवां अभाव किसी ने किसी से कहा कि तूं अलक्षित नाम अदृष्ट मनुष्य को ला जो कि तूने नहीं देखा है वह जाके जिसको उसने कभी न देखा था उसी को ले आवेगा देखने के अभाव से उसको ज्ञान होगया इस्से अभाव भी आठवां प्रमाण मानना चाहिये इसका समाधान यह है कि॥ सूत्र। शब्दऐतिह्यानर्थान्तरभावादनुमानेऽर्थापत्तिसम्भवाभावानर्थान्तरभावाच्चाप्रतिषेधः। चारही प्रमाण मानना चाहिये उसका जो आप ने निषेध किया सो अयुक्त है क्योंकि आप्तों का उपदेश जो है सो शब्द है उसी में ऐतिह्य भी आगया क्योंकि

देव श्रेष्ठ होते हैं और असुर अश्रेष्ठ होते हैं यह भी तो आप्तोंही के उपदेश से सत्य २ जाना जाता है मूर्खों के उपदेश से कभी नहीं वैसेही प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष को जानना उसका नाम अनुमान है इस अनुमान में अर्थापत्ति सम्भव और अभाव ये तीनों गणना कर लीजिये इस्से चारही प्रमाण का मानना ठीक है यह गोतममुनि का अभिप्राय है पूर्व मीमांसा दर्शन और वैशेषिक दर्शन में प्रत्यक्ष और अनुमान दो प्रमाण माने हैं तथा योगशास्त्र और सांख्यशास्त्र में प्रत्यक्ष अनुमान और शब्द तीन प्रमाण माने हैं वेदान्त शास्त्र में प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द अर्थापत्ति और अनुपलब्धि ये छः प्रमाण माने हैं और जो कोई आठ प्रमाण मानें तो भी कुछ दोष नहीं इन उक्त प्रमाणों से ठीक २ परीक्षा करके शास्त्र को पढ़ै वा पढ़ावै और जो पुस्तक इन प्रमाणों से विरुद्ध होय उनको न पढ़ै और न पढ़ावै इनसे विरुद्ध व्यवहार अथवा परमार्थ कभी न करना और मानना भी न चाहिये ॥ अथ पठन पाठन विधिं वक्ष्यामः । प्रथम तो अष्टाध्यायी को पढ़ै और पढ़ावै सो इस क्रम से वृद्धिरादैच् यह तो पाठ भया वृद्धिः आत् ऐच् यह पदच्छेद भया आदैचां वृद्धि संज्ञा स्यात् यह सूत्र का अर्थ है कि आ, ऐ, और औ, इन तीन अक्षरों को वृद्धि संज्ञा कि वृद्धि नाम है इस प्रकार से पाणिनि मुनिजी को जो बुद्धिमान् अष्टाध्यायी के आठ अध्यायों को पढ़ै सो छः महीने में अथवा आठ महीने में पढ़ लेगा इसके पीछे धातुपाठ को पढ़ै उसमें भवति भवतः भवन्ति इत्यादिक तिङन्त रूपों को और भावः भावौ भावाः इत्यादिक सुबन्त रूपों को उन्ही सूत्रों से साध २ के पढ़ले तीन मास में दशगण दशलकार और बुभूषति इत्यादिक प्रक्रिया के रूपों को भी पढ़ लेगा वही सब अष्टाध्यायी के सूत्रों के उदाहरण और प्रत्युदाहरण होवेंगे इसके पीछे उणादि और गणपाठ को पढ़ै उसमें वायुः

वायू वायवः इत्यादिक रूप और बहुत से शब्दों का ज्ञान होगा एक मास में उसको पढ़ लेगा उसके पीछे सर्व विश्व उभ उभय इत्यादिक गणपाठ के साथ अष्टाध्यायी की द्वितीयानुवृत्ति नाम दूसरी बार पढ़ै उसके सूत्रों में जितने शब्द हैं और जितने पद हैं उनको सूत्रों से सिद्ध कर लेवेगा और सर्वादि गणों के सर्वः सर्वौ सर्वे ऐसे पुल्लिङ्ग में रूप होते हैं सर्वा सर्वे सर्वाः इत्यादिक स्त्रीलिङ्ग में रूप होते हैं और सर्वं सर्वे सर्वाणि इत्यादिक नपुंसक में रूप होते हैं इनको भी पढ़ लेवै सूत्रों से साध के ऐसे दूसरी बार अष्टाध्यायी को ४ वा ६ छः मास में पढ़ लेगा इस प्रकार से १६ वा १८ अठारह मास में पाणिनि मुनि के किये ४ चार ग्रन्थों को पढ़लेगा फिर इसके पीछे पतञ्जलि मुनि का किया महाभाष्य जिसमें अष्टाध्याय्यादिक चार ग्रन्थों की यथावत् व्याख्या है बहुत से वार्त्तिक सूत्र हैं सूत्रों के ऊपर और अनेक परिभाषा हैं अनेक प्रकार के शास्त्रार्थ, शङ्का और समाधान हैं उनको यथावत् पढ़ले जब उसको पढ़लेगा तब सब व्याकरण शास्त्र उसका पूर्ण हो जायगा वह महा वैय्याकरण कहावेगा फिर विद्वान् संज्ञा भी उसको हो जायगी सो अठारह १८ महीने में सब महाभाष्य का पढ़ना संपूर्ण हो जायगा ऐसे मिलके ३ वर्ष तक व्याकरण शास्त्र संपूर्ण होगा उसके संपूर्ण पठन होने से अन्य सब शास्त्रों का पढ़ना सुगम हो जायगा इसमें कोई सज्जन को शङ्का मत हो कि यह बात सत्य नहीं है किन्तु इस प्रकार से पढ़ना और पढ़ाना होय तीन ३ वर्ष में संपूर्ण व्याकरण को पढ़ै और पूर्त्ति न होय तब शङ्का करनी चाहिये पहिले जो शङ्का करनी सो व्यर्थही है इससे जिन पुरुषों का बड़ा भाग्य होगा वेही इस रीति में प्रवृत्त होंगे और उनको शीघ्र विद्या भी हो जायगी वे बहुत सुख पावेंगे और जो भाग्यहीन हैं वे तो सुख की रीति को कभी न मानेंगे

व्याकरण के नाम से जो जाल रूप कौमुद्यादिक ग्रन्थ चन्द्रिका सारस्वतादिक और मुग्ध बोधादिकों के ५० वर्ष तक पढ़ने से भी जैसा बोध नहीं होता है उस्से हजारगुणा अष्टाध्याय्यादिक सत्य ग्रन्थों के पढ़ने से तीन वर्ष मेंही बोध हो जाता है इसमें बिचार करना चाहिये कि सत्य ग्रन्थों के पढ़ने में बड़ा लाभ होता है वा मिथ्या जालरूप ग्रन्थों के पढ़ने में जालरूप ग्रन्थों के पढ़ने से कुछ भी लाभ नहीं होगा क्योंकि जाल रूप ग्रन्थों में इस प्रकार का व्यर्थ बिवाद लिखा है उसको पढ़ाने और पढ़ने वाले भी वैसेही हठी, दुराग्रही और विरुद्ध वादी होंगे ऐसेही देख भी पड़ते हैं क्योंकि जैसा ग्रन्थ पढ़ेगा वैसीही बुद्धि उसकी होगी इस प्रकार का बड़ा एक जाल बनाया है कि मरण तक एक शास्त्र भी पूर्ण नहीं होता उसको अन्य शास्त्र पढ़ने का अवकाश कैसे होगा कभी न होगा एक शास्त्र के पढ़ने से मनुष्य की बुद्धि संकुचितही रहती है विस्तृत कभी नहीं होती सब दिन उसको शंकाही बनी रहती है सब पदार्थों का निश्चय कभी नहीं होता और जो व्याकरण का पढ़ना है सो तो बेदादिक अन्यशास्त्रों के पढ़ने केही लिये है जब वह एक व्याकरणही में बाद बिवाद करता २ मर जायगा तब हाथ में उसके कुछ भी न आवेगा इस्से सब सज्जन लोगों को ऋषि मुनियों की पठन पाठन की जो रीति है उसी में चलना चाहिये जाली लोगों की रीति में कभी नहीं क्योंकि आर्य्यावर्त्त मनुष्यों के बीच में कपिलादिक ऋषि मुनि जितने भये हैं वे बड़े बिद्वान् और बड़े धर्मात्मा पुरुष भये हैं उनके सहस्रांश में भी इस समय जो आर्य्यावर्त्त में मनुष्य हैं वे बुद्धि, बिद्या और धर्माचरण में नहीं देख पड़ते इस लिये उनका आचरण हम लोगों को करना उचित है कि उसी से आर्य्यावर्त्त के लोगों की उन्नति होगी अन्यथा कभी नहीं व्याकरण को तीन

वर्ष तक सम्पूर्ण पढ़के कात्यायनादि मुनि कृत जो कोश यास्क मुनिकृत जो निघण्टु और यास्क मुनिकृत निरुक्त को पढ़ै और पढ़ावै उसमें अव्ययार्थ एकार्थ कोश और अनेकार्थ कोश नाम और नामियों का आप्तों के किये संकेत से जो सम्बन्ध हैं डेढ़ वर्ष के बीच में उसका ज्ञान होजायगा उसके पीछे पिङ्गल मुनि के किये जो छन्दों के सूत्र भाष्य सहित को पढ़ै पीछे यास्कमुनि के किये काव्यालङ्कार सूत्र और उसके ऊपर वात्स्यायन मुनि के भाष्य को पढ़ै उस्से गायत्र्यादिक छन्दों का काव्य अलङ्कार और श्लोक रचने का भी यथावत् ज्ञान छः मास में होवेगा और अमर कोशादिक जो कोश ग्रन्थ और श्रुतबोधादिक जो छन्दो ग्रन्थ वे सब जाल ग्रन्थही हैं इनके दश वर्ष में पढ़ने से जो बोध नहीं होता सो उक्त निघंट्वादिक सत्यशास्त्रों के पढ़ने से दो वर्ष में होगा इस्से इनकाही पढ़ना और पढ़ाना उचित है इसके पीछे पूर्व मीमांसाशास्त्र को पढ़ै जो कि जैमिनि मुनि के किये सूत्र हैं उनके ऊपर व्यासमुनि जीकी को अधिकरणमाला व्याख्या के सहित पढ़ै चार मास के बीच में पढ़ लेगा और इसी शास्त्र के साथ मनुस्मृति को पढ़ै सो एक मास में मनुस्मृति को पढ़लेगा उसके पीछे वैशेषिकदर्शन जो कि कणादमुनि के किये सूत्र हैं उसके ऊपर गोतममुनि जी का किया जो प्रशस्त पादभाष्य और भरद्वाज मुनिको किये सूत्रों की वृत्ति के सहित को पढ़ै उसके पढ़ने में दो मास जांयगे उसके पीछे न्यायदर्शन जो कि गोतममुनि के किये सूत्र उनके ऊपर वात्स्यायन मुनि का किया भाष्य उसको पढ़ै इसके पढ़ने में चार मास जांयगे इसके पीछे पातञ्जल दर्शन नाम योगशास्त्र जो कि पतञ्जलि मुनि के किये सूत्र उसके ऊपर व्यासमुनि जी का किया भाष्य इसको एक मास में पढ़ लेगा उसके पीछे सांख्यदर्शन जो कि कपिलमुनि के किये सूत्र उनके ऊपर भागुरि

मुनि का किया भाष्य इसको भी एक मास में पढ़ लेगा इसके पीछे ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्ड, मांडूक्य, तैत्तिरीय, छान्दोग्य, और बृहदारण्यक इन दश उपनिषदों को पांच महीने के बीच में पढ़लेगा और इसके पीछे बेदान्तदर्शन को पढ़े जो कि व्यास मुनि के किये सूत्र उनके ऊपर वात्स्यायन मुनि का किया भाष्य अथवा बौधायन मुनि का किया भाष्य वा शङ्कराचार्य जी का किया भाष्य पढ़े जब तक बौधायन और वात्स्यायन मुनि का किया भाष्य मिले तब तक अन्य भाष्य को न पढ़े इसको छः मास में पढ़लेगा इनको छः शास्त्र कहते हैं इनके पढ़ने में दो बर्ष काल जायगा दोबर्ष के बीच में सब पदार्थ बिद्या पुरुष को यथावत् आवैगी और इनके बिषय में बहुत से जालग्रन्थ लोगों ने रचे हैं जैसे कि पाराशर स्मृत्यादिक १७ सतरह पूर्व मीमांसा शास्त्र के बिषय में जालग्रन्थ लोगों ने रचे हैं तथा वैशेषिकदर्शन और न्यायदर्शन के बिषय में तर्कसंग्रह, न्यायमुक्तावली, जगदीशी, गदाधरी, और मथुरानाथी इत्यादिक जाल ग्रन्थ लोगों ने रचे हैं ऐसेही योगशास्त्र के बिषय में हठ प्रदीपिकादिक मिथ्या ग्रन्थ लोगों ने रचे हैं तथा सांख्य शास्त्र के बिषय में सांख्य तत्त्व कौमुद्यादिक जाल ग्रन्थ लोगों ने रचे हैं और बेदान्तशास्त्र के बिषय में पञ्चदशी, बेदान्त, संज्ञा, वेदान्तमुक्तावली, आत्मपुराण, योगवाशिष्ठ और पूर्वोक्त दश उपनिषदों को छोड़ के गोपालतापिनी, नृसिंहतापिनी, रामतापिनी और अल्लोपनिषत् इत्यादिक बहुत उपनिषद जाल रूप लोगों ने रची हैं वे सब सज्जनों को त्याग करने के योग्य हैं इन जाल ग्रन्थों में जो कुछ सत्य है सो सत्य शास्त्रोंही का बिषय है उसका लिखना ग्रन्थान्तर में अयुक्त है क्योंकि जो बात सत्य शास्त्रों में लिखीही है उसका फिर लिखना व्यर्थ है जैसे कि पीसे भये पिसान को फिर पीसना वैसाही वह है

किन्तु पिसान भी उड़ जायगा तथा सत्यशास्त्र की बात भी उनके हाथ से उड़जायगी और जो सत्यशास्त्रों से बिरुद्ध बात है सोतो कपोल कल्पित मिथ्याही है इस्से इनका पढ़ना और पढ़ाना मिथ्याही जानना चाहिये इस्से कुछ फल न होगा और जो कोई पढ़ता है वा पढ़ेगा एक शास्त्र की मरण तक भी पूर्त्ति न होगी और कुछ बोध भी उसको न होगा इस्से सज्जन लोगों को सत्यशास्त्रोंही का पढ़ना और पढ़ाना उचित है जाल ग्रन्थों का कभी नहीं पूर्व पक्ष छः शास्त्रों में भी अन्योन्यविरोध और परस्पर खण्डन देख पड़ता है एक का दूसरे से दूसरे का तीसरे से ऐसाही सर्वत्र है जैसा कि जाल ग्रन्थों में एक शास्त्र के बिषय में बहुत सी परस्पर बिरुद्ध टीका और मूल ग्रन्थ हैं वैसाही बिरोध सत्यशास्त्रों में भी देख पड़ता है जो दोष आप ने जाल ग्रन्थों में दिया वही दोष सत्यशास्त्रों में भी आया। फिर सत्यशास्त्रों का पढ़ना और जालग्रन्थों का न पढ़ना आप कहते हैं इसमें क्या प्रमाण है उत्तर कि यह आप लोगों को जालग्रन्थों के पढ़ने और सुनने से भ्रान्ति होगई है कि सत्यशास्त्रों में भी बिरोध और परस्पर खण्डन है यह बात आप लोगों की मिथ्याही है देखना चाहिये कि आज काल के लोग टीका वा ग्रन्थ रचते हैं सो द्वेष बुद्धिही से रचते हैं कि अपनी बात मिथ्या भी होय तो भी सत्य कर देते हैं तब सब लोग उसको कहते हैं कि वह बड़ा पण्डित है इस प्रकार के जो धूर्त्त मनुष्य हैं वेही टीका वा ग्रन्थ रचते हैं उनमें इसी प्रकार की मिथ्या धूर्त्तता रखते हैं उनको जो पढ़ता है वा पढ़ाता है उसकी भी बुद्धि वैसीही भ्रष्ट हो जाती है सो मिथ्या बाद मेंही प्रवृत्त होता है और सत्य वा असत्य का बिचार कभी नहीं कर्त्ता उसको तो यही प्रयोजन रहता है कि दूसरे की सत्य बात को भी खण्डन करके अपनी मिथ्या बात को मण्डन करके जिस किस प्रकार

से दूसरे का पराजय करना अपना विजय करलेना उस्से प्रतिष्ठा करना और धन लेना पीछे विषय भोग करना यही आजकाल के पण्डितों की क्षुद्रबुद्धि और सिद्धान्त हो गया है इस प्रकार के कितने मौलवी और पादरी लोग भी देखने में आते हैं पण्डितादिकों में कोई जो सत्य कथन करै तब वे सब धूर्त्त लोग उस्से विरोध करते हैं उसका नाम नास्तिक रखते हैं और उससे सब दिन विरोधही रखते हैं क्योंकि उनकी बुद्धि वैसीही है इस दोष के होने से सत्य शास्त्रों का जो यथावत् अभिप्राय है उसको जानते भी नहीं इस्से वे कहते हैं कि सत्यशास्त्रों में भी परस्पर विरोध है परन्तु मैं आप लोगों से कहता हूं कि छः शास्त्रों में लेशमात्र भी परस्पर विरोध नहीं है क्योंकि इनका विषय भिन्न २ है और जो विरोध होता है सो एक विषय में परस्पर विरुद्ध कथन के होने से होता है जैसे कि एक ने कहा गन्धवाली जो होती है सो पृथ्वी कहाती है इसी विषय में दूसरे ने कहा कि नहीं जो रस वाली होती है सोई पृथ्वी होती है क्योंकि पृथ्वी में क्षार मिष्टादिकरस प्रत्यक्ष देख पड़ते हैं इस प्रकार के विषय कों विरोध जानना चाहिये और जो ऐसा कहै कि गन्धवाली जो पृथ्वी होती है और रसवाला जल होता है सो एक तो पृथ्वी के विषय में व्याख्या करता है और दूसरा जल के विषय में दोनों का विषय भिन्न होने से व्याख्या भी भिन्न होगी परन्तु उसका नाम विरोध नहीं जैसे कि किसी ने ज्वर के विषय में चिकित्सा निदान औषध और पथ्य को लिखा और दूसरे ने कफ के विषय में चिकित्सादिक लिखे उसको विरोध नहीं कहना चाहिये वैसाही षट् शास्त्रों के विषय और भी सब वेदादिक शास्त्रों के विषय में जानना चाहिये जैसे कि धर्मशास्त्र नाम पूर्व मीमांसा में धर्म और धर्मी दो पदार्थों को मानते हैं और कर्मकाण्ड जो कि वेदोक्त है

संध्योपासन से लेके अश्वमेध पर्यन्त कर्मकाण्ड कहा है अब इसमें आकाङ्क्षा होती है कि धर्म और धर्मी किसको कहते हैं तब इसी को वैशेषिक दर्शन में स्पष्ट व्याख्या की है कि जो द्रव्य है सो तो धर्मी है और गुणादिक सब धर्म हैं फिर भी आकाङ्क्षा होती है कि गुण को क्यों नहीं द्रव्य और द्रव्य को क्यों नहीं गुण कहते उसका विचार न्यायदर्शन में किया है कि जिन प्रमाणों से द्रव्य गुणादिक सिद्ध होते हैं उसको द्रव्य और उन्हीं को गुण मानना चाहिये सो तीनों शास्त्रों से श्रवण नाम सुनना और मनन नाम उसी का बिचार करना इस बात तक लिखा उससे आगे जितने पदार्थ अनुमान से सिद्ध होते हैं उतने प्रत्यक्ष से जैसा तीन शास्त्रों में कहा है वैसाही है अथवा नहीं उसको विशेष बिचार से और योगाभ्यास से उपासना काण्ड जो कि चित्तवृत्ति के निरोध से लेके कैवल्य पर्यन्त उपासना काण्ड कहाता है उसकी रीति योगशास्त्र में लिखी है जो देखना चाहै सो उसमें देख लेवै सब के तत्त्व को यथावत् जानना चाहिये इस लिये योगशास्त्र है फिर कितने भूत और तत्त्व हैं उसकी भिन्न २ गणना और वैसाही निश्चय का होना उस लिये सांख्य शास्त्र का आवश्यक रचन हुआ इन पांच शास्त्रों का महाप्रलय तक व्याख्यान है जिसमें कि स्थूल भूतों का नाश होता है और सूक्ष्मों का नहीं फिर उसी सूक्ष्म भूतों से जैसी उत्पत्ति स्थूल की होती है और जिस प्रकार से प्रलय होता है वह बात सब लिखी है महाप्रलय तक परमाणु और प्रकृत्यादिक सूक्ष्म भूत बने रहते हैं उनका लय नहीं होता फिर कार्य और परम कारण का बिचार बेदान्त शास्त्र में किया कि सब प्रकृत्यादिक भूतों का एक अद्वितीय अनादि परमेश्वरही कारण है और परमेश्वर से भिन्न सब कार्य हैं क्योंकि परमेश्वरही में सब

प्रकृत्यादिक सूक्ष्म भूत रचे हैं सो परमेश्वर के सामने तो संसार सब आदि है और अन्य जीवों के सामने अनादि परमाणु प्रकृत्यादिक भूत भी अनित्य हैं क्योंकि परमाणु और प्रकृति इनका ज्ञान अनुमान से होता है वैसा नाश भी अनुमान से हम लोग जान सके हैं परमेश्वर तो सब जगत का रचने वाला है अन्य ब्रह्मादिक देव और सब मनुष्य शिल्पी हैं क्योंकि नवीन पदार्थ रचने का किसी का सामर्थ्य नहीं है बिना परमेश्वर के जगत् का रचने वाला कोई नहीं है सो वेदान्त शास्त्र में ज्ञान काण्ड का निश्चय किया है जो कि निष्काम कर्म से लेके परमेश्वर की प्राप्ति पर्यन्त ज्ञानकाण्ड है निष्काम कर्म यह है कि परमेश्वर की प्राप्ति जो मोक्ष उसके बिना भिन्न फल कर्मों से नहीं चाहना सो निष्काम कर्म कहाता है इससे बिचारना चाहिये कि षट्शास्त्रों में कुछ भी विरोध नहीं है किन्तु परस्पर सहायकारी शास्त्र हैं सब शास्त्र मिलके सब पदार्थविद्या छः शास्त्रों में प्रकाश कर दी है और उक्त जो जाल पुस्तक हैं उनमें केवल विरोधही है उनका पढ़ना और पढ़ाना व्यर्थही है किन्तु सत्य शास्त्रों के पठन न होने से और जाल ग्रन्थों के पढ़ने से आर्य्यावर्त्त देश के लोगों की बड़ी हानि हो गई है इससे सज्जन लोगों को ऐसा करना उचित है कि आज तक जो कुछ भ्रष्टाचार भया सो भया इससे आगे हमलोगों के ऋषि मुनि और श्रेष्ठ राजा लोग जो कि पहिले भये थे उनकी जो मर्यादा और वेदादिक सत्यशास्त्रोक्त जो मर्यादा उसी पर चलने से और सब पाखण्डों को छोड़नेही से आर्य्यावर्त्त देश की बड़ी उन्नति होगी अन्य प्रकार से कभी न होगी इन सब शास्त्रों को पढ़के ऋग्वेद को पढ़ै उसका आश्वलायनकृत जो श्रौत सूत्र बह्वृच जो ऋग्वेद का ब्राह्मण और कल्पसूत्र इनके साथ २ मन्त्रों का अर्थ पढ़ै और स्वर को भी पढ़ै सो दो वर्ष

के भीतर सब ऋग्वेद को पढ़ लेगा तथा यजुर्वेद की संहिता उसके साथ २ कात्यायन, श्रौतसूत्र, तथा गृह्यसूत्र तथा शतपथ ब्राह्मण स्वर अर्थ और हस्तक्रिया के सहित यथावत् पढ़ैं डेढ़ वर्ष तक यजुर्वेद को पढ़ लेगा इसके पीछे सामवेद को पढ़ै गोभिल श्रौतसूत्र तथा राणायनश्रौतसूत्र और कल्पसूत्र साम ब्राह्मण तथा गोभिल राणायन गृह्यसूत्र के साथ २ पढ़ै दो वर्ष में सब सामवेद को पढ़लेगा इसके पीछे अथर्ववेद को पढ़ै शौनकश्रौतसूत्र, शौनकगृह्यसूत्र, अथर्वब्राह्मण और कल्पसूत्र के साथ २ सो एक वर्ष में पढ़लेगा ऐसे साढ़े छः वा सात वर्ष में चारो वेदों को पढ़लेगा चारो वेदों की जो संहिता है उन्हीं का नाम वेद है फिर उन्हीं वेदों की जितनी अन्य २ शाखा हैं वे सब वेदों के व्याख्यान हैं बिना पढ़े सब बिचार मात्र से आजांयगो तथा आरण्यक बृहदारण्यकादिक व्याख्यान हैं उनको भी बिचार करने से जानलेगा चारों वेदों को पढ़ के आयुर्वेद को पढ़ै जो कि ऋग्वेद का उपवेद है उसमें धन्वन्तरिकृत निघण्टु, चरक और सुश्रुत इन तीनों ग्रन्थों को शस्त्रक्रिया, हस्तक्रिया और निदानादिक बिषयों को यथावत् पढ़ै सो तीन वर्ष में पढ़लेगा और बैद्यकशास्त्र के बिषय में शार्ङ्गधरादिक जाल ग्रन्थों को पढ़ना और पढ़ाना व्यर्थही जानना इसके पीछे यजुर्वेद का जो उपवेद धनुर्वेद उसको पढ़ै उसमें शस्त्र बिद्या जो कि शस्त्रों का रचना और शस्त्रों का चलाना और अस्त्र बिद्या जो कि आग्नेयास्त्रादिक पदार्थ गुणों से होते हैं उनको यथावत् रच लेना अग्न्यादिक अस्त्रों के बिषयों का बिस्तार राजधर्म में लिखेंगे और युद्ध समय में व्यूह की रचना यथावत् जान लेवै जैसे कि सूची व्यूह सूई का अग्र भाग तो बहुत सूक्ष्म होता है और उस अग्र भाग से पहिले २ स्थूल होता है उससे सूत स्थूल होता है इसी प्रकार से सेना

को रचके शत्रु की सेना वा दुर्ग वा नगर में प्रवेश करैं तब उसके विजय का सम्भव होता है ऐसेही शकटव्यूह, मकरव्यूह और गरुड़व्यूहादिकों को जान लेव उसको दो वा तीन वर्ष में पढ़लेगा उसके आगे सामवेद का जो उपवेद गान्धर्व वेद उसको पढ़ै उसमें वादित्रराग, रागिणी, काल-ताल स्वरपूर्वक गान विद्या का अभ्यास करै दोवर्ष में उसको पढ़लेगा इसके आगे अथर्ववेद का जो उपवेद अर्थवेद नाम शिल्पशास्त्र उसमें नाना प्रकार कला यन्त्र और नाना प्रकार के द्रव्यों को मिलाने से नाना प्रकार व्यवहारों के यानों की और दूरवीक्षण, अणवीक्षण, नाम दूरस्थित पदार्थों को निकट देखे और अणवीक्षण नाम सूक्ष्म पदार्थ भी स्थूल देख पड़ें इत्यादिक पदार्थों को रचले जैसे कि अग्नि का ऊर्द्ध गमन स्व-भाव है और जल का नीचे जाने का स्वभाव है सो किसी पात्र में जल को करके चूल्हे के ऊपर रखदे और उसके नीचे अग्नि करै फिर उतनेही भार वाले पात्र से उस पात्र का मुख बन्ध करै जब अग्नि से जल ऊपर उड़ेगा तब इतना बल होजायगा कि ऊपर का पात्र नाचने लगेगा वा गिर पड़ेगा इसी प्रकार से पदार्थों के अनुकूल गुणों को और विरुद्ध गुणों को जानने से पृथ्वीयान, जलयान और आकाश यानादिक पदार्थों को रच लेगा जैसे कि महाभारत में उपरिचरवसु राजा इन्द्रादिक देव तथा राम लङ्का से अयोध्या को आकाश मार्ग से आया उपरि-चरादिक राजा लोग और इन्द्रादिक देव वे भी आकाश मार्ग से जाते और आते थे तथा जैसे कि आज काल अङ्गरेज लोगों ने रेल तारादिक बहुत से पदार्थ रचे हैं वे सब शिल्प-शास्त्र के विषय हैं और उनसे बहुत से उपकार हैं उसको भी तीनवर्ष में पढ़लेगा पढ़के पीछे अपनी बुद्धि से बहुत सी शिल्प विद्या की उन्नति करलेगा पीछे ज्योतिश्शास्त्र को पढ़ै उसमें

गणित विद्या यथावत् जानै उस्से बहुत सा उपकार होता है दो वा तीन वर्ष में उसको पढ़लेगा और ज्योतिश्शास्त्र में जो फल विद्या है सो व्यर्थही है भृग्वादिक मुनियों के किये सूत्र और भाष्यों को पढ़ैं मुहूर्त्त चिन्तामण्यादिक जालग्रन्थों को कभी न पढ़ै इस प्रकार से साढ़े २७॥ वा २८ वर्ष तक पढ़लेगा संपूर्ण विद्या उसको आजायगी फिर उसको पढ़ने की आवश्यकता कुछ न रहेगी सब विद्याओं से वह पूर्ण होके पुरुषों में पुरुषोत्तम होजायगा और उसके शरीर से सं ार में बड़ा उपकार होगा क्योंकि जैसे अपने विद्या को पढ़ा है वैसेही पढ़ावेगा इस्से जैसा मनुष्यों का उपकार होता है वैसा किसी प्रकार से नहीं होता ऐसे ३६ वर्ष की जब आयु होगी तबतक पुरुषों को विद्या भी पूर्ण हो जायगी और जो पुरुष ४०, ४४, और ४८ वर्ष तक ब्रह्मचर्य्य रक्खेगा उस पुरुष के भाग्य और सुख को हम लोग नहीं कह सके कि कितना होगा जिस देश में राज्याभिषेक जिसका होना होय वह तो सब विद्या से युक्त होवै और ३६, ४०, ४४ वा ४८ वर्षतक अवश्य ब्रह्मचर्याश्रम करै उसी को राजा होना उचित है क्योंकि जितने उत्तम व्यवहार हैं वे सब राजाही के आधीन हैं और सब दुष्ट व्यवहारों का बंध करना सो भी राजाही के आधीन है इस्से राजा और धनाढ्य लोगों को तो अवश्य सब विद्या पढ़नी चाहिये क्योंकि जो वे सब विद्याओं को न पढ़ेंगे तो अपने शरीर की भी रक्षा न कर सकेंगे फिर धर्मराज्य और धन की रक्षा तो कैसे करेंगे और जितनी कन्या लोग हैं वे भी पूर्वोक्त व्याकरण, धर्मशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, गानविद्या और शिल्पशास्त्र इन पांच शास्त्रों को तो अवश्य पढ़ैं और जो अधिक पढ़ैं तो उनका सौभाग्य बड़ा होगा १६ वर्ष से न्यून ब्रह्मचर्य कन्या लोग कभी न करैं और जो १८, २० वा २४ वर्षतक ब्रह्मचर्य्याश्रम करेंगी तो उनको

अधिक २ सौभाग्य और सुख होगा जबतक स्त्री और पुरुष लोग उक्त रीति पर ब्रह्मचर्य्य से विद्या प्राप्त न करेंगे तो उनका अभाग्य और दुःखही जानना परस्पर स्त्री और पुरुषों का विरोध और भ्रान्ति होगी जिन व्यवहारों से सुख वृद्धि होती है उनको भी न जानेंगे सर्वदा दीन रहेंगे और प्रमाद से धनादिकों का नाश करेंगे कहीं प्रतिष्ठा और आजीविका भी उनकी न होगी परस्पर व्यभिचारी होंगे उस्से वीर्य्य का नाश होगा फिर बहुत से शरीर में रोग होंगे रोगों से सदा पीड़ित रहेंगे वे मूर्ख होंगे इस्से कभी सुख न पावेंगे इस्से सब स्त्री और पुरुष लोग सब पुरुषार्थ से अवश्य विद्याही को पढ़ें इस्से मनुष्यों को अधिक लाभ कोई नहीं है क्योंकि आपही अपना उपदेष्टा, रक्षक, धर्मग्राहक और अधर्म त्याग करनेवाला होता है इस्से बड़ा कोई लाभ नहीं है विद्या के पढ़ने और पढ़ाने में जितने विघ्न रूप व्यवहार हैं उनको जब तक मनुष्य नहीं छोड़ता तब तक उसको विद्या कभी नहीं होती प्रथम विघ्न बाल्यावस्था में जो विवाह का करना सोई बड़ा विघ्न है क्योंकि शीघ्र विवाह करने से विषयी होगा और विषयही की चिन्ता करेगा शरीर में धातु पुष्ट तो होंगे नहीं और सब धातुओं का सार जो कि सब धातुओं का राजा घर में जैसा कि दीपक प्रकाशक होता है जैसा ब्रह्माण्ड में सूर्य प्रकाशक है वैसाही शरीर में वीर्य है इस अपरिपक्व वीर्य और अत्यन्त वीर्य के नाश से बुद्धि, बल, पराक्रम, तेज और धैर्य का नाश हो जाता है आलस्य, रोग, क्रोध और दुर्बुद्धि इत्यादि ये सब दोष उस्में हो जायगे फिर कैसे उसको विद्या होसक्ती है कभी न होगी क्योंकि जितेन्द्रिय, धैर्यवान्, बुद्धिमान्, शीलवान्, विचारवान् जो पुरुष होता है उसी को विद्या होती है अन्य को नहीं इस्से ब्रह्मचर्य्य का अवश्य करना उचित है दूसरा विद्या का

नाशक विघ्न पाषाणादिक मूर्त्तिपूजन, ऊर्द्ध्वपुंड्र, त्रिपुंड्रादिक तिलक, एकादशी, त्रयोदश्यादिकव्रत, काश्यादिक तीर्थों में विश्वास, राम, कृष्ण, नारायण, शिव, भगवती और गणेशादिक नामोंसे पाप नाश होने का विश्वास यह भी विद्या धर्म और परमेश्वर की उपासना का बड़ा भारी विघ्न है क्योंकि विद्या का फल यही है कि परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना जो कि धर्म रूप है परमेश्वर को यथावत् जानना मुक्ति का होना यथावत् व्यवहार और परमार्थ का धर्म से अनुष्ठान करना यही विद्या होने का फल है सोई फल मिथ्या बुद्धि से पाषाणादिक मूर्त्ति में और तिलकादिकोंही में मान लेते हैं और सम्प्रदायी लोग मिथ्या उपदेश करके धूर्तता और अधर्म का निश्चय करा देते हैं पीछे व सम्प्रदायी लोग ऐसे कहते और उनके चेले सुनते हैं कि मूर्त्ति पूजादिक प्रकारही से आप लोगों को मुक्ति होगी यही परम धर्म है ऐसा सुनके उन विद्याहीन मनुष्यों को निश्चय हो जाता है कि यही बात सत्य है सब कहने और सुनने वाले वैसे हैं जैसे कि पशु हैं व ऐसा भी कहते हैं कि सम्प्रदायी और नाममात्र से जो पण्डित लोग आजीविका के लोभ से यही बात वेद में लिखी है ऐसी बात कहने वाले और सुनने वाले ने वेद का दर्शन भी कभी नहीं किया वेद में इन बातों का सम्बन्ध लेशमात्र भी नहीं है परन्तु अन्ध परंपरा की नांई कहते और सुनते चले जाते हैं उनको सुख वा सत्य फल कुछ भी नहीं होता क्योंकि बाल्यावस्था से लेके यही मिथ्याचार करते रहते हैं कि इसका दर्शन अवश्य करैं और तिलक माला धारण करैं काश्यादिक तीर्थों में जाके बास करैं और नाम स्मरण करैं एकादश्यादिक व्रत करैं और पुष्प ले आवैं चन्दन घसैं धूप दीप करैं नैवेद्य धरैं परिक्रमा करैं पाषाणादिक मूर्त्ति का प्रक्षालन करके जल ग्रहण करैं और कूदैं नाचैं

कूदैं और बाजे बजावैं रथ याचादिकों का मेला करैं और परस्पर व्यभिचार करैं मेले में उन्मत्तवत् होके घूमते घुमाते इत्यादिक मिथ्या व्यवहारोंही में फसे रहते हैं फिर उनको विद्या लेशमात्र भी न आवैगी क्योंकि मरणतक उनको अवकाशही न मिलेगा फिर कैसे वे पढ़ें और पढ़ावेंगे यह विद्या का नाशक दूसरा विघ्न है तीसरा विघ्न यह है कि माता, पिता और आचार्यादिक पुत्र और कन्याओं को लाड़न मेंही रखते हैं कुछ शिक्षा वा ताड़न नहीं करते इससे भी विद्या का नाशही होता है चौथा विघ्न यह है कि गुरु, पण्डित और पुरोहित ये तीनों विद्या तो पढ़ते नहीं फिर व हृदय से यही चाहते हैं कि मेरे चेले और मेरे यजमान मूर्खही बने रहैं क्योंकि वे जो पण्डित हो जांयगे तो हम लोगों का पाखण्ड उनके सामने न चलेगा इससे हम लोगों को आजीविका नष्ट हो जायगी इस लिये वे सदा पढ़ने पढ़ाने में विघ्नही करते हैं धनाढ्य और राजा लोगों के ऊपर अत्यन्त विघ्न करते हैं कि ये लोग विद्याहीन बने रहैं इनसे हम लोगों की आजीविका बड़ी है धनाढ्य और राजा लोग भी आलस्य और विषय सेवा में फस जाते हैं इससे वे भी पढ़ना नहीं चाहते धनाढ्य वा राजपुत्र पढ़ना भी चाहैं तो बैरागी आदि सम्प्रदायी और पण्डित लोग छल और कपट रखते हैं यथावत् पढ़ाते भी नहीं यहांतक वे छल और विघ्न करते हैं कि चेला और पुत्र वा बन्धुपुत्र भी विद्यावान् न हो जाय क्योंकि उनकी प्रतिष्ठा होने से मेरी प्रतिष्ठा नष्ट होजायगी इससे जो कुछ गुण जानते भी हैं उस को छिपा रखते हैं इस लिये विद्या लोप आर्य्यावर्त्त देश में होगया है सब लोगों को विद्या का प्रकाश करना उचित है किसी को भी विद्या गुप्त रखना योग्य नहीं और पांचवां विघ्न यह है कि भङ्गापान, अफीम और मद्यपान करने से बहुत सा प्रमाद

होता है और बुद्धि भी नष्ट होजाती है उस्से भी बिद्या का नाश होता है छठवां बिघ्न यह है कि राजा और धनाढ्य लोगों का घाट, मन्दिर, क्षेत्रों में सदावर्त, बिवाह, त्रयोदश्शाह, व्यर्थस्थान, और बागों के रचने में बहुत धन नष्ट होजाता है किन्तु गृहस्थ लोगों को जितना आवश्यक हो उतनाही स्थान रचैं निर्वाह मात्र बिद्या प्रचार में किसी का धन नहीं जाता और बिचार के न होने से गुणवान पुरुषों की प्रतिष्ठा भी नहीं होती किन्तु पाखण्डोंही की होती है इस्से मनुष्यों का उत्साह भङ्ग होजाता है सप्तम बिघ्न यह है कि पांचवें बर्ष पुत्रों वा कन्याओं को पाठशाला में पढ़ने के लिये नहीं भेजते उनके ऊपर राजा का दण्ड न होने से भी बिद्या का नाश होता है और बिषय सेवा में अत्यन्त फसजाते हैं इस्से भी बिद्या नहीं होती यह आठवां बिघ्न बिद्या का नाशक है इत्यादिक और भी बिद्या नाश करने के बिघ्न बहुत हैं उनको सज्जन लोग बिचार करलेवैं जब सोलह बर्ष का पुरुष होय तब से लेके जबतक वृद्धावस्था न आवै तबतक व्यायाम करै बहुत न करै किन्तु ४० बैठक करै और ३० वा ४० दण्ड करै कुछ भीत खम्भे वा पुरुष से बल करै फिर लोट करै उस को भोजन से एक घण्टा पहिले करै सब अभ्यास जब कर चुकै उससे एक घण्टा पीछे भोजन करै परंतु दूध जो पीना होय तो अभ्यास के पीछे शीघ्रही पीवै उस्से शरीर में रोग न होगा जो कुछ खाया वा पीया सो सब परिपक्व हो जायगा सब धातुओं की वृद्धि होती है तथा वीर्य्य की भी अत्यन्त वृद्धि होती है शरीर दृढ़ होजाता है और हड्डियां बड़ी पुष्ट होजाती हैं जाठराग्नि शुद्ध प्रदीप्त रहता है और सन्धि से सन्धि हाड़ों की मिली रहती है अर्थात सब अङ्ग सुन्दर रहते हैं परन्तु अधिक न करना अधिक के करने से उतने गुण न होंगे क्योंकि सब धातु शुष्क

और रूक्ष होजाते हैं उस्से बुद्धि भी वैसी रूक्ष होजाती है और क्रोधादिक भी बढ़ते हैं इस्से अधिक न करना चाहिये यह बात सुश्रुत में लिखी है जो देखना चाहै सो देख लेवै उन बालकों के हृदय में वीर्य के रक्षण से जितने गुण लिखे हैं इस पुस्तक में और जितने दोष लिखे हैं वे सब माता पिता और आचार्य्यादिक निश्चय दृष्टान्त देदे के करा देवैं जैसे कि वीर्य की रक्षा में सुख लाभ होता है उसका हजारवां अंश भी विषय भोग में वीर्य के नाश करने से नहीं होता परन्तु जैसा नियम सत्यशास्त्रों में कहा है उसका कुछ अंश इसमें भी लिखा है उसप्रकार से जो वीर्य की रक्षा करेगा उसको बहुतसा सुख होगा जो प्रमाद और भांग आदिक नशा करेगा वह पागल भी होजाय तो आश्चर्य नहीं इस्से युक्ति पूर्वक विद्या और बल सेही वीर्य की रक्षा करनी चाहिये अन्यथा वीर्य की रक्षा कभी न होगी जब वीर्य की रक्षा न होगी तब विद्या भी न होगी जब विद्या न होगी तब कुछ भी सुख न होगा उसका मनुष्य शरीर धारण करनाहीं पशुवत होजायगा ॥ सैषानन्दस्यमीमांसाभवति युवा-स्यात्साधुयुवाध्यापकः आशिष्ठोद्रढिष्ठोवलिष्ठः तस्येयंपृथिवीसर्वा-वित्तस्यपूर्णास्यात्सएकोमानुष आनन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंमानुषा आनन्दाः सएको मनुष्य गन्धर्वाणामानन्दः श्रो त्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंमनुष्यगन्धर्वाणामानन्दाः सएको देवगन्धर्वाणामानन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंदेवगन्ध-र्वाणामानन्दाः सएकः पितॄणांचिरलोक लोकानामानन्दः श्रो-त्रियस्य चाकामहतस्य तेयेशतं पितॄणां चिरलोकलोकानामान न्दाः सएकः आजानजानान्देवानामानन्दः श्रोत्रियस्यचाकामह तस्य तेयेशतमाजानजानान्देवानामानन्दाः सएकः कर्मदेवाना-मानन्दः येकर्मणादेवानपियन्ति श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेश तंकर्मदेवानामानन्दाः सएकोदेवानामानन्दः श्रोत्रियस्य चाका

महतस्य तेयेशतंदेवानामानन्दाः सएकइन्द्रस्यानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य तेयेशतमिन्द्रस्यानन्दाः सएकोबृहस्पतेरानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य तेयेशतंबृहस्पतेरानन्दाः सएकः प्रजापतेरानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य तेयेशतंप्रजापतेरानन्दाः सएकोब्रह्मणआनन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य सयश्चायंपुरुषेयश्चासावादित्येसएकः॥ यह तैत्तिरीयोपनिषद् की श्रुति है सो देखना चाहिये कि जैसा विद्या से आनन्द होता है वैसा कोई प्रकार से आनन्द नहीं होता इसमें इस श्रुति का प्रमाण है युवावस्था हो साधु युवा नाम उसमें कोई दुष्ट व्यसन न हो अध्यापक नाम सब शास्त्रों को पढ़के पढ़ाने का सामर्थ्य जिसको हो अर्थात सब विद्याओं में पूर्ण होय आशिष्ठ नाम सत्य जिसकी इच्छा पूर्ण हो दृढ़िष्ठ अतिशय नाम अत्यन्त जो शरीर और बुद्धि से दृढ़ हो अर्थात् कोई प्रकार का रोग जिसके शरीर में न होय बलिष्ठ नाम अत्यन्त बलवान् होवै और जिसकी वित्त नाम धनसे सब पृथ्वी पूर्ण होय अर्थात सार्वभौम चक्रवर्त्ती होवै इसको मनुष्य लोग के आनन्द की सीमा कहते हैं और जो कोई केवल विद्यावान्ही है और किसी प्रकार की कामना जिसको नहीं है अर्थात विद्या, धर्म और परमेश्वर की प्राप्ति के बिना किसी पदार्थ के ऊपर जिसको प्रीति न होवै ऐसा जो श्रोत्रिय॥ श्रोत्रियंश्छन्दोऽधीते। यह अष्टाध्यायी का सूत्र है व्याकरण पठन से लेके वेद पठन तक जिसका पूर्ण पठन होगया है उसको श्रोत्रिय कहते हैं उस श्रोत्रिय नाम विद्यावान् को वैसाही आनन्द होता है जैसा कि पूर्वोक्त चक्रवर्त्ती को उससे भी अधिक होने का सम्भव है क्योंकि चक्रवर्त्ती राजा को तो राज्य के अनेक कार्य रहते हैं इससे चित्त की एकाग्रता नहीं होती और जो वह पूर्ण विद्वान् है सो तो सदा परमेश्वर के आनन्द में मग्न रहता है लेशमात्र भी दुःख का

उसको सम्भव नहीं है उस चक्रवर्त्ती के मनुष्यानन्द से शतगुण आनन्द मनुष्य गन्धर्वों को है मनुष्य गन्धर्वों के आनन्द से शतगुण अधिक आनन्द देवगन्धर्वों को है देवगन्धर्वों से पितृलोग वासियों को शतगुण आनन्द है और पितृलोगों से अधिक शतगुण आनन्द आजान नामक देवों को है आजान देवों से शतगुण आनन्द कर्म देवों को है जो कि कर्मों से देव होते हैं उनसे शतगुण आनन्द देवलोग बासी नाम देवों को है उन देवों से शतगुण आनन्द इन्द्र को है इन्द्र से शतगुण आनन्द वृहस्पति को है और वृहस्पति से प्रजापति को अधिक शतगुण आनन्द है और प्रजापति से ब्रह्मा को अधिक शतगुण आनन्द है जो २ आनन्द चक्रवर्त्ती और मनुष्य गन्धर्वों से शतगुण अधिक २ गणाते आये सो सब आनन्द बिद्या वाले पुरुष को होता है क्योंकि जो आनन्द मनुष्य में है सोई सूर्य लोग में आनन्द है किन्तु एकही अद्वितीय परमेश्वर आनन्द स्वरूप सर्वत्र पूर्ण है उस परमेश्वर को विद्यावान् यथावत् जानता है उस परमेश्वर के जानने और उनका यथावत् योग होने से उस विद्वान् को पूर्ण अखण्ड आनन्द होता है उस आनन्द के लेशमात्र आनन्द में ब्रह्मादिक आनन्दित हो रहे हैं और उस आनन्द को जिस ने पाया है उस सुख को कोई गणना अथवा तौलना कभी नहीं कर सक्ता यह आनन्द बिद्या के बिना किसी को कभी नहीं होसक्ता इससे सब मनुष्यों को बिद्या ग्रहण करने में अत्यन्त यत्न करना योग्य है यह ब्रह्मचर्य्याश्रम की शिक्षा तो संक्षेप से लिखी गई इससे आगे चौथे प्रकरण में बिवाह और गृहाश्रम की शिक्षा लिखी जायगी ॥

इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते तृतीयः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ ३ ॥

अथ विवाहगृहाश्रम विधिम्वद्यामः ॥

पुरुषों का और कन्याओं का ब्रह्मचर्य्याश्रम और विद्या जब पूर्ण होजाय तब जो देश का राजा होय और अन्य जितने विद्वान् लोग वे सब उनको परीक्षा यथावत् करैं जिस पुरुष वा कन्या में श्रेष्ठ गुण, जितेन्द्रियता, सत्यवचन, निरभिमान, उत्तमबुद्धि, पूर्णविद्या, मधुरवाणी, कृतज्ञता, विद्या और गुण के प्रकाश में अत्यन्त प्रीति जिसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोक, कृतघ्नता, छल, कपट, ईर्ष्या, द्वेषादिक दोष न होवैं पूर्ण कृपा से सब लोगों का कल्याण चाहैं उसको ब्राह्मण का अधिकार देवैं और यथोक्त पूर्वोक्त गुण जिसमें होंय परन्तु विद्या कुछ न्यून होय शूर, वीरता, बल और पराक्रम ये तीन गुण वाला जो ब्राह्मण भया उससे अधिक हो उसको क्षत्रिय करैं और जिसको थोड़ी भी विद्या होवै परन्तु व्यापारादिक व्यवहारों में नाना प्रकारों के शिल्पों में देश देशान्तर से पदार्थों का लेआने और लेजाने में चतुर होवै और पूर्वोक्त जितेन्द्रियादिक गुण भी होवै परन्तु अत्यन्त भीरु होवै उसको वैश्य करना चाहिये और जो पढ़ने लगा जिसको शिक्षा भी भई परन्तु कुछ भी विद्या नहीं आई उसको शूद्र बनाना चाहिये इसी प्रकार से कन्याओं की भी व्यवस्था करनी चाहिये इसमें यह प्रमाण है ॥ शूद्रोब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैतिशूद्रताम् । क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैवच ॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि विद्यादिक पूर्वोक्त गुणों से जो शूद्र युक्त होवै सो ब्राह्मण होजाय और पूर्वोक्त विद्यादिक गुणों से जो ब्राह्मण रहित होजाय अर्थात् मूर्ख होय सो शूद्र होजाय और जिसमें क्षत्रिय का गुण होवै वह क्षत्रिय जिसमें

वैश्य का गुण होय वह वैश्य अर्थात् जो शूद्र के कुल में उत्पन्न भया सो मूर्ख होय तब तो वह शूद्रही बना रहै और वैश्य के जैसे गुण हैं वैसे गुण उसमें होने से वह शूद्र वैश्य होजाय क्षत्रिय के गुण होने से वह क्षत्रिय और ब्राह्मण के गुण होने से वह शूद्र ब्राह्मण होजाय तथा वैश्य कुल में उत्पन्न भया उसको वैश्य के गुण होने से वह वैश्यही बना रहै और मूर्ख होने से शूद्र होजाय तथा क्षत्रिय और ब्राह्मण के गुण होने से वह क्षत्रिय और ब्राह्मण भी वैसेही क्षत्रिय कुल में जो उत्पन्न भया उसको क्षत्रियवर्ण के गुण होने से वह क्षत्रिही बना रहै ब्राह्मण वैश्य और शूद्र के गुण होने से ब्राह्मण वैश्य और शूद्र भी होजांय तथा ब्राह्मण के कुल में उत्पन्न भया ब्राह्मण के गुण होने से वह ब्राह्मणही रहै क्षत्रिय वैश्य और शूद्र के गुण होने से क्षत्रिय वैश्य और शूद्र भी वह ब्राह्मण हो जाय ऐसाही मनुष्य जाति के बीच में सर्वत्र जान लेना तैसे चारों वर्णों की कन्याओं में भी उन २ उन्हा गुणों के होने से ब्राह्मणी, क्षत्रिया, वैश्या और शूद्रा होजांय उनको वर्ण क्रम से अधिकार भी दिये जांय॥ अध्यापनमध्ययनं यजनंयाजनंतथा। दानम्प्रतिग्रहंचैव ब्राह्मणानामकल्पयत्॥ अध्यापन नाम विद्याओं का प्रकाश करना नाम पढ़ाना अध्ययन नाम पढ़ना यजन नाम अपने घरमें यज्ञों का कराना याजन नाम यजमानों के घरमें यज्ञों का कराना दान नाम सुपात्रों को दान का देना प्रतिग्रह नाम धरमात्माओं से दान का लेना इन षट्कर्मों को करने और कराने में ब्राह्मणों को अधिकार देना उचित है प्रजानांरक्षणंदान मिज्याध्ययनमेवच। विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्यसमासतः॥ प्रजा को यथावत् रक्षा करना अर्थात् श्रेष्ठों का पालन और दुष्टों का ताड़न करना पक्षपात को छोड़ के सुपात्रों को दान देना अपने घरमें यज्ञों का करना और अध्य-

यन नाम सब सत्यशास्त्रों का पढ़ना विषयेषु अप्रसक्ति नाम विषयों में फस न जाना यह संक्षेप से क्षत्रियों का अधिकार कहा पूर्वोक्त क्षत्रियों को इस अधिकार को देवें ॥ पशूनांपालनं दान मिज्याध्ययनमेवच । वणिक्पथंकुसीदञ्च वैश्यस्यकृषिमेवच ॥ गाय आदिक पशुओं की रक्षा करना सुपात्रों को दान देना अपने घरमें यज्ञों का करना सत्यशास्त्रों का पढ़ना धर्म से व्यापार का करना धर्म से सूद नाम व्याज का लेना और कृषि नाम खेती का करना इन सात कर्मों का अधिकार वैश्यों को देना ॥ एकमेवहिशूद्रस्य प्रभुःकर्मसमादिशत् । एतेषामेववर्णानां शुश्रूषामनुसूयया ॥ ये चार श्लोक मनुस्मृति के हैं ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों की निन्दा को छोड़ के सेवा करना इस एक कर्म का शूद्रों को अधिकार देना कि तीनों वर्णों को यथावत् सेवा करै ॥ ब्राह्मणोऽस्यमुखमासी द्बाहूराजन्यःकृतः । ऊरूतदस्यय-द्वैश्यः पद्भ्यांशूद्रोऽअजायत ॥ यह यजुर्वेद की संहिता का मन्त्र है ॥ वेदाहमेतंपुरुषंमहान्तमादित्यवर्णन्तमसःपरस्तात् । यह भी उसी अध्याय का वचन है पुरुष नाम है पूर्ण का पूर्ण नाम परमेश्वर का परमेश्वर के बिना पूर्ण कोई नहीं होसक्ता क्योंकि सावयव और मूर्त्तिमान् जो होता है सो एकही देश में रहता है सर्व देश में व्यापक नहीं होसक्ता उस अध्याय में परमेश्वरही का ग्रहण होता है क्योंकि पुरुष से सब जगत् की उत्पत्ति लिखी है सो परमेश्वरही से सब जगत् की उत्पत्ति होती है अन्य से नहीं उस परमेश्वर को अवयव का लेशमात्र भी सम्बन्ध नहीं मुख, बाहु, ऊरु और पाद स्थूल २ इतने अवयवों की तो कभी संगति नहीं है क्योंकि सूक्ष्म भी अवयव का भेद परमेश्वर में नहीं होसक्ता फिर स्थूल अवयव का भेद परमेश्वर में कैसे होगा कभी न होगा और इस मन्त्र में तो मुखादिक शब्दों का ग्रहण किया है सो इस अभिप्राय से किया

है कि शरीर में मुख सब अङ्गों से उत्तम अङ्ग है वैसे उत्तम से भी उत्तम गुण जिस मनुष्य में होय वह ब्राह्मण होवै मुख के समीप अङ्ग जैसा कि बाहु वैसाही ब्राह्मण के समीप क्षत्रिय है और हाथ के बल आदिक गुण हैं जिस्से कि दुष्टों का दमन होता है और श्रेष्ठों का पालन अपने शरीर का भी रक्षण शत्रुओं और शस्त्रों के बल हाथ से होसक्ता है वैसाही प्रजा का पालन होगा और हाथ के बिना कभी रक्षण जगत् का वा अपना युद्ध में वा दुष्टों से नहीं होसक्ता सो बलादिक गुण जिस मनुष्य में होंय वह क्षत्रिय होवै तथा ऊरु नाम जङ्घा में जब बल होता है तब जहां तहां देशान्तरों में पदार्थों को उठा के लेजाना और देशान्तरों से लेआना हानि और लाभ में स्थिर बुद्धि होना जैसे कि जङ्घा के ऊपर स्थिर होके बैठना होता है इस प्रकार के वेगादिक गुण जिस मनुष्य में होवें वह वैश्य होय तथा पाद जैसे कि सब अङ्गों से नीचे का अङ्ग है जब मनुष्य चलता है तब कङ्कड़, पाषाण, कीच और कांटों पर पैर पड़ते हैं सब शरीर ऊपर रहता है पैरही विष्ठादिकों में पड़ते हैं वैसे मूर्खत्वादिक नीच गुण जिस मनुष्य में होवें सो मनुष्य शूद्र होय इस मन्त्र से ऐसी परमेश्वर की आज्ञा है सो सज्जनों को मानना और करना भी चाहिये सो इस प्रकार से परीक्षा करके वर्ण व्यवस्था अवश्य करना चाहिये वर्ण व्यवस्था बिना जन्म मात्रही से वर्णों के होने मे बहुत दोष होते हैं इस्से गुणोंही से वर्णों का होना उचित है और जो वर्णों को न मानें तो विद्यादिक गुण ग्रहण में मनुष्य का उत्साह भङ्ग होजायगा क्योंकि उत्तम गुण वाले को उत्तम अधिकार की प्राप्ति न होगी और गुणहीन को नीच अधिकार की प्राप्ति न होगी तो कैसे मनुष्यों को उत्साह गुण ग्रहण में होगा अर्थात् कभी न होगा इस्से वर्ण व्यवस्था का

मानना उचित है और जो गुणों के बिना वर्णों को जन्ममात्रही से मानैं तो सब वर्ण और सब गुण नष्ट होजांयगे क्योंकि जन्ममात्रही से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र होंगे तो कोई भी गुण ग्रहण की इच्छा न करेगा इस्से सब विद्यादिक गुण नष्ट हो जांयगे जैसे कि ब्राह्मण कुल सब कुलों से उत्तम है उस कुल में उत्तम पुरुषोंही का निवास होना उचित है क्योंकि वे उत्तम कर्महो करैंगे नीच कर्म कभी न करेंगे इस्से उत्तम कुल की उत्तमता नष्ट कभी न होगी और जो ब्राह्मण कुल में मूर्ख और नीच पुरुषों के निवास होने से उत्तम कुल की उत्तमता नष्ट होजायगी क्योंकि वे अभिमान तो ब्राह्मणही का करेंगे और ब्राह्मण के गुणों को ग्रहण कभी न करेंगे सदा नीचही कर्म करेंगे इस्से ब्राह्मण कुल की बड़ी निन्दा उस निन्दा से अप्रतिष्ठा होगी उस्से ब्राह्मण कुल दूषित हो जायगा इस्से उत्तम गुण वाले को उत्तमही कुल में रखना उचित है तथा भीरु नाम भयादिक गुण वाले पुरुष को क्षत्रिय कुल में कभी न रखना चाहिये क्योंकि जिसको भय होगा सो दुष्टों को कैसे दण्ड और प्रजा का पालन कैसे करेगा युद्ध भूमि से सदा वह भाग जायगा उसका राज्य शत्रु लोग लेलेंगे चौर और डांकू लोग सदा उस राजा और प्रजा को पीड़ा देंगे इस्से उस राजा का राज्य और ऐश्वर्य्य नष्ट होजायगा इस्से विद्या, बल, बुद्धि, पराक्रम और पूर्वोक्त निर्भयादिक गुण युक्तही को क्षत्रिय कुल में रखना चाहिये अन्य को नहीं तथा व्यापारादिक पशुपालनादिक में जो चतुर और पूर्वोक्त विद्यादिक गुण से युक्त होवै उसी को वैश्य होना उचित है जो मूर्खत्वादि गुण युक्त है उसी को शूद्र रखना चाहिये ऐसी जब व्यवस्था होगी तब ब्राह्मणादिक वर्णों में ब्राह्मणादिकों को भय होगा कि हम लोग उत्तम गुण ग्रहण न करेंगे और

उत्तम कर्म न करेंगे तो नीच अधिकार नाम शूद्रत्व को प्राप्त हो जांयगे अर्थात् शूद्र होजांयगे और शूद्रादिकों को बिद्यादिक गुण ग्रहण में उत्साह होगा क्योंकि हम लोग जो उत्तम गुण वाले होंगे तो उत्तम अधिकार को प्राप्त होंगे अर्थात् द्विज हो जांयगे इस्से उत्तमों को तो भय होगा और नीचों को उत्साहही होगा इस्से ऐसीही व्यवस्था सज्जनों को करना उचित है वर्ण शब्द के अर्थ से भी ऐसी व्यवस्था आती है ॥ व्रियन्तेयेतेवर्णाः। कि वर्ण नाम गुणों से जिसका स्वीकार किया जाय उसका नाम वर्ण है ऐसा दृष्टान्त भी सुन्ने में आता है कि विश्वामित्र क्षत्रिय से ब्राह्मण भया वत्स क्षत्रिय से ब्राह्मण भया और श्रवण, श्रवण का पिता, श्रवण की माता, वैश्य और शूद्र वर्ण से महर्षि भये मातङ्गऋषि का चांडाल कुल में जन्म था फिर ब्राह्मण होगया यह महाभारत में लिखा है और जाबाल वेश्या के पुत्र से ब्राह्मण होगया यह छान्दोग्य उपनिषद् में लिखा है इत्यादिक और भी जान लेना चाहिये जैसी वर्णों की व्यवस्था गुणों से है वैसी बिवाह में व्यवस्था करनी चाहिये ब्राह्मण का ब्राह्मणी, क्षत्रिय का क्षत्रिया, वैश्य का वैश्या और शूद्रका शूद्रा से बिवाह होना चाहिये क्योंकि बिद्यादिक उत्तम गुणवाले पुरुष से विद्यादिक उत्तम गुणवाली स्त्री का बिवाह होने से परस्पर दोनों को अत्यन्त सुख होगा और जो उत्तम पुरुष से मूर्ख स्त्री वा पण्डित स्त्री का मूर्ख पुरुष से बिवाह होगा तो अत्यन्त क्लेश होगा कभी सुख न होगा तथा क्षत्रियों के गुणवाले से क्षत्रिय गुणवाली स्त्री का वैश्य गुणवाले पुरुष से वैश्य गुणवाली स्त्री का बिवाह होना चाहिये और जो मूर्ख पुरुष सोई शूद्र है उस्से मूर्ख स्त्री का बिवाह होना उचित है क्योंकि तुल्य स्वभाव के होने से सुख होता है अन्यथा दुःखही होता है रूप की भी परीक्षा होनी चाहिये परस्पर दोनों की

अर्थात् वर और कन्या की प्रसन्नता से विवाह का होना उचित है कन्या वर की परीक्षा करै और वर कन्या की दोनों को परस्पर प्रसन्नता जब होय फिर माता, पिता वा बन्धु विवाह कर देवैं अथवा आपही दोनों परस्पर विवाह करलेवैं पशुवत् विवाह का व्यवहार करना उचित नहीं जैसे कि गाय वा छेरी को पकड़ के दूसरे के हाथ में दे देते हैं वे लेके चले जाते हैं जैसी इच्छा होय वैसा करते हैं इस प्रकार का व्यवहार मनुष्यों को कभी न करना चाहिये पूर्वोक्त काल के नियमही से विवाह करना चाहिये वाल्यावस्था में नहीं ॥ गुरुणानुमतःस्नात्वा समावृत्तोयथाविधि । उद्वहेतद्विजोभार्य्यां सवर्णांलक्षणान्विताम् ॥ यह मनु का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि ब्रह्मचर्य्याश्रम से पूर्ण विद्या पढ़के गुरु की आज्ञा लेके जैसी विधि बेद में लिखी है वैसे सुगन्ध्यादिक द्रव्य से मन्त्र पूर्वक स्नान करके शुभ श्रेष्ठ लक्षण युक्त अपने वर्ण की कन्या को वह द्विज ग्रहण करै। महान्त्यपिसमृद्धानिगोऽजाविधनधान्यतः । स्त्रीसम्बन्धे दशैतानि कुलानिपरिवर्जयेत् ॥ बड़े भी कुल होंय गाय, छेरी, अवि नाम भेंड़ धन और धान्य से सम्पन्न होवैं तो भी दश कुलों की कन्याओं को न ग्रहण करै वे कौन से दश कुल हैं ॥ हीनक्रियं निष्पुरुषंनिश्छन्दोरोमशार्शसम् । क्षय्यामयाव्यपस्मारि श्वित्रि कुष्ठिकुलानिच ॥ ये दश कुल हैं हीनक्रिय नाम जिस कुल में यज्ञादिक क्रिया नहीं हैं और आलस्य भी बहुत सा जिस कुल में होय १ निष्पुरुष नाम जिस कुल में पुरुष न होवैं स्त्री २ होवैं २ निश्छन्द नाम जिस कुल में बेदादिक विद्या न होय ३ रोम नाम जिस कुल में भालू की नांई देह के ऊपर लोम होवैं ४ शार्श नाम जिस कुल में ववांसिर रोग होय ५ क्षयि नाम जिस कुल में धातु क्षीणता दमा रोग होय ६ आमयाविनाम जिस कुल में आंव का बिकार होय ७ अपस्मारि नाम जिस कुल

में मिर्गी रोग होय ८ श्विचि नाम जिस कुल में श्वेत कुष्ठ होय ९ और कुष्ठि नाम जिस कुल में गलित कुष्ठ होय १० इन दश कुलों की कन्याओं को बिवाह के लिये ग्रहण न करैं क्योंकि जो रोग पिता माता के शरीर में होता है सोई संतानों में भी कुछ २ रोग आवैगा इसे उनका ग्रहण करना उचित नहीं ॥ नोद्वहेत्कपिलांकन्यां नाधिकाङ्गीन्नरोगिणीम् । नालोमिकान्नातिलोमान्नवाचाटान्नपिङ्गलाम् ॥ नर्क्ष वृक्ष नदीनाम्नीन्नान्त्यपर्वतनामिकाम् । नपक्ष्यहिप्रेष्यनाम्नीन्नचभीषणनामिकाम् ॥ कपिला नाम बिलाई की नांई जिस कन्या के नेच होवैं उसके साथ बिवाह न करै क्योंकि सन्तानों के भी वैसे नेच होंगे नाधिकाङ्गी नाम जिस कन्या के अङ्ग बर से अधिक होवैं अर्थात् कन्या का शरीर लम्बा चौड़ा बर का शरीर छोटा और दुबला होय उनका परस्पर बिवाह न होना चाहिये अर्थात् दोनों के शरीर स्थूल अथवा दोनों के शरीर क्षपित होवैं तब बिवाह होना चाहिये परन्तु स्त्री के शरीर से पुरुष का शरीर लम्बा होना चाहिये हाथ के कन्धे तक स्त्री का सिर आवै उसे अधिक स्त्री का शरीर न होना चाहिये न्यून होय तो होय अन्यथा गर्भ स्थिर न होगा और वंशच्छेद भी होजाय तो आश्चर्य्य नहीं इसे स्त्री का शरीर पुरुष के शरीर से छोटाही होना चाहिये रोगिणी नाम स्त्री के शरीर में कोई रोग न होना चाहिये और स्त्री भी पुरुष को परीक्षा करै कि उसके शरीर में स्थिर रोग कोई न होवै कोई महारोग न होय इस प्रकार की कन्या से बिवाह न करै कि जिसके शरीर में सूक्ष्म भी लोम न होय और जिसके शरीर के ऊपर बड़े २ लोम होवैं उसे भी बिवाह न करै वा चाटा नाम बहुत बोलने वाली जो स्त्री है उसके साथ बिवाह न करै अर्थात् परिमित भाषण करै अधिक बकवाद न करै जिसका पीतवर्ण हर्दी की नांई

होय उस स्त्री के साथ विवाह न करै और जिसका नक्षत्र के ऊपर नाम होय जैसा कि अश्विनी, भरणी, इत्यादिक तथा वृक्ष के ऊपर जैसा कि आम्रा, अश्वत्था, इत्यादिक और नदी के ऊपर जैसा कि नर्मदा, गङ्गा, इत्यादिक अन्त्य नाम चांडाली, चर्मकारिणी, इत्यादिक पर्वत के ऊपर जिसका नाम होवै जैसे कि हिमालया, विन्ध्याचला, इत्यादिक जिसका पक्षी के ऊपर होय जैसा कि हंसी, काकी, इत्यादिक जिसका सर्प के ऊपर होय जैसे कि सर्पिणी इत्यादिक जिसका दासी इत्यादिक नाम होय जिसका भयङ्करी, चण्डी और भैरवी, काली, इत्यादिक नाम होवै इस प्रकार के नाम वाली स्त्री से विवाह न करना चाहिये नक्षत्रादिक जितने नाम हैं वे सब अयुक्त हैं मनुष्यों के न रखना चाहिये कैसी स्त्री का विवाह होना चाहिये कि ॥ अव्यङ्गाङ्गींसौम्यनाम्नीं हंसवारणगामिनीम् । तनुलोमकेशदशनां मृद्वङ्गीमुद्वहेत्स्त्रियम् ॥ अव्यङ्गाङ्गी नाम जिसके टेढ़े अङ्ग न होवैं अर्थात् सब अङ्ग सूधे होवैं सौम्य जिसका नाम सुन्दर होवै जैसा कि यशोदा, कामदा, धर्मदा, कलावती, सुखवती, सौभाग्यवती, इत्यादिक हंसवारणगामिनीम् जैसे कि हंस और हाथी चलता है वैसी चाल जिसकी होवै ऐसी चलने वाली स्त्री न होय कि ऊंट और काक की नांई चलै तनु नाम सूक्ष्म लोम केश और सूक्ष्म दांतवाली होय जिसके अङ्ग कोमल होवैं ऐसी स्त्री के साथ पुरुष विवाह करै ब्राह्मादिक ८ आठ विवाह मनुस्मृति में लिखे हैं वे कौन हैं कि ॥ ब्राह्मोदैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः । गान्धर्वोराक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोधमः ॥ ये सब श्लोक मनुस्मृति के हैं ब्राह्म विवाह उसको कहते हैं कि कन्या और वर का सत्कार करना यथावत् होमादि करके और विद्या शीलादिकों की परीक्षा

करके कन्यादान देना उसका नाम ब्राह्म बिवाह है मास वा दोमास पर्यन्त होम होता रहै और जामाताही ऋत्विक् होवै यज्ञ के अन्त दक्षिणा स्थान में कन्या देना उसका नाम दैव बिवाह है एक गाय और एक बैल वा दो गाय और दो बैल बर से लेके कन्या को देना उसका नाम आर्ष बिवाह है प्राजापत्य नाम बर और कन्या से प्रतिज्ञा का होना अर्थात् कन्या बर से प्रतिज्ञा करै कि मैं आप से व्यभिचार, अधर्म और अप्रियाचरण कभी न करूंगी तथा बर कन्या से प्रतिज्ञा करै कि मैं तुमसे व्यभिचार अधर्म और अप्रियाचरण कभी न करूंगा पीछे बिधि पूर्वक बिवाह होना उसका नाम प्राजापत्य बिवाह है आसुर नाम अपने कुटुंबियों को थोड़ा सा धन देना और बर के कुटुंबियों को भी थोड़ा सा धन देना सत्कार के लिये कन्या और बर को भी थोड़ा २ धन देना होमादिक बिधि से बिवाह करना उसका नाम आसुर बिवाह अर्थात् दैत्यों का बिवाह है कन्या और बर के परस्पर प्रसन्न होने से बिवाह का होना उसको गान्धर्व बिवाह कहते हैं इसमें माता, पिता और बंध्वादिकों का कुछ प्रयोजन नहीं कन्या और बर ये दोनों आपही से स्वतन्त्र होके सब बिधि कर लेवें इसी का नाम गान्धर्व बिवाह है कोई कन्या अत्यन्त रूपवती और सब गुणों से जिसकी प्रशंसा अर्थात् हजारहों कन्याओं के बीच में श्रेष्ठ होवै और कहने सुनने से उसका पिता न देता होय कन्या को भी बन्ध करके रक्खै तब वहां जाके बल से कन्या का ले लेना है उसको राक्षस बिवाह कहते हैं फिर होमादिक बिधि कर के बिवाह करलेवैं अर्थात् जैसे कि राक्षस लोग बल से परपदार्थों को छीन लेते हैं वैसा यह बिवाह है अष्टम बिवाह यह है कि कहीं एकान्त में कन्या सूती अथवा मत्त अथवा

भांग वा मद्यादिक पीके प्रमत्त हो अथवा कोई रोग से पागल भई होय उस्से समागम करै विवाह के पहिलेही समागम का होना है वह पैशाच विवाह कहाता है वह सब विवाहों से नीच विवाह है इन आठ विवाहों में ब्राह्म, दैव और प्राजापत्य ये तीन विवाह सर्वोत्तम हैं इन तीनों में भी ब्राह्म अति उत्तम है और गान्धर्व भी श्रेष्ठ है उस्से नीच आसुर, उस्से नीच राक्षस, और सब से नीच पैशाच विवाह है उसको कभी न करना चाहिये ॥ अनिन्दितैःस्त्रीविवाहै रनिन्द्या भवतिप्रजा । निन्दितैर्निन्दितानृणां तस्मान्निन्द्यान्विवर्जयेत् ॥ मनुष्यों को निन्दित विवाह कभी न करना चाहिये जैसी परीक्षा और जो काल लिखा है उस्से विरुद्ध विवाहों का करना वे निन्दित नाम भ्रष्ट विवाह हैं और भ्रष्ट विवाहों के करने से उनके सन्तान भी भ्रष्ट होते हैं जैसे कि बाल्यावस्था में विवाह का करना उस्से जो सन्तान होता है वह सन्तान रोगादिक पूर्वोक्त दूषितही होगा श्रेष्ठ कभी न होगा जो परीक्षा के विना विवाह का करना उस्से बहुत क्लेश होंगे और सन्तान भी बहुत क्लेशित होजांयगे उनके धनादिकों का नाश भी हो जायगा इस्से निन्दित विवाह मनुष्यों को कभी न करना चाहिये और जो ब्राह्मादिक उत्तम विवाह हैं उनका काल तथा परीक्षा लिखी है उस रीति से जो विवाह होते हैं वे अनिन्दित अर्थात् श्रेष्ठ विवाह हैं उन विवाहों के करने से स्त्री पुरुष और कुटुंबियों को सदा सुखही होगा और उनकी प्रजा भी अनिन्दित अर्थात् श्रेष्ठही होगी सदा माता, पिता और कुटुंबियों को वे पुत्रादिक सन्तान सुखही देवेंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं महाभारत में जितने विवाह लिखे हैं वे युवावस्थाही में लिखे हैं परस्पर परीक्षा और परस्पर प्रसन्नताही से विवाह होते थे जैसे कि द्रौपदी

कुन्ती, गान्धारी, दमयन्ती, लोपामुद्रा, अरुन्धती, मैत्रेयी, कात्यायनी और शकुन्तलादिकों के विवाह इसी प्रकार से हुये थे तथा मनुस्मृति में भी लिखा है ॥ बाल्येपितुर्वशेतिष्ठेत्पाणिग्राहस्ययौवने । पुत्राणांभर्त्तरिप्रेते नभजेत्स्त्रीस्वतन्त्रताम् ॥ बाल्यावस्था न्यून से न्यून षोड़श वर्ष पर्यन्त होती है तब तक पिता के वश में कन्या रहै और षोड़श वर्ष से लेके २४ वर्ष पर्यन्त जिस वर्ष में विवाह होय तब अपने पति के वश में रहै जब पति न रहै तब पुत्रों के वश में स्त्री रहै स्त्री स्वतन्त्र न होवै क्योंकि स्त्री का स्वभाव चञ्चल होता है इससे आप कुमार्ग में चलेगी और धनादिकों का नाश भी करेगी इससे स्त्री को स्वतन्त्र न रखना चाहिये और जो लोग यह बात कहते हैं कि पिता के घरमें कन्या रजस्वला जो होय तो पितादिकों का धर्म नष्ट हो जायगा और पितादिक सब नरक में जांयगे यह बात सत्य है वा नहीं यह बात मिथ्याही है क्योंकि कन्या के रजस्वला होने से पितादिक अधर्मी हो जांयगे और नरक में जावेंगे यह बड़ा आश्चर्य है पितादिकों का क्या अपराध है कि रजस्वला का होना तो स्त्री लोगों का स्वाभाविक है तो सदा होहीगा इसमें पितादिकों का क्या सामर्थ्य है कि बन्द करदेवैं सो यह बात प्रमाण शून्य है बुद्धिमान् इस बात को कभी न मानैं इसमें मनु भगवान का प्रमाण भी है ॥ त्रीणिवर्षाण्युदीक्षेत कुमार्यृतुमतीसती । ऊर्द्ध्वन्तुकालादेतस्माद्विन्देत सदृशंपतिम् ॥ पिता के घरमें कन्या जब रजस्वला होय तब से लेके तीन वर्ष तक विवाह करने के लिये पति की परीक्षा करै तीन वर्ष के पीछे जैसी वह कन्या है वैसेही अपने तुल्य सवर्ण पति को ग्रहण करै कन्या के शरीर में धातु क्षीणादिक रोग न होवैं तो सोलहवें वर्ष रजस्वला होगी इससे पहिले नहीं और जो उक्त रोग होगा तो १५ पन्द्रहवें वा १४

१४

चौदहवें अथवा १३ तेरहवें वर्ष कोई कन्या रोगी रजस्वला होजाय तो भी तीनवर्ष पीछे विवाह करेंगे तो १६ सोलहवें १७ सतरहवें वा १८ अठारवें वर्ष विवाह करना उचित है और जब सोलहवें बर्ष रजस्वला होय तो १६ वा २० बीसवें वर्ष विवाह होना चाहिये क्योंकि शरीर से जो रज निकलता है सो स्त्री के शरीर की शुद्धि होती है इस कारण रजस्वला स्त्री के साथ ४ दिन तक सङ्ग करने का निषेध है कि स्त्रीके शरीर से एक प्रकार की उष्णता निकलती है उसके निकलने से नाड़ी और उसका शरीर शुद्ध होजाता है इस्से रजस्वला होने के पीछेही विवाह का करना उचित है जो जन्मपत्र देखके विवाह करते हैं सो बात सत्य है वा मिथ्या यह बात मिथ्याही है क्योंकि जन्मपत्र को तो मिलाते हैं परंतु उनके स्वभाव, गुण, आयु और बल को न मिलाने से सदा उनको क्लेशही होता है इसलिये वह बात मिथ्याही है जन्मपत्र मिलाने का बुद्धिमान् लोग सत्य कभी न जानैं इसमें प्रमाण भी है ॥ उत्कृष्टायाभिरूपाय वरायसदृशायच। अप्राप्तामपितांतस्मै कन्यान्दद्याद्यथाविधि ॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि उत्कृष्ट नाम उत्तम विद्यादिक गुणवान् अभिरूप अर्थात् जैसी कन्या रूपवती होय वैसा बर भी होवै और श्रेष्ठ स्वभाव दोनों का तुल्य होय अप्राप्त नाम निकट सम्बन्ध में भी होय तो भी उसी को कन्या देवै अर्थात् दोनों तुल्य गुण और रूपवाले होंय तब विवाह का करना उचित है अन्यथा नहीं इसमें यह मनुस्मृति का प्रमाण है ॥ काममामरणात्तिष्ठे द्गृहेकन्यर्त्तुमत्यपि। नचैवैनाम्प्रयच्छेत्तु गुणहीनाय कर्हिचित् ॥ इसका यह अभिप्राय है कि ऋतुमती कन्या अपने पिता के घरमें मरण तक भी बैठी रहै यह बात तो श्रेष्ठ है परन्तु गुणहीन अर्थात् विद्याहीन पुरुष को कन्या कभी

न देवै अथवा कन्या आप भी दुष्ट पुरुष से विवाह न करै तथा पुरुष भी मूर्ख वा दुष्ट कन्या से विवाह न करै यही गृहस्थों को यथोक्त प्रकार से जैसा कि कहा वैसा विवाह करना सब सुखों का मूल है अन्यथा दुःखही है कभी सुख न होगा जो शीघ्रबोध में ये दो श्लोक लिखे हैं कि ॥ अष्टवर्षाभवेद्गौरी नववर्षाचरोहिणी। दशवर्षाभवेत्कन्या तत‌ऊर्द्ध्वं रजस्वला १। माताचैवपिताचैव ज्येष्ठभ्रातातथैवच। त्रयस्तेनरकंयान्ति दृष्ट्वा कन्यांरजस्वलाम्॥ २॥ ये दोनों श्लोक मिथ्याही हैं क्योंकि आठवें वर्ष विवाह करने से जो कृष्णवर्ण वाली स्त्री गौरवर्ण वाली कैसे होगी वा महादेव की स्त्री उसका गौरी नाम है उससे विवाह कैसे हो सकेगा वैसे रोहिणी नक्षत्र लोक है सो आकाश में रहती है वह जड़ पदार्थ है उससे विवाह कैसे होगा कभी नहीं होसक्ता जो रोहिणी बलदेव की स्त्री थी वह तो मर गई मरी हुई का विवाह कभी नहीं होसक्ता और दशवर्ष में कन्या होती है यह भी मिथ्याही है क्योंकि जब तक विवाह नहीं होता तब तक कन्याही कहाती है और पिता के सामने तो सदा कन्याही और बन्धु के सामने भगिनी रहती है फिर उसका जो नियम है कि दश वर्ष में कन्या होती है सो बात काशिनाथ की मिथ्याही है जो कहता है कि दशवर्ष के आगे रजस्वला होती है यह भी मिथ्याही है सुश्रुत में १६ वर्ष के आगे धातुओं की वृद्धि लिखी है सो ठीक है उस समय में सोलह वर्ष से लेके आगेही रजस्वला होने का संभव है सो सज्जनों को यही बात मानना चाहिये और काशिनाथ की बात कभी न मानना चाहिये जो उसने यह बात लिखी है कि कन्या रजस्वला होने से पितादिक नरक में जांयगे सो मनुस्मृति वा वेदादिक सत्यशास्त्रों और प्रमाणों से विरुद्ध है इस बात में तो

उसकी बड़ी भारी मूर्खता है क्योंकि माता पितादिकों का क्या दोष है कन्या रजस्वला होने से वे नरक में जांय यह कहना उसका बड़ा पामरपन है पूर्वपक्ष पिता ने काल में विवाह न किया इस्से उनको दोष होता होगा और दश वर्ष के आगे उसको विवाह का फल न होता होगा इस्से उस काशिनाथ ने लिखा होगा उत्तर यह बात भी उसकी मिथ्या है क्योंकि सोलहवर्ष के पहिले कन्या और २५ वर्ष के पहिले पुरुष का विवाह करने से अवश्य पितादिकों को पाप का संभव होता है अथवा उन स्त्री पुरुषों को तो पाप होने का सम्भव होता है किन्तु पाप का फल दुःख है सो बाल्यावस्था में विवाह करने से वीर्य्यादिक धातुओं के नाश और विद्यादिक गुण न होने से अवश्य वे दुःखी होते हैं और होंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं है इस्से इस काशिनाथ का नाम काशिनाश रखना चाहिये क्योंकि काशि नाम प्रकाश का है इसने विद्यादिक गुणों का नाश कर दिया इस्से इसका नाम काशिनाशही ठीक है जो इसने ग्रन्थ का नाम शीघ्रबोध रक्खा है उसका नाम शीघ्रनाश रखना चाहिये क्योंकि बाल्यावस्था में विवाह करने से शीघ्रही रोग होंगे और बहुत रोग होने से शीघ्रही मर जांयगे इस्से इसका नाम शीघ्रनाशही ठीक है इस प्रकार से श्लोक हम लोग भी रच ले सक्ते हैं॥ ब्रह्मोवाच । एकयामाभवेद्गौरो द्वियामाचैवरोहिणी । त्रियामातुभवेत्कन्या तत‌ऊर्द्ध्वं रजस्वला ॥ १ ॥ मातातस्याःपिताचैव ज्येष्ठोभ्राता तथानुजः । एतेवैनरकंयान्ति दृष्ट्वाकन्यांरजस्वलाम् ॥ २ ॥ पूर्वपक्ष ये दो श्लोक कौन शास्त्र के हैं तो मैं पूछता हूं कि काशिनाथ के श्लोक कौन शास्त्र के हैं वे काशिनाथ के ग्रन्थ के हैं तो यह श्लोक मेरे ग्रन्थ के हैं आप के ग्रन्थ का क्या प्रमाण है तो काशिनाथ के ग्रन्थ का क्या प्रमाण है काशिनाथ के ग्रन्थ को तो

बहुत लोग मानते हैं जिसको बहुत मनुष्य मानैं वही श्रेष्ठ होय तो जैन यसूमसी और महम्मद के मत को मानने वाले बहुत हैं उनी को मानना चाहिये व हम लोगों के मत से विरुद्ध हैं इस्से हम लोग नहीं मानते तो आपलोगों का कौन मत है जो वेदोक्त और धर्मशास्त्रोक्त है सोई तो हम लोगों के मत से काशिनाथ का मत विरुद्ध हुआ क्योंकि आप लोगों का मत वेद और मनुस्मृत्युक्त ही हुआ उस धर्मशास्त्र में मनुस्मृति भी है इस्से विरुद्ध होने से आप लोगों को काशिनाथ का मत मानना उचित नहीं और आप ने जो श्लोक बनाये उसके आगे ब्रह्मोवाच क्यों लिखा यह दृष्टान्त के लिये लिखा इस्से क्या दृष्टान्त हुआ कि इसी प्रकार से ब्रह्मोवाच, विष्णुरु-वाच, नारदउवाच, नारायणउवाच, पाराशरउवाच, वसिष्ठ-उवाच, याज्ञवल्क्यउवाच, अत्रिरुवाच, अङ्गिराउवाच, युधिष्ठि-रउवाच, व्यासउवाच, शुकउवाच, परीक्षितउवाच, कृष्णउवाच, अर्जुनउवाच, इत्यादिक नाम लिखके अष्टादश पुराण अष्टादश उपपुराण, १७ सतरह पाराशरादिक स्मृतियां, निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु, नारदपंचरात्र, काशिखण्ड, काशिरहस्य, और सत्य-नारायणकथा, इत्यादिक ग्रन्थ सम्प्रदायी लोग और पण्डित लोगों ने रच लिये हैं तथा महादेवउवाच, पार्वत्युवाच, भैरव-उवाच, भैरव्युवाच, दत्तात्रेयउवाच, इत्यादिक लिख के बहुत तन्त्रग्रन्थ लोगों ने रच लिये हैं यह तो दृष्टान्त भया जैसे कि मैंने अपने श्लोकों के पहिले अपनी इच्छा से ब्रह्मोवाच लिखा वैसेही इनों ने ब्रह्मोवाच इत्यादिक रख के ग्रन्थ रच लिये हैं इस लिये कि श्रेष्ठों के नाम लिखने से ग्रन्थों का प्रमाण होजाय प्रमाण के होने से सम्प्रदायों और आजीविका की वृद्धि होवै उस्से विना परिश्रम से धन आवै और बहुत सुख होवैं इस लिये धूर्त्तता रची है जैसा कि ब्रह्मोवाच मेरा लिखना वृथा है वैसा

उनका भी ब्रह्मोवाच इत्यादिक लिखना व्यर्थही है और जैसे मेरे श्लोक दोनों मिथ्या हैं वैसे उनके पुराणादिक ग्रन्थ और काशिनाथ का ग्रन्थ आर्य्यावर्त्त देशवासी लोगों के सत्यानाश करने वाले हैं इनको सज्जन लोग मिथ्याही जानैं इस्से क्या आया कि मरण तक भी कन्या बिवाह के बिना घरमें बैठी रहै तो भी पितादिकों को कुछ दोष नहीं होता परन्तु दुष्ट पुरुष के साथ श्रेष्ठ कन्या अथवा दुष्ट कन्या के साथ श्रेष्ठ पुरुष का बिवाह कभी न करना चाहिये किन्तु तुल्य श्रेष्ठ गुण वालों का परस्पर बिवाह होना चाहिये जो दुष्ट पुरुष के साथ श्रेष्ठ कन्या वा श्रेष्ठ के साथ दुष्ट कन्या का बिवाह होगा तो परस्पर दोनों को दुखही होगा इस्से दोनों का परस्पर बिचार करके बर और कन्या का बिवाह करैं क्योंकि श्रेष्ठ विवाह से उन्हीं को सुख और दुष्ट बिवाह से उन्हीं को दुःख होगा इसमें माता पितादिकों का कुछ भी अधिकार नहीं उन दोनों के बिचार और प्रसन्नताही से बिवाह होना चाहिये बिवाह में बहुत धन का नाश करना अनुचितही है क्योंकि वह धन व्यर्थही जाता है इस्से बहुत राज्य नष्ट होगये और वैश्य लोगों का भी बिवाह में धन के व्यय से दिवाला निकल जाता है सब लोगों को मिथ्या धन का व्यय करना अनुचित है इस्से धन का नाश बिवाह में कभी न करना चाहिये एकही स्त्री से बिवाह करना उचित है बहुत स्त्री के साथ बिवाह करना पुरुषों को उचित नहीं स्त्री को भी बहुत बिवाह करना उचित नहीं क्योंकि बिवाह सन्तान के लिये है सो एक स्त्री एक पुरुष को बहुत है देखना चाहिये कि एक व्यभिचारिणी स्त्री अथवा वेश्या वे बहुत पुरुषों को वीर्य्य के नाश से निर्बल कर देती हैं इस्से एक पुरुष के लिये एक स्त्री क्या थोड़ी है अर्थात बहुत है एक स्त्री के साथ भी सर्वथा वीर्य्य का नाश करना

उचित नहीं क्योंकि वीर्य के नाश से पूर्वोक्त सब दोष हो जांयगे इस्से विवाहिता उस्के साथ भी वीर्य का नाश बहुत न करना चाहिये केवल सन्तान के लिये वीर्य्य का दान करना चाहिये अन्यथा नहीं और स्त्री भी केवल सन्तानही की इच्छा करै अधिक नहीं दोनों परस्पर सदा प्रसन्न रहैं पुरुष स्त्री को सदा प्रसन्न रक्खै और स्त्री पुरुष को विरोध वा क्लेश परस्पर कभी न करैं॥ संतुष्टोभार्ययाभर्त्ता भर्त्रा भार्यातथैवच। यस्मिन्नेवकुलेनित्यं कल्याणंतत्रवैध्रुवम्॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि स्त्री प्रियाचरण से पुरुष को सदा प्रसन्न रक्खै और पुरुष भी स्त्री को जिस कुल में इस प्रकार की व्यवस्था है उस कुल में दुःख कभी नहीं होता किंतु सदा सुखही रहता है और जो परस्पर अप्रसन्न रहेंगे तो यह दोष आवेगा॥ यदिहिस्त्रीनरोचेत पुमांसन्नप्रमोदयेत्। अप्रमोदात्पुनःपुंसः प्रजननंनप्रवर्त्तते॥ १॥ स्त्रियान्तुरोचमानायां सर्वन्तद्रोचतेकुलम्। तस्यान्त्वरोचमानायां सर्वमेवनरोचते॥ २॥ ये दोनों मनुस्मृति के श्लोक हैं इनका यह अभिप्राय है कि जो स्त्री प्रीति और सेवा से पुरुष को प्रसन्न न करेगी तो पुरुष को अप्रसन्नता से हर्ष न होगा जब हर्ष न होगा तब प्रजनं नाम वीर्य की अत्यन्त उत्पत्ति और गर्भस्थिति भी न होगी तो स्त्री को पुरुष के अप्रीति से कुछ भी सुख न होगा और जो पुरुष स्त्री को प्रसन्न न रक्खेगा तो उस पुरुष को कुछ भी गृहाश्रम करने का सुख न होगा स्त्री को जो प्रसन्न रक्खेगा उसको सब आनन्द होगा तथाच॥ पितृभिर्भ्रातृभिश्चैताः पतिभिर्देवरैस्तथा पूज्याभूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभिः॥ १॥ यत्रनार्यस्तुपूज्यन्ते रमंतेतत्रदेवताः। यत्रैतास्तु नपूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाःक्रियाः॥ २॥ शोचन्तिजामयोयत्र विनश्यत्याशुतत्कुलम्। नशोचन्तितुयत्र

चैता वर्द्धंते तद्धि सर्वदा ॥ ३ ॥ जामयो यानि गेहानि शपन्त्यप्रतिपूजिताः । तानि कृत्याहतानीव विनश्यन्ति समन्ततः ॥ ४ ॥ तस्मादेताः सदा पूज्या भूषणाच्छादनाशनैः । भूतिकामैर्नरैर्नित्यं सत्कारेषूत्सवेषु च ॥ ५ ॥ ये सब मनुस्मृति के श्लोक हैं इनका यह अभिप्राय है कि पिता, भ्राता, पति और देवर ये सब लोग स्त्रियों की पूजा करैं देखना चाहिये कि पूजा का अर्थ घण्टा, झांझ, झाल्लरी, मृदङ्ग, धूप, दीप और नैवेद्यादिक षोड़शोपचारों को पूजा शब्द से जो लेते हैं सो मिथ्याही लेते हैं क्योंकि स्त्रियों की ऐसी पूजा करनी उचित नहीं और न कोई ऐसी पूजा करता है इस्से पूजा शब्द का अर्थ सत्कारही है सत्कार जो होता है सो चेतनही का होता है जो सत्कार को जानै इस्से स्त्री लोगों का सदा सत्कार करना चाहिये जिस्से कि वे सदा प्रसन्न रहैं और उनको यथाशक्ति आभूषणों से प्रसन्न रक्खैं जिन गृहस्थों का बड़ा भाग्य होता है और बहुत कल्याण की जिनको इच्छा होवै वे इस प्रकार से स्त्रियों को प्रसन्नही रक्खैं ॥ १ ॥ जिस कुल में नारी लोग रमण नाम आनन्द से क्रीड़ा करती और प्रसन्न रहती हैं तिस कुल में देवता नाम विद्यादिक गुण जिनों से कि वह कुल प्रकाशित होजाता है वे गुण सदा उस कुल में बढ़ते रहते हैं जिस कुल में स्त्रियों का सत्कार और उनको प्रसन्नता नहीं होती उस गृहस्थ की सब क्रिया निष्फल होती है और दुर्दशा भी होती है इस्से स्त्रियों को प्रसन्नही रखना चाहिये ॥ २ ॥ और जिस कुल में जामय नाम स्त्री लोग शोक से दुःखित रहती हैं उस कुल का नाश शीघ्रही होजाता है जिस कुल में स्त्री लोग शोक नहीं करतीं अर्थात् प्रसन्न रहती हैं उस कुल की वृद्धि और आनन्द सदा होता है और आज काल आर्य्यावर्त्त में कोई एक राजा वा धनाढ्य विवाहिता स्त्री को तो कैद को नाई

बन्द करके रखते हैं और आप वेश्या और पर स्त्री के पास गमन करते हैं उसमें अपने धन और शरीर का नाश करते हैं और उनकी विवाहित स्त्रियां रोती और बड़ी दुखित रहती हैं परन्तु उन मूर्ख पुरुषों को कुछ भी लज्जा नहीं आती कि यह स्त्री तो मेरे साथ विवाहित है इसको छोड़ के मैं अन्य स्त्री गमन करता हूं यह मैं न करूं ऐसा विचार उन पुरुषों के मन में कभी नहीं आता अन्य स्त्री और वेश्या गमन जो करते हैं सो तो बुराही काम करते हैं परन्तु बालकों से भी बुरा काम करते हैं यह बड़ा आश्चर्य है कि स्त्री का काम पुरुषों से करते हैं इनकी तो अत्यन्त भ्रष्ट बुद्धि सज्जनों को जाननी चाहिये ३ जिन पुरुषों को स्त्री दुःखित होके श्राप देती हैं उन कुलों का नाशही होजाता है जैसे कि कोई विषदान करके कुल का नाश कर देवै वैसेही उन कुलों का नाश हो जाता है इसे सज्जनों को स्त्रियों का सत्कार सदा करना चाहिये जिस्से कि स्त्री लोग प्रसन्न होके गृह का कार्य धर्माचरण और मङ्गलाचरण सदा करैं ४ तिस्से स्त्रियों का सत्कार सदा करना चाहिये आभूषण, वस्त्र, भोजन और मधुर वाणी से स्त्रियों को प्रसन्न रक्खैं जिनको कि ऐश्वर्य की इच्छा होय वे यज्ञादिक उत्सवों में स्त्रियों का बहुत सत्कार करैं अर्थात् स्त्रियों को प्रसन्नही रक्खैं तथा स्त्री लोग भी सब प्रकार से पुरुषों को प्रसन्न रक्खैं ॥ ५

पाणिग्राहस्यसाध्वीस्त्री जीवतोवामृतस्यवा। पतिलोकमभीप्सन्ती नाचरेत्किञ्चिदप्रियम् ॥ १ ॥ जिसके साथ विवाह होय उसको स्त्री सदा प्रसन्न रक्खै जिस्से वह अप्रसन्न होय ऐसी बात कभी न करै सोई स्त्री श्रेष्ठ कहाती है यहां तक की पति मर भी गया होय तो भी अप्रियाचरण न करै उस स्त्री को सदा श्रेष्ठ पति इस जन्म वा जन्मान्तर में भी प्राप्त होता है ॥ १ ॥ अनृतावृतुकालेच मन्त्रसंस्कारकृत्पतिः। सुखस्यनित्यंदातेह परलो

केचयोषितः ॥ २ ॥ वेद मन्त्रों से जिस पुरुष से बिवाह का संस्कार भया वही ऋतु काल वा अऋतु काल और इस लोक वा परलोक में नित्य सुख देने वाला है और कोई नहीं इस्से बिवाहित पुरुष की स्त्री सदा सेवा करै जिस्से कि वह प्रसन्न रहै और घर का जितना कार्य है वह स्त्री के अधिकार में रहै। सदाप्रहृष्टयाभाव्यं गृहकार्येषुदक्षया । सुसंस्कृतोपस्करया व्यये चामुक्तहस्तया ॥ ३ ॥ सदा स्त्री प्रसन्न होके गृह कार्य चतुरता से करै पाक को अच्छी प्रकार से संस्कार करै जिस्से कि औषधवत् अन्न होय और गृह में जो पात्र लवणादिक पदार्थ और अन्न सदा शुद्ध रक्खै जितने घर हैं उन्हको सब दिन शुद्ध रक्खै जाला धूली वा मलिता घरमें कुछ भी न रहै घर में लेपन प्रक्षालन और मार्जन करै जिस्से कि घर सब दिन शुद्ध बना रहै और घर के दास दासी नोकर इत्यादिकों पर सब दिन शिक्षा की दृष्टि रक्खै जो पाक करने वाला पुरुष वा स्त्री होवे उसके पास पाक करने समय बैठ के शिक्षा करै जैसो पाक की रीति वैद्यकशास्त्र में लिखी है उस रीति से पाक करै और करावै नये घर को बनाना वा सुधारना होय उस को स्त्रीही करावै शिल्पशास्त्र की रीति से अर्थात् जितना घर का जो कार्य है सो स्त्रीही के आधीन रहै उस में जो नित्य नित्य वा मास २ में खर्च होय वह पति को समझा देवैं और जितना बाहर का कार्य होय सो सब पुरुष के आधीन रहै परस्पर सदा प्रसन्न से घर के कार्यों को करैं घर इस प्रकार का बनावै कि जिसमें सब ऋतु में सुख होय और जिस स्थान में वायु शुद्ध होय चारो ओर पुष्पों की सुगन्ध वाटिका लगावै जिस्से कि सदा चित्त प्रसन्न रहै और व्यर्थ धन का नाश कभी न करैं धर्मही से धन का संग्रह करैं अधर्म से कभी नही अच्छे से अच्छा भोजन करैं जो विद्या पढ़ी होवे उसको सदा पढ़ावैं और

बिचारते रहैं आज काल के लोग कहते हैं कि स्त्री लोगों को पढ़ना न चाहिये ऐसा बिद्याहीन पुरुष कहते हैं वे पाखण्डी और धूर्त्त हैं क्योंकि स्त्री लोग जो पढ़ेंगी तो उनके सामने हमारी धूर्त्तता न चलेगी फिर उनसे धन भी न मिलेगा और वे जब विद्या से धर्मात्मा होंगी तब हम लोगों से व्यभिचार भी न करेंगी बिना व्यभिचार से वे स्त्रीं धन भी न देंगी फिर हम लोगों का व्यवहार न चलेगा ऐसे आर्य्यावर्त्त देश में गोकुलस्थ गुसांई आदिक सम्प्रदाय हैं कि जिन की व्यभिचार और स्त्रीहो लोगों से बढ़ती होती है वे इस प्रकार का उपदेश करते हैं कि स्त्री लोगों को कभी न पढ़ना चाहिये परन्तु देखना चाहिये कि मनु भगवान ने यथावत् आज्ञा दी है ॥ वैवाहिकोविधिःस्त्रीणां संस्कारोवैदिकस्मृतः। पतिसेवागुरौवासो गृहार्थोग्निपरिक्रिया ॥ ४ ॥ बिवाह की जितनी बिधि है सो वेदोक्तही है स्त्रियों का बिवाह वेद की रीति से होना चाहिये और पति की सेवा अत्यन्त करनी चाहिये यही स्त्री का मुख्य कर्म है और बिवाह के पहिले गुरौ वास नाम स्त्री लोग पढ़ने के लिये ब्रह्मचर्य्याश्रम करैं और गृह कार्य जानने के लिये अवश्य बिद्या पढ़ें अग्नि परिक्रिया नाम अग्निहोत्रादिक यज्ञ करने के लिये अवश्य वेदों को पढ़ें अन्यथा कुछ भी न जानेंगी नित्य स्त्री और पुरुष मिलके अग्निहोत्र प्रातः और सायंकाल करैं अन्य यज्ञों को भी सामर्थ्य के अनुकूल करैं और जो बिद्या न पढ़ी वा आप न जानती होंगी तो अग्निहोत्रादिक यज्ञ और घर के सब कार्य को कैसे करेंगी विद्या अन्य के पास होय तो उस बिद्या को जिस प्रकार से मिलै उस प्रकार से लेवै क्योंकि मरण तक भी गुण ग्रहण करने की इच्छा मनुष्यों को करनी चाहिये उसी से मनुष्यों को सुख होता है ॥ ४ ॥ स्त्रियोरत्नान्यथोविद्या सत्यंशौचंसुभाषितम्। वि

विद्यानिचशिल्पानि समादेयानिसर्वतः ॥ ५ ॥ ये पांच मनुस्मृति के श्लोक हैं स्त्री हीरादिक रत्न सत्यविद्या, सत्यभाषण, पवित्रता, मधुरवाणी, नाम भाषण करने की रीति और विविध अर्थात् अनेक प्रकार के शिल्प ये सब जिस में होवें उससेही लेना चाहिये भाषण की रीति यह है कि॥ सत्यंब्रूयात्प्रियंब्रूया न्नब्रूयात्सत्यमप्रियम्। प्रियंचनानृतंब्रूया देषधर्मःसनातनः ॥ १ ॥ भद्रम्भद्रमितिब्रूया द्भद्रमित्येववावदेत्। शुष्कवैरंविवादञ्च नकुर्य्यात्केनचित्सह ॥ २ ॥ ये दो श्लोक मनुस्मृति के हैं इसका यह अर्थ है कि सत्यही कहै मिथ्या कभी न कहै सदा सब जनों को जो प्रिय लगे वैसाही कहै पूर्वपक्ष प्रिय तो वेश्यागामी पर स्त्री गामी और चोरी करने वाले आदि पुरुषों से उनी बातों को कहै तब उनको अनुकूल प्रिय होता है अन्यथा प्रिय नहीं होता इससे ऐसाही कहना चाहिये वा नहीं उत्तरपक्ष इसको प्रियबचन न कहना चाहिये क्योंकि वेश्यादिक गमन की इच्छा जब वे करते हैं तभी उनके हृदय में शङ्का भय और लज्जा हो जाती है वह काम तो उनके हृदय को प्रियही नहीं है और उनका आचरण करना भी अधर्म है किन्तु उनका जो निषेध करना है वही ठीक २ प्रिय है जैसे कोई बालक अग्नि पकड़ने को चले उसको उसकी माता कहै कि तूं अग्नि पकड़ वह वचन बालक को प्रिय न होगा किन्तु आगी में हाथ नावेगा तब हाथ जल जायगा उससे बालक को अप्रिय होगा अर्थात दुःखी होगा किन्तु बालक को निषेध जो करना है कि तूं आग को मत पकड़ वही बचन उसको प्रिय है प्रिय उसका नाम है कि कभी जिस बचन से किसी का अहित न होय उसको प्रियबचन कहते हैं और सत्य होय वह अप्रिय होय तो उसको न कहै जैसे किसी ने किसी से पूछा कि विवाह किस लिये करना होता है और तेरा जन्म किस प्रकार भया तब उसको इतनाही

कहना उचित है कि विवाह का करना सन्तान के लिये है और मेरा जन्म मेरी माता और पिता से हुआ है जो गुप्त क्रिया है स्त्री से और माता पिता की उसको कहना उचित नहीं यद्यपि यह बात सत्यही है तो भी सब लोगों को अप्रिय के होने से उस बात का कहना उचित नहीं तथा दश पांच पुरुष कहीं बैठे होवैं और उस समय में काना, अन्धा, मूर्ख वा दरिद्र पुरुष आवैं उनसे वे पुरुष कहैं कि काना आओ अन्धा आओ मूर्ख आ वा दरिद्र आओ ऐसा कहना उचित नहीं यद्यपि यह बात सत्य है तो भी अप्रिय के होने से न कहना चाहिये किन्तु देवदत्त आ यज्ञदत्त आओ ऐसा उनसे कहना उचित है फिर आप के आंख में कुछ रोग भया था वा जन्म से ऐसीही है तब वह प्रसन्नता से सब बात कह देगा जैसी की भई थी इस्से इस प्रकार का सत्य होय और वह अप्रिय भी होय तो कभी न कहै ॥ प्रियंचनानृतंब्रूयात् । और जो बात अन्य को प्रिय होय परन्तु वह अनृत अर्थात मिथ्या होय तो उसको कभी न कहै जैसे कि आज काल इन राजा और धनाढ्य लोगों के पास खुशामदी लोग बहुत से धूर्त रहते हैं वे सदा उनको प्रसन्न करने के लिये मिथ्याही कहते रहते हैं आप के तुल्य कोई राजा वा अमीर न हुआ न है और न होगा और जो राजा मध्य दिवस के समय में कहै कि इस समय में आधी रात है तब वे शुश्रूषु लोग कहते हैं कि हां महाराजाधिराज हां देखिये चांद और चांदनी भी अच्छी खिल रही है फिर वे कहते हैं कि महाराज के तुल्य कोई बुद्धिमान् न भया न है न होगा तब तो वह मूर्ख राजा और धनाढ्य प्रसन्नता से फूल के ढोल हो जाते हैं फिर वे ऐसी बात कहते हैं कि महाराज आप के प्रताप के सामने किसी का प्रताप नहीं चलता है आप का प्रताप कैसा है जैसा कि सूर्य और

चांद ऐसा कह २ के बहुत धन हरण कर लेते हैं वे राजा और धनाढ्य लोग उन्हीं से प्रसन्न रहते हैं क्योंकि आप जैसा मूर्ख वा पण्डित होता है उसको वैसेही पुरुष से प्रसन्नता होती है कभी उनको सत्पुरुषों का सङ्ग नहीं होता और कभी सत्पुरुषों का सङ्ग होजाय तो भी वे खुशामदी धूर्त्त राजा और धनाढ्य लोगों को मूर्खता के होने से उनको प्रसन्नता सत्य बात के सुनने से कभी नहीं होती क्योंकि जैसा जो पुरुष होता है उसको वैसाही संग मिलता है ऐसे व्यवहार के होने से आर्य्यावर्त्त देश के राज्य और धन बहुत नष्ट होगये और जो कुछ है उसकी भी रक्षा इस प्रकार से होनी दुर्लभ है जब तक कि सत्य व्यवहार सत्यशास्त्र और सत्सङ्गों को न करेंगे तब तक उनका नाशही होता जायगा कभी बढ़ती न होगी खुशामदी लोगों के विषय में यह दृष्टान्त है कि कोई राजा था उसके पास पण्डित वैरागी और नौकर वे खुशामदी लोग बहुत से रहते थे किसी दिवस राजा के रसोंई में बैंगन का शाक मसाले डालने से बहुत अच्छा बना फिर राजा भोजन करने को जब बैठा तब स्वाद के होने से उस शाक को अधिक खाया राजा भोजन करके सभा में आया जहां कि वे खुशामदी लोग बैठे थे उन से राजा ने कहा कि बैंगन का शाक बहुत अच्छा होता है तब वे खुशामदी लोग सुन के बोले कि वाहवा महाराज की नांईं कोई बुद्धिमान् नहीं है महाराज आप देखिये कि जब बैंगन उत्तम है तब तो परमेश्वर ने उसके ऊपर मुकुट रख दिया तथा मुकट के चारों ओर कलगी रख दी है और बैंगन का वर्ण श्रीकृष्ण के शरीर का जैसा घनश्याम है वैसाही बनाया है और उसका गूदा मक्खन की नांईं परमेश्वर ने बनाया है इस्से बैंगन का शाक उत्तम क्यों न बने फिर जब उस शाक ने बादी की तब रात भर नींद भी न आई और ट

दश बार शौच भी गया उस्से राजा बड़ा क्लेशित भया फिर जब प्रातःकाल भया तब भीतर से राजा बाहर आया वे खुशामदी लोग भी आये जब राजा का मुख बिगड़ा देखा तब उन खुशामदी लोगों ने भी उनसे अधिक मुख बिगाड़ लिया फिर वे सब खुशामदी लोग राजा के पास जाके बैठे राजा बोले कि बैंगन का शाक तो अच्छा होता है परन्तु बादी करता है तब वे बोले कि वाहवा महाराज के तुल्य कोई बुद्धिमान् नहीं है एकही दिन में बैंगन की परीक्षा कर ली देखिये महाराज कि जब बैंगन भ्रष्ट है तब तो उसके ऊपर परमेश्वर ने खूंटी गाड़ दी है उस खूंटी के चारो ओर कांटे लगा दिये हैं उस दुष्ट का वर्ण भी कोइले के तुल्य रक्खा है तथा परमेश्वर ने उस का गूदा भी श्वेतकुष्ठ के नांई बना दिया है तब उन खुशामदीयों से राजा ने पूछा कि शाम को तुम लोगों ने मुकुट, कलँगी, घनश्याम और मक्खन के तुल्य बैंगन के अवयव वर्णन किये उसी बैंगन के अवयवों को खूंटी, कांटे, कोइला और कुष्ठ के नांई बनाये हम कौन बात को सत्य मानैं कि जो कल शाम को कही थी उसको मानैं वा आज के कहे को मानैं वाहवा महाराज किस प्रकार के बिवेकी हैं कि बिरोध को शीघ्रही जान लिया सुनिये महाराज जिस बात से आप प्रसन्न होंगे उसी बात को हम लोग कहैंगे क्योंकि हम लोग तो आप के नौकर हैं सो आप झूंठी वा सच्ची बात कहैंगे उसी बात को हम लोग पुष्ट करेंगे और हम लोग वह साले बैंगन के नौकर नहीं हैं कि बैंगन की स्तुति करैं हम को बैंगन से क्या लेना है हम को तो आप की प्रसन्नता से प्रसन्नता है आप असत्य कहो तो भी हम को सत्य है वे इस प्रकार की सम्मति रखते हैं कि राजा सब दिन नशा करै और मूर्खही बना रहै फिर जब वे और कोई राजा वा धनाढ्य के पास जाते हैं तब उसी की

खुशामद करते हैं जिसके पास पहिले रहते थे उसकी निन्दा करते हैं इस प्रकार से खुशामदी मनुष्यों ने राजाओं को और धनाढ्यों की मति भ्रष्ट कर दी है जो बुद्धिमान् राजा और धनाढ्य लोग हैं इस प्रकार के मनुष्यों को पास भी नहीं बैठने देते न आप उनके पास बैठते तथा न उनकी बात सुनते हैं और जो कोई मिथ्या बात उनके पास कहता है उसी समय उसको उठा देते हैं और सदा बुद्धिमान्, सत्यवादी, विद्यावान् पुरुषों का सङ्ग करते हैं जो कि मुख के ऊपर सत्य २ कहैं मिथ्या कभी न कहैं उन राजाओं और धनाढ्यों की सदा बढ़ती ऐश्वर्य और सुख होता है इससे सज्जनों को श्रेष्ठही पुरुषों का संग करना चाहिये दुष्टों का कभी नहीं सत्य बात के आचरण में निन्दा वा दुःख होय तो भी न भय करना चाहिये भय तो एक परमेश्वर और अधर्मही से करना चाहिये और किसी से नहीं क्योंकि परमेश्वर सब काल में सब बातों को जानता है कोई बात परमेश्वर से गुप्त नहीं रहती इससे सज्जनों को परमेश्वरही से भय करना चाहिये कि परमेश्वर की आज्ञा के विरुद्ध हम लोग कुछ भी कर्म न करैं तथा अधर्म के आचरण से भय करना चाहिये क्योंकि अधर्म से दुःखही होता है सुख कभी नहीं और एक पुरुष की सब लोग स्तुति करैं अथवा निन्दा करैं ऐसा कोई भी नहीं है निन्दा इसका नाम है कि। गुणेषुदोषारोपणमसूया तथादोषेषुगुणारोपणमप्यसूयार्थापत्त्या वद्या ॥ जो कि गुणों में दोषों का स्थापन करना उसका नाम निन्दा है वैसेही अर्थापत्ति से यह आया कि दोषों में गुणों का आरोपण भी निन्दा होती है इससे क्या आया कि ॥ गुणेषुगुणारोपणंस्तुतिः दोषेषुदोषारोपणंचतद्विरोधत्वात् । गुणों में गुणों का जो स्थापन करना और दोषों में दोषों का उसका नाम स्तुति है जो जैसा पदार्थ है उसको वैसाही जानैं अर्था

यथावत् सत्यभाषण करनास्तुति है और अन्यथा अर्थात् मिथ्या भाषण करना निन्दा है इसलिये सज्जन लोगों कोसदा स्तुतिही करनी चाहिये निन्दा कभी नहीं मूर्ख लोग सत्यबात कहनेऔर सत्याचरण के करने में निन्दा करें तो भी बुद्धिमान लोगों को दुःख वा भय न मानना चाहिये किन्तु प्रसन्नताही रखनी चाहिये क्योंकि उनकी बुद्धि भ्रष्ट है इसलिये भ्रष्ट बात भी सदा कहते हैं जैसे वे भ्रष्ट लोग भ्रष्टता को नहीं छोड़ते हैं तो श्रेष्ठ लोग श्रेष्ठता को क्यों छोड़ैं किन्तु भ्रष्टता भ्रष्ट लोगों को भी अवश्य छोड़नी चाहिये यदि सब भ्रष्ट लोग बिरोध भी अत्यन्त करैं यहां तक कि मरण की भी अवस्था आजाय तोभी सत्यबचन और सत्याचरण सज्जनों को कभी न छोड़ना चाहिये क्योंकि यही मनुष्यों के बीच में मनुष्यत्व है और इसको छोड़ने से मनुष्यत्व तो नष्टही हो जाता है किन्तु पशुत्व भी आजाता है आजीविका भी सत्य से करनी चाहिये असत्य से कभी नहीं इसमें यह मनु भगवान का प्रमाण है । नलोकवृत्तंवर्तेतवृत्तिहेतोःकथंचन । इसका यह अभिप्राय है कि संसार में बहुत धूर्तलोग असत्य और पाखण्ड से आजीविका कर्ते हैं वैसे आचरण कभी न करै वृत्ति अर्थात् आजीविका के हेतु भी असत्य भाषणादिक न करै किन्तु सत्यही भाषण से आजीविका करै यही धर्म सनातन है कि अनृत अर्थात् मिथ्या वही दूसरे को प्रिय होय तो कभी न करै किंच सदा सत्य भाषणही करै दूसरा मनु भगवान का श्लोक है कि भद्रंभद्रमित्यादि । भद्र है कल्याण का नाम सोतीन बार श्लोक में पाठ किया है इसी हेतु कि कल्याण कारक वचनसदा कहै जिसको सुनके मनुष्य धर्मनिष्ठ होयऔर अधर्म त्याग करै शुष्कवैर अर्थात् मिथ्या वैर और विवाद किसी से न करना चाहिये जैसे कि आज काल के पण्डित और विद्यार्थी लोग हठ दुराग्रह और क्रोध से वाद विवाद कर्तेर लड़ पड़ते हैं उनके हाथ सिवाय दुःख के कुछ

भी नहीं लगता है इस से जो कुछ अपने को अज्ञात होय उस विषय को प्रीति पूर्वक विवाद छोड़ कर पूछने आप जो सत्य २ जानता होय सो औरों से कह दे ॥ परित्यजेदर्थकामौयौस्यातां-धर्मवर्जितौ। यह मनुस्मृति का वचन है इसका यह अभिप्राय है कि स्वाध्याय अर्थात् विद्या पठन पाठन और धन उपार्जन यदि धर्म से विरुद्ध होवें तो उनको छोड़ दे परन्तु विद्या प्रचार और धर्म को कभी न छोड़ै। संतोषंपरमास्थायसुखार्थीसंय-तोभवेत् संतोषमूलंहिसुखंदुःखमूलंविपर्ययः। इत्यादिक सब मनुस्मृति के श्लोक लिखेंगे सो जान लेना। संतोष इसका नाम है कि सम्यक प्रसन्न रहैं सदा अत्यन्त पुरुषार्थ रक्खैं आलस्य और पुरुषार्थ का छोड़ना संतोष नहीं किन्तु सब दिन पुरुषार्थ में तत्पर रहै सब दिन सुखार्थी और जितेन्द्रिय होवे कभी हर्ष और शोक न करै किंच जितना सुख है सो संतोष से ही है और जितना दुःख होता है सो लोभ ही से होता है॥ इन्द्रियार्थेषुसर्वेषुनप्रसज्ज्येत-कामतः अतिप्रसक्तिंश्चैतेषां मनसासन्निवर्त्तयेत् ॥ २ ॥ श्रोत्रादि इन्द्रियों के शब्दादिक जो विषय हैं उन में कामातुर हो के प्रवृत्त कभी न होवै किन्तु धर्म के हेतु प्रवृत्त होवै और मन से उन में अत्यन्त प्रीति छोड़ता जाय धर्म और परमेश्वर में प्रीति बढ़ाता जाय ॥ २ ॥ बुद्धिवृद्धिकराण्याशुधन्या-निचहितानिच नित्यंशास्त्राण्यवेक्षेतनिगमांश्चैववैदिकान् ॥ ३ ॥ जो शास्त्र शीघ्र ही बुद्धि धन और हित को बढ़ाने वाले हैं उन शास्त्रों को नित्य विचारै जैसे कि छः दर्शन चारों उपवेद और वेदों को नित्य विचारै उनके विचार से अनेक पदार्थविद्या को प्रकाश करै। किञ्चयथायथाहिपुरुषःशास्त्रंसमभिगच्छति तथातथाविजानातिविज्ञानंचास्यरोचते ॥ ४ ॥ जैसे २ पुरुष शास्त्र का विचार करता है तैसे २ उसका विज्ञान बढ़ता जाता है फिर विज्ञान ही में उसको प्रीति होती है और में नहीं ॥ ४ ॥ ऋषियज्ञंदेव-

यज्ञंभूतयज्ञंचसर्वदा नृयज्ञंपितृयज्ञंचयथाशक्तिनहापयेत् ॥ ५ ॥ ऋषियज्ञ अर्थात् पठन पाठन और संध्योपासन१ देवयज्ञ अर्थात् अग्नि होत्रादिक२ भूतयज्ञ अर्थात् बलिवैश्वदेव३ नृयज्ञ अर्थात् अतिथि सेवा४ और पितृयज्ञ नाम श्राद्ध और तर्पण अपने सामर्थ्य के अनुकूल यथा शक्ति करै उन्हें कभी न छोड़ै इतने सब कर्म अविद्वान् पुरुषों के वास्ते हैं और जो ज्ञानी हैं वे तो यथावत् पदार्थविद्या और परमेश्वर को जानते हैं। योगाभ्यास करै सब शास्त्रों का विचारै ब्रह्म विद्या की प्राप्ति और उपदेश भी करै इसमें मनु भगवान का प्रमाण है एतानेकेमहायज्ञान्यज्ञशास्त्रविदोजनाः अनीहमानाःसततमिन्द्रियेष्वेवजुह्वति ॥ ६ ॥ जितने ज्ञानी हैं वे पांच महायज्ञों को ज्ञान क्रिया ही से कर्ते हैं बाह्य चेष्टा से नहीं क्योंकि वे यज्ञशास्त्र के तत्वों को जानते हैं उनको अनीहमान अर्थात् बाहर की चेष्टा न देख पड़ै ज्ञान और योगाभ्यास से विषयों को इन्द्रियों में होम करदेते हैं तथा इन्द्रियों को मनमें मनको आत्मा में और आत्मा का परमेश्वर से योग कर्ते हैं उनको बाहर की चेष्टा करना आवश्यक नहीं ॥ ६ ॥ वाच्येकेजुह्वतिप्राणं प्राणेवाचंचसर्वदा वाचिप्राणेच पश्यन्तो यज्ञनिर्वृत्तिमक्षयाम् ॥ ७ ॥ कितने योगी और ज्ञानी लोग वाणी में प्राण का होम कर्ते हैं कितने प्राण में वाणी का होम कर्ते हैं सदा वाणी और प्राण में यज्ञ की सिद्धि अक्षय अर्थात् जिसका नाश नहीं होता उसको देखते हैं अर्थात् वाणी तो प्राणही से उत्पन्न होती है और प्राण आत्मा से आत्मा अविनाशी है उसको परमात्मा से युक्त कर देते हैं इससे उनको मुक्तिही हो जाती है फिर कभी उनको दुःख का संग नहीं होता है इससे उन को बाह्य क्रिया का करना आवश्यक नहीं ॥ ७ ॥ ज्ञानेनैवापरेविप्रा यजन्त्येतैर्मखैः सदा ज्ञानमूलांक्रियामेषां पश्यन्तोज्ञानचक्षुषा ॥ ८ ॥ जो

ज्ञान चक्षु से सब पदार्थों को यथावत् जानते हैं वे ज्ञान ही से ब्रह्म यज्ञादिक पांच महायज्ञों को करते हैं क्योंकि ज्ञानयज्ञों से उनका सब प्रयोजन सिद्ध है सब क्रिया उन की ज्ञानमूलक होी है क्योंकि उनके हृदय मन और आत्मा सब शुद्ध हो गये हैं उन का बाह्य अडंबर करना आवश्यक नहीं बाह्य क्रिया तो उन लोगों के लिये है कि जिनका हृदय और आत्मा शुद्ध नही व अग्नि होत्रादिक यज्ञों को बाह्य क्रिया से अवश्य करैं क्योंकि उनके करने बिना हृदय शुद्ध नही होगा उन ज्ञानियों की सेवा और सङ्ग से ज्ञानोपदेश लेवैं जिस्से कि कर्मियों की भी बुद्धि बढ़ै ॥ ८ ॥ आसनाशनशय्याभिरद्भिर्मूलफलेनवा नास्यकश्चिद्वसेद्गेहेशक्तितोनर्चितोतिथिः ॥ ९ ॥ गृहस्थ के घर किसी समय कोई अतिथि आवै तो असत्कृत अर्थात् सत्कार बिना न रहै जैसा अपना सामर्थ्य हो वैसा सत्कार करना चाहिये आसन भोजन शय्या जल कंद और फल से अवश्य सत्कार करै ॥ ९ ॥ परन्तु ऐसे मनुष्य का सत्कार कभी न करै। पाखण्डिनोविकर्मस्थान् वैडालव्रतिकाञ्छठान् हैतुकान्बकवृत्तींश्च वाङ्मात्रेणापिनार्चयेत् ॥ १० ॥ पाखंडि अर्थात् वेद विरुद्ध मार्ग में चलने वाले चक्रांकितादिक वैरागी और गोकुलिये गोसांई आदिकों का वचन से भी सत्कार गृहस्थ लोग कभी न करैं वैसे चोरी वेश्या गमनादिक विरुद्ध कर्म करने वाले पुरुषों का भी सत्कार न करैं वैडाल व्रतिक नाम परकार्य के नाश करने वाले अपने कार्य में तत्पर हैं जैसे कि बिलार मूसे का तो प्राण हरले और अपना पेट भरले ऐसे पुरुषों का वचनसेभी गृहस्थ लोग सत्कार न करैं शठनाम मूर्खों का भी सत्कार न करैं शठ वे होते हैं कि उन्हे बुद्धि न होय और अन्य का प्रमाण भी न करैं हैतुका नाम वेद शास्त्र विरुद्ध कुतर्क के करने वाले उनका भी वचन से सत्कार न करैं

बकवृत्ति अर्थात् जैसे वैरागियों में खाखी लोग भस्म लगा लेते जटा बढ़ालेते और काठ की कौपीन धारण कर लेते हैं फिर ग्राम वा नगर के समीप जाके ठहरते और शंखादिक बजादेते हैं अर्थात् सूचना कर देते हैं कि गृहस्थ लोग आवैं और हमको धन आदिक पदार्थ देवें जब गृहस्थ लोग आते हैं तब दूर से देख के ध्यान लगाते हैं प्रसाद में विष भी देदेते हैं और उनका धन सब हरण कर लेते हैं उनका गृहस्थ लोग वचन से भी सत्कार न करैं ऐसे जितने मंडली बांध के फिरते हैं वैरागी और साधू इत्यादिक उनको साधू न जानना चाहिये, किन्तु बड़ा ठग जानना चाहिये और कितने गृहस्थ लोग सदावर्त्त और क्षेत्र कर्ते हैं वे अनुचित कर्ते हैं क्योंकि बड़े धूर्त गांजा और भांग पीने वाले तथा चोर और डांकू वैसेही लुच्चे सदावर्तों से अन्न लेते और क्षेत्रों में भोजन कर लेते हैं फिर कुकर्महो कर्ते रहते और हरामी हो जाते हैं बहुत से लोग अपना काम काज छोड़ सदावर्तों और क्षेत्रों के ऊपर घर के सब काम और नौकरी चाकरी छोड़ के साधु वा भिखारी बन जाते हैं फिर संतका अन्न खाते और सोते पड़े रहते हैं अथवा कुकर्म कर्ते रहते हैं इससे संसार की बड़ी हानि होती है सो जो कोई सदावर्त्त क्षेत्र कर्ता है उसमें सज्जन वा सत्पुरुष कोई नहीं जाता इससे उन गृहस्थों का पुण्य कुछ नहीं होता किन्तु पापही होता है इससे गृहस्थ लोग अन्नादिक दान करना चाहैं तो पाठशाला रचलेवैं उसी में सब दान करैं अथवा जो श्रेष्ठ धर्मात्मा गृहस्थ और विरक्त होवैं उन को अन्नादिक देवैं और यज्ञ करैं तब उनको बड़ा पुण्य होय पाप कभी न होवै तथा मनु भगवान् का वचन है। वेदविद्याव्रतस्नानात् श्रोत्रियानगृहमेधिनः। पूजयेद्धव्यकव्येन विपरीतांश्चवर्जयेत् ॥ ११ ॥ जिनों ने ब्रह्म चर्य्याश्रम करके

वेदविद्या अर्थात् सब विद्या को पढ़ा है और धर्माचरण से शुद्ध होवें ऐसे श्रोत्रिय अर्थात् विद्वान् और गृहस्थ लोगों का हव्य नाम देवकार्य औ कव्यनाम पितृकार्य में गृहस्थ लोग सत्कार करें उन से विपरीत लोगों का सत्कार कभी न करें। ११ ॥ शक्तितोपचमानेभ्यो दातव्यंगृहमेधिना संविभागश्चभूतेभ्यः कर्तव्योनुपरोधतः॥ १२ ॥ जो सन्यासीआश्रमस्थ विद्यावान् और धर्मात्मा होवें उन की भी गृहस्थ लोग सेवा करें और भी जितने अनाथ होवें अर्थात अन्धे लंगड़े लूले और जिनका कोई पालन करने वाला न होवे उनका भी गृहस्थ लोग पालन करें ॥ १२ ॥ नोपगच्छेत्प्रमत्तोपिस्त्रियमार्त्तवदर्शने। समानशयनेचैवनशयीततयासह ॥ १३ ॥ जब स्त्री रजस्वला होय उस दिन से लेके चार दिन तक काम पीड़ा से प्रमत्त भी होय तो भी स्त्री का संग न करै और एक शय्या में स्त्री के साथ कभी न सोवै ॥ १३ ॥ रजसाभिलुप्तांनारींनरस्यह्युपगच्छतः।प्रज्ञातेजोबलंचक्षुरायुश्चैवप्रहीयते ॥ १४ ॥ जो पुरुष रजस्वला स्त्री से समागम कर्ता है उसको बुद्धि तेज बल नेत्र और आयु ये पांच नष्ट हो जाते हैं क्योंकि स्त्री के शरीर से एक प्रकार का अग्नि निकलता है उससे पुरुष का शरीर रोगयुक्त होता है रोग युक्त होने से बुध्यादिक नष्ट हो जाते हैं॥ १४ ॥ तांविवर्जयतस्तस्यरजसासमभिलुप्ताम् प्रज्ञातेजोबलंचक्षुरायुश्चैवप्रवर्द्धते ॥ १५ ॥ जो पुरुष रजस्वला स्त्री का संग नहीं कर्ता उस पुरुष के बुद्धि तेज बल नेत्र और आयु ये सब बढ़ते हैं ॥ १५ ॥ ब्राह्मे मुहूर्त्तेबुध्येतधर्मार्थौचानुचिन्तयेत् कायक्लेशांश्चतन्मूलान् वेदतत्त्वार्थमेवच ॥ १६ ॥ एक पहर रात जब रहे तब सब मनुष्य उठें उठके प्रथम धर्म का विचार करें कि यह २ धर्म की बात हमको करनी होगी तथा यह २ अर्थ नाम व्यवहार की बात अवश्य करना होगा उस धर्म और अर्थ के आचरण में विचार करें कि परीश्रम थोड़ा होय और

वह कार्य सिद्ध हो जाय और जो शरीर में रोगादि क्लेश हों उनका औषध पथ्य और निदान का इस्से यह रोग भया है इन सबको विचारै विचार के उनके निवारण का विचार करै फिर वेदतत्त्वार्थ नाम परमेश्वर को प्रार्थना करै और उठ के मल मूत्रादिक त्याग करै हस्त पाद का प्रक्षालन करें फिर जो वृक्ष दूध वाले होवें उनसे दन्त धावन करैं अथवा खैर के चूर्ण वा सूंघनी से युक्त करके दन्त धावन से दांतों को मलै और स्नान करै सूर्योदय से पहिले १ वा दो कोस भ्रमण करै एकान्त में जाके संध्योपासन जैसा कि लिखा है वैसा करै सूर्योदय के पीछे घरमें आके अग्निहोत्र जैसा जिस वर्ण का व्यवहार पूर्वक लिखा है वैसा करै जब तक पहर दिनन चढ़ै तबतक दूसरे प्रहर के प्रारंभ में तर्पण बलिवैश्वदेव और अतिथि सेवा करके भोजन करै तब जो जिसका व्यवहार है उस व्यवहार को यथावत् करैं ग्रीष्मऋतु को छोड़के दिवस में न सोवै क्योंकि दिन को सोने से रोग होते हैं और ग्रीष्म में अर्थात् वैशाख और ज्येष्ठ में थोड़ा सोने से रोग नहीं होता क्योंकि निद्रा से शरीर में उष्णता होती है सो ग्रीष्म में उष्णताही अधिक होती हैं जल भी अधिक पीने में आता है फिर जब मनुष्य सोता है तब सब द्वार अर्थात् लोम द्वार से भीतर से जल बाहर निकलता है उस्से सब मार्ग शुद्ध हो जाते हैं इस्से ग्रीष्म ऋतुमें सोने से रोग नहीं होता है अन्यऋतु में सोनेसे होता है और जो कुछ आवश्यक कार्य होय तो ग्रीष्म ऋतु में भी न सोवै तो बहुत अच्छा है फिर जब चार वा पांच घड़ी दिन रहै तब सब कार्यों को छोड़के भोजन के लिये जावै पहिले शौच स्नानादिक क्रिया करै तदनन्तर बलिवैश्वदेव फिर अतिथि सेवा करके भोजन करै भोजन करके फिर भी संध्योपासन के वास्ते एकान्त में चला जाय संध्योपासन करके फिर अपने अग्निहोत्र स्थान में आके अग्नि-

होच करै जब २ अग्निहोच करै तब २ स्त्री के साथही करै फिर जो जिसका व्यवहार होय वह उसको करै अथवा भ्रमण करै निदान एक प्रहर रात तक व्यवहार करै फिर सोवै दो प्रहर अथवा डेढ़ प्रहर तक फिर उठके वैसेही नित्य क्रिया करै सो मध्यरात्रि के मध्य दो प्रहर में जब २ वीर्य दान करै उसके पीछे कुछ ठहर के दोनों स्नान करैं पीछे अपने २ शय्या में पृथक २ जाके सोवैं जो स्नान न करेंगे तो उनके शरीर में रोगही हो जायगे क्योंकि उस्से बड़ी उष्णता होती है इसलिये स्नान करने से वह विकार न होगा और वीर्यतेज भी बढ़ेगा इस्से उस समय स्नान अवश्य करना चाहिये इसमें मनुभगवान् के बचन का प्रमाण है। भोजनंहिगृहस्थानांसायंप्रातर्विधीयते स्नानंमैथुनिनः स्मृतम्॥ इसका अर्थ यह है कि दो वेर गृहस्थ लोगों को भोजन करना चाहिये सायं और प्रातः काल जो मैथुन करै तो उसके पीछे स्नान अवश्य करै तथाचश्रुतिःअहरहःसंध्यामुपासीतअहरहरग्निहोचंजुहुयात्। इनका यह अभिप्राय है कि सायं और प्रातः काल में दो वेर संध्योपासन और अग्निहोच करैं दोई संध्या हैं प्रातः और सायंकाल मध्यान संध्या कभी नहीं क्योंकि संध्या नाम है सन्धिका सन्धि दो काल होती है प्रातःकाल प्रकाश और अन्धकार की संधि होती है तथा सायंकाल प्रकाश और अन्धकार की सन्धि होती है मध्यान में केवल प्रकाशही है इस्से मध्यान्ह में संध्या नहीं हो सक्ती संध्यायन्तिपरंतत्त्वंनामपरमेश्वरंयस्यांसासंध्या। इस समय परमेश्वर का ध्यान कर्ते हैं इस्से इसका नाम संध्या है अथवा संधयेहितासंध्या मन और जीवात्मा का परमेश्वर से जिस कर्म से सन्धान होय उसका नाम सन्धि है संधि के लिये जो अनुकूल कर्म होता है उसका नाम संध्या है सो दो हैं। तस्मादहोरात्रस्यसंयोगेब्राह्मणः संध्यामुपासीत ॥ य

सामवेद के ब्राह्मण की श्रुति है। उद्यन्तमस्तंयान्तमादित्यमभिध्यायन् ब्राह्मणोविद्वान्सकलंभद्रमश्नुते। यह यजुर्वेद के ब्राह्मण की श्रुति है इसका यह अभिप्राय है कि जिस्से अहोरात्र अर्थात रात्रि और दिवस के संयोग में संध्या करैं जब जीवात्मा बाहर व्यवहार करने को चाहता है तब वहिर्मुख होता है मन और इन्द्रियों को भी वहिर्मुख कर्ता है और जीव भी नेत्र ललाट और श्रोत्र ऊपर के अंगो में विहार कर्ता है जैसे कि सूर्यउदय होकर ऊपर २ बिहार कर्ता है वैसे जीव भी जब सोना चाहता है तब हृदय पर्यन्त नीचे के अंगो में चला जाता है रात्रि को नांई अन्धकार हो जाता है बिना अपने स्वरूप के किसी पदार्थ को नहो देखता जैसे कि सूर्य जब अस्त हो जाता है तब अन्धकार होने से कुछ नहीं देख पड़ता है ऐसही जीव के ऊपर आने और नीचे जाने का व्यवहार उसका सन्धान दोनों संध्याकाल में करैं इसके सन्धान करने से परमेश्वर पर्यन्त का कालान्तर में मनुष्यों को बोध हो जाता है और जीवका कभी नाश नहीं होता इस्से इसका नाम आदित्य है इस श्रुतिका अर्थ हो गया अर्थात। उद्यन्तमस्तंयान्तमादित्यमभिध्यायन् ब्राह्मणः सकलंभद्रमश्नुते। इसहेतु उदय और सायंकाल की दो संध्या निकलती हैं सो जान लेना तथा मनुस्मृति के श्लोक भी हैं। नतिष्ठतितुयःपूर्वान् नोपास्ते यश्चपश्चिमाम्। ससाधुभिर्वहिष्कार्यः सर्वस्माद्द्विजकर्मणः॥ १॥ प्रातःसंध्यांजपंस्तिष्ठेत्सावित्रीमार्कदर्शनात्। पश्चिमांतुसमासीनः सम्यगृक्षविभावनात्॥ २॥ जो प्रातः और सायम् काल को संध्या नहीं करता उसको श्रेष्ठ द्विज लोग सब द्विज कर्माधिकारों से निकाल देवैं अर्थात् यज्ञोपवीत को तोड़ के शूद्र कुल में कर देवैं वह केवल सेवाही करै जो कि शूद्र का कर्म है॥ १॥ इस्से दो सन्ध्या निकलती हैं दूसरे श्लोक में सन्ध्या के काल का नियम और दोनों सन्ध्या

हैं दो घड़ी रात से लेके सूर्योदय पर्यन्त प्रातः संध्या काल का नियम है तथा एक वा आध घड़ी दिन से ले जब तक तारा न निकलें तब तक सायं सन्ध्या के काल नियम है और गायत्री का अर्थ और जैसा ध्यान उसका क है वैसाही दोनों काल में करैं और जो कहता है कि मध्या संध्या क्यौं न होय तो उनसे पूंछना चाहिये कि मध्य रा में संध्या क्यों न होय और दो पहर के दो मुहूर्त्त और दो में संध्या क्यों न होजाय ऐसा कहने से तो हजारों संध्या जांयगी और उसके मत में अनवस्था भी आजायगी इस्से उस कहना मिथ्याही है ॥ २ ॥ अधार्मिकोनरोयोहि यस्यचाप्यन धनम् । हिंसारतश्चयोनित्यं नेहासौसुखमेधते ॥ ३ ॥ जो अधार्मिक अर्थात अधर्म का करने वाला है और जिसका भी अन्रत अर्थात असत्य से आया होय और नित्य हिंसा अर्थात पर पीड़ाही में नित्य रहता होय वह पुरुष इस संसार सुख को कभी नहीं प्राप्त होता ॥ ३ ॥ नसीदन्नापिधर्मेण म ऽधर्मेनिवेशयेत् । अधार्मिकाणांपापानामाशुपश्यन्विपर्ययम् ॥ यदि मनुष्य बहुत क्लेशित भी होय और धर्म के आचरण से बहुत दुःख पावै तो भी अधर्म में मनको प्रविष्ट न करै क्यों अधर्म करने वाले मनुष्यों का शीघ्रही विपर्यय अर्थात नाश जाता है ऐसा देखने में भी आता है इस्से मनुष्य अधर्म क की इच्छा कभी न करै ॥ ४ ॥ नाधर्मश्चरितोलोके सद्यःफलति रिव । शनैरावर्त्तमानस्तु कर्तुर्मूलानिकृन्तति ॥ ५ ॥ जो अधर्म करता है उसको उसका फल अवश्य होता है जो न होगा तो देर में होगा जैसे कि गाय जिस समय उस सेवा करते हैं उस समय दूध नहीं देती किन्तु कालान्तर में है वैसेही अधर्म का भी फल कालान्तर में होता है धीरे २ अधर्म पूर्ण होजायगा तब उसके करने वालों का मूल अर्थात

के कारणों को छेदन कर देगा इस्से वे दुःख सागर में गिरेंगे॥ ५ ॥ अधर्मेणैधतेतावत्ततोभद्राणिपश्यति । ततःसपत्नान्जयति समूलस्तुविनश्यति ॥ ६ ॥ जब मनुष्य धर्म को छोड़ के अधर्म में प्रवृत्त होता है तब छल कपट और अन्याय से पर पदार्थों को हरण कर लेता है हरण करके कुछ सुख भी करता है फिर शत्रु को भी अधर्म छल और कपट से जीत लेता है परंतु उसके पीछे जैसा मूल सहित वृक्ष उखड़कर गिर जाता है वैसा मूल सहित उस अधर्म करनेवाले पुरुष का नाश होजाता है॥६॥ इस्से किसी मनुष्य को अधर्म करना न चाहिये किन्तु । सत्यधर्मार्यवृत्तेषु शौचेचैवारमेत्सदा । शिष्यांश्चशिष्याद्धर्मेण वाग्बाहूदरसंयतः ॥ ७ ॥ सत्य धर्म और आर्य जो श्रेष्ठ मनुष्य हैं उनमें और उनके आचरण में सदा स्थित हो शौच पवित्रता अर्थात हृदय की शुद्धि और शरीरादिक पदार्थों की शुद्धि करने में सदा रमण करैं तथा अपने शिष्य पुत्र और विद्यार्थियों को यथावत् धर्म से शिक्षा करैं और वाणी बाहु उदर इनका संयम करैं अर्थात् वाणी से वृथा भाषण, बाहु से अन्यथा चेष्टा, और उदर का संयम अर्थात भोजन का बहुत लोभ न रक्खैं ॥ ७ ॥ नपाणिपादचपलो ननेत्रचपलोऽनृजुः । नस्याद्वाक्चपलश्चैव नपरद्रोहकर्मधीः ॥ ८ ॥ पाणि हाथ पाद अर्थात पैर उनसे चपलता नाम चंचलता न करै तथा नेत्र से भी चपलता न करै अनृजु अर्थात अभिमान कभी न करै सदा सरल होय और वाक् चपल न होवै अर्थात बहुत न बोलै जितना उचित हो उतनाही भाषण करै और पराये का द्रोह अर्थात ईर्ष्या कभी न करै और कर्महो परम पदार्थ है उपासना और ज्ञान कुछ भी नहीं ऐसी बुद्धि कभी न करै किन्तु कर्म से उपासना और उपासना से ज्ञान श्रेष्ठ है ऐसी बुद्धि सदा रक्खै ॥८॥ येनास्यपितरोयाताः येनयाताःपितामहाः। तेनयायात्सतांमार्गं-

तेनगच्छन्नरिष्यते ॥ ६ ॥ जिस मार्ग से उसके पिता और पिता
मह गये हों उसी मार्ग से आप भी जावै उस मार्ग पर जा
से मनुष्य नष्ट नहीं होता किन्तु सुखीही होता है और दुःख कभ
नहीं पाता पूर्वपक्ष यदि पिता और पितामह कुकर्मी होंय त
भी उनकी रीति से चलना चाहिये वा नहीं उत्तर नहीं क्
कि इसी लिये मनु भगवान ने सतामिति विशेषण दिया है
यदि पिता और पितामह सत्पुरुष अर्थात् धर्मात्मा होवैं तो उ
की रीति से चलना और यदि अधर्मी होवैं तो उनकी रीति
कभी न चलना चाहिये ॥ ६ ॥ ऋत्विक्पुरोहिताचार्यैर्मातुल
तिथिसंश्रितैः। बालवृद्धातुरैर्वैद्यैर्ज्ञातिसम्बन्धिबान्धवैः ॥ १० ॥ म
तापितृभ्यांयामीभिर्भ्रात्रापुत्रेणभार्यया। दुहित्रादासवर्गेण विव
दंनसमाचरेत्॥ ११ ॥ ऋत्विक्, पुरोहित, आचार्य, मातुल अर्थ
मामा, अतिथि, तथा संश्रित अर्थात मित्र, बालक, वृद्ध, आतु
नाम दुःखी, वैद्य, ज्ञाति, संबंधी अर्थात श्वसुरादिक, बान्धव अर्थ
कुटुम्बी, माता, पिता, तथा दमाद, भ्राता, पुत्र, तथा भार्या अर्थ
स्त्री, दुहिता अर्थात कन्या, दासवर्ग अर्थात सेवकलोग इन
विवाद कभी न करै और औरों से भी विवाद न करै विव
का करना दुःख मूलही है इस्से सज्जनों को किसी स विव
बाद करना न चाहिये॥ ११ ॥ प्रतिग्रहसमर्थोपिप्रसङ्गन्तत्रव
येत्। प्रतिग्रहेणह्यस्याशु ब्राह्मंतेजःप्रशाम्यति ॥ १२ ॥ प्रतिग्र
लेने में समर्थ अर्थात गुणवान भी होय और उसको लोग दे
भी होंय तो भी किसी से दान न लेवै किंतु अध्यायन ना
पढ़ाना याजन नाम यज्ञ का कराना अथवा अपने परोश्रम
आजीविका को करै और जो पुरुष प्रतिग्रह लेता है उस
ब्राह्म तेज अर्थात् विद्या नष्ट हो जाती है क्योंकि वह खुशाम
होजायगा इस्से दान का लेना उचित नहीं ॥ १२ ॥ अतपास्त्व
नधीयानः प्रतिग्रहरुचिर्द्विजः। अम्भस्यश्मप्लवेनेव सहतेनैवमज्ज

ति ॥ १३ ॥ जो पुरुष तपस्वि और विद्वान् नहीं और प्रतिग्रह में रुचि रखता है वह उसी दान के साथ पाप समुद्र में डूब मरेगा जैसे कोई पाषाण की नौका से समुद्र वा नदी को तरे वह तरेगा तो नहीं परंतु डूब के मर जायगा वैसेही प्रतिग्रह लेनेवाले मूर्ख की गति होगी ॥ १३ ॥ चिष्वप्येतेषुदत्तंहि विधिनाप्यर्जितंधनम् । दातुर्भवत्यनर्थाय परत्रादातुरेवच ॥ १४ ॥ एक तो अविद्वान् दूसरा वैडालव्रतिक तीसरा वकव्रतिक इन तीनों को तो जल का भी दान न देवै और जिसने विधि अर्थात धर्म से धन का संचय किया होय उस धन को तीनों को कभी न देवै जो कोई दाता देगा उसको बड़ा दुःख होगा और परलोक मे उन तीन पुरुषों को इस लोक में भी बड़ा दुःख होगा ॥ १४ ॥ यथाप्लवेनौपलेननिमज्जत्युदकेतरन् । तथानिमज्जतोधस्तादज्ञौदातृप्रतीच्छकौ ॥ १५ ॥ जैसे कोई पाषाण की नौका पर चढ़ के उदक में तरा चाहै वह तर तो नहीं सकेगा परंतु डूब के मर जायगा तैसेही परीक्षा के विना दुष्टों को जो दान देता है और जो दुष्ट लेने वाले हैं वे सब अज्ञान के होने से अधोगति को जायंगे अर्थात् दुःख और नरक को प्राप्त होंगे उनको कभी कुछ सुख न होगा इससे परीक्षा करके श्रेष्ठ और धर्मात्माओंही को दान देना चाहिये अन्य को नहीं वैडालव्रतिक और वकव्रतिक मनुष्यों का यह लक्षण है ॥ १५ ॥ धर्मध्वजीसदालुब्धश्छाद्मिकोलोकदम्भकः । वैडालव्रतिकोज्ञेयोहिंस्रःसर्वाभिसन्धकः ॥ १६ ॥ अधोदृष्टिर्नैष्कृतिकःस्वार्थसाधनतत्परः । शठोमिथ्याविनीतश्चवकव्रतचरोद्विजः ॥ १७ ॥ जो मनुष्य धर्मध्वजी अर्थात् धर्म तो कुछ न करै अथवा कुछ करै भी तो फिर अपने मुख से कहै कि मैं बड़ा पंडित वैराग्यवान् योगी तपस्वी और बड़ा धर्मात्मा हूं इसको धर्मध्वजी कहते हैं जो बड़ा लोभी होय अर्थात् जो कुछ पावै सो भूमि में अथवा

जहां तहां रख छोड़ै खाने में भी लोभ करै और बड़ा कप
छली होय लोगों को दंभ का उपदेश करै अर्थात् जैसे कि सं
टायी लोग उपदेश करते हैं कि तुलसी की माला धारण कर
से बैकुंठ को जाता है और सब पापों से छूट जाता है त
रुद्राक्ष माला धारण करने से कैलास को जाता है और स
पापों से दूर हो जाता है और गङ्गादिक तीर्थ राम शिवादि
नाम स्मरण और काश्यादिकों में मरण से मुक्ति होजाती
इस प्रकार के उपदेश करके दंभ और अभिमान में लोगों
गिरा देते हैं और आप भी गिरे रहते हैं इस्से दुःख औ
बन्धन तो होहोगा और मुक्ति कभो न होगो किंतु धर्माचर
विद्या और ज्ञान इनके बिना मुक्ति कभी नहीं होसक्ती हिं
नाम रात दिन जिसका चित्त प्राणियों को पीड़ा देने
नित्य प्रवृत्त रहै उसको हिंस्र कहते हैं सर्वाभिसन्धक अर्थ
अपने प्रयोजन के लिये दुष्ट तथा श्रेष्ठों से मेल रक्खैं सो
धर्म से नहीं किन्तु अधर्मही से धनादिक हरण करने के लि
प्रीति करै उनको सर्वाभिसन्धक कहते हैं यह वैडालव्रतिक
लक्षण है ॥ क्रोध के मारे वा कपट छल से अधोदृष्टिनाम नी
देखता रहै कोई जाने कि वह बड़ा शान्त और वैराग्यवान्
नैष्कृतिक नाम यदि कोई एक कठिन बचन उसे कहै और उस
बदले में दस कठिन बचन भो उसको कहै तो भी उसकी शा
न होय उस्को नैष्कृतिक कहते हैं स्वार्थ साधन तत्पर अर्थ
अपने स्वार्थ साधन में ही तत्पर अर्थात् किसी को पीड़ा तथा हा
होजाय और वह अपने स्वार्थ के आगे कुछ न गिनै शठ अर्थ
मूर्ख जो हठ दुराग्रह से निर्बुद्धि होय और अन्य का उप
न मानैं उसको शठ कहते हैं मिथ्या विनीत नाम विनय त
नम्रता करै सो कुटिलता से करै शुद्ध हृदय से नहीं ऐसे ल
वाले को बकव्रतिक कहते हैं अर्थात जैसे बक नाम बकुला

के समीप ध्यानावस्थित होके खड़ा रहता है और मत्स्य को देखता भी रहता है जब मत्स्य उसके पेच में आता है तब उस को उठा के खा लेता है तथा जितने धूर्त पाखण्डी होते हैं व दूसरे का प्राण भी हरण कर लेते हैं तिस्पर उनको कभी दया नहीं आती ऐसेही जितने शैव शाक्त गाणपत्य वैष्णवादिक संप्रदाय वाले हैं इनमें कोई लाखों में एक अच्छा होता है और सब वैसेही होते हैं इस्से गृहस्थ लोग इनकी सेवा कभी न करैं १७ ॥ सर्वेषामेवदानानांब्रह्मदानंविशिष्यते। वार्यन्नगोमहीवासस्तिलकाञ्चनसर्पिषाम् ॥ १८ ॥ वारि नाम जल अन्न गाय मही अर्थात पृथिवी वास नाम वस्त्र तिल कांचन नाम सुवर्ण सर्पि नाम घी ८ इन सब दानों से ब्रह्म अर्थात वेद विद्या का दान सब से श्रेष्ठ दान है ऐसा अन्य कोई दान नहीं है इस्से सब गृहस्थों को अर्थ सहित वेद पढ़ने और पढ़ाने में शरीर मन और धन से अत्यन्त पुरुषार्थ करना उचित है ॥ १८ ॥ धर्मंशनैस्सञ्चिनुयाद्वल्मीकमिवपुत्तिकाः। परलोकसहायार्थं सर्वभूतान्यपीड़यन् ॥ १९ ॥ सब भूतों को पीड़ा के बिना धीरे धीरे धर्म का संचय मनुष्यों को करना उचित है जैसे कि चींटी धीरे २ मिट्टी को बाहर निकाल के संचय कर देती है तथा धान्य कणों का भी धीरे २ बहुत संचय कर देती हैं वैसेही मनुष्यों को धर्म का संचय करना उचित है क्योंकि धर्मही के सहाय से मनुष्यों को सुख होता है और किसी के सहाय से नहीं ॥ १९ ॥ नामुत्रहिसहायार्थंपितामाताचतिष्ठतः। नपुत्रदारंनज्ञातिर्धर्मस्तिष्ठतिकेवलः ॥ २० ॥ परलोक में सहाय के करने को पिता माता पुत्र तथा स्त्री ज्ञाति नाम कुटुम्बी लोग कोई समर्थ नहीं है केवल एक धर्मही सहायकारी है और कोई नहीं ॥ २० ॥ एकःप्रजायतेजन्तुरेकएवप्रलीयते। एकोऽनुभुंक्ते सुकृतमेकएवचदुष्कृतम् ॥ २१ ॥ देखना चाहिये कि जब

जन्म होता है तब एकही का होता है और मरण होता तो भी एकही का होता है तथा सुख का भोग करता है एकही करता है अथवा दुःख का भोग करता है तो एक करता है इसमें संग किसी का नहीं इस्से सब मनुष्यों को उचित है कि अपना पालन वा माता पितादिकों का पा धर्महीसे जितना धनादिक मिलै उतनेही से व्यवहार और पालन करैं अधर्म से कभी नहीं क्योंकि॥ एकःपापानिकु फलंभुङ्क्तेमहाजनः। भोक्तारोविप्रमुच्यन्ते कर्तादोषेणलिप्य यह महाभारत का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि अधर्म करेगा उसका फल वही भोगेगा और माता पिता सुख के भोग करने वाले तो हो जायंगे परंतु दुःख जो पाप फल उसमें से भाग कोई न लेगा किन्तु जिसने किया व पाप का फल भोगेगा और कोई नहीं॥ २१॥ मृतंशरीरमु ज्य काष्ठलोष्ठसमंक्षितौ। विमुखाबान्धवायान्ति धर्मस्तमनुग ति॥ २२॥ देखना चाहिये कि जब कोई मर जाता है काष्ठ वा लोष्ठ जैसा कि मिट्टी के ढेले को पृथिवी में फेंक चले जाते हैं वैसे मरे हुए शरीर को अग्नि वा पृथिवीमें के विमुख नाम पीठ करके कुटुम्बो लोग चले आते हैं सहायता नहीं करते॥ २२॥ तस्माद्धर्मंसहायार्थं नित्यंसं याच्छनैः। धर्मेणहिसहायेन तमस्तरतिदुस्तरम्॥ २३॥ नि नित्यही सहाय के लिये धोरे २ धर्मही का संचय करैं क्यो धर्मही के सहाय से दुस्तर जो तम अर्थात् जन्म मरणा दुःखसागर का जो संयोग उसका नाश और मुक्ति अर्थात् मेश्वर की प्राप्ति और सर्व दुःख की निवृत्ति धर्मही से है अन्यथा नहीं॥ २३॥ धर्मप्रधानंपुरुषं तपसाहतकिल्बिष परलोकन्नयत्याशुभास्वन्तंखस्वशरीरिणम्॥ २४॥ जिस पुरुष धर्मही प्रधान है अधर्म में लेशमात्र भी जिसकी प्रवृत्ति न

तथा तप जो धर्म का अनुष्ठान है और पाप का त्याग इससे जिस का पाप नष्ट होगया है उसको वही धर्म परलोक अर्थात् स्वर्ग लोक अथवा परमानन्द परमेश्वर को प्राप्त कर देता है वह किस प्रकार का शरीरवाला होता है भास्वन्त अर्थात तेजोमय वा ज्ञान युक्त, और आकाशवत् अदृष्ट, अच्छेद्य काटने वा दाह करने में न आवै ऐसा उसका सिद्ध शरीर होता है जैसा कि योगियों का ॥ २४ ॥ दृढकारीमृदुर्दान्तः क्रूराचारैरसंवसन् । अहिंस्रोदमदानाभ्यां जयेत्स्वर्गंतथाव्रतः ॥ २५ ॥ म० दृढ़कारी अर्थात् जो कुछ धर्म कार्य अथवा धर्म युक्त व्यवहार को करै सो दृढ़ही निश्चय से करै और मृदु अर्थात अभिमानादिक दोष से रहित होय दान्त अर्थात जितेन्द्रिय होय और क्रूराचार अर्थात् जितने दुष्ट हैं उनका साथ कभी न करै किन्तु श्रेष्ठ पुरुषोंही का संग करै दम अर्थात जिसका मन वशीभूत होय दान अर्थात बेद बिद्या का नित्य दान करना और अहिंस्र अर्थात किसी से बैर बुद्धि नहीं ऐसाही लक्षणवाला पुरुष स्वर्ग को प्राप्त होता है अन्य नहीं ॥ २५ ॥ वाच्यर्थानियताःसर्वे वाङ्मूलावाग्विनिःसृताः । तांस्तुयःस्तेनयेद्वाचं ससर्वस्तेयकृन्नरः ॥ २६ ॥ जिस पुरुष को प्रतिज्ञा मिथ्या होती है अथवा जो मिथ्या भाषण कर्त्ता है उसने सब चोरी करली क्योंकि वाणीही में सब अर्थ निश्चित रहते हैं केवल बचनहीं व्यवहारों का मूल है उस वाणी से जो मिथ्या बोलता है वह सब चोरी आदिक पापों को अवश्य कर्त्ता है इससे मिथ्या भाषण करना उचित नहीं ॥ २६ ॥ आचाराल्लभतेह्यायुराचारादीप्सिताःप्रजाः । आचाराद्धनमक्षय्यमाचारोहन्त्यलक्षणम् ॥ २७ ॥ जो सत्पुरुषों के श्रेष्ठ आचार के करने से आयु, श्रेष्ठ, प्रजा और अक्षय्यधन प्राप्त होते हैं और पुरुष में जितने दुष्ट लक्षण हैं वे सब सत्पुरुषों के आचरण

और संग करने से नष्ट होजाते हैं और श्रेष्ठ लक्षण भी उसमें आजाते हैं इस्से श्रेष्ठही आचार को करना चाहिये ॥ २७ ॥ दुराचारोहिपुरुषोलोकेभवतिनिन्दितः । दुःखभागी चसततंव्याधितोऽल्पायुरेवच ॥ २८ ॥ दुष्ट आचार करनेवाला पुरुष लोक में निन्दित होता है निरन्तर दुःखीहो रहता है अनेक काम क्रोधादिक हृदय के रोग और ज्वरादि शरीर के रोगों से शीघ्र मर भी जाता है इस्से दुष्टों का आचार कभी न करना चाहिये ॥ २८ ॥ यद्यत्परवशंकर्म तत्तद्यत्नेनवर्जयेत् । यद्यदात्मवशंतुस्यात्तत्तत्सेवेतयत्नतः ॥ २९ ॥ जो जो पराधीन कर्म होय उनको यत्न से छोड़ देवै और जो स्वाधीन होंय उनको यत्न से कर्त्ता जाय ॥ २९ ॥ सर्वंपरवशंदुःखंसर्वमात्मवशंसुखम् । एतद्विद्यात्समासेनलक्षणंसुखदुःखयोः ॥ ३० ॥ जो जो पराधीन कर्म हैं वे सब दुःख रूपहो और जो २ स्वाधीन कर्म हैं सो २ सब सुख रूप हैं सुख और दुःख का समास अर्थात संक्षेप से यही लक्षण है जान लेवैं ॥ ३० ॥ यमान्सेवेतसततंननियमान्केवलान्बुधः यमान्पतत्यकुर्वाणोनियमान्केवलान्भजन् ॥ ३१ ॥ यमों का निरन्तर सेवन करना चाहिये वे यम पूर्व कह दिये हैं वहीं जान लेना और यमों को छोड़ के पांच जो नियम हैं उनका सेवन करैं वे नियम ये हैं । शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः । यह योगशास्त्र का सूत्र है शौच नाम पवित्रता रात दिन नहाने धोने में लगा रहै सन्तोष अर्थात् केवल आलसी दरिद्र बना रहै तप नाम निरन्तर कृच्छ्र चांद्रायणादिकों में प्रवृत्त रहै स्वाध्याय अर्थात केवल पढ़ने और पढ़ानेही में प्रवृत्त रहै धर्मानुष्ठान अथवा विचार कभी न करै और ईश्वर प्रणिधान अर्थात् स्वार्थ के लिये ईश्वर की प्रसन्नता चाहै यथार्थ व्यवहार की रीति से पांच नियमों के किये गये और योगशास्त्र की री

से नियमों के इस प्रकार के अर्थ हैं मृत्तिका और जलादिकों से बाह्य शरीर को शुद्धि और शान्त्यादिकों के ग्रहण और ईर्ष्यादिकों के त्याग से चित्त को शुद्धता इसका नाम शौच है धर्मयुक्त पुरुषार्थ करने से जितने पदार्थ प्राप्त होंय उतनेही में संतुष्ट रहै और पुरुषार्थ का त्याग कभी न करै इसका नाम सन्तोष है क्षुधा, तृषा, शीत और उष्ण इत्यादिक द्वंदों को सहै और कृच्छ्, चांद्रायणादिक ब्रत भी करै इसका नाम तप है मोक्ष शास्त्र अर्थात उपनिषदों का अध्ययन करै ॐकार के अर्थ का बिचार और जप करै उसका नाम स्वाध्याय है पाप कर्म कभी न करै यथावत् पुण्यकर्मों को करके सिवाय परमेश्वर को प्राप्ति के फल की इच्छा न करै इसका नाम ईश्वर प्रणिधान है इनको तो करता रहै परन्तु यमों को न करै उस को उत्तम सुख नहीं होता किन्तु यमों का करना उनके साथ गौण नियमों का भी करनाहीं उचित है और केवल नियमों का करना उचित नहीं ऐसे यथावत् बिवाह करके गृहस्थ लोग वर्तमान करैं यह जितनी बिद्यावाली स्त्री और पुरुष द्विज अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य पूर्वोक्त नियम से करैं बिवाह का विधान संक्षेप से लिख दिया और सब मनुष्यों के बीच में स्त्री और पुरुष जो मूर्ख होंय उनका यज्ञोपवीत भी हुआ होय तो उसको तोड़ के शूद्र कुल में करदें उनका परस्पर यथायोग्य बिवाह भी होना चाहिये वे सब द्विजों की सेवा करैं और द्विज लोग उनको अन्न वस्त्रादिक उनके निर्वाह के लिये देवैं और यह बात भी अवश्य होना चाहिये कि देश देशान्तर से बिवाह का होना उचित है क्योंकि पूर्व, उत्तर, दक्षिण और पश्चिम देशों में रहने वाले मनुष्यों में परस्पर बिवाह के करने से प्रीति होगी और देश देशान्तरों के व्यवहार भी जाने जांयगे बला-दिक गुण भी तुल्य होंगे और भोजन व्यवहार भी एकही होगा

इस्से मनुष्यों को बड़ा सुख होगा जैसे कि पूर्व दक्षिण देश की कन्या और पश्चिम उत्तर देश के पुरुषों से विवाह जब होगा और पश्चिम उत्तर देश के मनुष्यों की कन्या और पूर्व तथा दक्षिण देश में रहने वाले पुरुषों से विवाह होगा तब बल बुद्धि पराक्रमादिक तुल्य गुण हो जांयगे पत्र द्वारा और आने जाने से परस्पर प्रीति बढ़ेगी और परस्पर गुण ग्रहण होगा और सब देशों के व्यवहार सब देशों के मनुष्यों को विदित होंगे परस्पर विरोध जो है सो नष्ट होजायगा इस्से मनुष्यों को बड़ा आनन्द होगा पूर्वपक्ष जैसे स्त्री मर जाती है तब पुरुष का दूसरी बार विवाह होता है वैसे स्त्री का पति मरने से विधवाओं का विवाह होना चाहिये वा नहीं उत्तर विवाह तो न होना चाहिये क्योंकि बहुत बार विवाह की रीति जो संसार में होगी तो जब तक पुरुष के शरीर में बल होगा तब तक वह स्त्री उसके पास रहेगी जब वह निर्बल होगा तब उसको छोड़ के दूसरे पुरुष के पास जायगी जब दूसरा भी बल रहित होगा तब वह तीसरे के पास जायगी जब तीसरा भी बल रहित होगा तब चौथे के पास जायगी ऐसी स्त्री जब तक वृद्धा न होगी तब तक बहुत पुरुषों का नाश कर देगी जैसे कि एक वेश्या बहुत पुरुषों को नष्ट कर देती है वैसे सब स्त्री हो जांयगी और विषदानादिक भी होने लगेंगे इस्से द्विज कुल में दोबार विवाह का होना उचित नहीं स्त्रियों का और पुरुषों का भी बहुत विवाह होना उचित नहीं क्योंकि पुरुषों को भी वीर्य की रक्षा करनी उचित है जिस्से शरीर में बल पराक्रमादिक भी मरण तक बने रहैं और एक पुरुष बहुत स्त्री के साथ विवाह करता है यह तो अत्यन्त दुष्ट व्यवहार है इस को कभी न करना चाहिये तथा कन्या और वर का पिता जो धन लेके विवाह करते हैं यह भी अत्यन्त दुष्ट व्यवहार है जैसे कि च

काल कान्यकुब्जों में है बहुत गृहस्थ इस्से दरिद्र होजाते हैं धन के नाश होने से दरिद्र लोग बिवाह करने में बड़ा दुःख पाते हैं बहुत कन्या वृद्ध होजाती हैं और बिवाह के बिना वृद्ध होके मर भी जाती हैं इस्से इस दुष्ट व्यवहार को छोड़ना उचित है और बंगाले में कुलीन लोगों में बहुत स्त्रियों के साथ एक पुरुष बिवाह कर लेता है एक जो वह मर जाय तो एक के मरने से वे सब स्त्री बिधवा होजाती हैं यह भी अत्यन्त दुष्ट व्यवहार है इसको सज्जनों को छोड़नाही चाहिये और जो बिधवा होजाती हैं उनका कुछ आधार नहीं होने से भी बहुत अनर्थ होते हैं वे कन्या बाल्यावस्था वा युवावस्था में बिधवा होजाती हैं बहुत दुःखी होती और वे कुकर्म भी करती हैं बहुत गर्भहत्या और बालहत्या भी होती है इस्से बिधवाओं का पति के बिना रहना भी उचित नहीं क्योंकि इस्से बहुत अनर्थ होते हैं इस्से इस व्यवहार का रहना भी उचित नहीं फिर क्या करना चाहिये कि प्रथम तो जब पूर्ण युवावस्था होय तब बिवाह होना चाहिये जिस्से कि बिधवा भी बहुत न होंगी फिर जब कोई बिधवा होय तब छः पीढ़ी अथवा अपने गोत्र और अपनी जाति में देवर अथवा ज्येष्ठ जो संबंध से होय उस्से बिधवा का पाणिग्रहण होना चाहिये परन्तु स्त्री की इच्छा से जब जिस स्त्री का पति मर जाय और मरने का शोक भी निवृत्त होजाय अर्थात् त्रयोदश दिवस के अनन्तर जब कुटुम्ब के श्रेष्ठ मनुष्य बिधवा स्त्री के पास जाके उससे पूछें कि तेरी क्या इच्छा है जो वह बिधवा कहै कि मेरी इच्छा न सन्तान और न नियोग की है तब तो वह स्त्री चांद्रायणादिक ब्रत तथा परमेश्वर का ध्यान और धर्म का अनुष्ठान करै ऐसेही मरण तक धर्म का आचरण करै दूसरे पुरुष का मन से भी चिन्तन न करै और जो बिधवा कहै कि मेरा पुत्र के बिना निर्वाह न

होगा तब सब पुरुषों के साम्हने देवर वा ज्येष्ठ का पाणिग्रह
करले उस्से एक वा दो पुत्र उत्पादन करले अधिक नहीं इस
ऋग्वेद के मन्त्र का प्रमाण है॥ कुहस्विद्दोषाकुहवस्तोरश्विन
कुहाभिपित्वङ्करतः कुहोषतुः कोवांशयुत्राविधवेवदेवरंमर्त्यं नयो
षाकृणुतेसधस्थऽआ। इसका यह अभिप्राय है कि स्त्री और पुरु
ये दोनों के प्रति प्रश्न की नांई कहा है आप दोनों दोषा अर्थ
रात्रि कुह नाम कौन स्थान में बास करते भये और किस स्था
में अश्वि नाम दिवस में बास किया था किस स्थान में
दोनों ने अभिपित्वं अर्थात प्राप्ति इन पदार्थों की की
इन दोनों का निवासस्थान किस देश में था और शयुत्रा न
शयनस्थान इन दोनों का किस स्थान में है यह दृष्टान्त
और इस्से यह अभिप्राय भी आया कि स्त्री और पुरुष
बियोग कभी न होना चाहिये सब दिन स्थान और
देशों में संगही संग रहैं अब यह दृष्टान्त है कि जैसे बि
देवर के साथ रात्रि दिवस और प्राप्ति का करना एक देश
बास एक स्थान में शयन और संग २ रहती है और देवर
सधस्थ अर्थात स्थान में आकृणुते अर्थात स्वीकार करके र
और सन्तानोत्पत्ति करती है वैसे उन दोनों से भी वे
से पूंछा गया और देवर शब्द का निरुक्त में भी अर्थ लिख
कि॥ देवरःकस्मात्द्वितीयोवरउच्यते। देवर अर्थात बिधवा
जो दूसरा वर पाणिग्रहण करके होता है उस पुरुष को
कहते हैं इस निरुक्त से बर का बड़ा भाई अथवा छोटा
वा और कोई भी बिधवा का जो दूसरा बर होय उसी का
देवर आया इस मन्त्र से बिधवा का नियोग अवश्य क
चाहिये यह अर्थ आया और मनुस्मृति में भी लिखा
देवराद्वासपिण्डाद्वास्त्रियासम्यङ्नियुक्तया। प्रजेप्सिताधिगन्त
सन्तानस्यपरिक्षये॥ १॥ देवर अथवा छः पीढ़ी देवर

ज्येष्ठ के स्थान में कोई पुरुष होय उस्से बिधवा स्त्री का नियोग करना चाहिये और जिसका उस स्त्री के साथ नियोग भया वह उस स्त्री के साथ गमन करै परन्तु जिस स्त्री को सन्तान की इच्छा होय और सन्तान के अभाव में भी नियोग का होना उचित है ॥ १ ॥ विधवायांनियुक्तस्तुघृताक्तोवाग्यतोनिशि । एकमुत्पादयेत्पुत्रंनद्वितीयंकथंचन ॥ २ ॥ द्वितीयमेकेप्रजनंमन्यन्ते-स्त्रीषुतद्विदः । अनिर्वृत्तंनियोगार्थम्पश्यन्तोधर्मतस्तयोः ॥ ३ ॥ जो विधवा के साथ नियुक्त होय सो रात्रि के दोनों मध्य प्रहरों में घृत का शरीर में लेपन करके ऋतुमती विधवा को वीर्य प्रदान करै मौन करके अर्थात बहुत मोहित होके क्रीड़ाशक्त न होय किन्तु सन्तानोत्पत्ति मात्र प्रयोजन रक्खै ॥ २ ॥ कई एक आचार्य ऋषि लोग ऐसा कहते हैं कि दूसरा भी पुत्र विधवा को होना चाहिये क्योंकि एक पुत्र जो हो जाता है उस्से नियोग का प्रयोजन सब सिद्ध नहीं होता ऐसेही धर्म से विचार करके कहते हैं कि दो पुत्र का होना उचित है ॥ ३ ॥ विधवायांनियोगार्थेनिर्वृत्तेतुयथाविधि । गुरुवच्चस्नुषावच्चवर्तेया-तांपरस्परम् ॥ ४ ॥ बिधवा में नियोग का जो प्रयोजन कि दो पुत्र का होना सो बिधि पूर्वक जब होगया उसके पीछे वह विधवा नियुक्त पुरुष को गुरुवत् मानै और वह पुरुष उस विधवा को पुत्र की स्त्री की नाईं मानै अर्थात फिर समागम कभी न करै और जैसे कि पहिले सब कुटुम्बियों के साम्हने पाणिग्रहण किया था और नियम भी किया था कि जब तक दो पुत्र न होवैं तब तक नियोग रहै फिर वैसे फिर भी सब कुटुंबियों के साम्हने दोनों कह देवैं कि हम लोगों का नियम पूर्ण होगया अब हम लोग वैसा काम न करेंगे ॥ ४ ॥ नियुक्तौयौविधिंहित्वावर्त्तेयातांतुकामतः । तावुभौपतितौस्यातांस्नुषागगुरुतल्पगौ ॥ ५ ॥ फिर जो वे दोनों बिधि अर्थात उस

मर्यादा को छोड़ के कामातुर होके समागम करैं तो पतित होजांय क्योंकि ज्येष्ठ और कनिष्ठ इन दोनों को जैसे पुत्र व गुरु की स्त्री से गमन करने का पाप होता है वैसाही पा होता है अर्थात फिर कभी परस्पर कामक्रीड़ा न करैं ॥ ५ ॥ नान्यस्मिन्विधवानारीनियोक्तव्याद्विजातिभिः । अन्यस्मिन्हि नि पुंजानाधर्महन्युःसनातनम् ॥ ६ ॥ उक्त प्रकार से भिन्न पुरु के साथ विधवा का नियोग कभी न करैं अपने कुटुम्बही करैं जिस्से स्त्री जहां की तहां बनी रहै और सन्तान से कुल की वृद्धि बनी रहै क्षय कभी न होय] जो और कि पुरुष के साथ नियोग करैंगे तो स्त्री हाथ से जायगी औ सन्तान की हानि होने से कुल की भी हानि होगी फि जो कुल की वृद्धि करना सो सनातन धर्म नष्ट होजाय इस्से अपनेही कुटुंब में नियोग करना उचित है इस बात सज्जन लोग शीघ्रही प्रवृत्ति करैं क्योंकि इसके बिना बिध लोगों को अत्यन्त दुःख होता है और बड़ा पाप होता है संस में इस बात के करने से यह दुःख और पाप कभी न होंगे॥ ज्येष्ठोयवीयसोभार्य्यांयवीयान्वाग्रजस्त्रियम् । पतितौभवतोग नियुक्तावप्यनापदि ॥ ६ ॥ ज्येष्ठ कनिष्ठ की तथा कनिष्ठ ज्ये की स्त्री से नियुक्त भी होवें तो भी आपत्काल के बिना अ दो पुत्र होने के पीछे जो गमन करैं तो पतित होजांय इ आपत्कालही में नियोग का बिधान है॥ ६ ॥ यस्याम्रियेतकन् यावाचासत्येकृतेपतिः । तामनेनविधानेननिजोविंदेतदेवरः ॥ जिस कन्या का पाणिग्रहण मात्र तो होजाय और पति समागम न होय तो उस स्त्री का देवर के साथ बिवाह ह उचित है ॥ ७ ॥ परंतु इस प्रकार से दोनों बिधान करै यथाविध्यधिगम्यैनांशुक्लवस्त्रांशुचिव्रताम् । मिथोभजेताप्रस सकृत्सकृदृतावृतौ ॥ ८ ॥ यथाबिधि बिधवा से देवर बिवाह क

परस्पर ऋतु २ में एक २ बार समागम करें परंतु वह स्त्री शुक्ल वस्त्र धारण करै परंतु जिसका श्रेष्ठ आचार होय उसी का तो और दुष्टाचार वाले का नहीं ८ सा चेदक्षतयोनिः स्याद्गतप्रत्यागतापि वा पौनर्भवेन भर्त्रा सा पुनः संस्कारमर्हति ॥ ९ । जो स्त्री अक्षतयोनि अर्थात विवाह तथा जाने आने मात्र व्यवहार तो कुछ आ हो परंतु पुरुष से समागम न भया हो य तो पौनर्भव पुरुष अर्थात विधवा के नियोग से जो उत्पन्न भया होय उसके साथ उस विधवा का विवाह ही होना उचित है ॥ ९ ॥ यह विधवा नियोग का प्रकरण पूरा हो गया जो विधवा नहीं है और किसी प्रकार का आपत्काल है उन के लिये ऐसा विधान है कि जिसका पति परदेश चला जाय और समय के ऊपर न आवै उस स्त्री के लिये इस प्रकार का विधान शास्त्र में है और पुरुष के लिये भी है । प्रोषितो धर्मकार्यार्थं प्रतीक्ष्योऽष्टौ नरः समाः । विद्यार्थं षड्यशोर्थं वा कामार्थं त्रीँस्तु वत्सरान् ॥ १० ॥ जो पुरुष स्त्री को छोड़ के परदेश को जाय और जो धर्म ही के लिये गया हो तो आठ वर्ष पर्यन्त स्त्री पति की मार्ग प्रतीक्षा करै, और जो उस समय वह न आवै तो स्त्री पूर्वोक्त प्रकार से नियोग करके पुत्रोत्पत्ति करै, और जो पति बीच में आ जाय तो नियोग छूट जाय जिस से विवाह किया गया था उसी के पास स्त्री रहै और किसी उत्तम विद्या पढ़ने वा कीर्ति के लिये गया होय तो छः वर्ष तक परीक्षा करै तथा काम वा धन के लिये गया होय कि मैं धन लाके खूब विषय भोग करूंगा उसकी तीन वर्ष तक स्त्री प्रतीक्षा करै फिर उक्त प्रकार से नियोग करके पुत्रोत्पत्ति कर लेवै ॥ १० ॥ संवत्सरं प्रतीक्षेत द्विषन्तीं योषितं पतिः । ऊर्ध्वं संवत्सरात्त्वेनां दायं हृत्वा न संवसेत् ॥ ११ ॥ जो दुष्टता करके स्त्री प्रातकूल हो जाय अर्थात अपने पिता वा भाई के पास रुष्ट होके चली जाय तो पति एक वर्ष पर्यन्त राह देखै फिर दाय अर्थात जो कुछ स्त्री को गहनादिक दिया था उसको लेके उसका सङ्ग न करै अर्थात दूसरा विवाह कर लेवै ॥ ११ ॥ मद्यपासाधुवृत्ता च प्रतिकूला च या भवेत् । व्याधिता वाधिवेत्तव्या हिंस्रार्थघ्नी च सर्वदा ॥ १२ ॥ जो स्त्री मद्य पीती होय तथा विपरीत हो चलै कि

आज्ञाकोनमानै व्याधिनामरोगयुक्त होजाय वा विषादिकदेके
मनुष्यकोमारडाले औरघरकेपदार्थों कोसदानाशकर्तीहोय
उसस्त्रीकोछोड़केदूसराविवाहकरलेवै ॥ १२ ॥ वन्ध्याष्टमेधिवे
ऽब्देदशमेतुमृतप्रजा। एकादशेस्त्रीजननीसद्यस्त्वप्रियवादिनी॥
विवाहकेपीछेआठवर्षतकगर्भ नरहै, औरवैद्यकशास्त्रकीरी
परीक्षाभीकरले फिरअष्टमवर्षदूसराविवाहकरले औरवन्ध्य
यथावत्पालनकरैपरंतुसमागमनकरैऔरजिसकेसंतानहोके
जांय औरएकभीनजीयेतो१०मेवर्षदूसराविवाहकरलेवै औरउस
अन्नवस्त्रादिकदेवैऔरजिसस्त्रीसेकन्याहीबहुतहोवें पुत्रएकभी
यतो ११ग्यारहवेंवर्षदूसराविवाहकरले औरउसस्त्रीकापालन
जोदुष्टस्त्रीहोय औरअप्रियवचनबोलै तोउसकोशीघ्रहीछोड़के
सराविवाहकरलेवै १३ वैसापुरुषभीदुष्टहोजाय, तोस्त्रीभीउस
छोड़केधर्मसेनियोगकरकेपुत्रोत्पत्तिकरले औरएकयहभीव्य
है इसकोजाननाचाहिये किअपनेशरीरसेपुत्रनहोय अर्थात
सेवीर्यहीनहोगयाहोयअथवापीछेकिसीरोगसेनपुंसकहोगया
तोअपनेस्वजातिकेपुरुषसेवीर्यलेकेपुत्रोत्पत्तिकरालेवै परन्तुध
व्यभिचारसेनहीं इसीप्रकारसे १२ पुत्रमनुस्मृतिमें लिखे हैं जिस
खनेकीइच्छाहोयसोदेखलेवैनियोगमेंऔरक्षेत्रज्ञादिकपुत्रों
नेमें महाभारतमें दृष्टान्तभीहै जैसेकिचित्रांगदऔरविचित्र
दोनोंजबमरगए तबबड़ेभाईजोव्यासजीउनकेवीर्यसे तीनपु
त्पन्नकरालिये एकधृतराष्ट्र,दूसरापाण्डु,तीसराविदुर येतीं
सबसंसारमेंप्रसिद्धहैं औरयुधिष्ठिर,भीम,अर्जुन,नकुलऔर
देवयेपांचऔरोंकेनियोगसेउत्पन्नभयेहैं यहबातसंसारमेंप्रसि
इससेनियोगकाकरना औरक्षेत्रजादि पुत्रोंकाहोना शास्त्रकी
और युक्तिसेठीकहै इसमेसबश्लोक मनुस्मृतिकेलिखेहैं ए
औरस्मृतिकेश्लोकक्यों नहीलिखे उत्तरपक्षअन्यस्मृतियोंका
विरोध औरवेदमें प्रमाणभीकिसीकानहीहै ऋषिमुनियोंकी

भीकोईस्मृतिनहीं सिवायमनुस्मृतिके ॥ यद्वै किञ्चनमनुरवदत्तद्भैषजंभेषजतायाः । यहछांदोग्यउपनिषद्कीश्रुतिहै इसकायह अभिप्रायहै किजोकुछमनुजीनेउपदेशकियाहै सोयथावतवेदोक्त है औरसत्यहीहै जैसेकिरोगकेनाशकरनेकाऔषधवैसाहीहै यह एकमनुस्मृतिहीकावेदमेंप्रमाणमिलताहैऔरकिसीस्मृतिकानहीं औरसबलोगोंकोभीयहबातसम्मतहै ॥ किवेदार्थोपनिबन्धृत्वात्प्राधम्यंहिमनोस्मृतम् । मन्वर्थविपरीतायायास्मृतिर्नप्रशस्यते ॥ इसश्लोककेसबपंडितलोगकहतेहैंकिमनुस्मृतिकेअनुकूलजोस्मृति उसकोमाननाचाहिये औरउससेविरुद्धकिसीस्मृतिकानहीं सोएक बातमेंतोपंडितोंकीऔरमेरीसम्मतहोगई परन्तुएकबातमें विरोधहोताहै किमनुकेअनुकूलस्मृतियोंकोवेमानतेहैं औरमैंनहीं मानता क्योंकिमनुस्मृतिकेअनुकूलतोतबकोईस्मृतिहोगीजबमनुस्मृतिकेअर्थहीकोकहै फिरमनुजीनेतोवहअर्थकहदियाहै उसका कहनादूसरीबारव्यर्थहै, क्योंकिपीसेभयेपिसानकाजोपीसना सो व्यर्थहीहोताहै औरमनुस्मृतिमें जोउपदेशकरनाथा सोसबकर दियाहै कुछबाकीनहींरक्खा इससेभीअन्यस्मृतिकाहोनाव्यर्थहीहै इसबातकोपंडितलोगविचारकरलेवें तोबहुतअच्छीबातहै और महाभारतमेंभीजहां२प्रमाणलिखातहां२मनुस्मृतिहीकालिखा और किसीस्मृतिका नहीं इससे जानाजाताहै किमनुष्योंने ऋषियोंकेनामप्रमाणकेवास्ते लिख २ के जालअपनेप्रयोजनकेवास्ते बनालियाहै औरजोयहबातकहतेहैं कि कलौपाराशरीस्मृतिः । सोतोअत्यन्तअयुक्तहै क्योंकिद्वापरकेअन्तमें व्यासजीने मनुस्मृतिकाहीप्रमाणलिखा सोक्योंलिखा शङ्कराचार्यजीनेभीमनुस्मृतिकाहीप्रमाणलिखाहै औरजोसत्यबातहैउसकासबदिनप्रमाणहोता है इसमें कुछशङ्कानहीं इससेजोपुरुषकहतेहैंकिकलौमें पाराशरीस्मृतिकाप्रमाणहैसोमिथ्याबातहै औरपाराशरीस्मृतकेआरंभमें यहबातलिखीहैकिऋषिलोगोंनेव्यासजीकेपासजाकेपूछाआपहम

सेवर्णाश्रमयथावत्कहैं तबउनसेव्यासजीनेकहाकिमैंयथावत्वर्ण
श्रमधर्मोंकोनहींजानता इस्से मेरेपिताजोपाराशरउनसेचल
पूछें वेसबधर्मोंकोयथावत्कहैंगे फिरउनकेपासजाकेसबलोगों
प्रश्नकिया औरपाराशरजीउनसेकहनेलगे उसमेंहीपाराशरजी
कहाकि कलौपाराशराःस्मृताः इसमेंविचारनाचाहिये किव्या
जीवदादिकसबशास्त्रजाननेवाले वर्णाश्रमधर्मकोक्यानहींजानते
किन्तुअवश्यहीजानतेथे औरपाराशरअपनेमुखसेकैसेकहैंगे
कलौमेंपाराशरउक्तधर्मोंकोमाननायहअयुक्तहै औरउसीमेंऐ
अयुक्तश्लोकलिखेहैं किकोईबुद्धिमानउनकाप्रमाणभीनकरै
कि। पतितोपिद्विजश्रेष्ठोनचशूद्रोजितेन्द्रियः। निर्दुग्धावापिगौ
पूज्यानचदुग्धवतीखरी ॥ १ ॥ अश्वालम्भङ्गवालम्भंसन्यासंपलपै
कम्। देवराच्चसुतोत्पत्तिं कलौपंचविवर्जयेत् ॥ नष्टे मृतेप्रव्रजि
क्लीबेचपतितेपतौ। पञ्चस्वापत्सुनारीणां पतिरन्योविधीयते॥
इनमेंदेखनाचाहिये किकुकर्मीजोहैसोईपतितहोताहै वहश्रे
कैसेहोगाकभीनहोगा औरजितेन्द्रियअर्थात्श्रेष्ठकर्मकरनेवा
पुरुषहै सोअश्रेष्ठकैसेहोगा किन्तुकभीनहोगा औरगायतो
है, सोपशुकीक्यापूजाकरनाउचितहै कभीनहीं किन्तुउसकी
यहीपूजाहै किघास,जलइत्यादिकसेउसकीरक्षाकरना सोभी
ग्धादिकप्रयोजनकेवास्ते अन्यथानहीं औरगधीकीभीपूजावैसी
होतीहै जिसकोप्रयोजनरहताहै वहप्रयोजनकेवास्ते करताही
१॥ औरदूसराश्लोकअश्वालम्भनामअश्वमेध गवालम्भनामगो
औरसन्यासग्रहण औरमांसकापिण्डदान औरविधवासेदे
नियोगसेपुत्रोत्पत्ति येपांचसबकालमेंकरनाचाहिये इनका
कभीनहीं इनसेबड़ासंसारकाउपकारहै औरकुछपापनहीं इ
कहनेसेअजामेधादिकोंकात्यागनहींआया अश्वमेधऔरगोमेध
जोकरनाउस्से बड़ासंसारकाउपकारहै सोपहिलेकहदिया
संन्यासकात्यागकरैतोअर्थात्पाखण्डकरेगा जैसेकिवैरागीआदि

उस्से तोसंसारकीबड़ीहानिहोतो इस्से संन्यासकाहोनाअवश्यहै, औरमांसकेपिण्डदेनेमेंतोकुछपापनहीं क्योंकि यदन्नाःपुरुषालो-केतदन्नाःपितृदेवता ॥ १ ॥ यहमहाभारतकावचनहै । मधुपर्के-तथायज्ञेपित्र्यदैवतकर्मणि । अत्रैवपशवोहिंस्यानान्यत्रेत्यब्रवीन्म-नुः । २ ॥ जोपदार्थआपखायउसीसेपञ्चमहायज्ञकरै अर्थात्पितृ-देवपूजाभीउसीसेकरै अर्थात्श्राद्धऔरहोमउसीकाकरै मधुपर्क विवाहादिक औरगोमेधादिकयज्ञ औरदेवपितृकार्य इनमेंमांस कोजोखाताहोय तोउसकेवास्ते मांसकेपिण्डकरनेका बिधान है इस्से मांसकेपिण्ड देनेमेंभीकुछपापनहीं देवरवाज्येष्टसे नियोग काविधिलिखदिया सोवहीजानलेना कलिमेंपाचोंकोनकरनासो यहबातमिथ्याहीहै २ अर्थातपरदेशकोपतिचलागयाहोय तोस्त्री दूसरापतिकरले फिरजोपूर्वविवाहितपतिआजायतोदोनोंमेंबड़ा बखेड़ाहोगा क्योंकिएककहेगामेरीस्त्रीहै दूसराकहेगामेरीस्त्रीहै फिरक्यावेआधी २ स्त्रीकोकरलेंवापारीलगालें सोइसप्रकारकाक-हनामिथ्याहीहै औरपांचप्रकारकेआपत्कालसेछूटहीआपत्आवै तोतावहस्त्रीक्याकरैगीइस्सेयेतीनोंस्लोकमिथ्याहीहैंवैसेहीपाराश-रीमेंमिथ्याअयुक्तबहुतस्लोककहेहैं औरजोकोईसत्यहैसामनुस्मृति हीकाहै इस्से पाराशरीकाप्रमाणकरना सज्जनोंको उचितनहीं औरजैसीपाराशरीवैसीयाज्ञवल्क्यादिकस्मृतियांहै इस्से मनुस्मृति कोछोड़केऔरकिसीकाप्रमाणकरनाउचितनहीं इसवास्तेजहां२ प्रमाणलिखावहां २ मनुस्मृतिहीकालिखागया जबजिसदिनस्त्री रजस्वलाहोय उसदिनसेलेके१६सोलहदिनतकऋतुकालहै उन मेंसेपहिलेकेचारदिनत्याज्यहैं और११ग्यारहवां,और१३तेरहवां दिनछोड़देना औरअमावस्याऔरपौर्णमासीभीत्याज्यहै अर्थात सोलहमेंसे८आठदिनबाकीरहै उनमेंसेभीछठवां,आठवां,दशवां और१२वांदिन वीर्यदानकरनेमेंअच्छेहैं क्योंकिइनदिनोंमेंस्त्रीके शरीरकीधातु स्वस्वभावसेतुल्यवर्तमानरहतोहैं और५वां,७वां

और१६वां येतीनदिनमध्यमहैं क्योंकिउसदिनस्त्रीकेधातुओंका
धिकबलहोताहै सोपहिले ४ चार दिनोंमें वीर्यदान करेगा त
प्राय:पुत्रहीहोगा अथवा कन्या होगी तो श्रेष्ठही होगी और
तीन दिनोंमें वीर्यदान करेगा तो प्राय: कन्या होगी औरन
सकभीहोजायतोआश्चर्यनहीं इस्से ४चारदिनअथवा७सातदि
वीर्य्यदानकेउत्तमऔरमध्यमहैं, अन्यदिनमेंसमागमकरेगा
क्षीणबलसंतानहोगा इस्से ११ग्यारहवांवा१३तेरहवांअमाव
औरपौर्णमासीइनमेंवीर्यदानकरेगातोवीर्यनष्टहोजायगा औ
जोसन्तानहोगासोभीनष्टहोगा रोगकेहोनेसे क्योंकि उनदिनों
स्त्रीकीधातुविषमहोजातीहैं एक २ माससेंस्त्रीस्वभावसेरजस्व
होतीहै, सोउक्तप्रकारकेसोलहदिनकेपीछेस्त्रीकासमागमकभी
करै क्योंकिमिथ्यावीर्यनष्टहोगा औरगर्भकभीनरहेगा इस्से
थ्यावीर्यकानाशकभीनकरनाचाहिये जिसदिनसेगर्भहोवैउसदि
सलेके एकवर्षतकस्त्रीकात्यागकरनाअवश्यचाहिये क्योंकिगर्भ
नाश औरपुरुषकाबलभीनष्टहोजाताहै इस्से एकवर्षतकत्याग
वश्यकरनाचाहिये जोपुरुषपरस्त्री अथवावेश्या गमनसे वीर्यन
करतेहैं वेबड़ेमूर्खहैं क्योंकिउनकावीर्यमिथ्याहीजायगा और
रोगहोंगेजोकभीगर्भरहेगातोभीउसकोकुछफलनहीं क्योंकि
सकीस्त्रीहै उसीकासन्तानहोगा औरवीर्यदेनेवालेकानहीं
वेश्यासेजोपुत्रहोगा सोभडुवाहीहोगा औरजोकन्याहोगी
वहवेश्याहीहोगी इस्सेवीर्यदेनेवालेकोकुछलाभनहीं सिवाय
केऔररोगभीउनकोबड़े २ होतेहैं जिस्सेकीबड़ादु:खपातेहैंको
जबपरस्त्री गमनकोइच्छाकर्ताहै अथवाजिसवक्तसमागमकर्ता
तबउसके हृदयमेंभय,शंका औरलज्जापूर्णहोतीहै किइसका
कोईनजानैं जोकोईजानेगातोमेरीदुर्दशाहोजायगी एकतोय
ग्नि दूसरामैथुनकाअग्निऔरतीसराचिन्ताग्नि किरातदिन
चिन्तासेजलताजायगा येतीनोंअग्निसेउसकोधातुसबदग्धहो

तीहैं इस्से महारोगीहोकेमरजाताहै औरयहबड़ापापभीहै इस्से मनुष्यवास्त्रीअल्पायुहोजातेहैं औरजोवेश्यागमनकर्ताहै कुत्ताकी नांईवहपुरुषहै क्योंकिजैसेकुत्तासबकाजूंठ औरछांटकियेअन्नको खालेताहै उसकोघृणानहीहोतो वैसेहीघृणकेनहोनेसेसज्जनलोग उसपुरुषकोकुत्ते केनांईजानैं औरजोव्यभिचारिणीस्त्री औरवेश्या उनकोभीकुत्तीकोनांईजानैं क्योंकिइनकोभीघृणानहींहोतीहै और देखना चाहिये किमालीऔरखेतीकरनवाललोग अपनेबागमें औरअपनेहीखेतमेंदृत्तवाअन्नबोतेहैं अन्यकेबागवाक्षेत्रमेंनहीं ये मूर्खभीहैं तोभीपराएबागवाखेतमेंकभीकुछनहींबोतेऔरजोलौंडे बाजोकतेहैं वेतोसूवरवाकौवेकोनांईहैं क्योंकिजैसेसूवर वा कौवे विष्टासेबड़ीप्रीतिरखतेहैं औरअरुचिकभीनहींकरतेवैसेवेभीपुरुष विष्टाजिसमार्गसेनिकलतीहै उसमार्गमेंबड़ीप्रीतिरखतेहैं, इस्से इसप्रकारकेजोमनुष्यहैंवेमूर्खसेबढ़करहैं किवीर्यजोसबबीजोंसेउ-त्तमबीजहै उसकोव्यर्थनष्टकरतेहैं औरकेवलपापहीकमातेहैं जो युक्तिसेवीर्यकेरखनेमेंसुखहोताहै उतनासुखलाखवक्तस्त्रीकेसमा-गमसेभीनहींहोताऔरजब४८वा४४वा४०वा३६वर्षतकब्रह्मचर्या-श्रमसेवीर्यकीरक्षाकरें फिरजबपूर्णबलशरीरमेंहोजायऔरस्त्रीभी ब्रह्मचर्य्याश्रमकरकेपूर्णयुवतीहोजाय तबजोउनदोनोंकोएकबार विषयभोगमेंसुखहोताहै सोबाल्यावस्थामेंबिवाहकरनेसेलाखवक्त समागममेंभीसुखनहींहोता औरसंतानभीरोगयुक्तनष्टभ्रष्टहोते हैं जोब्रह्मचर्याश्रमकरनेवालेकेसन्तानहोंगे तोबड़ सामर्थ्यवान् धनवान्शूरवीरविद्यावान्औरसुशीलहीहोंगे इस्से बारंबारलि-खनेकायहीप्रयोजनहै किब्रह्मचर्याश्रमतथाविद्याकेबिनामनुष्यश-रीरधारनाहीनष्टहै सदाधर्मयुक्तपुरुषार्थसेविद्या,धनतथाशरीर औरनानाप्रकारकेशिल्प इनोंकोदृद्धिहीकरनीउचितहै औरस्त्री लोगोंकेछ दूषणहैं उनकोस्त्रीलोगछोड़दें औरसबपुरुषछोड़ादेवें । पानन्दुर्जनसंसर्गःपत्याचविरहोटनम् । स्वप्नोन्यगेहवासश्चनारी-

संदूषणानिषट् ॥ यहमनुकाश्लोकहै इसकायहअभिप्रायहै किप
अर्थातमद्यऔरभंगादिकनशाकाकरना दुर्जनसंसर्गअर्थातदुष्ट
रुषोंकासंगहोना पत्याविरहअर्थातपति औरस्त्रीका बियोगन
स्त्री अन्यदेश में और पुरुषअन्यदेश में रहै अटन अर्थातपति
छोड़केजहांतहांस्त्रीभ्रमणकरै जैसेकिनानाप्रकारकेमंदिरोंमेंत
तीर्थोंमेंस्नानकेवास्ते औरबहुतपाखण्डियोंकेदर्शनकेवास्तेस्त्री
भ्रमणकरना स्वप्नोन्यगेहवासश्च अर्थातअत्यन्तनिद्राअन्यकेघ
स्त्रीकासोनाऔरअन्यकेघरमेंबासकरै पतिकेबिनाऔरअन्यपुरु
केसंगकाहोना येछः अत्यन्तदूषणस्त्रियोंकेभ्रष्टहोनेकेवास्तेहैं कि
छःकर्मोंहीसेस्त्रीअवश्यभ्रष्टहोजायगी इसमेंकुछसंदेहनहीं
पुरुषोंकेवास्ते भीऐसेबहुतदूषणहैं॥ मात्रास्वस्रादुहित्रावानवि
क्तासनोभवेत्। बलवानिन्द्रियाग्रामो विद्वांसमपिकर्षति ॥
माताऔरस्वसा अर्थातभगिनी दुहितानामकन्या इनकेसाथ
एकान्तमें निवासकभीनकरै औरअत्यन्तसंभाषणभीनकरै
नेत्रसेउनकास्वरूपऔरउनकीचेष्टानदेखै जोकुछउनसेकहन
सुननाहोय सोनीचेदृष्टिकरकेकहैवासुनै इससेक्याआयाकिजि
व्यभिचारणीस्त्रीवावेश्या औरजितनेवेश्यागामीवापरस्त्रीगामी
षहैं उनमेंप्रीतिवासंभाषणअथवाउनकासंगकभीनकरै इसप्र
केदूषणोंसेहीपुरुषभ्रष्टहोजाताहै क्योंकियहजोइन्द्रियग्रामअ
मनऔरइन्द्रियांयेबड़े प्रचलहैं जोकोईविद्वानअथवाजितेन्द्रि
योगीवेभीइसप्रकारकेसंगोंसेभ्रष्टहोजातेहैं तोसाधारणजोगृ
वामूर्ख वहतोअवश्यभ्रष्टहीहोजायगा इसवास्ते स्त्री वा पुरुष
इनदुष्टसङ्गोंसेबचेरहैं औरजोस्त्रियोंकोअत्यन्तबन्धनमेंरखतेहैं
भीबड़ाभ्रष्टकामहै क्योंकिस्त्रियोंकोबड़ादुःखहोताहै अ
कातोदर्शनभीनहीहोता औरनीचपुरुषोंसेभ्रष्टहोजातीहैं
चाहिये किपरमेश्वरनेतो सबजीवोंकोस्वतन्त्ररचेहैं और
मनुष्यलोग बिनाअपराधसेपरतन्त्र अर्थातबन्धनमेंरखदेते

बड़ापापकर्तेहैं सोइसबातकोसज्जनलोगकभीनकरैं यहबातमुसल्मानोंकेराज्यसेपट्टत्तभईहै आगेनथी कौन्ती,गान्धारीऔरद्रौपद्यादिक,स्त्रियांराजसभामें जहांकिराजालोगोंको सभाहोती थी औरवार्तासंभाषणकरतीथीं अपनेपतिकोपंखा औरजलादिकोंसे सेवाभीकरतीथीं औरगार्गीमैत्रेयीइत्यादिक ऋषिलोगोंकीस्त्रियां भीसभामेंशास्त्रार्थकरतीथीं यहबातमहाभारत औरबृहदारण्यक उपनिषदमेंलिखीहै इसकोअवश्यकरनाचाहिये, मुसल्मानलोगोंकाजबराज्यभयाथा तबजिसकिसीकी कन्या वा स्त्री कोपकड़लेते, औरभ्रष्टकरदेतेथे उसीदिनसेश्रेष्ठआर्य्यावर्तदेशवासीलोगस्त्रियों कोघरमेंरखनेलगे औरस्त्रीलोगभीमुखकेऊपरवस्त्ररखनेलगीं सो इसबातकोछोड़हीदेनाचाहियेक्योंकिइसव्यवहारमेंसिवायदुःखके सुखकुछनहीं जैसेदाक्षिणात्यलोगोंकीस्त्रियांवस्त्रधारणकरतीहैं वैसा हीपहिलेथा क्योंकिकभीवस्त्र अशुद्धनहीरहता सबदिनजैसेपुरुषों केवस्त्रशुद्धरहतेहैं वैसेस्त्रीलोगोंकेभीशुद्धरहतेहैं इस्से इसप्रकारका वस्त्रधारणकरनाउचितहै, स्त्रीलोगों कोपतिकीसेवा औरतीर्थ के स्थानमें सास,श्वसुर इनतीनोंकीसेवाजोहै सोई उत्तम कर्म है और अपने घरका कार्य और धनादिकोंकी रक्षा करना और सबकुटुंबमेंपरस्परप्रीतिकाहोना सबदिनविद्या औरनानाप्रकार केशिल्पोंकीउन्नतिस्त्रीलोगकरैं औरपुरुषलोगभीघरमेंकलहनकरैं परस्परप्रसन्नहोकेरहना यहीगृहस्थलोगोंकाभाग्यऔरसुखकीउन्नतिहै यहगृहस्थलोगोंकोशिक्षासंक्षेपसेलिखदिया औरजोविस्तारसेदेखनाचाहै तोवेदादिकसत्यशास्त्रऔरमनुस्मृतिमेंदेखलेवै इसकआगेवानप्रस्थ औरसन्यासियोंकेविषयमें लिखाजायगा॥

इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषा विरचिते चतुर्थः समुल्लासः संपूर्णः॥ ४॥

अथवानप्रस्थसन्यासविधिंवच्यामः। ब्रह्मचर्याश्रमंसमाप्यगृ
भवेत् गृहीभूत्वावनीभवेत् वनीभूत्वाप्रव्रजेत् यहबृहदारण्यकउ
निषद्कीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहैकिब्रह्मचर्याश्रम अर्थात्
यावत् विद्याओंकोपढ़के फिरगृहाश्रमीहोय फिरवानप्रस्थहो
औरवानप्रस्थहोकेसन्यासीहोय ऐसाक्रमहैकिइसमें जितनेश्लो
लिखेंगेवेसबमनुस्मृतिहीकेजानलेउसकेआगेम०ऐसाचिन्हलि
देंगे। एवंगृहाश्रमेस्थित्वाविधिवत्स्नातकोद्विजः। वनेवसेत्तुनि
तोयथावद्विजितेन्द्रियः॥ १॥ इसप्रकारसेविधिवत्गृहाश्रममेंर
केस्नातकद्विज अर्थात्विद्यावाले ब्राह्मण,क्षत्रियऔरवैश्य,येती
वानप्रस्थहोवें सोवनमेंजाकेवासकरै यथावत्निश्चयकरकेऔरजि
तेन्द्रियहोकेसोकिससमयवानप्रस्थहोयकि १॥ गृहस्थस्तुयदापश्ये
वलीपलितमात्मनः। अपत्यस्यैवचापत्यं तदारण्यंसमाश्रयेत्
म०जबगृहस्थावलीअर्थातशरीरकाचर्मढीलाहोजाय पलितना
केशश्वेतहोजांयऔरउसकापुत्रब्रह्मचर्यसेसबबिद्याओंकोपढ़के
वाहकरलेवै फिरजबपुत्रकाभीपुत्रहोय तबवहगृहस्थवनकोचल
जाय॥ २॥ संत्यज्यग्राम्यमाहारंसर्वंचैवपरिच्छदम्। पुत्रेषुभार्यां
निक्षिप्यवनंगच्छेत्सहैववा॥ ३॥ म०ग्रामोंकेजितनेपदार्थहैं उ
सभोंकोछोड़देऔरअश्व छत्र वस्त्रादिकभीछोड़दे अर्थातनिर्वाहमा
लेजाय उसकोभीछोड़दे वनमेंजाकेअपनीस्त्रीको पुत्रकेपासरख
अथवास्त्रीजोकहैकिसेवाकेवास्तेमैंचलूंगीतोसंगमेंलेकेवनकोदो
जाय जोस्त्रीकहैकिमैं पुत्रोंकेपासरहूंगी तोउसकोछोड़के एका
जाय॥ ३॥ अग्निहोत्रंसमादाय गृह्यंचाग्निपरिच्छदम्। ग्राम
दरण्यंनिःसृत्य निवसेन्नियतेन्द्रियः॥ ४॥ म० अग्निहोत्रकीस
सामग्रीअर्थातकुण्डऔरपात्रादिकोंकोलेकेग्रामसेनिकलकेजि
न्द्रियहोकेवनमेंवासकरै॥ ४॥ मुन्यन्नैर्विविधैर्मेध्यैःशाकमूलफ
नवा। एतानेवमहायज्ञान् निर्वपेद्विधिपूर्वकम्॥ ५॥ म०मुन्य
नामसुनियोंकेविविधजोअन्नसांवाकाचावलजोकिवनमेंबिनाबो

होतेहैं वेमेध्यहोतेहैं अर्थात बुद्धिवृद्धि करनेवालेहं उनसेशाकजो
किपत्रऔरपुष्पमूलनामकन्द जोकिभूमिमेंसेनिकलतेहैं औरफल
इनसेपूर्वोक्तपंचमहायज्ञोंकोविधिपूर्वकनित्यकरै॥ ५ ॥ बसीतचर्म-
चीरंवासायंस्नायात्प्रगेतथा। जटाश्चबिभृयान्नित्यं श्मश्रुलोमन-
खानिच ॥ ६ ॥ भ० मृगचर्मअथवाचीरजोकिवृक्षोंकेछालसेहोता
है उसकोधारणकरै शरीरकीरक्षाकेवास्ते सायंकालऔरप्रातः
कालदोवेरस्नानकरै जटादाढ़ीमोंछलोमऔरनखइनकोनित्यधा-
रणकरै अर्थातगृहाश्रममेंइनकाधारणकरनाचाहिये सोईलिखा
है ॥ ६ ॥ केशान्तःषोड़शेवर्षे ब्राह्मणस्यविधीयते। आद्दविंशात्क्ष-
त्रबन्धोराचतुर्विंशतेर्विशः ॥ ७ ॥ भ०सोलहवर्षमेंब्राह्मण २२वर्ष
मेंक्षत्रिय२४वर्षमेंवैश्यऔरशूद्रभीदाढ़ीमोंछऔरनखकभीनरक्खैं
इसेयहांवानप्रस्थकेवास्तेधारणलिखा ॥ ७ ॥ यद्भक्ष्यंस्यात्ततोदद्या-
त्वलिंभिक्षांचशक्तितः। अम्मूलफलभिक्षाभिरर्चयेदाश्रमागता-
न् ॥ ८ ॥ भ० जोआपभक्षणकरैउसीसेपंचमहायज्ञसामर्थ्यकेअनु-
कूलकरै जलमूलनामकन्दफल औरभिक्षाइनसेअपने आश्रममें
कोईअतिथिआवै उसकाभीसत्कारकरै ॥ ८ ॥ स्वाध्यायेनित्ययुक्तः-
स्याद्दान्तोमैत्रःसमाहितः। दातानित्यमनादातासर्वभूतानुकम्प-
कः ॥ ९ ॥ भ० स्वाध्याय अर्थातशास्त्रकेविचार अथवायोगाभ्यास
मेंनित्ययुक्तहोय औरदान्तनामउदारतासेसबइन्द्रियोंकोजीतेसब
सेमित्रतारक्खै समाहितनामशरीरऔरचित्तकासमाधानरक्खै
अपधेयकर्मकाभीसमाधानरक्खै नित्यऔरोंकोदेवैआपकिसीसेन
लेवै औरसबजीवोंकेऊपरकृपारक्खै पक्षपातादिकभीययावत्करै ॥
९ ॥ नफालकृष्टमश्नीयादुत्सृष्टमपिकेनचित्। नग्रामजातान्यार्तो-
पिमूलानिचफलानिच ॥ १० ॥ भ० फालकृष्टअर्थातहलकेजोतनेसे
क्षेत्रमेंजोकुछहोताहै उसकोकभीनग्रहणकरै औरखेतवाखरि-
हानमेंछूटाभयाजोअन्न उसकाभीग्रहणनकरै औरजोग्रामकेमूल
वाफलउनकोग्रहणकभीनकरै ॥१०॥ अग्निपक्वाशनोवास्यात्कालपक्व-

भुगेचवा। अश्मकुट्टोभवेद्वापिदन्तोलूखलिकोपिवा॥ ११॥ म० अ-
ग्निपक्काशनअर्थातअग्निमेंपकाकेखावै कालपक्कभुग्‌अर्थातजोआ-
सेवृक्षोंमेंफलपकजांय उनकोखावै अश्मकुट्टअर्थातपाषाणसेकूट
के फलादिकोंकोखाय दन्तोलूखलिकनाम दांततोमूसलकीनांई
औरमुखउलूखलकीनांई वैसेहोहाथसे फलादिकलेके मुखओ
दांतोसेखालेवै ११॥ सद्यःप्रक्षालकोवास्यात्माससंचयिकोपिवा।
षण्मासनिचयोवास्यात्समानिचयएववा॥ १२॥ म० एकतोय
दोचाहैकिजितनेसेअपनानिर्वाहहोयउतनाहीलेआवै दूसरेदि
केवास्ते नरक्खै दूसरीयहदिचाहैकिमासभरकेवास्ते फलादि
कासंचयकरलेवै अथवाछःमासपर्यन्तकासंचयकरलेवै यहतीस
दोचाहै चौथीदोचायहहैकिसालभरकासंचयकरले इत्यादिक
ऊतवानप्रस्थकेवास्त व्रतलिखेहैं १२॥ ग्रीष्मेपंचतपास्तुवर्षास्वभ्र
वकाशिकः। आर्द्रवासास्तुहेमन्तेक्रमशोवर्द्धयंस्तपः॥ १३॥ म
ग्रीष्मनामवैशाखज्येष्ठमेंजबसूर्यदशघंटाकेऊपरआवैतबचारों
शाओंमेंअग्निकरदे आपबीचमेंबैठे जबतकतीननबजैतबतक
वर्षाकालमेंमैदानमेंबैठे औरअपनेऊपरछायाकुछनरहै शीतका
मेंगीलेवस्त्रधारणकरै इत्यादिकप्रकारोंसेअत्यन्तउग्रतपकरै क्यों
विनातपअन्तःकरण शुद्धनहीहोता और इन्द्रियोंकाजय भीन
होता इससेअवश्यतपकरनाचाहिये॥१३॥ अग्नीनात्मनिवैताना
समारोप्ययथाविधि। अनग्निरनिकेतःस्यान्मुनिर्मूलफलाशनः
२४॥ म० जपतपसेमनऔरइन्द्रियांसबवशीभूतहोजांय तबअ
आहवनीयगार्हपत्यदाक्षिणात्यसभ्यऔरआवसथ्य यहपांचप्रक
का अग्नि होता है औरवैतान अर्थात इष्टियों की सामग्री औ
अग्निहोत्र की सामग्री उनकी वाह्यक्रिया को छोड़दे क्योंकि
तनीवाह्यक्रियाहैं वेमनकीशुद्धीकेलियेहैं, सोजबमनशुद्धहोज
तबउनकेकरनेकाकुछप्रयोजननहीं किन्तुकेवलभीतरकीजोक्रि
अर्थातयोगाभ्यासऔरविचारइन्हीकोकरै॥ १४॥ अप्रयत्नःसु

र्थंपुब्रह्मचारीधराशयः । शरणेष्वममश्चै वृक्षमूलनिकेतनः १५ ॥
म॰ शरीरवाइन्द्रियोंकेसुखकोकुछइच्छानकरै किन्तुउनकात्याग
हीकरै औरब्रह्मचारीरहै अर्थातअपनीस्त्रीसंगमेभीहोयतौभीउस्से
संगकभीनकरै किन्तुस्त्रीतोवनमेंसेवाकेवास्ते होहै औरभूमिमेंश-
यनकरै शरणअर्थातजहां२ रहै अथवाबैठेउसमेंममताकियहमेरा
होहै ऐसाअभिमान कभीनकरै किन्तुवहांसेकोईउठावे तो उठ
केचलाजाय दूसरीजगहजाकेबैठे क्रोधादिककुछभीनकरै, किन्तु
प्रसन्नहीरहै ॥ १५ ॥ तापसेष्वेवविप्रेषुयात्रिकंभैक्षमाहरेत्। गृह-
मेधिषुचान्येषुद्विजेषुवनवासिषु ॥ १६ ॥ वनमेंअन्यजितनेवानप्रस्थ
लोगहोवैं उनसेअपनेनिर्वाहमात्र भिक्षाकरलेअधिकनहीं अथ-
वाब्राह्मणक्षत्रियऔरवैश्ययेतीनोंगृहाश्रमीवनमेंरहतेहोवैं उनसे
अपनेनिर्वाहमात्रभिक्षाकरले ॥ १६ ॥ ग्रामादाहृत्यवाश्नीयादष्टौ-
ग्रासान्वनेवसन्। प्रतिगृह्यपुटेनैवपाणिनाशकलेनवा ॥ १७ ॥ म॰
जबदृढ़जितेन्द्रियहोजाय तोभीवनमेंरहे परंतुकभी२ ग्राममेंचला
जावैभिक्षाकरनेकेवास्ते अपनेदोनाय वाएकहाथमें जोगृहस्थों
केघरमेंअन्नभयाहोय उसकोप्रीतिसेजितनाकोईदेवैउतनालेलवै
परन्तुआठग्रासमात्रले फिरउसकोलेके वनमेंचलाजाय जहांकि
लहोय वहांबैठकेआठग्रासखालेअधिकनहीं ॥ १७ ॥ एताश्चा-
श्चसेवेतदीक्षाविप्रोवनेवसन्। विविधाश्चौपनिषदीरात्मसंसिद्ध-
श्रुती ॥ १८ ॥ म॰ ऋषिभिर्ब्राह्मणैश्चैवगृहस्थैरेवसेविताः। वि-
ातपोविद्ध्यर्थंशरीरस्यचशुद्धये ॥ १९ ॥ म॰ इनदीक्षाओंकोऔर
अन्यदीक्षाओंकोभीवनमेंरहनाभया वहवानप्रस्थसेवनकरै नाना
प्रकारकीजोउपनिषदोंकीश्रुति उनकोआत्मज्ञानअर्थातब्रह्मविद्या
केवास्तेनित्यविचारै ॥ १८ ॥ ऋषियोंनेअर्थातयथावत्वेदकेमन्त्रो
केअर्थजाननेवाले औरब्राह्मणोंनेअर्थातब्रह्मविद्याके जाननेवालों
औरगृहस्थोंनेअर्थातपूर्णविद्यावाले धर्मात्माओंने जिनश्रुति-
योंका सेवनकियाहोय उनकोनित्ययोगाभ्यास औरज्ञानदृष्टि से

विचारकरैं क्योंकिविद्या अर्थातब्रह्मविद्या औरतप अर्थात
मिद्विइनकीवृद्धिके औरशरीरकी शुद्धिकेवास्ते अर्थात दशेन्द्रि
पांचप्राण मन,बुद्धि,चित्तऔरअहंकार इन १९ सतत्वोंके
नेसेलिंगशरीरकहाताहै इसकेशुद्धिकेवास्ते ॥ १९ ॥ आसां
र्षिचर्याणांत्यक्त्वान्यतमयातनुम्। वीतशोकभयोविप्रोब्रह्मलोके
हीयते॥२०॥ भ० इनमहर्षियोंकीक्रियाओंकेमध्यकिसीक्रिय
करकेशरीरकूटजाय तोभीवहविद्वानशोकभयादिकदुःखोंसे
ब्रह्मलोकअर्थात परमेश्वरकीप्राप्ति अथवाउत्तमस्वर्गकीप्राप्ति
होतीहै।२० वनेषुचविहृत्यैवंतृतीयंभागमायुषः।चतुर्थमायुषो
त्यक्त्वासंगान्परिब्रजेत्॥२१॥ भ० इसप्रकारसेवानप्रस्थाश्रम
यावत् आयुकेतीसरेभागकोसमाप्तिपर्यन्त बनोंमेंबिहारकर
आयुकाचतुर्थभाग अर्थात७०सत्तरबर्षकेऊपर आयुकेचतुर्थ
मेंसबसंगोंका अर्थातस्त्रीयज्ञोपवीत शिखादिककोछोड़के परि
अर्थातसबदेशान्तरमेंभ्रमणकरैकिसीपदार्थमेंमोहवापक्षपात
नकरै वहस्त्री अपनेपुत्रोंकेपासचलीजाय अथवाबनमेंतपश्चर्या
॥ २१ ॥ इसमेंकोईशंकाकरै कियज्ञोपवीतादिकचिन्होंकेछो
क्याहोताहै अर्थातइनकोनछोड़नाचाहिये उत्तर अच्छा य
वीतादिकचिन्होंकेरखनेसेक्याहोताहै पूर्वपक्षयज्ञोपवीतादि
द्विजदेखपड़ताहै औरविद्याकेचिन्हसे विद्याकीपरीक्षाभीहो
उत्तर किजबसंसारकेव्यवहार औरअग्निहोत्रादिक वाह्य
जिनमेंउपवीतिनिवीति औरप्राचीनावीति यज्ञोपवीतसेक्रि
रनीहोतीहैं उनअग्निहोत्र वाह्यक्रियाओंकोतोछोड़दिया
कहींप्रतिष्ठाविद्यासेकरानीउसकोनहीं फिरयज्ञोपवीतादि
रखनाउसकोव्यर्थहीहै इसमेंयहप्रमाणहै। प्राजापत्यांनिरू
तस्यांसर्ववेदसंहुत्वाब्राह्मणःप्रब्रजेत्॥ यहयजुर्वेदकेब्राह्मणकी
है इसकायहअभिप्रायहै किप्राजापत्यइष्टिकोकरकेउसमें
सवेदसविहलाभे जोरयज्ञोपवीतादिक वाह्यचिन्हप्राप्तहुये

सभोंको ज्ञत्वानामत्यक्त्वा अर्थातछोड़केब्राह्मणविद्यान्न।नवानतया
वैराग्यइत्यादिकगुणवालापरिव्रजेत् परित:सर्वत:व्रजेत् सबसंसार
केबन्धनोंसेमुक्तहोकेसन्यासीहोजाय। लोकेषणायाश्चवित्तेषणाया-
श्च पुत्रेषणायाश्चोत्थायाथभिक्षाचर्यंचरति। यहबृहदारण्यकउप-
निषदकीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहै किलोकेषणाअर्थातलोक
कोजननिन्दाकरैवास्तुतिकरै औरअप्रतिष्ठाकरैतोभीजिसकेचित्त
में कुछहर्षऔरशोकहोय औरजितनेलोकके विषयभोगहैं, स्त्रीधन
इत्यश्वचन्दनादिक इनसेउठके अर्थातइनकोतुच्छजानकेजोसवेहर्ष
शोकके देनेवालेहैं वैसेयथावतसमझके सत्यधर्म औरमुक्ति अर्थात
सबदु:खोंकीनिवृत्ति औरपरमेश्वरकीप्राप्तिइनमें स्थिरहोकेआन-
न्दमें रहै औरकिसीकापक्षपातअथवाकिसीसेभयकभीनकरैवित्ते-
षणाअर्थातधनकीइच्छा औरधनकीप्राप्तिमेंप्रयत्नऔरलोभकिमुझ
कोधनअधिकहोय औरजितनेधनाढ्यहैं उनसेधन प्राप्तिकेवास्ते
बहुतप्रीतिकरै द्रव्यकोबड़ापदार्थजानकेसंचयकरना औरदरिद्रों
धनकेनहीं होनेसेप्रीतिकानकरना औरधनाढ्यों को स्तुति न
करना इनसबबातोंकाजोछोड़ना उसकानामवित्तेषणाकात्याग
पुत्रेषणाअर्थातअपनेपुत्रोंमेंमोहकाकरना बाजेसेवकलोगहैं उ-
नसेमोह अर्थात प्रीति करना और उनके सुखमें हर्षका होना
और उनकेदु:खमें शोकका होना उसका पुत्रेषणानामहै एषणा
नामइच्छाकातीनपदार्थोंमेंहोना इनतीनोंएषणाओंसेजोबहुनही
वहीसन्यासीहोताहै औरपक्षपातरहितभीसन्यासीयथावत्हो-
ता है क्योंकिजितनेब्रह्मचारी,गृहस्थऔरवानप्रस्थहैं उनकोबहुत
व्यवहारोंकेहोनेसे बुद्धिमानहोय तोभीभय,शंका औरलज्जाकुछ
कुछ सीव्यवहारमेंरहतीहीहै औरजोसन्यासीहोताहै उसकोकिसी
प्रकार सम्बन्धोव्यवहारकाकरना आवश्यकनहीं वाकिसीमनुष्यसे
शंका,लज्जा,भय औरपक्षपातकभीनहीहोता। आश्रमादाश्रमं-
गत्वाहुतहोमोजितेन्द्रिय:। भिक्षाबलिपरिश्रान्त: प्रव्रजन्प्रेत्यव-

र्वते॥ २२ ॥ भ० आश्रमसेआश्रमकोजाकेअर्थातक्रमसेब्रह्मच
श्रमादिकतोनोंकोकरके यथावत् अग्निहोत्रादिक यज्ञोंको
जितेन्द्रियजबहोजाय भिक्षादेदेऔरबलीअर्थातबलीवैश्वदेव
परिश्रान्तअत्यन्तश्रमयुक्तजबहोय तबसन्यासलेतोउसका स
यथावतबढ़ताजायखंडितनहोय ॥ २२ ॥ ऋणानित्रीण्यपाकृ
नोमोक्षेनिवेशयेत्। अनपाकृत्यमोक्षन्तुसेवमानोब्रजत्यधः॥
भ० तीनऋणअर्थातऋषिपितृऔरदेवऋण इनकोकरके मो
वास्तेसन्यासमेंचित्तप्रविष्टकरै औरइनतीनोंकोनकरकेजोस
कोइच्छाकर्ताहै सोनीचेगिरपड़ताहै उसकोमोक्षनहीप्राप्त
२३॥ वेकौनतीनऋणहैं अधीत्यविधिवद्वेदान्पुत्रानुत्पाद्यध
इष्ट्वाचशक्तितोयज्ञैर्मनोमोक्षेनिवेशयेत्॥ २४॥ भ० विधिवत
तउक्तप्रकारसे ब्रह्मचर्याश्रमकोकरके सबवेदोंकोपढ़ै अर्थ
औरअङ्गउपवेद औरछ:शास्त्रसहितपढ़ै फिरपढ़केयथावत्
क्योंकिविद्याकालोपइसप्रकारसेकभीनहोगा यहप्रथमऋ
है इसमें जपऔरसंध्योपासनभीजानलेना सबमनुष्योंकोज
परमेश्वरकीआज्ञाहै किब्रह्मचर्याश्रमसेविद्याओंकोपढ़ना
ढ़ाना इसकेविनासबआश्रमनष्टहैं जैसेकिमूलकेबिना वृक्ष
जाताहै उक्तप्रकारसेपुत्रोंकोविद्या धर्मकीविद्यापढ़ने औ
कोकरै अपनीकन्याअथवाअपनापुत्र विद्याकेबिनाकभीनर
श्रेष्ठगुणवालेहोवैंऐसाकर्ममातापिताकोकरनाउचितहै
अपनेसन्तानोंकोश्रेष्ठगुणवालेनकरेंगे तोउनमातापित
लककोजैसामारडाला फिरमारनातोअच्छा परन्तु मूर्ख
अच्छानहीं इसीमेंउक्तप्रकारसेतर्पण औरश्राद्धभीजानले
दूसरापितृऋणहै फिरगृहाश्रममेंयथावत्अग्निहोत्रादि
नुष्ठानकरै जिससेकिसबसंसारकाउपकारहोय इससे उसक
उपकारहै अर्थातपुण्यसेसुखपाताहै सोइनतीनऋणोंको
मोक्षअर्थातसन्यासकरनेमेंचित्तदेवें अन्यथानहीं॥ २४॥

त्यद्द्विजोवेदाननुत्पाद्यतथासुतान्। अनिष्ट्वाचैवयज्ञैश्चमोक्षमिच्छन्-
व्रजत्यधः॥ २५॥ भ० द्विजअर्थातब्राह्मणक्षत्रियऔरवैश्यवेदोंकोन
पढ़के,यथावतधर्मोंसे पुत्रोंकाउत्पादनभीनकरैं अग्निहोत्रादिक
यज्ञभीनकरैं फिरजोमोक्षअर्थात्सन्यासकीइच्छाकरै सन्याससतो
उसकानहोगाकिन्तुसंसारहीमेंगिरपड़ेगा॥ २५॥ एकबाततोस-
न्यासकेक्रमकीहोगई दूसरीयहबातहैकि प्राजापत्यांनिरूप्येष्टिंस-
र्ववेदसदक्षिणाम्। आत्मन्यग्नीन्समारोप्य ब्राह्मणःप्रव्रजेगृहात्॥
२६॥ भ० प्राजापत्यइष्टिकासबयथावत्निरूपणकरके उसमेंसर्व-
वेदसअर्थातयज्ञोपवीतादिकजितनेचिन्हप्राप्तभयेथे उनकोदक्षिणा
मेंदेकेऔरपूर्वोक्तपांचअग्नियोंकोआत्मामेंसमारोपणकरकेब्राह्म-
णअर्थातविद्वानवानप्रस्थकोभीनकरै अर्थात्गृहाश्रमहीसेसन्यास
लेलेवै॥ २६॥ योदत्वासर्वभूतेभ्यःप्रव्रजत्यभयंगृहात्। तस्यतेजोम-
यालोकाभवन्तिब्रह्मवादिनः॥ २७॥ भ० जोसबभूतोंकोअभयदान
अर्थात ब्रह्मविद्यादानदेके घरसेहीसन्यास लेताहै तिसको तेजो-
मयलोकप्राप्तहोताहै अर्थातपरमेश्वरहीप्राप्तहोतेहैं फिरकभीज-
न्ममरणमेंवहपुरुषनहीआता सदाआनन्दमेंहीपरमेश्वरको प्राप्त
होकेरहताहै॥२७॥ आगारादभिनिष्क्रान्तःपवित्रोपचितोमुनिः।
समयोढेषुकामेषुनिरपेक्षःपरिव्रजेत्॥ २८॥ भ० आगारअर्थात
ब्रह्मचर्याश्रमसेभीसन्यासलेले परंतुअभिनिष्क्रान्तजबअन्तर्मुखमन
होजाय किविषयसेवाकी इच्छाथोड़ीभीनहोय औरपवित्रगुणोंसे
अर्थात शमदमादिकोंसे उपचित नाम जबयुक्त होय और मुनि
अर्थात मनन शील सत्य२ बिचार वाला होय और सब कामों
कोजीतले कोईकामउसकेमनको अधर्ममेंनलगासके स्थिरचित्त
होय निरपेक्षकिसीसंसारकेपदार्थकी सिवायपरमेश्वरकीप्राप्तिके
अपेक्षानहो यतबब्रह्मचर्याश्रमसेभीसन्यासलेवैतोभीकुछदोषनहीं
२८॥ इसमेंश्रुतियोंकाभीप्रमाणहै यदहरेवविरजेततदहरेवप्रा-
व्रजेद्वनाद्वागृहाद्वा १ ब्रह्मचर्यादेवप्रव्रजेत् २॥ यहयजुर्वेदकेब्राह्मण

कीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहैकिजिसदिनपूर्णवैराग्यहोय उ
दिन सन्यासीहोजाय वानप्रस्थाश्रम अथवा गृहाश्रमसे और
पूर्णविद्या और पूर्णवैराग्य और पूर्णज्ञान, और विषयभोगकीइच्छ
कुछभीनहोय तोब्रह्मचर्याश्रमसेहीसन्यासलेलेवैतोभीकुछदोष
नीं पूर्वपक्षयहबातपरमेश्वरकीआज्ञासेविरुद्धहै क्योंकिपरमेश्व
काअभिप्रायप्रजाकीवृद्धिकरनेमेंजानाजाताहै औरप्रजाकीहानि
नहीं जोकोईसन्यासलेगा सोविवाहनकरेगा इस्से संसारकीइ
नहोगी इसवास्ते सन्यासकालेनाउचितनहीं जबतकजियेतब
गृहाश्रममें रहकेसंसारकेव्यवहार औरशिल्पविद्याओंकोउन
करै इस्से सन्यासकाकरना उचितनहीं किन्तु ब्रह्मचर्याश्रमसे
द्यापढ़केगृहाश्रमहीमेंरहनाउचितहै उत्तरपक्षऐसाकहनाउ
तनहीं क्योंकिब्रह्मचर्याश्रमनहोगातोविद्याकीउन्नतिनहोगी
गृहाश्रमनकरनेसे आगेमनुष्यकीउत्पत्ति संसारकाव्यवहारभी
नष्टहोजांयगे औरबानप्रस्थके नहोनेसे मनभी शुद्धनहोगा
सन्यासकेनहोनेसे सत्यविद्या औरसत्योपदेशकी उन्नति नहीं
पाखंडऔरअधर्मका खण्डनभीनहोगा इस्से संसारको उन्नति
नाशहोगा क्योंकिज्ञानकीवृद्धिहोनेसे सबसुखोंकीवृद्धिहोतीहै
व्ययानहीं इसमेंदेखनाचाहिए किब्रह्मचारीकोपढ़नेसेरातदि
वकाशहीनहीरहताऔरगृहस्थकोभीबहुतव्यवहारकेहोनेसे
फसाहीरहताहै औरबानप्रस्थकातपहीमेंचित्तरहताहै और
बिचारभीकर्ताहै जोसन्यासीहोगा वह बिचारकेबिना अन्य
हारहीनरहेगा इस्से पृथ्वीसेलेकेपरमेश्वरपर्यन्तपदार्थोंका
र्थविचारकरकेऔरोंकोभीउपदेशकरेगा सबदेशोंमेंभ्रमणक
इस्से सबदेशोंकेमनुष्योंकोउसकेसंग औरसत्यउपदेशके सुनने
ड़ालाभहोगा जोगृहस्थहोगा उसकाजहां २ घरहै वहां २
रहेगाअन्यत्रभ्रमणनकरसकेगा इस्से सन्यासकाहोनाभीउचि
परमेश्वरन्यायकारीहै औरविद्याकीउन्नतिभीचाहताहै जि

विषयभोगकीइच्छानहोगी उसकोपरमेश्वरकैसेआज्ञादेगें किंतु
विवाहकर जैसेकिकोईपुरुषको रोगकुछनहीं उसे वैद्यकहैकिंतु
कुछऔषधखा वहऔषधक्योंखायगा औरजिसकोभोजनकरनेकी
इच्छानहोय उसकोकोईबलसे कहेकिंतु अवश्यभोजनकर तोवह
विनाक्षुधाकेभोजनकैसेकरेगा किन्तु कभीनकरेगा ऐसेहोजिसको
विषयभोग औरसंसारकेव्यवहारोंकीइच्छानहीं वहविवाह और
संसारकेव्यवहारकैसेकरेगा कभीनकरेगा संसारकेजनोंसेकुछप्र-
योजन न होने से सबके मुख पर सत्यही कहेगा अपने सामने
जैसा राजा वैसोही प्रजा को समुझेगा इसवास्ते जिस पुरुषको
विद्या, ज्ञान, वैराग्य, पूर्णजितेन्द्रियता होय और विषय भोग
कीइच्छानहोय उसीको सन्यासलेना उचितहै अन्यको नहीं जैसे
कि आजकालआर्यावर्त्तदेशमेंबहुत सम्प्रदायीलोगहोगयेहैंवेकेवल
धूर्त्ततासेपरायाधनहरणकरलेतेहैं औरपराईस्त्रीकोभ्रष्टकरदेते
हैं औरमूर्खतातथापक्षपातकेहोनेसे मिथ्याउपदेशकरके मनुष्यों
कोबुद्धिनष्टकरदेतेहैंऔरअधर्ममेंप्रवृत्तकरादेतेहैंइससेइनकातोब-
न्दहीहोनाउचितहै क्योंकिइनके होनेसेसंसारकाबहुतअनुपकार
होताहै ॥ कपालंवृक्षमूलानिकुचैलमसहायता। समताचैवसर्वस्मि-
न्नेतन्मुक्तस्यलक्षणम् ॥ २८ ॥ भ० कपालअर्थातभिक्षापात्रवृक्षके
जड़मेंनिवास औरकुत्सितवस्त्र औरसबकेऊपरसमबुद्धि नकिसीसे
प्रीति औरनकिसीसेवैर यहमुक्तपुरुष अर्थातसन्यासीका लक्षण
है ॥ २९ ॥ नाभिनन्देतमरणं नाभिनन्देतजीवितम। कालमेवप्र-
तीक्षेतनिर्देशंभृतकोयथा ॥ ३० ॥ भ० जोसन्यासीहोय सोमरने
औरजीनेमेंशोकवाहर्षनकरै किन्तु कालकोप्रतीक्षाकियाकरै जब
मरणसमयआवैतबशरीरछोड़दे शरीरसेमोहकुछनकरै जैसाकि
छोटानौकरस्वामीकीआज्ञाजबहोतीहै तभीवहकामकरनेलगता
है जहांकहेवहांचलाजाताहै औरसन्यासीकिसीपदार्थसे सिवाय
परमेश्वरकेमोहवाप्रीतिनकरै ॥ ३० ॥ दृष्टिपूतंन्यसेत्पादंवस्त्रपूतंज-

लंपिबेत्। सत्यपूतांवदेद्वाचंमनःपूतंसमाचरेत्॥ ३१॥ म॰ दूस
अर्थतो पहिलेकरदियाहै परन्तु सन्यासधर्मकेप्रकरणमें लिखने
यहप्रयोजनहै किबहुतलोगकहतेहैं किसन्यासोकिसीकोउपदेश
करै इनसेपूछनाचाहिएकि सत्यपूतांवदेद्वाक्यं सत्यअर्थातप्रम
औरविचारसे यथावत निश्चयकरके सत्यउपदेशकरै सबविद्या
जोपूर्ण विद्वान् सन्यासी सोतो उपदेश न करै और जितने
खण्डो मूर्खलोग हैं वे उपदेश करैं तभीतो संसार का सत्यान
होताहै जितनेमूर्खपाखण्डी उनकातो ऐसाप्रबन्ध करनाचाहि
कि वेउपदेशहीनकरनेपावैं औरजितने विद्वानसन्यासी लोगहैं
सदाउपदेशकियाकरैं अन्यकोईनहीं अन्यथामूर्खपाखण्डियोंके
पदेशसेदेशकानाशहोताहै जैसेकिआजकलआर्यावर्त्त देशकी
वस्थाभईहै ॥ ३१ ॥ क्रुध्यन्तंप्रतिनक्रुध्येदाक्रुष्टःकुशलंवदेत्।
सप्तद्वारावकीर्णाञ्चनवाचमनृतांवदेत्॥ ३२॥ म॰ जोकोईक्रोध
उससे सन्यासीक्रोधनकरै औरकोईनिन्दाकरै उसको भीकल्याण
उपदेशनकरै किञ्चसप्तद्वारमुखनासिकाकेदोछिद्रदोछिद्रआं
औरकानकेइनसातद्वारोंमें जोवाणीविखररहीहै उससेमिथ्याव
नकहै अर्थातसन्यासीसदासत्यहीबोलै ॥ ३२ ॥ क्लृप्तकेशनखश्मश्रु
पात्रीदण्डीकुसुम्भवान्। विचरेन्नियतोनित्यं सर्वभूतान्यपीड
॥ ३३ ॥ म॰ केशसिरकेसबबालनखऔरश्मश्रु अर्थातदाढ़ीमोंछ
नकोकभीनरक्खै अर्थातछेदनकरादेवैपात्रीएकहीपात्ररक्खै
एकही दंड रक्खै दूसरे तीनदण्डोंका धारना पाखण्डही है
साकिचक्रांकितोंका कुसुंवा रंगसेरंगेवस्त्रपहिरैं औरगेरू
तिकाकेरंगेनहीं अथवाश्वेतवस्त्रधारणकरैं निश्चयबुद्धिहोकेस
तोंसेरागद्वेषछोड़केअपनेब्रह्मानन्दमेंविचरै ॥ ३३ ॥ एककालं
भैक्षं नप्रसज्जेतविस्तरे। भैक्षे प्रसक्तोहियतिर्विषयेष्वपिसज्ज
३४ ॥ एकवेरभिक्षाकरै अत्यन्तभिक्षामेंआसक्तनहोय क्योंकि
भोजनमेंआसक्तहोगा सोविषयमेंभीआसक्तहोगा ॥ ३४ ॥ वि

सन्नमुसलेव्यङ्गारेभुक्तवज्जने । इत्ते शरावसंपाते भिक्षांनित्यंय-
तिश्चरेत्॥ ३५ ॥ भ० जबगांवमेंधूमनदेखपड़े मूसलवाचक्कीकाश-
ब्दनसुनपड़े किसीकेघरमेंअंगारनदेखपड़े सबगृहस्थलोगभोजन
करचुकें औरभोजनकरके पत्तीऔरसकोरेबाहरकोफेंकदेवें उस
समयसन्यासीगृहस्थलोगोंकेघरमें भिक्षाकेवास्ते नित्यजांय और
जोऐसाकहते हैंकिहमपहिलेही भिक्षाकरेंगे यहउनकापाखंडही
जानना क्योंकिगृहस्थलोगोंकोपीड़ाहोतीहै औरजोविरक्तहोके
वैरागीआदिकअपनेहाथमेलेकेकरतेहैं वेबड़ेपाखण्डीहैं ॥ ३५ ॥
अलाभेनविषादीस्याल्लाभेचैवनहर्षयेत् । प्राणयात्रिकमात्रःस्या-
न्मात्रासंगाद्विनिर्गतः॥ ३६ ॥ भ० जबभिक्षाकालाभनहोयतबवि-
षादनकरै औरलाभमेंहर्षनकरै प्राणरक्षणमात्र प्रयोजनरक्खै
भिक्षामेंप्रसन्ननहोय औरविषयोंकेसंगोंसेपृथकरहै ॥ ३६ ॥ अभि-
पूजितलाभांस्तु,जुगुप्सेतैवसर्वशः । अभिपूजितलाभैश्चयतिर्मुक्तो-
पिवध्यते॥ ३७॥ भ० अत्यन्तश्रेष्ठपदार्थ स्त्री,त्यादिकउनकी निंदा
हीकरै क्योंकिस्त्री,त्यादिक बन्धनहीं करनेवाले हैं मुक्तभीहै।यती
भी दुःखमें बद्धहीहोजाताहै ॥ ३७ ॥ अल्पान्नाभ्यवहारेण रहःस्था-
नासनेनच । ह्रियमाणानिविषयैरिन्द्रियाणिनिवर्तयेत्॥ ३८ ॥ इ-
न्द्रियाणिनिरोधेनरागद्वेषक्षयेणच। अहिंसयाचभूतानाम् मृत-
त्वायकल्पते ॥ ३९ ॥ भ० इन्द्रियोंकानिरोधरागद्वेषऔरअहिंसा
इनचारोंकाजोत्यागकर्ताहै सोईमोक्षकाअधिकारीहोताहै अन्य
कोईनहीं ॥ ३९ ॥ दूषितोपिचरेद्धर्मं यत्रतत्राश्रमेरतः । समस-
र्वेषुभूतेषुनलिंगंधर्मकारणम्॥ ४० ॥ भ० जिसकिसीआश्रममेंदोष
युक्तपुरुषभीहोय परन्तु,धर्महीकोकरै औरसबभूतोंमेंसमबुद्धि अ-
र्थातरागद्वेषरहितहोय सोईपुरुषश्रेष्ठहै जितनेवाह्यचिन्हहैं य-
ज्ञोपवीतदंड दोनोंकोधारणकरैऔरधर्मनकरैतो धारणमात्रही
सेकुछनहीहोसक्ता औरतिलक,छापा,मालायेतो सबपाखण्डोंही
केचिन्हहैं इनकोतोकभीनधारनाचाहिये ॥ ४० ॥ फलंकतकवृक्ष-

स्ययद्यप्यंबुप्रसादकम्। ननामग्रहणादेवतस्यवारिप्रसीदति
म० यद्यपिकतकनामनिर्मलीवृक्षकाफल जलकोशुद्धकरनेवाला
सोजबउसकोपीसकेजलमेंडाले तबतोजलशुद्धहोजाताहै और
पीसकेनडाले कतकवृक्षस्यफलायनमः ऐसा माला लेकेजप
याकरै वाउसकानाम जलकेपासलियाकरै, उससे जलकभीन
होगावैसेहीनाममात्रसेकुछनहींहोताजबतकधर्मनहींकरता
प्राणायामाब्राह्मणस्य त्रयोपिविधिवत्कृताः। व्याहृतिप्रणवैर्यु
विज्ञेयंपरमंतपः ॥ ४२ ॥ म० ओमभूः,ओम्भुवः,ओम्स्वः,
महः,ओम्जनः,ओमतपः,ओम्सत्यं इसमन्त्रकाहृदयमेंउच्चा
करै पूर्वोक्तरीतिसे तीनबारभीप्राणोंका निग्रहकरै तोभीउस
न्यासीकापरमतपजानना॥ ४२ ॥ दह्यन्ते ध्यायमानानांधातू
हियथामलाः। तथेन्द्रियाणांदह्यन्ते दोषाःप्राणस्यनिग्रहात्
म० जैसेसुवर्णादिकधातुओंको अग्निमेंतपानेसेमैलनष्टहोजाते
वैसेहीप्राणकेनिग्रहसेइन्द्रियोंकेमलभस्महोजाते हैं। ४४॥ प्रा
यामैर्दहेद्दोषान्धारणाभिश्चकिल्बिषम्। प्रत्याहारेणसंसर्गान्
नेनानीश्वरान्गुणान्॥ ४५ ॥ म० प्राणायामोंसेसबइन्द्रियऔ
रीरकेदोषोंकोभस्मकरदे औरधारणायोगशास्त्रकीरीतिसेकरै
विरागऔरद्वेषजोहृदयमेंपापउसकोछोड़ादे प्रत्याहारसेइन्द्रि
काविषयोंसेनिरोधकरकेसबदोषोंकोजीतले औरध्यानसेअल
दिकअनीश्वरके जितनेगुणउनकोछोड़ादे अर्थातसर्वज्ञादिक
सम्पादनकरै॥ ४५ ॥ उच्चावचेषुभूतेषु दुर्ज्ञेयामकृतात्मभिः। ध्या
योगेनसंपश्येद्गतिमस्यांतरात्मनः॥ ४६ ॥ म० स्थूलऔरसूक्ष्म
नमेंजोपरमेश्वरव्याप्तहै औरअपनेशरीरमेंजोअपनाआत्मा
परपरमात्माउनकीजोगतिनामज्ञान उसकोसमाधिसम्य
ले जोदुष्टलोगोंकोदेखनेमेंकभीनहीआती॥ ४६ ॥ सम्यक्दर्श
म्पन्नःकर्मभिर्ननिबध्यते। दर्शनेनविहीनस्तु संसारंप्रतिपद
४७॥ म० जबसन्यासीसम्यकज्ञानसेसम्पन्नहोताहै तबकर्मों

नहींहोता औरजोज्ञानसेहीनसन्यासीहैसोमोक्षकोतोनहींप्राप्त
होता किन्तु संसारहीमेंगिरपड़ताहै ॥ ४७ ॥ अहिंसयेन्द्रियासं-
गैर्वैदिकैश्चैवकर्मभिः । तपसश्चरणैश्चोग्रैःसाधयन्तीहतत्पदम् ॥४८॥
म० वैरइन्द्रियोंकेविषयोंकाअसंगवैदिककर्मकाकरना अत्यन्तउग्र
तपइन्होंसेमोक्षपदकोसिद्धलोगप्राप्तहोतेहैंअन्यथानहीं ॥४८॥ अ-
स्थिस्थूणंस्नायुयुतं मांसशोणितलेपनम् । चर्मावनद्धं दुर्गन्धिपूर्णं-
मूत्रपुरीषयोः ॥ ४९ ॥ म० जराशोकसमाविष्टं रोगायतनमातुर-
म् । रजस्वलमनित्यंचभूतावासमिमंत्यजेत् ॥ ५० ॥ म० हाड़जिस-
काखंभाहै नाड़ियोंसेबांधाभयामांस, औररुधिरका ऊपरलेपन
चामसेढपाहुआदुर्गन्धमूत्रऔरविष्टासेपूर्ण ॥ ४९ ॥ जराऔरशोक
सेयुक्तरोगकाघरक्षुधातृषादिकपीड़ाओंसे नित्यआतुरऔरनित्य-
हीरजस्वलअर्थातजैसीरजस्वलास्त्रीनित्यजिसकीस्थितिनहीं और
सबभूतोंकानिवास ऐसाजोयहदेह इसकोसन्यासी योगाभ्याससे
छोड़दे ॥ ५० ॥ नदीकूलंयथावृक्षो वृक्षंवाशकुनिर्यथा । तथात्यज-
न्निमंदेहं कृच्छ्राद्ग्राहाद्विमुच्यते ॥ ५१ ॥ म० जैसेवृक्षजबनदीकेतट
सेजलमेंगिरकेचलाजाय वैसेहीसमाधियोगसेइसकोछोड़ै तबब-
ड़ा भारी जन्म मरण रूप संसार के सब दुःख से छूटके मुक्त हो
जाय ॥ ५१ ॥ प्रियेषुस्वेषुसुकृतमप्रियेषुचदुष्कृतम् । विसृज्यध्यान-
योगेनब्रह्माभ्येतिपरंपदम् ॥ ५२ ॥ म० जितनेअपनीसेवाकरने
वालेउनमेंध्यानयोगसेसबपुण्यकोछोड़दे औरदुःखदेनेवालेपुरुषों
मेंसबपापोंकोछोड़दे इससे पापपुण्यरहितजबशुद्धहोताहै तबसना-
तनपरमोत्कृष्टब्रह्मउसकोप्राप्तहोताहैफिरकभीदुःखसागरमेंनहीं
आता ॥ ५२ ॥ यदाभावेनभवतिसर्वभावेषुनिस्पृहः । तदासुखम-
वाप्नोतिप्रेत्यचेहचशाश्वतम् ॥ ५३ ॥ म० जबसबप्रकारसेसन्यासी
काअन्तःकरण औरआत्माशुद्धहोजाताहै, उसकायहलक्षणहै कि
किसीपदार्थमेंमोहनहींहोता तबवहपुरुषजीताभयाऔरमृत्युहो
केनिरन्तरब्रह्म सुखउसकोप्राप्तहोताहै अन्यथानहीं ॥ ५३ ॥ अ-

नेनविधिनासर्वान्त्यक्त्वासंगानशनैःशनैः । सर्वद्वन्द्वविनिर्मुक्तोब्र
ण्येवावतिष्ठते ॥ ५४ ॥ भ० इसविधिसेजितनेदेहादिक अनित्य
दार्थहैं इनकोधीरे २ छोड़ और हर्ष, शोक, सुख, दुःख, शीत, उ
रागद्वेष, जन्ममरणादिकसबद्वन्द्वोंसेछूटकेजोतासया अथवा्यर
छोड़केब्रह्महीमेंसदारहताहै फिरदुःखसागरमेंकभीनहींगिर
क्योंकि पूर्व सबदुःखों कोभोगसे अनुभव किया है फिरबड़े भा
और अत्यन्तपरीश्रमसेपरमेश्वरकीप्राप्तिभई क्यावहमूर्खहै कि
मानन्दकोछोड़केफिरदुःखमेंगिरैकभीनगिरेगा ॥ ५४ ॥ ध्यानि
सर्वमेवैतद्यदेतदभिशब्दितम् । नह्यनध्यात्मवित्कश्चित्क्रियाफल
पाश्नुते ॥ ५५ । भ० सन्यासकायहीमार्गहै किनित्यध्यानाव
हिके एकान्तमेंसबपदार्थोंकायथावतज्ञानकरना सोइसप्रक
मेंसबध्याननाममात्रसेकहदिया परन्तु इसकायथावतविधान
तत्त्वदर्शनमेंलिखाहै वहांसबदेखलेवैं अन्यथासिद्धकभीनहीं
क्योंकिप्राणायामादिकअध्यात्मविद्याजोकोईनहींजानता उस
सन्यासग्रहणका कुछफलनहींहोता उसकासन्यासग्रहणहीं
है ॥ ५५ ॥ अधियज्ञंब्रह्मजपेदधिदैविकमेवच । अध्यात्मिकं
ततंवेदान्ताभिहितंचयत् ॥ ५६ ॥ भ० अधियज्ञब्रह्मजोओंका
सकाजपउसकाअर्थजोपरमेश्वरउसमेंनित्यचित्तलगावै और
दैविकइन्द्रियांऔरअन्तःकरणउसकेदिशादिक देवताओंना
केउनकाजोपरस्परसंबंधउसकोयोगसेसाक्षात्करै औरअध्या
जीवात्मा औरपरमात्माका यथावतज्ञान औरप्राणादिकोंक
ग्रहइसकोयथावतकरै तबउसपुरुषकामोक्षहोसक्ताहै अन्य
हीं ॥ ५६ ॥ एषधर्मोऽनुशिष्टो वोयतीनांनियतात्मनाम् । वे
न्यासिकानांतुकर्मयोगंनिबोधत ॥ ५७ ॥ भ० मुख्य सन्यासी
तात्मानामजिनकाआत्मास्थिरशुद्धहोगयाहै उनकाधर्मकहचि
सेमनुजीकहतेहैं मैंनेकहदिया औरजोवेदसन्यासिकअर्थात
सन्यासीउसकाकर्मयोगसुभसेआपसुनलेवैं ॥ ५७ ॥ ब्रह्मचा

हस्थस्तथा वानप्रस्थो यतिस्तथा । एते गृहस्थप्रभवाश्चत्वारः पृथगाश्रमाः ॥ ५८ ॥ म० ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ और सन्यासी ये चारों गृहस्थाश्रमसे उत्पन्न होते हैं, पृथक २ क्योंकि गृहाश्रम न होय तो मनुष्यकी उत्पत्ति ही न होय फिर ब्रह्मचर्यादिक आश्रम कभी न होंगे इससे उत्पत्ति तथा सब आश्रमों का अन्न वस्त्र स्थान और धनादिक दानोंसे गृहस्थ लोग ही पालन करते हैं इन दोबातों में गृहस्थ ही मुख्य हैं विद्याग्रहणमें ब्रह्मचारी तपमें वानप्रस्थ विचार योग और ज्ञानमें सन्यासी श्रेष्ठ है ॥ ५८ ॥ सर्वेपि क्रमशस्त्वेते यथाशास्त्रं निषेविता । यथोक्तकारिणं विप्रं नयन्ति परमाङ्गतिम् ॥ ५९ ॥ म० सब आश्रमों यथावत् शास्त्रोक्त क्रम जो धर्माचरण उससे चलनेवाले पुरुषोंको वे आश्रमों के जितने व्यवहार श्रेष्ठ हैं उनसे सब आश्रमी लोग मोक्षपा सकते हैं परन्तु बाहर देखने मात्र भेद रहेगा उनका भीतर व्यवहार सन्यासवत एकही होगा ॥ ५९ ॥ चतुर्भिरपिचैवैतैर्नित्यमाश्रमिभिर्द्विजैः । दशलक्षणको धर्मः सेवितव्यः प्रयत्नतः ॥ ६० ॥ म० ब्रह्मचारी आदिक सब आश्रमी लक्षण है जिस धर्मके उस धर्मका नित्य सेवन करैं वे लक्षण ये हैं ॥ ६० ॥ धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः । धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥ ६१ ॥ म० धर्म है नाम न्यायका न्याय है नाम पक्षपात का छोड़ना उसका पहिला लक्षण अहिंसा किसीसे वैर न करना दूसरा लक्षण धृति कि अधर्मसे चक्रवर्ती राज्य भी मिलता होय तो भी धर्मको छोड़के चक्रवर्ती राज्यका ग्रहण न करना तीसरा लक्षण क्षमा कोई स्तुति वा निन्दा अथवा वैर करै तो भी सबको सहले परन्तु धर्मको न छोड़ै तथा सुख दुःखादिक भी सब सहले परन्तु अधर्म कभी न करै दम नाम चित्तसे अधर्म करनेकी इच्छा न करै इसका नाम है दम अस्तेय अर्थात चोरी का त्याग किसीका पदार्थ आज्ञाके विना लेना इसका नाम चोरी है इसका जो सदा त्याग उसका नाम है अस्तेय शौच नाम पवित्रता सदा शरीर वस्त्र स्थान अन्न पात्र और जल तथा पृथ्वी तादिक शुद्ध देशमें निवास राग द्वेषादिकका त्याग इसका नाम शौच है

इन्द्रियनिग्रह श्रोत्रादिक इन्द्रियों के अधर्म में कभी न जावें और इन्द्रि
को सदा धर्म में स्थिर रक्खें तथा पूर्वोक्त जितेन्द्रियता का करना इस
नाम इन्द्रियनिग्रह है शास्त्र पठन, सत्पुरुषों का संग योगाभ्यास
विचार एकान्तसेवन परमेश्वर में विश्वास और परमेश्वर की प्रार्थ
स्तुति और उपासना धीलसंतोष का धारण इन से सदा बुद्धि बढ़ाना
इस का नाम धी है विद्या नाम पृथिवी से ले के परमेश्वर पर्यन्त पद
का ज्ञान होना जो जैसा पदार्थ है उस को वैसा ही जानना उस का न
विद्या है सत्य सदा भाषण करना पूर्वोक्त नियम से अक्रोध नाम क्र
काम लोभ मोह शोक भयादिकों का त्याग उस का नाम अक्रोध का त्या
इतने संक्षेप से धर्म के ग्यारह लक्षण लिख दिये परन्तु वेदादिक
शास्त्रों में धर्म इत्यादिक सहस्रों लक्षण लिखे हैं जिस को इच्छा
उन शास्त्रों में देख ले वै अब इस के आगे अधर्म के लक्षण लिखे जाते हैं
धर्म नाम अन्याय का अन्याय नाम पक्षपात का न छोड़ना इस के
का दश लक्षण हैं पहिला लक्षण अहिंसा अर्थात वैरबुद्धि का करना
६२ ॥ परद्रव्ये ष्वभिध्यानंमनसानिष्टचिन्तनम्। वितथाभिनि
वेशश्चत्रिविधंकर्ममानसम् ॥ ६२ ॥ म० पारुष्यमनृतंचैवपैशून्यम
र्वशः। असंबद्धप्रलापश्चवाङ्मयंस्याच्चतुर्विधम् ॥ ६३ ॥ म० अद
नामुपादानंहिंसाचैवाविधानतः। परदारोपसेवाचशारीरं
धंस्मृतम् ॥ ६४ ॥ म० परद्रव्य हरण करने की छल कपट और अन्
से इच्छा यह दूसरा लक्षण अधर्म का है और तीसरा लक्षण पर क
निष्टचिन्तन अन्य जीवों को दुःख देना अपना सुख चाहना चौथा
थाभिनिवेश अर्थात मिथ्या निश्चय जो जैसा पदार्थ है उस को वैसा
न ना किन्तु विपरीत ही जानना जैसे कि विद्या को अविद्या औ
विद्या को विद्या जानना सत्य असत्य और असाधु इन को असत्य औ
असाधु जानना और पाषाणादिक मूर्त्ति और उन के पूजने
बुद्धि और मुक्ति का होना इत्यादिक मिथ्या निश्चय से जान लेना ये
मन के अधर्म के लक्षण उत्पन्न होते हैं पारुष्य नाम कठोर वच

लना जैसेकिआगच्छकाणइत्यादिक इसकानामपारुष्यहै मिथ्या भाषणनामअसत्यकाबोलनादेखनेसुननेऔरहृदयसेविरुद्धबोलना इसकानामअसत्यभाषणहै पैशून्यनामचुगलीखानाजैसेकिकिसीने धनदेनेकोकहावादिया उस्से राजाके वाअन्यकेसमीपजाकेउसकी कार्यकीहानिकरनी औरउनकेसामनेउसकीनिन्दाकरनीअर्थात अन्यपुरुषकीप्रतिष्ठावासुखदेखकेहृदयसेबड़ादुःखितहोयफिरजहां तहांचुगलीखाताफिरै इसकानामपैशून्यहै असंबद्धप्रलापनामपूर्वापरविरुद्धभाषणऔरप्रतिज्ञाकीहानि जैसेकिभागवतादिकऔर कौमुद्यादिकग्रन्थोंमें पूर्वापरविरुद्धऔरमिथ्याभाषणहैं इसकानामअसंबद्धप्रलापहै अदत्तानामुपादानं बिनाआज्ञासेपरपदार्थका ग्रहणकरना अर्थातचोरीविधानकेबिना हिंसानामपशुओंकाहननकरना अपनीइन्द्रियोंकीपुष्टकेवास्ते मांसकाखाना औरपशुओंकामारना यहराक्षसविधानहै औरयज्ञकेवास्ते जोपशुओंकी हिंसाहैसोविधिपूर्वकहननहै औरजिनपशुओंसेसंसारकाउपकारहोताहै उनपशुओंकोकभीनमारनाचाहिए क्योंकिइनकोमारनेसे आगेपशुदूधऔर घी की उत्पत्तिही मारीजातीहै औरइन्होंसेसंसारका पालनहोताहै इस्सेपशुओंकी स्त्रियोंकोतो कभीन मारनाचाहिए औरजोइनपशुओंकोमारनाहै इसकानामअविधानसेहिंसाहै परदारोपसेवनपरस्त्रीगमन अर्थातवेश्या वा अन्य किसीकीस्त्रीकेसाथगमनकरनाऔरअन्यपुरुषोंकेसाथस्त्रीलोगोंका गमनकरनादोनोंकोतुल्यपापहै यएकादशअधर्मकेलक्षणकहदिये इनसेअन्यभी वेदादिकशास्त्रोंमें अभिमानादिक सहस्रों अधर्मके लक्षणलिखेहैं सोउनकेबिनापठनऔरअधर्मनजाननेसेकभीज्ञान नहीहोसक्ता धर्मऔरअधर्मसबमनुष्योंकेवास्तेएकहीहैं इनमेंभेद नही जितनेभेदहैं वेसबभ्रमहीसेहैं क्योंकिसबका ईश्वरएकहीहै इस्से उसकी आज्ञाभी सबकेवास्ते एकरसहीं निश्चित होनीचाहिए किन्तु जोसत्यबातवाअसत्यबातहै सोतोसर्वत्रएकहीहोतीहै

उसीको जितने बुद्धिमान लोगजानतेहैं वेकिसी शाखवा बन्ध नहींगिरते किन्तु धर्महीकर्ते हैं औरअधर्मको छोड़देते हैं बुद्धिमानोंकामार्गहै औरजितनेसंप्रदायजाल,पाखण्ड हैं वेमू हीकेहैं चारोंआश्रमवाले पुरुषधर्महीकासेवनकरैं अधर्मका नहीं॥ दशलक्षणकंधर्ममनुतिष्ठन्समाहितः। वेदान्तंविधिवच्छ्र त्वासन्यासेदनृणोद्विजः॥ ९५॥ म० दशलक्षणऔरएकयोगश कीरीतिसेएवंग्यारहलक्षणजिसधर्मकेलक्षणकहदिये उसध अनुष्ठानयथावत्करैं समाहितचित्तहोकेवेदान्तशास्त्रकोविधि सुनके अनृणजोद्विजनामब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य,येतीनविद्वान यथाक्रमसेसन्यासग्रहणकरैं॥ ९५॥ सन्यस्यसर्वकर्माणि कर्म पानपानुदन्। नियतोवेदमभ्यस्यपुत्रैश्वर्येसुखंवसेत्॥ ९६॥ म० स्यजितनेकर्मउनकात्यागकरै औरआभ्यन्तरयोगाभ्यासादि तनेकर्मउनकोयथावतकरै इससे सबकर्मदोषअर्थातअन्तःकर मलिनताराग द्वेषइत्यादिकोंकोछोड़ादै निश्चितहोकेवेदका ससदाकरै औरअपनेपुत्रोंसेअन्नवस्त्रशरीरनिर्वाहमात्रलेले गरकेसमीपएकान्तमेंजाकेवासकरै नित्यघरसेभोजन आच्छा करै हानिवालाभमेंकुछदृष्टिनदेकिसीकाजन्मवामरणहोय तोभीकुछउसमेंमोहवाद्वेषनकरै अपनीमुक्तिकेसाधनमेंसदा ररहै॥ ९६॥ एवंसन्यस्यकर्माणि स्वकार्यपरमोस्पृहः। सन्न्या नापहत्यैनःप्राप्नोतिपरमाङ्गतिम्॥ ९७॥ म० इसप्रकारसेस स्यकर्मोंकोछोड़दे स्वकार्यजोमुक्तिकाहोना अर्थातसबदुःखो टकेपरमेश्वरकोप्राप्तहोना इसकार्यमेंतत्परहोय इससे भिन्न कोइच्छाकभीनकरै इसप्रकारकेसन्यासससे सबपापोंकानाश औरपरमगतिजोमोक्षउसकोप्राप्तहोजाय पूर्वपक्षसन्यासीधा कास्पर्शकरैवानहींउत्तर अवश्यधातुओंकस्पर्शकविनाकिसी वीहनहीँहोसक्ता क्योंकिभूआदिकधातुओंकास्पर्शभाषावास बोलनेमेंनिश्चितहोकरेगा औरवीर्यादिक७सातधातुओंका

र्शनिश्चितहोगा और सुवर्णादिकजितनीधातुहैं उनकाभीस्पर्शहोगापूर्वपक्ष ॥ यतीनांकांचनंदद्यातांबूलंब्रह्मचारिणम्। चौराणामभयंदद्यासनरोनरकंब्रजेत्॥ इसश्लोकसेयहआपकाकथनविरुद्धहुआ सन्यासीकोसुवर्णब्रह्मचारीकोतांबूल चौरोंकोअभयकादेनेवालापुरुषनरकमेंजाताहै ॥ उत्तरपक्ष ब्रह्मोवाच गृहीणांकाञ्चनंदद्यादिस्त्रंवैब्रह्मचारिणाम्। चौराणांमासनन्दद्यात्सनरोनरकम्ब्रजेत्॥ इससे आपकाकहनाविरुद्धहुवा जैसाकिमेरावचनउसश्लोकसेयहकौनशास्त्रकाश्लोकहै अच्छावहकौनशास्त्रकाहै यहतोपद्धतिकाहै अच्छातोयहहमारीपद्धतिकाहै औरब्रह्माकाकहाहै ऐसाश्लोकब्रह्माजीकभीनरचेगें अच्छातोयहमैंनेरचाहै जैसाकिवहकिसीनेरचलियाहैयेदोनोंश्लोकअर्थविचारनेसेमिथ्याहीहैं क्योंकिसन्यासीकोकाञ्चननामसुवर्णकेदेनेसेइननेनरकलिखा इससेपूछनाचाहिएकिचांदीहीरादिकरत्नभूमिराज्यऔरस्त्रीनदेनेसेतोनरककोनहींजायगाऔरब्रह्मचारीके विषयमेंभीजानलेना चौरकेविषयमेंजोइसनेंलिखासोतोठीकहीहैऔरसबमिथ्याकथनहै अच्छातोश्लोककाऐसापाठहै॥ यदिहस्तेधनन्दद्यात्तांबूलंब्रह्मचारिणम्। अन्यत्पूर्ववत् यहभीमिथ्याश्लोकहै क्योंकियतीकेपाद औरआगे वा वस्त्रसेबांधकेधनदेनेमेंतो पापनहोगा इससे ऐसीजोबातकहना सोमिथ्याहीहै औरजोधनमेंदोषअथवागुणहै सोसर्वत्रतुल्यहीहै जैसाउपद्रवधनकेरखनेमेंगृहस्थोंकोहोताहै इससे सन्यासीकोधनकेरखनेमेंकुछअधिकउपद्रवहोगा क्योंकिगृहस्थोंकेस्त्रीपुत्रऔरभृत्यादिकरक्षाकरनेवालेहैं उसकोकोईनहीं शरीरकेनिर्वाहमात्रधनरखले तबतोविरक्तकोभीकुछदोषनहीं औरजोअधिकरक्खेगा सोतोमोक्षपदकोप्राप्तहोकेसंसारमेंगिरपड़ेगा जैसेकिवैरागी,गुसांईबहुतसेमहन्तऔरमठधारीहोगयेहैंजैसेकिगृहस्थोंसेभीनीचहोजातेहैंऔरसांईधनकोपाके अमीरहोजाताहै इससे क्याआयाकिपहिलेतोअधिकारकेबिना सन्यासग्रहणहीनहींकरनाचाहिए जबतकविद्या

ज्ञान, वैराग्य, और जितेन्द्रियता, पूर्ण नहीं जाय तबतक गृहाश्रम में रहना उचित है इस्से धातुस्पर्श न देने और लेने में दोष करै यह बात मिथ्या होहै उनको कोई देऔर विरक्त लेवै अथवा न लेवै पनी२ इच्छा के आधीन व्यवहार है एक बात देखना चाहिए कि जो दान सो सब पदार्थों का गुण और दोष जानता है उसको देने वाला जाय सो तो ठीक बात है परन्तु नरक को वह जाता है यह बात अत नष्ट है वह विद्वान जो सन्यासी सत्कार और उत्तम पदार्थों की प्र में हर्ष कभी न करेगा अस्त्कार और अनिष्ट पदार्थों की प्राप्ति में नकरेगा सो देने लेने वाले दोनों धर्मात्मा और विद्यावान होंगे तो उभय च सुख ही सत्का है और जो दोनों कुकर्मी हैं तो पाप ही है किचक्रांकितादिक वैरागी और गोकुलिये, गुसांई और नान्हक विरादिकों के सम्प्रदायी लोग हैं और मूर्ख ब्रह्मचारी गृहस्थ वान और सन्यासी इनको देने में पाप ही होगा पुण्य कुछ नहीं क्योंकि तो विद्वान और धर्मात्माओं को देने में है अन्यथा नहीं चार वर्ण चार आश्रम इनकी शिक्षा संक्षेप से लिख दिया और विस्तार देखना चाहै सो वेदादिक सत्यशास्त्रों में देख लेवै इस्से आगे राजा प्रजा के विषय में लिखा जायगा॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषा विरचिते पंचमस्समुल्लासः संपूर्णः॥ ५॥

अथ राजाप्रजाधर्मान्व्याख्यास्यामः॥ राजधर्मान्प्रवक्ष्यामि याद्दत्तो भवेन्नृपः। सम्भवश्च यथा तस्य सिद्धिश्च परमो यथा॥ १॥ राजधर्मों को मनु भगवान कहते हैं कि मैं कहूंगा जिस प्रकार से राजा को वर्तमान करना चाहिए जिन गुणों से राजा होता है और

कर्मोंकेकरनेसेपरमसिद्धिहोतीहै किराज्यकरै औरसङ्गतिभीउस-कीहोय इसकोयथावतप्रतिपादनआगे२कियाजायगा ॥ १ ॥ ब्राह्मं प्राप्तेनसंस्कारंक्षत्रियेणयथाविधि । सर्वस्यास्ययथान्यायंकर्त्तव्यं परिरक्षणम् ॥ २ ॥ म० जैसाब्राह्मणोंका संस्कारहोताहै वैसाही सबसंस्कारयथाविधिजिसकाहोताहै अर्थातसबविद्याओंमेंपूर्णबल बुद्धि,पराक्रम,तेज,जितेन्द्रियताऔरशूरवीरता जिसमनुष्यमेंइस प्रकार केगुणहोवैं औरकोईमनुष्य उसदेशमें विद्यादिकगुणोंमें उससे अधिकनहोय ऐसेपुरुषकोदेशकाराजाकरनाचाहिए तबवह देशआनन्दितऔरअत्यन्तसुखीहोताहै अन्यथानहीं उसराजाका मुख्ययहीधर्महै किअपनीप्रजाकीयथावत्रक्षाकरै ॥ २ ॥ अराज-केहिलोकेस्मिन्सर्वतोविद्रुतेभयात् । रक्षार्थमस्यसर्वस्य राजानम-सृजत्प्रभुः ॥ ३ ॥ म० जिसदेशमेंधर्मात्माराजाविद्वाननहींहोता उ-सदेशमेंभयादिकदोष संसारमेंबहुतहोजातेहैं इसवास्ते राजाको परमेश्वरनेउत्पन्नकियाहै कियहसबजगत्कोरक्षाकरै औरजगतमें अधर्मनहोनेपावै ॥३॥ इन्द्रानिलयमार्काणामग्नेश्चवरुणस्यच चंद्र-वित्तेशयोश्चैवमात्रा निर्हृत्यशाश्वतीः ॥ ४ ॥ म० इन्द्रअनिलनाम वायुअर्कनामसूर्य,अग्नि,वरुण,चन्द्र,वित्तेशअर्थातकुवेर इनआठ राजाओंकीनीतिऔरगुणोंसे मनुष्यराजाहोनेकाअधिकारीहोता है तैसेहीइन्द्रकागुण शूरवीरतादाताकाहोना इन्द्रजैसाप्रजाकी रक्षा सबप्रकारसेकरताहै तैसेहीराजा,वायुकागुण,बल औरदूत द्वारासबप्रजाकोवर्तमानकाजाननाजैसाकिवायुसबकेहृदयमेंव्याप्त होकेधारणकर्ताहै औरसबमर्मोंकोजानताहै यमकागुणपक्षपातको छोड़ना सदान्यायहीकरनाअन्यायकभीनहीं जैसाकिभरतराजा नेअपनेपुत्रजोअन्यायकारी ६ नवउनकाखड्गसेशिरच्छेदनकर दिया औरसगरनेअपनाएकजोपुत्रअसमंजा थोड़ेअपराधसेवनमें निकालदिया यहबातमहाभारतमेंविस्तारसेलिखीहै किअपनेपुत्र काजबपक्षपातनकिया तोऔरकाकैसेकरेंगे अर्कनामसूर्य जैसा

कि सबपदार्थों को तुल्य प्रकाश करता है और अन्धकार का नाश
देता है ऐसे ही राजा सब राज्य में प्रजा के ऊपर तुल्य प्रकाश करै
अधर्म करनेवाले जितने दुष्ट अन्धकार रूप उन का नाश करदे
जैसे अग्नि में प्राप्त भया पदार्थ दग्ध हो जाता है वैसे ही धर्म नीति से
करनेवाले पुरुषों को दग्ध अर्थात यथावत दण्ड देवै जैसा कि अग्नि
वा गोले पदार्थों का भस्म करदेता है और मित्र वा शत्रु जब२ अधर्म
तब२ कभी दण्ड के बिना न छोड़ै वरुण का गुण ऐसे पाश अर्थात बन्ध
दुष्टों को बांधे कि फिर छूटने न पावें और कभी छूटें तो ऐसा दुःखपा
उस दुःख का विस्मरण कभी न होय जिससे अधर्म में उनका चि
न जाय चन्द्र का गुण जैसे कि चन्द्रमा सब प्राणियों को तथा स्थावर
धियों को शीतल प्रकाश और पुष्टि से आनन्दयुक्त करदेता है
राजा अपनी प्रजा के ऊपर कृपा दृष्टि रक्खे और प्रजा की पुष्टि कि
प्रकार से प्रजा दुःखित न हो वै सदा प्रसन्न हो रहै कुबेर का गुण जै
कुबेर बड़ा धनाढ्य है धन की वृद्धि और धन की रक्षा यथावत कर
वैसे राजा भी धन की रक्षा सदा करै जिससे कि राजा के ऊपर क
रिद्र कभी न हो वै अपने वा प्रजा के ऊपर जब आपत्काल आ
उस धन से अपनी वा प्रजा की रक्षा कर लेवें इन आठ गुणों से रा
ता है अन्यथा नहीं ॥ ४ ॥ सोऽग्निर्भवतिवायुश्चसोऽर्कः सोमः
राट् । सकुबेरः सवरुणः समहेन्द्रः प्रभावतः ॥ ५ ॥ म० प्रभाव
गुणों होसे अग्नि, वायु, आदित्य, सोम, धर्मराज, कुबेर, वरुण
महेन्द्र नाम इन्द्र राजा ही इन गुणों से जब युक्त होता है तब वही र
आठ नामवाला होता है ॥ ५ ॥ कार्यं सोऽवेक्ष्यशक्तिञ्चदेशका
तत्त्वतः । कुरुते धर्म सिद्ध्यर्थं विश्वरूपं पुनः पुनः ॥ ६ ॥ म० सो
कार्य और शक्ति नाम सामर्थ्य देश और कालतत्त्व अर्थात यथाव
को बिचार के करै कि इस के वास्ते कि धर्म सिद्धि के वास्ते वारंबार
रूप धारण करता है ॥ ६ ॥ यस्य प्रसादे पद्मा श्रीर्वि यस्य परा
क्रत्य, स्ववसित क्रोधे स्वर्वतेजोमयोहिसः ॥ ७ ॥ म० जिसको

दरिद्रजोहैसोधनाढ्यहोजाय और अक्षपासेदुष्टदरिद्रहोजाय और पराक्रममेंनिश्चयकरकेविजयहोय इस्से राजासर्वतेजोमयहोता है और जिसकेक्रोधमेंदुष्टोंकामृत्युहीबासकरताहोयअर्थातसवप्रकार केगुणवलपराक्रमजिसमेंहोवेंवहीराजाहोसक्ता है अन्यथानहीं ७। तस्माद्धर्मंयमिष्टेषुसव्यवस्येन्नराधिपः। अनिष्टंचाप्यनिष्टेषुतधर्मं-नविचालयेत् ॥ ८ ॥ म० जोराजाधर्मकोइष्टअर्थातधर्मात्मा और विद्वानोंकेऊपरनिश्चितकरै तथाअनिष्ट अर्थातमूर्ख औरदुष्टोंके वीचमेंदण्डकीव्यवस्थाकरैउसधर्मकोकोईमनुष्यनछोड़ै किन्तुसव लोगकरैं जिस्सेधर्मात्माऔरविद्वानोंकीवढ़तीहोय औरमूर्खऔर दुष्टोंकी घटी इसहेतु अवश्य इसव्यवस्थाकोकरै ॥ ८ ॥ तस्यार्थे-सर्वभूतानांगोप्तारंधर्ममात्मजम्। ब्रह्मतेजोमयंदंडमसृजत्पूर्वमी-श्वरः ॥ ९॥ म० उसराजाकेलियेदण्डकोपरमेश्वरनेपूर्वहीसेउत्प-न्नकियावहदण्डकैसाहैकिब्रह्मतेजोमयब्रह्मपरमेश्वरऔरविद्याका नामहैउनकाजोतेजअर्थातसत्यव्य२वस्थावहीदण्डकहलाताहैफिर वहदण्डकैसाहैकिपरमेश्वरहीसे उत्पन्नभया क्योंकिपरमेश्वरन्या-यकारीहै उसकोआज्ञा न्यायहीकरनेकीहै उसीकानाम दण्डहै औरजोन्यायहैकिपक्षपातकाछोड़नासोईधर्महै जोधर्महैसोईसव भूतोंकीरक्षाकरनेवालाहैअन्यकोईनहीं औरवहदण्डराजाकेआ-धीनरक्खागयाहै क्योंकिवहीराजासमर्थहैइसदण्डकेधारणकरने मेंअन्यकोईनहीं जोकोईराजाकहैकिधर्मकीवातहमनहींसुनतेतो उसकाकहनामिथ्याहैक्योंकिधर्मनकरेगातोराजाऔरधर्मकास्था-पनतथापालनभीनकरेगा वहराजाहीनहीं राजातोवहहोताहै किधर्मकायथावत्स्थापन और अधर्म काखण्डन करै यहीराजा का मुख्य पुरुषार्थ है ९ ॥ तस्यसर्वाणिभूतानिस्थावराणिचराणि-च। भयाद्भोगायकल्पन्तेस्वधर्मान्नचलन्तिच ॥१०॥ म० उसदण्डके भयसेही जितनेजड़ औरचेतनभूतहैं दंडकेनियमसे वेसवभोगमें आतेहैं अपना२जोपुरुषार्थ अर्थातअधिकार उसमेंयथावतचलते

हैं अपनेस्वधर्मंअर्थातजो२ जिसकाव्यवहारकरनेकाअधिकार
भिन्नमार्गमेंकभीनहींचलते ॥ १० ॥ तंदेशकालौशक्तिञ्चविद्यांच
वेच्यतत्वतः। यथार्हतःसंप्रणयेन्नरेष्वन्यायवर्त्तिषु ॥ ११ म०
दण्डकोअन्यायकरनेवालेजोमनुष्यहैं उनमेंयथावतस्थापनकरें
र्थात्यथावतदण्डदेवै परन्तु देशकालसामर्थ्य औरविद्याइनसे
थावत्तत्वका विचारकरकेदण्डदे क्योंकिअदण्डयपुरुष अर्थात
र्मात्माको कभीनदण्डदियाजाय औरअधर्मात्मा पुरुषदण्डके
नात्यागकभीनकियाजाय ॥ ११ ॥ सराजापुरुषोदण्डःसनेताशा
ताचसः। चतुर्णामाश्रमाणांचधर्मस्यप्रतिभूःस्मृतः ॥ १२ ॥ रा
पुरुषनेताअर्थात व्यवस्थामें सबजगत्को चलानेवाला शासित
र्थातयथावतशिक्षकदण्डहीहै किन्त्वराजाऔरप्रजास्थ मनुष्य
तुल्यहीहैं जैसाराजामनुष्यहै वैसाहीऔरसबमनुष्यहैं इसवा
मनुभगवान्नेंलिखा किदण्डहीराजा,दण्डहीपुरुष,दण्डही
औरदण्डहीशासिता,जिसमेंयथावतविद्यादिकगुण औरद
व्यवस्थाहोयसोईराजाहै, अन्यकोईनहीं औरब्रह्मचर्याश्रमा
चारआश्रमऔरचारोवर्णोंकायथावतस्थापनतथाउनकारक्षा
रनेवालादण्डहीहै किन्तु प्रतिभूःअर्थातजामिनहैइसकेबिना
यावर्णाश्रमव्यवस्थानष्टहोजातीहै कभीनहींचलती उसव्यवस्
बिनाजितनेउत्तमव्यवहारहैंवेतोनष्टहीहोजातेहैंकिन्तुभ्रष्टव्य
रभीहोजातेहैं जैसेकिआजकलआर्यावर्त्तदेशकीव्यवस्थाहै ॥
दण्डःशास्तिप्रजाःसर्वादण्डएवाभिरक्षति। दण्डःसुप्तेषुजाग
दण्डंधर्मंविदुर्बुधाः ॥ १३ ॥ म० सबप्रजाकोदण्डहीशिक्षाकर
औरदण्डहीसबजगत्कारक्षकहै जबप्राणीसोजातेहैंतबप्राय
होजातेहैं परन्तुदण्डहीनहींसोताइससे सबआनन्दसेसोकेउ
उठकेअपनार कामकाजऔरआनंदकरतेहैं औरजोदण्डसो
तोजगत्कानाशहीहोजाय इससे जोदण्डहैसोईधर्महैऐसाबुद्धि
लोगोंकादृढ़निश्चयहै ॥ १३ ॥ समीक्ष्यसधृतस्सम्यक्सर्वारञ्ज

जाः। असमीक्ष्यप्रणीतस्तु विनाशयतिसर्वतः॥ १४॥ भ० उसदण्ड
कोसम्यक् विचारकरकेजोधारणकरताहै वहराजासबप्रजाकोप्रस-
न्नकरदेताहैऔरजोविचारकेविनादण्डदेताहै वाआलस्य,मूर्खता
सेदण्डकोछोड़देताहै वहीराजासबजगत्कानाशकरनेवालाहोता
है राजृदीप्तौइसधातुसेराजाशब्दसिद्धहोताहै दीप्तिनामप्रकाशका
है जोसबधर्मोंकाप्रकाश औरअधर्म काचकानाश करै उसका
नामराजाहै औरजोऐसानहींहैउसकानामराजातोनहीरखना
चाहिए किन्तुउसकानामडांकूऔरअन्धकाररखनाचाहिये।१४।
दुष्ये युःसर्ववर्णाश्चभिद्ये रन्सर्वसेतवः। सर्वलोकप्रकोपश्चभवेद्दण्ड-
स्यविभ्रमात्। १५॥ भ० दण्डकेनाशसेसबवर्णाश्रमनष्टहोजातेहैं
तथाधर्मकीजितनीमर्यादाहैवेभीसबनष्टहोजातीहैं औरसबलोगोंमें
प्रकोपअर्थातअधर्मपूर्णहोजाताहै इससे दण्डकोकभीनछोड़नाचा-
हिए॥ १५॥ यत्रश्यामोलोहिताक्षोदण्डश्चरतिपापहा। प्रजास्त-
त्रनमुह्यन्तिनेताचेत्साधुपश्यति॥ १६॥ भ० जिसदेशमेंश्यामवर्ण
रक्तजिसकेनेत्र ऐसाजोपापनाश करनेवालादण्डविचरताहै उस
देशमेंप्रजामोहवादुःखकोनहीप्राप्तहोती परन्तु दण्डकाधारणक-
रनेवालाराजाविद्वानऔरधर्मात्माहोयतोअन्यथानहींकैसाराजा
होयकि॥ १६॥ तस्याहुःसंप्रणेतारंराजानंसत्यवादिनम्। समी-
क्ष्यकारिणंप्राज्ञंधर्मकामार्थकोविदम्॥ १७॥ भ० इसदण्डका
सम्यक्चलानेवालासत्यवादीकिकभीमिथ्यानबोलै औरजोकुछक-
रैसोविचारकेसेसत्य२करै असत्यकभीनहींप्राज्ञअर्थातपूर्णविद्या
औरपूर्णबुद्धिजिसकोहोय धर्मअर्थऔरकाम इनकोयथावतजान-
ताहोय उसकोदण्डचलानेका अधिकारीकहतेहैं औरकिसीको
नहीं॥ १७॥ तंराजाप्रणयनसम्यक्त्रिवर्गेणाभिवर्द्धते। कामात्मा
विषमःक्षुद्रोदण्डेनैवनिहन्यते॥ १८॥ भ० उसदण्डअर्थातधर्म
कोराजायथावतनिश्चयसेकरेगा तोधर्मअर्थऔरकामयेतीनराजा
केसिद्धहोजांयगेऔरजोकामात्माअर्थातवेश्या,परस्त्री,लौंडे,इत्या-

दिकोंकेसाथ फसारहताहै तथानम्रता,शील,नीति,विद्या,
बुद्धि,बल,पराक्रमतथासत्पुरुषोंकासंग इनकोछोड़के विषम
कुटिलअर्थातअभिमानईर्ष्या,द्वेष,मात्सर्यऔर क्रोधइनसेयुक्त
कर्मविपरीतकरनेसेवहराजाविषमपुरुषहोजाताहै नीचबुद्धि
संगनीचकर्मऔरनीचस्वभाव इत्यादिकदोषोंसेपुरुषजबयुक्त
तबवहपुरुषनामराजाक्षुद्रहोजायगा जबधर्मनीतिसेदण्डय
नकरसकेगा तबउसीकेऊपरदण्डआकेगिरेगा सोदण्डसे
जायगा जैसेकिआजकालआर्यावर्त्तदेशकेराजाओंकीदशानि
खनेमेंआतीहै ॥ १८ ॥ दण्डोहिसुमहत्तेजोदुर्द्धरश्चाकृतात्म
धर्माद्विचलितंहन्तिनृपमेवसबान्धवम् ॥ १९ ॥ ततोदुर्गंचरा
लोकंचसचराचरम्। अन्तरीक्षगतांश्चैव मुनीन्देवांश्चपीड
२० ॥ भ० दंडजोहैसो बड़ाभारीतेजहै उसकाधारणकरना
लोगोंकोकठिनहै जबवेदण्डअर्थात धर्मसेविचलजातेहैं त
बसहितराजाकावहदण्डनाशकरदेताहै ॥ १९ ॥ तदनन्तरदु
किला राष्ट्रनाम राज्यचर अचर लोग अन्तरिक्ष में रहने
अर्थात सूर्य चन्द्रादिक लोगों में रहने वाले अथवा मुनि
विचार करने वाले देवनाम पूर्ण विद्या वाले उनका नाश
अत्यन्त पीड़ा करता है इसेक्याआयाकि पक्षपात कोछोड़
थावतदण्डकरनाचाहिए तभीसुखकीउन्नतिहोगी औरजो
कोयथावतन्यायसेनकरेंगे तोउनकाही नाशहोजायगा ॥
सोऽसहायेनमूढेनलुब्धेनाकृतबुद्धिना। नशक्योन्यायतोनेतुं
नविषयेषुच ॥ २१ ॥ भ० सोश्रेष्ठपुरुषोंकेसहायसेरहितमूढ़
मूर्ख,लुब्धनामबड़ालोभी,अकृतबुद्धिजिसकोबुद्धिनहोहै सो
मूर्खहै वहन्यायसेदंडकभीनदेसकेगा क्योंकिजोजितेन्द्रियहो
वहीराज्यकरनेकाअधिकारीहोताहै औरजोविषयासक्तत
सोकभीदण्डदेनेवाराज्यकरनेकोसमर्थनहीहोता ॥ २१ ॥
कैसाहोना चाहिएकि ॥ शुचिनासत्यसन्धेन यथाशास्त्रानु

णा । प्रणेतुं शक्यते दण्डः सुसहायेन धीमता ॥ २२ ॥ भ० शुचि जो
बाहर भीतर अत्यन्त पवित्र होय सत्यधर्म से सदा जिसका सन्धान रहै
तथा जैसो शास्त्र में परमेश्वर की आज्ञा है वैसाही करै सुसहाय अर्थात
सत्पुरुषों का सङ्ग जो करता है और बड़ा बुद्धिमान वही राजा दण्डव्य-
वस्था करने को समर्थ होता है अन्यथा नहीं ॥ २२ ॥ वृद्धांश्च नित्यं सेवेत्-
विप्रान्वेदविदः शुचीन् । वृद्धसेवी हि सततं रक्षोभिरपि पूज्यते २३ ॥
भ० जितने ज्ञान वृद्ध विद्या वृद्ध तपो वृद्ध, पवित्र विचक्षण वेदवित्त धर्मा-
त्मा धैर्यवान् होवैं उनको ही राजा नित्य सेवा और सङ्ग करै जो इन पु-
रुषों का राजा संग करैगा तो उसका राक्षस अर्थात दुष्ट पुरुष भी सत्का-
र और आज्ञा करैंगे ॥ २३ ॥ एभ्योऽधिगच्छेद्विनियं विनीतात्मापि-
नित्यशः । विनीतात्मा हि नृपतिर्न विनश्यति कर्हिचित् ॥ २४ ॥ जो
राजा विनीतात्मा होवै अर्थात सब श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न भी होवै तो भी
उत्तम पुरुषों से विनय को ग्रहण करै क्योंकि जो अभिमानादिक दोषों
से रहित और विद्या नम्रतादिक गुणों से युक्त होता है उस राजा का क-
भी नाश नहीं होता ॥ २४ ॥ त्रैविद्येभ्यस्त्रयीं विद्यां दण्डनीतिं च शा-
श्वतीम् । आन्विक्षिकीं चात्मविद्यां वार्त्तारम्भांश्च लोकतः ॥ २५ ॥
भ० तीनों वेदों को जो पाठ स्वर और अर्थ सहित पढ़ा होवै उससे तीन वेदों
को राजा यथावत पढ़ै दण्डनीति जो कि सनातन राजधर्म शिक्षा अ-
र्थात् देने की जो व्यवस्था है इसको भी पढ़ै तथा आन्वीक्षिकी जो न्याय
शास्त्र, आत्मविद्या और श्रेष्ठ मनुष्यों से कहने पूंछने और निश्चय करने
के वास्ते वार्त्ताओं का आरंभ इनको राजा यथावत् पढ़ै और पढ़ के य-
थावत् करै ॥ २५ ॥ इन्द्रियाणां जये योगं समातिष्ठेद्दिवानिशम् ।
जितेन्द्रियो हि शक्नोति वशे स्थापयितुं प्रजाः ॥ २६ ॥ भ० राजा रात
दिन इन्द्रियों के जीतने में नित्य ही प्रयत्न करै क्योंकि जो जितेन्द्रिय रा-
जा होता है वही प्रजा को वश में स्थापन करने में समर्थ होता है और
जो अजितेन्द्रिय अर्थात कामी सो तो आपही नष्ट भ्रष्ट हो जाता है फिर
प्रजा को वश कैसे करेगा इससे क्या आया कि जो शरीर, मन और इ-

न्द्रिय इनकोवशमेंरखताहै सोईराजाप्रजाको वशमेंकरता है
न्यथ: कभी प्रजावसमेंराजाकेनहीं होतो जब तक प्रजावश
होगी तबतक निश्चलराज्यकभीनहोगा इस्से जोनितेन्द्रियहो
सकोहीराजाकरनाचाहिए अन्यकोनहीं ॥ २६ ॥ दशकाम
त्यानितथाष्टौक्रोधजानिच । व्यसनानिदुरन्तानि प्रयत्ने न
येत् ॥ २७ ॥ म० जोराजाकामीहोताहैउसमेंदशदुष्टव्यसन
होंगे औरजोराजाक्रोधीहोगा उसमेंआठदुष्टव्यसनअवश्य
उनकोअत्यन्तप्रयत्नसेछोड़दे अन्यथाराजाही राज्यसहित न
जाताहै ॥ २७ ॥ फिरक्याहोगाकि । कामजेषुप्रसक्तोहिव्यसने
हीपतिः । वियुज्यतेऽर्थधर्माभ्यां क्रोधजेष्वात्मनैवतु ॥ २८
जोराजः कामसेउत्पन्नभये जोदशदुष्टव्यसनउनमें जबफसजा
तबउसकाअर्थनामद्रव्य औरराज्यादिकसबपदार्थ तथाधर्म
रहितहोजायगा अर्थातदरिद्रऔर पापीहोजायगा औरक्रो
उत्पन्नहोतेहैं जोआठदुष्टव्यसनउनमेंफसजानेसेवहआपरा
मरजाताहै इस्से इनअठारहदुष्टव्यसनोंकोराजाछोड़दे जो
कल्याणकीइच्छाहोवे कौनसे१८अठारहदुष्टव्यसनहैं ॥ २८
गयाचोदिवास्वप्नःपरिवादःस्त्रियोमदः । तौर्यत्रिकंवृथाट्या
णोदशकोगणः ॥ २९ ॥ म० मृगयानामशिकारकाखेलना
नामफांसाओंसेक्रीड़ा वा द्यूतकाकरना दिवास्वप्नदिवसमें
परिवादनामवृथावार्त्तावाकिसीकीनिन्दाकरना स्त्रीनामवे
रपरस्त्रीगमन तोअत्यन्तभ्रष्टहै किन्तुअपनीजोविवाहितस्त्री
भीकामसेआसक्तहोके अत्यन्तफसजाना वास्वस्त्रीमेंअत्यन्त
नाशकरना मदनामभांग,गांजा,अफीमऔरमद्यइनकासे
रना तौर्यत्रिकंनृत्यकादेखनाओरकरनावादित्रोंकाबजाना
नना गानकासुनना वाकरानावृथाट्यानाम वृथाजहांतहां
करना अथवावृथावार्त्तावाहास्यकरना यहकामसेदशव्यस
हगणउत्पन्नहोतेहैं इसकोप्रयत्नसेराजाछोड़दे इसकोजा

ा तोधर्मऔरअर्थ अर्थातधनसहित राज्यनष्टहोजायगा इसमें
छसन्देहनहीं क्रोधसेआठउत्पन्नजोदुष्टव्यसनवेयेहैं ॥ २९ ॥ पै-
न्यंसाहसंद्रोहईर्ष्यासूयार्थदूषणम् । वाग्दण्डजंचपारुष्यंक्रोध-
ोपिगणोऽष्टकः ॥ ३० ॥ भ० पैशुन्यनाम चुगली करना साहस
ामविचारकेबिनाअन्यायसेपरपदार्थकाहरणकरलेना अभिमा-
वलयुक्तहोके द्रोहनाम सज्जनों से भीप्रीति का न करना ईर्ष्या
ाम पर सुख न सहना असूयानाम गुणोंमें दोष और दोषों में
ग़ोंका कहना अर्थदूषणनाम अपने पदार्थों का वृथा नाश क-
ना अथवाअभिमानसेदूसरेकेकहेअर्थमेंअनर्थकालगाना वाग्द-
ड्ज पारुष्यनामबिनाबिचारेमुखसेबोलदेना अथवाकठोरवचन
ाकहनाइसकानामवाक्है पारुष्यबिनाविचारेदण्डकादेना वा
पराधकेविना किसीकोदण्डदेना अपराधकेऊपरभी पक्षपातसे
पचादिकोंकोदण्डकानदेना यहक्रोधसेआठदुष्टव्यसनयुक्तगणउ-
न्नहोताहै इसकोअत्यन्तप्रयत्नसेराजाछोड़दे अन्यथाअपनेशरी-
सहितशीघ्रहीराज्यकानाशहोजाताहै इनदोनोंगणोंकाजोमूल
सोयहहै ॥३०॥ द्वयोरप्येतयोर्मूलं सर्वेकवयोविदुः । तंयत्नेनजये-
ोभंतज्जावेतावुभौगणौ ॥ ३१॥ भ० जिस्सेकामजऔरक्रोधजदोनों
णउत्पन्नहोतेहैं अर्थातसबपापऔरसबअनर्थोंकामूललोभहीहै
ासब विद्वान लोगजानतेहैं उसलोभको प्रयत्नसेराजा छोड़दे
योंकिलोभहीसेदोनोंगणपूर्वोक्त कामजऔरक्रोधजउत्पन्नहोतेहैं
स्से राजाऔर सज्जनलोग जोसबपापोंकामूल उसीकोछेदनकर
वें इसकेछेदनसेसबअनर्थऔरपापनष्टहोजांयगे जैसेकिमूलछेद-
सेवृक्षनष्टहोजातेहैं ॥ ३१॥ पानमक्षाःस्त्रियश्चैवमृगयाचयथाक्र-
म् । एतत्कष्टतमंविद्याच्चतुष्कंकामजेगणे॥ ३२ ॥ भ० पाननाम
द्यादिकनशाकाकरना अक्षतथास्त्रीमृगया पूर्वोक्तसबजानलेना
चारकामजगणमेंअत्यन्तदुष्टहैं ऐसाराजाजानै॥ ३२ ॥ दण्डस्य-
ातनंचैववाक्पारुष्यार्थदूषणे । क्रोधजेपिगणेविद्यात्कष्टमेतच्चि-

कंसदा॥३३॥ भा० दण्डकानिपातन वाकपारुष्यऔर अर्थदू
तोनक्रोधकेगणमेंअत्यन्तदुष्टहैं १८ अठारहमेंसेयेसातअत्य
हैं॥३३॥ सप्तकस्यास्यवर्गस्यसर्वत्रैवानुषंगिणः। पूर्वंपूर्वंगु
विद्याद्व्यसनमात्मवान्॥३४॥ भा० चारकामकेगणमेंऔरती
धकेगणमेंसर्वत्रयेअनुसंगीहै किएकहोवैतो दूसराभीहोजा
सातोंमेंपूर्व२अत्यन्तदुष्टहैं ऐसाविचारवान्कोजाननाचाहि
सेकिअर्थदूषणसेवाक्पारुष्यदुष्टहैवाक्पारुष्यसेदण्डकानिपात
केनिपातनसेशिकारशिकारसेस्त्रियोंकासेवन इससेअक्षक्रीड़ा
सबसेमद्यादिकपानदुष्टहै ऐसानिश्चितसबसज्जनोंको जानना
हिए॥३४॥ व्यसनस्यचमृत्योश्चव्यसनंकष्टमुच्यते। व्यसन्यधो
व्रजतिस्वर्यात्यव्यसनीमृतः॥३५॥ भा० व्यसनऔरमृत्यु इनदो
जोव्यसनहै सोमृत्युसेभीबुराहै क्योंकिजोव्यसनीपुरुषहै सो
मेंफसकेनीच२गतिकोचलाजाताहै औरजाव्यसनरहितपु
सोमरजायतोभीस्वर्गअर्थातसुखकोप्राप्तहोताहै इससेजिसका
दुष्टभाग्यहोताहै वहीदुष्टव्यसनमेंफसजाताहै औरजिसका
अच्छाहोताहै वहदुष्टव्यसनोंसेदूररहताहै॥३५॥ मौलान्
विदःशूरान्लब्धलक्ष्यान्कुलोद्गतान्। सचिवान्सप्तचाष्टौवा
वीतपरीक्षितान्॥३६॥ भा० फिरराजासातवाआठपुरुषों
पनेपासरखलेवै कैसेहोवैंकिबड़े उदारसबशास्त्रकेजाननेवाले
वीर,जिनोंनेप्रमाणोंसे पदार्थविद्यापढ़लियाहै श्रीमानोंके
कुलमेंजिनकाजन्महोय उनकोयथावत्परीक्षाकरके राजा
क्योंकिराज्यकेकार्य एकसेकभीनहींहोसक्ते इससे जितने पु
अपनाकामहोसके उतनेपुरुषोंकीपरीक्षाकर२केरखले उ
यावतकामलेवै परन्तु बिना परीक्षा मूर्खकोकभी नरक्खे
बिनाउनसभासदोंकीसम्मतिसेकिसीछोटेकामकोभीराजा
होकेनकरै औरजोस्वाधीनहोके कुकर्मीराजाकरै तोवेसभ
पुरुष राजाकोदण्डदें फिरदण्डसेभी नमानैतो उसको निक

सराराजाउसीवक्तबैठावैं॥३६॥ सेनापत्यंचराज्यंचदण्डनेतृत्व-
वच। सर्वलोकाधिपत्यंच वेदशास्त्रविदर्हति॥३७॥ भ० सेना-
तिराज्यकरनेके योग्यराजादण्डदेनेवाला सर्वलोकाधिपतिअ-
त्राजाकेनीचेमुख्यसर्वोपरिजिसकानामदीवानकहतेहैंयेचार
धिकारवेदऔरसबसत्यशास्त्रइनमेंपूर्णविद्वानहो।वैं उनहीकोदेवैं
न्यकोनहीं क्योंकिवेचारअधिकारमुख्यहैं बिनाविद्वानोंकेवेचार
धिकारयथावतनहींहोते औरजोमूर्खकाम,क्रोधादिक,दोषयुक्त
नकोदेनेसेवेचारअधिकारनष्टहोजांयगे इसवास्तेअत्यन्तपरीक्षा
रकेचारपुरुषविद्वानोंकोचारअधिकारदेनाचाहिए जिस्सेकिवि-
यराज्यवृद्धिधर्मन्याय औरसबव्यवहारोंकी यथावतव्यवस्थाहोय
न्यथासबराज्यऔरऐश्वर्यनष्टहोजातेहैं॥३७॥ तेषामर्थेनियुञ्जी-
शूरान्दक्षान्कुलोद्गतान्। शुचिनाकरकर्मान्तेभीरूनन्तर्निवेशने॥
८॥ भ० उनअमात्योंकेसमीपराज्यकार्यकरनेकेवास्ते राजाशूर
तुर,कुलीनपवित्रजोहोवैं उनकोराजारखदेवै अमात्यउनसेसब
ाज्यकार्योंकोसिद्धकरैं उनमेंसेजितनेशूरहोवैं उनकोजहां२शंका
ायुद्धवहां२रखदेऔरजितनेभीरुहोंयउनकोभीतरगृहकेअधिका-
मेंरक्खै जहांकिस्त्रीलोगऔरकोशवहांडरनेवालोंकोरक्खै और
हांशूरबीरलोगोंकाकामहोयवहांशूरबीरोंकोरक्खै॥३८॥ दूतं-
वप्रकुर्वीतसर्वशास्त्रविशारदम्। इङ्गिताकारचेष्टज्ञंशुचिन्दक्षंकु-
ोद्गतम्३९॥भ०फिरराजादूतकोरक्खैवहदूतकैसाहोयकिसबशा
विद्यासेपूर्णहोयमनुष्यकोहृदयकीबातगमनशरीरकीआकृतिऔ
चेष्टाइनसेजानलेना जोकिउसकेहृदयमेंहोय पवित्रचतुर और
ड़ेकुलकाजोपुरुषहोयऐसेपुरुषकोराजादूतकाअधिकारदेवै३९॥
नुरक्तःशुचिर्दक्षः स्मृतिमान्देशकालवित्। वपुष्मानभीर्वाग्मी
तोराज्ञःप्रशस्यते॥४०॥ भ० फिरवैसेकोदूतकरैकिराजामेंबड़ी
ीतिजिसकीहोय दक्षनामबड़ाचतुर एकवक्तकहीबातको कभीन
ूलै औरजैसादेशजैसाकाल वैसीबातकोजानै वपुष्मान्नामरूप

बलऔरशूरवीरता जिसमेंहोय वीतभीनामकिसीसेजिसको
होय वाग्मीवड़ाबक्ताधृष्टऔरप्रगल्भहोवै ऐसाजोदूतराजाका
सोश्रेष्ठहोताहै॥४०॥ अमात्येदण्डआयत्तोदण्डेवैनयिकीक्रि
नृपतौकोशराष्ट्रेचदूतेसन्धिविपर्ययौ॥ ४१॥ भ० दण्डदेनेक
तनाव्यवहारवहसर्वशास्त्रवितधर्मात्मापुरुषोंकेआधीनरक्खै
दण्डअन्यायसेनहोनेपावै किन्तु विनयपूर्वकहीहोवै कोशऔ
ज्यहदोनोंराजाकेअधिकारमेंरहैं सन्धिनाममिलापविपर्य
विरोधयेदोनोंदूतकेआधीनराजारक्खै॥४१॥ तत्स्यादायुध
न्नंधनधान्येनवाहनैः। ब्राह्मणैःशिल्पिभिर्यन्त्रैर्यवसेनोदके
४२॥ भ० तत्नामदुर्गकिलासबप्रकारकेआयुध धनधान्यना
न्नवाहनसवारीब्राह्मणविद्वान शिल्पीनामकारीगरलोग ना
कारकेयन्त्रतथाघासआदिकचारा औरउदकनामजल इन
सदारहैकमतीकिसीबातकीनहोय॥४२॥ तस्यमध्येसुपर्याप्त
रयेद्गृहमात्मनः। गुप्तंसर्वर्तुकंशुभ्रंजलवृक्षसमन्वितम्॥४३
उसश्रेष्ठदेशमेंसबप्रकारसेश्रेष्ठअपनाघरराजारहनेकोबनवा
प्रकारसेउसस्थानकीरक्षाकरैऔरसबऋतुओंमेंजिसघरमेंसु
शुभ्रतामसुफेदवहघरहोवै चारोंओरघरकेजलऔरश्रेष्ठ
हरे२पेड़रहैं उसमेंआपरहैसबराज्यकोदेखभ्रमणकरै औ
केऊपरसदादृष्टिरक्खै जिससेकोईअन्यायनकरनेपावै॥४३
दध्यास्योद्वहेद्भार्यांसवर्णांलक्षणान्विताम्। कुलेमहतिसम्भू
द्यांरूपगुणान्विताम्॥४४॥ भ० उसस्थानमेंरहकेअपनेवर्ण
श्रेष्ठलक्षणोंसेयुक्तऔरवड़ेकुलमेंउत्पन्नभई अत्यन्तहृदयको
करनेवाली उत्तमजिसकारूपऔरसबविद्यादिकश्रेष्ठगुणोंसे
न्नस्त्रीकेसाथराजाबिवाहकरै देखनाचाहिएकिब्रह्मचर्याश्रम
विद्याकापढ़ना सबराज्यकार्यका प्रबन्धकरना औरसबव्य
कोयथावतजानना पीछेराजाकाबिवाहमनुभगवाननेलिखा
क्याआयाकि ४८.वा४४ वा४०चालीसवाइसबर्षमें राजा

ाहकरनाउचितहै इससेपहिलेकभीनहीं औरस्त्रीभी२०वर्षसऊपर
५ वर्षतककीहोनाचाहिए तबराजाकासन्तानसर्वोत्तमहोय अ-
यथानष्टभ्रष्टहीहोजाताहै ॥ ४४ ॥ पुरोहितंचकुर्वीतवृणुयादेवच-
र्त्विजम् । तेऽस्यगृह्याणिकर्माणिकुर्युर्वैतानिकानिच ॥ ४५ ॥ म०
वशास्त्रोंमेंविशारदनामनिपुण धर्मात्माजितेन्द्रियऔरसत्यवादी
ोकिपूर्वोक्तलक्षणवालाकहाउसकोपुरोहितकरै औरऋत्विजभी
सेहीकोकरै एराजाकेजितनेअग्निहोत्रादिकगृह्यकर्मऔरइष्टि-
ंउनकोनित्यकरैं ॥ ४५ ॥ यजेतराजाक्रतुभिर्विविधैराप्तदक्षिणैः । ध-
ार्थंचैवविप्रेभ्योदद्याद्भोगान्धनानिच ॥ ४६ ॥ म० अग्निष्टोमसे
केजितने अश्वमेधतकयज्ञहैं उनमेंसेकोईयज्ञको राजाकरै सो
र्णक्रियाऔरपूर्णदक्षिणासेकरै जितनेविद्वान औरधर्मात्माहोवैं
नकोनानाप्रकारकेभोजनकरावैऔरदक्षिणाभीदेवै ॥ ४६ ॥ सां-
त्सरिकमाप्तैश्चराष्ट्रादाहारयेद्बलिम् । स्याच्चाम्नायपरोलोकेवर्ते-
पितृवन्नृषु ॥ ४७ ॥ म० श्रेष्ठपुरुषोंकेद्वारावर्ष२केप्रजासेकरोंको
ाजालियाकरै केवलवेदविहितऔरधर्मशास्त्रोक्तआचारमेंतत्पर
ोवै जितनीप्रजामेंकन्यायुवती औरवृद्धहोवैं इनकोकन्याभगिनी
ौरमाताकीनांईराजाजाने जितनेबालकयुवाऔरवृद्धउनकोपुत्र
ाई औरपिताकीनांईराजाजानै अधिकक्याकिसबप्रजाकोपुत्रकी
ांईजानै औरअपनेपिताकीनांईवर्तमानकरै ॥ ४७ ॥ अध्यक्षान्वि-
वधान्कुर्यात्तत्रतत्रविपश्चितः । तेऽस्यसर्वाण्यवेक्षेरन् नृणांकार्या-
णिकुर्वताम् ॥ ४८ ॥ म० जहां२जैसा२कामहोय वहां२नानाप्र-
ारकेमन्त्रियोंकोरखदेवै सबप्रजाकेसुखकेवास्ते सबकार्योंकोदे-
खतेरहैं औरव्यवस्थाकर्त्तेरहैं जिस्से किअधर्मनहोनेपावै परन्तुवे
ूर्खनहोवैंकिन्तु सबविद्वानहीहोवैं ॥ ४८ ॥ आवृत्तानांगुरुकुला-
द्विप्राणांपूजकोभवेत् । नृपाणामक्षयोह्येषनिधिर्ब्राह्मोऽभिधीयते ॥
४९ ॥ म० नतंस्तेनानचामित्राहरन्तिनचनश्यति । तस्माद्राज्ञा-
निधातव्योब्राह्मणेष्वक्षयोनिधिः ॥ ५० ॥ म० नस्कन्दतेनव्ययतेनवि-

नश्यतिकर्हिचित् । परिष्टमग्निहोचे भ्योब्राह्मणस्यमुखेहुतम् ५१ ॥ भ० जोब्रह्मचर्याश्रमसेगुरुकुलमेंगुरूकेपास विद्यापढ़केपूर्णविद्वान होकेश्रावें उनकोराजायथायोग्यसत्कारकरै औरयथायोग्यउनकोअधिकारभीदेवै जिस्सेकिसत्यविद्याका लोपकभीनहोय किन्तु सबविद्यासबमनुष्योंकेवीचमें सदाप्रकाशितरहै अर्थातपुरुषआस्त्री विद्यारहितनरहनेपावै यहीराजाओंकाअक्षयनिधिअर्थातअक्षय पुण्यहैजोकिब्रह्मनामवेदकायथावतपढ़नाऔरयथावतबेदोक्तकर्मों काकरना इस्से आगेकोईपुण्यनहीहैक्योंकि ॥ ४९ ॥ जितनेधनहैं सुवर्णरजतादिकपुत्रदाराऔरशरीरउनकोचोरलेसक्ते हैं शत्रुभी हरणकरसक्ते हैं औरउनकानाश भीहोजाताहै परन्तु जोविद्या निधिहैउसकोनचोरनशत्रु हरसक्ते हैं औरनकभीउसकानाशहोताहै इस्से राजालोगोंको विद्याकाप्रकाशरूपजोनिधि उसकोविद्वानोंकेवीचमेंस्थापनकरनाचाहिए औरनित्यउसकाप्रचारकरना चाहिए ॥ ५० ॥ जोविद्यानिधिहैउसकोकोईउठाईगिराउठानहीं सक्ता नउसकोव्यथाअर्थातकभीपीड़ाहोतीहै अग्निहोचादिकजितनेयज्ञहैं उनसेयहजोविद्यारूपस्रोचऔरमुखमेंब्रह्मकेजाननेवाले अथवापढ़नेवाले केमुखरूपवेदिमेंहोम अर्थातविद्याकाजो स्थापन करनाहै सोविशिष्टअर्थातश्रेष्ठहै इस्से राजालोगोंकोअवश्य२चाहिए किशरीर,मन औरधनसेअत्यन्तप्रयत्न विद्याकेप्रचारमेंकरैं इसीसेराजालोगोंकाऐश्वर्यपूर्ण आयु,बल,बुद्धिऔरपराक्रमसदा अधिकहोतेहैं ॥ ५१ ॥ संग्रामेष्वनिवर्त्तित्वं प्रजानांचैवपालनम् । शुश्रूषाब्राह्मणानांच राज्ञांश्रेयस्करंपरम् ॥ ५२ ॥ भ० संग्रामों सेकभीनिवृत्तनहोना किजबतकउसशत्रूकोनजीतले तबतकउपाय मेंहीरहै किन्तु भागनेकेसमयमेंभागभीजाना औरपराक्रमकेसमयमेंपराक्रमकरना इसकानामशूरवीरपनाहै जोकिपशुकीनाईं मारखानावामरजाना इसकानामशूरबीरतानहीं किन्तु बुद्धिहीसेविजयहोताहै अन्यथाकभीनहीं प्रजाओंकापालनकरना जितने

विद्वानसत्यवादीधर्मात्माब्राह्मण अर्थातब्रह्मवित्सबविद्याओंमेंपूर्ण उनकायथावतसत्कारकरना यहीराजालोगोंकाकल्याणकरनेवालापरमश्रेष्ठकर्महै अन्यकोईनहीं ॥ ५२ ॥ आहवेषुमिथ्योन्योऽन्यंजिघांसन्तोमहीक्षितः। युध्यमानाःपरंशक्त्यास्वर्गंयान्त्यपराङ्मुखाः॥ ५३ ॥ म॰ प्रजाकेपालनकरनेकेवास्ते श्रेष्ठधर्मात्माओंका यथावतपालन औरदुष्टोंकाताड़नकरनेकेलिये जितनाअपनासामर्थ्य उसेयथावतसबपुरुषमिलके परस्परजोराजालोगहननदुष्टोंकाकर्तेहैं उसमेंअपनेभीमरणसे जोभयकानहींकरतेहैं औरयुद्धमें पीठनहींदेखातेहैं अर्थातकभीयुद्धसेभागतेनहींपरमहर्षऔरशूरवीरतासेजोयुद्धकरतेहैं उनकाइसलोकमेंअखण्डितराज्यहोताहै औरमरजांयतोमरनेकेपीछे परमस्वर्गकोप्राप्तहोतेहैं क्योंकिउन राजालोगोंकाजितनाकर्महै सोसबधर्मकेवास्ते हीहै औरशूरवीरतासेउत्साहपूर्वकनिर्भयसमयमेंदेहकाजोछोड़ना सोईस्वर्गजानेकाकारणहै ॥ ५३ ॥ युद्धमेंधर्मसेइतनेनियमराजालोगोंकोअवश्य माननाचाहिए। नकूटरायुधैर्हन्याद्युध्यमानोरणोरिपून्। नकर्णिभिर्नापिदिग्धैर्नाग्निज्वलिततेजनैः॥ ५४ ॥ म॰ नचहन्यात्स्थलारूढ़न्नक्लीबन्नकृताञ्जलिम् नमुक्तकेशन्नासीनन्नतवास्मीतिवादिनम्॥ ५५ ॥ नसुप्तन्नविसन्नाहंननग्नन्ननिरायुधम्। नायुध्यमानंपश्यन्तंनपरेणसमागतम्॥ ५६॥ म॰ नायुध्यव्यसनप्राप्तन्नार्तन्नातिपरीक्षतम् नभीतन्नपरावृत्तंसतांधर्ममनुस्मरन्॥ ५७ ॥ म॰ कूटआयुधअर्थातकपट,छल,सेकोईकोकभीयुद्धमेंनमारे रिपुनामशत्रुओंकाकर्णिनामकुटिलशस्त्र विषसेयुक्तशस्त्रसेतथाअग्निसेतपायेहुएनशस्त्रोंसेशत्रुकोकभीनमारे ॥ ५४ ॥ जोआसनमेंबैठाहोय नपुंसकहाथकोजोड़ले जिसकेशिरकेबालखुलजांय मैंआपकाहूं मुझकोमतमारोजोऐसाकहै ॥ ५५ ॥ जोसोताहोय जोयुद्धसेभाग खड़ाहोय विषादकोप्राप्तभयाहोय वानग्नहोगयाहोय आयुधसेरहित किजिसकेहाथमेंशस्त्रनहोय जोयुद्धनकरताहोय वादेखनेको

आयाहोय अथवादूसरेकेसाथआयाहोय मूर्छितहोगयाहोय शस्त्र केप्रहारसेदुःखितहोगयाहोय औरशस्त्रोंकेलगनेसे शरीरमेंछेदन होगयाहोय भयभीतहोगयाहोय भूमिमेंखड़ाक्लीवनाम नपुंसक औरभयसेहाथजोड़ले इनकोयुद्धमेंराजाकभीनमारै क्योंकिसत्पुरुषराजाओंकायहीधर्महै जोयुद्धकरनेकोआवै शूरवीरतासे उसीकोमारैअन्यकोनही किन्तु पकड़केसुखमेंअपनेबशमें उसीवक्तकर लेजोस्त्रीऔरबालकहैं उनकोमारनेकीइच्छाभी राजालोगनकरैं क्योंकिजोयुद्धकीइच्छावायुद्धनहीकर्त्तेहैं उनकेमारनेमें बड़ापापहै इससे कभीइनकोनमारै॥ ५७॥ औरजोराजाकाभृत्यहोय वहयुद्ध नकरैवायुद्धसेभागजाय अथवाछल,कपट,रक्खै युद्धमेंउसकोबड़ा भारीपापहोताहै। यस्तुभीतःपरावृत्तःसंग्रामेहन्यतेपरैः। भर्त्तुर्यद्दुष्कृतंकिंचित्तत्सर्वंप्रतिपद्यते॥ ५८॥ भ० जोभृत्यभययुक्तहोके युद्धसेभागजाताहै औरभागेहुएकोभीशत्रुलोगमारडालैं तोबड़ी क्षतघ्नताउसनेकिया क्योंकिराजानेउसकापालन औरसत्कारकियाथा सोयुद्धकेवास्तेहीकियाथा सोयुद्धउनसेकुछकियानहीं राजाकेकियेकोनाशकरनेसे वहक्षतघ्नहोताहै औरजोराजाकाकुछपाप उसकोवहीप्राप्तहोताहै॥ ५८॥ यच्चास्यसुकृतंकिंचिदमुत्रार्थमुपार्जितम्। भर्तातत्सर्वमादत्ते परावृत्तहतस्यतु॥ ५९॥ भ० उसभृत्यनेजोकुछपरलोक केवास्ते पुण्यकियाथा इससबपुण्यकोराजालेलेताहै औरउसभृत्यकोघोरनरकहोताहैसुखकभीनहीयहीधर्मस्वामी औरसबसेवकोंकाभीहै किजोजिसकास्वामीवाजोजिसकाभृत्य वेपरस्पर हितकरनेहीमेंसदाप्रवृत्तरहैं छलऔरकपटमनसेभीन करै अन्यथादोनोंअधर्मीहोतेहैं॥ ५९॥ रथाश्वंहस्तिनंछत्रंधनंधान्यंपशून्स्त्रियः। सर्वद्रव्याणिकुप्यञ्चयोयज्जयतितस्यतत्। ६०॥ भ० रथघोड़ाहाथीछाता,धनधान्यपशुगायछेरी, आदिकस्त्री और बस्त्रादिकसबद्रव्य घीवातेलकाकुप्पा इनकोजोयुद्धकरनेवालाजीते सोईलेलेवै उनमेंसेराजाकुछनले॥ ६०॥ राज्ञश्चदद्युरुद्धारमित्ये-

षा वैदिकीश्रुतिः। राज्ञा च सर्वयोधेभ्यो दातव्यमपृथग्जितम् ॥ ९१ ॥ भा० परन्तु सब भृत्य लोग सोलहवां हिस्सा उन द्रव्यों में से राजा को देवें और राजा और सेना ने मिलके जीता हो य द्रव्य मिला भया उसमें से राजा भी सोलहवां हिस्सा भृत्यों को देवै इसमें राजा अधिक वा न्यूनता कभी न करै क्योंकि इसके विना युद्ध में उत्साह कभी कोई न करेगा ९१। अलब्धमिच्छेद्दण्डेन लब्धं रक्षेदवेक्षया। रक्षितं वर्द्धयेद्वृद्ध्या वृद्धं दानेन निःक्षिपेत् ॥ ९२ ॥ भा० चार भेद हैं पुरुषार्थ के अलब्ध जो राज्यादिक उनको दण्ड से ग्रहण करै जो प्राप्त भया उसको खूब बुद्धि और प्रीति से रक्षा करै और रक्षित पदार्थों का व्याजादिक उपायों से बढ़ावै और जो बढ़ा भया धन उसको विद्यादान यज्ञ धर्मात्माओं का पालन और अनाथों के पालन में लगावै इनमें से भी वेदादिक सत्यशास्त्रों के पढ़ने और पढ़ाने ही में बहुधा धन खर्च करै अन्य में नहीं ॥ ९२ ॥ बकवच्चिन्तयेदर्थान्सिंहवच्च पराक्रमेत्। वृकवच्चावलुम्पेत शशवच्च विनिष्पतेत् ॥ ९३ ॥ भा० राजा सब अर्थों के संग्रह करने में अत्यन्त बुद्धि से विचार करै जैसा कि मत्स्यादिक ग्रहण करने के वास्ते बकुला ध्यानावस्थित होके विचार करता है वैसे राजा ध्यानावस्थित होके सब अर्थों का विचार करै युद्ध समय में सिंह की नांई पराक्रम करै जिस्से विजय होवै और पराजय कभी न होय आपत्काल में अथवा दुष्टों के निग्रह करने के वास्ते ऐसा गुप्त रहै जैसा कि चीता वा भेड़िया और खरहा जैसे अपने बिल से निकलके कूदता दौड़ता चला जाता है वैसे ही राजा शत्रु की सेना से निकलके भाग जाय वा छिप जाय अथवा किला तोड़ने में और शत्रु ग्रहण करने में पराक्रम करै ॥ ९३ ॥ शरीरकर्षणात्प्राणाः क्षीयन्ते प्राणिनां यथा। तथा राज्ञामपि प्राणाः क्षीयन्ते राष्ट्रकर्षणात् ॥ ९४ ॥ भा० जैसे शरीर दुर्बल करने से बलादिक जो प्राण वे क्षीण हो जाते हैं वैसे ही राज्य के नाश अर्थात अरक्षण से राजा लोगों के भी प्राण क्षीण हो जाते हैं अर्थात राज्य सहित नष्ट हो जाते हैं ॥ ९४ ॥ यथाल्पाऽल्पमदन्त्याद्यं वार्योकोवत्सषट्पदाः। तथाल्पाऽल्पो ग्रही-

तव्योराष्ट्राद्राज्ञाब्दिकःकरः । ६५॥ भ० जैसेजोंकवछवाऔरभौंरा थोड़ा२रुधिरदूध औरसुगन्धकोजिनसेग्रहणकरतेहैं उनकानाश कभीनहोकरतेवैसेहीराजाप्रजासथोड़ा२करग्रहणकरैसाल२में॥ ६५ ॥ परस्परविरुद्धानांतेषांचसमुपार्जनम् । कन्यानांसम्प्रदानांच कुमाराणांचरक्षणम् ॥ ६६ ॥ भ० जबसबआमात्योंकेसाथवाप्रजा-स्थपुरुषोंकेसाथकोईव्यवहारकेनिश्चयकेवास्ते राजाबिचारकरै उ-नमें जिसबातमें परस्परबिरोधहोय उसमेंसेबिरुद्धांशको छोड़ाके सिद्धान्तमें सबकीजबएकताहोय उसबातकाआरंभकरै अन्यकान-हीं कन्याओंकासोलहवेंवर्षसेपहिले बिवाहकभीनहोनेपावै तथा चौबीसवर्षकेआगेकन्याविवाहकेबिनाकभीनरहनेपावै जिसकोकी विवाहकीइच्छाहोय तथाकुमारपुरुषोंका२५ पर्षके पहिले बिवाह किसीकानहोनेपावै और४०,४४वा४८,वर्षकेआगेविवाहकेबिना पुरुषभीनरहैंतबतककन्याऔरपुरुषोंकोविद्यादानराजाकरै और उनसेकरावै तथाउनकीरक्षाभीराजाकरावै जिस्से किकोईभ्रष्टन होवै औरविद्याहीनभीकोईकन्या वापुरुषनरहै यहीराजालोगों कापरमधर्म औरपरमपुरुषार्थहै जिस्सेसबव्यवहारउत्तमहोतेहैं अन्यथानहीं औरजिसपुरुषवाकन्याको विवाहकीइच्छाहीनहोवै उसकेऊपरराजावाअन्यकाकुछबलनहीं ॥ ६६ ॥ दूतसंप्रेषणंचैव-कार्यशेषंतथैवच । अन्तःपुरप्रचारञ्चप्राणिधीनांचचेष्ठितम् ६७ । दूतकोभेजना औरउस्से सबयथावतव्यवहारोंकाजानना कार्यशेष नामदूतनाकार्यसिद्धिहोगया औरदूतनाकार्यसिद्धवाकोहै उसको बिचारसेयथावतपूर्णकरै जिसनगरमेंवाजिसस्थानमेंरहै उनम-नुष्योंकायथावतअभिप्रायजानले प्रणिधीनामदूतोअथवादासी इ-नकोभीचेष्टाकोयथावतजानै जिस्से किकोईबिघ्ननहोनेपावै ६७ ॥ कृत्स्नंचाष्टविधंकर्मपञ्चवर्गंचतत्त्वतः । अनुरागापरागौचप्रचारं-मण्डलस्यच ॥ ६८॥ भ० येआठविधजोकर्मराजाअमात्यसेनाकोश औरराज्ययेपांचवर्गहैं जिसमेंउसकर्मकोतत्त्वसेजानै औरउसको

रक्षाभीकरै अपनेमेंसबकीप्रीति वाअप्रीति तथामण्डलके राजा ओंकाव्यवहार औरउनकेमनकीइच्छाइसकोयथावत्राजाजान-तारहै जिस्से आपत्कालअकस्मात्कभीनआवै॥ ६८॥ मध्यमस्यप्र-चारञ्च विजिगीषोश्चचेष्टितम् । उदासीनप्रचारंच शत्रोश्चैवप्रय-त्नतः ॥ ६९ ॥ अपनेऔरपरराज्यकीसीमामें जोराजाहोय विजि-गीषुनामशत्रुकेतरफसेजो जीतनेकोआवै उदासीनजोअपनेवाशत्रु के पक्षमेनहोवैऔरशत्रु,इनचारोंकीचेष्टाऔरअभिप्रायकोयथा-वत्राजाजानलेवै अन्यथासुखकभीनहोगा इस्सेअत्यन्तप्रयत्नपूर्वक राज्यकेमूलजितनेहैं उनकोकहै औरतत्परहोकेजानैजानकेयथा-वत्व्यवस्थाकरै ॥ ६९॥ इनकोसामअर्थातमिलाप,दानअर्थातधन कादेना भेदनामपरस्परसभोंकोतोड़फोड़रक्खै औरदण्डयेचार राजालोगोंकेसाधनहैं परन्तु उनचारोंमेंसेमिलापउत्तमहै उस्से नीचेदाम औरभेदसबसेकनिष्टदण्डहै इस्से तीनउपायसेजबकार्य सिद्धिनहोवैतवदण्डकरै इनकातत्वयहहै किजिस्से बहुतधर्मात्मा होवें औरदुष्टनहोवें ऐसेउपाय विद्यादिकदानोंसे राजासदाक-रतारहैएकतोउन्नप्रकारसेयुवावस्थामेंब्रह्मचर्याश्रमसेविद्याकोप-ढ़केविवाहकाहोना औरपांचवेवर्षपुत्रवाकन्याको पढ़नेकेवास्ते न भेजें तोउनकेमातापितादिकोंकेऊपरराजाअवश्यदण्डकरै यथा-वत्पठनऔरपाठन कीव्यवस्थाकरै जोकोईइसमर्यादाकोभङ्गकरै विद्यादिकगुणग्रहणनकरै तबउसमनुष्यकोशूद्रकाअधिकारदेदे-वै औरशूद्रादिकनीचोंमेंकोईउत्तमहोवै उसकोयथायोग्यद्विजका अधिकारदेवै जैसेकिब्राह्मण,क्षत्रियवावैश्योंकेदुष्टपुत्रवाकन्यामूर्ख होजांय तबउनकोशूद्रकुलमेंरखदे औरशूद्रादिकोंमेंजबद्विजत्वअ-धिकारकेयोग्यहोवें तबयथायोग्यद्विजकाअधिकारदेवै अर्थातद्विज बनादेवै तबजिसब्राह्मणक्षत्रियवावैश्यकेपुत्रवाकन्या एकदोतीनवा जितनेशूद्रहोगयेहोंय उनकेबदलेपुत्रवाकन्याओंकोराजागिनरके देवै तथाशूद्रादिकोंकोभीक्योंकिजिसकोएकहीपुत्रवाकन्याहै और

वहशूद्रहोगया अथवाशूद्रकोपुत्र वाकन्याद्विजहोगई फिरउनका वंशतोछिन्नहीहोगया इस्सेराजालोगोंसेयथायोग्य गिन२केलिये जांयऔरदियेभीजांयदूसरीवातयहहैकिवेदादिकसत्यशास्त्रोंकाअत्यन्तप्रचारकरै औरजोकोईजालपुस्तकरचैवापढ़ैपढ़ावै उसकोराजाशिरच्छेदनतकदण्डदेवै जिस्से किकोईमिथ्याजालपुस्तकनरचै तीसरीवातयहहैकिजवकोईजितेन्द्रिय,पूर्णविद्यावान,पूर्णज्ञानवान,सत्यवादीदयालुऔरतीव्रबुद्धिवालाविवाहकरना औरविरक्त होनाचाहैउसकोराजायथावत्परीक्षाकरकेआज्ञादेवै औरकहदे किआपसत्यविद्यासत्यउपदेशकाप्रचारसंसारमेंकरैंउसकाआकार स्वभावऔरगुणपत्रमेंलिखेऔरग्राम२नगर२मेंविदितकरदेजिस्से किकोईपुरुषउसका अपमाननकरै औरउसके वेषवानामसे कोई फिरनेनपावै चौथीवातयहहैकिकोईमूर्ख,धूर्त्त,अधर्मीऔरमिथ्यावादीविरक्तनहोनेपावै क्योंकिउसकेविरक्तहोनेसेसबसंसारकोबुद्धिभ्रष्टहोजातीहैजैसोउसकीभ्रष्टबुद्धिहोगीवैसाहीउपदेशकरेगाअच्छाकहांसेकरेगाइस्सेऐसापुरुषविरक्तनहोनेपावैजोविरक्तहोयतो उसकोपकड़केदण्डदे पांचवीवातयहहैकिजोकोईकर्मकाण्डकाअधिकारीहोय उसकोकर्मकाण्डमेंरक्खै सोकर्मकाण्डवेदोक्तलेना तन्त्रवापुराणकीएकवातभीनलेनी पूर्वमीमांसाअर्थातजैमिनिजो व्यासजीकेशिष्यकेकियेसूत्रोंकेअनुसार कर्मकाण्डकीव्यवस्थाराजा नित्यरक्खै संध्योपासन,अग्निहोत्रसेलेकेअश्वमेधतककर्मकाण्डहै उसकेदोभेदहैं एकतोसकामदूसरानिष्काम सकाम यहकहताहै किविषयभोगऐश्वर्यकेवास्ते कर्मकाकरना औरनिष्कामयहहैकि कर्मोंसेमुक्तिहीकाचाहना उस्से भिन्नपदार्थोंकीचाहनानहींउसमेंवेदकेजोमन्त्रहैंवेहीदेवहैं इनसेभिन्नकोईदेवनहींऔरमन्त्रों के कहनेवाले परमेश्वरपरमदेवहैं ऐसाहीनिश्चय पूर्वमीमांसादिकों औरनिरुक्तादिकोंमेंकियाहै दूसराउपासनाकाण्डहैसोभी वेदोक्तहीलेना उसकेव्यवस्थाकेनिमित्तपातञ्जलिमुनिकेसूत्रऔर

उसकेऊपरव्यासमुनिजीकाकियाभाष्य तथादशउपनिषदइन्होंको
रक्खै इनमैंजैसी उपासना की व्यवस्थाहै उसी पूर्वक आप और
अपनीप्रजाकोचलावै पाषाणादिकमूर्त्तिपूजनादिक उपासनाहो
नहीं इस्से इसकोछोड़नाछोड़ानाहीउचितहै तीसराज्ञानकाण्ड
है उसमेपृथ्वीसेलेकेपरमेश्वरपर्य्यन्त पदार्थोंकायथावत्तत्त्वज्ञान
काहोना इसकाविधानवेदशउपनिषदऔरव्यासजीकाकिया शा-
रीरकसूत्रउनकीरीतिसेज्ञानदण्डकीव्यवस्थाकरै उसमेंआपराजा
चलैऔरप्रजाकोभीचलावैऔरजितनेपूर्वोक्तशैववैष्णवशाक्तादिक
पाखण्डलिखेहैं उनकोकभीनप्रचलितकरै क्योंकियेसबपाखण्डहै
तीनोंकाण्डमेंनहींहै उनसेविरुद्धहीहैं इनपाखण्डोंकेचलनेमेंराजा
औरराज्यनष्टहोजातेहैं सोअत्यन्तप्रयत्नोंसेइनपाखण्डोंकाअंकुर
मात्रभीनरहनेपावै जैसेकिआजकलआर्य्यावर्त्तदेशमें मण्डलीकी
मण्डलीफिरतीहैं लाखोंपुरुषोंमेंविरक्तताधारणकियाहै यहमि-
थ्याजालहीहै इनलाखोंमेंकोईएकपुरुषविरक्तताकेयोग्यहै और
सब पाखण्डमेंरहेहैं इनकोराजा यथावत्परीक्षाकरै सत्यवादी,
जितेन्द्रिय,सबविद्याओंमेंनिपुण औरशान्त्यादिकगुणजिसमेंहोय
उसकोतोविरक्तहीरहनेदे इस्से जितनेविपरीतहोंय उनकोयथा-
योग्य हलग्रहणादिककर्मोंमें राजालगादेवै इसव्यवस्थाको आ-
वश्यकरै अन्यथाकभी सुखनहोगा ॥ सन्धिंचविग्रहंचैव यानमा-
सनमेवच। द्वैधीभावंसंश्रयञ्च षड्गुणांश्चिन्तयेत्सदा ॥ ६५ ॥ स--
न्धिनाममिलापविग्रहनामबिरोधयाननामयात्रा शत्रुकेऊपर
चढ़ना आसननामयुद्धकानकरना औरअपनेराज्यकाप्रबन्धकरके
घरमेंबैठरहनाद्वैधीभावनामदोप्रकारकाबलअर्थातसेनारचलेना
इनछ:गुणोंका विचारकियाहै सोमनुस्मृतिमें विचारलेना और
भीबहुतप्रकारकेराजकर्मोंकाउसीमेंविचारकियाहैसोदेखलेवैं॥
प्रमाणानिचकुर्वीततेषांधर्म्यान्यथोदितान्। रत्नैश्चपूजयेदेनंप्रधा-
नपुरुषैःसह ॥ ६६ ॥ म० जिसराजाकोजीतलेउस्से नियमकरदे कि

जबह्मतुमकोबोलावैं बाजैसीआज्ञाकरैंउसकोयथावतकरनाऔरमेरेअमात्यकेतुल्यहोके यथोक्तमेरोआज्ञाकरो यथावततुमधर्मसेसबकामकरोअन्यायमतकरोपराजयकेशोकनिवारणकेनिमित्त राजाऔरराजाकेसबपुरुषमिलके उनकोरत्नादिकदेके उसराजाकोप्रसन्नकरैं जिस्से किउसकोपराजयसेदुःखभयाहोय उसकासत्कारसेनिवारणहोजाय फिरउनकीयथावतआजीविकाकरदे जिस्से उनके भोजनादिकोंका निर्वाहहोसके उतनो जीविका करदे औरजोराजाधर्मसेराज्यकरै विद्या, बुद्धि, बल, पराक्रम, औरजितेन्द्रियहोय उस्से नयुद्धकरै नउस्से राज्यलेनेकोइच्छाकरै किन्तु उसकोबन्धुऔरमित्रवत्जानै ॥ ६६ ॥ प्राज्ञंकुलीनंशूरंचदक्षंदातारमेवच । कृतज्ञंधृतिमन्तञ्च कष्टमाहुररिंबुधाः ॥ ६७ ॥ म॰ पण्डित, कुलीन, शूर, वीर, चतुर, दाता, कृतज्ञ और धैर्यवान पुरुषसेबैरकभीनकरै जोकभीवैरकरैगा तोउसको दुःखहोहोगा ऐसेपुरुषकापराजयकभीनहींहोसक्ता ॥ ६७ ॥ एवंसर्वमिदंराजासहसंमन्त्र्यमन्त्रिभिः । व्यायाम्याप्लुत्यमध्यान्हेभोक्तुमन्तःपुरंविशेत् ॥ ६८ ॥ म॰ इसप्रकारसेसर्वराजसम्बन्धीजोकर्मउसकाविचार मन्त्रियोंकेसाथकरकेव्यायामनामदण्डमुद्गरकरकेसिंहकीनांई अथवानटकीनांईअभ्यासकरकेमध्यान्हसमयकेपहिलेभोजनकरै भोजनकरकेन्यायघरमेंजाके सबन्यायोंकोयथावतकरै जितनीराजसम्बन्धीबातेंलिखीहैंये सबमनुस्मृतिसप्तमाध्यायकीहैं यहांतोसंक्षेपसेलिखीहैं बिस्तारसे देखाचाहैतोवहांदेखलैएकयहबातअवश्य होनीचाहिए कि जोमनुष्य राजाहो उसीकी आज्ञामें चलैं यह बातठीकनहीं क्योंकिराजातोप्रतिष्ठा औरमानकेवास्ते सर्वोपरि है परन्तुविचारकरनेकोएकपुरुषसमर्थनहींहोताजितनेदेशवाअन्यदेशमेंबुद्धिमानपुरुषहोवेंउनसबकोराजाएकसभारक्खैउससभा मेंआपभीरहैफिरसबपुरुषोंकेविचारसेजोबातठीक२ठहरेउसबात कोसबकरैं इस्सेक्याआयाकिजोराजाअन्यायकारीहोजाय तोउस-

कोनिकालबाहरकरैं औरउसीकेस्थानमेंउत्तमलक्षणवालेक्षत्रियको बैठादेवैं क्योंकिराजाजातोप्रजाकेभयसेअन्यायनकरसकेगा औरप्रजा राजाकेभयसे अन्यायनकरसकैगी राजाजबअन्यायकरैतबउसको यथावत्दण्डदेदे॥कार्षापणंभवेद्दण्ड्योयत्रान्यःप्राकृतोजनः। तत्ररा- जाभवेद्दण्ड्यःसहस्रमितिधारणा ६९॥ भ० जिसअपराधमेंप्रजास्थ पुरुषकेऊपरएकपैसादण्डहोय उसीअपराधकोजोराजाकरैउस- केऊपरहजारपैसादण्डहोय यहकेवलउपलक्षणमात्रहै किप्रजासे हजारगुनोदंडराजाकेऊपरहोय क्योंकिराजाजोअधर्मकरेगा तो धर्मकापालनकौनकरेगा कोईभीनकरेगाइससेदोनोंकेऊपर दण्ड कीव्यवस्थाहोनीचाहिए ॥ ६९॥ अष्टापाद्यन्तुशूद्रस्यस्तेयेभवतिकि- ल्बिषम्। षोड़शैवतुवैश्यस्यद्वात्रिंशत्क्षत्रियस्यच ॥ ७० ॥ ब्राह्मण स्यचतुःषष्टिःपूर्णंवापिशतंभवेत्। द्विगुणावाचतुःषष्टिस्तद्दोषगुणव- द्विसः ७१॥ जितनापदार्थकोईचोरावैवहमूर्खवाबालकनहोय कि- न्तुगुणऔरदोषोंकोजानताहोवै सोजोशूद्रचोरहोयतोउससे आठ गुणादण्डले वैश्यसे सोलहगुण,क्षत्रियसे३२गुण,और१०० वा१२८ गुणादण्डराजाब्राह्मणसेलेवै क्योंकिऐ छहोकेनीचकर्मकरै उसको अधिकहीदण्डहोनाचाहिए॥ ७१ ॥ पिताचार्यःसुहृन्माताभार्या- पुत्रःपुरोहितः। नादण्ड्योनामराज्ञोस्तियस्स्वधर्मेनतिष्ठति ७२॥ भ० पिताआचार्यविद्यादातासुहृत्नाममित्रमाता भार्यानामस्त्री पुत्रऔरपुरोहितजब२अपराधकरैं तब२कभीदण्डकेबिनानछोड़ै क्योंकिराजाकेसामनेकोई अपराधीअदण्ड्यनहीं क्योंकिस्वधर्ममें स्थितनरहै॥ ७२॥ अदण्ड्यान्दण्डयन्राजादण्ड्यांश्चैवाप्यदण्डय- न। अयशोमहदाप्नोतिनरकंचैवगच्छति ७३॥भ० जोराजाअन्याय करनेवालेकोदण्डनहींदेता औरअनपराधीकोदण्डदेताहै उस- कोबड़ीअपकीर्तिहोतीहै औरनरककोभी वहजाताहै इससे राजा कोअवश्यचाहिएकिपक्षपातकोछोड़के यथावत्दण्डव्यवस्थारक्खै किसीकापक्षपातकभीनकरै इससे क्या आयाकि किसीनेंमनुस्मृति

वाअन्यत्रसेऐसेश्लोकप्रक्षिप्तकियाहोय किब्राह्मणवासन्यासीआदि-
कोदण्डनदेनाउसकोसज्जनलोगमिथ्याहीमानैं ॥ ७३ ॥ क्योंकि
धर्मोविद्धस्त्वधर्मेणसभांयत्रोपतिष्ठते । शल्यंचास्यनकृन्तन्तिविद्धा-
स्तत्रसभासदः ॥७४॥ म० धर्मऔरअधर्मसेविद्धअर्थातघायलभया
राजाऔरसभासदोंकेपासधर्मीऔरअधर्मीदोनोंआवैंफिरउसध-
र्मकाजोघावउसकोराजाऔरसभासदननिकालैंजैसेकिघावकोऔ-
षध्यादिकयत्नोंसेअच्छाकरतेहैंवैसेहीधर्मात्माकासत्कारऔरदुष्टों
केऊपरदण्ड जिससभामें यथावत नहोगा उससभाके राजाऔर
सभासदसबमनुष्योंकोमुरदाहीजानना तथाजहां२ शिष्टपुरुषोंको
अथवासत्यासत्य निश्चयकेवास्तेसभाहोवैं फिरजिससभामें सत्यका
स्थापननहोयऔरअसत्यकाखण्डनवेभीसबसभासदमूढ़हीहैं और
मुरदेक्योंकि ॥७४॥ सभांवानप्रवेष्टव्यंवक्तव्यंवासमंजसम् । अब्रु-
वन्विब्रुवन्वापिनरोभवतिकिल्बिषी ॥ ७५ ॥ म० पुरुषप्रथमतोस-
भामेंप्रवेशहीनकरै औरजोसभामेंप्रवेशकरै तोसत्यहीकहै मिथ्या
कभीनकहै क्योंकिजानताभयापुरुषसत्यासत्यकोनकहै अथवाजैसा
जानताहोय उससे बिरुद्धकहै तोभीवहमनुष्यपापीहोजाताहै इससे
क्याआयाकिजैसाजोपुरुष हृदयसेजानताहोय वैसाहीकहै उससे
बिरुद्धकभीनकरै क्योंकिसत्यबोलनाहीसबधर्मोंकामूलहै औरअ-
सत्यअधर्मकामूलहै इसमेंमहाभारतकाप्रमाणहै नसत्याद्धिपरो-
धर्मोनानृतात्पातकंपरम् । इसकायहअभिप्रायहैकिसत्यबोलनेसे
बढ़करकोईधर्मनहींऔरमिथ्याबोलनेसेबढ़करकोईपापनहीं इससे
सत्यभाषणहीसदाकरनाचाहिए मिथ्याकभीनहीं ॥ ७५ ॥ यत्रध-
र्मोह्यधर्मेणसत्यंयत्रानृतेनच । हन्यतेप्रेक्षमाणानांहतास्तत्रस-
भासदः । ७६ ॥ म० जिसराजाकीसभामें धर्म अधर्मऔरसत्यका
राजातथाअमात्योंकेदेखतेभी अनृतनाशकरताहै फिरवेन्यायन-
करैं तथासर्वत्रसभामें उनकोभीसज्जनलोग नष्टहीजानैं क्योंकि
॥ ७६ ॥ धर्मएवहतोहन्तिधर्मोरक्षतिरक्षितः । तस्माद्धर्मोनहन्त-

व्योमानोधर्मोहतोवधीत्॥ ७७॥ भ० जोपुरुषधर्मकानाशकरता है अर्थातधर्मकोछोड़के अधर्मकरताहै उसकोअवश्यही धर्ममार डालताहै उसअधर्मीकीरचाकरनेको ब्रह्मादिकदेवभीसमर्थनहीं औरपरमेश्वरभीअपनीआज्ञाकोअन्यथानहींकरते क्योंकिपरमेश्वरतोसत्यसङ्कल्पहीहै इससे जैसीआज्ञाविचारकेयथावतकियाहै वहीरहतीहै किअधर्मकरैसो अधर्मकाफलपावै औरधर्मकरैसो धर्मका औरजोपुरुषधर्मकोरचाकरताहै उसकीधर्मभीसदारचाकरताहैउसकानाशकरनेकोतीनोंलोकमेंकोईभीसमर्थनहीं इससे सबसज्जनलोगधर्मकानाशऔरअधर्मकाआचरणकभीनकरैं ७७ वृषोहिभगवान्धर्मस्तस्ययःकुरुतेह्यलम्। वृषलन्तंविदुर्देवास्तस्माद्धर्मंनलोपयेत्॥ ७८॥ भ० जोमनुष्यधर्मकालोप अर्थातधर्मको छोड़केअधर्मकरताहै वहीशूद्रवाभंड़ुवाहै क्योंकिवृषनामधर्मका है औरभगवान्भीतीनोंलोकमेंधर्महीहै जोआज्ञाकरनेवालाहै सोआज्ञासेभिन्ननहीं क्योंकिउसकेआत्मरूपहीआज्ञाहै उसधर्मकोजोत्यागकरताहै उसकोदेवनाम विद्वानलोगशूद्र वा भंड़ुवाको नांईजानतेहैं इससे धर्मकात्यागकभीनकरनाचाहिए॥ ७८॥ एक एवसुहृद्धर्मो निधनेप्यनुयातियः। शरीरेणसमंनाशं सर्वमन्यद्धिगच्छति॥ ७९॥ भ० देखनाचाहियेकिसबजगत्मेंएकधर्महीसब मनुष्योंकामित्र है अन्यकोईनहीं क्योंकिधर्ममरनेकेपोछेभीसाथदेताहै औरधर्मसेभिन्न जितनेपदार्थहैं वेशरीरकेछोड़नेके साथही छूटजातेहैं परन्तु धर्मकासंगसदाबनारहताहै इससेधर्मकोकोईकभीनछोड़ै॥ ७९॥ पादोधर्मस्यकर्त्तारं पादःसाचिणमृच्छति। पादःसभासदःसर्वान्पादोराजानमृच्छति॥ ८०॥ भ० जिससभा मेंअन्यायहोताहै उससभामेंयहबातहोतीहै किजोअधर्मकोकरता है उसकोअधर्मकाचौथाहिस्साप्राप्तहोताहै उसकेजोमिथ्यासाक्षी हैं उनकोअधर्मकात्रितियांशमिलताहै जितनेसभासदहैं किराजाकेअमात्य उनकोएकअंशअधर्मका राजाकोमिलताहै अर्थातउस

अधर्मकेचारहिस्से होजातेहैं औरचारोंकोउक्तप्रकारसेएक२हिस्सामिलजाताहै ॥ ८० ॥ राजाभवत्यनेनास्तु मुच्यन्तेचसभासदः । एनोगच्छतिकर्त्तारंनिन्दार्होयत्रनिन्द्यते ॥ ८१ ॥ म० जिससभामें धर्मऔरअधर्मकाविवेकयथावतहोताहै कियथावत्पक्षपातकोछोड़केसत्य२हीन्यायहोताहै उससभाकेराजासाक्षी औरअमात्यसब धर्मात्माहोजातेहैं औरजिसनेअधर्मकिया उसीकेऊपरसबअधर्म होताहैकिन्तुवहीअधर्मकाफलभोगताहैराजादिकआनन्दसेपुण्यकाफलभोगतेहैं दुःखकभीनहीं इससे राजाअमात्यऔरसाक्षी पक्षपातसेअन्यायकभीनकरैं ॥ ८१ ॥ वाह्यैर्विभावयेल्लिंगैर्भावमन्तर्गतन्नृणाम् । स्वरवर्णेङ्गिताकारैश्चक्षुषाचेष्टितेनच ॥ ८२ ॥ म० जबकोईवादीप्रतिवादीकान्यायकरनेलगै तबबाहरकेचिन्होंसे भीतरकेभावकोजानलेवै उसकाशब्दरूप इङ्गितनामसूक्ष्महृदयऔरनाड़ीकीचेष्टाआकृतितथानेत्रकीचेष्टाऔरवाह्यअंगोंकीभीचेष्टा इनसेसत्य२निश्चयकरले किइननेअपराधकियाहै औरइननेनहीं किया एकबातयहभी परीक्षाकीहै जो हाथकेमूलमें धमनीनाड़ी औरहृदयउनकोवैद्यकशास्त्रकीरीतिसे स्पर्शकरकेयथावत्परीक्षा करै फिरयथावत्दण्ड औरअदण्डकरै इन१८अठारहस्थानोंमें विचारकीव्यवस्थाहै ॥ ८२॥ तेषामाद्यमृणादानंनिःक्षेपोस्वामिविक्रमः । संभूयचसमुत्थानंदत्तस्यानपकर्मच ॥ ८३ ॥ वेतनस्यैवचादानंसंविदश्चव्यतिक्रमः । क्रयविक्रयानुशयो विवादःस्वामिपालयोः ॥ ८४ ॥ सीमाविवादधर्मश्च पारुष्ये दण्डवाचिके । स्तेयंचसाहसंचैवस्त्रीसंग्रहमेवच ॥ ८५ ॥ स्त्रीपुंधर्मोविभागश्चद्यूतमाह्वयएवच । पदान्यष्टादशैतानि व्यवहारस्थिताविह ॥ ८६ ॥ एषुस्थानेषुभूयिष्टं विवादंचरतान्नृणाम् । धर्मंशाश्वतमाश्रित्य कुर्यात्कार्यविनिर्णयम् ॥ ८७ ॥ म० ऋणकालेना औरदेना १ निक्षेपकेदोभेदहैं जोगिनकेतौलके वाकिसीकेपासपदार्थरक्खै उसकानामनिक्षेपहै दूसरागुप्तबांधकेकिसीकेपासधरावटरक्खी और

आधि२धनसे व्यवहारकरना ३ अस्वामिविक्रयनाम अन्यकापदार्थकोईबेचले वाकिसीकापदार्थकोईदबाले३ संभूयसमुत्याननाम धर्मार्थयज्ञार्थ वा दक्षिणाकेवास्ते धनदियाजाय इनमें विवादका होनावाअन्यथाकरना ४ औरदियेभयेपदार्थकोछिपाले ५ नौकरी कादेनावानदेना अथवानलेना ६ प्रतिज्ञाकाभंगकरना ७ बेचनाऔरखरीदना ८ पशुओंकास्वामीऔरउनकेपालनेवालेमेंविवादकाहोना सीमामेंविवादकाहोना १० कठोरवचन औरबिना विचारे दण्डदेना ११ चोरी १२ साहसनामपरस्परस्त्रीपुरुषोंका व्यभिचारऔरडांकूपना १३ किसीकोस्त्रीकोबलसेवाफुसलाकरले लेना १४ स्त्रीऔरपुरुषोंकेपरस्परनियमउनकाभंगकरना १५ दायभाग १६ द्यूतनामजूवा १७ और जोप्राणिअर्थातस्त्रीपुत्रकुटुम्बगाय हस्तो,अश्वादिकपशुओंकोदबाकरद्यूतकाकरना उसकानामसमाह्वयहै १८ इनअठारहव्यवहारोंमें प्रजामेंअत्यन्तविवादहोता है इनकाउल्लक्षणदूतप्रेषण औरपूछनेसेराजायथावत्न्यायकरै इनन्यायोंकाविधानयथावत्मनुस्मृतिके अष्टमाध्याय औरनवमाध्यायकीरीतिसेकरनाचाहिये॥ ८७॥ दातव्यं सर्ववर्णेभ्योराज्ञाचौरैर्हृतंधनम्। राजातदुपयुञ्जानश्चौरस्याप्नोतिकिल्बिषम् ८८॥ जोप्रजामेंचोरीहोयतोउसमेंजितनेपदार्थचोरीजांयउनसबपदार्थों कोचोरोंकानिग्रहकरके जोजिसकापदार्थ चोरीगयाहोय उसको चोरोंसेलेकेपदार्थकेस्वामीकोराजादेदे औरजोचोरनपकड़ाजाय औरपदार्थनमिलै तोअपनेपाससेराजादेदेक्योंकिइसीवास्ते राजा काहोनाआवश्यकहै प्रजानित्यराजाकोदेतीहैइसवास्ते किअपना पालनराजायथावत्करै जोयथावत्पालननकरेगाऔरप्रजासेधनलेगातोवहीराजाचोरऔरडाकूकेपापकाभागीहोगाजोचोरोंसे मिलके चोरीकेधनकोग्रहण करनेकीइच्छाकरै वहराजानहींहै किन्तु वहीचोरऔरडांकूहै ॥ ८८॥ यादृशाधनिभिःकार्याव्यवहारेषुसाक्षिणः। तादृशान्संप्रवक्ष्यामियथावाच्यमृतंचतैः ॥ ८९ ॥

भ० राजाऔरधनिकलोगोंकोजिसप्रकारकेसाक्षीव्यवहारोंमेंक-रनाचाहिए उनकोयथावतकहतेहैं औरसाक्षियोंकोजैसासत्यर हीकहनाचाहिए ॥ ८९ ॥ गृहिणःपुत्रिणोमौलाःक्षत्रविट्शूद्रयो-नयः । अर्थ्युक्ताःसाक्ष्यमर्हन्तिनयेकेचिदनापदि ॥ ९० ॥ भ० गृ-हस्थपुत्रवालेऔरवेउदारहोवैं फिरक्षत्रिय,वैश्य,शूद्र,शूद्रवर्णोंमें सेकार्यवाला पुरुषजिनकोकहै कियेमेरे साक्षीहैं औरकोईआपत् कालकेबिनानहोय ॥ ९० ॥ आप्ताःसर्वेषुवर्णेषु कार्याःकार्येषुसा-क्षिणः । सर्वधर्मविदोऽलुब्धाविपरीतांस्तुवर्जयेत् ॥ १०० ॥ भ० ब्राह्म-णादिक सबवर्णोंमें जोआप्त बड़ाधर्मात्मा, सत्यवादी औरजिते-न्द्रियहोवै तथासर्वधर्मको जानताहोय और काम,क्रोध,लोभ, मोह,भयशोकादिक दोषजिसमेंनहोवैं सत्यबोलनेहीका जिसका नियमहोय ऐसेहीकोराजाऔरप्रजासाक्षीकरैं इनसेविपरीतम-नुष्योंकोकभीसाक्षीनकरैं ॥ १०० ॥ नार्थसम्बन्धिनोनाप्तानसहाया-नवैरिणः । नदृष्टदोषाःकर्तव्यानव्याध्यार्त्तानदूषिताः ॥ १०१ ॥ भ० जिननेपरस्परव्यवहारसेसम्बन्धरखतेहोंय अनाप्तनामजिनमेंकाम क्रोध,लोभ,मोह,भयमूर्खत्वादिदोषहोवैं सहायकारीहोवैंवाशत्रु होवैं जोवादीप्रतिवादीकेदोष वा गुणोंकोजानताहोय रोगसेआ-र्तहोय वादुष्टकर्मकोकरनेवाले इसप्रकारकेमनुष्योंकोराजावाप्र-जासाक्षीकभीनकरैं ॥ १०१ ॥ नसाक्षीनृपतिःकार्योनकारुककुशी-लवौ । नश्रोत्रियोनलिंगस्थो नसंगेभ्योविनिर्गतः ॥ १०२ ॥ भ० राजाकारुकनामशिल्पी कुशीलवनामकुदारीसेआजीविकाकरने वाले श्रोत्रियनामवेदपढ़ानेवाला लिंगस्थब्रह्मचारीऔरवानप्रस्थ संगेभ्योविनिर्मुक्तनामसन्यासीइनकोभीराजावाप्रजासाक्षीनकरैं क्योंकि कारुक और कुशीलव तो मूर्ख हैं राजा न्यायकरनेवाला होताहै वेदपाठी,ब्रह्मचारी,वानप्रस्थऔरसन्यासीइनकोसाक्षीक रनेसे पढ़नापढ़ानातपऔरविचारमैंविघ्नहोगा इससेइनकोसाक्षी नकरनाचाहिये । १०२ ॥ नाध्यधीनोनवक्तव्योनदस्युर्नविकर्मकृत् ।

नदृद्धोनशिशुर्नैकोनान्त्योनविकलेन्द्रियः ॥ १०३ ॥ भ० पराधीनवक्तव्यनाम लिखाने सेसाक्षीहोवै डांकू विरुद्ध कर्मकरनेवाला वृद्ध बालकनीचऔरअजितेन्द्रिय तथाएकहीपुरुषसाक्षी इनकोराजा वाप्रजाकभीसाक्षीनकरैं ॥ १०३ ॥ नार्त्तोनमत्तोनोन्मत्तोनक्षुत्तृष्णोपपीड़ितः । नश्रमार्त्तोनकामार्त्तोनक्रुद्धोनापितस्करः ॥ १०४ ॥ भ० दुःखीमत्तनाम भांगमद्यादिकपीनेवाला उन्मत्तनामपागल क्षुधा औरतृषासे जोपीड़ितहोवै श्रमकरकेदुःखीहोवै कामातुर क्रोधीऔरचोर इनकोराजाऔरप्रजासाक्षीकभीनकरैं ॥ १०४ ॥ स्त्रीणांसाक्ष्यंस्त्रियःकुर्युर्द्विजानांसदृशाद्विजाः । शूद्राश्चसन्तःशूद्राणामन्त्यानामन्त्ययोनयः ॥ १०५ ॥ भ० विद्यासत्यभाषणजितेन्द्रियजोस्त्रियांहोवैं वेस्त्रियोंकीसाक्षीहोवैं द्विजोंकेसदृशसत्यवादी द्विज शूद्रोंकेसत्यवादीशूद्र चांडालादिकोंकेसत्यवादी चांडालादिकसाक्षीहोवैं अन्यकोईनहीं औरभीमनुस्मृतिकेअष्टमाध्यायमेंबिस्तार सेसाक्षीकाविधानलिखाहै जोदेखाचाहैसोदेखले ॥ १०५ ॥ साहसेषुचसर्वेषुस्तेयसंग्रहणेषुच । वाग्दण्डयोश्चपारुष्येनपरीक्षेतसाक्षिणः ॥ १०६ ॥ जितनेबलात्कारकेकर्मचोरीपरस्त्रीसेव्यभिचारवा ग्रहणकठोरबचनवा बिनाबिचारेदण्डकादेना इनकर्मोंमेंसाक्षी कीपरीक्षाहीराजानकरै किन्तु यथावत्बिचारकरके इनकोदण्ड देना उचित है ॥ १०६ ॥ सत्येनपूयतेसाक्षी धर्मःसत्येनवर्द्धते । तस्मात्सत्यंहिवक्तव्यंसर्ववर्णेषुसाक्षिभिः ॥ १०७ ॥ भ० सत्यबोलने सेसाक्षी पवित्र और मिथ्या बोलने से महापापी होता है धर्म भीसत्यबोलनेहीसे बढ़ताहै इससे सबमनुष्यों कोसत्यही साक्षी देनीचाहिएमिथ्याकभीबोलनानहीं ॥ १०७ ॥ आत्मैवह्यात्मनःसाक्षीगतिरात्मातथात्मनः । मावमंस्थाःस्वमात्मानंनृणांसाक्षिणमुत्तमम् ॥ १०८ ॥ भ० साक्षीसेपूछनाचाहिये कितेरेआत्माकासाक्षीतूंहीहै औरतेरीसद्गतिकाकरनेवालाभीतूंहीहै क्योंकिजोतूं सत्यबोलेगातोतुझकोकभीदुःखनहोगा औरमिथ्याबोलनेसेसदातूं

दुःखीहीरहेगा इसमेंकुछसन्देहनहीं इस्से हेमित्रसबसाक्षियोंमें सेउत्तमजोसाक्षीअपनाआत्मा उसकामिथ्याबोलनेसे अपमानतूं मतकर औरजोतूं अपमानस्वात्माकाकरेगा तोकिसीप्रकारसेतेरीसद्गतिनहींहोगी किन्तु असद्गतिहीहोगी इस्से सत्यहीसाक्षीबोले मिथ्याकभीनहीं ॥ १०८ ॥ ब्रह्मघ्नोयेस्मृतालोकायेचस्त्रीबालघातिनः । मित्रद्रुहःकृतघ्नस्य तेतेस्युर्बुवतोमृषा ॥ १०९ ॥ म० ब्रह्मघ्न नामब्रह्मवित्पुरुषोंकामारनेवाला औरवेदोक्तकर्मोंकात्यागीस्त्री और बालकोंकामारनेवाला मित्रकाद्रोही कृतघ्नइनकोजैसेकुम्भीपाकादिकदुःखरूपीलोकऔरजन्मप्राप्तहोतेहैं वेतुझकोसबहोवेंजो तूं सत्यनबोले ॥ १०९ ॥ जन्मप्रभृतियत्किंचित्पुण्यंभद्रत्वयाकृतम् । तत्ते सर्वंशुनोगच्छेद्यदिब्रूयास्त्वमन्यथा ॥ ११० ॥ हेभद्रहेसाक्षिन् जोतूं मिथ्याकहेगा तोतैनेंजितनापुण्यजन्मभरकियाहैवहसबतेरा पुण्यकुत्तेकोप्राप्तहोय इस्से तूं सत्यबोले ॥ ११० ॥ एकोऽहमस्मीत्यात्मानंयत्त्वंकल्याणमन्यसे । नित्यंस्थितस्तेहृद्येषपुण्यपापेक्षितामुनिः ॥ १११ ॥ हेकल्याणतूं जानताहैकिमैंएकहीहूं ऐसातूं मतजान क्योंकिन्यायकारीसर्वज्ञजोपरमेश्वरसबजगतमेंव्यापीनित्यस्थितहै सोईतेरेहृदयमेंभीव्यापकहै तेराजोपापवापुण्यइनसबकोयथावत्जानताहै इस्से तूं परमेश्वर औरअधर्मसे भयकरकेसत्यही बोल ॥ १११ ॥ यमोवैवस्वतोदेवोयस्तवैषहृदिस्थितः । तेनचेदविवादस्ते मागंगांमाकुरून्गमः ॥ ११२ ॥ म० जो यमनाम यथावत् न्यायसेव्यवस्थाकरनेवाला वैवस्वतनामसूर्यादिकसबजगत्काप्रकाशकरनेवाला देवनामस्वप्रकाश स्वरूपसर्वान्तर्यामी तेरेहृदयमें भीनित्यस्थितहै उसपरमेश्वरसे शत्रुतावाविवाद तुझकोनकरना होय तोतूं सत्यहीबोलऔरजोतूंपरमेश्वरहीसेविरोधरक्खेगातो तुझकोकभीसुखनहीगा औरजोतूं सत्यहीबोलेगा तोगङ्गावाकुरुक्षेत्रमेंप्रायश्चितकरना वाराजगृहमेंदण्ड अथवापरलोक परजन्म मेंनरकादिकसबदुःखोंकीप्राप्तितुझकोकभीनहोगी इस्से तुझकोय-

वश्यसत्यहीबोलनाचाहियेमिथ्याकभीनहीं ॥ ११२ ॥ यस्यविद्वान्हिवदतःक्षेत्रज्ञोनाभिशंकते । तस्मान्नदेवाःश्रेयांसंलोकेऽन्यंपुरुषंविदुः ॥ ११३ ॥ भ० जिसपुरुषकाक्षेत्रज्ञजोहृदयस्थआत्मा विद्वान्नाम सबपापपुण्यकोजाननेवाला सोईअपनाआत्माजिसकर्ममेंशंकानहींकरताहै जिसमेंभयशङ्का औरलज्जाहोवै उसकर्मको कभीनहींकरता किसत्याचरणऔरसत्यवचनहीबोलताहै उससेअधिकअन्यधर्मात्मापुरुषकोईनहीं ऐसादेवनामविद्वान्लोगनिश्चितजानतेहैं औरभीमनुस्मृतिकेअष्टमाध्यायमें बहुतसाविस्तारलिखाहै सोदेखलेना व्यवहारोंकोनिश्चयकरनेकेवास्तेदूतकाभेजना औरउक्तप्रकारोंसेयथावत्निश्चयहोसक्ताहै अन्यथानहीं ॥ ११३ ॥ उपस्थमुदरंजिह्वाहस्तौपादौचपञ्चमम् । चक्षुर्नासाचकर्णौचधनंदेहस्तथैवच । ११४ ॥ भ० उपस्थनामलिंगेन्द्रिय,उदर,जिह्वा,हस्त पाद,चक्षु,नाशिका,कान,धनऔरदेहयेदशदण्डदेनेकेस्थानहैं इन्हीं मेंदण्डका स्थापनहोताहै ॥ ११४ ॥ वाग्दण्डंप्रथमंकुर्याद्धिग्दण्डंतदनन्तरम । तृतियंधनदण्डन्तुवधदण्डमतःपरम् ॥ १०५ ॥ भ० प्रथम तो वाग्दण्ड करै कि ऐसा काम कोईदुष्ट न करै दूसराधिक्दण्ड कितुझकोधिकारहै दुष्टतैंनेंनीचकर्मकिया तीसरा धनदण्डकिउससे धनलेलेना चौथाबधदण्डकिउसकोमारडालना ॥ ११५ ॥ अनादेयस्यचादाना दादेयस्यचबर्जनात् । दौर्बल्यंख्याप्यतेराज्ञःसप्रेत्येहचनश्यति ॥११६॥ राजाजोनलेनेकोवस्तुहोउसकोकभीनले औरलेनेकाअपनाजोकरउसमेंसेएककौड़ीभीनछोड़ै क्योंकिइससे राजाको दुर्बलताजानीजातीहै उसराजाकाइसलोक वापरलोकमें नाशहीहोताहै इससे क्याआयाकि राजाअपने अंशोंकोप्रजासेयथावत्लेताहै औरप्रजाकेअंशकोकभीग्रहणनहींकरता सोईराजाश्रेष्ठहै ॥ ११६ ॥ यस्त्वधर्मेणकार्याणिमोहात्कुर्यान्नराधिपः । अचिरात्तंदुरात्मानंवशेकुर्वन्तिशत्रवः ॥ ११७ ॥ भ० जो राजा अन्याय तथा मोहसे कार्योंको करताहै उसराजाका

शीघ्रहीनाशहोजाताहै क्योंकिउसकोशत्रुलोग शीघ्रहीवशमें कर लेतेहैं ॥ ११७ ॥ संभोगोदृश्यतेयत्रनदृश्ये तागमःक्वचित्। आगमःकारणंतत्रनसंभोगइतिस्थितिः ॥ ११८ ॥ प्रजामेंभोगनानाप्रकार का देखपड़े उसकों राजा विचारकरै किआमदनी इनकोकहां से होती है जोआमदनी निश्चितहोय तोकुछ चिन्तानहीं और जोनौकरीव्यापारवाकुछउद्यमनकरै औरभोगनानाप्रकारकाकरताहोय उसकोपकड़केराजादण्डदे क्योंकिअवश्ययहचौर्यादिक कुकर्मकरताहोगा इसकेपासधनकहांसेआया भोगकाकाकारण आगमहीहै औरसंभोगकाकारण संभोगकभीनहीं ऐसीमर्यादा है इसकोराजाअवश्यपालनकरै ॥ ११८ ॥ धर्मार्थंयेनदत्तंस्यात्कस्मै विद्याचतेधनम्। पश्चाच्चनतथातत्स्यान्नदेयंतस्यतद्भवेत् ११९ ॥ भ० किसीनेकिसीकोपठनपाठनअग्निहोत्रादिकयज्ञसुपात्रोंकोदेने केवास्तेवाअपनभोजनादिकनिर्वाहकेनिमित्तधनदियागया किइतनेकामकेहेतु हमआपको धनदेतेहैं सोआपइतनाहो कामइससे करैं औरपुण्यकेवास्ते दानदियाहोय फिरवहवैसाकर्मनकरै कि वेश्यागमन,वानशादिकप्रमादउसधनसेकरैतोउससे सबधनलेलियाजाय जिसनेकिदियाथावहीलेलेऔरजोउसकोवहनदेतोराजा उसकोपकड़केदण्डसेदिलादे ॥ ११९ ॥ धनुःशतंपरीहारोग्रामस्यस्यात्समन्ततः। शम्यापातास्त्रयोवापि त्रिगुणोनगरस्यतु ॥ १२० ॥ भ० गांवकेचारोंओर१००सौधनुष्य परिमाणसेमैदानरक्खै धनुष्यहोताहै साढ़ेतीनहाथकाअथवाकोईबलवानपुरुषएकदण्डाकोलेके खूबबलसेफेंकेजहांवहदण्डपड़ उससे फिरफेंके उसस्थानसेभी तीसरीबारफेंकेजहांवहदण्डाजायवहांतकमैदानरक्खै इसमेंसौ धनुष्यसेकुछअधिकमैदानरहेगा औरनगरकेचारोंओरतिगुणमैदानरक्खै क्योंकिग्रामवानगरमें वायुशुद्धरहेगा इससे रोगथोड़े होंगे औरपशुओंकोसुखहोगा इसवास्ते अवश्यइतनामैदानरखनाचाहिए१२०॥ परमंयत्नमातिष्ठेत्स्तेनानांनिग्रहेन्टयः। स्तेना-

नांनिग्रहादस्ययशोराष्ट्रंचवर्द्धते १२१॥ भ० चोरोंकेनिग्रहमेंराजा अत्यन्तयत्नकरै क्योंकिचारोंऔरदुष्टोंके निग्रहसेराजाकीकीर्त्ति औरराज्यनित्यबढ़तेचलेजातेहैं अन्यथानहीं ॥ १२१ ॥ रक्षन्धर्मे-णभूतानि राजावध्यांश्चघातयन् । यजतेऽहरहर्यज्ञैः सहस्रशतद-क्षिणैः ॥ १२२ ॥ भ० जोराजाधर्मनामन्यायसेसबभूतोंकीरक्षाक-रताहै औरदुष्टोंकोदण्डसेमारताहै वहराजासहस्रोंशसैकड़ोंरु-पैयोंसे अर्थातलक्षऔरकोटिरुपैयोंसेजानो किनित्ययज्ञहीकरता है क्योंकिराजाकामुख्यधर्मयहीहै श्रेष्ठोंकापालनऔरदुष्टोंकाता-ड़नकरना ॥ १२२ ॥ अरक्षितारंराजानं बलिंषड्भागहारिणम् । तमाहुःसर्वलोकस्यसमग्रमलहारकम् ॥ १२३ ॥ भ० जोराजाधर्म सेयथावत्प्रजाकापालननहींकरता औरप्रजासेधान्यमें षष्ठांशइ-त्यादिककरोंकोलेताहै वहराजाकरक्यालेताहैकिसबसंसारकेम-लोंकोखाताहै औरसबकेजैसेविष्टादिकोंकोशुद्धिकरताहैचांडाल वैसाहीवहराजाहै ॥ १२३॥ निग्रहेणचपापानांसाधूनांसंग्रहेणच । द्विजातयइवेज्याभिःपूयन्तेसततंनृपाः ॥ १२४ ॥ भ० जोराजापापी पुरुषोंकों अत्यन्तउग्रदण्डदेताहै औरश्रेष्ठोंकोरक्षा तथासन्मान करताहैवहराजासदापवित्रहैऔरस्वर्गकाभागीहैजैसेकिद्विजाति लोगविद्या,तपऔरयज्ञोंसेपवित्ररहतेहैं ॥ १२४ ॥ यःक्षिप्तोमर्षय-त्यार्त्तैस्तेनस्वर्गेमहीयते । यस्त्वैश्वर्यान्नक्षमतेनरकंतेनगच्छति ॥ १२५ ॥ भ० जोराजाआर्तनामदुःखीलोगगालीतकभीदें तोभीस-हनकरताहै सोईराजास्वर्गमेंपूज्यहोताहै औरजोऐश्वर्यकेअभि-मानसेकिसीकासहननहींकरता इसीसेवहराजा नरककोजाता है क्योंकिजोसमर्थहैउसीकोसहनकरनाचाहिए औरजोनिर्बलहै सोतो अपनेहीसेसहनकरेगा ॥ १२५ ॥ राजभिर्धृतदण्डास्तु,कृ-त्वापापानिमानवाः । निर्मलाःस्वर्गमायान्तिसन्तःसुकृतिनोयथा ॥ १२६ ॥ भ० जिनकेऊपरअपराधकरनेसेराजाओंकादण्डहोता है फिरवेइसलोकमेंआनन्दपातेहैं औरमरनेकेपीछे उत्तमस्वर्ग

कोप्राप्तहोतेहैं जैसेकिधर्मात्मासुकृतिलोग॥ १२६॥ येनयेनयथांगेनस्तेनोनृषुविचेष्टते । तत्तदेवहरेत्तस्य प्रत्यादेशायपार्थिवः॥ १२७॥ म० जिस२अंगसेजैसा२कर्ममनुष्योंकेबीचमेंकरैं चोरलोग उसअंगको अर्थातनेत्रसे चोरीकरनेकेवास्ते चेष्टाकरैं उसकानेत्र निकालदें जोजीभसेचोरीकाउपदेशकरैतोउसकोजीभकाटले पग औरहाथसे किसीकीवस्तुउठावै तोराजाउसकापग,हाथ काटले क्योंकिएककोदण्डदेनेसे सबलोगउसदुष्टकर्मको छोड़देतेहैं दण्ड जोहोताहै सोसबजगत्केमनुष्योंकेवास्ते उपदेशहै॥ १२७॥ अनेनविधिनाराजाकुर्वाणस्तेननिग्रहम्। यशोऽस्मिन्प्राप्नुयाल्लोकेप्रेत्यचानुत्तमंसुखम्॥ १२८॥ म० इसविधिसेचोरोंकानिग्रहकरता है वहराजाइसलोकमेंअत्यन्तकीर्त्तिकोप्राप्तहोताहै औरमरकेअत्यन्तउत्तमस्वर्गकोप्राप्तहोताहै इस्से चोरोंकानिग्रह अत्यन्तप्रयत्नसेराजाकरै॥ १२८॥ वाग्दुष्टात्तस्कराच्चैव दण्डेनैवचहिंसतः। साहसस्यनरःकर्ता विज्ञेयःपापकृत्तमः॥ १२९॥ म० जोपुरुष दुष्टवचन कहना सिखलाता वा चोरीका उपदेश करताहै और किसीकोमरवाडालताहै छलकपटसेवहसाहसिक पुरुषकहाताहै जैसेकिगुंडेऔरवैराग्यादिकसंप्रदायवाले वेसबपापियोंमेंभी बड़े पापीहैं क्योंकिपापीतो आपहीदुष्टहोताहै औरजितनेदुष्टउपदेश करनेवालेहैं वेसबजगत्कोदुष्टकरदेतेहैंइस्से॥ १२९॥ नमित्रकारणाद्राजा विपुलाद्वाधनागमात्। समुत्सृजेत्साहसिकान्सर्वभूतभयावहान्॥ १३०॥ म० जितनेपुरुषसाहसिकनाम दुष्टकर्मकरने औरकरानेवालेहोंय अर्थातअधर्मकाउपदेश,चोरी,परस्त्री,वेश्यागमनऔरजूवाइनकोकरनेवालेसबसाहसिकगिनलेनाउनकोमित्रकारणसे औरउनसेबहुतधनलाभहोताहोय तोभीइनकोराजा नछोड़ै क्योंकिसबभूतोंकोभय देनेवालेवेहीहैं॥ १३०॥ गुरुंवाबालवृद्धौवाब्राह्मणंवाबहुश्रुतम्। आततायिनमायान्तंहन्यादेवाविचारयन्॥ १३१॥ गुरुवापुत्रअथवापिताबालकवावृद्धवाब्राह्म

ण किसबशास्त्रोंको पढ़ाहुवा औरबहुश्रुतनाम सब शास्त्रकोसुनने
वाला वहजोआततायीनामधर्मकोछोड़के अधर्ममेंप्रवृत्तभयाहोय
तोइनपुरुषोंको मारहीडालनाउचितहै इसमेंकुछविचारनकर-
ना क्योंकिदण्डहीसे सबशिष्टहोजातेहैं बिनादण्डकोईनहीं इससे
सबकेऊपरदण्डकाहोनाउचितहै किकोईअपराधीपुरुषदंडकेबि-
नारहनेनपावै ॥ १३१ ॥ परदाराभिमर्षेषु प्रवृत्तान्नॄन्महीपतिः ।
उद्वेजनकरैर्दण्डैश्छिन्नयित्वाप्रवासयेत् ॥ १३२ ॥ म० जोपुरुषपर
स्त्रीगमनमेंप्रवृत्तहोवै वाअन्यपुरुषोंसेस्त्रीलोगगमनकरैं उनकेल-
लाटमेंचिन्हकरकेदेशबाहरनिकालदे जोपहिलेचोरीकरै उसके
ललाटमें कुत्ते केपंजाकीनांई लोहेकाचिन्ह अग्निमेंतपाकेलगादे
किमरणतकवहचिन्हनबिगड़े फिरजोदूसरीबार वहीपुरुषचोरी
करै तोहाथवापगउसकाराजाकाटडालै औरफिरभीचोरीकरैवा
करावै तोपहिलेदिननाककाटले दूसरेदिनकान तीसरेदिनजीभ
चौथेदिननखनिकालले पांचवेदिनआंखछठवेंदिनशिरच्छेदनक-
रदे सबमनुष्योंकेसामनेजिससे किफिरचोरीकोइच्छाभीकोइनक-
रैऔरजोपरस्त्रीवावेश्याकेपासगमनकरैअथवापरपुरुषोंसेस्त्रीलोग
गमनकरैंउनकेललाटमेंपुरुषकेलिंगइन्द्रियकाचिन्हअग्निमेंतपाके
लगादे जिससे कि मरणतक लज्जाऔरअप्रतिष्ठा उनकोहोवै उ-
नकोदेखकेऔरकोईइनकर्मोंमेंप्रवृत्तनहोयक्योंकि ॥ १३२ ॥ तत्स-
मुत्थोहिलोकस्यजायतेवर्णसंकरः। येनमूलहरोधर्मःसर्वनाशायक-
ल्पते ॥ १३३ ॥ म० इन्हीकर्मोंसेप्रजाके मनुष्यवर्णसंकर औरपापी
होजातेहैं जिससे किमूलसहित धर्मनष्टहोजाताहै इससे इनकेनि-
ग्रहमेंराजाअत्यन्तयत्नकरै ॥ १३३ ॥ भर्त्तारंलंघयेद्यातुस्त्रीज्ञातिगु-
णदर्पिता । तांश्वभिःखादयेद्राजासंस्थानेबहुसंस्थिते ॥ १३४ ॥ म०
जोस्त्रीजातिऔरगुणोंकेअभिमान अथवामूर्खतासे बिबाहितपुरुष
कोछोड़के अन्यपुरुषसेव्यभिचारकरतीहै उसकोनगरग्रामवादेश
कीस्त्रियोंऔरपुरुषोंकेसामनेकुत्तोंसेचिथवाडालै इसरीतिसेउस-

कामरणहोजाय जिस्से कि अन्यकोई स्त्रीऐसाकामकभीनकरै १३४॥ पुमांसंदाहयेत्पापं शयनेतप्तआयसे । अभ्यादध्युश्चकाष्ठानि तत्र दह्येतपापकृत् ॥ १३५ ॥ म० जोपुरुषपरस्त्रीसेगमनकरै उसकोलो- हेके पर्यंक अग्निसेतपा औरनीचेकाष्ठोंसे अग्निकरके व्यभिचार रूपपापकरनेवालेपुरुषकोसोलादे उसीकेऊपरउसकाशरीरदग्ध होजाय और मरजाय यह भी कर्म सबपुरुष और स्त्रियोंके सा- मनेही होना चाहिए जिस्से कि सबको भय होजाय फिर ऐसा कामकोईपुरुषनकरै ॥ १३५ ॥ यस्यस्तेनःपुरेनास्तिनान्यस्त्रीगोनदु- ष्टवाक् । नसाहसिकदण्डघ्नौसराजाशक्रलोकभाक् ॥ १३६ ॥ म० जिसराजाकेपुर वाराज्यमें चोर परस्त्रीगामी दुष्टवचनकाकहने- वाला साहसिकऔरदण्डघ्नअर्थातजोदण्डकोनमानै येसबनहींहैं वहराजाशक्रलोकअर्थातस्वर्गकेराज्यकाभागीहोताहै अन्यथान- हीं ॥ १३६ ॥ एतेषांनिग्रहोराज्ञः पंचानांविषयेस्वके । साम्राज्य कृत्स्वजात्येषुलोकेचैवयशस्करः ॥ १३७ ॥ म० जिसराजाकेराज्य में पूर्वोक्तपांचदुष्टपुरुषनहींहोते वहराजासबराजाओंके बीचमें संम्राट्चक्रवर्तीहोनेकेयोग्यहै औरलोगोंमेंबड़ीकीर्तिकाकरनेवा- लाहै ॥ १३७ ॥ दास्यंतुकारयन्लोभाद्ब्राह्मणःसंस्कृतान्द्विजान् । अनिच्छतःप्राभवत्याद्राज्ञादण्ड्यःशतानिषट् ॥ १३८ ॥ म० जोब्रा- ह्मणभीद्विजलोगोंसेसेवाकरातेहैंउनकीइच्छाकेबिनाउनकोराजा छःसैमुद्रादण्डकरै क्योंकिसेवाकरनाबुद्धिमान् श्रेष्ठलोगोंकाधर्म नहीं वहव्यवहार शूद्रहीकाहै क्योंकिजोमूर्खपुरुषहै वहअन्यका कामबिनासेवाकेक्याकरेगा १३८॥ अहन्यहन्यवेक्षेतकर्मांतान्वा- हनानिच । आयव्ययौचनियतावाकरान्कोषमेवच ॥ १३९ ॥ म० नित्य २ राजा सबराज कर्मोंमें अपने अधिकारी अमात्य चेष्टा वाकर्मवाहन, हस्ती,अश्व,रथ, औरनौकादिक आयनाम पदा- र्थोंकाआना व्ययनामपदार्थोंकाखर्च पदार्थोंकासमूहशस्त्रोंका समूहऔरधनकाकोष इनकोयथावत्देखतारहै किकोईपदार्थवा

कोईकर्मनष्टवाअन्यथानहोय ॥ १३९ ॥ एवंसर्वानिमान्राजाव्यवहारान्समापयन्। व्यपोह्यकिल्बिषंसर्वंप्राप्नोतिपरमांगतिम् १४०॥ भ० इसप्रकारसेसबव्यवहारोंको न्यायपूर्वकजोराजाकरताहै वह सबपापोंसेछूटके परम गतिजोमोक्ष उसको प्राप्त होता है जिस व्यवहारको कियाचाहै उसकोसम्यक् विचारकेकरै जिस्से किवह कार्यपूर्णहोजाय अपूर्ण कभीनरहै ॥ १४० ॥ अनंशौक्लीवपतितौजात्यंधवधिरौतथा। उन्मत्तजड़मूकाश्च येचकेचिन्निरिन्द्रियाः॥ १४१ ॥ भ० क्लीवनामनपुंसकपतितनामपापीजन्मसेअंध तथाबधिरउन्मत्तनामपागलजड़नाम मूर्ख,मूकऔरजोविद्याहीनवाअजितेन्द्रिय,काम,क्रोधादिकोंमेंयेसबदायभागनपावें क्योंकियेदाय भागपावेंगे तोसबपदार्थोंकाव्यर्थनाशकरदेंगे इस्से राजाकोयह बातअवश्यकरनीचाहिए अपनेपुत्र वाप्रजाके सन्तानोंको जितने पदार्थराज्यऔरधनादिकउनमेंसेकुछनदिलावै औरजोकोईमूर्खतावामोहसेउनकोदायभागदेवै तोउसकोराजादण्डदे औरनपुंसकादिकोंसेदियेहुएपदार्थकोलेकेयथावत्रक्षाकरै क्योंकिमूर्खोंके हाथपदार्थवा अधिकारआवेगा तोशीघ्रसबकानाशकरके आप हीदरिद्रबनजांयगे फिरराजाकेराज्यमें सबदरिद्रताछायजायगी फिरराजाकोभीकुछप्राप्तिप्रजासेनहोसकेगी इस्से राज्यऔरधनादिकजितनेप्रजाओंकेपदार्थहैं उनपदार्थोंकोराजाकभीनदे और नदिलावै जोसम्यक्विद्या,बुद्धिऔरविचारसे उनपदार्थोंकोरक्षामेंयोग्यहोय उसकोसम्यक्परीक्षाकरके उनपदार्थोंकास्वामीउसकोकरदे अन्यथानहीं ॥ १४१ ॥ सर्वेषामपितुन्याय्यंदातुंशक्त्यामनीषिणा। ग्रासाच्छादनमत्यन्तंपतितोह्यददद्भवेत्॥ १४२ ॥ परन्तु उननपुंसकादिकोंको अपनेसामर्थ्यकेयोग्य वहदायभागलेनेवाला भोजन,वस्त्रऔरउनकास्थानादिकसेयोगक्षेमयथावत्करै जोवह भोजनादिकभीउनकोनदेतोपतितहोजाय औरराजाउसकोदण्ड भीदे इस्से क्याआयाकिभोजनऔरवस्त्रादिकोंकेविनावेदुःखीनर-

हैं और जो उनका पुत्र योग्य होय तो उसके पिताके दायभागको राजा दिलावे इस बातको राजा प्रयत्न से करै अन्यथा राज्य वृद्धि नहीं होगी राजा अपनी प्रजाकी रच्चा और हितमें सदा प्रवृत्त रहै और प्रजा भी राजाकी रच्चा तथा हित में प्रवृत्त रहै जो प्रजाको आपत्काल आवै तो राजा सब प्रयत्नों से प्रजाकी रच्चा करै अर्थात राजाको आपत्काल किसी प्रकारका आवै तो प्रजास्थ सब मनुष्य राजाका सब प्रकार से सहाय करैं क्योंकि प्रजा राजाके पुत्रकी नांई होती है पिताको अवश्य चाहिए कि अपनी प्रजाकी सदा रच्चा करै तथा प्रजा पुत्रकी नांई जैसे कि पिता की पुत्र रच्चा करता है वैसी राजाकी प्रजा रच्चा करै और जिस बातसे प्रजाको पीड़ा होय उस बातको राजा कभी न करै तथा राजाको जिस बातसे दुःख होय उस बातको प्रजा कभी न करै जैसे कि जिन पशुओं वा जिस पदार्थों से सब प्रजाका उपकार होता है उसका राजा कभी विनाश न करै जैसे कि गाय, भैंस, छेरी, वैल और ऊंट तथा गधादिक इनको कभी न मारै और न मरवावै क्योंकि दुग्ध, घृत, अन्नादिक और सब व्यवहार इन्होंसे सब मनुष्योंका चलता है तथा राजाका भी इनका मारना दोनों को अनुचित ही है राजा भृत्य तथा युद्ध से निवृत्त कभी न होवै क्योंकि युद्धसे निवृत्त होगा तो उसी वक्त शत्रु लोग सब पदार्थों को छीन लेंगे तथा मार डालेंगे वा अत्यन्त दुःख देंगे जब युद्धका समय आवै तब राजा जल, अन्न, मनुष्य, शस्त्र, यान सब पदार्थों की पूर्त्ति रक्खै जिस्से कि किसी पदार्थ के विना दुःख किसी को न होवै और युद्ध में युद्धका आचार विचार रक्खै युद्ध करते भी जांय और खाते पीते भी जांय कुछ शंका न रक्खै उस वक्त जूते, वस्त्र, शस्त्र, धारण किये रहैं युद्ध और भोजन भी करते जांय ऐसा न करैं कि वस्त्र, जूते शस्त्र इत्यादिक सब छोड़के हाथ गोड़ धोके भोजन करैं तब तक शत्रु लोग मार डालैं देखना चाहिए कि युधिष्ठिरजी के राज्यसूय और अश्वमेध यज्ञ में सब समुद्र पार द्वीप भूगोल के सब राजा आये थे वे सब ब्राह्मण, चत्रियों के साथ एक पंक्ति में भोजन करते थे और विवाह भी

उनकापरस्परहोताथा जैसेकिकाबिलकन्धारकीकन्या गान्धारी, धृतराष्ट्रसेविवाहोगईथी तथामद्रोईरानदेशकीराजाकीकन्या पांडुसेविवाहीगईथी अर्जुनकेसाथनाग अर्थातअमेरीकाके लोगोंकी कन्या विवाही गई थी इत्यादिक व्यवहार महाभारतमें लिखेहैं औरशूद्रहीसबब्राह्मणऔरक्षत्रियादिकोंकेघरमें पाककरानेवाले थे जिनकानामसूदऐसाप्रसिद्धथा जोशूद्रपाककरनेवालाहोताहै उसकीसूदऐसीसंज्ञाहोतीथी क्योंकिब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य,वेतोविद्यापठन और पाठन तथा नाना प्रकार के पुरुषार्थ और शिल्पविद्यासे पदार्थों का रचन इन्हीमें सदा प्रवृत्त रहैं रसोई आदिकसेवासबलोगोंकीशूद्रहीकरैं अर्थातब्राह्मण,क्षत्रिय,औरवैश्यइनको भोजन एकताही होनी चाहिए जिस्से कि परस्पर प्रीति होवै औरभोजनकेबड़े २ बखेड़े हैं वेसबनष्टहोजांय कोईपरदेशकोजाताहै तबपाचादिकोंकाभारगधेकीनांईउठायाकरताहै तथा मांजनाऔरचौकादेना अन्न,काष्ट,अग्न्यादिकको अपनेहाथसेले आना औरबनाना गमनसेबड़े पीड़ितहोकेआये फिरभीसमयके ऊपरभोजनकानहोना इस्से बड़े दुःखहोतेहैं इस्से ब्राह्मण,क्षत्रिय, औरवैश्यइनकेएकभोजनहोनेसेकिसीकोकिसीप्रकारकादुःखनही होगा क्योंकिशूद्रहीसबकरदेगा औरखिलावैपिलावैगा परन्तुब्राह्मणादिकोंहीके पदार्थसबपाचादिकहोवैं शूद्रकेघरकेनहीं शुद्धहोकेबनावै औरब्राह्मणादिकविद्यादिकश्रेष्ठपदार्थों की उन्नतिकरैं जिस्से किसबसुखहोवैं इस्से इसबातको राजालोग अवश्यकरैं इसकेबिनाउनकोउन्नतिनहीं होनीहै देखनाचाहिएभोजनकेपाखण्डोंसेआर्यावर्त्त देशकानाशहोगया ब्राह्मणादिक चौकादेनेलगे ऐसाचौकादिया कि राज्य,धन औरस्वतन्त्रादिक सुखोंके ऊपर चौकाहीफेरदिया किसबआर्यावर्त्त देशको सफाचटकरदिया इस्से राजालोगोंकोचाहिएकिव्यर्थपाखण्डप्रजामेंनहोनेदेवैं विवाह काजिसकालमेंजैसापूर्वनियमलिखाहै औरपरीक्षाउसीप्रकारसे

राजाकरवावै ब्रह्मचर्याश्रमकन्या वा पुरुषकाजबहो।जाय तभीवि- वाहकोआज्ञाराजादे कियहीसब सुख औरधर्मका मूलहै अन्य- नही सबदेशदेशान्तरस्थपुरुषोंसेभोजनविवाह औरपरस्परप्रीति रक्खें प्रजामें जितनेधर्मात्मा,बुद्धिमान्,पक्षपातरहितऔरसबवि- द्याओंमेंपूर्ण इनकीसम्मतिसेसबकामऔरसबनियमकिआकरें कि जिसकेऊपर सबप्रजाप्रसन्नहोवें वहीराजाहोय उसदेशकेसबप्र- जा उसराजाको प्रसन्नरक्खें ऐसेसबपरस्पर विद्या और सबगु- णोंकीउन्नतिकरें अर्थात्राजाऔरसभाकीसम्मतिकेविना प्रजामें कुछकर्मनहोवै औरप्रजाकीसम्मतिकेविनासभाऔरराजाकुछकर्म नकरें किन्तुदोनोंकीसम्मतिकेविनाकुछराजकार्यनहोनेपावै क्यों- किइसकेहोनेसे उसदेशमेंकभीदुःखकेदिननआवेंगे सदाआनन्द होरहेगा ॥ १४२ ॥ चोरदोप्रकारकेहोतेहैं एकतोप्रसिद्धदूसराअ- प्रसिद्ध प्रसिद्धवेहोतेहैं किहाटधारीडांकू औरपाखण्डी जैसेकिवै- राग्यादिक मन्दिररचके सबमनुष्योंसेफुसलाने वादुष्टउपदेशबु- द्धिभ्रष्टकरके धनादिकपदार्थोंकोहरणकरलेतेहैं यहांतककिमनु- ष्योंकोमूड़केचेलाबनालेतेहैं इनकोराजादण्डसेनिवृत्तकरदे पूर्व- पक्षइनकोदण्डनदेनाचाहिए क्योंकिवेतोप्रसन्नतासेधनदेतेऔर लेतेहैं औरप्रसन्नतासेउनकोदेतेहैं इनकेऊपरदण्डकाहोनाउ- चितनहीं उत्तर इनकोअवश्यदण्डदेनाचाहिए क्योंकिजैसेकोई पुरुषछोटेबालककोफुसलाके वाकुछपुष्पफलवाखानेंकोचीजहाथ मेंदेके वस्त्र,आभूषण,वाधनादिक पदार्थोंको प्रसन्नतासेलेलेता है औरबालकभीउसकोप्रसन्नतासेदेदेताहै फिरलेकेवहभागजा- है फिरउसकेऊपरराजादण्डकरताहीहै वैसेहीजितनेप्रजामेंवि- द्या, बुद्धि औरविचारहीन पुरुषहैं वेबालककीनांईहैं उनमेंसेभी प्रसादचरणोदक,कण्ठी,माला,छापाऔरतिलक एकादश्यादिक महात्म्यसुनाना तीर्थनामस्मरण औरस्तोत्र,पाठइत्यादिकोंकोंसु- नाना इत्यादिकछलधनादिसेकपदार्थोंकोलेतेहैं फिरउनकेऊप-

दण्डक्योंनकरनाचाहिए किन्तुअवश्यहीकरनाचाहिए जोरा-जाइनकोदण्डनदेगा तोउसकोप्रजासबभ्रष्टहोजायगी औरराज्य काभीनाशहोजायगा क्योंकिवेअधर्मकरतेहैं औरकरातेहैं नामर-खतेहैंधर्म और वेदका चलातेहैं पाखण्डको इस्से इसकालको राजाअवश्यछेदनकरदे किकोईउसकेदेशमेंपाखण्डीनरहैऔरन होनेपावै वेपाषाणादिकोंकोमूर्त्तियोंकोवनाऔरमन्दिरकोरचके उनमेंउनमूर्त्तियोंकोवैठाके उनकानामशिवनारायणादिकरखते हैं कलावत्तूझूठेवा सच्चे आभूषणोंकोपहिराके फिरघड़ी, घंटा, नगारा, रणसिंघाऔरशंखइत्यादिकोंकोबजाके मूर्खोंकोमोहित करके सबधनादिकपदार्थोंको हरणकरलेतेहैं जैसेकिडांकूलोग नगारादिकबजाकेप्रसिद्धधनहरलेतेहैं इनठगोंकोदण्डकेबिनाक-भीनछोड़नाचाहिए क्योंकि ॥ अज्ञोभवतिवैबालः पिताभवतिम-न्त्रदः । अज्ञंहिबालमित्याहुःपितेत्येवचमन्त्रदम् ॥ १४३ ॥ म० इसमेंमनुभगवान्काप्रमाणहै किजोअज्ञानीहैसोईबालकहै और ज्ञानीअर्थात्सत्यउपदेश औरविचारकाकरनेवालासोईपिताहो-ताहै इस्से क्याआयाकिजोअज्ञानीहै उसकोबालककहनाचाहि-ए ॥ १४३ ॥ जितनेदुकानदारप्रसिद्धचोरउनकेऊपरभीराजाअत्य-न्तदृष्टिरक्खै किवेप्रसिद्धचोरीकभीनकरनेपावैं ॥ तुलामानंप्रती-मानंसर्वंचस्यात्सुलक्षितम् । षट्सुषट्सु चमासेषुपुनरेवपरीक्षये-त् ॥ १४४ ॥ म० तुलानामतराजूकोदण्डीऔरतराजूकीपरीक्षाक-रै पच्चर२ मास२ वाछटहे२ मास क्योंकिदुकानदारलोगवीचकासूत औरदोनोंपल्ले दण्डीकेवीचमें छेदकरके पाराभरदेतेहैं उस्से लेते हैं तबअधिकलेलेतेहैं औरदेतेहैं तबन्यूनदेतेहैं जबबुद्धिमान्जाय तबओरभाव जबमूर्खजायतबऔरभावऐसाकरकेमूड़लेतेहैं प्रती-मानअर्थातप्रतिमानाम छटांकआदिकउसकोघटावढ़ालेतेहैं उ-स्से भीअधिकलेतेहैंऔरन्यून देतेहैं फिरमहाजनऔरसाहूकार बनेरहतेहैं परन्तु वेबड़े ठगहैं जैसेकिव्यासअर्थात्एकादशीभाग-

व्रतादिकोंकीकथाकरनेवाले औरमन्दिरोंकेपूजारीऔरसम्प्रदाय वाले,वैरागी,शैव,वाममार्गी,आदिकपण्डितमहात्मा औरसिद्ध येतोऊपरसेबनेरहतेहैं परन्तुउनकोसबजगत्केठगनेवालेजानना वैश्यऔरयेसबप्रसिद्धचोरहैं इनकोदण्डसेगागाउपदेशकरदे ऐसा दण्डदे किकोईइसप्रकारकामनुष्य प्रजामेंनरहनेपावै तभीराजा औरप्रजाकीउन्नतिहोगी अन्यथानहीं पुराणशब्द विशेषणवाची सदाहै जैसेकिपुरातनप्राचीनसनातनशब्दहैं इनकेविरोधीनवीन अद्यतनअर्वाचीनइदानीन्तनशब्दविशेषणवाचीहैं कियहचोजन- योहै अर्थात्पुरानीनहीं ऐसेपरस्परविशेषणविरोधसेनिवर्तकहो- तेहैं तथा देवालय,देवमन्दिर,देवागार,देवायतन इत्यादिकनाम यज्ञशालाकेहैं क्योंकिजिसस्थानमेंदेवोंकोपूजाहोय उसीकेएनाम हैं देवहैंवेदकेसबमन्त्र औरपरमेश्वर क्योंकिपरमेश्वरसबकाप्र- काशकहैऔरवेदकेमन्त्रभीसबपदार्थविद्याओंकेप्रकाशनेवालेहैंइ- सेइनकानामदेवहै सोईशास्त्रमेंलिखाहै ॥ यत्रदेवतोच्यतेतत्तल्लि- ङ्गोमन्त्रः। यहनिरुक्तकावचनहै इसकायहअभिप्रायहैकिजहां२ देवताशब्दआवैवहां२मन्त्रहीकोलेना परन्तु कर्मकांडमेंउपासना और ज्ञानकांडमें परमेश्वरहीदेवहै जैसेकिअग्निमीलेपुरोहित मित्यादिकऋग्वेदकेमन्त्रहैं तथाअग्निर्देवताइत्यादिकयजुर्वेदकेम- न्त्रहैं इसमेंअग्निदेवताहै इससे अग्निशब्ददेवताविशेषणपूर्वकजिस मन्त्रमेंहोगा उससे जो अग्निशब्दवालामन्त्रहोवै उसको लेलेना जैसाकि अग्निमीलेपुरोहितमित्यादिक यहीबातव्यासजीकेशिष्य जैमिनीने कर्मकांडके ऊपर पूर्वमीमांसा एकदर्शन शास्त्रबनाया है उसमेंविस्तारसेलिखीहैकिमन्त्रहीदेवहैं औरकोईनहीं उसमें इसप्रकारकेदोषलिखेहैं जैसे ॥ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिध- र्माणिप्रथमान्यासन्। इत्यादिकमन्त्रोंसेभिन्नजोब्रह्मादिकदेव उ- नकेभीपूजनकाअत्यन्तनिषेधकियाहै सोठीकहीकियाहै क्योंकिब्र- ह्मादिकदेवनित्यपञ्चमहायज्ञ औरअग्निष्टोमादिकयज्ञोंकोकरते

हैं तबवेयजमानहोतेहैं फिरउनसेअन्यदेवकौनहैं किब्रह्मादिकोंके यज्ञमेंजिनकीपूजाकीजाय वाभागलेवैंउनकेसिवायअन्यकोईदेवदेहधारीनहींहै औरकोईकहैकिउन्होंसेअन्यदेवहैं तोंउनसेपूछाजाताहै किवेजबयज्ञकरैंगेतबउनसेआगेभीतीसरेदेवमानेंजांयगेतीसरेजबयज्ञकरैंगेतबचौथेइनसेआगेदेवमानेंजांयगे ऐसेहीअनवस्थाउनकेमतमेंआवेगी इससेपरमेश्वरऔरमन्त्रोंहीकोदेवमाननाचाहिए औरअन्यकोनहीं जबब्रह्मादिकविद्या,सिद्धज्ञान,योगऔर सत्यवचन,गुणवालोंकानिषेध जैमिनोजीनेकिया तोपाषाणादिक मूर्त्तियोंकीपूजाकानिषेधअत्यन्तहोगया क्योंकिपाषाणादिकमूर्त्तियोंमेंजोदेवभावकरनाहै सोतोअत्यन्तपामरपनाहै इसबातमेंकुछ सन्देहनहीं औरजोकहैकिवेहैतोपाषाणादिक परन्तु मेरेभावसे देवहोजातेहैंऔरफलभीदेतेहैं तोउनसेपूछनाचाहिए किआपका भावसत्यहैवामिथ्याजोवेकहैं किसत्यहैतोदुःखकाभावऔरसुखकाअभाव कोईनहींचाहता फिरउनकोदुःखकाभाव औरसुखकाअभावक्योंहोताहै जोअन्यपदार्थमेंअन्यकाभावकरनाहै सोमिथ्याही है जैसेकिअग्निमेंजलकाभावकरकेहाथडालै तोहाथजलहीजायगा इससे ऐसाभावमिथ्याहीहै औरजोपाषाणादिकोंको पाषाणादिकमानना औरदेवोंको देवमानना यहभावतोसत्यहै जैसाकि अग्निकोअग्निमानना औरजलकोजल इससे क्याआयाकि जोजैसापदार्थहै उसकोवैसाहीमाननाअन्यथानहीं फिरउनसेपूछना चाहिएकिआपलोगभावसे पाषाणादिकोंकोदेवबनालेतेहो और उनसेअपनीइच्छाकेयोग्यफललेलेतेहो तोउसभावसेआपहीदेव क्योंनहींबनजाते औरचक्रवर्त्यादिक राज्यरूपफलको क्यों नहीं पातेतथासबदुःखोंकानाशरूपफलक्योंनहींहोता फिरवेऐसाकहैं कि सुखवादुःखऔरचक्रवर्त्यादिक राज्योंकापाना कर्मोंका फल है यहबाततोआपलोगोंकीसत्यहै किजैसाकर्मकरैवैसाहीफलहोताहै फिरआपलोगोंनेकहाथाकि पाषाणादिकमूर्त्तियोंसेफलमि-

लताहै यहबातआपलोगोंकीझूठीहोगई पूर्वपक्ष जबतकवेदमन्त्रों सेप्राणप्रतिष्ठानहींकरते तबतकतोवेपाषाणादिकहीहैं औरप्राण प्रतिष्ठाकेकरनेसे वेदेवहोजातेहैं उत्तर यहबातभी आपलोगोंकी मिथ्याहै क्योंकिवेद वाऋषिमुनियोंकेकिये शास्त्रोंमें प्राणप्रतिष्ठा कापाषाणादिक मूर्त्तियोंमें एकअक्षरभीनहीं तोमन्त्र कैसेहोंगे जिस २ मन्त्रसेप्राणप्रतिष्ठाकर्तेकरातेहो उस२मन्त्रकाआपलोग अर्थभीनहींजानते जैसाकि प्राणाय,अपानाय,उद्बुध्यास्वाग्ने,इस लेकेओम् प्रतिष्ठयहांतकएकमन्त्रहै सहस्रशीर्षापुरुषः शन्नोदेवी-रभिष्टय प्राणंददातीतिप्राणदःपरमेश्वरः। इत्यादिकअर्थ मन्त्रों काहै इनपाषाणादिक मूर्त्तियोंमेंप्राण प्रतिष्ठाकरना इसकालेश माचभीसम्बन्धनहीं औरप्राणाइहागच्छन्तुसुखंचिरंतिष्ठन्तुस्वा-हा।यहतोमिथ्यासंस्कृतकिसीनेरचलियाहै औरवेदोंकेमन्त्रमेंभी आपलोगोंकेकहनेकीरीतिसेदोषआतेहैं किवेदकेमन्त्रोंसेतोप्राण प्रतिष्ठाकीजाय फिरप्राणोंका मूर्त्ति में लेशभी नहीं देखपड़ताहै इससेयहबातभीनकरनीचाहिएक्योंकिजोप्राणमूर्त्तिमेंआतेतोमूर्ति चेतनहोबनजातीसोतोजैसीपूर्वजड़थीवैसीहीजड़सदारहतीहैपा-षाणादिकमूर्त्तियोंमेंप्राणकेजाने औरआनेकाछिद्रभीनहींपरंतुमनु ष्यजोमरजाताहै उसकेशरीरमेंसबछिद्रमार्गप्राणकेजानेऔरआने केयथावतहैं उसमेंप्राणप्रतिष्ठाकरकेक्योंनहींजिलालेतेहैं किकोई मनुष्यकभी मरनेहीनपावैऐसाकिसीकाभीसामर्थ्य नहीं इससे यह बातअत्यन्तमिथ्याहै पूजानामसत्कारहै देवपूजाहोमहीसे होती है अन्यप्रकारसेनहीं क्योंकिमनुआदिकऋषिलोगोंकेग्रन्थोंमेंऔर वेदमेंयहीबातलिखीहै॥स्वाध्यायेनार्चयेतर्षीन्होमैर्देवान्यथाविधि इसपूर्वोक्तश्लोकसेहै।महीसेदेवपूजायथावत्करनीचाहिएऐसासि द्धभया।किहोमजोहैसोईदेवपूजाहै औरजिनस्थानोंमेंहोमहोवै उ-न्हकादेवालयादिकनामजानना॥ यद्वित्तंयज्ञशीलानांदेवस्वंत-द्विदुर्बुधाः। अयज्वनान्तुयद्वित्तमासुरस्वंप्रचक्षते॥ म० जोयज्ञही

कोनित्यकरताहै उसकाजोधन सोदेवशब्दवाच्यहै जोकोई यज्ञके वास्ते अन्यपुरुषोंसेधनलेके भोजनछादनादिकउस्से करै औरयज्ञ कोनकरै उसकानामदेवलहै॥ कुत्सितोदेवलोदेवलकःकुत्सितेइ-त्यनेनकन्प्रत्ययः। जोयज्ञकेधनकीचोरीकरके भोजन,छादनादिक करै उस्से परस्त्रीगमनवावेश्यागमनभीकरै उसकोदेवलककहतेहैं यहदेवलसेभीदुष्टहै इनदोनोंकाश्रेष्ठकर्मोंमें देवपितृकर्मादिक यज्ञोंमेंनिषेधहै किइनकोनिमन्त्रण वाअधिकारकभीनदेना ऐसे-हीनामस्मरणएकादशीइत्यादिककाल काश्यादिकदेश, इनकाजो महात्म्यजिसकिसीनेलिखाहै वहसवमिथ्याहीहै क्योंकिवेदादिक सत्यशास्त्रोंमेंइनकाकुछभीलेखनहीं देखनेमेंआता औरयुक्तिसेभी यहप्रतिमापूजनादिकमिथ्याहीहै ऐसेव्यवहारोंमेंराजाऔरप्रजा कोभ्रमहोसक्ताहै इसनिमित्त लिखागयाकि राजाऔरप्रजाइन भ्रमोंमेंप्रवर्तनहोवैं नकिसीकोहोनेदें जितनीयुद्धकीविद्या उसको यथावत्जानै औरप्रजाकोजनावैं नानाप्रकारकोपदार्थविद्या तथा शिल्पविद्याकाभीराजा और प्रजासदाअत्यन्तप्रकाशरक्खैं युद्धवि-द्याकेदोभेदहैं एकशस्त्रविद्या,दूसरीअस्त्रविद्या शस्त्रविद्यायहकहा-तीहै कितलवारबंदूकतोपलकड़ीपाषाण औरमल्लविद्याकिकोंका यथावत्जानना औरचलानादूसरेकेशस्त्रोंकानिवारणकरना औ-रअपनीरक्षाकरनी तथाशत्रुकोमारना औरअस्त्रविद्यायहकहा-तीहै किजोपदार्थोंकेपरस्परमेलन औरगुणोंसेहोतीहै जैसाकि अग्नेयास्त्र ऐसेपदार्थोंकारचनकरैं किवायुकेस्पर्शसे उस्से अग्नि उत्पन्नहोवै फिरउसकोफेंकनेसजोपदार्थउसकेसमोपहोय उसको वहभस्मकोकरदेताहै जैसेदोपसलाकाकोघसनेसे अग्निउत्पन्नहो-ताहै वैसेहीसवअस्त्रविद्याजाननी इसप्रकारकोआर्यावर्तमें पूर्वव-हुतपदार्थरचनेकीउन्नतिथी जैसेकिविशल्याएकऔषधिराजालो-गरचलतेथे कैसाहीघावशस्त्रसेहोजाय परन्तु उसकोघसकेलगा-या उसीवक्तवहघावपूरजाय औरउसमेंपोड़ाभीकुछनहीहोतीथो

तथाविमानअर्थातआकाशयान बहुतप्रकारोंके और नहाजसमुद्र पारजानेकेनिमित्त तथाद्वीप,द्वीपान्तरमेंजातेऔरआतेथे यहमहाभारततथाबाल्मीकीरामायणमेंलिखाहै आर्यावर्त्तकेराजाओंकीआज्ञा औरराज्यसबद्वीपद्वीपान्तरमेंथा क्योंकियुधिष्ठिरादिकोंकेराजसूयतथाअश्वमेधमें सबद्वीपद्वीपान्तरकेराजाआयेथे यहसभाऔरआश्वमेधिकपर्वमेंमहाभारतमेंलिखीहै जैनऔरमुसल्मानोंनेबहुतसे इतिहासनष्टकरदिए इससेबहुतबातयथावत् मिलतीभीनहीं बड़े बलवान्तथाविद्यावान् इसदेशमेंहोतेथे इसीदेशमें भूगोलमेंविद्यावाआचारसबमनुष्यसीखतेथे सबस्त्रियांभीआर्यावर्त्त में विद्यावानहोतीथीं सोआजकालआर्यावर्त्तदेशवालोंकी जैसीमूर्खताऔरदशाहै ऐसीकोई देशकोनहोगी फिरभीवेदादिकसत्यविद्याओंकोयथावत्पढ़ें औरपढ़ावें धर्माचरण औरश्रेष्ठआचारराजाऔरप्रजाकीपरस्परप्रीति तथापरस्परगुणग्रहणकरें तभीमनुष्योंकोआनन्दहोगाअन्यथानहीं ब्रह्मचर्याश्रम४८,४४,४०, ३६,३०,२५, वर्षतकहोगा सबविद्याओंकाग्रहणकरना वीर्यकानिग्रहजितेन्द्रियताऔरयथावत्न्यायकाकरना पक्षपातछोड़केयहीसबसुखोंकेमूलहैं मनुस्मृतिकेसप्तमअष्टमऔरनवम अध्यायोंमें राजाऔरप्रजाकेधर्मविस्तारसेलिखाहै महाभारतऔरवेदादिकोंमेंभीबहुतप्रकारसेलिखाहै राजाऔरप्रजाओंकाधर्मजोदेखाचाहै सोदेखले इसमेंतोहमने संक्षेपसेलिखाहै इसकेआगेईश्वरऔर वेदविषयमेंलिखाजायगा ॥

इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते षष्ठः समुल्लासः संपूर्णः ॥ ६ ॥

अथेश्वरवेदविषयंव्याख्यास्यामः॥ हिरण्यगर्भःसमवर्त्तताग्रे भूतस्यजातःपतिरेकआसीत् सदाधारपृथिवींद्यामुतेमांकस्मै-देवायहविषाविधेम॥ १॥ अग्रेनामजबकुछजगत् उत्पन्नहीनहीं भयाथा तबएकअद्वितीयसच्चिदानन्दस्वरूपनित्यशुद्धबुद्ध मुक्तस्वभा-वहिरण्यगर्भ अर्थातपरमेश्वरहीथा सोसबभूतोंकाजनकऔरपति है दूसराकोईनहीं सोईपरमेश्वरपृथिवीसेलेकेस्वर्गपर्यन्त जगत् कोरचके धारणकरताभया तस्मै एकस्मै परमेश्वरायदेवायहवि-नामप्राण चित्तमनादिकोंसेस्तुतिप्रार्थना औरउपासनाहमलोग नित्यकरैं॥ १॥ पूर्वपक्षईश्वरकीसिद्धि किसीप्रकारसेनहींहोसक्ती औरईश्वरकेमाननेका प्रयोजनभीकुछनहीं क्योंकिहरदीचूनाऔर जलकेमिलानेसेएकरोरीपदार्थहोजाताहै ऐसेहीपृथिव्यादिकस्थू-लभूत तथाइनकेपरमाणुऔरजीवपरस्परमिलनेसेसबपदार्थोंकी उत्पत्तिहोतीहै जैसेकिमिट्टीजलचाकऔरदण्डादिकसामग्रीसे कु-लालघटादिकपदार्थोंकोरचलेताहै इनसेभिन्नपदार्थकी अपेक्षा नहीं वैसेहीजीव औरपृथिव्यादिक भूतोंसेभिन्न कोईश्वर उसके माननेकाकुछ आवश्यकनहीं स्वभावहीसेसबजगत्होताहै और जगत्नित्यभीहै कभीइसकानाशनहींहोता फिरजगत्रूपकार्यको देखकेकारणजोईश्वरउसकाअनुमानकरतेहैं सोव्यर्थहोगया औ-रप्रत्यक्षईश्वरकाकोईगुणनहींहै इससेप्रत्यक्षभीईश्वरकेविषयमेंन-हींबनता जबईश्वरप्रत्यक्षनहींतोउपमानकैसेबनसकेगा किइस-केतुल्यईश्वरहै जबतीनप्रमाणनहींबनते तबशब्दप्रमाण कैसाब-नेगा शब्दप्रमाणमनुष्यलोगऐसेही परंपरासेकहतेऔरसुनतेच-लेआतेहैं किसीनेकिसीसेकहाकि मैनेंवन्ध्याकापुत्र सींगवालादे-खा ऐसाअन्योंसेकहाअन्योंनेंअन्यपुरुषोंसेकहा ऐसेहीअन्धपरंप-रावत्कहतेऔरसुनतेचलेआतेहैं इससे ईश्वरकीसिद्धिकिसीप्रका-रसेनहींहोसक्ती उत्तरपक्ष ईश्वरकीसिद्धियथावत्होतीहै क्योंकि जोस्वभावसेजगत्कीउत्पत्तिमानेगा उसकेमतमें यहदोषआवेगा

जगत्में जितने पदार्थहैं उनके विलक्षण २ संयोग आकृति तथा गुण और स्वभाव देखपड़तेहैं जैसेकि मनुष्य और वानर आमका और बबूरका वृक्ष इत्यादिकोंमें विलक्षण२ गुण और आकृति देखपड़तीहै इन नियमोंका कर्ता कोई न होगा तो ये नियम कभी न बनैंगे क्योंकि जड़पदार्थोंमें तो मिलने वा जुदा होनेकी यथावत् समर्थता नहीं किउनमें ज्ञानगुण हीनहीं जो ज्ञानगुणवाला होताहै वही यथावत् नियम कर सक्ताहै अन्य नहीं जो जीवहै सो ज्ञानवाला तोहै परन्तु जीवका उतना सामर्थ्य हीनहीं इससे कोई पृथिव्यादिक भूत और जीवसे भिन्न पदार्थ अवश्यहै जो सब जगत्का करता और नियमोंका नियन्ता ईश्वर अवश्यहै। किन्तु स्वभावसे जगत्की उत्पत्ति जो मानताहै उसके मतमें ए दोष आवेंगे यह पृथिवी स्वभावसे जो होती तो इसका करता और नियन्ता न होता इस पृथिवीसे भिन्न दशवेंकोश अन्तरिक्षमें दूसरी आपसे आप पृथ्वी बनजाती सो आजतक नहींबनी इससे जाना जाताहै कि जीव और सब भूतोंसे सर्वशक्तिमान् सब जगत्का कर्ता और नियन्ता परमेश्वर उसीको ईश्वर कहतेहैं दूसरा दोष कि जितने परमाणु पृथिव्यादिक भूतोंके हैं वे सब मिलगए अथवा इनसे बिना मिले भीहैं जो कहै कि सब मिलगए तो त्रसरेण्वादिक हमको प्रत्यक्ष देखपड़तेहै इससे वह बात मिथ्या होगई और जो कहै कि कुछ मिले कुछ नहीं मिले भीहैं तो उनसे पूछना चाहिए कि सब क्यों नहीं मिले अथवा पृथक् २ क्यों न रहे तथा एकप्रकारके रूपवाले सब पदार्थ क्यों नहीं हुए भिन्न २ संयोग और रूपके होनेसे सब जगत्का कर्ता और नियन्ता अवश्य सिद्ध होताहै तीसरा दोष उसके मतमें यहहै कि कोई कर्म कर्ताके बिना होताहै वा नहीं जो वह कहैकि बनादिकोंमें घासादिक पदार्थ आपहीसे होतेहैं उसका कर्ता और निमित्त कोई नहीं देखपड़ता उससे पूछना चाहिए कि पृथिव्यादिक सब भूत निमित्त हैं और सब बीज बिना कर्ता और नियन्ताके कभी नहीं बनसक्ते क्योंकि आमके बीजमें जैसा परमाणुओंका मेलन कर्ताने कियाहै वैसेही

अङ्कुरपत्रपुष्पफलकाष्ठऔरस्वाददेखनेमेंआतेहैं उस्सेभिन्नजोकट-
लीउसकेअवयववास्वाद आमसेकोईनहींमिलतेक्योंकिसबपदार्थों
मेंपरमाणुतोवेहीहैं फिररचनेवालेकेबिनाभिन्न२पदार्थकैसेहोगें
इस्से जानाजाताहैकि सबजगतकारचनेवालाकोईपदार्थहै जोचू-
ना,हर्दीऔरजलकेमिलानेसेरोरीहोतीहै उसकामेलनकरनेवा-
लाजबमिलाताहै तबवेमिलकेरोरीहोतीहै वेंआपसेआपतोनही
मिलते इस्से वहदृष्टान्त मिथ्याहोगया कुम्हारकाजोदृष्टान्त दि-
या सोकोंहारस्थानीआपनेजीवकोरक्खा क्योंकिईश्वरकोतोआप
मानतेहीनहीं सोजीवसर्वशक्तिमान्नहीं क्योंकिपरमाण्वादिकों
कासंयोग वावियोगजीव कभीनहींकरसक्ता जोजीवकरसक्ता तो
चाहतातोसूर्य,चन्द्रादिकलोकोंकोरचलेता सोरचसक्तानहीं इ-
स्से जाना जाताहैकि सबजगत्काकर्ता औरनियन्ता कोईअवश्य
है जबजगत्रचागयाहै तोनित्यकभीनहींहोसक्ता क्योंकिजबतक
नहींरचाथातबतकनहींथा औरजोरचनेसेभयाहै सोकभीमिट-
भीजायगा विनाकर्तावाकारके कर्मवाकार्यनहींहोता तोयहना-
नाप्रकारकीरचना औरइतनाबड़ाकार्य जगत्कभीनहींहोसक्ता
इस्से तीनप्रकारजोअनुमानहै सोईश्वरमेंयथावत्घटताहै किका-
रणकेविनाकार्य कभीनहींहोसक्ता कार्यसेकारणअवश्यजानाजा-
ताहै औरकर्ताकेबिना कर्मनहीहोता इस्से पूर्ववत् शेषवत् और
सामान्यतो दृष्टतीनप्रकारकाअनुमान ईश्वरकोयथावत्सिद्धकर-
ताहै ईश्वरकेसर्वशक्तिमत्वदयालुता औरन्यायकारित्वादिक गुण
जगत्मेंप्रत्यक्षदेखपड़तेहैं स्वाभाविकगुणऔरगुणीका नित्यसंबंध
होताहै जैसाकिरूपऔरअग्निका सोजैसेअग्निकारूपदेखपड़ता
है औरअग्निनेत्रसे नहींदेखपड़ता परन्तुहमलोग ज्ञानसेअग्नि
कोप्रत्यक्षदेखतेहैं क्योंकिअग्निकोबुद्धिसे प्रत्यक्षहमलोग नदेखते
तोअग्निकोलेआने औरअग्निसेजितनेव्यवहारहोतेहैं उनमेंप्रवृ-
त्तकभीनहोते इस्से जैसा अग्नि हमकोप्रत्यक्षहै गुणऔर गुणीके

ज्ञानसे वैसे ज्ञानसे परमेश्वरभी प्रत्यक्ष है जो धर्मात्मा और योगी पुरुष होते हैं उनको परमाणु जीव और परमेश्वर भी यथावत् प्रत्यक्ष होते हैं जो कोई इसमें संदेह करै सो करके देखले उपमान प्रमाणतो परमेश्वर में नहीं हो सक्ता क्योंकि परमेश्वर के सदृश कोई पदार्थ नहीं जिसकी उपमा परमेश्वर में होसकै परन्तु परमेश्वर की उपमा परमेश्वर ही में होसक्ती है ऐसा जगत् में व्यवहार देखने में आता है कि आप के तुल्य आप ही हो वैसे हम लोग भी कहसक्ते हैं कि परमेश्वर के तुल्य परमेश्वर ही है और कोई नहीं जबतो न प्रमाणों से ईश्वर की सिद्धि होगई तो शब्द प्रमाण भी अवश्य होगा सो शब्द प्रमाण इस प्रकार का लेना ॥ दिव्योह्यमूर्त्तः पुरुषः सबाह्याभ्यन्तरोह्यजः । अप्रमाणोह्यमनाः शुभ्रोऽक्षरात्परतः परः ॥ २ ॥ दिव्य नाम सब जगत् का प्रकाशक अमूर्त्त निराकार और सदा अशरीर पुरुष नाम सब जगत् में पूर्ण सोई बाहर और भीतर एकरस अज कभी जिसका जन्म नहीं होता अप्राण नाम किसी प्रकार की चेष्टा वा लीला नहीं करता अमना नाम रागद्वेष संकल्प विकल्पादिक दोष रहित अक्षर जो जीव उससे परे जो प्रकृति उससे भी परमेश्वर श्रेष्ठ और पर है ॥ २ ॥ नतत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥ ३ ॥ मन्त्र० उस परमेश्वर में सूर्य चन्द्र, तारे, विजली, और अग्नि एक कुछ भी प्रकाश नहीं करसक्ते किन्तु सूर्यादिकों को परमेश्वर ही प्रकाशते हैं सब जितना जगत् है उसके प्रकाश से प्रकाशित होता है परमेश्वर का प्रकाशक कोई नहीं ॥ ३ ॥ अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः । स वेत्ति विश्वं न च तस्यास्ति वेत्ता तमाहुरग्र्यं पुरुषं पुराणम् ॥ ४ ॥ मन्त्र० । परमेश्वर निराकार है परन्तु उसमें शक्तियां सब हैं हाथ परमेश्वर को नहीं है परन्तु हाथ की शक्ति ऐसी है कि सब चराचर को पकड़के थांभ रक्खा है तथा पाद नहीं है परन्तु सब से वेगवाला है नेत्र नहीं है परन्तु चराचर को यथावत् सब काल में देख रहा है कान नहीं है पर-

न्तु चराचरकी बात सुनता है मन, बुद्धि, चित्त और अहङ्कार तो नहीं है परन्तु मनन निश्चय और स्मरण अपने स्वरूप का आपही ज्ञाननेवाला है और वह सबको जानता है परन्तु उसको कोई नहीं जानसक्ता किइतना बड़ा वा इसप्रकारका वा इतना सामर्थ्य उसमें है ऐसा कोई नहीं जानसक्ता उसपरमेश्वरको ज्ञानी और शास्त्र सर्वोत्कृष्ट पूर्ण और सनातन कहते हैं ॥ ४ ॥ अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययंतथारसन्नित्यमगन्धवच्चयत्। अनाद्यनन्तंमहतःपरंध्रुवंनिचाय्यतंमृत्युमुखात्प्रमुच्यते ॥ ५ ॥ मन्त्र॰ वह परमेश्वर अशब्द अर्थात कहने और सुनने मात्र से नहीं जाना जाता बिना उसके आज्ञापालन विज्ञान प्रीति और योगाभ्यास के स्पर्श रूप रस और गन्ध परमेश्वर में नही इससे परमेश्वर का ज्ञान सहस्रों पुरुषों में किसी को होता है सबको नहीं वह कैसा है अनादि और अन्त जिसका आदिकारण अथवा अन्त को कोई नहीं देख सक्ता क्योंकि उसका मरण वा अन्त नहीं हैं तो कैसे कोई देख सके परमेश्वर बुद्धि से भी सूक्ष्म और परे है जो कोई परमेश्वर को जानता है सो जन्ममरणादिक सब दुःखों से छूटके परमेश्वर को प्राप्त होता है फिर कभी उसको दुःख लेशमात्र भी नही होता ॥ ५ ॥ समाधिर्धूतमलस्यचेतसोनिवेशितस्यात्मनियत्सुखंभवेत्। नशक्यतेवर्णयितुंगिरातदास्वयंतदन्तःकरणेनगृह्यते ॥ ६ ॥ म॰ जिस पुरुष का धर्माचरण विद्या और समाधियोग से चित्त शुद्ध होजाता है उसका चित्त परमेश्वर के ज्ञान में और प्राप्ति के योग्य होता है जब समाधि योग में चित्त और परमेश्वर का योग होता है उसवक्त ऐसा आनन्द उस जीव को होता है कि कहने में भी नहीं आता क्योंकि वह जीव अपने अन्तःकरण अर्थात बुद्धि ही से ग्रहण करता है वहां तीसरा कोई नहीं है कि जिस्से कहैं कि फिर जाग्रतावस्था कहने में भी नहीं आता क्योंकि वह परमेश्वर उसका आनन्द और उसको जाननेवाला जीव तीनों सूक्ष्म पदार्थ हैं इस्से वह सब आनन्द कहने में नहीं आता ॥ ६ ॥ आश्चर्योऽस्यवक्ताकुशलोऽस्यलब्धा। आश्चर्योऽस्यज्ञाताकुशलानुशिष्टः

॥ ७ ॥ मन्त्र० परमेश्वरकावक्ताऔरप्राप्तिहोनेवालादोनोंआश्चर्य पुरुषहैं क्योंकिआश्चर्यजोपरमेश्वर उसकोजाननेवालाभी आश्चर्य होहोताहै जिसकोब्रह्मवित्पुरुषोंकाउपदेशहुआहोय औरअपने भीसबप्रकारसेविद्यावान्शुद्धऔरयोगीतबपरमेश्वरकोजानसक्ता है सोभीआश्चर्यहैअन्यथानहीं ॥ ७ ॥ सर्वेवेदायत्पदमामनन्तितपांसिसर्वाणिचयद्वदन्ति यदिच्छन्तोब्रह्मचर्यंचरन्तितत्ते पदंसंग्रहेणब्रवीम्योमेतत् ॥ ८ ॥ जिसपदअर्थात्परमेश्वर सबवेदअभ्यास पुनःपुनः उसीहीकाकथनकरतेहैं अर्थात्वेपरमेश्वरहीकोकहते हैं औरउसकेवास्तेहीहै जिसकोप्राप्तिकोइच्छासेमनुष्यलोगब्रह्मचर्यसेयथावत्विद्यापढ़तेहैं किहमलोगपरमेश्वरकोजानैं उसकी प्राप्तिकेविना अनन्तसुखऔरसबदुःखकी निवृत्तिनहींहोती यही बातयमराजनचकेतासेकहतेहैं किहेनचकेताजो ओङ्कारकाअर्थ हैसोईपरब्रह्महै ॥ ८ ॥ एकोदेवःसर्वभूतेषुगूढ़ःसर्वव्यापीसर्वभूतान्तरात्मा । सर्वाध्यक्षःसर्वभूताधिवासःसाक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्च ॥ ९ ॥ मन्त्र एकजोअद्वितीयपरमेश्वरब्रह्महै सोईसबभूतोंमेंगूढ़ है अर्थात्गुप्तकिसबजगहमेंप्राप्तहै फिरमूढ़लोगउसको नहींजानते सबभूतोंकाअन्तरात्मा किनिकटसेभीनिकटसबसंसारकावही है अध्यक्षनामस्वामीऔरसबभूतोंकानिवासस्थानसबसेश्रेष्ठ सबकेऊपरविराजमानसबकासाक्षी किकोईकर्मजीवकाउनसेविना जानानहीरहताकिन्तुसबजानतेहैं चेतनस्वरूपऔरकेवलअर्थात उसमेंकुछभीनहींमिलताहै एकरसचेतनस्वरूपहीहै जैसादूधमें जलमिलारहताहै वैसानहीं जितनेअविद्या जन्म,मरण, हर्ष, शोक,क्षुधा,तृषा, तमोरजः औरसत्त्वगुणादिकजगत्केहैं उनसे सदाभिन्नहोनेसेपरमेश्वरनिर्गुणहै औरसच्चिदानन्दसर्वशक्तिमत्वदयालुन्यायकारित्व औरसर्वज्ञादिक गुणोंसेसदासगुणहै ९ ॥ नतस्यकार्यंकरणंचविद्यतेनतत्समश्चाभ्यधिकश्चादृश्यते । परास्यशक्तिर्विविधैवश्रूयतेस्वाभाविकोज्ञानबलक्रियाच १० ॥ मन्त्र परमेश्व-

रसदाकृतकृत्यहै उसकोकर्तव्यकुछनहीं किइसकोकरनेकेबिनाहृ-
मकोसुखनहीं होगा ऐसानहीं करनाजैसाकिचक्षुकेबिनारूपनहीं
देखसक्ता ऐसाभीपरमेश्वरमेंनहीं किन्तुविविधशक्ति स्वाभाविक
अनन्तसामर्थ्यपरमेश्वरकासुनाजाताहै किअनन्तज्ञान,अनन्तब-
लऔरअनन्तक्रियापरमेश्वरमेंस्वाभाविकहीहै इसमेंकुछसन्देह
नहीं क्योंकिपरमेश्वरकेतुल्यवाअधिककोईनहीं ॥ १० ॥ एषसर्वे-
षुभूतेषुगूढ़ात्मानप्रकाशते । दृश्यतेत्वग्र्ययाबुद्ध्यासूक्ष्मयासूक्ष्मदर्शि-
भिः ॥ ११ ॥ मन्त्र यहजोपरमेश्वरसबभूतोंमेंसूक्ष्मव्यापकऔरगुप्त
है इससे मूढ़जोविज्ञानऔरयोगाभ्यासहो उनकोबुद्धिमेंनहींप्रका-
शितहै जितनेसूक्ष्मदर्शीयथावत् विद्यावान्उनकीशुद्धि औरसूक्ष्म
जोबुद्धि,विद्या,विज्ञान,योगाभ्यास सेहोताहै उससे परमेश्वरको
वेयथावत्जानतेहैं अन्यथानहीं ॥ ११ ॥ तदेजतितन्नैजतितद्दूरे-
तद्वन्तिके । तदन्तरस्यसर्वस्यतदुसर्वस्यास्यबाह्यतः ॥ १२ ॥ मन्त्र
सोईपरमेश्वर प्राणादिकोंको चेष्टाकरताहै औरआपअचलहीहै
वहअधर्मात्माऔरमूढ़ पुरुषोंसेअत्यन्तदूरहै औरधर्मात्माविज्ञान
वालेपुरुषोंसेअत्यन्तनिकट अर्थातउनकाअन्तर्यामीहीहै सोईब्रह्म
सबजगत्के बाहरभीतर औरमध्यमेंपूर्णहै ॥ १२ ॥ अनेजदेकम्म-
नसोजवीयोनैनद्देवाआप्नुवन्पूर्वमर्षत् । तद्धावतोन्यानत्येतितिष्ठ-
त्तस्मिन्नपोमातरिश्वादधाति ॥१३॥ मन्त्र यहब्रह्मनिष्कंपनिश्चलहै
परन्तुमनसेभीवेगवालाहै इसब्रह्मकोदेव अर्थात् चक्षुरादिक इ-
न्द्रियांप्राप्तनहींहोती क्योंकिइन्द्रियऔर मनकावहीआत्माहै सो
आत्माकाबाह्यजोशरीर सोउसकोकभीनहींदेखसक्ता वहआत्मा
तोसबकोदेखसक्ताहीहै औरमनवेगसेजहां२ जाताहै वहां२ व्या-
पकहोनेसे परमेश्वरआगेदेखपड़ताहै सोपरमेश्वरजितनेवेगवा-
लेहैं उनकोउल्लङ्घनकरलेताहै अर्थात्परमेश्वरकेकोईगुणकेतुल्य
वाअधिककिसीकागुणसामर्थ्यनहीं सोपरमेश्वरस्थिरव्यापकऔर
चेतनउसके सत्तासे उसमेंठहराभया मातरिश्वा अर्थात्माताजो

आकाशउसमेंचलनेऔररहनेवाला जोप्रमाणसोचेष्टादिकसबकर्मोंकाकर्ताहैअन्यथानहीं १३ ॥ यस्मिन्सर्वाणिभूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः। तत्रकोमोहःकःशोकएकत्वमनुपश्यतः १४ ॥ मन्त्र जिसपरमेश्वरकेज्ञानसेसबभूतप्राणिमात्रआत्माकेतुल्यहोजातेहैं किकिसीभूतसेनरागऔरनद्वेषउसकोकभीरागऔरनहींहोतेक्योंकिवह एकजोअद्वितीयउसपरमेश्वरमेंस्थिरज्ञानवालाजोपुरुषउनकोकिसीमेंमोहवाकिसीसेक्याशोकअर्थात्उसकोकभीमोहवाशोकहोताहीनहीं १४ ॥ वेदाहमेतंपुरुषम्महान्तमादित्यवर्णन्तमसःपरस्तात्। तमेवविदित्वातिमृत्युमेतिनान्यःपन्थाविद्यतेऽयनाय १५ ॥ मन्त्र जोब्रह्मवित्पुरुषउसकायहअनुभवहै किपूर्णसबसेबड़ाप्रकाशस्वरूप औरसबकाप्रकाश जन्ममरणसुखदुःख औरअविद्या जोतम उससेभिन्नउसपरमेश्वर कोजानताहूं सबदुःखसेछूटकेपरमानन्द उसकोजाननेसे यथावत् प्राप्तभयाहूं उसीको जानके अतिमृत्यु जोपरमेश्वर किजिसमेंजन्ममरणादिकदुःखोंकालेशमात्रभीनहीं अर्थात्मोक्षपदकोप्राप्तहोताहै औरकोईइससे भिन्नमोक्षकामार्ग नहीं ॥ १५ ॥ सपर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरंशुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीषीपरिभूःस्वयंभूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यःसमाभ्यः ॥ १६ ॥ मन्त्र सोपरमेश्वरसबपदार्थोंमें एकरसअद्वितीयपूर्णहै सबजगत्कर्ता स्थूलसूक्ष्म औरअकायअर्थात् जागृत और सुषुप्ति इनतीन शरीर रहित शुद्ध निर्मल सर्वदोष रहित जिसकोपापकालेश मात्रभीसम्बन्धनहीं सर्वज्ञसर्वविद्वान् अनन्त जिसकाविचारऔरज्ञान सबकेऊपरविराजमान स्वयंभूनामजिसकीकभीउत्पत्तिनहोय आपसेआपहीसदासनातनहोवै जिन्नेवेदरूपसर्वज्ञ विद्याकाहिरण्यगर्भादिक शाश्वतनामनिरन्तरप्रजाओंकोअर्थोंकाअर्थात्वेदोंका यथावत्उपदेशकियाहै उसपरमेकोस्तुतिप्रार्थनाऔरउपासनाकरनीचाहिए इतनासंक्षेपसेसंहिताऔरब्राह्मणोंकेमन्त्रोंसे शब्दप्रमाणलिखदियासोजानलेना पू-

र्वपक्ष परमेश्वररागीहैवाविरक्तवाउदासीनजोरागीहोगातोदुःखी वाअसमर्थहोगा सदाजोविरक्तहोगा तोकुछभीनकरेगा औरसं-सारकाधारणभीनहोगा औरजो उदासीनहोगातोअपनेस्वरूप-स्थ साक्षीवत्रहेगा अर्थात्बद्वजोईश्वरहोगा तोकभी रचसकेगा नहीं मुक्तहोगातोजगत्कोहीरचेगानहीं इससे ईश्वरकीसिद्धिन-हीहोती उत्तर परमेश्वररागीनहीं क्योंकिअपनेसेउत्तमकोईप-दार्थनहीहै किजिसमेंरागकरै अपनेस्वरूपमेंअपनारागकभीनहीं बनता एवंव्यापीकेहोनेसेअप्राप्तपदार्थईश्वरकोकोईनहीं तथास-र्वशक्तिमान् केहोनेसेभीरागईश्वरमेंनहींबनसक्ता विरक्तभीईश्वर नहीं क्योंकिपहिलेजोबद्वहोताहै सोईबन्धनकेछूटनेसेविरक्तकहा-ताहै सोईश्वरकोबन्धनतीनोंकालमेंभीनहींभया फिरउसकोविर-क्त कैसेकहसकैं उदासीनभीवहहोताहै किपहिले बन्धनमेंहोयपीछेज्ञानकेहोनेसेउदासीनहोजाय ऐसाईश्वरनहीं ईश्वरकीअ-चिन्त्यशक्तिहै किसबमेंरहै औरकिसीकाभी लेशमात्रसंगदोष न लगे इससे ऐसीशंकाजीवकेवीचमेंघटसक्तीहै ईश्वरमेंनहीं पूर्वपक्ष जितनेपदार्थहैं वेसबसन्देहयुक्तहीहैं निश्चययथावत्एककाभीनहीं होता उत्तर आपनेयह बातकही सोनिश्चितहै वानहीं जोकहो किनिश्चितहै तोसबपदार्थसन्देहयुक्तनहींभये आपकीबातनिश्चित होनेसे औरजोआपकहैं कियहमेरीबातभीनिश्चितनहीं तोआप कीबातका प्रमाणहीनहींहुआ। क्योंकि लक्षणप्रमाणाभ्यांपदार्थ-सिद्धिः। लक्षणऔरप्रमाणोंकेविना किसीपदार्थकीनिश्चितसिद्धि नहींहोती आपनेसबपदार्थोंमेंसन्देहसिद्धकहा सोकिसप्रमाणसेउ-सकीसिद्धिहोतीहै किसीप्रमाणसेसन्देहकोआपसिद्धकियाचाहो-गे तोउसप्रमाणमेंभी आपकानिश्चय नहींहोगा क्योंकि आपसब पदार्थोंकोसन्देहयुक्तकहचुकेहैं इससेआपकासन्देहहीसन्देहनष्ट होगया फिरआपकिसीव्यवहारमेंप्रवर्त्त नहीसकोगे जैसेकिगमन भोजन, छादन, देखनासुननाइत्यादिकभी सन्देहयुक्तहोनेसेप्रष्ट-

त्तिभीइनमेंनहोनीचाहिए प्रवृत्तितोआपकर्त्तेहीहैं इस्से आपनेंजो कहाकि सबव्यवहारऔरसबपदार्थ सन्देहयुक्तहीहैं यहबातआप कीमिथ्याहोगई इस्सेक्याआयाकिलक्षणऔरप्रमाणोंसेजोनिश्चित पदार्थहोताहै उसकोनिश्चितहीमाननाचाहिए इसमेंसन्देहकर-नाव्यर्थहीहै सोप्रत्यक्षादिकप्रमाणोंसेईश्वरकोयथावत्सिद्धिहैतो हीहै उसकोमाननाहीचाहिए प्रश्न पृथिवी,जल,अग्नि,वायु, इन चारोंकेमिलनेसे चेतनभीउसमेंहोताहै जबवेपृथक्२होजातेहैं तबसबकलाविगड़जातीहैं फिरउसमेंकुछनहींरहता इस्से जगत् काग्चनेवालाकोईनहीं आपसेआपहीजगतऔरजीवहोताहै उ-त्तर आपभीइनचारोंकोमिलाकेजीवऔरजीवकेजितनेगुणउनको देखलादेवैं सोकभोनहींदेखपडेगें क्योंकिपहिलेहीसे सबस्थूल भूतोंमेंसबसूक्ष्मभूतमिलेरहेहैं फिरउनमेंज्ञानादिकगुण क्योंनही देखपड़ते इस्से जीवपदार्थ इनभूतोंसेभिन्नहोहै जिसकेयेगुणहैं इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनोलिङ्गम् । यहगौतममुनि कासूत्रहै इसकायहअभिप्रायहै किइच्छाकिसोप्रकारकाचाहना जिसकेगुणोंकोजानताहै उसकीप्राप्तिकीचाहनाकरताहै जिसमें दोषोंकोजानताहै उसमें द्वेष अर्थात् चाहना नहींकरता प्रयत्न नानाप्रकारकीशिल्पविद्यासे पदार्थोंकारचना शरीरतथाभार काउठानाइसकानामप्रयत्नहै सुखनामअनुकूलकाचाहना और जानना दुःखप्रतिकूलकाजानना औरछोड़नेकीइच्छाकरना ज्ञा-नजैसाजोपदार्थहै उसकातत्त्वपर्यन्त यथावत्विवेककरना इसका नामजीवहै येगुणपृथिव्यादिकजड़ोंकेनहीं किन्तुजीवहीकेहैं लिं-गशरीरबुद्धि जिस्सेजीवनिश्चयकरताहै बुद्धिरुपलब्धिर्ज्ञानमित्यन-र्थान्तरम् । यहगौतमजीकासूत्रहै बुद्धिउपलब्धिऔरज्ञानयेतीनों नाम एकहीपदार्थ केहैं मनजिस्से एकपदार्थकोविचारकेदूसरेका विचारकरताहै ॥ युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसोलिंगम् । यहगौत० जिस्सेएकपदार्थहीकोएककालमेंग्रहणकरताहै एककोग्रहणकरके

दूसरेकादूसरेकालमेंग्रहणकरताहै एककालमेंदोनोंकानहीं इ-
सकानाममनचित्त जिस्से किजीवपूर्वापरकास्मरणकरताहै जोकि
पहिलेदेखाऔरसुनाथा इसकानामचित्तहै अहङ्कारजिस्से अ-
भिमानजीवकरताहै येचारमिलकेअन्तःकरणकहाताहै इस्से जी-
वभीतरमनोराज्यकरताहै येचारोंएकहीहैं परन्तु व्यापारभेदसे
चारभिन्न२नाकहैं बाह्यकरणजिस्से कि बाहरजीवव्यापारकरता
श्रोत्रजिस्से शब्दसुनताहै त्वचाजिस्से स्पर्शजानताहै नेत्रजिस्सेरूप
कोजानताहै जिह्वाजिस्से रसकोजानताहै नासिकाजिस्सेगन्धको
जानताहै येपांचज्ञानइन्द्रियांहैं इनसेजीवबाह्यपदार्थोंकोजान-
ताहै वाक्जिस्से शब्दबोलताहै पादजिस्से गमनकरताहै हस्तजि-
स्से ग्रहणकरताहै वायुजिस्से मलकात्यागकरताहै लिंगजिस्से मूत्र
औरविषयभोगकरताहै येपांचकर्मेन्द्रियहैं इनसेजीवबाह्यकर्मक-
रताहै प्राणजिस्से ऊर्द्ध्व चेष्टाकरताहै अपानजिस्से अधोचेष्टाकर-
ताहै व्यानजिस्से सबसन्धियोंमेंचेष्टाकरताहै उदानजिस्सेजलऔ-
रअन्नकोकण्ठसेभीतरआकर्षणकरलेताहै समानजिस्से नाभिद्वा-
रसबरसोंको सबशरीरमेंप्राप्तकरदेताहै येपांचमुख्यप्राणकहाते
हैं नागजिस्से डकारलेताहै कूर्मजिस्से नेत्रकोखोलताऔरमूंदता
है कृकलजिस्से छींकताहै देवदत्तजिस्से जम्भाईलेताहै धनञ्जय
जिस्से शरीरकीपुष्टिकरताहै औरमरेपीछे शरीरकोनहींछोड़ता
जोकिमुरदेकोफुलाताहै येपांचउपप्राणहैं येदशएकहीहैं परन्तु
क्रियाभेदसेदशनामभयेहैं ये२४तत्त्वमिलकेलिंगशरीरकहाताहै
कोईउपप्राणकोनहींमानता उसकेमतमें १९ होतेहैं औरकोई
पांचसूक्ष्मभूतजोकिपरमाणुरूपहैं औरपूर्वोक्तचारभेदअन्तःकर-
णकेइननवतत्त्वोंको लिंगशरीरकहाताहै इसलिंगशरीरमेंजोअ-
धिष्ठाताकर्ता औरभोक्ताउसकोजीवकहतेहैं जोकिएककालमेंसब
बुध्यादिकोंकेकियेकर्मोंकाअनुभवकरताहै चेतनस्वरूपहैउसका
नामजीवहै उसकोअधिकव्याख्यामुक्तिके प्रकर्णमेंकिईजायगी सो

जीवभिन्नपदार्थहीहै चारोंकेमिलानेसे जीवकेगुण औरजीवकभी नहींउत्पन्नहोता इस्से यहबातकहीथी किचारोंकेमिलनेसे जीव भीहोताहै यहबातखण्डितहोगई प्रश्न ईश्वर,सर्वज्ञऔरत्रिकाल दर्शीहै जैसाईश्वरनेअपनेज्ञानसेनिश्चितकियाहै वैसाहीजीवपाप वापुण्यकरेगा फिरजीवको दण्डक्योंहोताहै क्योंकिउस्से अन्यथा जीवकुछनहींकरसक्ता जोअन्यथाजीवकरेगातो ईश्वरकासर्वज्ञा-नमष्टहोजायगा इस्से जैसाईश्वरनेपहिलेहीनिश्चयकररक्खाहै वै-साजीवकरताहै ईश्वरजानताभीहै फिरआपसेउसकोनिवृत्तक्यों नहींकरदेता जोनिवृत्त नहींकरदेता तोदण्ड क्योंदेताहै उत्तर ईश्वरहै अत्यन्तदयालु सबजीवोंकोईश्वरनेरचा तबविचारकरके सबकोस्वतन्त्रहीरखदिये क्योंकिपरतन्त्रकेरखनेसेकिसीकोकभीसु-खनहींहोता जैसेकिकोईअपनीइच्छासे मरणतकएकस्थानमेंर-हताहै तोभीइसमेंउसकोकुछदुःखनहींमालूमहोता उसकोजो कोईएकघड़ीभरभीपराधीनबैठायरक्खै तोबड़ाउसकोदुःखहोता है इस्सेपरमेश्वरनेसबजीवस्वतन्त्ररक्खेहैं जोचाहतातोपरतन्त्रभी रखसक्ता परन्तुपरमेश्वरबड़ादयालु औरकृपासागरहै इस्से सब स्वतन्त्ररक्खेहैं परन्तुआज्ञा ईश्वरकोहै किजोजैसाकर्म करैगा वहवैसाफलभोगेगा सोआज्ञाउसकोसत्यहीहै इस्से क्याआयाकि कर्मोंकेकरने औरपुण्योंके फलभोगनेमेंजीवस्वतन्त्रहै औरपापों केफलभोगनेमेंपराधीनहैं जीवकर्मोंकेकरनेवाले औरभोगनेवाले हैं जैसाजीवकर्मकरेगा वैसाहीईश्वरने ज्ञानसेनिश्चय पहिलेही कियाहै औरभोक्तावहीहै त्रिकालज्ञानमेंईश्वरस्वतन्त्रऔरअपने कर्मोंकेकरनेमेंतथाभोगनेमेंजीवस्वतन्त्रहैं प्रश्न जीवकानिजस्वरू-पक्या॥ उत्तर विशिष्टस्यजीवत्वमन्वयव्यतिरेकाभ्याम्। यहकपिल मुनिजीकासूत्रहै इसकायहअभिप्रायहै किजैसाअयनामिट्टोसेव-नताहै परन्तु शुद्धकेहोनेसे जोउसकेसाम्हनेपदार्थहोगा सोउसमें यथावत् देखपड़ेगा अथवालोहेकोअग्निमेंरखनेसेअग्निकेगुणवा-

लाहोताहै उनदोनोंमें प्रतिबिम्ब वा अग्निभिन्नहै क्योंकिउनसे
पृथक् भीवे देख पड़ते हैं औरहो भी जातेहैं इस्से दर्पण और
लोहेसेव्यतिरिक्तहैंअर्थात्जुदेहैं औरजोकेवलजुदेहोते तोउनके
गुणदर्पण औरलोहेमें नहोते इस्से उनमें अन्वयभी उनकादेख
पडताहै वैसेहीलिंगशरीरजोहै उसकाअधिष्ठाताहै सोईजीवहै
दर्पणकेतुल्य अन्तःकरणशुद्धहै स्थूलदेहबाहरकाहै औरजिसमें
गाढनिद्राहोतीहै सत्व रजोऔरतमोगुणमिलकेप्रकृतिकहातीहै
जिसकानामअव्यक्तपरमसूक्ष्मभूत औरप्रधानभीहै वहकारणश-
रीरकहलाताहै सोसबप्राणियोंकाव्यापकके होनेसेएकहीहैदोनों
केबीचमेंमध्यस्थलिंगशरीरहै चेतनएकजीवऔरदूसरापरमेश्वर
हीहै तीसराकोईनहीसोपरमेश्वरहै विभुव्यापकसर्वत्रएकरसज-
हां२लिंगशरीर विशिष्टजीव रहताहै वहां२परमेश्वरहीपूर्णहै
सोलिंगशरीरमेंउसकासामान्यप्रकाशहैऔरविशेषप्रकाशचेतन
हीकाजीवहै जैसेदर्पणमेसूर्यकाविशेषप्रकाशहोताहै सोपरमेश्वर
कासदासंयोगरहताहै वियोगकभीनहीं इस्सेपरमेश्वरके अन्वय
होनेसेवह चेतननहींहैवहजीवकहलाताहै औरलिंगदेहसेपरमे-
श्वरभिन्नकेहोनेसेपृथक्भीहै क्योंकिलिंगशरीरसेयुक्तजीवस्वर्गन-
र्कजन्मऔरमरणइत्यादिकोंमेंभ्रमणकरताहै परन्तुपरमेश्वरनि-
श्चलहै उसकेसाथभ्रमणनहींकरतेहैं औरउसकेगुणदोषोंकेभोग
वासंगीकभीनहीं होतेहैंकारणशरीरकेज्ञानलोभ औरक्रोधादि-
कगुणजीवमेंआतेहैं औरस्थूलशरीरकेशीतोष्णक्षुधा तृषादिक
गुणभीजीवमेंआतेहैं क्योंकिदोनोंशरीरकेमध्यस्थवर्तीजीवहैं इस्से
दोनोंशरीरोंकेगुणकाभीसंगजीवकर्ताहै इसकास्पष्टअन्यव्याख्या-
नमुक्तिऔरबन्धकेविषयमेंकियाजायगा प्रश्न ईश्वरव्यापकनहीहो
सक्ता क्योंकिजितने परमाण्वादिकपदार्थहैं वेजहांरहतेहैं उतने
अवकाशको ग्रहणअवश्यकरतेहैं फिरउसीअवकाशमें दूसरेपर-
माणुवाईश्वरकोस्थिति कभीनहींहोसक्ती औरउसकेबीचमेंअन्य

पदार्थभीरहैं तोवहपरमाणुहीनहीं क्योंकिबज्जतपदार्थोंकेसंयोग सेविनासंधिवापोलउसमेंनहींहैसक्ता सबवियोगकीअन्तावस्था जोहै उसकोपरमाणुकहतेहैं किफिरजिसकाविभागहोसके उत्तर ईश्वरव्यापकहैक्योंकिपरमाणुसेभीसूक्ष्महैजैसेचिसरणुकेआगेसंयोगवावियोग बुद्धिसेहमलोगजानतेऔरकरतेहैं वैसेहीपरमाणुकावियोग भीबुद्धिसेकरसक्तेहैं औरईश्वरकीबिभुताभीज्ञान सेजानसक्तेहैं क्योंकिपरमेश्वरविभुनहोतेतोपरमाणुकारचनसंयोगवियोग औरधारणभीनकरसक्ता फिरपरमाणुकाधारणभी कैसेहोता जैसेपुष्पमेंगन्ध दूधमेंघृतघृतसेस्वाद औरगन्धऔरउन सबपदार्थोंमें आकाशनाम पोलयेसबव्यापकहैं उन२पदार्थोंमें वैसेपरमेश्वरभीपरमाणुऔरप्रकृत्यादिकतत्त्वोंमेंव्यापकहीहै प्रश्न अच्छा ईश्वरसिद्ध औरव्यापकभीहै। परन्तुउसकी उपासनाप्रार्थनाऔरस्तुतिकरनीआवश्यकनहीं क्योंकिकोईव्यवहारईश्वरके सम्बन्धकाप्रत्यक्षनहींदेखपड़ता इस्से ईश्वरअपनी ईश्वरतामेंरहै औरहमजीवलोगअपनीजीवतामें रहैं उत्तर ईश्वरकीउपासना प्रार्थनाऔरस्तुति अवश्यसबजीवोंकोकरनीचाहिए जैसेकिकोई किसीकाउपकारकरै उसकाप्रत्युपकार उसकोअवश्यकरनाचाहिए जोप्रत्युपकारनहीकरता सोअवश्यकृतघ्नहोताहै क्योंकिउसनेउसकेसाथभलाईकिया औरउसनेउसकेसाथबुराईकी जैसा उसनेसुखदियाथा फिरउसनेउसकोसुखकुछनहींदिया वाउसने विरोधहीकरलिया इस्से वहपुरुष कृतघ्नहोताहै जैसेमातापिता औरकोईस्वामी जिसकापालनकरतेहैं वेकेवलअपने उपकारके हेतुकरतेहैंकियहभीमेरापालनसमर्थहोकेकरैगा नवहपुत्रवाभृत्य यथावत्पालननहींकरता संसारमेंसज्जनलोगउसकोकृतघ्नकहते हैं जोमाताऔरपिताअथवास्वामीउनकापालनकरतेहैं जिनपदार्थोंसेवेघृतजलपृथिवी औरअन्नादिकसबपरमेश्वरकेरचेहैं जो जिसकोरचताहै वहीउसकामातापिता औरमुख्यस्वामीहोताहै

उनपदार्थोंसे अपनावापुत्रादिकोंकापालनवेकरते हैं जैसेकिसीने अपने भृत्यसेकहाकितू इसकीसेवाकरवामेरेइसपदार्थकोलेकेउस कोदेआजवहसेवा वापदार्थकोप्राप्तहोवै तबपदार्थदातास्वामीके ऊपरवहप्रीतिकरैवाभृत्यकेकिन्तुपदार्थदातास्वामीहीसेप्रीतिकरे गाभृत्यसेनहीं किन्तु जिसकापदार्थहै वैउसीसेप्रीतिकरनाचाहिए जैसेयुद्धमेंजयवापराजय राज्यकीप्राप्तिअथवाहानिराजाकोहोती है भृत्योंकोनहीं वैसेहीपरमेश्वरकाजगत्है जगत्मेंजितनेपदार्थ हैं उनकास्वामीपरमेश्वरहीहै इस्से परमेश्वरकोअत्यन्त प्रीतिसे स्तुतिप्रार्थनाऔरउपासना अवश्यकरनीहोचाहिएअन्यकिसीको नहीं सेवातोमातापिताऔरविद्याकादेनेवाला श्रेष्ठऔरसुपात्र कीभीकरनीचाहिए औरजोईश्वरकीउपासनानकरेगा वहकृतघ्न होजायगा क्योंकिईश्वरनेहमलोगोंपरअनेकउपकारकिएहैं जि-तनेजगत्मेंपदार्थरचेहैं वेसबजीवोंकेसुखकेहेतुरचेहैं औरजीवोंको स्वतन्त्रकर्मकरनेमें रखदियेहैं इसमेंयहयजुर्वेदकाप्रमाणहै॥ कुर्वन्नेवेहकर्माणि जिजीविषेच्छतꣳसमाः। एवंत्वयिनान्यथेतोऽस्ति नकर्मलिप्यतेनरे॥ इसकायहअभिप्रायहै किजीवस्वतन्त्रआपही आपकर्मकरताहै सोइससंसारमेंआपही आपकर्म कर्त्ताहुआ॥ १०० सौवर्षतकजीनेकीइच्छाकरै परन्तु अधर्मकभीनकरै सदाध-र्महीकरै जोजीवकहेगाकि मरनासुभकोअवश्यहै इस्से पापको नकरनाचाहिए ऐसेजोजीव विचारसेकर्मकरेगा सोपापोंमेंलिप्त कभीनहोगा॥ यन्मनसाध्यायतितद्वाचावदतियद्वाचावदतितत्क-र्मणाकरोति। यत्कर्मणाकरोतितदभिसंपद्यते॥ इसश्रुतिकाअर्थ पहिलेकरदियाहै परन्तु इसका यहीअभिप्रायहै किजोजैसाकर्म करै वहवैसाहीफलपावै ऐसीईश्वरकीआज्ञाहै॥ यथर्तुलिङ्गा-न्यृतवः स्वयमेवर्तुपर्यये। स्वामिस्वान्यभिपद्यन्ते तथाकर्माणिदे-हिनः॥ यहमनुकाश्लोकहै इसकायहअभिप्रायहै किजैसेवसन्ता-दिकऋतुओंकेलिंगअर्थात्शीतोष्णादिकऋतुओंमेंप्राप्तहोतेहैं वैसे

सबजीवअपनेर कियेकर्मों को प्राप्तहोतेहैं १ ॥ जोपुरुषईश्वरकी उपासनानकरेगा वहमहाकृतघ्नहोगा इसमेंकुछसन्देहनहीं प्रश्न जीवजब विद्यादिकशुद्धगुणऔरयोगाभ्याससे अनिमादिकसिद्धि-वालाहोताहै उसीकोईश्वर माननाचाहिए उससे भिन्नस्वतन्त्र ईश्वरमाननेकाकुछप्रयोजननहीं वहीसिद्धजगत्कीउत्पत्तिस्थिति धारणऔरप्रलयकरेगा इससे सनातनईश्वरकोईनहीं किन्तु सा-धनोंसे ईश्वरबनजातेहैं उत्तर इनसेपूछनाचाहिए किजब जीवजीवकाशरीरइन्द्रियां औरपृथिव्यादिक तत्त्वोंकोकोईरचेगा तबतोविद्यादिकगुण औरयोगाभ्याससे कोईजीवसिद्धहोगा जोव ऐसाकहैंकि जन्महोसेकोई सिद्धहोजायगा तोउनकेकहो साधनों सेसिद्धहोतीहै यहबातमिथ्याहोजायगी औरबिनासाधनोंकेसिद्ध होवै तोसबजीवसिद्धक्योंनहींहोते इससे यहबातउनकीमिथ्याहो गो सदासनातनसिद्धसबऐश्वर्यवाला साधनोंसेविनास्वतः प्रका-शस्वरूपईश्वरहै इसमेंकुछसन्देहनहीं प्रश्न जीवकर्मकरतेहैंऔर ईश्वरकराताहै क्योंकिईश्वरकीसत्ताकेविनाएकपत्ताभीनहींचल सक्ता इससे ईश्वरकेसहायसेजीवकर्मोंकोकरताहै आपसेआपकुछ करनेकोसमर्थनहीं उत्तर जीवआपहीआप स्वतन्त्रकर्मोंको क-रताहै ईश्वरकुछनहींकराता क्योंकिजोईश्वरकराते तोजीवक-भी पापनहींकरता सोजीवपुण्य औरपापकरताहीहै इससे ईश्वर नहींकराता औरजोईश्वरकरता तोजीवसे ईश्वरको अधिकपाप होता जैसेएकमनुष्य चोरीकरताहै औरदूसराकराताहै इसमें करनेवालेसेकरानेवालेको पापअधिकहोताहै क्योंकियहप्रेरणा उसकोनहींकरता तोवहचोरीकभीनकरता सोएकप्रेरणाकरने वालाअनेकमनुष्योंकोचोरबनादेताहै इससेउसकोअधिकपापहो-ताहै इसवास्ते ईश्वर कभीनहींकरता औरजोईश्वर करातातो जीवकाठकीपुतलीकीनांईहोता जैसेउसकोनचावैवैसानाचे फि भीवहीपरतन्त्रतामें जोदोषगणकासोईआजाता इससे ईश्वरसब

गत्का करनेवाला है। ता है परन्तु जीवोंके कर्मों को करनेवा करानेवाला नहीं प्रश्न जो ईश्वर जीवोंको न रचता तो जीव क्यों पाप करते और दुःख भी क्यों भोगते जैसे किसीने कूंआ खोदा उसमें कोई मनुष्य भी गिर पड़ता है जो वह कूंआ न खोदता तो कोई न गिरता वैसे ईश्वर जीवोंको न रचता तो जीव क्यों पाप करते उत्तर ऐसा न कहना चाहिए क्योंकि जो कोई राजा भृत्योंको रखता है और पुत्रोंको मनुष्य उत्पादन करता है वा गुरु शिष्योंको शिक्षा करता है सो सब इसी वास्ते करते हैं कि सब धर्मकी रक्षा और धर्माचरण करैं पाप करनेका अभिप्राय इनका नहीं और जैसे बालक वा भृत्यके हाथमें लकड़ी शिक्षा वा शस्त्र देते हैं सो अपने शरीरकी और स्वामीकी आज्ञा तथा धर्मकी रक्षाके वास्ते देते हैं ऐसा अभिप्राय उनका नहीं है कि उनसे आप अपने ही को मार के मर जाय वैसे ही परमेश्वरने जीव रचे हैं सो केवल धर्माचरण और सुकृत्यादिक सुखके वास्ते रचे हैं और जो जीव पाप करता है सो अपनी मूर्खता ही से करता है वैसा ही दुःख भोगता है हस्तादिक जीवोंके वास्ते इन्द्रिय रची हैं सो केवल जीवोंके व्यवहार सिद्ध होवें और उनसे सब सुख कार्यों को करैं इनमें से कोई अपने हाथसे अपनी आंख निकाल लेता है वा अपना गला काट देता है सो केवल अपनी मूढ़तासे करता है मातापितादिकोंका वैसा अभिप्राय नहीं इससे वह प्रश्न अच्छा नहीं प्रश्न ईश्वर सर्वशक्तिमान् है वा नहीं उत्तर सर्वशक्तिमान् है प्रश्न जो सर्वशक्तिमान् होय तो अपना नाश भी ईश्वर कर सक्ता है वा नहीं उत्तर ईश्वर अविनाशी पदार्थ है अत्यन्त सूक्ष्म जिसका किसी प्रकार वा शस्त्रोंसे नाश नहीं हो सक्ता क्योंकि जिस पदार्थका रूप और स्पर्श होवे उसीका अग्नि, जल, वायु, अथवा शस्त्रोंसे नाश हो सक्ता है अन्यथा नहीं नाश शब्दका यह अर्थ है कि अदर्शन अथवा कारणमें मिल जाना सो परमेश्वर कोई इन्द्रियसे दृश्य नहीं कि फिर अदर्शन उसको होय और इसका कोई कारण भी नहीं जिसमें ईश्वर मिल जाय इससे ईश्वरके नाशकी शंका करनी भी अनुचित है और ई-

श्वरसर्वशक्तिमान्है परन्तु उसकीशक्तिन्याययुक्तहीहै अन्याययुक्त नहीं इससे ईश्वरसदान्यायहीकरताहै किञ्चबिनाशी:पदार्थकोअ-बिनाशीजानताहै औरउसकेनाशकी इच्छानहींकरता औरजो विनाशवालापदार्थहै उसकानाशनहोवे ऐसेभीइच्छानहींकरता क्योंकिईश्वरकाज्ञाननिर्भ्रमहै जोजैसापदार्थहैउसकोवैसाजान-ता औरवैसाहीकरताहै प्रश्न जोईश्वरदयालुहै तोन्यायकारीन-हीं औरजोन्यायकारीहै तोदयालुनहीं क्योंकिन्यायउसकानाम हैकिधर्मकरना औरपक्षपात काछोड़ना इससे क्याआयाकिदण्ड देनेकेयोग्य कोदण्डदेना औरअदण्डको कभीदण्डनदेना सोजो दयालुहोगा सोतोकभी दण्डनदेसकेगा क्योंकिदयानामहै करु-णाऔरकृपाकासो सदाअन्यकेसुखऔरउपकारमेंरहैगा इससे ई-श्वरकोदयालुमानोंतोन्यायकारीमतमानों उत्तर न्यायकारीका तोबहुतस्थानोमेंअर्थकरदियाहै औरदयालुकाभी परन्तुन्यायऔ-रदयालुइनदोनोंकाथोड़ासाभेदहै दण्डकाजोदेनाऔरजीवोंको स्वतन्त्रताकारखना औरसबपदार्थबुद्ध्यादिकोंकादेना सर्वज्ञसर्व पदार्थकोजिसमेंयथार्थपदार्थविद्याहैउसवेदशास्त्रकाप्रकाशकरना यहबड़ीईश्वरकीदयाहै किजोजैसाकर्मकरै वहवैसाहीफलपावै अर्थात्यथावत्जोदण्डकादेनाहै सोउरुकेऔरउससे भिन्नसबजी-वोंकेऊपरईश्वरदयाकरताहै किकोईनपापकरै औरनदुःखपावै जैसेराजदण्डहै सोकेवलसब मनुष्योंकेऊपर दयाकाप्रकाशहीहै क्योंकिराजाकायह अभिप्रायहोताहैकिकोईअनर्थमें प्रवृत्तनहोवे जोहमदण्डनदेंगे तोसबमनुष्यअधर्ममेंप्रवृत्तहोजांयगे इससे अप-राधीपुरुषकेऊपर अत्यन्तकठिनदण्डदेताहै किसबमनुष्यभयमा-नहोनेसे अधर्ममें प्रवृत्तनहोवें वैसाहीईश्वर कीसबजीवोंके ऊ-परदयाहै किएककोदुःखीदेखकेअन्यपुरुषपापमेंप्रवृत्तनहोवे और फिरजीवकोयहांतक अधिकारदियाहै किअणिमादिकसिद्धित्रि-कालदर्शन औरआपजीवईश्वरसंयोगसे अनन्तसुखको पासक्ताहै

किकभीजिसकोफिरदुःखनहोवै इससेईश्वरन्यायकारीऔरदयालु है इसमेंकुछविरोधनहीं प्रश्न ईश्वरसर्वशक्तिमान्औरन्यायकारी किसप्रकारसेहै उत्तर देखनाचाहिएकिजितनेजीवहैं उनकोतुल्यपदार्थदियेहै पक्षपातकिसीकाभीनहींकिया और जैसीव्यवस्था न्यायसे यथायोग्यकरनीचाहिए वैसोहीकियाहै इससे ईश्वरन्यायकारीहै जगत्मेंसूर्य्य,चन्द्र,पृथिव्यादिकभूत.वृक्षादिक,स्थावरऔर मनुष्यादिक चरइनकारचन हमलोगदेखके तथाधारणऔरप्रलयकोदेखकेआश्चर्यअनन्तईश्वरकीशक्तिकोनिश्चितजानतेहैं क्योंकि सर्वशक्तिमान् जोनहोता तोसब प्रकारका विचित्र जगत् न रचसक्ता इससे हमलोग जानतेहैं किईश्वर सर्वशक्तिमान्है इस मेंकुछसन्देहनहीं प्रश्न ईश्वरविद्यावानहैवानहीं उत्तर ईश्वरमें अनन्तविद्याहै क्योंकिजोविद्यानहोतो तोयथायोग्यजगत्कीरचनाकोनजानता जगत्कोरचनायथायोग्यकरनेसे पूर्णविद्याईश्वर मेंहै प्रश्न ईश्वरकाजन्म होताहैवानहीं उत्तर उसकाजन्म कभी नहींहोता क्योंकि जन्मलेनेका प्रयोजन कुछनहीं जोसमर्थनहीं होता सोईदूसरेकासहायलेताहै जोसर्वशक्तिमान्है उसको किसी केसहायसे कुछप्रयोजननहीं आपही सबकार्यको करसक्ताहै प्रश्न राम,कृष्णादिकअवतारईश्वरकेभएहैं यसूमसीहईश्वरकापुत्र औरमहम्मद आदिपुरुषोंको उपदेशकरनेकेवास्ते भेजा यहबात संसारमेंप्रसिद्धहै अपनेभक्तोंकेवास्ते शरीरधारणकरकेदर्शनदिया औरनानाविधिलीलाकिई किजिसकोगाकेभक्तलोगतरजाते हैं फिरआपकैसेकहतेहोकि जन्मईश्वरकानहींहोता उत्तर यह बातयुक्तिसेविरुद्धहै औरशास्त्रप्रमाणसेभी क्योंकिईश्वर अनन्तहै जिसकादेशकाल औरवस्तुसेभेदनहींहै एकरसहै जिसकाखण्ड कभीनहींहोता औरआकाशादिकबड़े स्थूलपदार्थभी परमेश्वर केसामने एकपरमाणुकेयोग्यभीनहीं औरशरीरजोहोताहै सो शरीरसेस्थूलहोताहै जैसेघरमेंरहनेवालोंसे घरवड़ाहोताहै सो

ईश्वरका शरीर किस पदार्थसे बनसक्ता है कि जिसमें ईश्वर निवास करै और जो किसीमें निवास करेगा तो अनन्त न रहैगा। क्योंकि शरीरसे शरीर छोटा होहोता है जब शरीरके सहायसे रावणवाकंसादिकोंको मारै तथा उपदेश भी करै विना शरीरसे न कर सके तो ईश्वर सर्व शक्तिमान् होनहीं और जो रावणादिकोंको मारा चाहै और उपदेश करा चाहै तो सर्वव्यापी और अन्तर्यामी होनेसे एक क्षणमें सब जगत्का मारडालै और उपदेश भी कर देवै तथा अपने भक्तोंको प्रसन्न भी करदेवै इस्से ईश्वरकी ईश्वरता यही है कि विना सहायसे सब कुछ कर सक्ता है और जो सहायके विना न कर सके तो उसका सर्वशक्तित्व ही नष्ट होजाय इस्से ईश्वरका कभी जन्म और किसीका सहाय लेता है ऐसी शंका करनी व्यर्थ है प्रश्न जैसे सब जगत्की उत्पत्ति होती है ईश्वरसे वैसे ईश्वरकी भी उत्पत्ति किसीसे होती होगी उत्तर ईश्वरसे कौन बड़ा पदार्थ है कि जिस्से ईश्वर उत्पन्न होवै पहिले ही प्रश्नके उत्तरसे इसका उत्तर होगया और जो उत्पन्न होता है उसको ईश्वर हमलोग नहीं मानते किन्तु जिसकी उत्पत्ति कभी न होवै और सब संसारकी जिस्से उत्पत्ति होवै उसीको वेदादिक सत्यशास्त्र और सज्जनलोग ईश्वर मानते हैं और कोनहीं जो कोई ईश्वरकी भी उत्पत्ति मानता है उसके मतमें अनवस्था दोष आवैगा कि जैसे उसने ईश्वरकी उत्पत्ति मानी फिर ईश्वरके पिताकी भी उत्पत्ति मानना चाहिए और ईश्वरके पिताके पिताकी भी उत्पत्ति माननी चाहिए ऐसे ही आगे २ माननेसे अनवस्था आजायगी अथवा जिसकी वह उत्पत्ति न मानेगा उसीको हमलोग ईश्वर कहते हैं अन्य को नहीं प्रश्न ईश्वर साकार है वा निराकार उत्तर ईश्वर निराकार है क्योंकि जो निराकार न होता तो सर्वशक्तिमान सर्वव्यापक सबका धारनेवाला और सर्वान्तर्यामी और नित्य कभी न होता इस्से ईश्वर निराकार ही है प्रश्न ईश्वर चेतन है अथवा जड़ उत्तर जो जड़ होता तो सब जगत्की रचना और ज्ञानादिक अनन्त गुण वाला कभी न होता

इससे ईश्वर चेतन है। ये यह थोड़ासा ईश्वर के विषय में लिखदिया इससे आगे वेद विषय में लिखा जायगा॥ उसी ईश्वर ने सर्वज्ञ सर्व विद्यायुक्त और सत्य२ विचार सहित कृपाकरके वेदशास्त्र सब जीवों के ज्ञानादिक उपकार के वास्ते रचा है प्रश्न ईश्वर निराकार है उसको मुख नहीं फिर वेद का उच्चारण और रचना कैसे किया उत्तर यह शंका असमर्थों में होती है कि बिना मुख मुख का काम न कर सकै ईश्वर बिना मुख के मुख का काम करसक्ता है क्योंकि वह सर्वशक्तिमान् है और जो ऐसा न मानेगा उसके मत में यह दोष आवैगा कि हाथ, पांव आंख, शरीर और कान बिना जगत् कैसे रचा जैसे बिना हाथ आदिक के सब जगत् को रचा तो वेद के रचने में कुछ शंका नहीं प्रश्न ओष्ठादिक स्थानों का जिह्वा से वायु को प्रेरणा होने से अक्षर उच्चारण होसक्ते हैं अन्यथा नहीं उत्तर फिर भी वही दोष आवेगा कि ईश्वर सर्वशक्तिमान नहोगा क्योंकि ओष्ठादिक के स्पर्श और प्राण बिना ईश्वर उच्चारण नहीं कर सक्ता तो ईश्वर पराधीन होऊआ और हाथादिकों के बिना ईश्वर ने जगत् भी न रचा होगा जैसा कि ओष्ठादिक स्थान और प्राण बिना उच्चारण नहीं कर सक्ता ऐसी शंका जीव में घट सक्ती है ईश्वर में नहीं प्रश्न लेखनी मसी इनसे ककारादिक अक्षर बनते हैं बिना इनके नहीं फिर ईश्वर ने कहां से कागद लेखनी मसी कुछ किया वा क् और पढ़िया यह सामग्री पाई जिस से सब अक्षर रचे उत्तर यह बड़ी शंका आपने किया कि ईश्वर को अनीश्वर ही बना दिया अच्छा मैं आपसे पूछता हूं कि नासिका, आंख, ओष्ठ, कान, नख, लोम, नाड़ी, और उनका स्थान तथा आकार बिना सामग्री और साधन शरीर तथा अक्षर भी रच लिए प्रश्न फिर यह लिखी लिखाई पुस्तक संसार में कैसे आई और किन्ने पाया आकाश से गिरी वा पाताल से आगई उत्तर आपका शरीर वृक्ष, पर्वत और इतनी बड़ी पृथिवी अन्तरिक्ष में कैसे आगए जैसे ये आगए वैसे पुस्तक भी आगई इसमें क्या आश्चर्य कुछ भी नहीं अग्नि, वायु और

आदित्यसृष्टिकेआदिमेंभयेथे उन्नेवेदपाये उनसेब्रह्मानेपढ़े ब्रह्मा सेविराटने विराटसेमनुने मनुसेदशप्रजापतियोंनेपढ़े औरउनसे प्रजामेंफैलगए प्रश्न अग्न्यादिकोंने ईश्वरसेवेदोंकोकैसेपढ़े उत्तर इसमेंदोबातहैं ईश्वरनेउनको आकाशवाणीकोनांई सबशब्दसब मन्त्र उनकेस्वरअर्थऔरसम्बन्धभीसुनादिए इससे वेदोंकानामश्रु-तिरक्खाहै अथवाउनकेहृदयमेंईश्वरअन्तर्यामीहै उसनेउसीहृ-दयमें वेदोंकाप्रकाशकरदिया फिरउनोंनेअन्योंसे परप्रकाशकर दिए॥ योब्रह्माणांविदधातिपूर्वं योवैवेदान्प्रहिणोतितस्मै तंहदेव-मात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वैशरणमहंप्रपद्ये यहवेदकाप्रमाणहै इस-कायहअभिप्रायहै किजोईश्वरब्रह्मादिकदेव औरसबजगत्का र-चनकर्ताभया इससे पहिलेही वेदोंकोरचके ब्रह्माकोअग्न्यादिदेव नाम हिरण्यगर्भादिद्वाराजनादिये क्योंकिविद्याकेविना सबजीव अन्धेहोतेहैं कुछनहीं जानसक्ते जैसेपशु इससे परमेश्वरने वेदका प्रकाशकरदिया सबमनुष्योंकोसबपदार्थ विद्याजाननेकेहेतु प्रश्न ई-श्वरनेउनदेवअर्थातविद्वानोंकेहृदयमें प्रकाशवेदोंका किया सोलो-गोंनेबातबनालियाहै किपरमेश्वरनेवेदबनाएहैं ऐसाहमलोगक-हेंगे तोवेदोंमेंसबलोगश्रद्धाकरेंगे औरउनकाप्रमाणभीकरें-गे परन्तुअनुमानसे यहनिश्चतजानाजाताहै किउनअग्न्यादिक देव विद्वानोंनेही वेद बनालिएहैं उत्तर परमेश्वरने आकाशसे लेके क्षुद्र,घास,पर्यन्त जगत्कोरचकेप्रकाशकरदिया औरसर्वो-त्कृष्टसबपदार्थोंका जिससे निश्चयहोताहै उसविद्याको प्रकाशन करै तो यह परमेश्वरमें दोषआताहै किपरमेश्वर दयालुनहीं और छली भी है क्योंकि ऐसा अनुमान से जाना जायगा अप-नीविद्याका प्रकाश इसवास्ते नहीं किया किसबजीव विद्यापढ़नें सेज्ञानी औरसुखीहोजायंगे फिरमुझको जानकेअनन्त आनन्द युक्तभी होजायंगे यहदोष परमेश्वरमेंआवेगा जैसेकोई आजी-विका विद्यासेकरताहोय सोपण्डितनहीं वहऐसीइच्छाकरताहै

जो कोई पण्डित होगा तो मेरी प्रतिष्ठा और आजीविका न्यून हो जायगी ऐसा क्षुद्रबुद्धि से वह मनुष्य चाहता है और जो सज्जन लोग हैं वे तो सदा विद्यादिक गुणों का प्रकाश किया करते हैं सो परमेश्वर अपनी अनन्त विद्या का प्रकाश क्या न करेगा किन्तु अवश्य ही करेगा क्योंकि एक ओर सब जगत् और एक ओर विद्या इन दोनों में भी विद्या अत्यन्त उत्तम है सो ईश्वर क्या आजीविका धीन और प्रतिष्ठा के लोभ से विद्या का प्रकाश न करेगा किन्तु अवश्य ही करेगा इसमें कुछ सन्देह नहीं और जो कोई ऐसा कहै कि पण्डितों ने वेद विद्या रचलिया है उनसे पूछा जाता है कि वे बिना शास्त्र के पढ़ने से पण्डित कैसे भए और जो वे कहैं कि अपनी बुद्धि और विचार से हो गये तो आज काल भी बुद्धि और विचार से होजांय सो विना विद्या के पढ़ने से कोई पण्डित नहीं होता क्योंकि जब सृष्टि रची गई उस समय कोई मनुष्य न हीं था विना परमेश्वर के फिर वह अनुमान से जाना जाता है वह अनुमान भी यथार्थ कभी न हो सकेगा आज तक बहुत बुद्धिमान पदार्थों का विचार कर्ते हैं सो किसी पदार्थ में गुण वा दोष जानते हैं परन्तु इतने इसमें गुण हैं वा इतने दोष हैं ऐसा निश्चय उनको नहीं होता जितनी अपनी बुद्धि उतना ही जानते हैं अधिक नहीं और परमेश्वर सब पदार्थों को यथावत् जानता है सो अपना ज्ञान और विद्या क्या परमेश्वर गुप्त रक्खैगा ऐसा ईर्ष्यावान परमेश्वर होगया कि सर्वज्ञ अपनी विद्या का प्रकाश न करै किन्तु दयालु के होने से और ईर्ष्या, कपट, छलादि दोष रहित होने से अवश्य विद्या का प्रकाश करैगा इसमें कुछ सन्देह नहीं प्रश्न वेद को आप परमेश्वर से उत्पत्ति मानते हो जैसे जगत् की सो जैसा जगत् अनित्य है वैसा वेद भी अनित्य होगा उत्तर वेद के पुस्तक और पठन पाठन जब तक जगत् रहैगा तब तक वेद की पुस्तक और पठन पाठन भी रहैंगे जब जगत् नष्ट होगा उसके साथ ये तो न भी नष्ट होगें परन्तु वेद नष्ट नहीं होंगे क्योंकि वह विद्या परमेश्वर की है जैसे परमेश्वर नित्य है वैसे विद्यादिक गुण भी पर-

मेश्वरकेनित्यहैं प्रश्न वेदकीरचनाकोईबुद्धिमान होसोरचसक्ताहै क्योंकि ॥ एतच्छुद्धंसनातनंविज्ञानीहि एतद्द्वादेवानां देवऋषीणामृषिर्मुनीनाम्मुनिः। ऐसेऔरहवाशब्दकेरचनेसे वेदकोजैसी संस्कृतवैसीमनुष्य पण्डितभीरचसक्ताहै जैसाकियहसंस्कृत हमनेरचलियाहै फिरआपकैसे वेदकेरचनेका असम्भव मानतेहैं किपरमेश्वरविनावेदकोकोईनहींरचसक्ता उत्तर हमलोगसंस्कृतमात्रसे वेदकानिश्चयनहींकरते किपरमेश्वरने रचाहै क्योंकिसंस्कृततोजैसीतैसी पण्डितरचसक्ताहै परन्तुपरमेश्वरकेगुणउनसंस्कृतमें नहीं देखपड़ते जोमनुष्यहोगा सोअवश्यपक्षपातकिसीस्थानमेंकरैगा औरपरमेश्वरपक्षपात किसीप्रकारसे कभीनकरैगा क्योंकिपरमेश्वरपूर्णानन्दऔरपूर्णकामहै सोवेदमेंकिसीप्रकारसे एकअक्षरमें भी पक्षपात देखनेमें नहींआता फिरदेहधारी सबविद्याओंमेंयथावत्पूर्णकभीनहींहोता सोजबकोईपुस्तकरचेगा तबजिसविद्यामेंनिपुणहोगा उसविद्याकीबातअच्छीप्रकारसे लिखेगा परन्तु जिसविद्याको नहींजानता उसकाविषय जबकुछ आवेगा तबकुछन लिखसकेगा जोलिखेगातो अन्यथा लिखेगा औरपरमेश्वर सबविद्याओंकेविषयोंको यथावत्लिखेगा सोवेदों मेंसबविद्यायथावत्लिखीहैं मनुष्यजबग्रन्थरचेगाउसमेंकोईबुद्धिमानहोगा तोभीसूक्ष्मदोषआवेंगे किधर्मकाकिसीप्रकारसेखण्डनऔरअधर्मकामण्डन थोड़ाभीअवश्यआजायगा परमेश्वरकेलिखनेमें धर्मकाखण्डन वाअधर्मकामण्डन किसीप्रकारसलेशमात्रभीनआवेगा सोवेदमें ऐसाहीहै मनुष्य शब्द अर्थ औरसम्बन्ध इनकोजितनीबुद्धिउतनाहीजानेगा अधिकनहीं सोवैसेहीशब्दअपनेग्रन्थमेंलिखेगा जिस्से एक,दो,तीन,चारवापांचप्रयोजन जैसे तैसेनिकलसकें औरपरमेश्वरसर्वज्ञकेहोनेसे शब्दअर्थऔरसम्बन्धऐसेरक्खेगें किजिनसेअसंख्यातप्रयोजन औरसबविद्यायथावत्आजांय सोपरमेश्वरकाऐसासामर्थ्यहै अन्यकानहीं सोवैसेवे-

दहीहैं किजिनमेंअसंख्यात प्रयोजन औरसबविद्या निकलतीहैं क्योंकिपरमेश्वरने सबविद्यायुक्तवेदोंकोरचेहैं इस्से सबकार्यवेदोंसे सिद्धहोतेहैं औरवेदोंकेनामलिखके गोपालतापिनी,रामतापिनी, कृष्णतापिनी औरअल्लोपनिषदादिक मनुष्योंनेबहुतग्रन्थरचलिएहैं परन्तु विद्वान्यथावत्बिचारकरकेदेखे तोउनग्रन्थोंमें जैसोमनुष्योंकी चुद्रबुद्धिवैसीहीचुद्रता देखपड़तीहै सोपरमेश्वर औरउनकेवचनोंमें दिनऔररातकाजैसाभेदहै वैसाभेद देखपड़ताहै प्रश्न वेदपौरुषेयहै अथवाअपौरुषेय अर्थातईश्वरकारचाहै वाकिसीदेहधारीका उत्तर वेददेहधारीकारचाकभीनहींहै किन्तु परमेश्वरहीनेरचाहै परन्तु वेदअपौरुषेय औरपौरुषेयभीहै क्योंकिपुरुषदेहधारीजीवकानामहै औरपूर्णकेहोनेसेपरमेश्वरकाभी अपौरुषेयतोइस्से है किकोईदेहधारीजीवकारचानहीं औरपौरुषेयइसवास्ते है किपूर्णपुरुषजोपरमेश्वरउसनेरचाहै इस्से पौरुषेयभीहै औरपरमेश्वरकीविद्या सनातनहैसोईवेदहै इस्से भी वेदअपौरुषेयहै क्योंकिपरमेश्वरकी विद्याजोवेद उसकीउत्पत्तिवानाश कभी नहीहोती परन्तु पुस्तकपठनऔरपाठन इनतीनोंकाजगत्के प्रलयमेंप्रलयहोजाताहै वेदईश्वरमेंनित्यरहतेहैं इस्से वेदकानाश कभीनहीहोता प्रश्न जैसेवेदईश्वरसेउत्पन्नहोताहै वैसाजगत्भीईश्वरसेउत्पन्नहोताहै जैसाजगत् विनश्वरहै वैसावेदभी विनश्वरहै औरजोवेदनित्यहोगा तोजगत्भीनित्यहोगा उत्तर जगत्जोहैसो प्रकृतिपरमाणु औरउनकेपरस्परमिलानेसे परमेश्वरसेउत्पन्नभयाहै सोकभीकारणजोपरमेश्वर उसमेंकार्यरूपजगत्नष्टहोजायगा परन्तु वेद जगत् जैसाकार्यहैवैसानहीं क्योंकिवेदतो परमेश्वरकीविद्याहै सोजोनाशहोजायतोपरमेश्वरविद्याहीनहोनेसे अविद्वान्हो होजाय सोपरमेश्वर अविद्वान् कभीनहींहोता सदापूर्णज्ञानऔरपूर्णविद्यावान रहताहै सोजैसाक्रम परमेश्वरकी विद्यामेंहै वैसाहीक्रमशब्दअर्थसम्बन्धमन्त्र औरसंहितार्थात्पूर्वा-

परमन्त्रोंका सम्बन्धजोमन्त्र जिस्से पूर्व वापीछे लिखनाचाहिए सो सबपरमेश्वरहीनेरक्खे हैं इस्से कुछसन्देहनहीं जैसाजगत्कासंयोगवावियोगहोताहै वैसावेदविद्याकासंयोगवावियोगकभीनही होता क्योंकिपरमेश्वर औरपरमेश्वरके विद्यादिकसबगुणभीनित्यहैं इस्से वेदविद्यानित्यहीहै जोऐसानमानेगाउसकेमतमें अनवस्थादोषआवेगा किकोईविद्यापुस्तकस्वयंभू औरईश्वरकारचान मानेगा तोसबपुस्तकोंके सत्य वा असत्य का निश्चय कैसे करैगा क्योंकिएकपुस्तकस्वतःप्रमाणरहेगा औरउसकेप्रमाणसे वाअप्रमाणसेसत्यवामिथ्यापुस्तककानिश्चयहोसक्ताहै औरजोकोईपुस्तकस्वतः प्रमाणहीनहोगा तोकोईपुस्तकका निश्चयनहीहोसकेगा क्योंकिएकमनुष्यनेअपनोबुद्धिकीकल्पनासे पुस्तकरचा दूसरेनेउसकाअपनीबुद्धिसे खण्डनकरदिया दूसरेकातीसरेने तीसरेका चौथेने ऐसेहीकिसीपुस्तकका प्रमाणनहोगा फिरअनवस्थाभ्रमकेहोनेसेसदारहैगो इस्सेवेदपुस्तकस्वतः प्रमाणहोनेसे परमेश्वरहीकारचाहै अन्यथानहीं क्योंकिऐसीसुगमसंस्कृतललितपद सत्यार्थयुक्त अनेकप्रयोजनऔरअनेकविद्यासहित स्वल्पअक्षरसुगमवेदहीकीपुस्तकहै अन्यनहीऔरजगत्केकिसीपदार्थका कुछनिश्चयमनुष्यअपनीबुद्धिसेकरसक्ताहै परन्तुईश्वरस्वरूप औरउनके न्यायकारित्वादिक अनन्तगुणवेदपुस्तकमें जैसेलिखे हैं वैसालेख कोईसंस्कृतवाभाषापुस्तकमेंनहीहै क्योंकिकिसोकीवैसी बुद्धिनही होसक्ती किपरमेश्वरकास्वरूपऔरयथावत्गुणलिखसकै सोऐसा ही जानना चाहिए किहमलोगोंपर अत्यन्त कृपासे परमेश्वरने अपनास्वरूप औरअपनेसत्यगुणवेदपुस्तकमेंप्रकाशकरदिएहैं जिस्से किहमलोगभीपरमेश्वरकास्वरूप औरगुणवेदपुस्तकसेजानके अत्यन्तआनन्दयुक्तहोते हैं सोपक्षपातकोछोड़के यथावत्विद्यायुक्त पुरुष अत्यन्तवेदार्थका विचारकरैगा सोईअनन्तसुखको पावेगा अन्यथानहीं प्रश्न ऐसेही सबमनुष्यएक २ पुस्तकको परमेश्वरकी

मानतेहैं जैसेकि बाबिल्, इञ्जील और कुरान् वैसे आपलोगोंको भी वेदमें आग्रह है जिस्से कि अत्यन्त स्तुति कर्ते हैं जो वेद परमेश्वरका रचा होगा तो वे पुस्तक परमेश्वरके रचे क्यों नहीं इसमें क्या प्रमाण है कि वेद तो ईश्वरका रचा है और अन्य पुस्तक नहीं उत्तर सब मनुष्योंका प्रमाण नहीं हो सक्ता क्योंकि सब मनुष्य पूर्ण विद्यावाले आप्त और पक्षपात रहित नहीं होते जिस्से कि सब मनुष्योंके कहनेका प्रमाण हो जाय जो आप्त और पक्षपात रहित होवें उन्हीका प्रमाण करना योग्य है अन्यका नहीं क्योंकि जो मूर्खों का हम लोग प्रमाण करें तो बड़ा भारी दोष आ जायगा वे अन्यथा भाषण कर्ते हैं और अन्यथा कर्म भी कर्ते हैं इस्से आप्त लोगोंका प्रमाण करना चाहिए और वेद के सामने इञ्जील और कुरानादिकी कुछ गणना ही नहीं हो सक्ती किन्तु उनमें विद्याकी बात तो कुछ नहीं है। जैसे कि कहान होय वैसे वे पुस्तक हैं प्रश्न आप्तका निश्चय कैसे हो सक्ता है वेदवाले कहते हैं कि हमारी बात सत्य है अन्य लोग कहते हैं कि हम लोगोंकी बात सत्य है इसमें क्या प्रमाण है कि यही बात सत्य है अन्य नहीं उत्तर इसका समाधान तृतीयसमुल्लासमें कह दिया है कि ऐसा लक्षणवाला आप्त होता है और प्रत्यक्षादिक प्रमाणोंसे सत्य वा असत्यका यथावत् निश्चय भी होता है उनसे निश्चय करके सत्यको मानना चाहिए असत्यको नहीं प्रश्न वेद किसी देशविशेष और भिन्न देशमें रहनेवाले मनुष्योंके हेतु हैं वा सब मनुष्योंके हेतु हैं उत्तर वेद सब मनुष्योंके वास्ते हैं क्योंकि जो विद्या और सत्य बात होती है सो सबके हेतु होती है और वेदमें कहीं नहीं लिखा कि इस देश वा उन मनुष्योंके हेतु वेद बनाया गया और अधिकार भी इनका है और इनका नहीं जैसे कि बाबिल, मूसा और इसराईल कुलादिकोंके वास्ते पुस्तक आई और मुहम्मदादिकोंके हेतु कुरान् यह बात मनुष्योंकी होती है अपने देशवाले के ऊपर प्रीति और अन्यके ऊपर नहीं जो ईश्वरका बचन सो तो सर्वज्ञ और सब जगत्का स्वामी है इस्से तुल्य कृपा और तुल्य दृष्टि और-

क्खैगा अन्यथा नहीं ऐसेपुस्तक वेदही कैहै अन्यनहीं क्योंकि अन्यपुस्तकोंमेंऐसीविद्यानहीं औरकहानीकीनांईउनमेंकथाहै औरपक्षपात बहुतसेहैं इससे वेदपुस्तकही ईश्वरकृतहै अन्यनहीं इसमेंकिसीकोजो सन्देहहोय तोपक्षपातकोछोड़के तीनोंपुस्तकों काविद्याप्रीति औरसज्जनतासे विचारकरैं तबयहीनिश्चयहोगा किवेदपुस्तकही ईश्वरकृतहै अन्यनहीं प्रश्न वेदोंकासबमनुष्योंको पढ़नेऔरपढ़ानेका अधिकारहैवानहीं उत्तर इसकाविचार ठत यससमुल्लासमें वर्णव्यवस्थाके कथनमेंकियागयाहै वहोजानले-ना इसप्रकारसेवहांलिखाहै किजोमूर्खहैवहशूद्रहै उसकापढ़ना वाउसको पढ़ाना व्यर्थहै क्योंकिउसको बुद्धि न होनेसे कुछ विद्यानआवेगी अन्यव्यवस्थाचतुर्थ समुल्लासमेंदेखलेनो प्रश्न शूद्रादिकोंकावेदसुन्नेकाअधिकारहैवानहीं उत्तर जिसकोकानइन्द्रियहै औरउसकेसमोपजोशब्दहोगा उसकोअवश्यसुनेगा सोवेदकाशब्दअथवाअन्यशब्दहोवैवहसबकोसुनेगापरन्तुशूद्रमूर्खहोनेसे सुनकेभीकुछनकरसकेगा इसहेतुजहांतहांनिषेधलिखाहै किशूद्रकावेदनपढ़नाचाहिए किउसकोकुछआतानहीं प्रश्न वेदव्यासजानेवेदरचेहैं इससे उनकानाम वेदव्यासपड़ाहै यहबातभागवतमें लिखीहै फिरआपकैसेबातकहतेहैं किवेदईश्वरनेरचेहैं उत्तर यहबातअत्यन्तमिथ्या है क्योंकिव्यासजीनेंभी वेदपढ़ेथे औरअपने पुत्रशुकदेवादिकोंको पढ़ायेथे औरउनकापितापराशर उसका पितामहशक्ति और प्रपितामह वशिष्टब्रह्मा औरबृहस्पत्यादिकों नेभीपढ़ेथे जोव्यासकेबनाये वेदहोते तोवेकैसेपढ़ते क्योंकि व्यास जीतो बहुतपोछेभयेहैं औरजो उनकानाम वेदव्यास पड़ाहै सो इसर तिसेपड़ाहै कि । वेदेषुव्यासोविस्तारोनामविस्तृताबुद्धिर्यस्यासवेदव्यासः ॥ व्यासजीनेवेदोंकोपढ़के औरपढ़ायेहैं जिससे सब जगत्में वेदकापठनऔरपाठनफैलगया औरउनकीबुद्धि वेदोंमें विशालथी कियथावत्शब्दअर्थऔरसम्बन्धसे वेदोंकोजानतेथे इ-

से इनकानामवेदव्यासरक्खागया पहिलेइनकानामजन्मका कृ-
ष्णद्वैपायनथा वेदव्यासनाम विद्याकेगुणसेभयाहै इससे भागवतमे
जोबातलिखोहै सोवेदोंकीनिन्दाकेहेतुलिखीहै उसकायह अभि-
प्रायथा वेदोंकीनिन्दामें किजिसनेवेदरचेहैं उसीनेभागवतभीर-
चाऔरवेदोंकेपढ़नेसे व्यासजीकोशान्तिभोनभई किन्तुभागवतके
रचनेसेउनकीशान्तिभई औरभागवत वेदोंकाफलहैं अर्थातवेदों
सेभीउत्तमहै सोयहबातदुर्बुद्धिजीवोपदासउसकोकहीहै क्योंकि
व्यासजीकेनामसे उसनेसब भागवतरचाहै इसहेतुकि व्यासजीके
नामलिखनेसे सबलोगप्रमाणकरैं औरवेदोंकीनिन्दासे मेरेग्रन्थ
को प्रवृत्तिकेहोनेसे सम्प्रदायकीवृद्धि औरधनका लाभहोय इससे
सज्जनलोग इसबातकोमिथ्याहोमानैं प्रश्न वेदईश्वरनेसंस्कृतभा-
षामेंक्योंरचे क्याईश्वरकी भाषासंस्कृतहीहै जोदेशभाषामें र-
चते तोसबमनुष्यपरिश्रमकेविना वेदोंकोसमझलेते औरसंस्कृ-
तजाननेकेहेतु व्याकरणादिक सामग्रीपढ़नी चाहिए इसकेबिना
वेदोंकाअर्थ कभोमालूमनहोगा उत्तर संस्कृतमें इसहेतुवेदरचे
गयेहैं किछोटेपुस्तकमें सबविद्याआजांय औरजोभाषामें रचते
तोबड़े २ ग्रन्थहोजाते औरएकदेशहीका उपकारहोता सबदेशों
कानहीं औरजितनीदेशभाषाहैं उनमेंरचतेतबतोपुस्तकोंकापा-
रावारहीनहीहोता इससे ईश्वरनेसर्वज्ञभाषामेंवेदरचेहैं कि कि-
सीदेशकी भाषानरहै औरसबभाषा जिस्सेनिकलें क्योंकिसंस्कृत
किसीदेशकीभाषानहीं जैसेईश्वरकिसीदेशकानहीं किन्तुसबदे-
शोंकास्वामीहै वैसेहीसंस्कृतभाषाहै किकिसीएकदेशकीनहीं प्रश्न
देवलोग औरआर्यावर्त्त देशकी प्रथमभाषासंस्कृतथी इसीकोमु-
सल्मानलोग जिन्नभाषाकहतेहैं क्योंकिजैसीप्रवृत्ति संस्कृतकीप-
हिलेआर्यावर्त्त में थी वैसीकिसीदेशमेंनथी जिसदेशमें कुछप्रवृ-
त्तिभईहोगी सोआर्यावर्त्तहीसे भईहोगी अबभोआर्यावर्त्तमें अन्य
देशोंसेसंस्कृतकोअधिकप्रवृत्तिहै इससे यहनिश्चयहोताहै किसंस्कृ

२१

तभाषाआर्यावर्त्तकीमुख्यभाषाथी उत्तर यहदेवलोगकीभाषानहीं क्योंकि वृहस्पतिःप्रवक्ताइन्द्रआध्येता। यहमहाभाष्यकावचनहै इन्द्रनेवृहस्पतिसेंसंस्कृतपढ़ा और वृहस्पतिने अङ्गिराप्रजापतिसे, उन्नेमनुसे, मनुनेविराटसे, विराट्नेब्रह्मासे ब्रह्मानेहिरण्यगर्भादिकदेवोंसे, उन्नेईश्वरसे, जोदेवलोगकीभाषाहोती तोवक्योंपढ़तेऔरपढ़ाते क्योंकिदेशभाषातोव्यवहारसेपरस्परआजातीहै इससे देवलोगकीसंस्कृतभाषानहीं औरजबब्रह्मादिकोंकी भाषानहीं तोआर्य्यावर्त देशवालोंकी कैसे होगी कभीनही परन्तु ऐसा जानाजाताहै किआर्य्यावर्तदेशमेंपहिलेप्रवृत्तिअधिकथी सबऋषिमुनिऔरराजालोग आर्य्यावर्तदेशवासीलोगोंने परम्परासेसंस्कृतपढ़ा औरपढ़ायाहै इससेआर्यावर्त्त देशकीभी संस्कृतभाषानहीं औरजोमुसल्मानलोगइसकोजिन्नभाषाकहतेहैं सोतोकेवलईर्ष्यासेकहतेहैं जैसेकिआर्यावर्तदेशवासियोंकानामहिन्दूरखदिया सो यहसंस्कृतजिन्नभाषाभीनहीं क्योंकिजिन्नतोभूतप्रेत पिशाचोंहीका नाम है भूतप्रेतऔरपिशाचहोतेहीनहीं औरजोहोतेहोंगे तोलोकलोकान्तरमें होतेहोंगे यहांनही फिरउनकीभाषा यहां कैसेआसकेगी इससे यहबातअत्यन्तमिथ्याहै क्योंकिउनकोऐसीपदार्थविद्या औरधर्माधर्मविवेककीबुद्धिहीनहीं फिरयेसंस्कृतविद्यासर्वोत्तमकोकैसेकहसक्ते वारचसक्ते हैं औररचतेहोंतेतोअन्यदेशोंमेंभीरचलेते तथाकिसीपुरुषसेअबभीकहते इससे ऐसीबात सज्जनलोगोंको नमाननाचाहिए प्रश्न देशभाषाभिन्न२ सबकैसे बनगई औरकिससे बनी उत्तर सबदेशभाषाओंका मूलसंस्कृत है क्योंकिसंस्कृत जबबिगड़तीहै तबअपभ्रंशकहाताहै फिरअपभ्रंशसेदेशभाषासेहोतीहै जैसेकिघटशब्दसेघड़ा घृतशब्दसेघीदुग्धशब्दसेदूधनवीतशब्दसेनैनू अक्षिशब्दसेआंखकर्णशब्दसेकान नासिकाशब्दसेनाकजिह्वाशब्दसेजीभ मातरशब्दसेमादरयूयंशब्दसेयू वा शब्दसेवोगूढशब्दकागोड़ इत्यादिकजानलेना औरएकपदार्थकेब

ङ्गतनामहैंजैसेकिगौ:नामगाय,ग्मा,ज्मा,क्ष्मा,क्षा,क्षमा,क्षोणी,
क्षिति,अवनो,उर्वी,पृथ्वी,मही,रिपः,अदितिः,इडानिर्ऋतिः,भूः,
भूमिः,पूषाः,गातुः,गोत्रा,ए२१नामपृथिवीकेनामहैं सोभिन्न२दे-
शोंमेंभिन्न२, २१नामोंमेंसेभिन्न२काअपभ्रंशहोनेसे भिन्न२भाषा
बनजातीहै औरएकनामबहुतअर्थोंकाहोताहै जैसेकिसिंह,वा-
नर,घोड़ा,सूर्य्य, मनुष्य,देव औरचोर इत्यादिककानाम हरिहै
इस्से भीभिन्न२देशमें भिन्न२भाषाहोतीहै क्योंकिकिसीदेशमेंसिंह
नामसें उसपशुकाव्यवहारकिया किसीदेशमेंहरिशब्दसेबानरका
ग्रहणकिया किसीदेशमेंहरिशब्दमेघोड़ेकोलिया किसीदेशमेंह-
रिशब्दसेसूर्य्य कोलिया किसीदेशमेंहरिशब्दसेचोरकोलिया इस
हेतुदेशभाषाभिन्न२होगई औरमनुष्योंकाउच्चारण भेदसेभिन्न२
भाषाहोजातीहै जैसेकि ज्ञ यहदोनोंप्रकारमें मिलनेसे अक्षर
यहज्ञहोताहै सोआजकालइसकालेखऐसाहोगयाहै ज्ञ इसएक
अक्षरकेअन्यथाउच्चारणसे तीनभेदहोगयेहैं गुजरातीलोगगका-
र औरनकारकाउच्चारणकर्तेहैं महाराष्ट्रादिक दाक्षिणात्यलोग
दऔरनकारकाउच्चारणकर्तेहैं औरअन्यलोगगकार औरयकार
काउच्चारणकर्तेहैं तथातालव्यश मूर्द्धन्यष औरदन्त्यस इनतीनों
केस्थानमें बंगालीलोगतालव्यशकारकाउच्चारणकर्तेहैं मध्यऔर
पश्चिमदेशवालेतीनोंकेस्थानमें दन्त्यसकारकाउच्चारणकर्तेहैं त-
थाकिसीकीजीभकठिनहोतीहै वहप्रायःशब्दोंकोअन्यथाउच्चारण
कर्तीहै औरजिसदेशमेंविद्याकालेशभीनहोय उसदेशमेंसङ्केतव्य-
वहारकरनेकेहेतु शब्दोंकाकरलेतेहैं किइसशब्दसेइसकोजानना
औरइसशब्दसेइसकोजानना जैसेदाक्षिणात्यलोगोंने घीकानाम
तूपररखलिया औरउत्तरदेशपर्वतबासियोंने घीकानामचोखार-
खलिया औरगुजरातियोंने चावलकानामचोखारखलिया इस्से
भीदेशदेशान्तरकी भाषाभिन्न२होगईहै इसीप्रकारके अन्यकार-
णोंकोभीविचारलेना प्रश्न वेदमें अश्वमेधादिक यज्ञोंकीक्रिया जो

लिखीहै सोजैसीबालकोंकीबातहोय कुछबुद्धिमानपनेकीनहींदीखती क्योंकिघोड़ेको सबजगह फिरातेहैं उसकोकोई जोबांधले उससे फिरयुद्धकर्त्तेहैं सोव्यर्थयुद्धबनालेतेहैं मित्रसेभीऐसीबातसेवैर होजाताहै इत्यादिकऐसी२बुरीबात जिसमेंलिखीहैं वहवेदईश्वरकाबनायाकभीनहोगा उत्तर येसबबातमिथ्याहैं वेदमेंएकभीनहींलिखीहैं किन्तुलोगोंनेकहानीबनालियाहै प्रश्न ईश्वरनेऐसा क्योंनहींकिया किबिनापढ़ने औरसुननेसे सबमनुष्योंकोयथावत् आजाते तबतोईश्वरकी दयालुताजानपड़ती अन्यथाक्यादयालुता किबड़ेपरिश्रमसे वेदकेअर्थोंको मनुष्यलोगजानतेहैं उत्तर फिरभीस्वतन्त्रताहानि दोषआजाता क्योंकिपरमेश्वरकेप्रेरणा सेवेदउनकोआजांय अपनेपरिश्रमऔरस्वतन्त्रतासेनहीं औरजो परीश्रमबिनापदार्थमिलताहै उसमेंप्रसन्नताभीनहींहोती बिना परीश्रमकुछभी कामनहींहोता जैसेकोखानापीना उठनाबैठना कहनासुननाआनाऔरजाना इत्यादिकपरीश्रमहीसेहोतेहैं अन्यथानहीं परीश्रमकेबिनाकुछनहींहोता औरइतनीबड़ीजोपदार्थविद्यासोकैसेहोगी जीवकोकानआदिकइन्द्रिय बुद्धिऔरप्राणकहनेऔरसुननेकासामर्थ्य भीदियाहै औरविद्याकाप्रकाशभी कर दियाहै इससे ईश्वरदयारहितकभीनहींहोते औरजीवकोजोस्वतन्त्ररखदियाहै यहीबड़ीदयाईश्वरकीहै औरकोईभीनहीं शंका करैउसकासमाधान बुद्धिमान्लोगविचारकरकेदेदेवैं ईश्वरऔरवेदकेविषयमेंसंक्षेपसेकुछथोड़ासालिखदिया औरजोविस्तारसे देखाचाहै सोवेदादिकसत्यशास्त्रोंमेंदेखलेवै इसकेआगेजगत्कीउत्पत्तिस्थितिऔरप्रलयकेविषयमेंलिखाजायगा॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते सप्तमः समुल्लासः सम्पूर्णः॥ ७॥

अथ जगदुत्पत्ति प्रलयविषयान्व्याख्यास्यामः ब्रह्मविदाप्नोति परं तदेषाभ्युक्ता सत्यंज्ञानमनंतं ब्रह्मयोवेदनिहितंगुहायांपरमेव्योमन् प्रतिष्ठिता सोऽश्नुतेसर्वान्कामान्ब्रह्मणा सहविपश्चितेतितस्माद्वाएत स्मादात्मनआकाशः संभूतः आकाशाद्वायुः वायोरग्निः अग्नेरापः अद्भ्यः पृथिवी पृथिव्याओषधयः ओषधिभ्योन्नंअन्नाद्रेतः रेतसःपुरुषः सवाएषपुरुषोन्नरसमयः ४ तैत्तिरीयशाखाकीश्रुतीहै सदेवसौम्ये दमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयंतदैक्षत बहुःस्यांप्रजायेयेति यहछांदोग्यउपनिषद्कीश्रुतीहै नासदासीन्नोसदासीत्तदानीन्नासीद्रजोनव्योमापरोयत् किमावरीवः कुहकस्यशर्मन्नम्भः किमासीद्गहनंगभीरं यह ऋग्वेद की श्रुति है आत्मावाइदमग्रआ सीन्नान्यत् किंचन्मिषत् सईक्षतलोकान्नुसृजाइति यहऐतरेयब्राह्मण कीश्रुतिहै इत्यादिक वेदादि कीश्रुतियों से यहनिश्चित जानाजाताहै किएकअद्वितीय सच्चिदानन्दरूप परमेश्वरही सनातनथा औरजगत् लेशमात्रभीनहीथा उसनेसबजगत्कोरचा सोइन मंत्रोंमेंजितनेनामहैं वेसब परमेश्वरकेहीहैं इनकाअर्थ प्रथम समुल्लास मेंकरदियाहै वहांदेखलेना उसपरब्रह्मकोजो मनुष्यजानताहै उसअनन्तपंडित परमेश्वरकेसाथ मिलके उसके सबकामपूर्णहोजातेहैं वह परमेश्वर एक अद्वितीयथा दूसराकोईनहीथाउन्ने जगदुत्पत्तिकीइच्छाकिईकिबहुतप्रकारकी प्रजाकोमैंउत्पन्नकरूं उसीक्षणमें नानाप्रकारकोप्रजाउत्पन्नहोगई सोइसक्रमसे पहले आकाशको उत्पन्नकिया कि जोसबजगतका निवासकरनेकास्थान सोआकाश अत्यन्तसूक्ष्म पदार्थहैजोकिअनुमानसेभीकठिनतासेसमझनेमेंआताहै उस्से स्थूल द्विगुणवायुउत्पन्नभया उस्से अग्नित्रिगुणभया त्रिगुणअग्निसे चतुर्गुणजलभया और जलसेपंचगुणभूमिभई भूमिसेऔषधि औषधियोंसेवीर्यवीर्यसेशरीर इसप्रकारआकाशसेलेकेतृणपर्यन्तपरमेश्वरनेसृष्टिरचलिई सोशब्दऔर संख्यादिकगुणवालाआकाशरचाफिर वायुआदिक चारोंके परमाणुरचे परमाणुसाठ मिलाकेएकअ

णुरचा दोअणुसे एकद्व्यणुक और तीनद्व्यणुकसे एक त्रसरेणु और अनेकत्रसरेणुकोमिलाके यहजोदेखपडताहै सबजगत इसकोरच दिया प्रश्न परमेश्वरको क्याप्रयोजनथा किजगत्कोरचा उत्तर-इस्से पूंछनाचाहिये कि प्रयोजनक्याकहाताहै यमर्थमधिकृत्यप्रवर्त्तते तत्प्रयोजनम् यह गोतमसुनिजीकासूत्रहै इस्कायहअभिप्राय है किजिसपदार्थकी अधिकमानके जीवप्रवृत्तहोवे उसको कहनाप्रयोजन सो परमेश्वरपूर्णकामहै उसको कोईप्रयोजन अधिक नहीहै क्योंकि उस्से कोईपदार्थ उत्तम वाअप्राप्तनही फिर प्रयोजनका जोप्रश्नकरनासोअयुक्तहै प्रश्नजगत्केरचनेकोइच्छाकिईसो बिनाप्रयोजनसे इच्छानहीहोसक्ती उत्तर इच्छाकेजगत्मेंतीन कारणदेखपडतेहैं पदार्थकीअप्राप्ति और वहउत्तमहोवे तथा अपनेसेभिन्नहोवे परमेश्वरमें तीनोंमेंसेएकभीनहीं क्योंकिसर्वशक्तिमान्केहोनेसे कोईपदार्थकी अप्राप्तिकभीनहीहोती तब परमेश्वरसे कोईपदार्थ उत्तमभीनही और सर्वव्यापकके होनेसे अत्यन्त भिन्न कोईपदार्थनही इस्से इच्छाकीघटना ईश्वरमेंनहीहोसक्ती प्रश्न जगत्रचनेकी प्रवृत्तिबिनाप्रयोजन वाइच्छाके कभीनहीहोसक्ती उत्तर अच्छा इच्छा तोनहीबनसक्ती तथा प्रयोजन भीनहीबनसक्ता परन्तु इच्छा और प्रयोजन मानो तो जगत्काहोना वहीइच्छा और प्रयोजनमानलेओ इस्से भिन्नइच्छा वा प्रयोजन कोईनही क्योंकि जोऐसामानेंकि अपने आनन्दकेवास्ते जगत्को रचा उस्से हमलोगपूछतेहैं किजबतक जगतनहीरचाथा तबपरमेश्वर क्यादुःखीथा जोकिआनन्दकेवास्ते जगतकोरचासो दुःखका परमेश्वरमें लेशमात्रभीसंबन्धनही जो आपऐसेपूछनेमेंआग्रहकरैं किजगतकेरचनेमें औरभीकुछप्रयोजनहोगा तोआपसेमैं पूछताहूं किजगतके नहीरचनेमें क्याप्रयोजनहै जोआपकहैंकिजगतकेरचनेमेंजगतकीलीलादेखनेसेआनन्दहोताहोगा और जगतकेजीवभक्तिकरैं तोजबतकजगतकी लीलानहीदेखीथी औरजग

त्केजीवभक्तिभीनहीकरतेथे तबपरमेश्वरअवश्यदुःखीहोगा इस्सेऐसाप्रश्नव्यर्थहोताहैइसमेंआग्रहनहीकरनाचाहियेरचनासेईश्वरकेसामर्थ्यकासफलहोनाहीरचनाकाप्रयोजनहैप्रश्न ईश्वरनेजगतरचासोजगतरचनेकी सामग्रीथीअथवाअपनेमेंसेहीजगतरचावाअपनेहीसबजगतरूपबनगया उत्तर इसकाबिचार अवश्यकरनाचाहिये किबिनासामग्रीसेकोईपदार्थ नहीबनसक्ता क्योंकि कारणकेविनाकिसीकार्यकी उत्पत्तिहमलोगनहीदेखते सोकारण तीनप्रकारकाहोताहै एकउपादानदूसरानिमित्त औरतीसरासाधारण सोउपादानयहकहाताहैकि किसीसेकुछलेकेकोईपदार्थबनानासोकार्यऔरकारणका इसमेंकुछभेदनहीहोता दोनोएकहीरूपहोतेहैं जैसेमट्टीकोलेकेघडेकोबनालेतेहैं कपासकोलेकेवस्त्र सोनेकोलेकेगहना लोहेकोलेकेशस्त्रऔर काष्ठकोलेकेकिवाडआदिक सोघडादिकजितनेहैं वेमृत्तिकादिकोंसेभिन्नवस्तुनहीहैं किन्तुवहीवस्तुहै इसप्रकारकाउपादानकारणजानना दूसरा निमित्तकारण जोकिउनकुलालादिकशिल्पीलोग नानाप्रकारके पदार्थोंकोरचनेवालेनिमित्तकारणमेंजानना क्योंकिमृत्तिकादिकोंका ग्रहणकरकेअनेक पदार्थोंकोरचतेहैं किन्तु अपनेशरीरसेपदार्थलेकेनहीरचते इस्से ऐसानिमित्तकारणहोताहै किजोपदार्थबनावेउस्से भिन्न सदारहै औरउसपदार्थकोरचले तीसरा साधारणकारणहोताहै जैसाकिप्राण कालदेशचक्र औरसूचादिक क्योंकि येसब कर्त्ताकेआधीनऔरहेतुरहतेहैं इस्से अवश्यबिचारकरनाचाहिये परमेश्वरइसजगत्का तीनों कारणोंमेंसे कौनकारणहै अर्थात्तीनोंकारनहैजोउपादानकारणहोवै तो क्षुधा तृषा शीतोष्ण श्रम जन्मऔर मरणादिक दोष ईश्वरमें आजांयगे क्योंकि उपादानसे उपादेय भिन्ननहीहोता अर्थात् ईश्वरसे जगत भिन्ननही होगा इस्से उक्तदोष अवश्यही आवेंगें इसमें जोकोई ऐसाकहै किजैसे स्वप्नावस्थामें मिथ्यापदार्थ अनेक देखपडतेहैं और रज्जु मेंसर्प बुद्धिहो

तोहै इत्यादिक सब कल्पित भ्रान्तपदार्थहैं उनसे वस्तु में कुछदोषनहीआसक्ता स्वप्नसेजीवकी कुछहानि नहीहोती और सर्पसेरज्जु की उनसे पूंछना चाहिये सर्प कीभ्रान्ति रज्जु में और स्वप्नमें हर्षशोकादिक दुःख किसकोभये जोवह कहैकि ब्रह्मकोहीभयेफिर वह ब्रह्म शुद्धनही रहा तथा ज्ञानस्वरूप नहीरहा क्योंकि भ्रम जो होताहै सो अज्ञानसेही होताहै बिना अज्ञानसेनही फिर वेदोंमें सर्वज्ञ सदाभ्रान्ति रहित ब्रह्मको लिखाहै उसको क्या गतिहोगी तथा बन्धमोक्षादिक दोषभी ब्रह्ममेंआजांयगे जोवहकहैकि भ्रमसेबन्ध और मोक्षहै वस्तु सेनही फिर भी नित्यशुद्ध बुद्ध मुक्तस्वभाव परमेश्वरको वेदमेंलिखाहै सोबात झूठीहोजायगी यहबडा दोषहोगा और जो बद्धहोगा सो जगतको कैसेरचसकेगा और जोमुक्तहोगा सोजगतरचनेकोइच्छाहीनकरेगा फिरपरमेश्वरसे जगतकैसेबनेगा औरजोकोईकेवलनिमित्तकारणमानै तो जगतकासाक्षातकर्तानहीहोगा किन्तुशिल्पीवत्होगा अथवाउसको महाशिल्पीकहो और उसकेपास सामग्रीभी अवश्यमाननी चाहिये फिरजो सामग्री मानेंगे तोजगतभी नित्य होगा क्योंकि जिस्से जगतबनाहै वहसामग्रीईश्वरके पाससदारहतीहीहै फिर एक अद्वितीय जगतकी उत्पत्तिके पहिले परमेश्वर था जगतलेशमात्रभीनहीथा यहवेदादिक शास्त्रोंकाप्रमाणोंसे कहनावहव्यर्थ होगा इस्से उननिमित्त कारण माननेसेभीवह दोषआवेगा और जोसाधारणकारणमानैं तोभीजडपराश्रितरचनेमें असमर्थईश्वर होगा जैसेकुलालादिककेबिना घटादिकार्य्य पराधीनहोतेहैं क्योंकिजैसेचक्रादिककेबिना कुलालादिक घटादिकनहीरचसक्तेहैंफिरवहईश्वरपराधीनहोनेसे सर्वशक्तिमान नहीरहेगा क्योंकि कोई कासहायकिसीकाममेंनले औरअपनीशक्तिसे सबकुछकरै उसको कहतेहैंसर्वशक्तिमान् सोसाधारणकारणजबमानाजायगा तोसर्वशक्तिमानईश्वरकभीनरहेगा इस्से तीनोंप्रकारमें दोषआतेहैं।

इसवास्ते अत्यन्तविचारकरनाचाहिए जिसमेंकिकोईदोषनआवै इसमेंयह विचारहै किईश्वर सर्वशक्तिमान्है जो सर्वशक्तिमान् होताहै उसमेंअनन्तसामर्थ्य सामग्रीहोतीहै सोवहसामग्रीस्वाभाविकहै जैसाकिस्वाभाविकगुणगुणीकासम्बन्धहोताहै वहदूसरापदार्थनहींहै औरएकभीनहीं उससामग्रीसेसबजगत्कोपरमेश्वरनेबनाया प्रश्न जोगुणकीनांईस्वाभाविकसामग्रीहै सोगुणीसे भिन्नकभीनहीहोती क्योंकिस्वाभाविकजोगुणहै सोगुणीसे भिन्न कभीनहींहोता इस्से क्याआयाकिसामग्रीसहितपरमेश्वर जगत् रूपबनगया उत्तर ऐसानकहनाचाहिए क्योंकिजोजिसकापदार्थहोताहै वहउसीकाकहाताहै सोपरमेश्वरका अनन्तसामर्थ्य स्वाभाविकहीहै अन्यसेनहींलिया वहसामर्थ्य अत्यन्तसूक्ष्महै औरस्वाभाविककेहोनेसे परमेश्वरका विरोधभीनहीं किन्तुउसीमें वहसामर्थ्य रहताहै उस्से सबजगत्कोईश्वरनेरचाहै इस्सेक्याआया किभिन्न पदार्थनलेके जगत् के रचनेसे उपादान कारणजगत् का परमेश्वरही हुआ क्योंकि अपने से भिन्न दूसरा कोई पदार्थ नही है कि जिसे लेके जगत् को रचे सो अपने स्वाभाविक सामर्थ्य गुणरूपसे जगत् कोरचा इस्से सब जगत्का उपादानकारणपरमेश्वरहीहै परन्तुआप जगत्रूपनहीबना तथा अपनीशक्तिसे नानाप्रकारके जगत् रचनेसे दूसरके सहायबिना इस्से जगत्कानिमित्त कारणईश्वरहीहै अन्यकोईनहीं तथासाधारणकारणभीजगत्काईश्वरहै क्योंकिकिसीअन्यपदार्थकेसहायसेजगत्कोईश्वरनेनहीरचा किन्तुअपनीसामर्थ्य सेजगत्कोरचाहै इस्से साधारण कारणभी जगत्काईश्वरहै अन्यकोई नहीं औरजोअन्यकोईहोता तोविरुद्धकार्यजगत्मेंदेखपड़ते विरुद्धकार्योंकोहमलोगजगत्मेनहीदेखतेहैं इस्से जगत्केतीनों कारणपरमेश्वरहीहैं अन्यकोईनही प्रश्न परमेश्वरनिराकारऔरव्यापक है अथवानही उत्तर परमेश्वरनिराकारऔरव्यापकहीहै क्यों-

किनिराकारनहोता तोएकदेशमें रहताऔरकहीं देखभीपड़ता सोएकदेशमेंनहोहै औरकहींदेखभीनहींपड़ता इससे निराकार हीईश्वरकोजाननाचाहिए औरजोनिराकारनहोतातोसर्वव्यापकनहोता तोसर्वात्मा औरसबजगत्का अन्तर्यामी नहोता सो सबजगत्का आत्मासर्वान्तर्यामीके होनेसेव्यापकहो ईश्वरहै अन्यथानहीं प्रश्न सबजगत्कारचनऔरधारणईश्वरकिसप्रकारसे करताहै उत्तर जैसाजगत्मेंहमलोगदेखतेहैं वैसाहीईश्वरनेजगत्रचाहै परन्तुइसमें यहप्रकारहै किआकाशतोपरमाणुसेभी सूक्ष्महै औरवायुकेपरमाणुकायहस्वभावदेखनेमेंआताहै किनीचेऊंचेऔरसमदेशमेंगमनकरनेवालेपरमाणुहैं क्योंकिजोत्वचा इन्द्रियसेप्रत्यक्षस्थूलवायुको हमलोगवैसाहीस्वभाववालादेखते हैं कभीऊर्द्धकभीनीचेऔरकभीतिरछाचलताहै इससे हमलोगपरमाणुकाअनुमानकर्तेहैं इसमेंअन्यभीबहुतकारणहैं क्योंकिवायुमें अनेकतत्वमिलेहैं परन्तु हमलोगमुख्य भोगणनासेइसबातकोलिखतेहैं तथाअग्निकाऊर्द्ध जलकेतथानीचे औरपृथिवीकासमताअनेकविधिगतिकोदेखके परमसूक्ष्मपरमाणुरूपजोतत्व उनकाभीअनुमानकर्तेहैं किवेभीइसीप्रकारकेहैं सोपरमेश्वरनेपृथिवीमें अनेक तत्वोंकामेलनकियाहै क्योंकिजोमेलनहोता तोतत्वोंकेस्वाभाविकगुणपृथिवीमेंनदेखपड़ते जैसेकिवायुनहोतातोपृथिवीमेंस्पर्शभीनहोता तथाअग्नि, जल औरआकाशनहोते तोरूपरस और पोलभीनदेखपड़ते इससे क्याजानाजाताहै किसबमें सबतत्वमिले हैं सोपृथिवीऔरजलकेपरमाणु अधोगामी स्वभावसेहैं अग्निऊर्द्धगमनऔरवायुतिरछेगमनकरनेवालाहै उनसबकेपरमाणु भी वाअधिकन्यूनमिलनेसे स्थिरतावागमनपदार्थोंकेहोतेहैं जैसेकि पृथिवीऔरजलनीचेजातेहैं औरअग्नितथावायुऊपर औरअनेक विधिबलकर्तेहैं फिरमिलाभयापदार्थकहींनहींजासक्ता वाअधिकन्यूनतातत्वोंकेमिलानेसेजितनीजिसकीगति परमेश्वरनेरचीहै

उतनोहीहै। तोहै अन्यथानहीं औरसबसे बलवान्वायुहै वायुके आधारसेसबलोगोंकोहमलोगदेखतेहैं जैसेकिइसपृथिवीकेचारो ओरवायुअधिकहैतथावायुमेंअन्यतत्वभीमिलेहुएदेखपड़तेहैंऔ-रवहवायु४९वा५०कोसतकअधिकहैउसकेऊपरथोड़ाहै सोज्यो-तिषविद्याकी गणनासेप्रत्यक्षहै उसवायुका आधारआकाशऔर आकाशादिकसबपदार्थोंका आधारपरमेश्वरहै सोजोसर्वव्याप-कनहोता तोआकाशादिकोंकासबजगत्मेंधारणकैसेकर्ता इससेप-रमेश्वरव्यापकहै व्यापककेहोनेसेसबकाधारणबनताहै अन्यथान-हींऔरजोसाकारएकदेशस्थपरमेश्वरकोमानेगा उसकेमतमेंधा-रण सबजगत्कानहोवैगा इत्यादिकबहुतदोषआवेंगे फिरदोप्र-कारकाव्यवहारहमलोगदेखतेहैं किएकतोलघुवेग औरगुरुत्वा-दिकगुणऔरआकर्षणभीपदार्थोंमेंहै क्योंकिजोहल्कापदार्थ हो ताहै सोऊपरहीचलताहै औरगुरुनीचेकोचलताहै जैसेकिजल केपात्रमें तेलकोधाराजबदेतेहैं सोलघुकेहोनेसे तैलजलके ऊपर होआजाताहै कभीनीचेनहीरहता इसकायहकारणहै किजिस-मेंछिद्रअधिकहोगा उसमेंपोलऔरवायुअधिकहोगा वहलघुहो-गाऔरजिसमेंपोलऔरवायुथोड़ाहोगा वहगुरुहोगा जोकिसमी पर अत्यन्तजुटजायगा वहीगुरुहोगा औरजोमिलेगापरन्तु उसके भीतरकुछअत्यन्तसूक्ष्मछिद्ररहैंगे जैसेकिलोहाऔरकाठ दोनों काभारतोतुल्यहोताहै परन्तु जलमेंदोनोंकोडारनेसे काठतोऊ-पररहैगा औरलोहानीचेचलाजायगा तथावस्त्रभीगनेसेनीचेच-लाजाताहै उसकायहकारणहै किउसकेछिद्रोंसे जलऊपरचला जाताहै सोऊपरसेजलकाभार औरसूतकाअधिकबटना औरपृ-थिवीके आकर्षणसे नीचेचलाजाताहै तथाकोईकाष्ठभी अत्यन्त भीगने औरचसरेशवादिकके अत्यन्तमिलनेसे वहनीचे चलाजा-ताहै औरवेगभीपदार्थोंमेंदेखपड़ताहै जैसेमनुष्य, घोड़ा, हरिण वायुअग्न्यादिकमेंहैं तथाअग्निऔरसूर्य, पदार्थोंके अवयवोंको

भिन्न२ करदेतेहैं और जलतथापृथिवीयेपदार्थों से मिलने और मि-
लानेवाले हैं सोजहां जिसका अधिकबल होगा वहां उसका कार्य्य
होगा जैसेकिवायुसूक्ष्म और लघु होके ऊपरजाता है तबचारों ओ-
रकी पृथिवीजल, त्रसरेणुयुक्त जिसस्थानसेवायु ऊपरचढ़ा उसस्था-
नमें चारों ओरसेगुरुवायु गिरता है वही अधिकचलने और आंधीका
कारण है और वही वृष्टिकाजलके ऊपर आकर्षणके होनेसे कारण है
क्योंकिसूर्य्य और अग्नि सबरसोंकाभेदकर्ते हैं फिर ए जलादिकरस
सबऊपरचढ़ते हैं परन्तु उनमें अग्नि वायु और पृथिवीके भीपरमाणु
मिले हैं और जलके परमाणु अधिक हैं फिरजब अधिक ऊपर जला-
दिकोंकेपरमाणुचढ़ते हैं तबगुरुहोते हैं अर्थात अधिकभार होता है
फिरवायुधारण उनको नहीं करसक्ता वहांकावायु जलके संयोगसे
शीतलचलता है उससे जलादिकोंकेपरमाणुमिलकें बादलहोजाते
हैं जबवेवायुसेबीचमेंपरस्परचलते हैं वायुबन्दहोनेसेउष्णताहोती
है फिरवेपरस्परभिड़ते हैं और घिसते हैं इससे गर्जन और बीजली
उत्पन्नहोती है फिरउष्णता और बिजली केहोनेसे जलपृथिवीके
ऊपरगिरता है तथावायुकेवेग और ठोकरसे बिजलीनीचेगिरती
है और अग्निका ऊपरवेग तथाजलकानीचेहोता है सो जलकोपा-
त्रमें रखके ऊपररखने और अग्निकोनीचेरखनेसे जबउसजलमें
अग्निप्रविष्टहोता है तबउसमें वेग और बलहोता है यही रेल आ-
दिकपदार्थोंकाकारण है तथाबिजली अङ्कविद्या और नानाप्रका-
रके यन्त्रोंसेतारविद्याभीहोती है ऐसेहीविद्यासे अनेकप्रकारको
पदार्थविद्याबनसक्ती है ग्रन्थअधिकहोजाय इसहेतुहम अधिकन-
हीं लिखते हैं क्योंकि शास्त्रोंमेंलिखा है सोबुद्धिमान्लोग विचार
लेंगे जो थोड़ी२ विद्यासेमनुष्यलोगअनेकप्रकारकेपदार्थरचलेते
हैं फिरसर्वशक्तिमान्अनन्तविद्यावाला जोईश्वरअनेकप्रकारके
पदार्थोंकोरचे इसमें क्या आश्चर्य है इसप्रकारसेजगत्कोरचता है
ईश्वरकोअपनीनित्यशक्ति और गुण उनसे आकाश अव्यक्त अव्याह-

तप्रकृति औरप्रधानएसबएकहीकेनामहैंइनकोरचताहै आकाश सेवायुआदिकेपरमाणुबनाताहै उनसाठपरमाणुसे एकअणुबनताहै दोअणुसेएकद्व्यणुकबनताहै सोवायुद्व्यणुक है इससे प्रत्यक्षरूप नहींदेखपड़ता वायुसेत्रिगुणस्थूल अग्निरचाहै इससे अग्निमें रूपदेखपड़ताहै उससे चतुर्गुणजलऔरजलसेपंचगुणपृथिवीरची है तथाउसपरमाणुकेमेलनसेवृक्ष,घासऔरवनस्पत्यादिकोंकेवीजरचेहैं उनमेंपरमाणुकेसंयोग इसप्रकारकेरक्खे हैं किजिनसे विलक्षण२स्वाद पुष्प,पत्र,फल औरकाष्ठादिकहोतेहैं सोप्रसिद्ध जगत्केपदार्थोंकोदेखनेसे हमलोगपरमेश्वरकोरचनाका अनुमानकर्तेहैं औरसाधारणसबजगतमें व्यापकहोनेसे सबजगत्का धारणकर्तेहैं तथाएकके आधारदूसराऔरपरस्पर आकर्षणसेभी जगत्काधारणहोताहै परन्तु सबआकर्षणोंकाआकर्षण औरधारणकरनेवालोंका धारणकरनेवाला परमेश्वरहीहै अन्यकोईनहीं प्रश्न इसीलोकमें इसप्रकारकीसृष्टिहै वासबलोकोंमेंऐसीसृष्टिहै उत्तर सबलोकोंमेंसृष्टिअनेकप्रकारकीहै जैसीकिइसलोकमें क्योंकिइसलोकमें हमलोग पृथिव्यादिकपदार्थप्रयोजनकेहेतु रचेहुएदेखतेहैं इनमेंएकपदार्थभीव्यर्थनहींदेखते इससे हमलोग अनुमानकर्तेहैं किकोईलोकपरमेश्वरनेव्यर्थनहींरचाहै किन्तु सबलोकोंमें अनेकविधिमनुष्यादिकसृष्टिरचीहै क्योंकिपरमेश्वरका व्यर्थकार्यकभीनहींहोता प्रश्न कितनेलोक परमेश्वरनेरचेहैं उत्तर सूर्य्य,चन्द्रऔरजितनेतारेंदेखपड़तेहैं तथाबहुतभीनहीं देखपड़ते एसबलोकहीहैंसोअसंख्यातहैं प्रश्न येसबलोकस्थिरहैं वाचलतेहैं उत्तर सबलोकअपनी२परिधि औरअपने२वेगसे चलतेहैं सोअनेकविधिगतिहै स्थिरतोएकपरमेश्वरहीहै औरकोई नहीं प्रश्न जबपरमेश्वरनेपहिलेसृष्टिरची तबएक२दो२ मनुष्यादिकजातिमें रचे अथवाअनेकरचेथे उत्तर एक२जातिमेंपरमेश्वरनेअनेक२रचेहैं एक२वादो२नहीं क्योंकिचिंवटीआदिकजा-

ति एक द्वीप में एक२ दो२ रचते तो द्वीपान्तर में वे कैसे जासकीं इत्यादिक और भी विचार आपलोग करलेना प्रश्न परमेश्वरने सब पदार्थ शुद्ध२ रचे हैं याकोई पदार्थ अशुद्धभी रचा है उत्तर परमेश्वर सब पदार्थ अपने२ स्थान में शुद्धही रचे हैं अशुद्ध कोई नहीं परन्तु, विरुद्ध गुणवाले परस्पर मिलने वा मिलानेवाले अशुद्ध कहते हैं अपने२प्रतिकूल के होनेसे जैसेकिदूधऔरनोंनजबमिलतेहैं तबवेदोनों नष्टगुणहोजातेहैं क्योंकिदोनोंका स्वादविगड़जाताहै परन्तु, उनोंदोनोंको पदार्थविद्याकी युक्तिसे तृतोयपदार्थकोईरचले फिरभोवहउत्तमहोसक्ताहै जैसे सर्पमक्खीविभी अपनेस्थानमेंशुद्धहैं क्योंकिवैद्यक शास्त्रकीयुक्तिसे इनकीभीबहुत औषधियांबनतीहैं अनुकूलपदार्थों में मिलानेसे परन्तुवेमनुष्यवाकिसीकोकाटैं अथवाभोजनमें खालेनेसेदोषकरनेवालेहोजातेहैं ऐसेहीअन्यपदार्थोंकाविचारकरलेना प्रश्न जब इसजगत्का प्रलयहोताहै तोकिसप्रकारसे होताहै उत्तर जिस प्रकारसेसूक्ष्मपदार्थोंसे रचनास्थूलकीहोतीहै उसीप्रकारसेप्रलयभीजगत्काहोताहै जिससे जोउत्पन्नहोताहै वहसूक्ष्महोकेअपनेकारणमेंमिलताहै जैसेकिपृथिवीकेपरमाणुऔरजलादिकोंके परमाणुसे यहस्थूलपृथिवीबनीहै इनपरमाणुकाजबवियोगहोता है तबस्थूलपृथिवीनष्टहोजातीहै वैसेहीसबपदार्थोंका प्रलयजानना आकाशसेपृथिवीपञ्चगुणीहै जबएकगुणीघटेगी तबजलरूपहोजायगी जलऔरपृथिवीजबएक२गुणघटेंगे तबअग्निरूपहो जांयगे जबवेतीनोंएक २ गुणघटेंगे तबवायुरूपहोजांयगे जबवे भिन्न२होजांयगे तबसबपरमाणुरूपहोजांयगे परमाणुकीजबसूक्ष्मअवस्थाहोगी तबसबआकाश रूपहोजांयगे औरजबआकाशकीभी सूक्ष्मअवस्थाहोगी तबप्रकृतिरूपहोजायगा जबप्रकृतिलय होतीहै तबएकपरमेश्वरऔरसबजगत्काकारण जोपरमेश्वरका सामर्थ्य औरगुणपरमेश्वरकेअनन्त सत्यसामर्थ्य वालाएकअद्वि-

तीयपरमेश्वर होरहेगा और कोई नहीं सो यह सब आकाशादिक जगत्परमेश्वर के सामने कैसा है कि जैसा आकाश के सामने एक अणु भी नहीं इससे किसी प्रकार का दोष उत्पत्ति स्थिति और प्रलय में परमेश्वर में नहीं आता इससे सब सज्जन लोगों को ऐसा ही मानना उचित है प्रश्न जन्म और मरणादिक किस प्रकार से होते हैं उत्तर लिंगशरीर और स्थूलशरीर का संयोग से प्रकट का जो होना उसका नाम जन्म है और लिंगशरीर तथा स्थूलशरीर के वियोग होने से अप्रकट का जो होना उसका नाम मरण है सो इस प्रकार से होता है कि जीव अपने कर्मों के संस्कारों से घूमता हुआ जल वा कोई औषधि में अथवा वायु में मिलता है फिर जैसा जिसके कर्मों का संस्कार अर्थात् सुख वा दुःख जितना जिसको होना अवश्य है परमेश्वर की आज्ञा के अनुकूल वैसे स्थान और वैसे ही शरीर में मिलके गर्भ में प्रविष्ट होता है फिर जिसमें वह मिला उसके अवयवों को आकर्षण से शरीर बनता है जैसी को परमेश्वर ने युक्ति रची है जिसके शरीर का वीर्य होगा उस वीर्य में उसके सब अङ्गों से सूक्ष्म अवयव आते हैं क्योंकि सब शरीर के अवयवों से वीर्य की उत्पत्ति होती है फिर उस वीर्य के अवयवों में उस शरीर के अवयव मिलते जाते हैं उनसे शिर, नेत्र, नासिका, हस्त, पादादिक, अवयव बढ़ते चले जाते हैं जब वह शरीर, नख और सिखा पर्यन्त पूर्ण बन जाता है तब वह जीव शरीर में सब अवयवों से चेष्टा करता भया शरीर सहित प्रकट होता है फिर भी अन्नपानादिक बाहर के पदार्थों के भोजन करने से शरीर के अवयवों की वृद्धि होती है सो छः विकार वाला शरीर है अस्ति नाम शरीर है १ जायते नाम जन्म का होना २ वर्द्धते नाम बढ़ना ३ विपरिणमते नाम स्थूल का होना ४ अपक्षीयते नाम क्षीण होना ५ विनश्यते नाम नष्ट का होना नाम मृत्यु का होना ६ एछः विकार शरीर के हैं फिर जब मरण होता है तब स्थूल और लिंगशरीर का वियोग होता है सो स्थूलशरीर से लिंगशरीर निकल के बाहर का जो वायु उसमें मिल-

ताहै फिरवायुकेसाथ जहांतहांघूमताहै कभीसूर्य्य केकिरणोंके साथऊंचे औरचन्द्रकीकिरणोंकेसाथनीचेआजाताहै अथवावायु केसाथनीचेऊपर औरमध्यमें रहताहै फिरउन्नाप्रकारसे शरीर धारणकरलेताहै प्रश्न स्वर्गऔरनरकलोकहैंवानहीं उत्तर सब कुछहै क्योंकिपरमेश्वरकेरचेअसंख्यातलोकहैं उनमेंसेजिनलोकों मेंसुखअधिकहै औरदुःखथोड़ाउनकोस्वर्गकहतेहैं तथाजिनलो- कोंमें दुःखअधिकऔरसुखथोड़ाहै उनकोनरककहतेहैं औरजिन लोकोंमें सुखऔरदुःखतुल्यहैं उनकोमर्त्यलोककहतेहैं इसप्रकार केस्वर्ग, मर्त्य औरनर्कलोक बहुतहैं उनमें भी अनेकप्रकारके स्था- नऔरपदार्थहैं किजिनमें सुखवादुःखअधिकवान्यूनहै सोइसोहेतु परमेश्वरने सबप्रकारकेस्थानऔरपदार्थरचेहैं किपापीपुण्यात्मा औरमध्यस्थजीवोंकोयथावत्फलमिलै अन्यथानहोय जैसेकिरा- जाकेउत्तममध्यमऔरनीचस्थानहोतेहैं जिनसेउत्तम मध्यमऔ- रनीचोंकोयथावत् व्यवहारकोव्यवस्थाहोतीहै परमेश्वरकायथा- वत्अखण्डितसंपूर्णजगत्में राज्यहै और यथावत्न्यायसे जिसको व्यवस्थाहै फिरपरमेश्वरके राज्यमेंस्वर्गनर्क औरमर्त्यलोकादि- कोंकीव्यवस्थाकैसेनहोगी किन्तु अवश्यहीहोगी प्रश्न मरणसमय मेंयमराजकेदूतआतेहैं उसजीवकोजालमेंबांधलेतेहैं बांधकेमा- रतेहुयमराजकेपासलेजातेहैं औरयमराजयथावत्न्यायसे दण्ड देतेहैं यहबातसत्यहै वामिथ्याहै उत्तर यहबातमिथ्याहै क्योंकि जीवअत्यन्तसूक्ष्महै जालसेबांधनेमें कभीनहींआता और गरुड़ पुराणादिकोंमें लिखाहै किपिण्डदेनेसे जीवकाशरीरबनजाताहै औरवैतरणीनदीकेतरनेकेहेतु गोदानादिककरनाचाहिए और यमकेदूतोंकाकज्जलकेपर्वतकीनांई शरीरलिखाहै वेनगरकेमा- र्गऔरघरकेदरवाजेभीतर जीवकेपासकैसेआसकेंगे चिवँटीआ- दिकसूक्ष्मछिद्रमें एककालमें अनेकजीवमरतेहैं वहांकैसेजांयगे तथानगरादिकोंमें अग्निकेलगनेऔरयुद्धसे एकपलमें बहु-

तजीवोंकामरणहोताहै एक२जीवकोपकड़नेकेहेतु बहुतदूतजाते हैं उतनेदूतकहांरहतेहैं तथाउनकाहोनाकैसेबनसकै सोयहबात अत्यन्तमिथ्याहै औरजोवेदादिक सत्यशास्त्रोंमें यमराज,तथा धर्मराज नामलिखेहैं वेपरमेश्वरकेहैं औरवायुतथासूर्य्यकेभीहैं इससे क्याआयाकि जैसीव्यवस्थाजीनेऔरमरनेमेंपरमेश्वरनेरची है वैसीहीहोतीहै सोवायुऔरसूर्य्यकेआधारसे सबजीवोंकाजाना औरआनाहोताहै तथा यहीपरमेश्वरकीआज्ञाहै किजैसाजो कर्मकरै वहवैसाफलपावै येजोबात लिखीहैं उनमेंये प्रमाण हैं उत्पत्तिकेविषयमेंतो कुछश्रुतिलिखदियाहै परन्तुफिरभीलिखते हैं। यतोवाइमानिभूतानिजायन्ते येनजातानिजीवन्तियत्प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति तद्विजिज्ञासस्वतद्ब्रह्म ॥ १ ॥ यह यजुर्वेदकी तैत्तिरीयशाखाकीश्रुतिहै। अथातोब्रह्मजिज्ञासा ॥ २ ॥ जन्माद्यस्ययतः ॥ ३ ॥ एदोव्यासजीकेसूत्रहैं इनकायहअभिप्रायहै कि जिसपरमेश्वरसेसबभूत अर्थातसबजगत्उत्पन्नहोताहै उत्पन्नहोकेउसीपरमेश्वरके धारणऔरसत्तासेसबजगत्जीताहै औरप्रलयमेंउसीपरमेश्वरमेंलीनहोजाताहैवहीब्रह्महै उसब्रह्मकोजाननेकीइच्छाहै भृगोतूंकरयहीदोनोंसूत्रकाभीअर्थहै। सवितारंप्रथमेहनि, इत्यादिकमन्त्रयजुर्वेदकी संहितामेंलिखेहैं इनकायहअभिप्रायहै किजीवजब शरीरछोड़ताहै तबसूर्य्यवावायुमेंमिलता है फिरजैसापूर्वलिखा वैसेहीजाताऔरआताहै सोसबबातवहां लिखीहै देखा चाहै सो देखले। अन्नेनसोम्यशुङ्गेनापोमूलमन्विच्छअद्भिः सोम्यशुङ्गेनतेजोमूलमन्विच्छतेजसासोम्यशुङ्गेनसन्मूलमन्विच्छसन्मूला:सोम्ये मा:प्रजा। इत्यादिकसामवेदकीछान्दोग्यकीश्रुतीहैं इनकायहअभिप्रायहै किजैसीआकाशादिक क्रमसे उत्पत्तिजगत्कीहोतीहै वैसेहीक्रमसेप्रलयभीहोताहै शुङ्गनामकार्यकापृथिवीरूपजोकार्य उसकामूलजलहै सोजबपृथिवीका प्रलय होताहै तबपृथिवीजलरूप कारणमें लयहोतीहै तथाजल,अग्नि

मेंअग्निवायुमें वायुआकाशमें औरआकाशपरमेश्वरमें सोजिस प्रकारसे प्रलयकोलिखा उसीप्रकारसे होताहै औरहिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रेइति यहमन्त्रपहिलेलिखाहै औरइसकाअर्थभीलिख दियाहै सोपरमेश्वरहो सबजगत्काधारणकर्ताहै अन्यकोईनहीं इससे ऐसासिद्धभयाउत्पत्तिधारण औरप्रलयपरमेश्वरहीकेआधीनहैं यहसंक्षेपसे जगत्कीउत्पत्ति स्थिति औरप्रलयकेविषयमेंलिखा औरजोविस्तारसे देखाचाहै सोवेदादिक सत्यशास्त्रोंमें देख लेवै इसकेआगे विद्या,अविद्याबन्ध औरमोक्षकेविषयमेंलिखा जायगा॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते अष्टमः समुल्लासः सम्पूर्णः॥ ८॥

अथविद्याऽविद्यावन्धमोक्षान्व्याख्यास्यामः। वेत्तिअनयायथार्थान्पदार्थान्साविद्या विद्याइसकानामहै किजोजैसापदार्थहै उसकोवैसाहीजानना नवेत्तिअनयायथार्थान्पदार्थान्साअविद्या जैसापदार्थहै उसको वैसा न जानना उसका नाम अविद्या है ज्ञानविवेकऔरविज्ञान इत्यादिक विद्याके नामहैं अज्ञान भ्रम और अविवेक इत्यादिक सब अविद्याकेनाम हैं। अनित्याशुचिदुःखानात्मसुनित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या॥ १॥ यहपतञ्जलिमुनिका योगशास्त्रमें सूत्रहै इसकायहअभिप्रायहै किअनित्य अशुचिदुःख औरअनात्मायेजैसेहैं वैसेनजानना किन्तु इनमेंनित्यशुचिसुखऔरआत्माकोबुद्धिहोतीहै जैसेकि,अमरानिर्जरादेवा इत्यादिकवचनोंसे नित्यनिश्चयकाजोकरना किस्वर्गादिलोकऔर ब्रह्मादिकदेवनित्यहैं ऐसाअज्ञान बहुतमनुष्योंकोहै परन्तु,बेविचारकरकेदेखें किजिनकीउत्पत्ति होतीहै वेनित्यकैसेहोंगे कभी

नहीं क्योंकि उक्त पदार्थों के संयोग से जो पदार्थ होता है सो उन पदार्थों के वियोग से वह जो संयोग से बना था सो अवश्य नष्ट हो जायगा ब्रह्मादिकों के शरीर और स्वर्गादिक सब लोक संयोग से बने हैं उनका वियोग से अवश्य नाश होता ही है फिर जो इन अनित्य पदार्थों में नित्य निश्चय होता और नित्य जो परमेश्वर तथा परमेश्वर के नित्य गुण धर्म और विद्या उनको नित्य न जानना कभी उनके जानने में इच्छा भी नहीं होनी यह अविद्या का प्रथम भाग है और अनित्य पदार्थों को अनित्य जानना तथा नित्य पदार्थों को नित्य जानना यह विद्या का प्रथम भाग है अशुचि अपवित्र नाम अशुद्ध पदार्थों में शुद्ध का निश्चय होना और शुचि जो पवित्र अर्थात् शुद्ध पदार्थ में अशुद्ध का निश्चय होना जैसे कि यह शरीर इसमें सब मार्गों से मल ही निकलता है कान, आंख, नाक, मुख तथा नीचे के छिद्र और लोमों के छिद्रों से भी दुर्गन्ध ही निकलता है परन्तु जिनको बुद्धि विषयासक्त होती है वह शुद्ध बुद्धि ही उसमें करता है तथा स्त्री भी पुरुष के शरीर में शुद्ध बुद्धि करती है ऊपर के चाम को देख के मोहित हो जाते हैं फिर अपना बल, बुद्धि, पराक्रम तेज, विद्या, और धन उसके हेतु नाश कर देते हैं जो उनकी उसमें प्रवृत्त बुद्धि न होती तो ऐसे काम में प्रवृत्त न होते सो बड़े २ राजा और बड़े २ धनाढ्य और महात्मा लोग तथा मिथ्या विरक्त लोग जो हैं वे इस काम में नष्ट हो जाते हैं कभी उनके हृदय में इस बात का विचार भी नहीं होता जैसे अग्नि में पतङ्ग गिर के नष्ट हो जाते हैं वैसे वे भी ऐश्वर्य सहित नष्ट हो जाते हैं और पवित्र जो परमेश्वर विद्या और धर्म इनमें उनकी बुद्धि कभी नहीं आती यह अविद्या का दूसरा भाग है और जो शुद्ध को शुद्ध जानना और अशुद्ध को यथावत् अशुद्ध जानना यह विद्या का दूसरा भाग है दुःख में सुख बुद्धि का करना और सुख में दुःख बुद्धि का होना जैसे कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोक और विषयों की सेवा इनमें जीव को शान्ति कभी नहीं आती जैसे कि अग्नि में घी डालने से अग्नि बढ़ता जाता है वैसे उनकी भी तृष्णा बढ़ती जाती है परन्तु उस दुःख में

बहुतजीवोंकी सुखबुद्धिदेखनेमें आती है क्योंकि उसदुःखमें, सुखबुद्धिनहोती तोबेइसमें फसते नहीं यहअविद्याका तीसरा भाग है और जोपुरुषार्थ सत्यधर्मकाअनुष्ठानसत्यविद्याकाग्रहण जितेन्द्रियताकाकरना तथासत्संगसद्विद्या औरपरमेश्वरकीप्राप्तिका उपायअर्थातमोक्षकाचाहना इनमें इनकोबुद्धि लेशमात्रभीनहीं आतो इनकेविनाजीवकोकभीसुखनहींहोता परन्तु विपरीतबुद्धि केहोनेसेदुःखहीमें फसेरहतेहैं सुखमेंकभीनहींआते यहअविद्या कातीसराभागहै औरसुखमें सुखबुद्धिकाहोना औरदुःखमें दुःखबुद्धिकाहोना सोविद्याकातीसराभागहै तथाअनात्मामें आत्मबुद्धि औरआत्मामें अनात्मबुद्धिकाहोना जैसेकिशरीरादिक सब अनात्मपदार्थहैं इनमेंआत्माकीनांईबहुतमनुष्योंकीबुद्धिहै जबदेहादिकोंमें दुःखहोताहै तबइनकीबुद्धिमें यहीहोताहै किमैंमरा औरमैंबड़ादुःखीहूं मैंदुबलाहोगया मैंपुष्टहूं मैंरूपवान्हूं मैंकुरूपहूं इत्यादिकनिश्चयलोकमें देखपड़ताहै औरजोआत्मा औरपरमाण्वादिक जिनसेकिशरीरबनाहै औरपरमेश्वरइननित्यपदार्थोंमें इनकोबुद्धिकभीनहीआती नित्यसुखजोमोक्ष इसकी इच्छाभीकभीनहींहोती इसमे जन्म, मरण, क्षुधा, तृषा, शीत, उष्ण हर्षऔरशोक, इसदुःखसागरसे कभीनहींनिकलते यहअविद्या का चौथाभागहै औरआत्माको आत्मा जानना अनात्मा को अनात्माजानना यहविद्याकाचौथाभागहै इसमे क्याआयाकि अनित्याशुचिदुःखानात्मसुनित्याशुचिदुःखानात्मबुद्धिः तथानित्यशुचिसुखात्मसुनित्यशुचिसुखात्मबुद्धिर्विद्या। अथोन्यथाचाविद्येति विज्ञातव्याअन्यथा नाममिथ्या जोज्ञान किजैसेको तैसा नजानना इसकानाम अविद्याहै औरनिर्भ्रम यथार्थज्ञान काहोना सोविद्याकहातीहै विद्याअविद्याकीउत्पत्ति विषयासक्त्यादिदोषोंसेहोतीहै जबयहजीव विद्याहीनहोके बाहरकेपदार्थोंको सुखकेहेतु चाहताहै तबमनकोबाहरकीओरप्रेरताहै फिरवहमनइन्द्रियों

को बाहरकेपदार्थोंमें लगाकेप्रवृत्तकरदेताहै सोजैसे कोईपुरुष निशानेमेंतीरवागोलीलगायाचाहताहै तबवहभीतरसेबाहरकी ओरध्यानकरताहै सोनेत्रकोवन्दूकके मुखसेलगाके निशानेमें लगादेताहै वैसेहीजो२ व्यवहारजीवकियाचाहताहै तबउसीप्रकारका व्यवहारजीवमेंभीहोताहै फिरबाहरऔरभीतरके पदार्थोंको यथावत् न जाननेसे जीवभ्रमयुक्तहोके अन्यथा जानलेता है उससे फिरदृढ़संस्कारअन्यथाहोनेसे अविद्याकहातीहै सोनअपने स्वरूपकाकभीध्यानकरताहै नपरमेश्वरका तथानविद्याका किन्तु जैसेवेमिथ्यासंस्कारउसकेहैं उसीमेंगिरारहताहै क्योंकिजैसाजिसकाअभ्यासकरेगा वैसाहीउसजीवकोभासतारहैगा फिर जबतकयह अविद्याजीवमेंरहैगी तबतकउसको विद्याकभीनहीं होती परन्तु जबकभीअच्छासंग औरसद्विद्याकाअभ्यास तथाविचारऔरधर्मकाअनुष्ठान तथाअधर्मका त्यागकभीनहीं वहजीव करसक्ता औरयथार्थतत्त्वज्ञानपदार्थोंका उसकोकभीनहींहोता जबतकयहअविद्याजीवकोरहतीहै तबतकविद्याकासाधनऔरविद्याप्राप्तनहींहोती क्योंकिजबजीव सुविचार करताहै तबउसको कुछ२ विवेकउत्पन्नहोताहै किसत्यकोसत्यऔरअसत्यकोअसत्यजानना फिरअविद्याकेगुणऔरउनकेकार्यउनमेंवैराग्यहोताहै अर्थात् उनकोछोड़ताहैऔरविद्यादिकजोसत्यार्थउनमेंप्रीतिकरताहै इनमेंयहकारणहै किजबतकपदार्थोंकादोषनहीजानता तबतक उनकेत्यागकरनेकोबुद्धिजीवकोकभीनहींहोती क्योंकित्यागकाहेतु दोषोंकायथावत्देखनाहीहै तथापदार्थोंकेगुणकाजोज्ञानहोना सोईप्रीतिकाहेतुहै फिरवहजीवधर्माधर्म कायथावत्निश्चयकरके अधर्मकात्यागऔरधर्मकाग्रहणकरेगा फिरउसकामनशान्तहोगा किविद्या,धर्म,सत्सङ्ग,सत्पुरुषोंकासंग,योगाभ्यास, जितेन्द्रियता,सत्पुरुषोंकाआचार,मोक्ष औरपरमेश्वरइन्हींमें मनप्रीतियुक्तहोकेस्थिरहोजायगा इनसेविरुद्धअविद्याअधर्मकुसंग किकुपु-

रुषोंकासंगविषयोंकाअत्यन्तअभ्यास अजितेन्द्रियता दुष्टपुरुषोंका आचार जिसमें बन्धहोय औरपरमेश्वरकोछोड़के उपासनाप्रार्थनाऔरस्तुतिकाकरना इनसेउसकामनहटजायगा इसकानामशमहै फिरसबइन्द्रियांस्थिरहोजांयगी इसकानाम दमहै फिर अविद्यादिकजितनेदुष्टव्यवहार उनमेंउनकानामपृथक्‌होजायगा अर्थातउनमें कभीन फसेगा उसकानाम उपरतिहै फिरशीत, उष्ण,सुख,दुःख,हर्ष,शोच,औरक्षुधा,तृषादिकइनकासहनअर्थातइनमें हर्ष वाशोक नकरेगा इसकानाम तितिक्षाहै फिरविद्यादिकउत्तमगुणोंमें अत्यन्तश्रद्धाअर्थात् प्रीतिजीवकीहोतीहै अविद्यादिकदोषोंमेंसदाअप्रीतिइसकानामहै श्रद्धाफिरमनबुद्धिचित्त,अहङ्कार,इन्द्रियऔरप्राण एसबउसकेवशीभूतहोजांयगे उनकोजहांस्थिरकरेगा वहींसबस्थिररहैंगे औरअविद्यादिक अनर्थ मेंकभीनजांयगे इसकानाम समाधानहै एछः गुणजीवमें उत्पन्नहोगें फिरजैसेक्षुधातुर पुरुषकोइच्छा अन्तहोमें रहतीहै वैसे उसकामनमुक्तिहीमेंरहैगा किमेरीमुक्तिकबहोगी इससे भिन्नव्यवहारोंमेंउसकामनलगहीगानहीं इसकानाममुमुक्षुत्वहै येनव विवेकादिकगुणजबजीवमेंहोतेहैं तबवहब्रह्मविद्याका अधिकारी होताहै फिरवहसबसत्यशास्त्रोंका जोसत्य२पदार्थ विद्यारूप विषयउसकोयथावत्‌जानेगा फिरशास्त्रजिनपदार्थोंकेप्रतिपादनकरतेहैं उनपदार्थोंकेसाथशास्त्रोंकाप्रतिपाद्य प्रतिपादकसम्बन्धको वहजीवयथावत्‌जानलेगा इसकानामसम्बन्धहै फिरवहयथावत् विद्याओंकाश्रवणकरेगा श्रवणकरकेज्ञानने चसेउनकायथावत्‌विचारकरेगा इसकानाममननहै औरफिरउनपदार्थोंको यथावत् प्रत्यक्षज्ञाननेकेहेतु योगाभ्यास अर्थातपातञ्जलदर्शन की रीति से करेगा इसकानामनिदिध्यासनहै फिरपृथिवीसेलेकेपरमेश्वरपर्यन्त सबपदार्थोंकाज्ञानने चसेप्रत्यक्षज्ञानकरेगा उसीसमयइसकाजोप्रयोजन किसबदुःखोंकोनिवृत्ति औरपरमानन्द परमेश्वर

कीजोप्राप्ति इनकानामप्रयोजनहै सोजबयहविद्याहोगी तबअवि-
द्यादिकसबदोषनष्टहोजांयगे जैसेसूर्य्यकेप्रकाशसे अन्धकारनष्ट
होजाताहै विद्याऔरअविद्या यहदोनोंअन्धकारऔर प्रकाशकी
नांई परस्परविरोधीपदार्थहैं इनकाफलितार्थयहहै किजोविद्या-
वान्होगा सोअधर्मादिक दोषोंको कभीनकरेगा औरजो अवि-
द्यावान्गा उसकीनिश्चितबुद्धि धर्मादिकके अनुष्ठानमें कभीनल-
गेगी प्रश्न विद्याकीपुस्तककोईसनातनहै वासबपोछेरचीगईहैं उ
त्तर चारवेदोंकोछोड़केरचोगईहैं प्रश्न जैसेअन्यसबशास्त्ररचेगए
हैं वैसेवेदभीरचागयाहोगा उत्तर ऐसामतकहोजोऐसाकहोगे
तोआपकेमतमेंयहअनवस्थादोषआजायगा क्योंकिकोईपुस्तक स-
नातननठहरनेसे किसीपदार्थ अथवापुस्तककासत्य वा असत्यनि-
श्चयकभीनहोसकेगा जोकोईपुस्तकरचेगा उसकाप्रमाणकैसेहोगा
क्योंकिजोसनातनपुस्तकहोतो तोउसपुस्तकसेऔरोंका सत्यासत्य
जीवलोगजानसक्ते फिरउसकाखण्डनकरके दूसराकोईग्रन्थरच-
लेगा ऐसेदूसरेका करकेतीसरा ऐसेहीअनवस्थाआजायगी प्रश्न
जैसेअन्यपुस्तककाप्रमाणवेदसेहोताहै वैसे वेदकाप्रमाण किसपु-
स्तकसेहोगा उत्तर ऐसाकहनेसे भीअनवस्थादोषआजायगा क्यों-
किवेदकेप्रमाणकेहेतु कोइअन्यपुस्तकरक्खीजाय तोफिरउसपुस्त-
ककेप्रमाणकेहेतु कोईतीसरीभी मानीजायगी ऐसेही२ आगे२
अनवस्थाआजायगी इससेअवश्यएकपुस्तकसनातनमाननाचाहि-
ए जिससे किअन्यपुस्तकोंकोव्यवस्थासत्य२रहै सोवेदकेसनातनहो-
नेमेंपहिलेलिखदियाहै वहीबिचारलेना प्रश्न छःदर्शनोंमें बड़े२
बिरोधहैं किपूर्वमीमांसावाला धर्माधर्मीऔरकर्महीपदार्थहैं इ-
नसेजगत्कीउत्पत्तिमानताहै तथावैशेषिकदर्शनऔरन्यायदर्शन
में परमाणुसेजगत्कोउत्पत्तिमानीहै औरपातंजलदर्शनतथासां-
ख्यदर्शनमें प्रकृतिसेजगत्कीउत्पत्तिमानीहै औरवेदान्तदर्शनमें
परमेश्वरसे सबजगत्कीउत्पत्तिमानीहै यहबड़ापरस्परबिरोधहै

सबशास्त्रोंमें इसकाक्याउत्तरहै उत्तर वेदान्तमें प्रथमसृष्टिका व्याख्यानहै किउससे पहिलेजगत्थाहीनहीं औरजबअत्यन्तसबका प्रलयहोगा तबपरमेश्वरहीमें लयहोगा अन्यमें नहीं सोयहआ-दिसृष्टिहै क्योंकिपहिलेनहींथी औरफिरउत्पन्नभई इससे इससृ-ष्टिकेआदिहोनेसे सादिकहातीहै औरमीमांसादिकशास्त्रोंमें अ-नादिसृष्टिकाव्याख्यानहै क्योंकिप्रकृतिपरमाणुऔरधर्म धर्मी इ-नकानाशप्रलयमेंभीनहींहोता इसकानाममहाप्रलयहै इसमें प्रकृतिपरमाण्वादिकोंकेमिलनेसे जितनास्थूलजगत्होताहै वह सबपरमाण्वादिकोंके वियोगसेसबनष्टहोजाताहै परन्तुप्रकृतिऔ रपरमाण्वादिकबनेरहतेहैं फिरभीजबईश्वरउनकोमिलाकेजग-त्कोरचताहै तबयहस्थूलसबहोजाताहै फिरउनसेस्थूलजगत्उ-त्पन्नहोताहै फिरजबनष्टहोताहै तबप्रकृतिऔरपरमाणु रूपहो-ताहै फिरउनसेस्थूल जगत्उत्पन्नहोताहै ऐसेहीअनेकबारउत्प-त्ति औरअनेकबार जगत्काप्रलयहोताहै परन्तु प्रकृतिऔरपर-माणु इसस्थूलकाजोकारणसोनष्टनहीं इससे महाप्रलयमें आदि इसजगत्की नहींदेखपड़ती क्योंकिइसकाकारण प्रकृतिऔरपर-माणुसदाबनेरहतेहैं इससे जगत्अनादिकहाताहै कभीकारणरूप होजाताहै कभीकारणसे स्थूलजगत्उत्पन्नहोताहै ऐसेहीप्रवाह रूपउत्पत्ति औरप्रलयकेहोनेसे अनादिजगत्कहाताहै सोयहज-गत्कबउत्पन्नभया ऐसाकोईनहींकहसक्ता इससे यहआयाकिपां-चशास्त्रोंमेंमहाप्रलयकीव्याख्याहै इसमेंभीअनेकभेदहैं किजबस-रेणुतकजबप्रलयहोताहै तबधर्मऔरधर्मी कुछ२प्रसिद्ध रहताहै इसप्रलयकीव्याख्यामीमांसामेंहै औरजबअणुपर्यन्तकानाशहोता है तबपरमाणुमात्रजगत्रहताहै सोभीमहाप्रलयभेदहै यहव्या-ख्यावैशेषिकदर्शनऔरन्यायदर्शनमेंहै औरजबपरमाणुकोभीसू-क्ष्मावस्थाहोतीहै तबअत्यन्तसूक्ष्मजोप्रकृतिसोरहजातीहै औरपर माणुकाभीलयहोजाताहै क्योंकिशब्दादिकतन्मात्राओंकोभी सां-

व्यशास्त्रमें उत्पत्तिलिखीहैं औरप्रकृतिकीनहीं इससे यहअनुमान् सेजानाजाताहै किप्रकृतिपरमाणुसेभीसूक्ष्महै सोयहव्याख्यानपातंजलदर्शन औरसांख्यदर्शनमें कियाहै औरवेदान्तमें प्रकृत्यादिकोंकीउत्पत्तिलिखीहैं औरप्रकृतिकालयभी परमेश्वरमें होताहै इससे उत्पत्तिकेविषयमें भिन्न२पदार्थोंकेव्याख्यानहोनेसे कुछविरोधपरस्परइनमें नहीहै प्रश्न पूर्वमीमांसा औरसांख्यमें ईश्वरकोनहीमाना है औरअन्यशास्त्रोंमें मानाहै इससे विरोधआताहै उत्तर इसमें भीकुछविरोधनहीं क्योंकिमीमांसामें धर्म औरधर्मीदोपदार्थमानेहैं इससे होईश्वरधर्म्मी औरईश्वरके सर्वज्ञादिक धर्म्मअवश्य मानलियाहै इसमें कुछ सन्देहनहीं औरवेदकोजैमिनीजीनित्यमानतेहैं सोवेदशब्दज्ञानरूपकेहोनेसेगुणहै सोगुणीकेविनागुणकिसमें रहेगा इससे ईश्वरको उसनेअवश्यमानाहै औरसांख्यमें ईश्वरासिद्धेः ॥ १ ॥ प्रमाणाभावन्नतत्सिद्धिः ॥ २ ॥ सम्बन्धाभावान्नानुमानम् ॥ ३ ॥ उभयथाप्यसत्करत्वम् ॥ ४ ॥ मुक्तात्मनःप्रशंसोपासासिद्धस्यवा ॥ ५ ॥ एपांचसांख्यशास्त्रमें कपिलजीकेकिएसूत्रहैं यहीअनीश्वरवादकाकारणहै इनकोयथावत्नजानके चार्वाक औरबौद्धादिक बहुतअनीश्वरवादी होगएहैं इनकेअभिप्रायनहीजाननेसे इनकायहअभिप्रायहै किईश्वर की सिद्धिनहीहोतो किन्तु एकपुरुष औरप्रकृतिदोनोंनित्यहैं अन्यनहीं ॥ १ ॥ क्योंकिप्रत्यक्षप्रमाणनहोनेसे ईश्वरसिद्धनहींहोता प्रत्यक्षप्रमाणसेजोसिद्धहोतातोईश्वरमानाजाता अन्यथानहीं २॥ लिंगऔरलिंगीअर्थातचिन्ह औरचिन्हवालेकानित्यसम्बन्ध होता है सोलिंगकदेखनेसेलिंगीकाअनुमानहोताहै फिरईश्वरकालिंगनामचिन्हकोईजगत्में देखनहीपड़ता इससे ईश्वरमें अनुमान भीनहींबनता ३ ॥ ईश्वरजोमोहितहोगा तोअसमर्थकेहोनेसजगत्कोकभीनहीरचसकेगा औरजोमुक्तहोगा तोउदासीनकेहोनेसे जगत्केरचनेमें ईश्वरको इच्छाभी नहोहोगी इससे ईश्वरमें

शब्दप्रमाणभीनहींबनता॥ ४॥ फिरवेदमें सईश्वर इत्यादिकश्रु-
तिईश्वरकेव्याख्यानमें लिखीहैं उनकीक्यागतिहोगी वेसबश्रुति
विद्याऔरयोगाभ्यासऔरधर्मसेसिद्धजोजीवहोताहै किअणिमा-
दिकऐश्वर्यवाला उसकीप्रशंसाऔरउपासनाकीवाचकहै इससे ई-
श्वरकीसिद्धि किसीप्रकारसेनहींहोती ऐसेअर्थकोविपरीतजानके
मनुष्योंकीबुद्धिभ्रमयुक्तहोगईहै परन्तु कपिलजीकायहअभिप्रायहै
किपुरुषहीईश्वरहै औरवहीचेतनहै सर्वज्ञादिकगुणभीपुरुषकेहैं
उसपुरुषचेतनसेभिन्नकोईईश्वरनहींहै पुरुषकानामही ईश्वरहै
इससेयहआयाकि पुरुषहीको ईश्वरमानना चाहिए दूसराकोई
नहीं इससे जोकोईकहताहैकिजैमिनीऔरकपिलजीनिरीश्वरवा-
दीथे यहउसकाकहना मिथ्याजानना वेदादिकजितने पुस्तकहैं
उनकापठनपाठनविद्याकासाधनहै औरविद्यातथाअविद्याकीप-
रीक्षा उनकेपढ़नेऔरपढ़ानेके बिनाकभीनहींहोती विद्यापढ़ने
वाले तथानहींपढ़नेवाले इनमेंसेपढ़ने वालोंकाजोभाषण और
ज्ञानादिकव्यवहारअच्छाहीदेखनेमें आता इससे ग्रन्थोंकाजोपढ़-
ना सोविद्याकीप्राप्ति करनेवालाहोताहै अन्यथानहीं परन्तुवि-
द्वानवहीहै जोकिसर्वथाअधर्मकात्यागकरै औरधर्मका ग्रहणक-
रै अन्यथापढ़नाऔरपढ़ानाव्यर्थहीहै। अन्धन्तमःप्रविशन्तियेवि-
द्यामुपासते ततोभूयइवतेतमोयउविद्यायांरताः॥ १॥ विद्या-
चाविद्यांचयस्तद्वेदोभयंसह अविद्यया मृत्युंतीर्त्वाविद्यया ऽमृतम-
श्नुते॥ २॥ अन्यदेवाहुर्विद्ययाअन्यदाहुरविद्यया: इतिशुश्रुम-
धीराणांयेनस्तद्विचचक्षिरे॥ ३॥ येयजुर्वेदकीसंहिताकेमन्त्रहैं इ-
नकायहअभिप्रायहै किजोपुरुषअविद्यामेंफसेहैं वेअत्यन्तअन्धका-
रअर्थातजन्म,मरण,हर्ष, औरशोकादिकदुःखसागरमें प्रविष्टर-
हतेहैं इससे पृथक नहींहोसक्ते औरविद्याअर्थात् नानाप्रकारके
कर्मोंसे विषयभोगोंकोचाहनाकरना तथायोगाभ्यास,तप और
संयमसेअणिमादिकसिद्धियोंमें फसकेप्रतिष्ठासंसारमें औरअभि-

मानादिकदोषोंसेयुक्तहोनाइसमेंजोरतरहतेहैंवेउनकर्म्मीलोगों
सेभी अत्यन्तअन्धकारमेंफसजातेहैं फिरउनकानिकलनाउससेबड़ु-
तकठिनहोताहै ॥ १ ॥ परन्तु बिद्याऔरअविद्याकोएकसाथगिन
लेना क्योंकिबन्धकोकरनेवालीदोनोंहैं इससे दोनोंकानाम अवि-
द्याहै जोकर्मधर्म्मयुक्तऔरयोगाभ्यासजोउपासना इनकेअनुष्ठान
सेमृत्यु जोमोह औरभ्रमादिकदोषउनसेपृथक्मन औरजीवहोके
शुद्धहोजातेहैंफिरयथार्थपदार्थोंकाज्ञानऔरपरमेश्वरकीजोप्रा-
प्ति इसविद्यासेअमृतजोमोक्षउसकोप्राप्तहोताहै फिरदुःखसागर
में कभीनहींगिरता॥२॥ इससेविद्याजोनिर्भ्रमज्ञानइसकाफलभि-
न्नहैअर्थातमोक्षहै औरजोपूर्वोक्तअविद्याजोकिभ्रमात्मकज्ञानउ-
सकाभीफलअन्यहै नामबन्धहै सोबिद्याऔरअविद्याका फलभि-
न्न२है एकनहीं ऐसाहमनेज्ञानियोंकेमुखसेसुनाहै जोकियथार्थ
वक्ता उननेहमारेसाम्हनेयथावतव्याख्याकरदीहै इससेहमको इ-
नमेंभ्रमनहीहै ॥ ३ ॥ सोसबमनुष्योंकोयहउचितहै किसबपुरुषा
र्थसेबिद्याकीइच्छाकरैं औरअत्यन्तप्रयत्नसेअबिद्याकोछोड़ैं क्यों-
किइससंसारमेंविद्याकेतुल्यकोईपदार्थनहीं तथाबिद्याकेबिनाइस
लोकवापरलोकमें कुछसुखनहीहोता औरअनेकजन्मधारणकर्ता
है उनमेंअत्यन्तपीड़ाहोतीहै कभीपरमेश्वरकी प्राप्तिनहींहोती
इसकीप्राप्तिकेउपायब्रह्मचर्यादिकपूर्वसबलिखदियेहैं उनकोनाम
मात्रयहांगणनाथोड़ीसीकर्तेहैं प्रथमसबउपायोंकामूल ब्रह्मचर्या-
श्रमजबतकपूर्णविद्यानहोय तबतकजितेन्द्रियहोके यथावत्बिद्या
ग्रहणकरैं औरसबव्यवहारोंकोयथावत्जानें फिरबिवाहकरैं प-
रन्तुबिद्याभ्यासकोनछोड़ैं औरनित्यगुणग्रहणकीइच्छारक्खें अ-
त्यन्तपुरुषार्थ औरनम्रतापूर्वक सबसज्जनोंसेमिलैं मिलकेउनको
सेवापूर्वकगुणग्रहणकरैं आपभीजितनीबुद्धि उतनानित्य२बिचार
करैं उसमेंपक्षपात रहितहोके सत्यकोग्रहणकरैं औरअसत्यको
छोड़ैं एकान्तसेवनसेअपनीं इन्द्रियां,मनऔरशरीर सदाधर्मा-

नुष्ठानमेंनिश्चितरक्खें अधर्ममेंकभीनहीं। यथाखनन्खनित्रेण-नरोवार्यधिगच्छति तथागुरुगतांविद्यांशुश्रूषुरधिगच्छति॥ यह मनुकाश्लोकहै इसकायहअभिप्रायहै किजोपुरुष अभिमानादिक दोषरहित औरनम्रतादिकगुणयुक्तहोके सेवासेदूसरेकाचित्तप्रसन्नकरदेताहै सोईश्रेष्ठगुणोंकोप्राप्तहोताहै अन्यनहीं इसमेंयह दृष्टान्तहै किजैसेंभूमिकोखोदताखुदालीसेनीचेचलाजाय फिर वहजलकोप्राप्तहोताहै वैसेहीशुश्रूषुअर्थातकपटादिकदोषरहित औरदूसरेपुरुषकोपरिच्छाजानताहोय किइसमेंगुणहैं वा नहीं फिरयथावत्गुणोंकाबुद्धिसेनिश्चयकरले किइसमेंएसत्यगुणहैं पीछेजिसप्रकारसेवेगुणमिलैं उनसेवादिकप्रकारोंसे गुणोंकोअवश्य ग्रहणकरैं ग्रहणकरकेगुणोंकोप्रकाशकरदे औरजोकोईउनगुणों कोग्रहणकियाचाहै उसकोप्रीतिसेनिष्कपटहोके यथावत्गुणोंको देदे क्योंकिगुणोंकोगुप्तकरना कोईमनुष्यकोउचितनहीं औरजो गुणोंकोगुप्तरखताहै वहबड़ामूर्खपुरुषहै औरधर्मतथापरमेश्वर काअत्यन्तविरोधीहै वहकभीसुखनपावैगा इत्यादिकविद्याकीप्राप्तिकेहेतुहैं औरयहीअविद्या नाशकेहेतुहैं अन्यभीअनेक प्रकारके हेतुहैं उनकोबिचारलेना औरइसकेआगेबन्ध औरमुक्तिकाव्याख्यानकियाजाताहै। पराञ्चिखानिव्यतृणत्स्वयंभूस्तस्मात्पराङ्पश्यतिनान्तरात्मन् कश्चिद्धीरःप्रत्यगात्मानमैक्षदावृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन्। यहकठवल्लीकीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहै किपराञ्चिखानिअर्थातबहिर्मुख इन्द्रियजिसकीहोतीहैं वहजीवबाहरकेपदार्थोंहीकोदेखतारहताहै औरभीतरकेपदार्थोंकोवाअपने स्वरूपको कभीनहींबिचारता अथवापरमसूक्ष्मजोपरमेश्वर उसकेबिचारमें कभीजीवकाचित्तनहीजाता इससे जीवकोपदार्थों कायथार्थज्ञाननहीहोता किन्तुअत्यन्तदृढ़ भ्रमहोताहै उससे आपसेआपहीवद्धहोताहै फिरऐसामोह उसकोहोताहै किजिसकाछूटनाबहुतकठिनहै उससे फिरमिथ्याज्ञानहोताहै किसोपुरु

धन, राज्यादिकोंहीमें सुखमानलेताहै फिरउनकेसुधरनेमेंअत्यन्तहर्षितहोताहै औरबिगड़नेसे शोकयुक्तहोताहै इसजालमेंगिरके अनेकजन्ममरणजीवकेहोतेहैं औरअत्यन्त दुःखपाताहै प्रश्न जन्मएक होताहै अथवाअनेक उत्तर अनेक जन्महोतेहैं प्रश्न जो अनेकजन्महोतेहैं तोपूर्वजन्मोंकाहमकोस्मरणक्योंनहीहोता उत्तर पूर्वजन्मोंकास्मरणनहीहोसक्ता क्योंकिपूर्वजन्मज्ञानकेजोनिमित्तहैं वेसबनष्टहोजातेहैं इससे पूर्वजन्मका स्मरणनही होसक्ता प्रश्न कौनवेनिमित्तहैं औरनिमित्तकिसकोकहतेहैं उत्तर निमित्तइसकानामहै किजोदूसरेकेसंयोगसे उत्पन्नहोताहै जैसेकिजल शीतलहै औरअग्निउष्णहै जबअग्निकासंयोगजलमेंहोताहै तब जलउष्णहोजाताहै परन्तुजबअग्निसे जलपृथककियाजाताहै तब फिरभीवहशीतल होजाताहै इसकानाम नैमित्तिकगुणहै जोकि जबतकउसकानिमित्तरहताहै तबतकवहरहताहै औरजबनिमित्तनहीरहता तबउसकानिमित्तसे उत्पन्नभयाजोकिगुणसोभीनष्ट होजाताहै जैसेसूर्य्य औरनेत्रसे रूपकाग्रहणहोताहै जबसूर्यऔर नेत्रनहीरहतेतबरूपकाभीग्रहणनहींहोता क्योंकिनिमित्तकेबिना नैमित्तिकगुणनहीहोताइससेक्याआयाकिपूर्वजन्मजिसदेशजिसकालमें औरजोशरीर तथाउसशरीरकेसम्बन्धीसबपदार्थनष्टअर्थात उनकाबियोगहोनेसे वहांकाजोउनकोज्ञानथासोभीनष्टहोजाता हैऔर इसीजन्ममेंजो२ बाल्यावस्थामें व्यवहारकियाथाउससे सुखवा दुःखपायाथा उसकाभीयथावतस्मरण वृद्धावस्थामेंनहींरहताऔर जिससमयकिसीसेकिसीकीबातहोतीहै तबउसबातमेंअनेकअक्षर, पद, वाक्य, सम्बन्धकहेंऔरसुनेजातेहैं परन्तु उसके उत्तर कालमें स्मरणकहनावासुनना यथावत्नहींबनता औरकोईबात कण्ठस्थ करलेताहै फिरकालान्तरमें उसकोभीभूलजाताहै एकबातमेंजब जीवकाचित्तहोता तबदूसरेमेंनहींजाता दूसरेमेंजबजाताहै तब पहिलेकोभूलजाताहै जबऐसीबातहैतोजन्मान्तरकेस्मरणमेंशंका

जोकर्ते हैं उनकीशंकाव्यर्थहीहै प्रश्न जीवऔरबुद्धिआदिकपदार्थतो वेहीहैं फिरपूर्वजन्मका ज्ञानक्यों नहीं होता क्योंकिजोकुछदेखता वासुनताहै सोबुद्धिहीसे ग्रहणकरताहै फिरउनकाज्ञान अवश्य होनाचाहिएसो नहीहोता इस्से पूर्वजन्मनहींहैं उत्तर इसकाउत्तरतोपूर्वप्रश्नकेउत्तरहीसेहोगया क्योंकिइसबाल्यावस्थासलेकेवृद्धावस्थातक वहीजीवऔरबुद्ध्यादिकहैं फिरकहेवासुने व्यवहारोंमें अक्षर,पद,औरउनकेअर्थादिकोंका यथावत्स्मरणक्योंनहीहोता इसव्यवहारकोहमलोगप्रत्यक्षदेखतेहैं किजबहमलोगपरस्परवातकहते औरसुनतेहैं तबकुछकालकेपीछेबहुत२बातोंके सुननेवाकहनेमेंआनुपूर्वीसेयथावतस्मरणनहींरहता फिरजन्मान्तरकेस्मरणमेंशंकाकरनीव्यर्थहीहै औरदेखनाचाहिए किजागृतावस्थामें वेहीजीवऔरबुद्ध्यादिकव्यवहारकर्तेहैं यहमेराघर,द्वार,पिता,पुत्र,स्त्री,बन्धु,शत्रु,औरमित्रादिकहैं ऐसाउसजीवको यथावत स्मरणहै औरफिरजबस्वप्नावस्थाहोतीहै तबइनकाउसीसमयविस्मरणहोजाताहै फिरजबसुषुप्तिहोतीहैतबदोनोंकाव्यवहारविस्मृतहोजाताहै वेहीजीव और बुद्ध्यादिकहैं परन्तु किञ्चित २ देश औरकालकेभेदहोनेसे पूर्वकाव्यवहारबिस्मृतहोजाताहै फिरपूर्वजन्मदेशकाल और शरीरादिकपदार्थ सबछूट जातेहैं फिरउनकेस्मरणकीशंकाजोकर्तेहैं सोबिचारवाननहींहैं प्रश्न यहजन्मजोहोताहैसोएकबारहीहोताहै दूसरीबारनहींक्योंकियहदूसराजीवहैसोनया२उत्पन्नहोजाताहैऔरशरीरधारणकरताहैजोकिपहिलेशरीरधारणकियाथा सोजीवफिरनहींआता उत्तर यहबातमिथ्याहै क्योंकिजोदूसराजीवहोता तोउसकोपूर्वके संस्कारनहींदेखपड़ते जैसेकिजिसपदार्थकासाक्षात अनुभवबुद्धिमें अवश्यआताहै फिरसंस्कारसेस्मृतिउत्पन्नहोतीहै औरस्मृतिसेप्रवृत्तिवानिवृत्तिहोतीहै जैसेकिकोईसंस्कृतकोपढ़े औरकोईअंगरेजीकोजोजिसकोपढ़ताहै उसकोउसकाअक्षरादिक्रमसेबुद्धिमेंसबसंस्कारहो-

तेहैं साक्षात्देखने औरसुननेसे अन्यकानहीं फिरकालान्तरमें
कोईव्यवहारअथवापुस्तककोदेखताहै सोपूर्वदृष्टवाश्रुतकेसंस्कार
सेस्मृतिहोतीहै है कियहप्रकार वायकारहै औरइसका यहअर्थ
है क्योंकिमैंनेपूर्वइसकाअर्थ ऐसापढ़ावासुनाथा विनासंस्कारके
स्मृतिकभीनहींहोती औरविनास्मृतिसेयहऐसाहीहै वानहीं ऐ-
सीप्रवृत्तिवानिवृत्ति कभीनहींहोती सोएकहीजन्महोता तोजन्म
समयसेलेके बालकोंको अनेकप्रकारकेव्यवहारदेखनेमेंआतेहैं जैसे
क्षुधाकाज्ञानऔरदुग्धादिकोंसेक्षुधाकीनिवृत्तिकेहेतु इच्छाफिर
दुग्धपीनेकीयुक्ति औरतृप्तिहोनेसेदूधपीनेकीनिवृत्तितथामलमूत्रा
दिकोंकेत्यागकीयुक्ति औरकोईउसकोकुछमारै अथवाडरावै फि-
रउससेरोदनादिककीप्रवृत्तिऔरप्रीतिवाला उनसेहासऔरप्रस-
न्नताकीप्रवृत्तिइत्यादिकप्रवृत्तिऔरनिवृत्ति रूपव्यवहारविनापूर्व-
जन्मकेसंस्कारसेकभीनहींहोसक्ताइससे पूर्वजन्मअवश्यमाननाचा-
हिए प्रश्न एसबव्यवहारस्वभावसेहोतेहैं जैसेकिअग्निऊपरचलता
है औरजलनीचेकोवैसेहीवेसबजीवकोज्ञानस्वरूपकेहोनेसे हो-
तेहैं उत्तर जोस्वभावसे मानोंगेतोपूर्वकहे अनुभव संस्कारऔर
स्मृतितथाप्रवृत्तिवानिवृत्तिइनकोछोड़देओ औरजोछोड़ोगेतोको-
ईव्यवहारआपलोगोंकासिद्धनहींहोगा फिरपढ़नापढ़ानाबुरीवातों
केछोड़नेकाउपदेश तथाअच्छीबातोंकाउपदेशक्योंकरते औरक-
रातेहोऔरजोस्वभावसेमानोगेतोउसकोनिवृत्तिकभींनहींहोगी
जैसेकिअग्निऔरजलकेस्वभावकीनिवृत्तिनहींहोती वैसेप्रवृत्तिको
स्वभावसेमानोगेतो निवृत्तिकभीनहींहोगी जोनिवृत्तिकोस्वभाव
सेमानोगेतोप्रवृत्ति कभींनहींहोगी औरजोदोनोंको मानोगेतो
क्षणभंगऔरअनवस्थाहोगी फिरआपलोगोंमें उन्मतादोष आ-
जायगा क्योंकिअग्निकीनीचे चलनेमेंप्रवृत्तिकभीनहींहोती तथा
जलकीस्थूलकेहोनेसेऊपरकोप्रवृत्तिकभीनहींहोती वैसेहीस्वभा-
वसबजानों प्रश्न ईश्वरनेजैसाजिसकास्वभावरचाहै वैसाहीहोता

है उत्तर यहबातभीठीकनहीं जोईश्वरकारणहोताहै इनव्यवहारोंमेंतोईश्वरकेदयालुहोनेसे सबओषधियोंकाज्ञानऔरपरमेश्वरपर्यन्तपदार्थोंकाबोध तथाधर्ममेंप्रवृत्तिऔरअधर्मसेनिवृत्ति ईश्वरनेसबजीवोंमेंस्वभावसेक्योंनहीरक्खी औरईश्वरअन्यायकारी भीहोजायगा क्योंकिकिसीकोराजाऔरधनाढ्यकेघरमें जन्मऔर किसीकोअसमर्थ औरदरिद्रके घरमें जन्म तथाएककोबुद्धि बहुत अच्छीऔरदूसरेकोजड़बुद्धिदेताहै तथाएकरूपवान्औरएककुरूप तथाएकबलवान् औरदूसरानिर्बलएकपण्डितऔरदूसरामूर्खहोताहै सोबिनाअच्छेकर्मोंसेउत्तमपदार्थोंकादेना औरबिनाअपराधसेभ्रष्टपदार्थोंकादेना इससे ईश्वरमेंपक्षपातआवेगा पक्षपात केआनेसेईश्वरअन्यायकारी होजायगाऔर कृतहानिरकृताभ्यागमश्च। एदोदोष आजायेंगे क्योंकि अबजो कुछ किया जाता है उसको हानि होजायगी फिर जन्मके नहो होने से जो शरीर, इन्द्रियां, प्राण, और मन के नहो होने से पाप पुण्यों का फल कभीनहींभोगसक्ता औरजोपूर्वजन्मनमानेंगेतो बिनाकिए सुख औरदुःखकोप्राप्तिकैसेहोगी वैषम्यऔरनैर्घृण्य,एदोदोषईश्वरमें आजांयगे किबिनाकारणसे किसीकोसुखदेदे औरकिसीकोदुःख यहविषमता ईश्वरमेंआवेगी औरजीवोंकोदुःखीदेखकेजिसकोघृणानामदयानहींआतोइस्सेईश्वरकादयाजोगुणसोनष्टहोजायगा औरजोपूर्वतथा उत्तर जन्महोगातोईश्वरमेंकोईदोषनहींआवेगा क्योंकिजैसाजिसकापुण्यवापापवैसाउसकोसुखवादुःखहोगा इससे ईश्वरन्यायकारीऔरदयालुभीयथावत्रहेगाइस्सेपूर्वऔरपरजन्म अवश्यमाननाचाहिए सोपूर्वजन्मोंकी संख्यानहींहैं क्योंकिजबसे सृष्टिउत्पन्नभईहै तबसेअनेकजन्मधारणकरते२चलेआतेहैं और जबतकमुक्तिनहोहोगी तबतकस्थूलशरीरअवश्यधारणकरेंगे प्रश्न सुखवादुःखराजाऔरदरिद्रकोतुल्य होदेखपड़ताहै क्योंकिजोराजाको सुखवःदुःखहैं वेदरिद्रोंकोभीहैं विचारकरकेदेखैं तोसुख

वा दुःखसबको तुल्य ही देखपड़ताहै उत्तर ऐसा कहना योग्य नहीं क्योंकि इच्छाके अनुकूल पदार्थोंकी प्राप्तिका होना सुख कहाताहै और इच्छाके प्रतिकूल पदार्थोंकी प्राप्तिका होना दुःख कहाताहै सो हर्ष और प्रसन्नता सुखके पर्यायहैं और शोक तथा अप्रसन्नता दुःखके पर्यायहैं जब राजादिक धनाढ्योंके गर्भवासमें जीव आताहै उसी दिनसे अनुकूल पदार्थोंका सेवन होताहै फिर जन्म जब होताहै तब अनेक औषधादिक व्यवहारोंकी प्राप्ति होतीहै और बिना इच्छाके भी अनेक पदार्थ अनुकूल प्राप्त होतेहैं वह जब दूध पीनेकी इच्छा करताहै तब बिना इच्छासे भी मिश्री और सुगन्धादिकसे युक्त दूध यथेष्ट मिलताहै और जब वह कुछ अप्रसन्न वा रोने लगताहै तब अनेक सेवक परिचारक लोग मधुर वचन और खिलौनेसे शीघ्र ही प्रसन्न कर देतेहैं और फिर जब वह बड़ा होताहै तब जिसके ऊपर दृष्टि करताहै वह हाथ जोड़के अनुकूल वचन तथा अनुकूल व्यवहार करताहै सदा प्रसन्न उसको सब लोग रखतेहैं और वह रहताहै फिर जब कभी दुःखी भी होताहै तब अनुकूल वचन और औषधादिकोंसे उसको प्रसन्न कर देतेहैं और जो विद्यावानोंके गर्भवासमें आताहै उसको भी अधिक सुख होताहै परन्तु कोई कर्म उनमें से नष्टबुद्धिके होनेसे दुःखी होजाताहै सो पूर्वजन्मके पापोंसे और इस जन्मके दुष्ट व्यवहारों से पीड़ित होताहै और जो मूर्ख वा दरिद्रके गर्भवासमें जीव आताहै उसी समयसे उसको दुःख होने लगतेहैं जब वह स्त्री घास वा लकड़ीको काटने लगतीहै तब गर्भमें प्रहारके होनेसे जीव पीड़ित होताहै और कभी क्षुधातुर रहतीहै कभी बहुत कुत्सित अन्नको खा लेतीहै उससे भी उस जीवको अत्यन्त पीड़ा होतीहै फिर जब जन्म होताहै तब कोई प्रकारका औषध वा सुनियम तथा कोई परिचारक उस समय नहीं रहता किन्तु मार्ग वन वा खेतमें प्रायः पाषाणकी नाईं गर्भमें बालक गिर पड़ताहै फिर वह स्त्री उसको पोंछ पांछके वस्त्रमें बांधके पीठमें बांध लेतीहै फिर कभी उस स्त्रीको घास वा लकड़ी वनेको शीघ्रता

होतीहै सउसमयबालक दूधपीनेकेहेतुरोताहै सोदूधतो उसको नहींमिलता परन्तु वहस्त्रीउसबालककोथपेड़ामारतीहै फिरअधिकर जबरोताहै तबअधिकर मारतीहै फिररोतारहताहै परन्तु दूधनहीपिलाती फिरवह जबकुछबड़ाहोताहै तबउसकोयथावत्खानेकोभी समयकेऊपरनहीरहता फिरवहमजूरीकरताहै तोभीउसकोयथावत्इच्छाकेअनुकूलनहीमिलता औरसदाउसकोसुखकीतथाउत्तमपदार्थोंकेप्राप्तिकीइच्छाहोतीहै परन्तु प्राप्तिकेनहीहोनेसेसदादुःखीरहताहै जोऐसाकहताहैकिसुखवादुःखसबकोतुल्यहैसोपुरुषविचारवान्नहीहै क्योंकिसुखवादुःखप्रत्यक्षहीअधिकवान्यूनदेखपड़तेहैं प्रश्न जबपहिलेर हीसृष्टिभईथी तब उससे पूर्वजन्मतोकिसोकानहींथा फिरमउससमय अधिक वा न्यून राजा अथवादरिद्रादिकक्योंभएथे इससे जानाजाताहै किजैसेपहिलेजन्ममेंभयेथे इससे आजकालपहिलाहीजन्महै सोअधिकन्यूनबनजाओ परन्तु एकर जन्महीविचारमेंआताहै बहुतजन्मनही उत्तर आदिसृष्टिमेंसबमनुष्य उत्पन्नभएथे नकोईराजानकोईप्रजा नमूर्खनपण्डितइत्यादिकभेदनहींथे इससे आदिसृष्टिमें दोषनहीं आया प्रश्न जैसेआदिसृष्टिमेंदुग्धपानादिकव्यवहार सुखऔरदुःखआदिक प्रवृत्तिवानिवृत्तिभईथी वैसेआजकालभीहोतीहै फिर वहजोआपनेकहाकि अनुभवादिकोंसेबिनाप्रवृत्तिवानिवृत्ति नही होती सोबात विरुद्धहोगई उत्तर विरुद्धनहीहोती क्योंकिआदिसृष्टिमेंगर्भवाससेउत्पत्तिनहीभईथी औरकिसोको बाल्यावस्थाभी नथो किन्तु सबस्त्रीऔरपुरुषोंकीयुवावस्थाहीईश्वरनेरचीथी फिर वेउससमयअच्छा वा बुराकुछनहीजानतेथे जहांजिसकानेत्रया अथवाबुद्ध्यादिक जिसवाह्यपदार्थमेंयुक्तभए उसकोटकर देखतेथे परन्तु यहअच्छीवाबुरी ऐसानहीं जानतेथे परन्तु प्राण, शरीर अथवा इन्द्रियइनमें चेष्टागुणथा ऐसानहीजानतेथेकि ऐसीचेष्टा करनीवानकरनी फिरचेष्टाहोनेलगी वाह्यपदार्थोंकेसाथ स-

शादिकव्यव हारहोनेलगे उनमेंसेकिसीनेकुछपत्तावाफूलवाघास
स्पर्शकिया वाजीभकेऊपररक्खा तथादांतोंसे चबानेलगे उसमें
सेकुछभीतरचलागया कुछबाहरगिरपड़ा उसकोदेखकेदूसराभी
ऐसाकरनेलगा फिरकतैं२व्यवहारबढ़ताचला तथासंस्कारभीहो
तेचले होते२मैथुनादिकव्यवहारभीहोनेलगे सोपांचवर्षतकउस
समयकिसीकोपापवापुण्यनहीलगताथा वैसेहीआजकालभीपांच
वर्षतकबालकोंकोपापपुण्यनहीलगता फिरव्यवहारकतैं२अच्छा
बुराभीकुछ२जाननेलगे फिरपरस्परउपदेशभीकरनेलगे कियह
अच्छाहैयहबुराहै औरपरमेश्वरनभीउक्तपुरुषोंकेद्वारावेदविद्या
काप्रकाशकिया वेवेदद्वारामनुष्योंको उपदेशभीकरनेलगे उनके
उपदेशको किसीनेसुना औरकिसीनेनसुना सुनकेभीकिसीनेवि-
चाराऔरकिसीनेनविचारा परन्तु बहुतमनुष्य कुछ२अच्छाबुरा
जाननेलगे फिरआगे२मैथुनिसृष्टिहोनेलगी फिरउनबालकोंको
भीउपदेशऔरसंस्कारहोनेलगे सोआजतकअनेकप्रकारकेपापपु-
ण्योंसेव्यवहारभिन्न२होतेआएहैं सोहमलोगप्रत्यक्षदेखतेहैं इ-
ससे आगेकेसंस्कारोंकाअनुमानकरलेतेहैं औरपीछेजो२संस्कारों
सेव्यवहारहोंगे उनकाभी अनुमान हमलोगकरतेहैं इसमध्यस्थ
व्यवहारकोप्रत्यक्षदेखनेसे प्रश्न परमेश्वरमें विषमतादोषतोआता
है क्योंकिआदिसृष्टिमें बहुतजीवोंकोमनुष्यशरीरदिए बहुतोंको
पश्वादिककेशरीरदिए सोमनुष्योंकाशरीरतोउत्तमहै औरपश्वा-
दिकोंकानीच औरआदिसृष्टिमें मनुष्योंनेएककर्म क्योंनहीकिया
भिन्न२कर्मकरनेसेभी यहजानाजाताहै किजैसेप्रथम शरीरोंकदे-
ने औरकर्मोंकेकरनेमें विषमताभईथी वैसेआजकालभीहोतीहैं
इससे ईश्वरपक्षपातोनहीहोता औरईश्वरकेऊपरकोईनहीहै इ-
ससे जैसीउसकोइच्छावैसाकरताहै औरजोवहकरताहै सोअच्छा
हीकरताहै परन्तु हमारीबुद्धिछोटीहै इससे समझनेमेंनहींआता
उत्तर अपने२स्थानमें सबशरीरअच्छेहैंकोईपदार्थपरमेश्वरनेबु-

रा नहीं रचा परन्तु उनके परस्पर मिलने से कहीं गुण कहीं दोष होता है सो जिस समय आदि सृष्टि भई थी उस समय मनुष्यों और पश्वादिकों में कुछ विशेष नहीं था विशेषतो पीछे से भया है सो जितने शरीर रचे हैं वे सब जीवों के कर्म भोग करने के हेतु रचे हैं सो ईश्वर न रचता तो वे शरीर कैसे होते इससे प्रथम ही ईश्वर ने सब व्यवस्था कर रक्खी है कि जैसा जो कर्म करै सो वैसा ही जन्म सुख वा दुःख को प्राप्त हो वै और एक २ बार बिना संस्कारों से भी मनुष्य का शरीर मिलेगा क्योंकि सब शरीरों से मनुष्य का शरीर उत्तम है और मनुष्य ही के शरीर में पाप और पुण्य लगता है अन्य शरीर में नहीं और जो यह मनुष्य का शरीर है सब जीवों के लिए है क्योंकि सबको प्राप्त होता है वैसे ही सब कीट पतंगादिकों के शरीर भी हैं जब मनुष्य शरीर में जीव अधिक पाप करता है और पुण्य थोड़ा तब नरकादिक लोक और पश्वादिकों के शरीरों को प्राप्त होता है जब उसका पाप और पुण्य तुल्य होते हैं तब मनुष्य का शरीर प्राप्त होता है और जब पुण्य अधिक करता है और पाप थोड़ा तब देवलोक और देवादिकों का शरीर उस जीव को मिलता है उसमें जितना अधिक पुण्य उसका फल जो सुख उसको भोग के जब पाप पुण्य तुल्य रह जाते हैं तब फिर मनुष्य का शरीर धारण करता है इन कर्मों में तीन भेद हैं एक मन से दूसरा वाणी से और तीसरा शरीर से कर्म करता है इन तीनों में से एक २ के तीन भेद हैं सत्व रज और तमो-गुण के भेद से सो जब मन से सत्त्वगुण कि शान्त्यादिक गुणों से युक्त होके उत्तम कर्म करता है तब देव मनुष्य और पश्वादिकों में वह जीव रहता है परन्तु मन में प्रसन्नता ही उसको रहती है और रजोगुण से युक्त होके मन से जब पुण्य वा पाप करता है तब देव मनुष्य पश्वादिकों में मध्यम ही वह होता है उत्तम नहीं किन्तु उत्तम तो सत्वगुण वाला होता है क्योंकि रजोगुण के कार्य लोभ द्वेषादिक होते हैं तमोगुण प्रधान जिस पुरुष को होता है उसको मोह, आलस्य, प्रमाद, क्रोध और विषादादिक दोष होते हैं वह प्रायः पाप वा पुण्य अधम ही करेगा इससे देवम-

नुष्यऔरपश्वादिकोंमें नीचशरीरमेंप्राप्तहोगा औरजोवचनसेपा-पकरेगा तोमृगादिकयोनिकोप्राप्तहोजायगा फिरसदावहशब्दों सेचामितहोरहेगा क्योंकिजोजिससे पापकरताहै वहउसीसेभोग करताहै जबशरीरसेजोवपापकरतेहैं वेवृक्षादिकस्थावरशरीरको प्राप्तहोतेहैं इसमेंमनुभगवानके श्लोक लिखतेहैं सोजानलेना ॥ मानसंमनसैवायमुपभुंक्ते शुभाशुभम्। वाचावाचाकृतंकर्म कायेनैवचकायिकम् ॥ १ ॥ म॰ यहजीवमनवाणीऔरशरीरसेशुभनाम पुण्यऔरअशुभनामपापकरताहै सोजिससे करताहै उसीसेभोगभी करताहै ॥ १ ॥ शरीरजैःकर्मदोषैर्याति स्थावरतान्नरः। वाचिकैःपक्षिमृगतांमानसैरन्त्यजातिताम् ॥ २ ॥ म॰ जबशरीरसेपापकरताहै तबवृक्षादिकस्थावरशरीरकोप्राप्तहोताहै वचनसेकिए पापोंसेपक्षिऔरमृगादिक योनिकोप्राप्तहोताहै औरमनसेकिए पापोंसेनीचचाण्डालादिकयोनिकोप्राप्तहोताहै ॥ २ ॥ योयदैषां गुणोदेहे साकल्येनातिरिच्यते। सतदातद्गुणप्रायं तंकरोतिशरीरिणम ॥ ३ ॥ म॰ जोगुणजिसकेशरीरमेंप्रधानहोताहै उससेयुक्तहोके जीवउसगुणकेयोग्यकर्मकोकरताहै औरगुणभीउसकोकराताहै ॥ ३ ॥ सत्त्वंज्ञानंतमोज्ञानं रागद्वेषौरजःस्मृतम्। एतद्व्याप्तिमदेतेषां सर्वभूताश्रितंवपुः ॥ ४ ॥ म॰ सत्वगुण का कार्य ज्ञानहै तमोगुणका कार्यअज्ञान औररजोगुणकाकार्य रागऔर द्वेषहै एतीनगुणऔरइनकेतीनकार्यसबभूतोंमेंव्याप्तहैं क्योंकिइसीकानाम प्रकृतिऔरकारण शरीरहै ॥ ४ ॥ तत्रयत्प्रीतिसंयुक्तं किंचिदात्मनिलक्षयेत्। प्रशान्तमिवशुद्धाभं सत्त्वंतदुपधारयेत् ॥ ५ ॥ म॰ जिसपुरुषकाचित्तजबप्रसन्नतायुक्तरहै तथाप्रशान्तकीनांई औरशुद्धकीनांई तबउसकोसत्वगुण औरसत्वप्रधानपुरुषकोजानना ॥ ५ ॥ यत्तुदुःखसमायुक्तम प्रीतिकरमात्मनः। तद्रजोप्रतिघंविद्यात्सततंहारिदेहिनाम् ॥ ६ ॥ म॰ जिसका चित्तदुःख युक्त रहै हृदयमेंप्रसन्नताभीनहोवैसदाचित्तचंचलहो।य विषयोंकेओर

दौड़नेलगे और वशीभूत नहीं वह रजोगुणप्रधान पुरुष है. ता है ६ ॥ यत्तुस्यान्मोहसंयुक्त मव्यक्तं विषयात्मकम् । अप्रतर्क्य मविज्ञेयं तमस्तदुपधारयेत् ॥ ७ ॥ भ० जो चित्त मोह संयुक्त रहै हृदय में कुछ विचार भी सत्यासत्य का न होय विषय की सेवा में फसा रहै ऊहापोह जिसमें न होय और जैसा अन्धकार में पदार्थ वैसा कुछ ज्ञान नमें भी न आवै उस जीव को तमोगुण प्रधान और तमोगुण जानना ॥ ७ ॥ त्रयाणामपिचैतेषां गुणानां यः फलोदयः । अग्र्यो मध्यो जघन्यश्च तं प्रवक्ष्याम्यशेषतः ॥ ८ ॥ भ० इन तीन गुणों का उत्तम मध्यम और नीच जो फलोदय उसके आगे कहते हैं यथावत् ॥ ८ ॥ वेदाभ्यासस्तपोज्ञानं शौचमिन्द्रियनिग्रहः धर्मक्रियात्मचिन्ता च सात्विकं गुणलक्षणम् ॥ ९ ॥ भ० वेदाभ्यास, तप नाम योगाभ्यास. ज्ञान, सत्यासत्य विचार, जितेन्द्रियता, धर्मका अनुष्ठान, आत्माका विचार तथा परमेश्वर का भ जिसमें गुण होवैं उत्तम सात्विक पुरुष और सत्व गुण का लक्षण है ॥ ९ ॥ आरम्भरुचिताधैर्य्य मसत्कार्यपरिग्रहः । विषयोपसेवा चाजस्रं राजसं गुणलक्षणम् ॥१०॥ भ० कार्यों के आरम्भ में अत्यन्त रुचि अधैर्य असत्कार्यों का स्वीकार और निरन्तर विषय सेवा में फसा रहै यह रजोगुण अधिक पुरुष वाले का लक्षण है १० ॥ लोभः स्वप्नोधृतिः क्रौर्यं नास्तिक्यं भिन्नवृत्तिता । याचिष्णुता प्रमादश्च तामसं गुणलक्षणम् ॥ ११ ॥ भ० अत्यन्त लोभ अत्यन्त निद्रा धैर्य का लेश नहीं क्रूरता नाम दयारहित नास्तिक्य नाम विद्या धर्म और ईश्वर को नहीं मानना भिन्नवृत्तिता नाम छिन्न भिन्न जिसकी बुद्धि नित्य दान दक्षिणा और भिक्षा ग्रहण में प्रीति और प्रमाद नाम नाना प्रकार का उपद्रव करना यह तमोगुण और तमोगुण पुरुष वाले का लक्षण है और रूपसे आगे तीनों गुणों के लक्षण कहे जाते हैं ॥ ११ ॥ यत्कर्मकृत्वाकुर्वंश्च करिष्यँश्चैव लज्जति । तज्ज्ञेयं विदुषा सर्वं तामसं गुणलक्षणम् ॥ १२ ॥ भ० जिस कर्म को करके करता भया और करने की इच्छा में लज्जा और भय होता है वह पुरुष और कर्म तमोगु-

णीहैं क्योंकिपापहीमेंरहेगा ॥ १२ ॥ येनास्मिन्कर्मणालोके ख्यातिमिच्छसिपुष्कलाम्। नचशोचत्यसंपत्तौ तद्विज्ञेयन्तुराजसम् ॥ १३ ॥ म० लोकमें कीर्तिकेहेतुइच्छासेभाटआदिकपुरुषोंकोपदार्थ देना और ऐसाकाममैं करूं जिससे किमैंरोइसलोकमेंप्रशंसाहोय सोमिथ्याप्रशंसाकाचाहना अन्यायसेऔरउससंधनतथापदार्थके नाशहोनेमेंकुछसोचबिचारनकरनायहरजोगुणीपुरुषहै यहघोर दुःखमें सदापड़ारहताहै॥१३॥ यत्सर्वेणेच्छतिज्ञातुं यन्नलज्जतिचाचरन्। येनतुष्यतिचात्मास्य तत्सत्वगुणलक्षणम् ॥१४॥ म० जो पुरुषसबप्रकारोंसेऔरउत्तमपुरुषोंसेज्ञाननेकोचाहताहै तथाधर्मकेआचरणमेंकोईहानिवानिन्दाहोय तोभीजिसकोंलज्जावाभयन होय औरजिसकर्ममेंअपनाआत्माप्रसन्नहोय अर्थातधर्माचरणसे उसकोकभीनछोड़ै यहसात्विकपुरुषकालक्षणहै ॥ १४ ॥ तमसोलक्षणंकामो रजसस्त्वर्थउच्यते। सत्वस्यलक्षणंधर्मः श्रैष्ठ्यमेषांयथोत्तरम॥१५॥ म० जोकाममें फसारहताहै वहतमोगुणीपुरुषहै तथाधनादिकअर्थहीको परमपदार्थमानताहै वहरजोगुणीहै औरजोधार्मिकअर्थात्धर्महीमें जिसकोनिष्ठाहै वहसत्वगुणीपुरुषहै तमोगुणीसेरजोगुणीरजोगुणीसेसत्वगुणवालापुरुषश्रेष्ठहै॥ १५ ॥ इनमें ससत्वगुणवालाधार्मिकहोकेपुण्यहीकरेगा रजोगुणवालापापपुण्यदोनोंकरेगा तथातमोगुणवाला पापहीकरेगा इनको जैसे२ जन्म और सुख वा दुःख होते हैं सो लिखा जाता है ॥ देवत्वंसात्विकायान्ति मनुष्यत्वंचराजसाः। तिर्यक्त्वंतामसानित्य मित्येषात्रिविधागतिः ॥ १६ ॥ म० जोसात्विकपुरुषहोतेहैं वेदेवभावकोप्राप्तहोतेहैं अर्थातविद्वानधार्मिकऔरबुद्धिमानहोतेहैं तथाउत्तमपदार्थ और उत्तम लोकोंकोभी प्राप्तहोतेहैं तथाजोरजोगुणीहोतेहैं वेमध्यमलोकमनुष्यत्व तथाबुद्ध्यादिकपदार्थोंको प्राप्तहोकेमध्यमरहतेहैं उत्तमनहीं औरजोतमोगुणी होतेहैं वेनीचतापश्वादिकशरीर तथाबुद्ध्यादिकमेंभीनीचभाव र-

हता है इनतीनोंकेतीन गुणोंसे उत्तममध्यमऔरनीचतासे एक२
गुणकातीन२भेदहोतेहैं और वैसेही उनकोफलमिलतेहैं सोआ-
गे२लिखाजाताहै ॥ १६ ॥ स्थावराःकृमिकीटाश्च मत्स्याःसर्पाश्च-
कच्छपाः । पशवश्चमृगाश्चैवजघन्यातामसीगतिः ॥१७॥ म० स्था-
वर, वृक्षादिक, कृमि, कीट, मत्स्य, तथाकच्छपादिक, जलजन्तु,
गायआदिकपशु तथामृगादिकवनकेपशु जिसकोअत्यन्ततमोगुण
होताहै वहऐसेशरीरोंकोप्राप्तहोताहै ॥ १७ ॥ हस्तिनश्चतुरंगाश्च
शूद्राम्लेच्छाश्चगर्हिताः । सिंहाव्याघ्रावराहाश्च मध्यमातामसी-
गतिः ॥ १८ ॥ म० हाथीघोड़े शूद्रजोमूर्ख म्लेच्छनामकसाईआ-
दिक गर्हितनामजोनिन्दितकर्मकरनेवाले सिंहउनसकुछजोनीच
होतेहैं व्याघ्रवराहनामसूवर जोपुरुषमध्यतमोगुणवालाहोता
है वह ऐसे जन्मोंकोपाताहै ॥ १८ ॥ चारणाश्चसुपर्णाश्च पुरुषा-
श्चैवदांभिकाः । रक्षांसिचपिशाचाश्चतामसीषूत्तमागतिः ॥ १९ ॥
म० चारणनामदूतदूतो औरगानेवाले जोकिवेश्याओंकेपासगण
रहतेहैं सुपर्णजोहंसादिकअच्छेउत्तमपक्षी दांभिकपुरुषअर्थातस-
म्प्रदायवाले मिथ्याउपदेशकरनेवाले तथाअहंकारअभिमानादि-
कगुणयुक्त राक्षसनाम छल,कपट करनेवाले पिशाचनाम सदा
मलिनरहैं ऐसे जन्मोंकोप्राप्तहोतेहैं जिनमेंकिथोड़ातमोगुण रह-
ताहै ॥ १९ ॥ झल्लामल्लानटाश्चैव पुरुषाःशस्त्रवृत्तयः । द्यूतपानप्र-
सक्ताश्च जघन्याराजसीगतिः ॥ २० ॥ म० झल्लानामतड़ाग कूप
आदिकखोदनेवाले मल्लानाममल्लाह औरकुश्त करनेवाले शस्त्र
वृत्तिपुरुष जोकिशस्त्रोंकोंबनाने औरसुधारने वाले जुआरीलोग
औरभांग,गांजा,अफीम तथामद्यपीनेमेंजोफसेरहतेहैं जिनको
अत्यन्तरजोगुणहै वेइसप्रकारकेहोतेहैं ॥ २० ॥ राजानःक्षत्रिया-
श्चैवराज्ञांचैवपुरोहिताः । वादयुद्धप्रधानाश्चमध्यमाराजसीगतिः ॥
२१ ॥ म० जिनपुरुषोंमें मध्यरजोगुणहोताहै वेराजाहोतेहैं तथा
क्षत्रियहोतेहैं अर्थातशूद्रवीरादिकगुणवालेहोतेहैं राजाओंकेपु-

रोहितवादमें प्रधानजोकिनानाप्रकारवादविवादकरतेहैं वकील आदिकयुद्धमें प्रधानजोकिसिपाहीहोतेहैं यहरजोगुणियोंकीमध्यमगतिहै २१। गन्धर्वागुह्यकायक्षाविबुधानुचराश्चये। तथैवाप्सरसः-सर्वाराजसीषूत्तमागतिः॥ २२॥ भ० गन्धर्वजोकिगानविद्यामेंकुशल गुह्यकजोकिसिल्प औरवादित्रोंकोबजानेमेंचतुर यक्षनामबड़े धनाढ्यतथाविबुधनामउत्तमदेवोंकेगण अर्थातसेवकऔरअप्सराअर्थातरूपादिकगुण औरचतुरस्त्रीजिनमेंबहुतथोड़ा रजोगुणहोता है उनकोऐसेजन्ममिलतेहैं॥ २२ ॥ तापसायतयोविप्रा येचवैमानिकागणाः। नक्षत्राणिचदैत्याश्च प्रथमासात्विकीगतिः २३॥ भ० तापसनामकपटछलादिकदोषोंकेबिना कृच्छ्चांद्रायणादिक व्रतऔरयोगाभ्यासकरनेवाले यतिनाम यत्नऔरविचारकरनेमें प्रवीण विप्रनामवेदकापाठअर्थऔरतदुक्तकर्मोंकेजानने औरकरनेवाले वैमानिकगणजोकिआकाशमेंयानोंकोचलानेवालेऔर रचनेवाले नक्षत्रजोकि गणितविद्या जाननेवाले औरनक्षत्रलोकतथानक्षत्रलोकमेंरहनेवाले औरदैत्यजोकिविद्याशान्ति और शूरवीरादिकगुणयुक्तजोथोड़े सात्विकगुणयुक्तहोवें उनमें ऐसेगुण होतेहैं ॥२३॥ यज्वानऋषयोदेवा वेदाज्योतींषिवत्सराः। पितरश्चैवसाध्याश्च द्वितीयासात्विकीगतिः ॥ २४ भ० यज्ञकरनेमें जिनकोअत्यन्तप्रीति ऋषिनाम यथार्थमन्त्रोंके अभिप्रायजाननेवाले देवनाममहादेव औरइन्द्रादिकदिव्यगुणवाले चारोंवेदज्योतिष शास्त्रऔरचन्द्रादिकज्योति लोकवत्सरकालऔरसूर्य्य लोक पितर जोपिताकीनांई सबमनुष्योंकेहितकरनेवाले औरपितृलोकमेंरहनेवाले साध्यजोअभिमानहठादिकदोषरहितहोके धर्मऔरविद्यादिकगुणोंकोसिद्धकरनेवाले तथानारायणऔरविष्णु आदिक देवजोवैकुण्ठादिकमेंरहतेथे सोमध्य सत्वगुणसे ऐसे कर्मकर्तेहैं उनकोऐसीगतिहोतीहै॥ २४ ॥ ब्रह्माविश्वसृजोधर्मो महानव्यक्तमेवच । उत्तमांसात्विकीमेतां गतिमाहुर्मनीषिणः ॥ २५ ॥

म० ब्रह्माब्रह्मज्ञानपर्यन्तविद्याकाजाननेवाला अथवाब्रह्मलोकका अधिष्ठाताऔरउसलोककोप्राप्तहोनेवाले प्रजापतिऔरविश्वसृज जोकिधर्मऔरविद्यासेसबकेपालनकरनेवाले वासिद्धजोकिपरमाणुकेसंयोगवावियोगकरनेवाले औरउसविद्यावाले अथवाप्रजापतिलोकके अधिष्ठाता वाउनकोप्राप्तहोनेवाले धर्ममहान्बुद्धि अव्यक्तनामप्रकृति यहसत्वगुणकोउत्तमगतिहै यहांसेआगेकर्मऔरउपासनाकाकोईफलभोगनहीहैसिवायपरमेश्वरके॥२५॥ इन्द्रियाणांप्रसंगेन धर्मस्यासेवनेनच। पापान्संयान्तिसंसारानविद्वांसो नराधमाः॥२६॥ म० इन्द्रियोंकाप्रसंगअर्थातअत्यन्तविषयसेवामेंफसनेऔरधर्मकेत्यागसे जोजीवअधमऔरविद्याहोनहैं अत्यन्तदुःखोंकोपातेहैं दुष्ट२शरीरोंकोप्राप्तहोतेभये इनप्रकारोंसेदुष्टवाश्रेष्ठकर्मोंकेकरनेसेसुखवादुःखजीवोंकोहोतेहैं यहीईश्वरकीआज्ञाहै किजोजैसाकर्मकरैवहवैसाभोगैइससे ईश्वरमेंकुछपक्षपातदोषनहींआताक्योंकिजैसाजोकर्मकरताहैउसकोवैसाहीफलमिलताहै औरईश्वरन्यायकारीहैसोसदान्यायहीकरताहै अन्यायकभीनहीं इससे जैसाचाहै ऐसाकरनानहींआता ईश्वरमें क्योंकिवहसत्यसंकल्पहै औरनिर्भ्रमउसकाज्ञानहै इससे जैसीव्यवस्थान्यायमेकरनी उचितथी वैसेहीकियाहै अन्यथानहीं एदोषसबजीवोंमें हैं किपहिलेकुछऔरव्यवस्थाकरैं पीछेऔरक्योंकिजीवोंमें भ्रमादिकदोषहोतेहैं औरकोईव्यवहारमें निर्भ्रमभीहोतेहैं सर्वत्रनहीं और सर्वत्रनिर्भ्रमतबजीवहोताहै किजबपरब्रह्मकासाक्षात्विज्ञानहोताहै औरउसीकानियोग अन्यथानहीं सर्वत्रनिर्भ्रमतो सनातनएकईश्वरहीहै इससे क्याआयाकि एकजीव अनेकजन्म धारणकरताहै यहसिद्धभया प्रश्न ईश्वरएकजीवको अनेकजन्मकीव्यवस्था क्योंकरताहै क्योंकिईश्वर सर्वशक्तिमान्है नित्यनए२ जीवोंको उत्पन्नक्यानहीकरसक्ता उत्तर ईश्वरअवश्यसर्वशक्तिमान्है परंतु अन्यायकभी नहींकरता जोजीवदूसराशरीर धारणनहीकरेगा

तोएकजन्ममें किएपापवापुण्यइनकाभोगनहीं होसकेगा फिरउस-
कान्यायभीनहीं होगा किपापकरनेवालेकोदुःख औरपुण्यकरनेवा-
लेकोसुखहोनाचाहिए सोबिनाशरीरसेभोगहोनहीं होसक्ता इस्से
अनेकजन्मअवश्यमाननाचाहिए प्रश्नपापवापुण्यकाभोगबिनाशरी-
रसेभीहोसक्ताहै पश्चात्तापकरनेसेसो जीवमनसेजितनेपापकिएहोंगे
उनकाभोगमनसेशोककरकेभोगकरलेगा उत्तर ऐसानकहनाचा-
हिए क्योंकिपश्चात्तापजोहोताहै सोभविष्यत्पापोंकानिवर्तकहोता
है किएभएपापोंकानहीं जैसेकोईपुरुष नित्यकूपकोदौड़२के डांक
जाय फिरकभीकूपकेपारकेकिनारेपरनहींपहुंचे किन्तुकूपमेंगिर
जायउसमेंउसकाहाथवागोडटूटजाय फिरउसकोकोई बाहरनि-
काललेफिरवहबहुतशोचकरै किमैंऐसाकामनकरतातोमेरायह
बुरीदशाक्योंहोती तो सोमैं बड़ामूर्खहूं इस्से क्याआताहै किआगेको
वहऐसाकर्मनकरेगा परन्तु जोकरचुकाउसकीनिवृत्ति कभीनहीं
होगी सोपश्चात्तापजोहोताहै सोकृतपापका निवर्त्तकनहींहोता
औरजैसेकोईमनुष्य आंखसेअन्धाऔरकानसेबहिराहोय उसके
पाससर्पवाव्याघ्रआजाय अथवाकोईगालीदे वाउसकीनिन्दाकरै
तोभीउसकोकुछदुःखनहींहोता ऐसेहीबिनाशरीरधारणसेजीव
सुखवादुःखनहींभोगसक्ता क्योंकिजबमूर्त्तिमानपदार्थहोताहै तब
वहशीतउष्णादिक व्यवहारोंकोभोगकरसक्ताहै अन्यथानहीं इ-
स्से क्याआयाकिपश्चात्तापसे कृतपापोंकी निवृत्तिनहींहोसक्ती प्रश्न
जीवजिनकर्मोंसेसुखहोवै वैसाकर्मक्योंनहींकरता उत्तर बिना
विद्यादिकगुणोंसेकुछनहींयथावत् ज्ञानसक्ता विद्यादिकगुणबिना
परिश्रमसेनहींहोते एकव्यवहारऐसाहै किजिसमेंप्रथमसुखहो-
य औरपीछेदुःख सोविषयोंमेंफसकेजीवदुःखितहोताहै क्योंकिअ-
त्यन्तविषयसेवासेबलबुद्धि औरधनादिकनष्टहोतेहैं औरज्वरादि-
कअनेकरोगोंसेयुक्तहोकेफिरदुःखहीपाताहै दूसराऐसाव्यवहार
है किप्रथमतोदुःखहोय औरपीछेसुखसोव्यवहारयहहै किजिते-

न्द्रियता, ब्रह्मचर्याश्रम, विद्याकीप्राप्ति, सत्पुरुषोंकासंग, औरधर्म काअनुष्ठान, इत्यादिकजानलेना इनकीप्राप्तिकेसाधनोंमें प्रथम दुःखहोताहैऔरजबप्राप्तहोजातेहैं तबअत्यन्तउसकोसुखहोता है तीसराव्यवहार ऐसाहोताहै किजिसमें सदादुःखहीरहै सो मोहहै जोधन पुत्रऔरस्त्रीआदिकअनित्यपदार्थोंमेंफसके विद्यादिकश्रेष्ठगुणोंका त्यागकरताहै वहसदादुःखी रहताहै चौथायह व्यवहारहै किजिसमेंसदासुखहीरहताहै दुःखकभीनहीं सोमुक्ति है विद्यादिकगुणोंकेनहोनेसे सुखकेकर्मोंको जानताहीनहीं फिरकैसे करसकेगा कभीनकरसकेगा औरईश्वरका करनासब अच्छाहीहै क्योंकिईश्वरन्यायकारीत्वादिगुणयुक्तरहताहै यहहमकोदृढ़निश्चयहै किईश्वरअन्यायकभीनहीकरता इतनाहमलोगबुद्धिसेयथावत्जानतेहैं ईश्वरजैसाचाहै वैसानहींकरता जोकरताहैसोन्याययुक्तहीकरताहै अन्यथानहीं सोइससे यहसिद्धभया किअनेकजन्महोतेहैं सोजीवअविद्यादिकदोषोंसे युक्तहोकेविषयमें फसारहताहै इससे जीवको विवेकादिकगुणनहीहोनेसे बन्धनभी इसकानष्टनहीहोता जबयथावत्परमेश्वरपर्यन्त पदार्थविद्याहोतीहै तबयहसबदुःखोंसेछूटकेमुक्तिकोप्राप्तहोताहै प्रश्न प्रथमआप कहचुकेहैं किबिनाशरीरसेसुखवादुःखभोगनहीहोसक्ता सोमुक्तिमेंभीजीवकाशरीररहताहोगा औरजोकहैंकिनहीरहतातोमुक्तिकाभोगकैसेकरसकेगा औरजोकरसक्ताहै तोहमनेकहाथाकिमनमें पश्चात्तापसेपापकाफलभोगलेंताहै यहबातमेरी सत्यहोयगी उत्तर जीवहीमुक्तिमें रहताहै औरशरीरनहीं क्योंकि जिसको लिंगशरीरकहाथा वहीजीवकेसाथ रहताहै सोअत्यन्त सूक्ष्महै औरसबपदार्थोंसेउत्तमऔरनिर्मलहै जैसेअग्निसेलोहातप्तहोताहै उसमेंअग्निसेभीअधिकदाहहोताहै वैसेहीएकअद्वितीय चेतनपरमेश्वरसर्वत्रव्यापकहै उसकीसत्तासेयुक्तजीवचेतनसदारहताहै क्योंकिव्यापकसेव्याप्यकाबियोगकभीनहींहोता जैसेआकाश

में सबस्थूलपदार्थों का वियोग कभी नहीं मनुष्य और वायु आदिक जहां२ चलते फिरते हैं वहां२ आकाश का संयोग पूर्ण ही है वैसे आकाशादिक पदार्थ भी परमेश्वर में व्याप्य हैं और परमेश्वर सब में व्यापक है परमाणु और प्रकृति जो कि सूक्ष्म पदार्थों की अवधि है इनसे सूक्ष्म आगे संसार के पदार्थ कोई नहीं हैं परन्तु परमेश्वर उनसे भी अत्यन्त सूक्ष्म और अनन्त है जैसे आकाश किसी पदार्थ के साथ चलता फिरता नहीं वैसे परमेश्वर भी पूर्ण के होने से जीवों के साथ चलता फिरता नहीं किन्तु जीव सब अपने२ कर्मानुसार चलते फिरते हैं परमेश्वर की सत्ता से धारित चेतन हैं ॥ दुःखजन्मप्रवृत्तिदोषमिथ्याज्ञानानामुत्तरोत्तरापाये तदनन्तरापायादपवर्गः । यह गौतममुनि का सूत्र है मिथ्याज्ञान जो कि मोह से अनेक प्रकार का होता है यथावत् विद्या के होने से जब नष्ट हो जाता है तब । अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पञ्चक्लेशाः ॥ यह पतञ्जलि मुनि का सूत्र है इसका यह अभिप्राय है कि अविद्या तो पहिले प्रतिपादन कर दिया है सो ई सब दोषों का मूल है द्रष्टा जो जीव दर्शन जो बुद्धि इन दोनों की एकस्वरूपता होनी कि मैं बुद्धि हूं ऐसा अभिमान का होना सो अस्मिता दोष कहाता है । सुखानुशयी रागः ॥ ३ ॥ प० जिस सुख का पहिले अनुभव साक्षात् किया हो उसमें अत्यन्त तृष्णा नाम लोभ कि यह मुझ को अवश्य मिलना चाहिए यह दूसरा दोष है क्योंकि अनित्य पदार्थों में अत्यन्त प्रीति के होने से नित्य पदार्थ में जीव की इच्छा कभी नहीं होती दुःखानुशयी द्वेषः ॥ ४ ॥ प० जिस दुःख का पहिले अनुभव किया हो उसकी स्मृति के होने से उसके हनन की इच्छा और उससे जो क्रोध वह द्वेष कहाता है यह तीसरा दोष है । स्वरसवाही विदुषोऽपि तथारूढोऽभिनिवेशः ॥ ५ ॥ प० सब प्राणियों को यह आशा नित्य बनी रहती है कि मैं सदा रहूं और मेरे ये पदार्थ सदा बने रहैं नाश कभी न होवै सो कृमि से ले के सब प्राणियों को और विद्वानों को भी यह आशा नित्य बनी रहती है यह चौथा अभिनिवेश दोष कहाता है और

अविद्यातो प्रथम दोष है ए पांच दोष और इन से उत्पन्न भए असंख्यात दोष जीवों में रहते हैं इस से जीवों को मुक्ति भी नहीं हो सक्ती परन्तु विवेकादि गुणों से जब मिथ्याज्ञान नष्ट हो जाता है तब अविद्यादिक दोष भी नष्ट हो जाते हैं । प्रवृत्तिर्वाग्बुद्धिशरीरारम्भ इति ॥ ६ ॥ गोत्तम० वचन बुद्धि और शरीर इन्हों से जीव आरम्भ करता है सो प्रवृत्ति कहाती है परन्तु जिसके अविद्यादिक दोष नष्ट होजाते हैं वह उन में प्रवृत्त नहीं होता किन्तु विद्यादिक गुणों में प्रवृत्त होता है इस से उसको मिथ्याप्रवृत्ति कि परमेश्वर से भिन्न पदार्थ का जो इच्छा सो नष्ट होजाती है फिर वह योगाभ्यास विचार और पुरुषार्थ से युक्त अत्यन्त होता है उस से अनेक परमाणु पर्यन्त सूक्ष्म पदार्थों का ज्ञान जब यथावत् साक्षात्कार होता है फिर अत्यन्त जब विचार और योगाभ्यास करता है तब परमानन्द सर्वव्यापक सर्वाधार जो परमेश्वर उसको अपने हो में व्याप्त देखता है फिर उसको स्थूल शरीर धारण करने का आवश्यक नहीं किन्तु एक परमाणु को भी शरीर बनाके रह सक्ता है तब इस का जन्म मरणादिक कारण जो अविद्यादिक दोष उन से किए गए थे जो कर्म के भोग सब नष्ट होजाते हैं और आगे जो कर्म किए जाते हैं ए जब ज्ञान होके वास्ते करता है सो अधर्म कभी नहीं करता किन्तु धर्म ही करता है उस से ज्ञान फल होरहचाहता है अन्यन नीं फिर उसके जन्म मरण का जो मूल अविद्या सो ज्ञान से नष्ट होजाती है फिर वह जन्म धारण नहीं करता और उसको बुद्धि, मन, चित्त, अहङ्कार, प्राण, और इन्द्रिय ए सब दिव्य शुद्ध पदार्थ जीव के सामर्थ्यरूप रह जाते हैं और दिव्यज्ञानादिक गुण नित्य उसमें रहते हैं और आप दिव्य शुद्ध निर्विकार रहजाता है । बाधनालक्षणं दुःखम् ॥ ७ ॥ गोत्तम० जितनी बाधना अर्थात् इच्छाभिघात वह सब दुःख कहाता है ॥ ७ ॥ तदत्यन्तविमोक्षोऽपवर्गः ॥ ८ ॥ गोत्तम० दुःखों की अत्यन्त जो निवृत्ति उसको मोक्ष कहते हैं जिस सब दुःखों से छूट जाना और सदा आनन्द परमेश्वर को प्राप्त होके रहना फिर लेशमात्र भी दुःख का सम्बन्ध

कभीनहींहोता सोकेवलएकपरमेश्वरकेआधारमें वहजीवरहता है औरकिसीकासम्बन्धउसकोनहीं सोपरमेश्वरकेयोगमेंउसजीव मेंरुर्वज्ञटकालज्ञान सबपदार्थोंकागुण औरदोषइनका सत्य २ बोधभीसदारहताहै इससेजिसदुःखसागरसंसारसे बड़े भाग्यसेकूटकेपरमानन्दपरमेश्वरकोप्राप्तभयाहै सोयथावत्जानताहै किपरमेश्वरकेयोगसे अन्यत्रदुःखहीहै सुखकभीनहीं फिरवहइससेदुःख में कभीनहीं गिरता जैसे चिंवटी अत्यन्तचञ्चल होतीहै फिरवह नानाप्रकारकेकणोंकोलेरके अपनेबीलमें संचयकरती जाती है उसकोस्थिरतावासन्तोषकभीनहींहोता वहकभीभाग्य औरपुरुषार्थसेमिश्रीकेडलेकोप्राप्तहोय उसकास्वादलेके आनन्दितहोजातीहै फिरवह अपने घरऔरसंचयकोछोड़के उसीमें निवासकरतीहै उसकोखींचनेकासामर्थ्य नहीं सदाउसकोछोड़भीनहींसक्ती उत्तमपदार्थकेहोनेसेवैसेजीवभी परमेश्वरसेभिन्न पदार्थोंमें सदाभ्रमणकरताहै तृष्णाकेवसहोके परन्तु जबपरमेश्वरका उसकोयोगहोताहै तबसब तृष्णादिक दोषउसके नष्टहोजातेहैं फिर पूर्णकामऔरस्थिरहोके परमेश्वरहोमेंरहताहै सोमुक्तिमें परमेश्वरकाआधार उसकोहोनेसे सदापरमानन्दमुक्तिके सुखकोभोगताहै औरनिराधारसेविषयसुखवादुःखऔरमुक्तिकाआनन्दभी नहीभोगसक्ता इससे क्याआयाकिबिनास्थूलशरीरधारणसे पापवा पुण्यसंसारमें फलकभीनहीभोगसक्ताऔरपरमेश्वरकेआधारके बिनामुक्तिसुखभीनहीभोगसक्ता सोजोकहताहै किमनहीसेपाप वापुण्यभोगताहै वाएकहीजन्महोताहै यहबातउसकीमिथ्याजानो प्रश्न वहमुक्तिप्राप्तजोवसदाबनारहताहै वाकभीवहभीनष्टहोजाताहै उत्तर इसकायहविचारहै किपरमेश्वरनेजबसृष्टिरचीहै किजबसंसारकाअत्यन्तप्रलयनहोगा तबभीवेमुक्तजीवआनन्दमेंरहेंगे औरजबअत्यन्त प्रलयहोगा तबकोईनरहेगा ब्रह्मका सामर्थ्य रूपऔरएकपरमेश्वरकेबिना सोअत्यन्तप्रलयतबहोगा किजब

सबजीवमुक्तहोजांयगे बीचमेंनहीं सोअत्यन्तप्रलयबहुतदूरहै सं-भवमात्रहोताहै किअत्यन्तप्रलयभीहोगा बीचमेंअनेकवार महाप्रलयहोगा औरउत्पत्तिभीहोगी इस्से सबसज्जनोंकोअत्यन्तमुक्तिकोइच्छाकरनीचाहिए क्योंकिअन्यथाकुछसुखनहोहोगा जबतकमुक्तिजीवकोनहींहोतो तबतकजन्ममरणादिकदुःखसागरमेंडूबाहीरहैगा औरजोजल्दीमुक्तिकरलेगा सोअतुलआनन्दकोपावेगा। प्रश्न मुक्तिएक जन्ममेंहोतीहै वाअनेकजन्ममें उत्तर इसकानि-यमनहीं क्योंकिजबमुक्तहोनेकाकर्मकरताहै तभीउसकीमुक्तिहो-तीहै अन्यथानहीं प्रथमसृष्टिमेंभीकोईजीव पहिलेहोजन्ममेंमु-क्तहोगयाहोय इसमेंकुछआश्चर्यनहीं उसकेपीछे भीकोईमुक्तभयाहोगा वाहोताहै औरहोवैगा सोबहुत जन्महीमेंहोगा मुक्तसोमोक्षअत्यन्त पुरुषार्थसेहोताहै अन्यथानहीं। भिद्यतेहृदयग्रन्थिश्छिद्यन्तेसर्वसंशयाः। क्षीयन्तेचास्यकर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे॥ यहमुण्डककीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहैकिहृदयग्रन्थिनामअ-विद्यादिकदोषजबजिसजीवकेनष्टहोजातेहैं तबविज्ञानकेहोनेसेसबसंशयनष्टहोजातेहैंऔरजबसंशयनष्टहोजातेहैंतबकर्मभीजीवकेनष्टहोजातेहैं किजीवकीफिरकर्तव्य कुछनहींरहता मुक्तिहोनेकेपीछेसोकर्मतीनप्रकारकाहोताहै एकक्रियमाणजोकिनित्यकियाजाताहै दूसरासञ्चितजोकिबुद्धिमें संस्काररूपसूक्ष्मरहताहै तीसराप्रारब्धजोनित्य भोगकियाजाताहै इसकेतीनभेदहैं। सतिमूलेत-द्विपाकोजात्यायुर्भोगाः॥ ८॥ पा० इसकायहअभिप्रायहै किक-र्मोंकेफलतीनहोतेहैं जन्मआयु औरभोग परन्तु जबतक कर्मोंकामूलअविद्यादिकरहतेहैं तबतककर्मफल भोगभी रहताहै सोभीजैसाकर्म वैसाजन्मआयु औरभोगउसके अनुसारहोतेहैं जबजीवपुरुषार्थसे विद्या, धर्म औरपातञ्जलशास्त्रकोरीतिसे योगाभ्या-सकरताहै तबउसकोयथोक्तविज्ञानहोताहै तबमूलसहितकर्मछूटजाताहै क्योंकिउसनेमुक्तिकेवास्ते सबकर्मकिएथे जबमुक्तिहोतीहै

तब उसको फिर कर्तव्य कुछ नहीं रहता प्रश्न मुक्तिसमय में जीवपरमेश्वर में मिल जाता है जैसे जल में जल वा नहीं उत्तर जो जीव मिल जाता तो उसको मुक्ति का सुख कुछ नहीं होता और मुक्ति के वास्ते जितने साधन किए जाते हैं वे सब निष्फल हो जायंगे और मुक्ति क्या भई किन्तु उसका नाश ही होगया इससे यह बात मिथ्या है कि जीव ब्रह्म में मिल जाता है वह ब्रह्म अर्थात् सबसे जो परे है और जो कि अपने स्वरूप में व्याप्त है जितना उसको यथावत् साक्षात् जानने से सब दुःखों से छूट जाता है जो भाग्य प्रारब्ध और दैव के भरोसे रहता है और आलस्य से कुछ कर्म अच्छा नहीं करता वह जीव नष्ट है और जो अत्यन्त पुरुषार्थ के ऊपर निश्चय करके उद्यम करता है सोई जीव भाग्यशाली है क्योंकि पुरुषार्थ ही से मुक्ति होती है और यथावत विवेक के होने से हानि वा लाभ में शोक वा हर्ष रहित होता है वह पुरुषार्थी सर्वत्र सुखी रहता है क्योंकि वह विद्या से सब पदार्थों को यथावत् जानता है सो सब सज्जनों को यह उचित है कि सदा पुरुषार्थ ही करना आलस्य कभी नहीं पुरुषार्थ इसका नाम है कि जितेन्द्रियता, धर्मयुक्त व्यवहार, विद्या, और मुक्ति जिस्से होय और अन्य पुरुषार्थ नहीं क्योंकि पुरुष के अर्थ जो करता है सोई पुरुषार्थ कहाता है और जो अन्याययुक्त व्यवहार करते हैं उसका नाम पुरुषार्थ नहीं और परमेश्वर अत्यन्त दयालु है जो जीव उसको प्राप्ति के हेतु तन, मन और धन से श्रद्धापूर्वक पुरुषार्थ करता है उसको शीघ्र ही प्राप्त होता है कृपा से विद्यादिक पदार्थों का उसके पुरुषार्थ के अनुसार प्रकाश होता है फिर सदा आनन्दित मुक्ति में रहते हैं सो सब पुरुषार्थों का फल मुक्ति है इससे मुक्ति को चाहना उत्तम प्रकार से अवश्य सब को करनी चाहिए यह विद्या अविद्या बन्ध और मुक्ति के विषय में संक्षेप से लिखा और जो विस्तार से देखा चाहै सो वेदादिक सत्य शास्त्रों में देख लेवै इसके आगे आचार अनाचार भक्ष्य और अभक्ष्य के विषय में लिखा जायगा ॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते नवमः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ ९ ॥

अथआचारानाचारभक्ष्याभक्ष्यविषयंव्याख्यास्यामः ॥ श्रुतिस्मृत्युदितंसम्यक् निबद्धंस्वेषुकर्मसु । धर्ममूलंनिषेवेत सदाचारमतन्द्रितः ॥ १ ॥ म० श्रुतिजोवेदस्मृतिजोक्तःशास्त्रादिक सत्यशास्त्र औरमनुस्मृति उनमेंजोसदाचारउसकोसदासेवनकरैं औरजितनाअपनाअचारसोसबयुक्तिपूर्वककरै सत्पुरुषोंकेआचरणसेविरुद्धनहीं सोसत्यभाषणादिकआचारधर्मकामूलहै इसकोसदाचारप्रमाणोंसेनिश्चयकरकेसदासेवनकरै सबपदार्थशुद्धरक्खैं अशुद्धएकभीनहीं जितनेश्रेष्ठगुणउनकेग्रहणकासदाआचाररक्खैं सत्पुरुषोंकेसंगमेंसदाप्रीति उनसेविनयादिक व्यवहारोंकोग्रहणकरै जितेन्द्रियता सदारक्खैं इनसेविपरीतजोअनाचार उसकोछोड़दे जिस्से ज्ञानवाधर्म तथाविद्याप्राप्तहोय उसकोसदामानैं उक्तप्रकारसेउसकोप्रसन्नरक्खैं और अधर्मीपाखण्डी उनकोकभीनमानैं औरजितनीसत्क्रिया उनकोयथावत्करैं सबप्रयत्नोंसेब्रह्मचर्याश्रमसे विद्याग्रहणकरैं बाल्यावस्थामें विवाहकभीनकरैऔर नानाप्रकारकेयन्त्रऔरपदार्थगुणोंसेरसायन विद्याद्वीपद्वीपान्तरमेंभ्रमण उनमनुष्योंकेअच्छेबुरेआचरणोंकीपरीक्षा औरअच्छेआचरणोंकाग्रहणकरैं औरबुरेकानहीं प्रश्न आर्यावर्त्तवासीलोगइसदेशकोछोड़के अन्यदेशमेंजानेसेपापगिनतेहैं औरकहतेहैंकिपतितहोजातेहैंउत्तर यहबातमिथ्याहैक्योंकिमनुस्मृतिमेंजहांजिसकेऊपर राजाकाकरलिखाहै सोजोसमुद्रपार द्वीपद्वीपान्तरमेंनजातेहोतेतोक्योंलिखते। समुद्रे नास्तिलक्षणम्। इत्यादिकवचनमनुस्मृतिमेंलिखेहैं सोमहासमुद्रमें जबजहाजजाय तबकुछ

करकानियमनहीं किन्तुद्वीपद्वीपान्तरमेंजाकेव्यापारकरकेपदा-र्थोंकोबेचकेऔरवहांसेपदार्थोंकोलेके इसदेशमेंआकेबेचे फिर उनकोजितनालाभहोवे उसमेंसेपु(च)वांहिस्साराजाले औरराजा भीतोनप्रकारकेमार्गकोशुद्धिकरै एकस्थल,जल,औरवनउसमेंजल केमार्गकेव्याख्यानमें जहाजोंकेऊपरचढ़के द्वीपद्वीपान्तरमेंजावैं औरसमुद्रहीमेंजहाजोंपरबैठके युद्धकरैं यहक्योंलिखा औरमहा-भारतमेंलिखीहै किश्रीकृष्णऔरअर्जुन जहाजमेंबैठके समुद्रमें चलेगए वहांउद्दालकऋषिमिलेऋषिकोयज्ञमेंलेआए औरराजसूय तथाअश्वमेधमेंसबद्वीपद्वीपान्तरके राजाओंकोयज्ञमेंलेआएथे सो बिनाजहाजसेद्वीपद्वीपान्तरमेंकैसेजासक्ते औरसगरराजासबठिका नेभ्रमणकरताथा बिनाजहाजोंसे समुद्रपारकैसेजासक्ता तथाअ-र्जुन,भीम,नकुल,सहदेव,औरकर्ण सबद्वीपद्वीपान्तरमेंभ्रमणकर्तै थे बिनाजहाजोंसेकैसेकरसक्ते तथाइक्ष्वाकुसेलेकेदशरथपर्यन्तद्वीप द्वीपान्तरमें भ्रमण करतेथे सोजहाजोंहीमेंकर्तैथेऔररामभीस-मुद्रकेपारलंकामेंगएथेसोभीतोएकद्वीपहै इत्यादिकमनुस्मृतिऔर महाभारतादिक इतिहासोंमेंलिखाहै औरयुक्तिसेबिचारकरके देखैंतोयहीआताहै किदेशदेशान्तर औरद्वीपद्वीपान्तरमें जाना अच्छाहै क्योंकिअनेकप्रकारकेपदार्थप्राप्तहोंगे अनेकप्रकारकेम-नुष्योंसेसमागमहोगा उनकाव्यवहार भाषागुणऔरदोष बिदित होतेहैं औरउत्तम२पदार्थोंकोइसदेशमेंलेजानेऔरलानेसेअ-द्भुतलाभहोताहैतथानिर्भयऔरशूर,बीरपुरुषहोनेलगतेहैं यहतो बड़ाएकअच्छा आचारहै औरजोअपनेहीदेशमेंरहतेहैं औरदेश मेंजानेसे उनकास्पर्शकरनेमें छूतमानतेहैं वेविचाररहितपुरुषहैं देखनाचाहिएकि मुसल्मानवाअंगरेजसे छूनेमेंदोषमानतेहैं और मुसल्मानोंवाअंगरेजकेदेशकोस्त्रीसेसंगकरतेहैं औरअपनेपासघ-रमेंरखलेतेहैं उससे कुछभेदनहींरहता यहबड़े अन्धकारकीबात है किमुसल्मानऔरअंगरेज जोभलेआदमी उनसेतोछूतगिनना

औरवेश्यादिकोंसेनहींछूतमानना यहकेवलयुक्तिशून्यबातहैऔर
जोउनसेछूतहोमानतेहैं किइनसेशरीरनलगे नइनसेस्पर्शहोय इ-
सीबातसेतोआर्यावर्त्तदेशकानाशभयाहै क्योंकिएतोआर्यावर्तवा-
सी उनकेछूतकेडरसे दूर२भागतेरहतेहैं औरवेसुखसे राज्यसब
लेलेतेहैं औरहृदयसेसदाद्वेषहोनेसे अन्यथाबुद्धिरखतेहैं इसमेंपर-
स्परसबदुःखपातेहैं यहसबअनाचारहै आचारइसकानामहै कि
राग,द्वेषादिकदोषोंकोहृदयसेछोड़देना औरसज्जनतासत्यादि-
कोंकोधारणकरलेना यहीआचारपहिलेमनुष्योंकाथा किआम-
रिकाकोकन्याअर्जुनसेविवाहीगईथी जोकिनागकन्याकरकेलिखी
है फिरऐसीबातजोकहतेहैं किद्वीपद्वीपान्तरमेंजानेसे जातिपतित
औरनष्टधर्महोजाय यहबातमिथ्याहै क्योंकिछूतऔरदेशदेशान्त-
रमेंनजाना यहबातआर्यावर्तमें जैनोंकेराज्यसेचलीहै पहिलेन-
थी क्योंकिजैनबड़ेभीरूहोतेहैं औरछोटे२जीवोंकेऊपर दयारख-
तेहैं इसीसे मुखकेऊपर कपड़ाबांधलेतेहैं सोचलने फिरनेमें भी
दोषगिनतेहैं फिरजहाजोंमेंवैठकेद्वीपद्वीपान्तरमेंजानाइसमें हिं-
साक्योंनहीं गिनेंगेऔरब्राह्मणतथा सम्प्रदायीलोगइन्होंनेअपनेमत
लबकेहेतुसबजालफैलारक्खे हैंक्योंकिअपनाचेलावायजमानद्वीप
द्वीपान्तरमें जायगा तोजीविकाकीहानि होजायगी देशदेशान्तर
औरद्वीपद्वीपान्तरमें जानेसेकोईबुद्धिमानकाअवश्यसमागमहोगा
उससे सत्यअसत्यकाउसकोबोधभीहोगा फिरउसकेसामनेहमारा
जालनहींचलेगा औरनित्यशनैश्चरादिग्रहकेनामसे तथाभूतप्रे-
तादिकनामसे तथामन्दिरादिकोंमेंआनेजानेसे शिवनारायण दु-
र्गादिकेनामसुनानेसे उनकोडराकेलाखहांरूपएछल,कपटसेनि-
त्यलियाकरतेहैं सोवहद्वीपद्वीपान्तरमेंचलाजायगा बहुतकालमें
आनाहोगा तबतकउनको आजीविकाबन्दहोजातीहै क्योंकिवह
उनकेसामनेहीनहींरहेगाफिरउससेकोईआवेगाफिरभीएकप्रा-
यश्चितकाडरलगादियाहैजोकोईजाकेआवैउसकेऊपरबड़े बखेड़े

लगाटेतेहैं क्योंकिउसकीदुर्दशादेखके कोईजानेकोइच्छा करता होय वहभीडरकेनजाय इसहेतुकिहमारीआजीविकामदावनीरहै यहकेवलउनकीमूर्खताहै क्योंकिवहधनाढ्यराजाहो दरिद्र बनजायगा ऐसेथोरे २ सबदरिद्र औरमूर्खबनजायगे फिरउनसे आजीविकाभीकिसीकीनहीगीपरन्तुवेऐसाबिचारनहीकरतेक्योंकिअपनेमतलबमेंफसेहैं औरविद्याभीनहीं इससे कुछनहींजानसके परन्तु सज्जनलोग इसबातको मिथ्याहीजानैं औरकभी देश देशान्तरवाद्वीपद्वीपान्तरकेजानेमें भ्रमनकरैंक्योंकिजबमनुष्यमिथ्याभाषणादिकअनाचारकरेगा तबसर्वत्रअनाचारीहोगा और जोसत्यभाषणादिकआचारकरेगा वहकभीकिसीदेशमेंअनाचारी नहीहोताऔरजोऐसाजानतेहैं किबहुतनहानाऔरहाथोंकोमलना आचारजानतेहैं यहभीबातअयुक्तहै क्योंकिउतनाही शौच करनाउचितहै किजितनेसेहस्त, पाद, शरीरऔरवस्त्रदुर्गन्धयुक्तन रहे इससे अधिककरनासीअनाचारहै किन्तुजिससे सबपदार्थगृह पात्रऔरअन्नादिकशुद्धरहैं उतनाशौचकरना सबकोउचितहै अधिकनहीं अधिकआचारसद्गुणग्रहणमेंसदारक्खैं औरविद्याकेप्रचारकाआचारसदारक्खैं इसकानामआचारहै सोईमनुस्मृत्यादिकोंमेंलिखाहै औरभक्ष्याभक्ष्य दोप्रकारकेहोतेहैं एकतोवैदिक शास्त्रकीरीतिसे औरदूसराधर्मशास्त्रकीरीतिसे सोवैद्यकशास्त्रकी रीतिसे देश, काल, वस्तु, औरअपनेशरीरकोप्रकृति उनसेअनुकूल विचारकरके भक्षणकरनाचाहिए अन्यथानहीं जिससे बल, बुद्धि, पराक्रमऔरशरीरमेंनैरोग्यबढ़ैवैसापदार्थभक्ष्यहै सोईउक्तवैद्यकसुश्रुत शास्त्रमेंलिखाहै। औरअभक्ष्योग्राम्यशूकरोऽभक्ष्योग्राम्यकुक्कुटः। इत्यादिकधर्मशास्त्रसे अभक्ष्यका निर्णयकरना क्योंकि सूअरगांवकाऔरमुर्गाप्रायः मलहीखाताहै उसीकापरिणाममांसहोगा उसकेखानेसेदुर्गन्धशरीरमेंहोगा उससे रोगोत्पत्तिकासंभवहै औरचित्तभी अप्रसन्नहोजायगा वैसाहीधर्मशास्त्रकी रीति

सेमद्यअभक्ष्य तथा जितनेमनुष्योंकेउपकारक पशुउनकामांसअभक्ष्यतथा। बिनाहोमसे अन्नऔरमांसभीअभक्ष्यहै प्रश्न एकजीवको मारके अग्निमेंजलाना औरफिरखाना यहकुछअच्छीबातनहीं औरजीवकोपीडादेना किसीकोअच्छानहीं उत्तर इसमेंक्या। कुछ पापहोता है प्रश्न पापहीहोताहै क्योंकिजीवोंकोपीड़ादेके अपना पेटभरना यहधर्मात्माओंकीरीतिनहीं उत्तर अच्छाएकजीवको मारनेमेंपीड़ाहोतीहै सोसबव्यवहारोंकोछोड़देनाचाहिए क्योंकिनेत्रकीचेष्टासेभी सूक्ष्मदेहवाले जीवोंकोपीड़ा अवश्य होतीहै औरतुम्हारेघरमेंकोईमनुष्यरोगीकरै तोतुमलोगभीअवश्यउसकोपीड़ादे औरऔरमक्खीआदिक भोजनकेऊपरसे उड़ादेतेहो। इसमेंभीउसकोपीड़ाहोतीहै औरजोकुछतुमखातेपीतेचलतेफिरतेऔरबैठतेहो इसव्यवहारसेभीबहुतजीवोंकोपीड़ाहोतीहै इससे तुम्हाराकहनाव्यर्थहै किकिसीजीवकोपीड़ानदेना प्रश्न जिसमें प्रत्यक्ष पीड़ाहोतीहै हमलोगउसमेंपापगिनतेहैं अप्रत्यक्षमेंकभी नहीं क्योंकिअप्रत्यक्षमेंपापगिनैं तोहमाराव्यवहारनबनैं उत्तर ऐसेहीआपलोगजानैं किजहांअपनामतलबहोय वहांतोपापनहीगिनतेहो यहबातयुक्तिसेविरुद्धहै औरकोईभीमांसनखाय तो जानवर, पक्षी, मत्स्यऔरजलजन्तुइतनेहैं उनसेशतसहस्रगुनेहो जांय फिरमनुष्योंकोमारनेलगें औरखेतोंमें धान्यहीनहोनेपावै फिरसबमनुष्योंको आजीविकानष्टहोनेसे सबमनुष्य नष्टहोजांय औरव्याघ्रादिकमांसाहारीजीवभी उनमृगादिकोंकाभक्षणकरतेहैं औरगायआदिकोंकोभीपरन्तु मनुष्यलोगोंकोयहचाहिए किगाय बैल, भैंसी छेरी, भेंड़ औरऊंटआदिकपशुओंकोकभीनमारैं क्योंकिइन्होंसे सबमनुष्योंकी आजीविका चलतीहै जितनेदुग्धादिक पदार्थहोतेहैं वेसबउत्तमहोतेहैं औरएकपशुसेबहुतआजीविकामनुष्योंकोहोतीहै मारनेसेजहांसौमनुष्यतृप्तहोतेहैं उसगाय आदिकपशुओंकेबीचमेंसेएकगायकीरक्षासेदसहजारमनुष्योंको

रक्षा होती है इससे इनपशुओंको कभी न मारना चाहिए प्रश्न इन
पशुओंके नहीं मारनेसे इनके बहुत होनेसे सब पृथिवी भर जायगी
फिर भी तो मनुष्योंको हानि होने लगैगी उत्तर ऐसा न कहना चा-
हिए क्योंकि व्याघ्रादिक जीव उनको मारैंगे और कितने रोगोंसे भी
मरेंगे इससे अत्यन्त नहीं होने पावैंगे और मनुष्योंके मारनेसे घृतादि-
क पदार्थ और पशुओंकी उत्पत्ति भी नष्ट हो जाती है इससे जहां २ गोमे-
धादिक लिखे हैं वहां २ पशुओंमें नरोंका मारना लिखा है इससे इस
अभिप्रायसे नरमेध लिखा है मनुष्य नरको मारना कहीं नहीं क्यों-
कि जैसी पुष्टि बैलादिक नरोंमें है वैसी स्त्रियोंमें नहीं है और एक बैल
से हजारहां गैया गर्भवती होती हैं इससे हानि भी नहीं होती सोई
लिखा है ॥ गौरनुबन्ध्योऽग्नीषोमीयः । यह ब्राह्मणकी श्रुति है इस-
में पुल्लिङ्ग निर्देशसे यह जाना जाता है कि बैल आदिक को मारना
गैयाको नहीं सो भी गोमेधादिक यज्ञों में अन्यत्र नहीं क्योंकि
बैल आदिसे भी मनुष्योंका बहुत उपकार होता है इससे इनकी
भी रक्षा करनी चाहिए और जो बन्ध्या गाय होती है उसका भी गोमे-
धमें मारना लिखा है ॥ स्थूलपृषतीमाग्निवारुणीमनड्वाहीमाल-
भेत् । यह ब्राह्मणकी श्रुति है इसमें स्त्रीलिंग और स्थूलपृषती विशे-
षणसे बन्ध्या गाय ली जाती है क्योंकि बन्ध्यासे दुग्ध और बत्सादिकोंकी
उत्पत्ति होती नहीं और जो मांस न खाय सो घृत दुग्धादिकोंसे निर्वा
ह करे क्योंकि घृत दुग्धादिकोंसे भी बहुत पुष्टि होती है सो जो मांस
खाय अथवा घृतादिकोंसे निर्वाह करे वे भी सब अग्निमें होमके बिना
न खांय क्योंकि जीवका मारनेके समय पीड़ा होती है उससे कुछ पाप
होता है फिर जब अग्निमें वे होम करेंगे तब परमाणुसे उक्त प्रकार
से जीवोंको सुख पहुंचेगा एक जीवको पीड़ासे पाप भया था सो भी
पीड़ा सा गिना जायगा अन्यथा नहीं प्रश्न सखरी निखरी अ-
र्थात कच्चा पक्का अन्न और इसके हाथ का भोजन करना इस-
के हाथ का खाना और इसके हाथ का न खाना यह बात कै-

सीहै उत्तर इसका यह विचार है भ्रष्टाचार से बनावै अन्नरा-
दिकोंका यथावत् संस्कार नजानै तथाविधि नजाने उनका भक्षण
नकरना चाहिए क्योंकि उससे रोग होतेहैं और बुद्धिभी मलिन हो
जातीहै सखरा और निखरा यह मनुष्योंका मिथ्या कल्पना है क्योंकि
जो अग्निसे पकाया जाता है वह सब पक्का ही गिना जाता है और शूद्र
ही पाक करनेवाला होना चाहिए परन्तु वह शूद्र अपने जिस द्विजके
घरमें रहै उसीके घरके अन्न और उसीके घरके पात्रोंसे पवित्र होके
बनावे उसके हाथसे बनेहुएको सब खांय तोभी कुछ दोष नहीं ॥
नित्यं शुद्धः कारुहस्तः समेवार्थमुत्पन्नः । एतेषामेव वर्णानां शुश्रूषा-
मनसूयया इत्यादिक मनुस्मृतिमें लिखाहै सो रामें बड़ा सेवा रसो-
ईका बनाना है क्योंकि रसोईके बनानेमें बड़ा परीश्रम होताहै और
कालभी बहुत जाताहै इससे रसोई आदिक सेवाका शूद्रहीको अधि-
कार है जो ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य हैं वे तो विद्यादिक प्रचार प्रजा
का धर्मसे रक्षण व्यापार और नानाप्रकारके शिल्प इनकी उन्नतिही
में पुरुषार्थ करैं क्योंकि जो बुद्धि और विद्यायुक्त हैं उनको सेवा करना
उचित नहीं रसोई आदिक जो सेवा सो मूर्खपुरुष जो शूद्र उसीका
अधिकार है क्योंकि अग्निके सामने बैठना लेपना मांजना अन्नको शु-
द्धि करना नानाप्रकारके पदार्थ बनाना इसमें बड़ा परिश्रम और का-
ल जाताहै इस कामके करनेसे विद्वानकी विद्या नष्ट होजाय इससे यह
काम शूद्रहीका है सो महाभारतमें लिखा है कि जब राजसूय और अ-
श्वमेध युधिष्ठिरादिक राजालोगोंके यज्ञ भए थे उनमें सब द्वीपद्वीपा-
न्तर और देशदेशान्तरोंके ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तथा शूद्र राजा औ-
र प्रजा आए थे उनका एकही पंक्ति होताथी और शूद्र नाम शूद्रही पाक
करनेवाले और परोसनेवाले थे एक पंक्तिमें सबके साथ सब भोजन
करतेथे तथा कुरुक्षेत्रके युद्धमें जूते, वस्त्र, शस्त्र, और रथके ऊपर बैठे
भए भोजन करतेथे और युद्धभी करते जाते थे कुछ शंका उनको नथी तभी
उनका विजय होताथा और आनन्दसे राज्य करतेथे और जो भोजन

मेंबड़े बखेड़े कर्तेहैं वेभूखकेमारेमरजांयगे युद्धक्याकरसकेंगे अब भोजअपुरादिकोंकेक्षत्रियलोग नापितादिकोंकेहाथकाभोजनकरतेहैं सोबातसनातनहै औरबहुतअच्छीहै तथासारस्वत और खत्रीलोगोंकाएकहीभोजनहै सोअच्छीबातहै औरगौड़तथाअगरवालेवनियोंकाभीएकभोजनप्रायःहै सोभीअच्छीबातहै औरगुजराती,महाराष्ट्र,तैलंग,द्राविड़तथाकरनाटक इनमेंभोजनकेबड़े बखेड़ेहैं इनपांचोंमेंसेगुजरातीलोगोंकेभोजनका बड़ापाखण्ड है क्योंकिमहाराष्ट्रादिकचारोंद्रविड़ोंकातोएकभोजनहै औरगुजरातीलोगोंकाआपसमें बड़ाभेदहै सबसेभोजनमेंपाखण्डकान्याकुब्जकाअधिकहै क्योंकिवेजलभीपीतेहैं तोजूतेउतारकेहाथ,पैर धोकेपीतेहैं तबचौकादेके चनाचबातेहैं सोबड़े दुःखपातेहैं और चौकाबरतनहीहाथमेंरहगए औरकुछनहीं औरसर्जूपारोंमेंभी बहुतभोजनमेंपाखण्डहैं यहकेवलमिथ्यापाखण्डबाहरसेरचलाते हैं औरसबसेपाखण्डभोजन चक्रांकितादिकबैरागिओंकाअत्यन्त है ऐसाकोईकानहीं क्योंकिजबजगन्नाथकेदर्शनकोजातेहैं तबचाण्डालादिकोंकाजूठखालेतेहैं फिरअपनीपंक्तिमेंमिलजातेहैं उनका मिथ्यापाखण्डभीनहींरहा औरहलवाईकेदुकानकादूधदहीऔर मिष्ठान्नादिकखातेहैं वहसबकाउच्छिष्टजानों औरमलिनक्रियासे भीहोतेहैं तथाघोसीलोग मुसल्मान और अभीरादिकहोतेहैं वे अपनेघड़ेकाजूठा जलमिलातेहैं फिरउसको सबखातेपीतेहैं और जानतेभीहैं सोसत्यबातहीकानिर्वाहहोताहै झूंठकाकभीनहीं राजादिकधनाढ्य वेश्यादिकोंकोघरमेंरखलेतेहैं उनसेकुछभेदनहीं रहता उनकोकोईनहींकहता क्योंकिकहेंतबजबकिवेनिर्दोषहोय सोपरस्परदोषोंको छिपातेजातेहैं औरगुणोंकोछोड़तेजातेहैं यह सबअनाचारहै औरसत्यभाषणादिकोंका आचारणकरना उसी कानामआचार युधिष्ठिरकेसाथ बहुतऋषि,मुनि,ब्राह्मण लोगथे वेसबसूदनाम शूद्रपाककर्तेथे और द्रौपद्यादिक परोसतेथे वेसब

खातेथे सोखानेपीनेसे किसीकाधर्मभ्रष्टनहींहोताहै औरनकोई पतितहोताहै क्योंकिखानापीनाऔरधर्मकाकुछसम्बन्धनहीं धर्म जोअहिंसादिलक्षणसोबुद्धिस्थहै खानापीनाव्यवहारसबबाह्यहै परन्तु शुद्धपदार्थकाखाना पीनाचाहिए किजिस्से शरीरमेंरोगादिकनहोंय औरजगत्काअनुपकार भीनहोय मद्य,भांग,गांजा, अफीम,औरजितनेनसेहैं वेसबअभक्ष्यहैं क्योंकिजितमेनशेहैं वेसबबुद्ध्यादिकोंकेनाशकरनेवालेहैं इस्सेइनकाग्रहणकभीनकरनाचाहिए क्योंकिजितनेनशेहोतेहैं वेबिनागरमीसे नहीहोते फिरगर्मीसेसबधातुऔरप्राणतप्तहोजातेहैं औरविषमउनकेसंगसे बुद्धि तप्तऔरविषमहोजातीहै इस्से नशाकाकरनासबकोवर्जितहै परन्तुऔषधकेहेतु किरोगनिवृत्तिहोताहोय तोचौगुणाजलऔरएक गुणमद्यग्रहणलिखाहै सुश्रुतादिकवैद्यकशास्त्रमें क्योंकिरोगनिवृत्तिकेहेतुअभक्ष्यभीभक्ष्यहोजाताहै औरजिनपशुओंके बछड़े को दूधनहींदेते औरसबअपनेहीदुहलेतेहैं यहभीअनाचारहै क्योंकि पशुपुष्ट कभीनहींहोते फिरपुष्टिकेबिना दुग्धादिकथोड़े होतेहैं औरपशुभीबलहीनहोतेहैं सोएकमासभरजितनावहपीए उतना देनाचाहिए फिरएकस्तनकादूधदुहले औरसबबछड़ापीए फिर दोमासकेपीछे जबवहबछिया घास,पात,खानेलगे तबआधादूध सर्वदिनछोड़दे औरआधादुहले तोपशुभीपुष्टहोवैं औरदुग्धादिकभीबहुतहोवैं फिरउनदुग्धादिकोंसे मनुष्यादिकोंकोपुष्टिभीहुआकरै इस्से खानेऔरपीनेमें धर्ममानतेहैं वाधर्मकानाशवेबुद्धिहीनमनुष्यहैं ऐसातोहैकिसत्यधर्म व्यवहारसेपदार्थोंकोप्राप्तहोय उनसेखानापीनाकरैतोपुण्यहै औरचोरीतथाछल,कपट,व्यवहारसेखानापीनाकरै तोअवश्यपापहोताहै सोखानपीनेमें जितने भेदहैं वेविरोधदुःखऔरमूर्खताकेकारणहैं इनबखेड़ोंसेआर्यावर्त मेंपुरुषऔरस्त्रीलोग विद्या,बल,बुद्धि,पराक्रम,हीनहोगएहैं प्रथम देशदेशान्तरोंमेंसबवर्णोंमें विवाहआदीहोतोथीपूर्वोक्तवर्णानुक्र-

मसे फिर भोजन में कैसे भेद होगा यह भेद थोड़े दिन से चला है कि जब से नाना प्रकार के मत मतान्तर चले और मनुष्य की बुद्धि में परस्पर विरोध होने से प्रीति नष्ट होगई वैर होगया इस्से कोई किसी के उपकार में चित नहीं देता और अपने देश के मनुष्यों के उपकार के हेतु कोई प्रवृत्त नहीं होता किन्तु अपने २ मतलब में रहते हैं सो सब का नाश होता जाता है यह बड़ा अनाचार है और तथा विचार से शुद्ध पदार्थ के खाने से किसी का परलोक वा धर्म बिगड़ता नहीं परन्तु विद्या और विचार के न होने से इन बखेड़े में मनुष्य लोग पड़ के सदा दुःखी रहते हैं और जो परस्पर गुणग्रहण करैं तो सुखी होजांय और देखना चाहिए कि समय के ऊपर भोजन नहीं प्राप्त होता है भोजन के पात्रों को उठा के लादे फिरते हैं बैलों की नांई दरिद्र लोग और धनाढ्य लोग बहुत रसोंईदार आदिक साथ में रहते हैं उस्से मिथ्या धन बहुत खर्च होजाता है इत्यादिक सब व्यवहार बुद्धिमान लोग विचार लें युक्त २ व्यवहार करैं अयुक्त को नहीं एदशसमुल्लास सिक्षा के विषय में लिखे इसके आगे आर्यावर्त्तवासी मनुष्य जैन मुसल्मान और अंगरेजों के आचार अनाचार सत्यासत्य मत मतान्तर के खण्डन और मण्डन के विषय में लिखेंगे इन में से प्रथम समुल्लास में आर्यावर्त्तवासी मनुष्यों के मत मतान्तर के खण्डन और मण्डन के विषय में लिखा जायगा दूसरे समुल्लास में जैनमत के खण्डन और मण्डन के विषय में लिखा जायगा तीसरे में मुसल्मानों के मत के विषय में खण्डन और मण्डन लिखेंगे और चौथे में अंगरेजों के मत में खण्डन और मण्डन के विषय में लिखा जायगा सो जो देखा चाहै खण्डन और मण्डन को युक्ति उन चारों समुल्लासों में देखले दस समुल्लास तक खण्डन वा मण्डन नहीं लिखा क्योंकि जब तक बुद्धि मनुष्यों की सत्यासत्य बिबेक युक्त नहीं होती तब तक सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग करने में समर्थ नहीं होते इस हेतु ग्रन्थ के पूर्व भाग में सत्य २ मनुष्यों के हित के हेतु शिक्षा लिखी और इस ग्रन्थ के उत्तर भाग में सत्य मत का मण्डन और असत्यम-

तकाखण्डनलिखेंगें संस्कृतमें रचनाकरतेतो सबमनुष्योंकेसम-झमें नहींआता इसहेतुभाषामें कियागया इसग्रन्थको दुराग्रह हठऔरईर्ष्याकोछोड़के यथावत्बिचारेगा उसकोसत्य२पदार्थों के प्रकाशसेअत्यन्तआनन्दहोगा औरअन्यथाइसग्रन्थका अभिप्राय भीमालूमनहींहोगा इसहेतुसज्जनलोगोंकोयहउचितहै किइस-कायथावतअभिप्रायबिचारकेभूषणवादूषणकरैं अन्यथानहींऔर मूर्खतथादुराग्रहीपुरुषके कहेदूषणमाननेकेयोग्यनहीं ॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा बिरचिते दसमः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ १० ॥

सत्यार्थ प्रकाशस्य प्रथमभागः समाप्तः ॥

———ooo———

अथार्यावर्तवासिमतखण्डनमण्डनेविध्यस्यामः ॥ सरस्वतीदृ-षद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम् । तंदेवनिर्मितंदेश मार्यावर्त्तं प्रचक्षते ॥ १ ॥ म० सरस्वतीजोकिगुजरातऔरपंजाबके पश्चिमभागमेंनदी है उससेलेकेनैपालके पूर्वभागकीनदीसेलेके समुद्रतकइनदीनोंके बीचमेंजोदेशहै सोआर्यावर्तदेशहै औरवेदेवनदी कहातीहैं अ-र्थातदिव्यदेशके प्रांतभागमेंहोनेसेदे वनदीइनका नामहैं सोदेश देवनिर्मितहै अर्थातदिव्यगुणोंसेरचितहै क्योंकिभूगोलके बीचमें ऐसाश्रेष्ठदेशकोईनहींहै जिसदेशमेंसबश्रेष्ठपदार्थहोतेहैं और छःऋतुयथावत् वर्त्तमानहोतेहैं औरकेवलसुवर्णरत्नपैदाहोतेहैं इसदेशमें जिसकाराज्यहोताहै वहदरिद्रहोयतोभीधनसेपूर्णहो जाताहै इसीहेतुइसकानामआर्यावर्त्त है आर्य्य नामश्रेष्ठमनुष्य औरश्रेष्ठपदार्थइनसेयुक्त अर्थातआवर्त्त है इसहेतुइसदेशकानाम

आर्यावर्तकहतेहैं ॥ १ ॥ एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः । स्वं स्वंचरित्रंशिक्षेरन् पृथिव्यांसर्वमानवाः ॥ २ ॥ म० इसदेशमेंअग्रजन्मानाम सबसे पूर्व गुणोंसेसम्पन्न जोपुरुषउत्पन्नहोवै उससे सब भूगोलकीपृथिवीकेमनुष्यशिक्षा अर्थातविद्यातथासंसारकेसबव्यवहारोंका यथावतविज्ञानकरें इससेक्याजानाजाताहैकिप्रथमइस मेंमनुष्योंकोसृष्टिभईथी पोछेसबद्वीपद्वीपान्तरमेंसबमनुष्यफैलगए क्योंकिपृथिवीमेंजितनेमनुष्यहैं वेइसदेशवालोंसेविद्यादिकशिक्षा ग्रहणकरें औरसबदेशभाषाओंकामूलजोसंस्कृत सोआर्यावर्तही में सदासेचलाआताहैआजकालभोकुछ२देखनेमें आताहै परन्तु फिरभोसबदेशोंसेसंस्कृतकाप्रचारअधिकहै जर्मनीऔरबिलायत आदिकदेशोंमेंसंस्कृतकेपुस्तकइतनेनहींमिलतेजितनेकिआर्यावर्त देशमेंमिलतेहैं औरजोकिसीदेशमें संस्कृतकेबहुतपुस्तकहोंगे सोआर्यावर्त्तहीसेलिएहोंगे इसमेंकुछसन्देहनहीं सोइसदेशसे मिश्रदेशवालोंनेपहिलेविद्याग्रहणकीथी उससे यूनानदेश,उससे रूमफिरक्रमसे फिरंगस्थान आदिमेंविद्याफैलीहैपरन्तु संस्कृत के बिगड़नेसे गिरीशलाटीनअंगरेज औरअरबदेशवालोंकीभाषा बनगईहैं सोइनमेंअधिकलिखनाकुछआवश्यकनहीं क्योंकिइतिहासोंकेपढ़नेवालेसबजानतेहैं औरपताभीऐसाहीमिलताहै एक गोल्ड्सटकरसाहेबने पहिलेऐसाहीनिश्चयकियाहै किजितनीबिद्यावामतफैलेंहैं भूगोलमंबेसब आर्यावर्त्तहीसेलिएहैं औरकाशीमेंबालेण्टेन्साहेबनेयहीनिश्चयकियाहै किसंस्कृतसबभाषाओं कीमाताहै तथादाराशिकोहबादशाहनेभी यहनिश्चयकियाहै कि जोविद्याहैसोसंस्कृतहीहै क्योंकिमैंनेसबदेशोंको भाषाओंकोपुस्तकदेखा तोभोमुझकोबहुतसन्देहरहगए परन्तु जबमैंनेसंस्कृत देखातबमेरेंसबसन्देहनिवृत्तहोगए औरअत्यन्तप्रसन्नतामुझको भई औरकाशीमेंमानमन्दिरजोरचाहै उसमेंमहाराजसवाईमानसिंहजीने खगोलकेकलाऔरयन्त्रऐसे रचेहैं किजिसमेंखगोल

कासबहालदेखपड़ताथा परन्तु आजकालउसकी मरम्मतनहोने
से बहुतकलायन्त्रबिगड़गएहैं तोभीकुछ२देखपड़ताहै फिरआज
कालमहाराज सवाईरामसिंहजीने कुछमरम्मतस्थानकीकराईहै
जोउसयन्त्रकीभीकरावेंगेतोकुछरोजबनारहेगा अन्यथानहींजबसे
महाभारतयुद्धभयाउसदिनसेआर्यावर्त्त कोबुरीदशाआईहै सोनि-
त्य२बुरीहीदशाहोतीजातीहै क्योंकिउसयुद्धमें अच्छे २बिद्यावान
राजाऔरब्राह्मणलोगप्रायःमारेगए फिरकोईराजापूर्णबिद्यावा-
ला इसदेशमें नहींभया जबराजाबिद्वान औरधर्मात्मानहींभया
तबविद्याकाप्रचारभीनष्टहोताचला फिरकुछदिनकेपीछेआपसमें
लड़नेलगे क्योंकिजबबिद्यानहींहोतो तबऐसेहीबहुतप्रमादहोते
हैं जोकोईप्रबलभया उसनेनिर्बलकाराजछीनकेउसकोमारा फिर
प्रजामेंभीगदरहोनेलगा किजहांजिसने जितनापाया उसकावह
राजावानमीदारबनबैठा फिरब्राह्मणलोगोंनेभी बिद्याकापरीश्र-
मछोड़दिया पढ़नापढ़ानाभीनष्टहोताचला जबब्राह्मणलोगबिद्या
हीनहोतेचले तबक्षत्रिय,वैश्य,शूद्रभीबिद्याहीनहोतेचले केवल
दम्भ,कपटऔरछलहीसेव्यवहारकरनेलगे फिरजितनेअच्छे का-
महोतेथेवेसबबन्धहोतेचले बेदादिकबिद्याकाप्रचारभीबहुतथो-
ड़ाहोताचला फिरब्राह्मणलोगोंनेबिचारकिया किआजीविकाकी
रीतिनिकालनीचाहिए सोसम्मतिकरकेयहीबिचारकिया किब्रा-
ह्मणवर्णमें जोउत्पन्नहोताहै सोईदेवहैसबकापूज्यहै क्योंकिपूर्ण
बिद्यासे ब्राह्मणवर्णहोताहै यहबर्णाश्रमकीसनातनरीतिहै सोई
ऋषिमुनियोंकेपुस्तकोंमेंभीलिखीहै सोबिद्यादिकगुणोंसेतोबर्णव्य-
वस्थानहींरक्खीकिन्तुकुलमेंजन्महोनेसेबर्णव्यवस्थाप्रसिद्धकरदिया
हैफिरजन्महीसेब्राह्मणादिकवर्णोंकाअभिमानकरनेलगे फिरबि-
द्यादिकगुणोंमेंपुरुषार्थसबकाछूटाउसकेछूटनेसेप्रायःराजाऔरप्र-
जामें मूर्खताअधिक२होनेलगी फिरउन्हसेब्राह्मणलोगअपने चर
णऔरशरीरकीपूजाकरानेलगेजबपूजाहोनेलगीतबअत्यन्तअभि-

मानउनमें होनेलगा उनविद्याहीनराजाओंको औरप्रजास्थपुरु-
षोंकोबशीभूत ब्राह्मणोंनेकरलिए यहांतककि सोना, उठनाऔर
कोसदोकोसतकजाना वहभीब्राह्मणोंकीआज्ञाकेबिनानहींकरना
औरजाकोईकरेगा सोपापीहोजायगा फिरशनैःस्वर्गादिकग्रहऔ-
रनानाप्रकारके भूतप्रेतादिकोंकाजाल उनकेऊपर फैलानेलगे
औरवेमूर्खताकेहोनेसे माननेभीलगें फिरराजा लोगोंको ऐसा
निश्चयसबलोगोंनेमिलकेकराया किब्राह्मणलोगकुछभीकरैं परन्तु
इनकोदण्डनदेनाचाहिए जबदण्डनहीहोनेलगा तबब्राह्मणलोग
अत्यन्तप्रमादकरनेलगे औरक्षत्रियादिकभी फिरबड़े२ ऋषिमु-
निऔरब्रह्मादिककेनामोंसे श्लोकऔरग्रन्थरचनेलगे उनमेंप्रायः
यहीबातलिखी किब्राह्मणसबकापूज्यऔरसदाअदण्ड्यहै फिरअ-
त्यन्तप्रमादऔरविषयासक्तिसे बिद्या, बल, बुद्धि, पराक्रम औरशूर
वीरतानष्टहोगई औरपरस्पर ईर्ष्याअत्यन्तहोगई किसीको कोई
देखनसकै औरकोई२कसहायकारीनरहे परस्परलड़नेलगें यह
बातचीनआदिकदेशोंमेंरहनेवाले जैनोंनेसुनीऔरव्यापारादि-
ककरनेके हेतुइसदेशमें आतेथें सोप्रत्यक्षभी देखीफिर जैनोंने
विचारकिया किइससमयआर्यावर्त्त देशमें राज्यसुगमतासेहोस-
क्ताहै फिरवेआएऔरराज्यभी आर्यावर्त्त मेंकरनेलगे फिरधी-
रे२बोधगयामेंराज्यजमाके औरदेशदेशान्तरमेंफैलानेलगे सो
वेदादिकसंस्कृत पुस्तकोंकीनिन्दा करनेलगे औरअपनेपुस्तकोंके
पठनपाठनकाप्रचार तथाअपनेमतकाउपदेशभीकरनेलगे सोइ-
सदेशमेंबिद्याकेनहींहोनेसे बहुतमनुष्योंनेउनके मतकास्वीकार
करलिया परन्तु कनौजकाशीपर्वतदक्षिणऔरपश्चिमदेशकेपुरुषों
नेस्वीकारनहींकियाथा परन्तु वेबहुतथोड़े हीथेवेहीवेदादिकपु-
स्तकोंका पठनऔरपाठनकर्ते औरकरातेथे फिरइनोंनेवर्णाश्रम
व्यवस्थाऔरवेदोक्तकर्मोंकोमिथ्या२दोषलगाके अश्रद्धाऔरअ-
प्रवृत्तिबहुतकरादिया फिरयज्ञोपवीतादिककर्मभीप्रायःनष्टहोग-

या और जो २ वेदादिकों की पुस्तक पाया और पूर्व के इतिहासों का उनका प्रायः नाश कर दिया जिस्से कि इनको पूर्व अवस्था का स्मरण भी न रहै फिर जैनों का राज्य इस देश में अत्यन्त जम गया तब जैन भी बड़े अभिमान में होगए और कुकर्म, अन्याय भी करने लगे क्योंकि सब राजा और प्रजा उनके मत में हीं होगए फिर उनको डर वा शंका किसी की न रही अपने मत वालों को अच्छे २ अधिकार और प्रतिष्ठा करने लगे और वेदादिकों को पढ़ैं तथा उन में कहे कर्मों को करैं उनको अप्रतिष्ठा करने लगे अन्याय से भी उनके ऊपर जाल स्थापन करने लगे अपने मत का पण्डित वा साधु उनको बड़ी प्रतिष्ठा करने लगे सो आजतक भी ऐसा ही होता है और बहुत स्थान २ में बड़े २ मन्दिर रच लिए और उन में अपने आचार्यों की मूर्त्ति स्थापन कर दिया तथा उनकी पूजा भी अत्यन्त करने लगे सो जैनों के राज्य ही में मूर्त्ति पूजन चली इस के आगे न थी क्योंकि जितने ऋषि मुनियों के किए प्राचीन ग्रन्थ हैं महाभारत युद्ध के पहिले जो कि रचे गए हैं उन में मूर्त्तिपूजन का लेश मात्र भी कथन नहीं है इस्से दृढ़ निश्चय से जाना जाता है कि इस आर्य्यावर्त्त देश में मूर्त्ति पूजन नहीं थी किन्तु जैनों के राज्य ही से चला है एक द्रविड़ देश के ब्राह्मण काशी में आके एक गौड़पाद पण्डित थे उन के पास व्याकरण पूर्वक वेद पर्यन्त विद्या पढ़ी थी जिस का नाम शङ्कराचार्य था वे बड़े पण्डित भए थे उन ने विचार किया कि यह बड़ा अनर्थ भया नास्तिकों का मत आर्य्यावर्त्त देश में फैल गया है और वेदादिक संस्कृत विद्या का प्रायः नाश ही होगया है सो नास्तिक मत का खण्डन और वेदादिक सत्य संस्कृत विद्या का विचार वे अपने मन में ऐसा विचार करके सुधन्वा नाम राजा था उसके पास चले गए क्योंकि बिना राजाओं के सहाय से यह बात नहीं हो सकेगी सो सुधन्वा राजा भी संस्कृत में पण्डित था और जैनों के भी संस्कृत सब ग्रन्थ पढ़ा था सुधन्वा जैन के मत में था परन्तु बुद्धि और विद्या के होने से अत्यन्त विश्वास नहीं था क्योंकि वह संस्कृत भी पढ़ा था और उसके पास जैन मत के पण्डित

भीबहुतथे फिरशंकराचार्यने राजासे कहाकि आप सभाकरावैं औरउनसेमेराशास्त्रार्थहोय औरआपसुनैं फिरजोसत्यहोय उसकोमाननाचाहिए उसनेस्वीकारकिया औरसभाभीकराई उसमेंअपनेपासजैनमतकेपण्डितथे औरभीदूर२सेपण्डितजैनमतकेबोलाए फिरसभाभई उसमेंयहप्रतिज्ञाहोगई किहमवेद और वेदमतकास्थापनकरेंगे औरआपकेमतकाखण्डनतथाउनपण्डितोंनेऐसीप्रतिज्ञाकिया किवेदऔरवेदमतका हमखण्डनकरेंगे औरअपनेमतकामण्डन सोउनकापरस्परशास्त्रार्थहोनेलगा उस शास्त्रार्थमेंशङ्कराचार्यकाविजयभया औरजैनमतवालेपण्डितोंका पराजयहोगया फिरकोईयुक्तिजैनोंकीनहींचली किन्तुशङ्कराचार्यकीबात प्रमाणोंसेसिद्धभई उसीसमयसुधन्वाराजा बुद्धिमानथा उसकीजैनमतमेंअश्रद्धाहोगई औरवेदमतमेंश्रद्धाहोगई फिरसभाउठगई राजाऔरशङ्कराचार्य जीकाएकान्तमेंविचारभया कि आर्यावर्त्त मेंबड़ाअनर्थहोगयाहै इससे वेदादिकोंकाप्रचारऔरइन कर्मोंकाप्रचारहोनाचाहिए तथाजैनोंकाखण्डन सोशङ्कराचार्यनेकहाकिजैनोंका आजकालबड़ाबलहै औरवेदमतकाबलनहींहै इससे शास्त्रार्थतोहमकरनेकोतैयारहैं परन्तु कोईउपाधिकरै अथवाशास्त्रार्थहोनकरैं तोहमाराकुछबलनहीं इसमेंआपलोग प्रवृत्तहोंय किकोईअन्यायकरै उसकोआपलोग शिक्षाकरैं सोराजानेउसबातकास्वीकारकिया किवहहमकरेंगे परन्तु हमारेछःराजासम्बन्धीहैं उनकेपासहमचिट्ठीलिखतेहैं औरआपकोभीभेजेंगे शास्त्रार्थकरनेकेहेतु फिरवेभीजो मिलजांय तोबहुतअच्छीबातहै फिरशंकराचार्य उनराजाओंकेपासगए औरसभाभई फिरजैन मतकेपण्डितोंकापराजयहोगया फिरवेछःभीसुधन्वासेमिलैऔर सबकीसम्मतिसेसंस्कारभीभया तथावेदोक्तकर्मभीकरनेलगेतबतो आर्यावर्त्त मेंसर्वत्रयहबातप्रसिद्धहोगई किएकशङ्कराचार्य नामक सन्यासीवेदादिकशास्त्रोंकेपढ़नेवालेबड़े पण्डितहैं जिससे बहुतजैन

लोगोंकेपण्डितपरास्तहोगए फिरउनसातराजाओंनेशङ्कराचार्यकी रक्षाकेहेतुबहुतभृत्य तथासेवकऔरसवारीभीरखदिया और सबनेकहाकिआपसर्वत्रआर्यावर्त्तमेंभ्रमणकरैंऔरजैनोंकाखण्डनकरैं इसमेंकोईजबर्दस्तीकरेगा अन्यायसेउसकोहमलोगसमझालेंगे फिरशंकराचार्यजोने जहां२ जैनोंकेपण्डितऔरअत्यन्तप्रचारथा वहां२भ्रमणकिया औरउनसेसर्वत्रशास्त्रार्थकिया परन्तु,जैनलोगोंकासर्वत्रपराजयहीहोतागया क्योंकिदोतोनदोषउनकेबड़ेभारीथे एकतोईश्वरकोनहींमानना दूसराबेदादिकसत्यशास्त्रोंकाखण्डनकरना औरतीसराजगत्स्वभावहीसेहोताहै इसकारचनेवालाकोईनहीं इत्यादिकअन्यभीबहुतदोषहैं वेजैनमतकखण्डनमण्डनमेंविस्तारसेलिखेंगे फिरजितनीजैनोंके मन्दिरमेंमूर्त्तियें थीं उनकोसुधन्वादिकराजाओंनेतोड़वाडाली औरकूवांवापृथिवीमेंगाड़दिया औरकोईमूर्त्ति जैनोंनेबिनाटूटोभी भयसेजमीनमेंगाड़दिया सोआजतकवेटूटीऔरबिनाटूटीमूर्त्ति जैनोंकीपृथिवीखोदनेसे निकलतीहैं परन्तु,मन्दिरनहीतोड़ेगए क्योंकि शंकराचार्य औरराजालोगोंने विचारकिया मन्दिरोंकोतोड़ना उचितनहीं इनमेंबेदादिकशास्त्रोंकेपढ़नेकेहेतु पाठशालाकरेंगे क्योंकिलाखहांकरोड़हांरुपैएकोइमारतहै इसकोतोड़नाउचितनहीं औरकुछ२गुप्तजैनलोग जहांतहांरहगएथे सोआजतकदेखनेमेंआर्यावर्त्तदेशमेंआतेहैं इसकेपोछेसर्वत्र बेदादिकोंकेपढ़नेऔरपढ़ानेकोइच्छा बहुतमनुष्योंकोभई शंकराचार्यऔरसुधन्वादिकराजा तथाऔरआर्यावर्त्तवासीथे उनलोगोंने बिचारकियाकिबिद्याकाप्रचार अवश्यकरनाचाहिए वेबिचारहीकरतेरहे इतनेमें ३२,वा,३३,बरसकीउमरमें शंकराचार्यकाशरीरछूटगया उनकेमरनेसेसबलोगकाउत्साहभङ्गहोगया यहभीआर्यावर्तदेशवालोंकेबड़े अभाग्यकिशंकराचार्यदशवाबारहबरसभोजीतेतोविद्याकाप्रचार यथावत्होजाता फिरआर्यावर्त्तको ऐसोदुर्दशा कभीनही

होती क्योंकि जैनोंका खण्डन तो होगया परन्तु विद्याप्रचार यथावत् न होभया इस्से मनुष्योंको यथावत् कर्तव्य और अकर्तव्यका निश्चय न होहोनेसे मनमें सन्देह होरहा कुछ तो जैनोंके मतका संस्कार हृदयमें रहा और कुछ वेदादिक शास्त्रोंकाभी यह बात एकाईसवा बाईसवै बरसकी है इसके पीछे २००वा३००बरसतक साधारण पढ़ना और पढ़ाना रहा फिर उज्जयनमें बिक्रमादित्य राजा कुछ अच्छाभया उसने राजधर्म कुछ२ प्रकाश किया और बहुत कार्य न्यायसे होने लगेथे उसके राज्यमें प्रजाको सुखभी भयाथा क्योंकि बिक्रमादित्य तेजस्वी बुद्धिमान और शूरवीर तथा धर्मात्मा इस्से कोई और अन्याय नहीं करने पाताथा परन्तु वेदादिक विद्याका प्रचार उसके राज्यमें भी यथावत् नहीं भयाथा उसके पीछे ऐसा राजा नहीं भया किन्तु साधारण होतेंगए फिर बिक्रमादित्यसे ५००बर्षके पीछे राजा भोज भए उसने संस्कृतका प्रचार किया सो नवीन ग्रन्थोंका रचना और प्रचार कियाथा वेदादिकोंका नहीं परन्तु कुछ२ संस्कृतका प्रचार भोजराजाने ऐसा कराया कि चाण्डाल और हल जोतनेवालेभी कुछ२ लिखना पढ़ना और संस्कृत बोलतेभी थे देखना चाहिए कि कालिदास गड़रियाथा परन्तु स्लोकादिक रच लेताथा और राजाभोजभी नए२ स्लोक रचनेमें कुशलथा कोई एक स्लोकभी रचके लेजाताथा उनके पास उसका प्रसन्नतासे सत्कार करतेथे और जो कोई ग्रन्थ बनाताथा तो उसका बड़ाभारी सत्कार करतेथे फिर लोभसे बहुत संसारमें मनुष्य लोग नए ग्रन्थ रचनेलगे उस्से वेदादिक सनातन पुस्तकोंकी अप्रवृत्ति प्रायः होगई और संजीवनीनाम राजाभोजने इतिहास ग्रन्थ बनाया है उसमें बहुत पण्डितोंकी सम्मति है और यह बात उसमें लिखी है कि तीन ब्राह्मणोंने ब्रह्मवैवर्त्तादिक तीन पुराण पण्डितों ने रचेथे उनसे राजाभोजने कहा कि औरके नामसे तुमको ग्रन्थ रचना उचित नहींथा और महाभारत को बात लिखी है कि तीन हजार स्लोक२०बरसके बीचमें व्यासजीका नाम करके लोगोंने मिला

दिएहैं ऐसेहीपुस्तकबढ़ेगा तोएकऊंटकाभार होजायगा औरऐ-सेहीलोगदूसरेकेनामसेंग्रन्थरचेंगें तोबहुतभ्रमलोगोंकोहोजा-यगा सोउससंजीवनीग्रन्थमें राजाभोजनेअनेकप्रकारकीबातें पु-स्तकोंकेविषय और देशके वर्त्तमानकेविषयमें इतिहासलिखेहैं सोवहसंजीवनीग्रंथ बटेश्वरकेपास होलीपुराएकगांवहै उसमें चौबेलोगरहतेहैंवेजानतेहैंजिसकेपासवहग्रंथहैपरन्तु लिखनेवा देखनेकोवहपण्डितकिसीकोनहींदेता क्योंकिउसमें सत्य२बात लिखीहै उसकेप्रसिद्धहोनेसेपण्डितोंकीआजीविकानष्टहोजातीहै इसभयसेवहउसग्रंथकोप्रसिद्धनहींकरता ऐसेहीआर्यावर्त्तबासी मनुष्योंकीबुद्धिचुद्रहोगईहै किअच्छापुस्तकवाकोईइतिहास उस-कोछिपातेचलेजातेहैं यहइनकी बड़ीमूर्खताहै क्योंकिअच्छीबात जोलोगोंकेउपकारकी उसकोकभीनछिपानाचाहिए फिरराजा भोजकेपीछेकोईअच्छाराजानहींभयाउससमयमें जैनलोगोंनेज-हांतहांमूर्तिमन्दिरोंमेंप्रसिद्धकियाऔरवेकुछ२प्रसिद्धभीहोनेलगें तबब्राह्मणोंनेबिचारकिया किइनकेमन्दिरोंमें नहींजानाचाहिए किन्तुऐसीयुक्तिरचें किहमलोगोंकीआजीविकाजिस्से होयफिरउ-नने ऐसाप्रपञ्चरचाकि हमकोस्वप्नाआयाहै उसमेंमहादेव,ना-रायण,पार्वती,लक्ष्मी,गणेश-हनुमान्,राम,कृष्ण,नृसिंह,इनोंने स्वप्नमेंकहाहै किहमारीमूर्त्ति स्थापनकरके पूजाकरें तोपुत्र,धन नैरोग्यादिकपदार्थोंकीप्राप्तिहोगी जिस२पदार्थकीइच्छाकरेगा उस२पदार्थकीप्राप्ति उसकोहोगी फिरबहुतमूर्खोंने मानलिया औरमूर्त्ति स्थापनकरनेकोईर लगा फिरपूजाऔरआजीविका भी उनकीहोनेलगी एककोआजीविकादेखकेदूसराभीऐसाकरनेलगा औरकोईमहाधूर्त्त नेऐसाकियाकिमूर्त्तिकोजमीनमेंगाड़केप्रातः कालउठके कहामुझको स्वप्नभयाहै फिरउनसे बहुतलोग पूछने लगे किकैसास्वप्नभयाहै तबउनसे उसनेकहाकि देवकहताहै मैं जमीनमें गड़ाहूं औरदुःखपाताहूं मुझकोनिकालकेमन्दिरमें

स्थापनकरै औरतूंहीपुजारीमेराहो तोमैंसबकाम सबमनुष्योंकासिद्धकरूंगा फिरवेविद्याहीनमनुष्य उस्से पूछतेभए किवहमूर्त्ति कहांहै जोतुम्हारासत्यस्वप्नहोगा तोतुमदिखलाओ तबजहां उसनेमूर्तिगाड़ीथो वहांसबकोलेजाकेखोदकेउसकोनिकाली सब देखकेबड़ाआश्चर्यकिया औरसबनेउस्से कहाकि तूंबड़ाभाग्यवान् है औरतेरेपरदेवताकी बड़ीकृपाहै से हमलोग धनदेतेहैं इस्से मन्दिरबनाओ इसमूर्त्ति काउसमें स्थापनकरो तुमइसके पुजारी वनो औरहमलोगनित्यदर्शनकरेंगे तबतोवहप्रसन्नहोकेवैसाही किया औरउसकीआजीविकाभीअत्यन्तहोनेलगी उसकीआजीविकाकोदेखके अन्यपुरुषभी ऐसीधूर्ततताकरनेलगे औरविद्याहीन पुरुषउसकीमानताकरनेलगे फिरप्राय:मूर्त्ति पूजन आर्यावर्तमें फैला एकमहम्मूदगजनवीइस देशमेंआया और बहुतसीमूर्त्तियां सोनेऔरचांदियोंकीलूटलिया बहुतपुजारीऔरपण्डितोंको पकड़लिए औरगातको पिसानपिसावै औरदिनमें राजहरआदि कोसफाकरावै औरजहांकोई पुस्तकपाया उसकोनष्टभ्रष्टकरदिया ऐसेवहआर्यावर्त्त में बारहदफेआया औरबहुतलूटमारअत्यन्तअन्यायउसनेकिया इसदेशकोबड़ी दुर्दशाउसनेकिया यहांतक किशिरच्छेदनबहुतोंकाकरदिया बिनाअपराधोंसेस्त्री,कन्याऔर बालककोभीपकड़केदु:खदिया औरबहुतोंकोमारडाला ऐसाउन्ने बड़ाअन्यायकियासोजिसदेशमें ईश्वरकीउपासनाकोछोड़केकाष्ठ पाषाण वृत्त,घास,कुत्ते,गधे,औरमिट्टीआदिको पूजासे ऐसाही फलहोगा उत्तमकहांसे होगा। फिरचार ब्राह्मणोंने एकलोहेको पोलीमूर्त्ति रचवाई औरउसकोगुप्त कहींरखदिया फिरचारोंने कहा हमकोमहादेवने स्वप्नदिया।है किहमारा आपलोगमन्दिर रचैं तोकैलाशकोछोड़के आर्यावर्त्त देशमेंमैं वासकरूं औरसब कोदर्शनदेऊं ऐसासबदेशोंमेंप्रसिद्धकरदिया फिरमन्दिरसबलोगोंनेमिलकेरचवाया उसमेंनीचेऊपरऔरचारोंओर भींतमेंचु-

बकपत्थररक्खे जबमन्दिरपूराभया तबसबदेशोंमेंप्रसिद्धकरदिया किउसदिनमध्यरात्रिमेंकैलाशसेमहादेवमन्दिरमेंआवेंगे जोदर्शनकरेगा उसकाबड़ाभाग्यऔरमरनेकेपीछेकैलाशकोवहचलाजायगा फिरउससमयमें राजा,बाबू,स्त्री,पुरुष औरलड़केबाले उसस्थानमेंजुटेफिरउनचारोंधूर्त्तोंनेमूर्त्ति मन्दिरमेंकहींगुप्तरखदिईथी औरमेलामेंऐसाप्रसिद्धकरदिया किमहादेव देवहै सोभूमिको पगसेस्पर्शनकरेंगे किन्तुआकाशहीमेंखड़े रहेंगे ऐसाहमको स्वप्नमेंकहाहै सोजबउसदिनपहररात्रिगई तबसबकोमन्दिरकेबाहरनिकालदिएऔरकिवाड़बन्दकरकेवेचारोंभीतररहे फिरउस मूर्त्तिकोउठाकेमन्दिरमेंलेगए औरबीचमें चुम्बकपाषाणकेआकर्षणोंसेअधरआकाशमेंवहमूर्त्तिखड़ीरही औरउन्होंनेखूबमन्दिरमेंदीपजोड़दिए फिरघण्टा,झल्लरी,शंख,रणसिंघाऔरनगारा बजाए तबतोबड़ामेलामेंउत्साहभयाऔरउननेदरवाजेखोलदिए फिरमनुष्योंकेऊपरमनुष्यगिरे औरमूर्त्तिकोआकाशमेंअधरखड़ीदेखके बड़े आश्चर्ययुक्तभए औरलाखहांरुपैयोंकीपूजाचढ़ी अनेकपदार्थपूजामेंआए फिरवेचारोंधूर्त्तब्राह्मणबड़ेमस्तहोगएऔरमहन्तहोगए फिरनित्यमेलाहोनेलगा करोड़हांरुपैयोंकामाल होगया सोवहमन्दिरद्वारकाकेपास प्रभासक्षेत्रस्थानमेंथा औरउस मूर्त्तिकानाम सोमनाथरक्खाथा फिरमहमूदगजनवीने सुनाकि उसमन्दिरमेंबड़ामालहैऐसासुनके अपनेदेशसेसेनालेके चढ़ा सो जबपंजाबमेंआया तबहल्ला होगया और सोमनाथ कोओरचला तबलोगोंनेजाना किसोमनाथके मन्दिरकोतोड़ेगा औरलूटेगा ऐसासुनकेबहुतराजापण्डितऔरपुजारी सेनाले२ केसोमनाथकी रक्षाकेहेतुइकट्ठे भए सोमनाथकेपास जबवहडेढ़सै दोसैकोस दूर रहा तबपण्डितोंसेराजाओंने पूछाकिमुहूर्त्त देखनाचाहिए हम लोगआगेजाकेउनसेलड़ें फिरपण्डितलोगइकट्ठे होके मुहूर्त्त देखा परन्तु मुहूर्त्त बनानहीं फिरनित्यमुहूर्त्त होदेखतेरहे परन्तु

कोईदिनचन्द्रकोईदिन औरग्रहनहोवने कोईदिनदिकशूलसन्मु-
खआया कोईदिनयोगिनी औरकोईदिनकालनहींबना सोपण्डि-
तोंकीबुद्धिको कालादिकोंकेभ्रमोंनेखालिया औरराजालोगबिना
पण्डितोंकीआज्ञासे कुछकर्तेनहींथे सोप्रायःपण्डित औरराजा
लोगमूर्खहोथे जोमूर्खनहोतेतोपाषाणादिकमूर्त्ति क्योंपूजते औ-
रमुहूर्त्तादिकोंकेभ्रमोंमेंनष्टक्योंहोते ऐसेविचारकर्तेहीरहे उस-
कोसेना दूसरीमंजलपरपहुंची तवराजालोगोंने पण्डितोंसेकहा
किअबतोजल्दीमुहूर्त्त देखो तबपण्डितोंनेकहाकिआजमुहूर्त्त अ-
च्छानहींहै जोयात्राकरोगे तोतुमारापराजयही होजायगा तब
वेब्राह्मणोंसेडरकेबैठेरहे तबमहमूदगाजनवीथोरे२पांचछःकोश
केऊपरआकेठहरा औरदूतोंसे सबखबरमंगवाई किवेक्याकर्तेहैं
दूतोंनेकहाकिआपसमेंमुहूर्त्तविचाराकर्तेहैं महमूदगजनवीकेपा-
स३०हजारसेनाथी अधिकनहीं औरउनके पास दो,तीन लाख
फौजथी फिरउसकेदूसरेदिनप्रातःकाल राजापण्डितपुजारीमि-
लकेमुहूर्त्त विचारनेलगे सोसबपण्डितों नेकहाकि आजचन्द्रमा
अच्छानहो औरभीग्रहक्रूरहैं पुजारीलोग औरपण्डित मूर्त्तिके
आगेजाकेगिरपड़े औरअत्यन्तरोदनकिया हेमहाराज इसदुष्ट
कोखालेओ औरअपनेसेवकोंकासहायकरो परन्तुवहलोहाक्या
करसक्ताहै औरसबसेकहनेलगेकि आपलोगकुछचिन्तामतकरो
महादेवउसदुष्टकोऐसेहीमारडालेंगे वावहमहादेवकेभयसे व-
हांहीसेभागजायगा उसकाक्यासामर्थ्य है किसाक्षात् महादेवके
पासआरुके औरसन्मुख दृष्टिकरसके ऐसेसब परस्पर बकरहेथे
फिरकुछलड़ाईभई औरमुसल्मानभीडरे किविजयहोगावापरा-
जय उससमयमेंऔरपुस्तकफैला२के बहुतसेमन्त्रोंकाजपऔरपा-
ठकर्तेथे औरकहतेथे किअबदेवताऔरमन्त्रहमारापाठ सिद्धहो-
ताहै सोवहवहांहींअन्धाहोजायगा सोबड़ीमण्डलीकी मण्डली
जप,पाठऔरपूजाकररहीथी औरमूर्त्तिकेसाम्नेऔंधेगिरकेपुकार

तेथे एकसभालगरहीथी राजाऔरपण्डितबिचारतेथे मुहूर्त्तको उससमयमेंउसके निकटएकपर्वतथाऔरमहमूदगजनवीनेएकतो पलगाई औरसभाकेबीचमें गोलामाराउससमयकोईदांतधावन करताथा कोईसोताथाऔरकोईस्नानकरताथाइत्यादिकव्यवहारोंसेगाफिलथे सोउसगोलेसे सबपण्डितलोग पोथीपत्राछोड़के भागे औरराजालोगभीभागउठे तथासेनाभीअपनेरस्थानोंसेभागउठी औरवहमहमूदगजनवी सेनासहितधावाकरके उसस्थान परझटपहुंचा उसकोदेखकेसबभागउठे भागेभएपण्डितपुजारी सिपाही तथाराजाओंको उननेपकड़लिया औरबांधलिया और बहुतसोमारपड़ीउनकेऊपर तथामारभीडालाकिसीको औरबहुतभागगए क्योंकिउनपण्डितोंकेउपदेशसे सोलापहिर केबैठथे औरकथासुनीथीकिमुसल्मानोंकास्पर्शनहोकरनाऔरउनकेदर्शनसेधर्मजाताहै ऐसीमिथ्याबातसुनकेभागउठे फिरमन्दिरकेचारोंओर महमूदगजनवीकीसेनाहोगई औरआपमन्दिरकेपास पहुंचा तबमन्दिरकेमहंत औरपुजारीहाथजोड़केखड़े भए उनसे पुजारियोंने कहाकिआपजितनाचाहें उतनाधनलेलिजिए परन्तु मन्दिरऔरमूर्त्ति कोनतोंड़िए क्योंकिइससे हमलोगोंकी बड़ीआजीविकाहै ऐसासुनके महमूदगजनवीबोलाकि हमबुतबेचनेवाले नहीं किन्तुउनको तोड़नेवालेंहैं तबतोवेडरे औरकहाकि एक करोड़रुपैया आपलेलिजिए परन्तुइसको मततोड़िए ऐसेकहते सुनतेतोनकरोड़तककहापरन्तुमहमूदगजनवीनेनहींमाना और उनकोमुसकचढ़ालिया फिरउनकोलेकेमन्दिरमें गयाऔरउनसे पूछाकि खजानाकहांहैसोकुछतोउसनेबतलादियाफिरभीउसको लोभआयाकि औरभीकुछहोगा फिरउनकोमारापोटा तबउनने सबखजानाबतलादिया फिरमन्दिरमेंआकेसबलीलादेखी फिर महन्तऔरपुजारियोंसेकहाकि तुमनेदुनियाकोऐसो धूर्त्तताकरकेठगलिया क्योंकिलोहेकीतोमूर्त्ति बनाईहै इसकेचारोंऔरचुम्ब-

कपाषाणरखनेसे आकाशमें अधरखड़ीहै इसकानामरखदियाहै महादेव यहतुमनेबड़ीधूर्त्तताकियाहै फिरउसमन्दिरकाशिखर उननेतोड़वादिया जबवहचुम्बक पाषाणअलगहोगया तबमूर्त्ति जमीनमें चुम्बकपाषाणमेंलगगई फिरसबभीतें तोड़वाडाली सब चुम्बकके निकलनेसे मूर्त्ति जमीनमेंगिरपड़ी फिरउसमूर्त्तिकोमहमूदगजनवीने अपनेहाथसेलोहेकेघनको पकड़केमूर्त्तिकेपेटमें मारा उससे मूर्त्ति फटगई उससे बहुतजवाहिरातनिकला क्योंकि हीराआदिकअच्छे२ रत्नवेपातेथे तबमूर्त्तिहीमेंरखदेतेथें फिर उनमहंतऔरपुजारियोंकोखूबतंगकिया औरफुसलायाभी फिर उननेभयसेसबबतलादिया उनसेकहाकिजोतुम सबसच्चे२ बतलादेओगे तोतुमकोहमछोड़देंगे तबउननेसोना,चांदीके पात्रोंको भीबतलादिए जोकुछथा औरउसने सबलेलिया सोअठारह करोड़कामालउसमन्दिरसेउसनेपाया फिरबहुतसीगाड़ीऊंटऔरमजूरउसकेपासथें औरभीवहांसेपकड़लिए उनकेऊपरसबमालकोलादकेअपनेदेशकीओरचला सोथोड़ेसेथोड़े पण्डितमहंत औरपुजारीतथाक्षत्रिय,वैश्य,ब्राह्मण औरशूद्रतथास्त्रीबालकदश हजारतकपकड़केसंगलेलिएथें उनकायज्ञोपवीततोड़डालामुखमें थूकदिया औरथोड़े२सूखेचनेनित्यखानेकोदेताथा औरजाजरूर सफाकरवावै पिसवावै घासछिलवावै औरघोड़ोंकीलीदउठवावै औरमुसल्मानोंकेजूठेंबरतनमजवावै औरसबप्रकारकीनीचसेवा उनसेलेऐसेकराता२ जबमक्काकेंपासपहुंचा तबअन्यमुसल्मानोंने कहाकिइनकाफरोंकायहांरखनाउचितनहीं फिरउनकोबुरीदशासेमारडाला क्योंकिउनकेकुरानमें लिखाहै किकाफरोंकोलूट लेउनकोस्त्रीछीनले झूठफरेबसेउनकासबमालले२ औरउनको मारडाले तोभीकुछदोषनहीं किन्तुउसमुसल्मानको बिहिस्तअर्थातउसकोस्वर्गवासमिलताहै वहखुदाकेघरमेंबड़ामान्यहोताहै फिरकाफरवहकहाताहै जोकिमुहम्मदके कलमाकोनपढ़े और

कुरानकेऊपरबिश्वासनलेआवे उसकोबिगाड़नेऔरमारनेमेंकु-छदोषनहीं ऐसामुसल्मानोंकेमतमेंलिखाहै इससे उनको अन्याय करनेमेंकुछभयनहीहोता औरजोकुछपापहोताहै सोतोबाशब्दसे छूटजाताहै इससे वेपापकरनेमेंभयक्योंकरेंगें ऐसेहोबारहदफेवह आयाहै औरदोतीनबारमथुराकीभीदुर्दशाऐसीकिईथी औरजहां २वहगयाथा वहां२ऐसोही उसदेशकीदुर्दशाकिईथी औरडांकू कीनांईवहआताथा मारकेजोकुछपाताथा सोअपनेदेशमेंलेजाता था उसदिनसेमुसल्मान्लोगदरिद्रसेधनाढ्यहोगएहैं सोआर्यावर्त प्रतापसेआजतकभीधनचलाआताहै औरआर्यावर्त्त देशअपनेहीं दोषोंसेनष्टहोताजाताहै सोहमकोबड़ाअपशोचहैकिऐसाजोदेश औरइसप्रकारकाधनजिसदेशमेंहै सोदेशबाल्यावस्थामेंबिवाहबि-द्याकात्याग मूर्त्तिपूजनादिक पाखण्डोंकोप्रवृत्ति नानाप्रकार के मिथ्यामजहबोंकाप्रचार बिषयासक्तिऔरवेदविद्याकालोपजबतक एदोषरहेंगे तबतकआर्यावर्त्त देशवालोंकी अधिक२दुर्दशाहीहो-गी औरजोसत्यविद्याभ्यास तथासुनियम,धर्मऔरएकपरमेश्वर कीउपासना इत्यादिकगुणोंकोग्रहणकरैं तोसबदुःखनष्ट होजांय औरअत्यन्तआनन्दमेंरहैंफिरचारब्राह्मणोंनेबिचारकियाकिकोई क्षत्रियराजाइसदेशमेंअच्छानहींहै इसकाकुछउपायकरनाचा-हिए वेब्राह्मणचारोंअच्छेथे क्योंकिसबमनुष्योंकेऊपरकृपाकरके अच्छीबातबिचारी यहअच्छे पुरुषोंकाकामहै नीचकानहीं फिर उननेक्षत्रियोंकेबालकोंमेंसे चारअच्छे बालकछांटलिए औरउन क्षत्रियोंसेकहाकि तुमलोग खानेपीनेकाप्रबन्ध बालकोंकारखना उननेस्वीकारकिया औरसेवकभीसाथरखदिए वेसबआबूराजप-र्वतकेऊपरजाकेरहेऔरउनबालकोंकोअक्षराभ्यासऔरश्रेष्ठव्य-वहारोंकीशिक्षाकरनेलगे फिरउनकायथाबिधि संस्कारभीउनने किया सन्ध्योपासन औरअग्निहोत्रादिक वेदोक्तकर्मोंकी शिक्षा उननेकिया फिरव्याकरणछःदर्शनकाव्यालङ्कारसूत्रऔरसनातन

कोश यथावत्पदार्थविद्याउनकोपढ़ाई फिरवैद्यकशास्त्रतथा गान विद्या, शिल्पविद्या, औरधनुर्विद्या अर्थात्युद्धविद्या भीउनकोअ- च्छीप्रकारसेपढ़ाई फिरराजधर्मजैसाकिप्रजासेवर्तमानकरनाऔ- रन्यायकरना दुष्टोंकोदण्डदेना श्रेष्ठोंकापालनकरना यहभीसब पढ़ाया ऐसेपसीचवा २६ बरसकी उमरउनकीभई और उनप- णिडतोंकेस्त्रियोंनेऐसेहीचारकन्या रूपगुणसम्पन्नउनकोअपनेपास रखकेव्याकरण, धर्मशास्त्र, वैद्यक, गानविद्या, तथा नानाप्रकारके शिल्पकर्मउनकोपढ़ाए औरव्यवहारकी शिक्षाभीकिया तथायुद्ध विद्याकीशिक्षा गर्भमेंबालकोंकापालन औरपतिसेवा काउपदेश भीयथावत्किया फिरउनपुरुषोंकोपरस्परचारोंकायुद्धकरना औ- रकरानेकायथावत्अभ्यासकराया ऐसेचालीस२वर्षके वेपुरुषभए बीस२वर्षकोवेकन्याभईं तबउनकीप्रसन्नताऔरगुणपरीक्षासेएक सेएककाविवाहकराया जबतकविवाहनहींभयाथा तबतकउनपु- रुषोंकीऔरकन्याओंकी यथावत्रक्षाकिईगईथी इस्सेउनकोविद्या बल, बुद्धि, तथापराक्रमादिकगुणभी उनकेशरीरमेंयथावत्भएथे फिरउनसेब्राह्मणोंनेकहाकि तुमलोगहमारीआज्ञाकरो तबउन सबोंनेकहाकि जोआपकीआज्ञाहोगी सोईहमकरेंगे तबउननें उनसेकहाकि हमनेतुम्हारेऊपरपरीश्रमकियाहै सोकेवलजगत् केउपकारकेहेतुकियाहै सोआपलोगदेखोकि आर्यावर्त्तमेंगदर मचरहाहै सोमुसल्मान्लोग इसदेशमेंआकेबड़ीदुर्दशा करतेंहैं औरधनादिकलूटकेलेजातेहैं सोइसदेशकीनित्यदुर्दशाहोतीजा- तीहै सोआपलोगयथावत्राजधर्मसेपालनकरो औरदुष्टोंको य- थावत्दण्डदेओ परन्तु एकउपदेशसदाहृदयमें रखना किजबतक वीर्यकीरक्षा औरजितेन्द्रिय रहोगे तबतकतुमारा सबकार्यसिद्ध होताजायगा औरहमनेंतुम्हाराविवाहअबजोकरायाहै सोकेवल परस्परक्षाकेहेतुकियाहै कितुमऔरतुमारीस्त्रियां संग२रहोगे तोबिगड़ोगेनहीं औरकेवलसन्तानोत्पत्तिमात्रविवाहकाप्रयोजन

जानना औरमनसेभीपरपुरुष वापरस्त्रीकाचिन्तनभीनहींकरना औरविद्यातथापरमेश्वरकीउपासना औरसत्यधर्ममें सदास्थित रहना जबतकतुमाराराज्यनजमैं तबतकस्त्रीपुरुषदोनोंब्रह्मचर्याश्रममेंरहो क्योंकिजोक्रीड़ासक्तहोगे तोबलादिकतुम्हारेशरीरसे न्यूनहोजायगे तोयुद्धादिकोंमेंउत्साहभीन्यूनहोजायगा औरहम भीएक२केसाथएक२रहेंगे सोहमऔरआपलोगचलैं औरचलके यथावत्राज्यकाप्रबन्धकरैं फिरवेवहांसेचले वेचारइननामोंसे प्रख्यातथे चौहानपवांरसोलंकीइत्यादिकउनने दिल्लीआदिकमें राज्यकियाथाकुछ२प्रबन्धभीभयाथाजबराज्यकरनेलगे कुछकाल केपीछेसहाबुद्दीन गोरीएकमुसल्मानथा सोभीउसीप्रकारइसदेश मेंआयाथा कनोजआदिकमें उससमयकनोजका बड़ाभारीराज था सोइसकेभयकेमारे अपनेहींजाके उनकोमिला औरयुद्धकुछ भीनहींकिया फिरअन्यचवहयुद्ध जहांतहांकिया सोउसकाविजय भया औरआर्यावर्तवालोंका पराजयभया फिरदिल्लीवालोंसेकोई वक्तउसकायुद्धभया उसयुद्धमें पृथिराजमारागया औरउसनेंअपनासेनाध्यक्षदिल्लीमेंरखाकेहेतुरखदिया उसकानामकुतुबुद्दीनथा वहजबवहांरहा तबकुछदिनकेपीछेउनराजाओंको निकालके आपराजाभयाउसदिनसे मुसल्मानलोग यहांराज्यकरनेलगे और सबनेकुछ२जुलुमकिया परन्तुउनकेबीचमेंसे अकबरबादशाहअच्छाभया औरन्यायभी संसारमेंहोनेलगा सोअपनीबहादुरीसे औरबुद्धिसेसबगदरमिटादिया उससमयराजाऔरप्रजा सबसुखी थेपरन्तुआर्यावर्त्तकेराजा औरधनाढ्यलोगविक्रमादित्यकेपीछेसवविषयसुखमेंफसरहेथें उससे उनकेशरीरमें बल,बुद्धि,पराक्रम औरशूरवीरताप्रायःनष्टहोगईथीं क्योंकिसदास्त्रियोंकासंग गाना बजाना,नृत्यदेखना,सोना अच्छे कपड़े औरआभूषण कोधारण करना नानाप्रकारकेअतर औरअञ्जननेत्रमेंलगाना इससे उनके शरीरबड़ेकोमलहोगएथे किथोड़ेसेताप वा शीत अथवावायुका

सहननहीहोसक्ताथा फिरवेयुद्धक्याकरसकेंगे क्योंकिजोनित्यस्त्रि-योंकासंगकरेंगे औरविषयभोगउनकाभीशरीरप्रायःस्त्रियोंकीनांईहोजाताहै वेकभीयुद्धनहींकरसक्ते क्योंकिजिनकेशरीरदृढ़रोगरहित बल,बुद्धिऔरपराक्रम तथावीर्यकीरक्षा औरविषयभोगमेंनहीफसना नानाप्रकारकीविद्याकापढ़ना इत्यादिककेहोनेसेसबकार्यसिद्धहोसक्तेहैं अन्यथानहीं फिरदिल्लीमें औरंगजेबएकबादशाहभयाथा उननेमथुरा,काशी,अयोध्याऔरअन्यस्थानमेंभीजा२के मन्दिरऔरमूर्त्तियोंको तोड़डाला औरजहां२बड़े२मन्दिरथे उस२स्थानपरअपनी मस्जिद्बनादिया जबवहकाशीमेंमन्दिरतोड़नेकोआया तबबिश्वनाथकुएमेंगिरपडे औरमाधवएकब्राह्मणकेघरमेंभागगए ऐसाबहुतमनुष्यकहतेहैं परन्तुहमकोयहबातझूठमालूमपड़तीहै क्योंकिवहपाषाणवाधातुजड़पदार्थकैसेभागसक्ताहै कभीनहीं सोऐसाभयाकि जबऔरंगजेबआयातबपुजारियोंनेभयसेमूर्त्ति उठाकेऔरकूएमेंडालदिया औरमाधवकीमूर्त्ति उठाकेदूसरेकेघरमेंछिपादिया किवहनतोडसके सोआजतकउसकूंएकाबड़ादुर्गन्धजलउसकोपोतेहैं औरउसीब्राह्मणकेघरमे माधवकीमूर्त्तिकोआजतकपूजाकरतेहैं देखनाचाहिएकिपहिलेतोसोना,चांदीकीमूर्त्तियांबनातेथें तथाहीराऔरमाणिक को आंख बनाते थे सो मुसल्मानों के भय से और दरिद्रतासे पाषाण,मिट्टी,पीतल,लोहा, और काष्ठादिकोंकी मूर्त्तियांबनातेहैं सोअबतकभीइनसत्यानाशकरनेवाले कर्मकोनहींछोड़देते क्योंकिछोड़ेंतो तबजोइनकीअच्छीदशाआवै इनकीतोइनकर्मोंसेदुर्दशाहीहोनेवालीहै जबतककीइनकोनहींछोड़ते औरमहाभारतयुद्धकेपहिलेआर्यावर्त्त देशमेंअच्छे२राजाहोतेथें उनकीविद्या,बुद्धि,बल,पराक्रम तथाधर्मनिष्ठा औरशूरवीरादिकगुणअच्छे२थ इससेउनकाराज्य यथावत्होताथा सोइक्ष्वाकु,सगर,रघु,दिलीपआदिकचक्रवर्त्तीहुएथे औरकिसीप्रकारकापाखण्ड

उनमेंनहींथा सदाविद्याकीउन्नति औरअच्छे२कर्मआपकरतेथे तथाप्रजासेकरातेथे औरकभीउनका पराजयनहींहोताथा तथा अधर्मसेकभीनहींयुद्धकर्तेथेऔरयुद्धमेंनिवृत्तनहींहोतेथे उससमय सेलेकेजैनराज्यकेपहिलेतकइसीदेशके राजाहोतेथे अन्यदेशकेन-हीं सोजैनीने औरमुसल्मानोंने इसदेशको बहुत बिगाड़ाहै सो आजतकबिगड़ताहीजाताहै सोआजकालअंगरेजकेराज्यहोनेसे उनराजाओंकेराज्यसेसुखभयाहै क्योंकिअंगरेजलोगमतमतान्तरकीबातमें हाथनहींडालते औरजोपुस्तक अच्छापातेहैं उसको अच्छी प्रकाररक्षाकर्तेहैं औरजिसपुस्तकके सौरुपैएलगतेथे उस पुस्तककाछापाहोनेसेपांचरुपैयोंपरमिलताहै परन्तुअङ्गरेजोंमें भीएककामअच्छानहींहुआ जोकिचित्रकूटपर्वतमहाराजअमृतरायजीकापुस्तकालयकोजलादियाउसमें करोड़हांरुपैएके लाखहांअच्छे२पुस्तकनष्टकरदिए जोआर्यावर्त्तवासीलोग इससमय सुधरजांयतोसुधरसक्ते हैं औरजोपाखण्डहीमेंरहेंगे तोअधिक२ हीनाशहोगा इनकाइसमेंकुछसन्देहनहीं क्योंकिबड़े२आर्यावर्त देशकेराजाऔरधनाढ्यलोगब्रह्मचर्याश्रमविद्याका प्रचारधर्मसेसब व्यवहारोंकाकरना औरवेश्यातथापरस्त्रीगमनादिकोंकात्यागकरैं तोदेशकेसुखकीउन्नतिहोसक्तीहै परन्तुजबतकपाषाणादिकमूर्त्तिपूजन बैरागी,पुरोहित,भट्टाचार्यऔरकथाकहनेवालोंकेजालों सेछूटें तबउनकाअच्छाहोसक्ताहै अन्यथानहीं प्रश्न मूर्त्ति पूजनादिक सनातनसेचलेआएहैं उनकाखण्डनक्योंकर्तेहो उत्तर यह मूर्त्ति पूजनसनातनसेनहीं किन्तुजैनोंकेराज्यहीसेआर्यावर्त्त में चलाहै जैनोंनेपरशनाथ,महावीर,जैनेन्द्र,ऋषभदेव,गोतम०कपिलआदिकमूर्त्तियोंकेनामरक्खेथे उनकेबहुत२चेलेभयेथे औरउनमें उनकीअत्यन्तप्रीतिभीथी इससे उनचेलोंनेअपनेगुरुओंकी मूर्त्ति बनाकेपूजनेलगे मन्दिरबनाके फिरजबउनको शंकराचार्य नेपराजयकरदिया इसकेपीछेउक्तप्रकारसेब्राह्मणोंनेमूर्त्तियांरची

औरउनकानाम महादेवआदिकरखदिए उनमूर्त्तियोंसेकुछबि-लक्षणबनानेलगे औरपुजारीलोगजैन तथामुसल्मानोंकेमन्दिरों कीनिन्दाकरनेलगे । नवदेद्यावनीभाषांप्राणै:कण्ठगतैरपि । हस्तिनाताड्यमानोपि नगच्छे ज्जैनमन्दिरम् ॥१॥ इत्यादिकश्लोक बनाएहैं किमुसल्मानोंकीभाषाबोलनीऔरसुननीभीनहीचाहिए औरमत्तहस्ती अर्थात्पागलपीछेमारनेकोदौड़े सोजैनकेमन्दिर मेंजानेसेबचसक्ताभीहोय तोभीजैनकेमन्दिरमेंनजाय किन्तुहाथी केसन्मुखमरजाना उस्से अच्छाऐसे और निन्दाकेश्लोकबनाएहैं सो पुजारीपण्डितऔरसम्प्रदायीलोगोंनेचाहाकि इनकेखण्डनकेबिना हमारीआजीविकानबनेगी यहकेवलउनकामिथ्याचारहै कि मुसल्मानकीभाषापढ़नेमें अथवाकोईदेशकीभाषापढ़नेमें कुछदोषनहीहोता किन्तुकुछगुणहीहोताहै । अपशब्दज्ञानपूर्वकेशब्दज्ञानेधर्म: । यहव्याकरण महाभाष्यकावचनहै इसकायहअभिप्रायहै किअपशब्दज्ञानअवश्यकरनाचाहिए अर्थात्सबदेशदेशान्तरकीभाषाकोपढ़नाचाहिए क्योंकिउनकेपढ़नेसेबहुतव्यवहारों काउपकारहोताहै औरसंस्कृतशब्दकेज्ञानकाभीउनकोयथावत् बोधहोताहै जितनेदेशोंकीभाषाजानैं उतनाहीपुरुषकोअधिक ज्ञानहोताहै क्योंकिसंस्कृतकेशब्द बिगड़केदेशभाषा सबहोतीहै इस्से इन के ज्ञानोंसे परस्परसंस्कृतऔरभाषाकेज्ञानमें उपकारही होताहै इसीहेतुमहाभाष्यमेंलिखाकिअपशब्दज्ञानपूर्वकशब्दज्ञानमें धर्महोताहै अन्यथानहीं क्योंकिजिसपदार्थका संस्कृतशब्द जानेगा औरउसके भाषा शब्दकोनजानेगा तोउसके यथावत्पदार्थकाबोध औरव्यवहारभी नहींचलसकेगा तथामहाभारतमें लिखाहै कियुधिष्ठिरऔरबिदुरादिकअरबीआदिक देशभाषाको जानतेथे सोईजबयुधिष्ठिरादिकलाक्षागृहकीओरचले तबबिदुर जीनेयुधिष्ठिरजीकोअरबीभाषामेंसमझायाऔरयुधिष्ठिरजीने अरबीभाषासेप्रत्युत्तरदिया यथावत्उसकोसमझलिया तथाराजसू-

य और अश्वमेधयज्ञमें देशदेशान्तर तथाद्वीप द्वीपान्तरके राजा और प्रजासबआएथें उनकापरस्पर देशभाषाओंमें व्यवहारहोता था तथाद्वीपद्वीपान्तरमेंयहांके लोगजातेथे औरवेइस देशमें आतेथे फिरजोदेशदेशान्तर कीभाषा नजानते तोउनका व्यवहार सिद्धकैसेहोता इससे क्याआयाकि देशदेशान्तरकी भाषाकेपढ़नें औरजाननेमें कुछदोषनहीं किन्तुबड़ाउपकारहीहोताहै और जितनेपाषाणमूर्त्तिके मन्दिरहैंवेसबजैनोंहीकेहैं सोकिसीमन्दिर मेंकिसीकोजानाउचितनहीं क्योंकिसबमेंएकहीलीलाहै जैसीजैन मन्दिरोंमें पाषाणादिकमूर्त्तियांहै वैसीआर्य्यावर्त्त वासिओंकम-न्दिरोंमें भी जड़मूर्त्तियां हैं कुछनाम विलक्षण२ इन लोगों ने रखलिएहैं औरकुछ विशेषनहीं केवल पक्षपातहीसे ऐसाकहते हैं किजैनमन्दिरोंमें नजाना औरअपनें मन्दिरोंमेंजाना यहसब लोगोंने अपना२मतलब सिंधुबनालियाहै आजीविकाकेहेतु प्रश्न वेदशास्त्रमेंमूर्त्ति पूजनलिखाहै औरवेदमन्त्रोंसे प्राणप्रतिष्ठाहो-तीहै उसमेंदेवकोशक्तिभीआजातीहै फिरआपखण्डन क्योंकतेहैं उत्तर वेदशास्त्रमेंमूर्त्ति पूजनकहीं नहीलिखा औरनप्राणप्रतिष्ठा औरनकुछ उसमेंशक्तिआतीहै प्रश्न सहस्रशीर्षापुरुषः उद्बुध्यस्वा-ग्ने प्राणदाअपानदा ॥ इत्यादिकमन्त्रोंसे षोड़शोपचारपूजाऔर प्राणप्रतिष्ठाभी होतीहै तथाप्रतिष्ठा मयूखग्रन्थऔर तंत्रग्रन्थोंमें आत्मेहागच्छतुसुखंचिरन्तिष्ठतुस्वाहा, ॥ प्राणाइहागच्छन्तु सु-खंचिरन्तिष्ठन्तुस्वाहा ॥ इन्द्रियाणिइहागच्छन्तु सुखंचिरन्तिष्ठ-न्तुस्वाहा ॥अन्तःकरणमिहागच्छतुसुखंचिरन्तिष्ठन्तुस्वाहा॥ इ-त्यादिकलिखेहैं फिरकैसे खण्डनहोसक्ताहै उत्तर इनमन्त्रोंकेअ-र्थनहीजाननेसेआपलोगोंकोभ्रमहोताहै क्योंकिपुरुषनामपूर्णई-श्वरकाहै सहस्रशीर्षाइत्यादिक पुरुषकेविशेषणहैं सोपुरुषकेनिरा कारहोनेसे शिरादिकअवयव कभीनहींहोसक्ते औरजो साकार बनता तोव्यापकनहीबनसक्ता। तथाहिपूर्णत्वात्पुरुषः । इत्यादि-

कनिरुक्तमेंअर्थकियाहै सोउसकासहस्रशीर्षा इत्यादिकविशेषणहैं उसकाअर्थइसप्रकारकाहोताहै।सहस्राणिशिरांसिसहस्राण्यक्षी-णितथा सहस्राणिपादाः असंख्याताःयस्मिन्पूर्णोपुरुषेसः सहस्रशी-र्षासहस्राक्षः सहस्रपात्पुरुषः ॥ जितनेशिर,जितनीआंख, और जितनेपग, असंख्यात वेसबपूर्णजो परमेश्वरउसीमें वासकरते हैं क्योंकिसबजगत् काअधिकरण परमेश्वरहीहै और बहुव्रीहि समासहो अन्यपदार्थकेहोनेसेहोताहै तथासहस्रपात्शब्दकेहोने से बहुव्रीहिनिश्चितहोताहै व्याकरणकीरीतिसे सोईअर्थ मन्त्रके उत्तरार्द्ध मेंस्पष्टहै । सभूमिꣳ सर्वतःस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् । पुरुषएवेदꣳसर्वं वेदाहमेतम्पुरुषम् ॥ इत्यादिकउत्तरमन्त्रोंमेंय-हीअर्थनिश्चितहोताहै औरसबजगतकीउत्पत्तिभीपुरुषसेलिखीहै विनापरमेश्वरके किसीमेंनहीघटसक्ती इस्से जोकोईकहेकिइनम-न्त्रोंसे षोड़शोपचारपूजाहोतीहै उसकीबातमिथ्याजाननी और प्राणप्रतिष्ठा शब्दकायहअर्थहै किप्राणकीस्थिति औरस्थापन का होना जोमूर्त्तिमें प्राणआते तोमूर्त्तिचेतनहोहोजाती सोजैसी पहिलेजड़थी वैसीहीसदारहतीहै क्योंकिचलना,फिरना,खाना, पीना,बैठना,देखनाऔरसुनना इत्यादिकव्यवहारवहमूर्त्ति नही करती इस्से जोकोईकहेकिप्राणप्रतिष्ठाहोतीहै यहबातउसकीमि-थ्याजाननी औरमूर्त्ति ठसहोतीहै उसमेंप्राणके जानेआनेकाछि-द्रअवकाशहीनहीं फिरप्राणउसमेंकैसेघुससकेगा औरजोकहेंकि हमप्राणप्रतिष्ठाकर्तेहैं उनसेकहनाचाहिए किआपलोगमुरदेके शरीरमेंक्योंनहीप्राणप्रतिष्ठाकर्तेहैं किसोराजा,बाबू औरसबज-गत्के मनुष्योंकोमुरदेमें प्राणप्रतिष्ठाकरके जिलादियाकरो तो तुमलोगोंकोबहुतधनमिलेगा औरबड़ीप्रतिष्ठाहोगी फिरक्योंन-हीं ऐसीबातकर्तेहो जोवेकहेंकिजैसापरमेश्वरनेनियमकरदिया है वैसाहीमरनेजीनेकाहोताहै उसकोमरेपीछे कोईनहींजिला सक्ता तोउनसे हमलोगपूछतेहैं किजिनपदार्थोंको परमेश्वरने

प्राणऔरचेतनतारहितजड़बनाएहैं उनकोंतुमचेतन औरप्राण सहितकैसेबनासकोगे कभीनहीं औरजोकहैंकिदेवऔरसिद्धपुरुषमन्त्रतककोजिलादेतेहैं उनसेपूछाजाताहै किवेदेवऔरसिद्ध क्यों मरजातेहैं इससे प्राणप्रतिष्ठाकीसबबातझूठीहै प्राणदाअपानदा इनकाअर्थपूर्वाद्ध मेंकरदियाहै वहींदेखलेना औरउद्बुध्यस्वाग्ने। इसकाभीअभिप्रायवहींदेखलेना। आत्मेहागच्छतुचिरंसुखंतिष्ठतुस्वाहा। इत्यादिसंस्कृतमिथ्याही लोगोंनेरचलिया कोई सत्य शास्त्रमें नहींहैं देखनाचाहिए कि । शन्नोदेवीरभिष्टयआपोभवन्तुपीतए शंयोरभिस्रवन्तुनः १॥ अग्निर्मूर्द्धा०उद्बुध्यस्वाग्ने० इत्यादिकमन्त्रोंमेंकहींशनैश्चर,मङ्गल औरबुधादिकग्रहोंकानाम भीनहींहै परन्तुविद्याहीनहोनेसे आजीविकाकेलोभसे ब्राह्मणों नेजालरचरक्खाहैकिएग्रहकोकांडीहैं सोकिसीनेऐसाविचाराकि ग्रहोंकामन्त्रपृथक्निकालनाचाहिए सोमन्त्रोंकाअर्थतोनहींजानता किन्तुअटकलसेउसनेयुक्तिरची किशनैश्चरशब्दके आदिमें तालव्य शकार है । और शन्नोदेवी इस मन्त्र के आदि में भी तालव्यशकार है इससे यहीशनैश्चरकामन्त्रहै तथापृथिव्याअयम्। इससे परमेश्वरकाग्रहणहोताहै इसशब्दसेमङ्गलकोलिया औरउद्बुध्यस्वक्रियासेबुधकोलिया देखनाचाहिए किशंहै सुखकानाम उद्बुध्यस्वबुधअवगमनेधातुकीक्रियाहै इससे बुधकोलियाइत्यादिक भ्रमसेग्रहोंकोग्रहणकियाहै सोयहकथा:कंवललालबुझक्कड़कीनांई है जैसेकिकिसीगांवमें एकमूर्ख पुरुषरहताथा उसकानामलाल बुझक्कड़था कभीकिसीराजाकाहाथी उसगांवकेपास सेचलागया था औरकिसीनेदेखानहींथा फिरजबप्रातःकाल लोगउठके बाहरचले तबखेतऔरमार्गमें हाथीकेपगकेचिन्हदेखके बड़े आश्चर्यभए औरलालबुझक्कड़को बुलाकेपूछा किएहक्याहै तबवहबड़ा रोनेलगाफिररोकेहसा तबसबनेउससे पूंछाकितुमरोके क्योंहसेतब उसनेउनसेंकहा किजबमैंमरजाऊंगा तबऐसीऽबातोंकाउत्तर

कौनदेगा इसहेतुमैंरोया औरहसाइसहेतु किइसकाउत्तरबड़ा सुगमहै तोभीतुमनेनहींजाना इसहेतुमैंहसा तबउन्नेपूछा कि इसकातोउत्तरदे तबवहबोलाकि लालबुझक्कड़बुझिया औरनबूझाकोइ। पगमेंचक्कीबांधके हिरणाकूदाहोइ॥ हिरनाअपनेपग में चक्कीकेपाट बांधके कूदतार चलागयाहै उसकेपगके एचिन्ह हैं तबतोवेसुनके बड़ेप्रसन्नभए औरसबने कहाकि लालबुझक्कड़ बड़ेपण्डितऔरबुद्धिमान्हैं वैसेहीपाषाणमूर्त्तिकेपूजनविषय औरवेदमन्त्रोंकेविषयमें इनपण्डितलोगोंने मिथ्याकोलाहल कररक्खाहै इस्से वेदकोनिन्दा औरअप्रतिष्ठाकररक्खीहै वेदोमेंऐसोर झूठबातहोती तोवेदहीसच्चेनहोसक्ते इस्से यहोनिश्चयकरना किअपनेरमतलबकेहेतु मिथ्यार कल्पना लोगोंनेकरदियाहै और वेदमें सच्चबातहोहै इनबातोंका लेशभीनहींहै प्रश्न वेदअनन्तहैं क्योंकि यजुर्वेदकीशाखा १०१ सामवेदकी १००० ऋग्वेदकी २१ औरअथर्ववेदकी ६ शाखाहैं सोबहुतशाखा गुप्तहोगईहैं उनमें पाषाणपूजनादिकलिखाहोगा तुमक्याजानतेहो। अनन्ता वै वेदा: यहब्राह्मणकीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहै किवेदअनन्तहैं अर्थात्अनन्तशाखाहैं उत्तर शाखाजोहोतीहै सोस्वजातीय होतीहैं क्योंकिजिसवृक्षकीशाखाहोतीहै उसवृक्षकेतुल्यपत्र,पुष्प,फल,मूलऔरस्वाद तथारूपऐसोही जोरशाखाप्रसिद्धहैं उनरशाखाओंकीलुप्तशाखाभीअवश्यहोगीं किजैसाइनमें सत्यर अर्थप्रतिपादितहैं वैसाउनमें भीहोगा इस्से जाना जाताहै किइनप्रसिद्ध शाखाओंमें मूर्त्तिपूजनकालेशनहींहै तोलुप्तशाखाओंमेंभीनहीं होगा ऐसाजोकोईकहै किआपनेक्या वेशाखादेखीहैं फिरआप लोगक्योंकहतेहो किउनलुप्तसाखाओंमें लिखाहोगा औरआप लोगअनुमानभीनहींकरसक्ते क्योंकिइनशाखाओंमेंथोड़ासाभी प्रतिपादनहोता तोउनशाखाओंमेंभी अनुमानहोसक्ता अन्यथा नहीं औरजोहठसेमिथ्याकल्पनाकतेहो तोहमभीकरसक्ते हैं कि

उनशाखाओंमेंचोरी, मिथ्याभाषण, विश्वासघातक, कन्या, माता, भगिनी, इनसेसमागमकरना वेश्यागमनपरस्त्रीगमनकरना और वर्णाश्रमव्यवस्थानहोगीइत्यादिकअनुमानमिथ्याकरसक्ते हैं और फिरतुमनेभी वेशाखादेखीनहीं वाकोईनहींदेखसक्ता फिरकैसे निश्चयहोगा कभीनहोगा क्योंकिकभीभ्रमकी निवृत्तिनहोगी न जानेउनशाखाओंमेंब्राह्मणकानामचांडालहोय औरचाण्डालका नामब्राह्मणहोय इस्सेऐसाआपलोग मिथ्याअनुमाननकरैं और इनशाखाओंकामूलभीतोकोईहोगाऔरजोमूलनहोगा तोशाखा कैसी इस्से जोवेद पुस्तकहैं वेईसब शाखाओंकेमूलहैं औरशाखा व्याख्यानोंकीनांई ब्रह्मादिकऋषिमुनिकेकिए हैं। जैसे, मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य:। ऐसापाठशुक्ल यजुर्वेदमें हैं और तैत्तिरीय शाखामें। मनोज्योतिर्जुषतामाज्यस्य। ऐसापाठहै। जूतिजोमनकाविशेषणथासोज्योति:। शब्दसेस्पष्टार्थहोगया सोसर्वत्रविशेषणकायथायोग्यभेदहै जोविशेष्यका भेदहोगा तोपरस्परविरोध केहोनेसे मिथ्यात्वआजायगा इस्से विशेष्यकाभेद कभीनहींहोता विशेष्यभेदसे पूर्वापरविरोधहोजायगा फिरकिसकोसत्यमानैं किसकोमिथ्या इस्से वेदोंमें ऐसादोषकहींनहीं इस्से ऐसाभ्रमकभी नहीकरनाचाहिए औरजोवेदअनन्तहोंगे तोकोईपुरुषसबकोपढ़ना वादेखभीनसकैगा औरपूर्णविद्वानभीकोईनहोसकैगा फिर भीभ्रमहीरहैगा भ्रमकेरहनेसे किसीपदार्थका दृढ़निश्चयनहोगा औरउत्साह भङ्गभीहोजायगा किवेदकाअन्ततोनहींहै हमलोग कैसेपढ़सकेंगे इस्से सबलोगोंको भ्रमहोबनारहैगा इस्से वेदशब्द कायहअर्थहै जिस्सेजानाजायपदार्थ उसकानामवेदहै और वेत्तिसोयवेद:। जोजाननेवालाहै उसकानामभीवेदहै सोअनन्तनाम असंख्यातजीवहैं वेहीजाननेवालेंकेहोनेसे उनकानामवेदहै और विदन्तिपैस्ते वेदा:। जिनसेपदार्थजानाजाय उनकानामवेदहै। सोसर्वशक्तिमत्वऔरसबजगत्का रचनादिकपरमेश्वरके अनन्त

गुणहै वेपरमेश्वरके जनानेवालेहैं इस्से उनका नामवेदहै इस्से अनन्तावैवेदाः। ऐसाब्राह्मणश्च, तिमेंअभिप्रायज्ञापनकियाहै प्रश्न पाषाणादिक मूर्त्ति पूजन वेदादिकोंमेंनहींहैं फिरकैसेयहपरंपरा चलीआई औरइतनी बडीप्रवृत्तिभई आजतक किसीने नहीं खण्डनकिया जैसेकिआपखण्डनकर्तेहैं उत्तर आपलोगसर्वज्ञनहींहै वाचिकालदर्शीजोकि परम्पराकाठोकठनिश्चयकरैं देखना चाहिए किसत्यनारायणशीघ्रबोध,कौमुद्यादिकनएनएस्तोत्र नवीननतीर्थ तथामन्दिरआदिकहोतेहोजातेहैं औरइनकोपरंपरा मानलेतेहैं औरवेअबकेबनेहैं सबऔरअपनापिता जैसाकर्मकरताहै वैसाहीउसकापुत्र परंपरामानलेताहै फिरकोईचौर्यादिक अन्यायमेंप्रवृत्तहोजाताहै औरकोईकुछअन्यायमेडरताभीहैसोउ ककोपरंपराआपलोगमानेगें तोबहुतदोषआजांयगे औरकभीनहीसकेगी क्योंकिकिसीकापितादरिद्रहोवै औरउसकेकुलमेंपुत्रादिकधनाढ्यहोतेहैं फिरपरंपरासेजोदरिद्रता उसकोक्योंछोड़ते हैं किसीकापिताअन्धाहोय उसकापुत्रआंखको क्योंनहीनिकाल डालताहै औरजिसकापितामूर्खहोताहै वापण्डितउसकापुत्रमूर्खवापण्डितनियमसेक्योंनहीहोता किसीकापिताचोरीकर्ताहोय औरजहलखानेंकोजाय उसकापुत्रचोरीवाजहलखानेंको क्योंनहींजाय जिसदिनउसकापितामरे उसीदिनअपनेभीक्योंनहीमर जाय प्रथमअंगरेजीइसदेशमें पढ़ाईनहींजातीथी अबक्यों पढ़ी जातीहै रेलपरपहिलेचढ़नानहीहोताथा औरतारपर खबरनहीआतीजातीथी फिररेलपरचढ़ते औरतारपरखबर भेजतेभेजतेक्योंहैं इत्यादिकबहुतदोषआतेहैं ऐसामाननेमें औरपरंपरा कानिश्चयतो प्रत्यक्षादिकप्रमाण औरवेदसत्यशास्त्रोंहीसे होताहै अन्यथाकभीनहीं यहपाषाणादिकपूजनकी मिथ्याप्रवृत्तिबड़ीभई है सोकेवलविद्या,धर्म.बिचार,ब्रह्मचर्याश्रम,सत्सङ्ग औरश्रेष्ठराजाओंकेनहींहोनेसेभईहै क्योंकिसत्यविद्या जबमनुष्योंमेंनहोहो-

ती तबअनेकभ्रमोंमेबुद्धिनष्टहोतीहै तबबहुतमूर्ख, अधर्मी,पाख-
ण्डो तथामतवालोंके उपदेशलोकमाननेलगतेहैं फिरबड़े भ्रम
जालमेंपड़के वे धूर्त्त जैसाउपदेशकरतेहैं वैसाहीमानलेतेहैं और
लोगोंकोबुद्धि विपरीतहोजातीहै फिरबड़ाअन्धकारहोजाताहै ।
उनकोबुद्धिसेकुछनहींसूझता गतानुगतिकालोका नलोकाःपार-
मार्थिकाः। बालुकापिण्डदानेन गतंमेताम्रभाजनम् ॥ इसमेंयह
दृष्टान्तहैकिएककोईपण्डितताम्बेकाअर्घालेकेतर्पणऔरस्नानके
हेतुगया उसघाटमेंअन्यपुरुषभीबहुतजातेऔरआतेथे उसपण्डि-
तकोशौचकीइच्छाभई तबतांबेकाअर्घाबालूमेंगाड़दिया औरउ-
सकेऊपरगोलोबालूकापिण्डधरके निशानकेहेतुशौचकोफिरच-
लागया अन्यस्नान करनेवालोंने यहचरित्रदेखा देखकेपण्डित
सेतोकिसीनेनहींपूछा किन्तुजैसापण्डितने पिण्डबनाकेरक्खाथा
वैसापिण्डसैकड़ों आदमीनेबनाके रखदिया उसकेपास२ उनके
हृदयमें ऐसाविचारआयाकि पण्डितनेजोयहकामकियाहै सोपु-
ण्यकेवास्तेहीकियाहोगाइसहेतुहमभीऐसाहीकरें तबतकपण्डि-
तभी शौचहोकेआया औरउननेदेखाकि बहुतपिण्ड वैसेधरेहैं
औरबहुतमनुष्यपिण्डबना२केरखतेभीजातेथे सोपण्डितनेउनसे
पूछाकि आपयहकामक्योंकरतेहैं तबउननेपण्डितसेकहा किआप
कादेखकेहमलोगभीकरतेहैं तबपण्डितनेपूछाकिइसकेकरनेकाक्या
प्रयोजनहै तबउननेकहाकि जोआपकाप्रयोजनहोगा सोहमारा
भीहै पण्डितनेविचाराकिमेरातोपात्रहीनष्टहोगया तबपण्डितने
कहाकिअपना२पिण्डसबबिगारडारो नहींतोतुमकोबड़ापापहो-
गा तबउननेपण्डितसेकहा किआपकोभीपिण्ड बनानेसेपापभया
होगा तबपण्डितनेकहाकि तुमअपना२पिण्डबिगाड़डारो तबमैं
भीअपनाबिगाड़डालूंगा तबतोसबअपने२ पिण्डतोड़डाले तबप-
ण्डितकापिण्डरहगया पण्डितनेजाकेपिण्डतोड़ा औरनीचेसेअ-
र्घानिकाललिया औरउनसेकहा किमैंनेइसहेतु निशानधराथा

तुमनेपूछाभीनहीं औरपिण्डधरनेलगगए तबउननेकहाकि आप काकामदेखकें हमभीकरनेलगे वैसेहीपाषाणादिक मूर्त्तिपूजन एककादेखकेदूसरेभीकरनेलगें ऐसेभेड़ोंकेप्रवाहकीनांई लोगगतानुगतिकहोतेहैं जैसेएकभेंड़आगेंचले उसकेपीछे सबभेंड़चलने लगतीहैं और जैसेएकसियार वाएककुत्ताबोलनेवाभूकनेलगें उसकाशब्दसुनकेअन्यसियार वाकुत्ते बहुतबोलने वाभूकनेलगतेहैं वैसीहीविद्याहोन मनुष्योंकीअन्धपरम्पराचलतीहै उसमेंबड़े२ आग्रहकरके नष्टहोतेचलेजातेहैं औरपरमार्थबिचारसत्य२कोई नहोकर्ता इससे हमलोगभी मिथ्याव्यवहारकाखण्डनकर्तेहैं पक्षपातछोड़के क्योंकिप्रत्यक्षादिप्रमाणोंसे औरवेदादिकसत्यशास्त्रों सेदृढ़निश्चयकरकेजानागयाहै किमुक्तिकेहेतु वासबव्यवहारसुखके हेतुपरमेश्वरहीकीदृढ़उपासनाकरनीयोग्यहै पाषाणादिकजड़मूर्त्तियोंकीकभीनहीं प्रश्न आजतकबहुतपण्डितपहिलेंभए औरबहुतपण्डितभीहैं फिरखण्डननहीकोईकरता औरमूर्त्तियोंकापूजननहींकर्तेहैं सोआपएकबड़े पण्डितआए जोखण्डनकर्तेहैं सो आपकाकहनाकौनमानताहै उत्तर प्रथममैंआपसेपूछताहूं कि पण्डितकौनहोताहैजोआपकहैं किपञ्चाङ्ग,शीघ्रबोध,मुहूर्त्त चिन्तामणि, आदिक सारस्वतचन्द्रिका, कौमुद्यादिक, तर्कसंग्रह, मुक्तावल्यादिक,भागवतादिक,पुराणमन्त्र,महीदध्यादिक,तंत्रग्रंथ औरतुलसीकृत रामायणादिक भाषापढ़नेसे क्यापण्डितहोताहै किन्तु,अबिवेकीहोवनजाताहै क्योंकि सदसद्विवेककर्त्रीबुद्धि:पण्डा पण्डासंजाताअस्ये तिसपण्डित: ॥ जोबुद्धिसदसद्विवेककरनेवाली होय उसकानामपण्डाहै औरवहीपण्डानामबिवेकयुक्त बुद्धिजिसकीहोय वहीपण्डितहोताहै सोआपलोगबिचारकेदेखैं कियावत्‌धर्मऔरअधर्म तथासत्यऔरअसत्यकाबिवेकदूनपण्डितोंको हुवानहीं जिनकोआपपण्डितकहतेहो औरजोमूर्खहैं वेतोआजतलकोई२अधर्मसेडरतेभीहैं किन्तु,पण्डितलोगप्राय:नहींडरते

किन्तु कोईपण्डितसैकड़ोंमेंएकअच्छाभीहै परन्तुउसएककीवेधूर्त
लोगबातहीचलनेनहींदेते औरबहरूसजानताभीहै तोमनहींमें
सत्यबातरखताहै क्योंकिवहसत्यकहै तोसबमिलके उसकोदुर्दशा
करदेतेहैं इसभयकामारावहभीमौनकरलेताहै परन्तु उनसत्यप-
ण्डितोंकोमौनवाभयकरनाउचितनहीं क्योंकिमौनऔरभयकेर-
हनेसे देशकाअकल्याण धर्मकानाश औरअधर्मकीवृद्धि, औरइन
धूर्त्तोंकोबनपड़ेगो इससे कभीमौनवाभय सत्यकरनेवाकहनेमेंन-
हीकरनाचाहिए क्योंकिजोअच्छेपण्डितऔरबुद्धिमान् भयवामौ-
नकरेंगें तोउसदेशकानाशहोहीजायगा औरवेदविद्यादिकनहीं
पढ़नेसे बहुतोंकोसत्य२निश्चयभीनहींहै इससे वेखण्डननहींकर्तेहैं
लोकके भयकेमारे किहमारीआजीविका नष्टहोजायगी जोहम
खण्डनकरगें तोहमारी निन्दाहोगी औरआजीविकाभी नष्टहो
जायगी इससे ऐसाकहना वा करनानचाहिए जिससे किसंसारमें
विरोधहोजाय परन्तुमैंकहताहूं किभयतोश्रेष्ठपुरुषोंकोएकपरमे-
श्वर औरअधर्मकेआचरणहीसेकरनाचाहिए औरजोमैंखण्डन
कर्ताहूं सोप्रत्यक्षादिकप्रमाण औरवेदादिकसत्यशास्त्रोंहीसेकर्ताहूं
सोआजतककिसीनेवेदोक्तप्रमाणवाठीक२युक्तिनहींदियाक्योंकिप्र-
माणऔरयुक्तितोसत्यबातमेंहोसक्तीहै असत्यमेंकभीनहीं औरइस
मेंप्रमाणवायुक्तिकोईदेभीनहींसकेगा इसमेंकुछसन्देहनहीं प्रश्न
अनेकसंन्यासी,उदासीवैरागीऔरगोसांईआदिकखण्डननहींक-
र्तेहैं औरपूजा कर्तेहैं उत्तर वेभी वैसेही संसारकी निन्दा और
आजीविकासेडरतेंहै इससे वेखण्डननहींकरतें वापूजा नहींछो-
ड़ते । प्रश्न उनकोक्याआजीविकाकाभयहै औरसंसारका जिससे
किवेडरतेहैं क्योंकिउनकोविवाहमरनेमें द्वादशाहकरनाहीनहीं
जिसमेंधनकोचाहनाहो औरमाता,पिता,स्त्री,पुत्रादिक,कुटुम्ब,
और घरकोछोड़के स्वतन्त्रहैं इससे उनको भयनहींहै परन्तु वेभी
खण्डननहींकरते औरपूजाकर्तेहैं फिरआपहीवड़े विरक्तआगए

किइनबातोंका खण्डनकर्तेहैं। उत्तर यहबाततोसत्यहै किउनको सत्यभाषणादिकका छोड़ना और पाषाणादिकमूर्त्तिकापूजनकरना उचितनहीं परन्तुवेभीसैकडोंमें कोईएकधर्मात्मा और पण्डित है अन्यजैसेगृहाश्रममेथें वैसेहीबनेरहतेहैं और कितनेकगृहस्थों सेभीनीचकर्मकरतेहैं क्योंकिउननेकेवलखानेपीने और विषयभोग केहेतुविरक्तका वेषधारणकरलियाहै परन्तु विरक्तता उनमेंकुछ नहीमालूमपड़ती क्योंकिधर्मकीरक्षाऔरमुक्तिकरनेकेहेतु विरक्त नहोहोतेहैं किन्तु अपनेशरीर औरइन्द्रियभोगकेहेतु विरक्तोंकी नांईबनगएहैं कोईधर्मात्माराजाहोय औरइनकोयथावत्परीक्षा करै तोहजारोंमेंएकविरक्तताकेयोग्यनिकलगा बहुतमजूरीऔर हलग्रहणकरनेकेयोग्यनिकलेंगे क्योंकिजबपूर्णविद्या, जितेन्द्रियता, छल, कपटादिकदोषरहितहो वें सत्य२उपदेश तथासबकेऊपर कृपाकरके वैराग्य, ज्ञान, और परमेश्वरकाध्यानकरैं तथाकाम, क्रोध, लोभ, मोहादिकदोषोंकोछोड़ें औरसत्यधर्म, सत्यविद्या, सत्यउपदेशकीसदानिष्ठाहोनेसे विरक्तहोताहै अन्यथानहीं देखना चाहिए किगोकुलस्थगोसांईआदिकजैसेधूर्त्ततासे धनहरणकरके धनाढ्यबनगएहैं बहुतसेचेलें औरचेलियांबनालेतेहैं उनसेसमर्पणकरालेतेहैं कितननामशरीर, धनऔरमनगोसांईजीकेअर्पण करो सोबड़े२मन्दिरउनोनेबनाएहैंऔरनानाप्रकारकीमूर्त्तियां रखलियाहै औरनानाप्रकारके कलाबत्तू, सच्चे झूठेआभूषणोंसे ऐसाजालरचाहै किदेखतेहीमोहितहोके उसमेंफसजातेहैं प्रायःसोलोगउसमन्दिरमें बहुतजातीहैं जितनी व्यभिचारिणी स्त्री औरव्यभिचारीपुरुष बहुधामन्दिरोंमेंजातेहैं क्योंकिवहांपरस्पर स्त्रीपुरुषोंकादर्शनहोताहै औरजिससे जोचाहै उससे समागमबिना परीश्रमसेकरले उसमेंशयनआर्ती औरमङ्गलार्तीबहुधाव्यभिचारकेमूलहैं क्योंकिउससमयप्रायःरात्रीहोरहतीहै इससे आनन्दपूर्वकनिर्भयहोकेक्रीड़ाकरतेहैं परस्परमिलकेऔरउसमें पापभोन-

ही गिनते क्योंकि एक स्लोक बनारक्खा है ।। अहं कृष्णस्त्वं राधा ह्या-
वयोरस्तु संगमः ।। परस्त्री और परपुरुष जब परस्पर गमन करा चाहैं
तो इसको पढ़ले तो कुछ परस्त्रीगमन वा परपुरुष गमन में कुछ पाप
नहीं होता है जब वे परस्पर सन्मुख होवैं तब पुरुष कहै कि मैं कृष्ण हूं
तूं राधा है तब स्त्री बोली कि मैं राधा हूं आप कृष्ण हैं ऐसा कहके कु-
कर्म करने को लग जाते हैं उनके दो मन्त्र हैं श्रीकृष्णः शरणं मम। यह
उनो ने मिथ्या संस्कृत बना लिया है इसका यह अभिप्राय है कि जो कृष्ण
सोई मेरा शरण अर्थात् इष्ट है फिर भागवत की कथा में रासमण्डल की
लीला सुनके ऐसा निश्चय करते हैं कि हम लोगों के इष्ट ने जैसी लीला
किया है वैसी हम भी करैं कुछ दोष नहीं और इसका ऐसा भी अर्थ बन
सक्ता है कि जो श्रीकृष्ण है सो मेरी शरण को प्राप्त हो। अर्थात् मेरा सेवक
श्रीकृष्ण बन जाय ऐसा अनर्थ भी भ्रष्ट संस्कृत से हो सक्ता है सो यह म-
न्त्र गोसांई लोग दरिद्र, कङ्गाल और साधारण पुरुषों को देते हैं और
जो बड़ा आदमी है उसके हेतु दूसरा मन्त्र बनाया है वही समर्पण का
मन्त्र है ॥ क्लीं कृष्णाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा ॥ इस मन्त्र को उस-
को देते हैं कि जो शरीर.मन, और धन गोसांईजी के अर्पण कर दे और
गोसांई लोग अपने को कृष्ण मानते हैं और अपनी चेलियां वा जगत्
की सब स्त्रियां राधा है सो जिस स्त्री से चाहै उस स्त्री से समागम करलें उ-
नको पाप नहीं लगता और उनके समर्पणी जो चेले होते हैं वे अपनी
प्रसन्नता से गोसांईजी को प्रसादी कर लेते हैं अर्थात् स्त्री वा पुत्र की स्त्री
तथा कन्या उनको गोसांईजी को खास सेवा में एकान्त में भेजते हैं जब
गोसांईजी एक बार अपनी सेवा में प्रथम रख लेते हैं तब वह स्त्री पवित्र
हो जाती है और वह स्त्री अपने को धन्य मानती है तथा उनके सेवक भी
अपने को धन्य मानते हैं जिनका गुरु इस प्रकार का व्यभिचारी होगा
उनका शिष्यवर्ग व्यभिचारी क्यों नहीं होगा सो बड़े २ अनर्थ होते हैं
अब के सम्प्रदाय में सो कहने योग्य नहीं वे पान बीड़ा खाके पात्र में पीक
डाल देते हैं सो उसको उनके चेले बड़ी प्रसन्नता से खा लेते हैं और अ-

पनेको बड़ा धन्य मान लेते हैं कि हमको गोसांईजी महाराज की प्रसादी मिल गई जब कोई धनाढ्य उनको अपने घर में ले जाता है उसका नाम पधरावनी कहते हैं जब वे वहां जाते हैं तब बड़ा एक पात्र ताम्बे वा लोहे का रख लेते हैं उसके बीच में स्नान के हेतु एक चौकी रख देते हैं फिर गोसांईजी एक धोती सहित उस पात्र के बीच में चौकी पै बैठ जाते हैं फिर अनेक सुगन्धि केसरादिक पदार्थों से उनके शरीर को स्त्री और पुरुष मलते हैं फिर अच्छे २ घड़े २ जल से उनको स्नान कराते हैं फिर जब स्नान होजाता है तब सूखा पीताम्बर को धार लेते हैं और गीली धोती उस कड़ाही के जल में छोड़ देते हैं फिर गोसांईजी निकल आते हैं तब उनके सेवक लोग उस जल को पीते हैं और अपने को धन्य मानते हैं फिर गोसांईजी, बहूजी, बेटाजी, लालजी, ठाकुरजी, पुजारी, गवैयाजी, इन सात जगों से उस गृहस्थ का बहुत धन हर लेते हैं इससे उनके पास खूब धन होगया है उससे रातदिन विषय सेवा और प्रमाद में रहते हैं उनके चेले जानते हैं कि हम मुक्ति को प्राप्त होंगे परन्तु इन कर्मों से मुक्ति तो नहीं होनी किन्तु नरक ही होना क्योंकि इन प्रमादों में जिनका धन जाता है उनका भला कभी नहीं होगा और उन गुरुओं का भी और उनने एक कथा रच रक्खी है कि लक्ष्मणभट्ट एक ब्राह्मण तैलंग था उसने काशी में आके संन्यास लेने चाहा तब उससे पूंछा कि आपके मातापिता वा विवाहित स्त्री तो घर में नहीं है तब उसने कहा मिथ्या कि मेरे घर में कोई नहीं है मुझको संन्यास देदीजिए फिर उनने संन्यास देदिया कुछ दिन के पीछे उनकी स्त्री काशी में खोजती २ आई और वह कहीं मार्ग में मिला सो उसके पीछे २ चली गई वह अपने गुरु के पास जाके बैठे स्त्री भी बैठी और उसके गुरु से स्त्री ने कहा कि महाराज मुझको भी आप संन्यास देदीजिए क्योंकि मेरे पति को तो आपने संन्यास दे दिया अब मैं क्या करूंगी तब तो उस संन्यासी ने बहुत क्रोध करके उसका दण्ड और काषाय वस्त्र ले लिए और उससे कहा कि तूं झूठ क्यों बोला तैने बड़ा अनर्थ किया अब तुम यज्ञोपवीत पहर लेओ और अपनी

स्त्रोकेसाथरहे और उनकेगुरूनेआशिर्वाददिया कितुम्हारापुत्रब-ड़ाश्रेष्ठहोगा सोउनकेभाषा ग्रन्थमेंऐसीबात लिखोहै सोमुझको अनुमानसेमालूमपड़ताहैकिजबउसनेकाशीमेंसंन्यासलिया फिर खूबखानेपीनेलगे तब कामातुरहोके किसीस्त्रीसे फसगए फिर जबकाशीमेंनिन्दाहोनेलगी तबकाशीछोड़केदक्षिणदेशमेंचलेगए परन्तुकोईउनकेस्वजाति ब्राह्मणनेपंक्तिमेंनहींलिया सोआजतक तैलंगब्राह्मणोंकीऔरगोकुलस्थोंकीएकपंक्तिवाएकविवाहनहींहो-ताजोकोईतैलंग,ब्राह्मण,गोसांईजीकोकन्यादेताहै वहभीजातिबा ह्यहोजाताहै फिरवेदोनों जहांतहां घूमनेलगे औरउनकाएक पुत्रभया उसकानामवल्लभरक्खा इसविषयमें वेलोगऐसाकहतेंहैं किजन्मसमयमेंहो उसबालककोबनमेंछोड़के चलेगए सोउसबा-लककी चारों ओर अग्नि जलतारहता था। इससे उस बालक कोकोईजानवरनहींमारसका जबवेपांचवर्षकेभए तबदिग्विजय करनेलगे औरसबपृथिवीकेपंडितोंको उननेजीतलिया पांचवर-षकीउमरमें सोयहबातहमको झूटमालुमदेतीहै क्योंकिवे बनमें बालककोकभीनहीं छोड़ेंगे तथाअग्निरक्षाभीनकरेंगा औरपांच वर्षकीउमरमें विद्याकभीनहींहोसक्ती फिरवेक्या पराजयकरेंगे यहबातअपनेसंप्रदायकीप्रतिष्ठाकेहेतुमिथ्याचलिईहैक्योंकिसुबो धिनीतथाविद्वन्मंडनसंस्कृतमेंग्रन्थउनकेबनायेदेखनेमेंआतेहैंउन मेंउनकासाधारण पांडित्यहीदेखनेमेंआताहै इससेवेक्यापंडितों कापराजयकरसकेंगे फिरवेऐसाकहतेहैं किश्रीकृष्णनेवल्लभजीसे कहाकिहमारे जितनेदैवीजीवहै उनकातुमउद्धारकरो फिरवल्ल भजीफिरतेघूमतेमथुरामे आकेरहेऔरवहांसंप्रदायका जालफै-लायाकितनेकपुरुष उनकेचेलेभए औरउननेविवाहकिया उससे सातपुत्रभए सोआजतकगोकुलस्थोंकी सातगद्दीचलतीहै फिरऐ सीरकथाप्रसिद्धकरनेलगे किजोकोईगोसांई जीकाचेलाहोगाव-होवैष्णवऔरदैवीजीवहै औरजोकोईउनकाचेला नहींहोतावह-

आसुर नाम दैत्य और राक्षस संज्ञक जीवहै ऐसीप्रसिद्धहोनेसे बहुतलोग चेलेहोगये औरबहुतव्यभिचार तथाविषयभोग केहेतु चेलेहोतेहैं यहांतकउनने मिथ्याकथारचीहै किजब मथुरामें रहतेथेतबवल्लभजीने एकचेलेसेकहाकितूदहीमेरेलिये बाजारसेले आवहचेलादहीलेनेकेहेतु बजारमेगया वहांएकदहीलेके बूढ़ीस्त्री बैठीथी उस्सेउसनेकहाकी इसदहीकाक्यातूंमुल्यलेगी तबबुढ़ियाने जानाकियह वल्लभजीका चेलाहै उस्सेबोलीकिमैं इसदहीकेबदले मुक्तिलेऊंगी तबउसनेदहीलेलिया औरबुढियासे कहाकितुझको मैनेमुक्तिदेदी सोउसबुढ़ियाकोमुक्तिहीहोगई औरवल्लभजीकानाम रक्खाहैमहाप्रभुसोऐसीरझूठकथाबनाकेजगत्कोठगलेतेहैं एक घासकीकण्ठीदेदेतेहैं उसकानामरक्खाहै पविचाऔररोरीकोदो रेखाएइङ्केतुल्य ललाटमेंबनवादेतेहैंफिरकहतेहैंकितुमगोसांई जीकेसमर्पणहोजा औरइस्से तुमारासबपापछुटजायगा तुमलोग दैवीजीवऔरवैष्णवकहाओगे इसलोकमेंआनन्दसेभोगकरोऔर मरनेकेपीछेतुमलोगगोलोकस्वर्गमें जावोगेजहां राधादिकसखी औरश्रीकृष्णनित्य रासमण्डल और आनन्दभोग कर्तेहैं वैसेतुम भींअनेकस्त्रीयोंकेसाथ आनन्दभोगकरोगे ऐसीकथाको सुनकेस्त्री औरपुरुषमोहित होकेचेलेहोजातेंहैं फिरएकऐसी मिथ्याकथा रचीहैं किविट्ठलसाक्षात् श्रीकृष्णकाअवतारहुआहै औरहमलोगसाक्षात् कृष्णकेस्वरूपहैं सोबहुतर धनदेरके धनाढ्यकोस्त्रीयां एकरात्रीं गोसांईजीकेसेजामें रहआतीहैं तबउनकेचेले औरचेलियांउसस्त्रीसेकहतीहैं कितूंबड़ीभाग्यवतीहै किगोसांईजीनेंतुझकोअंगसेलगालिया क्योंकि समर्पणकायहीप्रयोजनहै किगोसांई जोशरीरधन औरउनके मनको चाहेंसोकरैं उनचेलें औरचेलियोंकाजबमरणहोताहै तबउनका धनसब गोसांईजी लेलेतेहैं क्योंकोपहिलेही समर्पणकियागयाथाबडेआनन्दकासंप्रदायउनकाहै किचेलेचेलीनोकरचाकरसबविषयभोगआनन्दकेंसमुद्रमेंडूब

केमग्नहोजातेहैं औरगोंसाईलोगखूबठट्ठसारसेबनेठनेसदारहते हैंजिसेदेखकेस्त्रीलोगमोहितहोजांय सोरातदिनस्त्रीलोगघेरकेरहतीहैं औरस्त्रीयोंकेअर्थातचेलियोंकेभुगडकेभुगड२ क्रीडाकरते रहतेहैं क्योंकिगोसांईलोगअपनेकोकृष्णमानतेहैं औरउनकीचेलियांअपनेकोराधारूपसखीमानतीहैंखूबस्त्रीलोगधनदेतीहैंऔर अपनोइच्छापूर्वकक्रीड़ाकरतीहैं केवलवेबड़े पामरहोजातेहैं इससे पशुकीनांई अर्थात्लालमुखकेबांदरजैसेक्रोड़ाकरतेहैंवैसेवेभी पशुहैं इसमें कुछसन्देहनहीं जितनेमन्दिरधारी,वैरागोहैं उनकाभोप्राय:ऐसाहीव्यवहारहै ऐकचक्रांकितलोग जोकिआचारी कहातेहैं उनकाऐसामतहैकि।तापःपुंड्ंतथानाम मालामन्त्रस्तथैवच। अमीहिपञ्चसंस्कारा परमैकान्तहेतव:॥ यह उनका स्लोकहै शंख,चक्र,गदाऔरपद्मलोहेकेवांदोवासोनेके चारचिन्हबनारखतेहैं जोकोईउनकाचेला वाचेलीहोतीहै जबवेस्नानकरके आतेहैं तबबरोबर पंक्तिउनकोबैठजातीहै औरउनचिन्होंकोअग्नि मेंतपाके उनकेहाथकेमूलमेंतप्त२लगादेतेहैं उससमयजिसअग्नि मेतपायाजाताहै उसकानामवेदोरक्खाहै जबउनकेहाथमेंतप्त२ वेलगातेहैं तबबड़ादु:खउनकोहोताहै क्योंकिचमड़े,लोम और मांसके जलनेसे उनकोवड़ी पीड़ाहोतीहै औरदुर्गन्धभीउठताहै फिरउनकेहाथमेंलगाके चमड़ा,मांस,उसमें कुछ२लगरहताहै औरएकपात्रमेंजलवादूधरखदेतेंहैं उसमें उनचिन्होंको बुझादेते हैं फिरकोई२उसजल वा दूधकोपीलेतेहैं देखनाचाहिएयहबात कौनधर्म औरकिसयुक्तिकोहोगी केवलमिथ्याहीजानना क्योंकि जीतेंशरीरकोजलानेसे एकप्रथमसंस्कारमानतेहैं औरजितनसंप्रदायवालेंहैं वे उर्द्ध पुंड्रवात्रिपुराड्का संस्कारसबमानतेंहैं उनसे हीशैव,वैष्णवादिक अपनेहृदयमें अभिमानकर्तेहैं उर्द्ध पुराड्वाले नारायणकेपगकीआकृतितिलककोमानतेंहैं तथाशैवशाक्तादिक महादेवकेललाटमें जोचन्द्रहै उसकीआकृतिमानतेहैं फिरचक्रां

कितादिक बीचमें रेखाकर्तेहैं उसकानामश्रीरखलियाहै इसमें
विचारनाचाहिए किजिनकेललाटमें हरिकेपगकाचिन्ह लक्ष्मी
और चन्द्रमाकाचिन्हहोवै तोवेदरिद्रदुःखीऔरज्वरादिकरोगयु-
नकोक्योंहोवैंफिर वेकहतेहैं किविनातिलकसेचाण्डालकेतुल्यवह
मनुष्यहोताहै उनसेपूंछनाचाहिएकिचाण्डालजोतुम्हारातिलक
लगाले तोतुम्हारेतुल्यहोसक्ताहैवानहीं जोवेकहैंकिहोसक्ताहै तो
गधाव्या कुत्ते केललाटमें तिलकलगानेसे वहमनुष्यभी होजाताहै
वानहींसोतिलककाऐसासामर्थ्य नहींदेखपड़ताहै किऔरकाऔ
रहोजाय औरलक्ष्मीचन्द्रइनके ललाटमें विराजमानतोभीउदर
कापालनहोना कठिनदेखपड़ताहै इससे ऐसा निश्चयहोताहै कि
यहलक्ष्मीऔरचन्द्रमानहींहै किन्तु दरिद्रऔरउष्णताजाननी
चाहिए फिरवेतिलकके विषयमें एकदृष्टान्तकहतेहैं किकोईमनुष्य
एकवृक्षकेनीचेसोताथा बड़ारोगीसोमरणसमय उसकाआगया
वृक्षकेऊपरएककौआवैठाथाउसनेविष्टाकियासोगिरीउसकेललाट
केऊपर सोतिलककोनांईचिन्हहोगया फिरयमराजकेदूतउसको
लेनेकोआए तबतकनारायणनेअपनेभीदूतभेजदिए यमराजकेदू-
तोंनेकहाकियहबड़ापापीहै सोअपनेंस्वामीकीआज्ञासेहमइसको
नरकमेंडालेंगे तबनारायणकेदूतबोले कि हमारेस्वामीकीआज्ञा
है किइसकोवैकुण्ठमेंलेआओ देखोतुमअन्धेहोगए इसकेललाट
मेंतिलकहै तुमकैसेलेजासकोगे सोयमराजकेदूतोंकीबातनहींच-
ली औरउसकोवैकुण्ठमेंलेगए नारायणनेबड़ीप्रीतिसेप्रतिष्ठाकि-
या औरउससे कहातूंआनन्दकर वैकुण्ठमें ऐसेप्रमाणोंसेतिलक
कोसिद्धकरतेहैं औरलोगमानतेहैं यहबड़ाआश्चर्यहै क्योंकिऐसी
मिथ्याकथाकोलोगमानलेतेहैं गोकुलस्थलोगकेवलहरिपदाकृति
हीकोतिलकमानतेहैंनिम्बार्कसम्प्रदायकेएककालाबिन्दु तिलकके
बीचमेंदेतेहैं उसकोजैसेमन्दिरमेंश्रीकृष्णवैठाहोय ऐसामान-
तेहैं तथामाधवार्कसंप्रदायवाले एककालीरेखाखड़ीललाटमेंकर्ते

हैं उसकोभीऐसामानतेहैं तथाचैतन्यसंप्रदायमेंजोहैं वेकटारके ऐसाचिन्हको हरिपदाकृतिमानतेहैं औरराधाबल्लभीभीबिन्दुको राधावत्मानतेहैं कबीरकेसम्प्रदायवाले दीपकीशिखावत् तिलकको मानतेहैं और पण्डितलोगपिप्पलकेपत्ते कीनाई कोई२ तिलककरतेहैं सोकेवलमिथ्याकल्पनालोगोंनेबनाईहै जोतिलकके बिना चाण्डालहोताहोतो वेभीचाण्डालहोजांय क्योंकिजबस्नान और मुख्यप्रक्षालन करतेहैं तबतोउनकेभीललाटमें तिलकनहीरहनेपाता फिरवेचाण्डाल क्योंनबनजांय औरजोफिरतिलकके करनेसे उत्तमबनजांय तोचाण्डालउत्तमबननेमेंक्यादेर परन्तु चक्रांकितोंकेग्रन्थमन्त्रार्थदिव्यसूर्य, रत्न, प्रभाऔरनाभानेबनाई भक्तमालादिकोंमेंयहप्रसिद्धलिखाहै किजोचक्रांकितोंकामूलआचार्यशठकोपजीसो कंजरऔरहावूडाकेकुलमें उत्पन्नभएथें सोई उनग्रंथों मेंलिखाहैकि विक्रीयंशूर्पं विचचारयोगी । यहबचनहै इसकाइस्से यहअभिप्रायहैकिसूपकोबेचकेयोगी जोशठकोपसो बिचरतेभए इस्से क्याआयाकिवहसूपबनानेवालेकेकुलमें उत्पन्नभयाथाउनहीनेचक्रांकितसंप्रदायकाप्रारम्भकियाइस्से उसकाटोपचक्रांकितआजतकपूजतेहैंउनकेपीछेदूसराउनकाआचार्यमुनिवाहनभयाउसकोऐसो कथाउनग्रंथोंमेंहै किदक्षिणमेंएकतोतादरीऔररङ्गजोदोस्थानहैं उनमेंबहुतसेउनके संप्रदायकेसाधूआजतकरहतेंहैं वहांएकचांडालथाउसकोऐसोइच्छाथोकिमैंभीकुछठाकुरजीकापरिचर्याकरूं परन्तुमन्दिरमेंभाडू बहारूदेनेकेहेतुपुजारीलोगउसकोनहींआनेदेतेथे सोजबप्रातःकालकुछरात्रिरहै तबपुजारीलोगस्नानकोदरवाजाखोलकेचलेंजांय तबवहचांडालछिपके मन्दिरमेंभाडू देके निकलजाय कोई उसकोदेखेनहीं परन्तु पुजारियोंने बिचारकिया किभाडू कौनदेजाताहै रातमें छिपके दोचारपुजारीबैठेरहे किउसको पकडनाचाहिए जबप्रातःकाल औरपुजारी स्नान को चलेगयेतबवह चांडालमन्दिरमें घुसकेभाडूदेनेलगा जबउननेदे

खातचाण्डालके ऐसामाराकि मूर्छितहोगया तबउनवैरागियोंनेच
ण्डालकोमंदिरके बाहरउसको डालदियाजबवेस्नानकर के पुजारीलो-
गआकेठाकुरका किवाडखोलनेलगें सोनखुलाक्योंकि ठाकुरजी
नेउसकोमारनेमें बडाक्रोधकिया तबतौ उआश्चर्यभये सबकिकिवा-
डक्योंनहीखुलतेहैं फिरएक वैरागीको ठाकुरजीने स्वप्नदियाकि
किवाडोतबखुलेगे आपसबलोग उसचांडालको पालकीमें बैठाके
अपनेकंधेपर सबनगरमेंउसको फिराओऔरपालकीसहितमं-
दिरकोपरिक्रमाकरो फिरउसकोमंदिरमें लेआओ वहीमेरीपू-
जाकरै औरइस मंदिरका अधिष्टाताऔर सबकागुरु बनैजबवह
किवाडकोआके स्पर्शकरेगा तबकिवाड खुलेगा अन्यथानहीऐ-
साहीउननेकिया औरसबबातहोगई उसकानाम उसदिनसेमु-
निवाहन रक्खागया क्योंकिमुनिजोवैरागी उननेवाहननामपा-
लकीउठाई इससेउसकानाम मुनिबाहनपडा उनका चेलाएकमु-
सलमानभया उसकानाम यावनाचार्यइसकोअब चक्रांकितोंने-
तिकयामुनचार्य्य नामरक्खाहै उनके चेला रामानुजभये वहब्रा-
ह्मणथेरामानुजके विषयमेंयेलोगकहतेहैं किशेषजीकाअवतार-
हैशंकराचार्य शिवका निंबार्कमाधव रामानन्द औरनित्यानन्द
यचारों सनकादिकके अवतारहैं नानकजनकजी काअवतारहै
कबीरब्रम्हका यहबातसब उनकोमिथ्याहै क्योंकिअपने२संप्रदाय
केहेतुमिथ्याकथा लोगोंनेरचलिईहैं तीसरासंस्कारमालाधार-
णाकरनाउसमें रुद्राक्षतुलसी वासकमलगट्टे इत्यादिकजानलेना
इसविषयमेंसंप्रदायी लोगकहते हैंकिबिनामाला कण्ठोऔररुद्रा
क्षकेधारणसेजल पीयेऔरभोजनकरै सोमद्यपान औरगोमांस-
केतुल्यहैइनसे पूछनाचाहिये किनशाक्योंनहीहोताऔरमांसका
स्वादक्यों नहीआता इससेयहबात केवलमिथ्या आजीविकाकेहे-
तुलोगोंनेरचलिईहैं इनकेश्लोकभी बनारक्खे हैंयस्यांगेनास्तिरु
द्राक्षएकोपि बहुपुण्यदः॥ तस्यजन्मनिरर्थं स्यात्त्रिपुंडरहितंयदि

इत्यादिकश्लोकशिवपुराण और देवीभागवतादिक ग्रन्थों में शैव औ-
र शाक्तों में अपने संप्रदायों के बढ़ने के हेतु लिखे हैं और वैष्णवादिकों के
खंडन के हेतु व्यासादिकों के नाम से बहुत श्लोक रच रक्खे हैं काष्ठमा
लाधरस्यैव मद्यस्यांडालउच्यते ऊर्द्ध्वपुंड्रधरस्यैव विनाशं व्रजति ध्रुवम्
इनके विरुद्ध इत्यादिक वैष्णवों ने बनाया है रुद्राक्षधारणेनैव नरकं प्रा
प्नुयाद्ध्रुवम् शालग्रामसहस्राणां शिवलिंग शतस्य च द्वादशकोटिवि
प्राणां ततफलं श्वपचवैष्णवे ॥ विप्राद्द्विषड्गुण युतादरविंदनाभ पा-
दारविंदविमुखाच्छ्वपचं । वरिष्ठम् अभाग्यतस्य देशस्य तुलसी यत्र
नास्ति वै ।। अभाग्यं तच्छरीरस्य तुलसी यत्र नास्ति हि ।। दोनों के वि-
रोधी वाममार्गी आए प्रवृत्ते भैरवी चक्रे सर्वे वर्णाः द्विजातयः। निवृत्ते-
भैरवी चक्रे सर्वे वर्णाः पृथक्पृथक्॥ मद्यं मांसं च मीनं च मुद्रा मैथुनमेव
च। एते पंचमकाराश्च मोक्षदा हि युगे युगे । पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा
यावत्पतति भूतले ।उत्थाय च पुनः पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ।सहस्र-
भगदर्शनान्मुक्तिर्नात्र कार्या विचारणा ।मातृयोनिं परित्यज्य विहरेत्सर्व
योनिषु काश्यां हि मरणान्मुक्ति र्नात्र कार्या विचारणा । काश्यां मर-
णान्मुक्तिः यह श्रुति शैवों ने बनाली है सहस्रभगदर्शनान्मुक्ति यह शा
क्तों ने श्रुति बनाली है गंगा गंगेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि। मु-
च्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति ।। अश्वमेधसहस्राणां वाजपे
यशतस्य च । कन्याकोटिसहस्राणां फलं प्राप्नोति मानवः।। यह एकाद-
श्यादिक व्रतों का माहात्म्य बना लिया है ऐसे ही शालिग्राम नर्मदालिं
ग आदिका माहात्म्य बना लिया है सो इस प्रकार के मिथ्या २ जाल अपने
मतलब के हेतु लोगों ने बना लिये हैं और परस्पर एक को एक देख के जल
ते हैं तथा अत्यन्त विरोध और परस्पर निन्दा होता है क्योंकि जो मिथ्या
२ कल्पना है उनको एकता कभी नहीं होती जो सत्य बात है सो सब के
बीच में एक ही है चक्रांकितादिकों ने अपने संप्रदाय के मन्त्र बना लिए
हैं।ओं नमो नारायणाय ओं म श्री मन्नारायण चरणौ शरणं प्रपद्ये
ओं मते नारायणाय नमः ये दोनों चक्रांकितों के मन्त्र हैं ओं नमो भग

वतेवासुदेवाय ओम्कृष्णायनमः ओम्राधाकृष्णाभ्यान्नमः ओम्
गोविन्दायनमः ओम्राधावल्लभायनमः येनिंबार्कादिकोंकेमन्त्रहैं
ओम्रामायनमः ओम्सीता रामाभ्यान्नमः ओम्रामायनमः
येरामोपासकोंकेमन्त्रहैं ओम्नृसिंहायनमः ओम्हनुमतेनमः
येखाखीआदि कोंकेमन्त्रहैं ओम्नमः शिवाययहशैवोंकामन्त्र
हैऐंह्रींक्लींचामुंडायैविच्चे ओम्ह्रांह्रींह्रूंह्रैंह्रौंह्रः बगलामुख्यै फ
ट्स्वाहाइत्यादिकवाममार्गियोंकेमन्त्रहैं सत्यनाम जपयहीकबी-
रसंप्रदायकामन्त्रहै दादूरामयहदादूसंप्रदायकामन्त्रहै रामरा-
मयहरामसनेही सम्प्रदायकामन्त्रहै वाहगुरु।। एकओंकारसत्य
नामकर्त्तापुरुषनिर्भयनिर्वैर अकालमूर्त्तअयोनीसहभंगगुरुप्रसा-
दजप।। यहनानकसंप्रदायकामन्त्रहैं इत्यादिक कहांतकहमजाल
गिनावैंकि लाखहां प्रकारके मिथ्याकल्पना लोगोनेकरलियेहैं
येसबगायत्री जोपरमेश्वरकामन्त्रइसके छोडानेकेवास्तेधूर्त्तताला
गोनेसबरचीहै औरजैसे गडेरियाअपने भेडऔरछेरियोंकोचरा
ताहैउनसेजबचाहै तबदूधदुहलेताहै अपनामतलबसिद्धकरलेता
हैदूहकेउनमेंसे एकभेडवाछेरीकोाईलेले अथवा भागजायतबउस
गडरियेकोबडादुःखहोताहै सोदिनसभरचराके एकस्थानमेंइक
ट्ठाकरदेताहैवहचाहताहैइसझुंडमेंसे एकभीपृथक्नहोजायकिन्तु
अन्यभेडवाछेरीमिलाकेबढायाचाहताहै क्योंकि उनसेहीउसका
आजीविकाचलतीहै वैसेहीआजकाल मूर्खमनुष्योंकोधूर्त्त गुरुलो
गजालमेंबांधकेअत्यन्त धनादिकलूटतेहैं औरबडे२ अनर्थकरतेहैं
क्योंकिचेले मूर्खहैंइससे जैसावेकहदेतेहैंवैसाहीमानलेतेहैंजोउन-
गुरुओंकोविद्याऔर बुद्धिहै।तोतो ऐसी अपनेवास्तेनरककीसाम-
ग्रीक्योंकरतेतथा चेलेलोगोंको विद्याऔरबुद्धिहोतीतो इनधूर्त्तो
केजालमेंफसकेक्यों नष्टहोतेदेखनाचाहिये किनानकजोकबीरजो
औरदादूजी इनकेसंप्रदायमें पाषाणादिकमूर्त्ति पूजनतोनहीहै
परन्तु उननेभीसंसारका धनादिकहरनेके वास्ते ग्रन्थसाहबकोउ

से भी अधिक पूजा करते हैं यह भी एक मूर्त्तिपूजन ही है पुस्तक भी जड़ ही होता है क्योंकि जैसी पाषाणादिकों की पूजा वैसी पुस्तकों की भी पूजा जाननी इसमें कुछ भेद नहीं यह केवल परपदार्थ हरने के वास्ते ही लोगों ने युक्ति रच लिई है अपने २ संप्रदाय में ऐसा आग्रह है उनको कि वेदादिक सत्य पुस्तकों की ऐसी पूजा वा उनमें प्रीति कभी नहीं करते जैसी की अपने भाषा पुस्तकों में प्रीति करते हैं और संन्यासियों ने एक शंकर दिग्विजय रच लिया है उसमें बहुत २ मिथ्या कथा रक्खी है उसमें दण्डी लोग और गिरी पुरी आदिक गोसाईं लोग अत्यन्त प्रीति करते हैं अर्थात् रामानुजदिग्विजय निंबार्कदिग्विजय माधवार्कदिग्विजय वल्लभदिग्विजय कबीरदिग्विजय और नानकदिग्विजयादिक अपने २ बड़ाई के वास्ते लोगों ने मिथ्या २ जाल रच लिये हैं शंकराचार्य कोई संप्रदाय के पुरुष नहीं थे किन्तु वेदोक्त चार आश्रमों के बीच संन्यासाश्रम में थे परन्तु उनके विषय में लोगों ने संप्रदाय की नांई व्यवहार कर रक्खा है दश नाम लोगों ने पीछे से कल्पित कर लिये हैं जैसे कि किसी का नाम देवदत्त होय इसके अन्त में दश प्रकार के शब्द रखते हैं कि देवदत्ताश्रम एक १ देवदत्तार्थतीर्थ २ देवदत्तानन्दसरस्वती और इसी का भेद दूसरा कि देवत्तेन्द्रसरस्वती ३ देवदत्तगिरी ४ देवदत्तपुरी ५ देवदत्तपर्वत ६ देवदत्तसागर ७ देवदत्तारण्य ८ देवदत्तवन ९ देवदत्तभारती १० ये दश नाम रच लिये हैं फिर इन में शृंगेरी शारदा भूगोवर्द्धन और ज्योतिमठ ये चार प्रकार के मठ मानते हैं और दण्डियों ने दामोदर नृसिंह नारायण इत्यादि कदण्डों के नाम रख लिये हैं उसमें यज्ञोपवीत बांधते हैं उसका नाम शंखमुद्रादिक रक्खा है ऐसी २ बहुत कल्पना दण्डियों ने भी किई है किन्तु जो बाल्यावस्था में नाम रहता था सोई सब आश्रमों में रहता था जैसी कि जैगीषव्य आसुरि पंचशिखा और बोध्य ऐसे २ नाम संन्यासियों के महाभारत में लिखे हैं इस से जाना जाता है कि यह पीछे से मिथ्या कल्पना दण्डी लोगों ने कर लिया है परन्तु दण्डी लोग सनातन संन्यासाश्रमी हैं क्यों-

किमनुस्मृत्यादिकमेंइनका व्याख्यानदेखनेमेंआताहै औरगोसांई लोगोंने भीदुर्गानाथ इत्यादिकमढो शब्दकल्पित करलियाहैजैसे किवैरागीआदिकोंने नारायणदासइससे बडा भारीबिगाडभया।कि नीचऔर उत्तमकी परीक्षाहीनहींहोती क्योंकिसब काएकमा-हीनामदेख पडताहैतापः पुंड्रनाममाला औरमन्त्रयेपंचसंस्का-रचक्रांकितादिकमानतेहैं औरमोक्षहोना भीइनसे मानतेहैंपर-न्तु इसमेंबिचार करनाचाहिए किसंस्कारनामहै पवित्रताकासो पवित्रतादोप्रकार कीहोतीहैएकमन कोदूसरीबाह्यपदार्थोंकोइ-नमेंसे मनकीपवित्रताहोनेसे बाह्यपवित्रता भीहोतीहै जिनका मनअधर्मकरने मेंरहताहैउनकीबाह्यपवित्र तासबव्यर्थहैसोउन-संस्कारोंसेमनकीपवित्रताकुछनहीं होसक्तीदेखनाचाहिएकिगो-कुलस्थोंकेमन्दिरोंमें रोटीऔरदालतकलोगबेचतेहैं औरबाहर सेप्रसिद्धरखतेहैं किठाकुरकोइतनाबड़ा भोगलगताहै सोजितने नौकरचाकरमन्दिरोंमेंरहतेहैं उनकोमासिकधननहींदेतेकिन्तु इसकेबदलेपक्काअन्न रोटीदालतकदेतेहैं उनकेहाथगोसांईजीअ-न्नबेचतेहैं औरवेप्रजाके हाथबेचतेहैं जैसेहलवाईकी दुकानमें बेचाजाताहै औरप्रसादभी उनकेयहां भेजतेहैं सबमन्दिरधारी किजिससे कुछप्राप्तिहोतीहो मन्दिरोंमेंजब दर्शनकेहेतुजातेहैं तब जोउनकेस्त्रीवापुरुष,सेवक तथाधनदेनेवाले उनकाबड़ासत्कारक-रतेहैं अन्यकानहीं इनमिथ्याव्यवहारोंकेहोनेसेदेशकाबड़ाअनुपका-रहोताहै क्योंकिबाहरसेतोमहात्माकीनांईबनेरहतेहैंछलऔरहृ-दयमेंकपट,काम,क्रोध,लोभादिकदोषबढ़तेचलेजातेहैंदेखनाचा-हिएकिबड़े२मन्दिर,मठ,गांव,राज्यदुकानदारीकरतेहैंऔरनामर-खतेहैंवैष्णव,आचारी,उदासी,निर्मलगोसाईं जटाजूटबने रहते हैंतिलक,छापा,माला, ऊपरसेधारणरखतेहैं औरउनकाहृदयका व्यवहारहमलोगदेखतेहैंबिद्याकालेशनहींबातभीयथावत्कहना वासुननानहींजानें इससे सबमनुष्योंकोएकसत्य,धर्मबिद्यादिकगु-

ग्रहणकरनाचाहिए औरइननष्टव्यवहारोंको छोड़ना चाहिए
तभीसबमनुष्योंका परस्परउपकारहोसक्ताहै अन्यथानहीं वाम-
मार्गीलोग एकभैरवीचक्ररचतेहैं उसमेंएकनङ्गीस्त्री करकेउसके
हाथमेंछूरीवातलवारदेदेतेहैं औरबीचमेंएकआसन केऊपरबैठा
देतेहैं फिरउसस्त्रीकी पूजाकर्तेहैं यहांतकगुप्तअंगकीभीफिरउस
जलको सबलोगपीतेहैं औरउसस्त्रीकोमानतेहैं कियहसाक्षातदे-
वीहै औरब्राह्मणसेलेकेऔरचमारतक उसस्थानमेंसबबैठतेहैं फि
रएकपात्रमेंमद्यकोपूजाकरके मद्यरखतेहैं उसीएकपात्रसेवहस्त्री
पीतीहै फिरउसीजूठेंपात्रसे सबलोगमद्यपीतेहैं औरमांसभीखा-
तेजातेहैं रोटीऔरबरेखातेजातेहैं फिरजबमद्यपीकेमस्तहोजाते
हैं तबउसीस्त्रीसेभोगकरतेहैं जिसको किपहिलेदेवीमानीथी और
नमस्कारकियाथा औरमनुष्यकाबलिदानभीकरतेहैं कोई२उस-
काभीमांसखातेहैंमुरदेकेऊपरबैठकेजपकरतेहैं औरस्त्रीकेसमाग-
मकेसमयजपकरतेंहैं। योन्यांलिंगंसमास्थाप्यजपेनमन्त्रमतन्द्रि-
तः।औरयहभीउनकामन्त्रहै किएकमाताकोछोड़केकोईस्त्रीअगम्य
नहीं फिरउनमेंसेएकमातङ्गीविद्यावालाहै वहऐसाकहताहै कि
मातरमपिनत्यजेत् माताकोभीनहींछोड़नाचाहिए क्योंकिमा-
तङ्गहस्तीकानामहै सोमाताकोभी नहींछोड़ता वैसेवेभीमानते
हैं ऐसीदशमहाविद्याउनलोगोंनेबनारक्खीहै उनमेंसेएकचोली
मार्गहै उसकाऐसामतहै किस्त्रीऔरपुरुष सबएकस्थानमें रात्रि
कोइकट्ठेहोतेहैं एकबड़ाभारीमृत्तिकाकाघड़ावहांरखतेंहैं उसमें
सबस्त्रीलोगअपनेहृदयकावस्त्रअर्थातजिसकानामचोलीहै उसकोउ-
सघड़ेमेंडालदेतीहैंफिरउनवस्त्रोंकोघड़ेकेबीचमेंमिलादेतेहैं फिर
खूबमद्यपीतेहैंऔरमांसखातेहैं जबवेबड़ेउन्मत्तहोजातेहैंफिरउ-
सघड़ेमेंहाथडालतेंहैं जिसकेहाथमें जिसकावस्त्रआवैवहउसको
स्त्रीहोतीहैवहमाता,कन्या,भगिनीवापुत्रकीभीस्त्रीहोयऐसे २ मि-
थ्याव्यवहारकर्तेहैं औरमानतेहैंकिमुक्तिहोययहबड़ाआश्चर्यहै ऐ-

सेकर्मों में कभी नहीं मुक्ति होती परन्तु विद्याहीन जो पुरुष हैं वे ऐसे २ जालों में फस जाते हैं और इन लोगों ने अपने २ मत के पुष्टि के हेतु अनेक पाराशर्यादिक स्मृति ब्रह्मवैवर्त्तादिक पुराण तन्त्र उपपुराण परस्पर विरुद्ध ऋषि और मुनियों के नामों से रच लिए हैं एक का दूसरा अपमान कर्ता है अपनी २ पुष्टि के हेतु क्योंकि असत्य बात और भ्रम जो होता है सो परस्पर विरुद्ध ही होता है और जो सत्य बात है सो सब के हेतु एक ही है जो सज्जन होते हैं वे सदा श्रेष्ठ कर्म ही करते हैं क्योंकि वे सत्यासत्य विचार से असत्य को छोड़ते हैं और सत्य को ग्रहण करते हैं और किसी के जाल में विचारवान् पुरुष नहीं फसता सब के उपकार में ही उसका चित्त रहता है ऐसे जो मनुष्य हैं वे धन्य हैं इससे क्या आया कि श्रेष्ठ गृहस्थ और विरक्त जो हैं वे सदा श्रेष्ठ कर्म ही करते हैं अश्रेष्ठ नहीं इस वास्ते वे विरक्त लोग अपने मत लव में फस के सत्यासत्य नहीं जान सके हैं क्योंकि उनको भ्रम अंधकार में कुछ नहीं सूझता प्र० जगन्नाथादिक में बहुत चमत्कार देख पड़ता है तथा नाना प्रकार के तीर्थ जो गंगादिक वे पापनाशक और मुक्तिप्रद हैं वा नहीं उत्तर नहीं क्योंकि जगन्नाथ की मूर्ति चंदन वा निंब काष्ठ की बनाते हैं उसको नाभि में पोल रखते हैं उसमें सोने के संपुट में एक शालग्राम रख के धर देते हैं उसको ब्रह्म तेज मानते हैं फिर आभूषण वस्त्र पहिरा देते हैं उसमें कुछ चमत्कार नहीं है किन्तु पुजारियों ने आजीविका के वास्ते बात और माहात्म्य का पुस्तक बना लिया है एक तो यह चमत्कार कहते हैं कि छत्तीस वर्ष में चोला बदलता है सो बात हमको झूठ मालूम देती है क्योंकि इतने वर्ष में मूर्ति पुरानी हो जाती है फिर दूसरी बना के रख देते हैं और कृष्ण तथा बलदेव की मूर्ति के बीच में सुभद्रा की मूर्ति बना रखी है इसमें विचारना चाहिये कि एक के वाम भाग दूसरे के दहिने भाग में मूर्ति रखना धर्मशास्त्र और युक्ति से विरुद्ध है और दूसरा चमत्कार यह कहते हैं कि एक राजा बड़ा हो और पण्डा ये तीनों उसी समय मर जाते हैं यह बात उनकी मिथ्या है क्योंकि अकस्मात् कोई उस दिन मर गया होगा

अथवा गुरु लोगों ने विष दान देके कभी मार डाले होंगे सो माहात्म्य की ऐसी बात लोगों ने मिथ्या बना लिया है तीसरा चमत्कार यह कहते हैं कि आप से आप ही रथ चलता है यह भी उनकी बात मिथ्या है क्यों-कि हजारहां मनुष्य मिलके रथ को खींचते हैं और कारीगर लोगों ने उस रथ में कला बना दिई है उनके उलटे घुमाने से वह रथ खड़ा हो जाता होगा और सूधे घुमाने से कुछ चलता होगा जैसे कि घड़ी आदिक के यन्त्र घूमते हैं ऐसे बहुत पदार्थविद्या से होते हैं चौथा चमत्कार यह कहते हैं कि एक चूल्हे के ऊपर सात पात्र धर देते हैं उनमें से ऊपर के पात्रों का चावल पहिले चुर जाते हैं यह भी उनकी बात मिथ्या है क्यों-कि उन पात्रों में चावल पहिले चुरा लेते हैं फिर उसके पेंदे को मांज देते हैं फिर ऊपर २ पात्र रख देते हैं और नीचे के चूल्हे में थोड़ी सी आंच लगा देते हैं फिर दरवाजा खोल देते हैं और अच्छे २ धनाढ्य तथा राजा लोगों को दूर से करछुल से निकाल के देखा देते हैं और कहते हैं कि देखिए महाराज कैसा चमत्कार है कि नीचे का अब तक चावल कच्चा है क्योंकि उस पात्र में चावल अग्नि पर पीछे धरे हैं उस को देख के विचार रहित पुरुष मोहित होके बड़ा आश्चर्य गिनते हैं और हजारहां रुपैया देते हैं यह केवल उन मनुष्यों की धूर्त्तता है और चमत्कार कुछ नहीं है पांचवां चमत्कार यह कहते हैं कि जो पापी होय उस को उस मूर्ति का दर्शन नहीं होता यह भी उनकी बात मिथ्या है क्योंकि किसी के नेत्र में दोष होने से आंख के सामने तिमिर आ जाते हैं और वे पुजारी लोग ऐसा युक्ति रचते हैं कि वस्त्र के अन्यथा रूप करके पर्दे बना रक्खे हैं उनके दोनों ओर पुजारी लोग खड़े रहते हैं और फिरते भी रहते हैं सो किसी प्रकार से उस मूर्ति का आड़ कर देते हैं फिर नहीं देख पड़ती उस वक्त ऐसा बके कहते हैं कि तुम लोग पापी हो जब तुमारा पाप कट जायगा तब तुम को दर्शन होगा तब वे बुद्धिहीन पुरुष भट २ रुपैये धर देते हैं फिर उनको दर्शन करा देते हैं यह सब मनुष्यों की धूर्त्तता है चमत्कार कुछ नहीं है छठवां यह चमत्कार कहते हैं कि अन्धा वा कुष्टी हो जाता है जो कि

वहांका प्रसाद नहीं खाता यह भी उनकी बात मिथ्या है क्योंकि इस बात
से कभी कोई कुष्ठी वा अंधा नहीं हो सक्ता है बिना रोग से और अनेक
दिनका सडा सडा या अन्न तथा पचावलो और हंडियों के खपरे जिन
को कौवे कुत्ते चमार और चांडालादिक स्पर्श करते हैं और धूर भी लग
जाती है सबका उच्छिष्ट खाने से कुष्ठरोग भी हो सक्ता है और परस्पर
सबका जूठ सब खाते हैं और फिर अन्य जगह के किसी का जल वा अन्न न-
हीं खाते यह देखना चाहिये कि इनका आश्चर्य व्यवहार कि सबका स-
ब जूठ खाते भी हैं फिर कहते हैं कि हम किसी का नहीं खाते यह केवल इ-
नका अविचार ही है सो जिनकी वहां आजीविका है वे ऐसी २ मिथ्या
बात सदा रचते रहते हैं कलिकत्ता में एक मृत्तिका की मूर्त्ति बना र-
क्खी है उसका नाम रक्खा है काली वहां भी ऐसी २ मिथ्या २ जाल र-
च रक्खी हैं कि काली मद्य पीती है और मांस खाती है सो वह जड मूर्त्ति
क्या पीयेगी और क्या खावेगी परन्तु उन पुजारियों को खूब मद्य पीने
और मांस खाने में आता है वे लोग स्वाद के हेतु और धनहरण के हेतु
नाना प्रकार की झूठ २ बात बनालेते हैं वहां एक मंदिर में पाषाण
का लिंग स्थापन कर रक्खा है उसका नाम तारकेश्वर रक्खा है इस-
विषय में उन्होंने बात बना रक्खी है कि रोगियों को स्वप्नावस्था में महादे-
व औषध बता जाते हैं उस औषध से उनका रोग छूट जाता है यह बात
उनकी मिथ्या है क्योंकि उनका जो पुजारी है वही वैद्य और डाक्तरों-
की औषधी किया कर्त्ता है और ऐसी औषधि क्यों नहीं स्वप्नावस्था
में महादेव कह देता है कि जिसके खाने से किसी को कभी रोग ही न हो-
इससे यह बात झूठ है कि वह पाषाण क्या कह वा सुन सक्ता है कभी न-
हीं सेतुबन्धरामेश्वर के विषय में ऐसा लोग कहते हैं कि जब गंगाजल
चढाते हैं तब वह लिंग बढ जाता है यह बात मिथ्या है क्योंकि उस मंदि-
र में दिवस को भी अंधकार रहता है उसी में चारों कोनों में चार दीप सदा
जलते रहते हैं उस मंदिर में किसी को घुसने देते नहीं उनके हाथ से गंगा
जल लेके उस मूर्त्ति के ऊपर जल चढाता है जब वह पुजारी नीचे से-

ऊपरहाथकरताहैतबमूर्त्तिसेलेकरहाथतक गंगाजीकीएकधाराब-नजातीहै उसधारामेंचारोंद्वीपकेप्रकाशकेपडनेमे जलविजलीको नांईचमकताहैतबउनयाचियोंकोपुजारीलोग कहतेहैंकितुमलो-गों केऊपर महादेवकीबडीकृपाहै देखोमहादेव कालिंगबढगया सोतुमरूपैयेचढाओ ऐसेबहुकार२केखूबधन हरण करतेहैंऔर क-हतेहैंकिरामनेयहमूर्तिस्थापनकिईहै सोयहबातमिथ्याही है क्यों-किवाल्मीकीयरामायणमेंउसकानामभीन हीहै केवलतुलसीदासके झूठलिखनेसेलोगकहतेहैं क्योंकि तुलसीदास कीमिथ्या २बातबि-चारनाचाहिये नारीनामस्त्रीकारूपदेख के स्त्रीमोहितनहीहो।तो फिरसीताकेस्वयंबरमें लिखाहै किजबस्वयंबर मेसीताजीआईतब-नरऔरनारीसब मोहितहोगये सीताजीकोदेखके यहबात पूर्वा-परउसकीबिरुद्धहै औरअपनेग्रंथमेंउननेलिखाहै किअठारहपद्म यूथपबानरथे सोएक२ काचार२कोसकाशरीरलिखा तथाकुंभक-र्णकीमोंछचार २ कोसकीलंबीलिखीहै १६ सोलहकोसकीनांक ६४कोसकाहाथलम्बा८६ कोसकाउदरऐसाजोकुंभकर्णहोता तो-लंकामें एकभीनहीसमाता औरअठारहपद्मबानरपृथिवी भरमेंन-हीसमाते तथा बांदरमनुष्यकीभाषानहीबोलसक्ते फिरसुग्रीवादि-करामसेकैसेबोलसकेंगे राज्यकाकरनाऔरविवाहपशुओंमेंकभी नहीहोसक्ता ऐसो२ बहुत तुलसीकृतरामायणमें झूठबातलि-खीहै सोइसके कहनेकाक्या प्रमाण फिरपाषाणकेऊपररामना-मलिखदिये उससेपाषाणसमुद्रकेऊपरतरेहैं यहबातउसकी मिथ्या-है क्योंकिऐसाहोता तोहमलोगभीपाषाणकेऊपररामनामलि-खके उसकातर नादेखते सोनहीदेखनेंमेआता इससेझूठबातको माननानचाहिये जैसोयहबातझूंठहैउसकावैसीरामेश्वरकोलिखो भीझूठहैकिसीदक्षिणकेधन।ढ्यनेमंदिरबनायाहै उसकानामहैरा-मेश्वर उसकोचार४००बरसभयेहोगें औरएकदक्षिणमेंकालिया-कंतकामंदिरहै इसविषयमेंलोगोंनेऐसीबातबनालिईहै किबहुमू-

र्ति हुक्का पीती है सो झूठ है क्योंकि पाषाण की मूर्ति हुक्का कैसे पीयेगी इसमें लोगों ने मूर्ति के मुख में छिद्र बना रक्खा है उस छिद्र में नाली लगा के कोई मनुष्य छिपके धूंआ खींचता है फिर वे पुजारी कहते हैं देखो साक्षात् मूर्ति हुक्का पीती है ऐसा बहका के धन हर लेते हैं ऐसे ही जयपुर के राज्य में एक जीन देवी बजती है वह मद्य पीती है सो भी बात झूंठ है क्योंकि वह मूर्ति पोली बना रक्खी है उसके मुख में छिद्र है मद्य के पात्र को मुख से लगा के ढरका देते हैं वह मद्य अन्य स्थान में चला जाता है फिर उसी को ले के बेचते हैं तथा द्वारिका के विषय में लोग कहते हैं कि द्वारिका सोने की बनी है उसमें एक पीपा भक्त समुद्र में डूब के चला गया था उसको श्रीकृष्णजी मिले उनमें बात चीत भई पीपा ने कहा कि मैं तो आपके पास रहूंगा तब श्रीकृष्ण ने कहा कि मर्त्यलोक का आदमी यहां नहीं रह सक्ता सो तुम हमारा शंख चक्र गदा पद्म के चिन्ह द्वारका में ले जाओ और सब से कह देओ कि इन चिन्हों का दाग तप्त करके जो लगवालेगा सो वैकुंठ में चला आवेगा ऐसे ही चक्रांकित लोग भी कहते हैं सो यह बात मिथ्या है क्योंकि जीते शरीर को जलाने से कोई वैकुंठ में नहीं जा सक्ता है और जो जा सक्ता तो मरे भये शरीर को भस्म कर देते हैं इससे वैकुंठ के आगे भी जायगा फिर जीते शरीर को जो जलाना यह बात केवल मिथ्या है एक पंजाब में ज्वालाजी का मंदिर है उसमें अग्नि निकलता रहता है इसको कहते हैं कि साक्षात् भगवती है इनसे पूछना चाहिये कि तुमारे घर में जब रसोई करते हैं तब चूले में भी ज्वाला निकलतो रहतो है प्रश्न चूले में तो लकडी लगाने से निकलती है और वहां आपसे आपही निकलतो रहती है उत्तर ऐसे ही अनेक स्थानों में अग्नि निकलती है सो पृथिवी में अथवा पर्वत में गंधकादिक धातु हैं उनमें किसी प्रकार से अग्नि उत्पन्न हो के लग जाता है सो पृथिवी को फोड के ऊपर निकल आता है जब तक वे गन्धकादिक धातु रहती हैं तब तक अग्नि जलता ही रहता है यही पृथिवी के हिलने का कारण है क्योंकि जब भीतर से बाहर पर्वत में अग्नि निकलता है तभी पृथिवी

मेंकंपहोजाताहै सोवहबातकेवलमनुष्योंनेअपनीआजीविकाकेवास्ते मिथ्यारचनालिईहै एकउत्तराखराडमें केदारऔरबद्रीनारायणये दोस्थानप्रसिद्धहैं इसविषयमेंलोगऐसाकहतेहैंकिबद्रीनारायणकोमूर्तिपारसपत्थरकीहै औरशङ्कराचार्यनेस्थापितकिईहै सोयहबातमिथ्याहै क्योंकिजोवहपारसपत्थरकीरहती तो पुजारीलोगदरिद्रक्योंरहते औरयहबातझूठमालूमदेतीहै किपारसपत्थरसेलोहाकुआनेसेसोनाबनजाताहै इसकोकिसीनेदेखातोहैनहीं सुनतेसुनातेचलेआतेहैं इसबातकाक्याप्रमाण औरशङ्कराचार्यतोमूर्तियोंकेतोडनेवालेथे वेस्थापनक्योंकरते केदारकेविषयमें ऐसीबातलोगकहतेहैं किजबपांडवलोग हिमालयमेंगलनेकोगये तबमहादेवकादर्शनकियाचाहतेथे सोमहादेवने दर्शननहींदिया क्योंकिवेगोत्रनामअपनेकुटुंबके पुरुषोंकोमारकेयुद्धमेंआयेथे सोमहादेवपार्वती औरसबउनकेगणोने भैंसेकारूपधारणकरलियाथा सोनारदजीनेंकहाकिमहादेवादिकोंनेंभैंसाकारूपधारणकरलियाहै तुमकोबहकानेकेवास्तेइसकीयहपरीक्षाहैकिमहादेवकिसीकीटांगकेनीचेसेनहीनिकलतेसोभी मनेतीनकोसकेछोटेदोपर्वतथेउनकेऊपरदोटांगरखदिईं एक२केऊपर फिरसबभैंसेतोउनकेनीचेसेनिकलगये परन्तुएकभैंसानहींनिकला तबभीमनेनिश्चयकरलियाकियहीभैंसाहैउसकोपकडनेकोभीमदौडा तबवहभैंसापृथिवीमेंगुप्तहोगया उसकासिरनैपालमेनिकला जिसका नामपशुपतिरक्खाहै तथाउसकापगकाश्मीरमेंनिकला उसकानामअमरनाथरक्खा औरचूतडवहींनिकला जिसकानामकेदारहै औरजंघाजहांनिकलीउसकानामतुंगनाथादिकरक्खाहैऐसेपंचकेदारलोगोंनेरचलियेहैं इसमेंविचारनाचाहियेकिनैपालमेभैंसेकाशृंगनाककानकुछनहींदेखपडताहै तथाकाश्मीरमेखुरभीनहींदेखपडते ऐसेअन्यत्रकुछभीनहींभैंसेका चिन्हदेखपडताकिन्तु सर्वत्र पाषाणहीदेखपडताहैपरन्तु ऐसी २ मिथ्याबातकोमनुष्यलोग मानलेतेहैंयहके-

वल अविद्या और मूर्खता का गुण है क्योंकि भीम इतना लंबा चौड़ा
होता तो उसका घर कितना लंबा चौड़ा होता और नगर में वामा-
र्ग में कैसे चल सक्ता तथा द्रौपद्यादिक उनकी स्त्री कैसे बन सक्ती और म
हादेव को क्या डर पड़ा था कि भैंसा हो जाय फिर इतना लंबा चौड़ा
क्यों बन जाता और क्या अपराध वा पाप महादेव ने किया था कि चे-
तन से जड़ बन जाय इससे यह बात सब मिथ्या है एक कामाक्षा स्थान र-
च रक्खा है उसमें एक कुंड बना रक्खा है उसका नाम योनि रक्खा है
और वह रजस्वला होती है यह सब बात उन पुजारियों ने आजीवि-
का के हेतु मिथ्या बना लिई है एक बौद्ध गया स्थान है उसमें बौद्ध की मूर्ति
बना रक्खी है उसकी पूजा और दर्शन आज तक करते हैं वह मूर्ति
केवल जैनों की ही है सो ऐसा जानना चाहिये कि जितना पाषाण पूज-
न है और जो जड़ पदार्थों का पूजन सो सब जैनों का ही है एक गया स्था
न बना रक्खा है उसमें बड़ा संसार का धन लूटा जाता है गया के पण्डा-
ओं को मुफ्त का बहुत धन मिलता है सो वेश्यागमन मद्यपान और मां-
साहार में हो जाता है केवल प्रमाद में अच्छे काम में कुछ नहीं फिर य-
जमान लोग मानते हैं कि गया के श्राद्ध से ही पितरों का उद्धार हो जाता
है सो ऐसे कर्मों में उद्धार तो किसी का होता नहीं परन्तु नरक होने का
संभव होता है फिर इस विषय में ऐसा कहते हैं कि रामचन्द्र ने गया में
श्राद्ध किया था सो साक्षात् दशरथ जो उनके पिता उनने हाथ निकाल
के गया में पिण्ड ने लिया था उस दिन से गया का माहात्म्य चला है औ-
र वह स्थान गयासुर का था सो यह बात सब मिथ्या है क्योंकि वे लोग आ-
ज काल भी हाथ निकाल के क्यों नहीं पिण्ड ले लेते कि सो समय कोई पु
रुष फल्गू नदी में भूमि में गुहा बना के भीतर बैठ रहा होगा और-
उनों ने संकेत बना रक्खा था ऐसे ही उसने भूमि में से हाथ निकाल के-
पिण्ड ले लिया होगा फिर झूंठ बात प्रसिद्ध कर दिई कि साक्षात् पितृ
लोग हाथ निकाल के पिण्ड ले लेते हैं उस स्थान का पण्डितों ने माहा-
त्म्य बना लिया फिर प्रसिद्ध हो गई और सब मानने लगे सो गया ना-

मन्दिर स्थान में आ इकट्ठे और अपने पुत्र पौत्र तथा राज्य जिस देश में-
अपने रहता हो उनका नाम गया बेदी के निघण्टु में लिखा है उस-
का अर्थ अभिप्राय तो जाना न हो फिर यह पाखण्ड रच लिया। काशि-
राज ने महाभारत में लिखा है कि उसने नगर बसाया था इससे उसका
नाम काशी पड़ा और वरणा तथा असी नाला के बीच में होने से वा-
राणसी नाम रक्खा गया इसका ऐसा झूंठ माहात्म्य बना लिया है-
कि साक्षात् महादेव की पुरी है और महादेव ने मुक्ति का सदावर्त्त
बांध रक्खा है तथा ऊसर भूमि है इससे पाप पुण्य लगता ही नहीं सब देव-
ता पंदरह २ कला से काशी में रहते हैं और एक २ कला से अपने २ स्थान
में रहते हैं एक मणिकर्णिका कुंड रच रक्खा है कि यहां पार्वती के कान
का मणि गिर पड़ा था तथा कालभैरव यहां का कोटपाल है सो सब को
दण्ड देता है पाप पुण्य की व्यवस्था से इस काशी का महाप्रलय में भी प्र-
लय नहीं होता क्योंकि कालभैरव त्रिशूल के ऊपर काशी को रख लेता है
और भूचाल में हलती भी नहीं पंच काशी के बीच में जो कोई कीट पतंग
तक भी मरै तो उसको महादेव मुक्ति देते हैं अन्नपूर्णा सब को अन्न
देती है अन्तर्गृही और पंचक्रोशी के करने से सब पाप छूट जाते हैं इत्या-
दि मिथ्या २ जाल रचके काशीरहस्य और काशीखण्डादि ग्रंथ ब-
ना लिये हैं और कहते हैं कि बारह ज्योतिलिंग होते हैं उन में से एक यह
विश्वनाथ है उन से पूछना चाहिये कि ज्योतिलिंग होते तो मंदिर में
कभी अन्धकार न होता और वह पाषाण मुक्ति का बन्ध कभी न हो कर
सक्ता क्योंकि उसको कारीगरों ने मंदिर के बीच गढ़े में चिपका के बं-
धकर रक्खा है फिर अपने ही बंधन से न ही छूट सक्ता फिर अन्य को मु-
क्ति क्या कर सकेगा सो यह केवल पण्डितों ने बात बना लिई है कि का-
शी में मरने से मुक्ति होती है क्यों कि इस बात को सुन के सब लोग काशी
में मरने के हेतु आवेंगे उन से हमारी आजीविका सदा हुआ करेगी
इस से ऐसी २ जाल रचा करते हैं प्रयाग में गंगा यमुना के संगम में ए-
क तीसरी झूंठ सरस्वती मान लेते हैं कि तीसरी सरस्वती भी यहां है

और दूर स्थान में मुंडानेसे सिद्ध होजाता है सो ऐसा अनुमान किया
जाता है कि पहिले कोई नौवा था उसने अपने कुलको आजी विकाकर
लिई है और संगम में स्नानकरनेसे मुक्ति होजाती है यह केवल आजी-
विकाके वास्ते झूठ २ बात और झूंठ २ पुस्तक लोगोंने बना लिए हैं कि
प्रयागतीर्थ राज है ऐसे ही अयोध्या में हनुमान् जीको रामजी गद्दी दे-
गये हैं और अयोध्या में निवास से भी मुक्ति होती है यह भी उनकी बात
मिथ्या ही है तथा मथुरा और वृन्दावन में बड़ी २ मिथ्या बात बना लि-
ई हैं कि यमद्वितीयाके स्नान से यम के बंधन से जीव छूट जाता है क्यों-
कि यमुना यमराजकी बहिन है और वृन्दावन के विषय में मुक्ति भी हो-
ती है कि मेरी मुक्ति कैसे होयगी मुक्ति मुक्ति के वास्ते वृन्दावन की गलि-
यों में झाडू देते हैं और मंदिरों में नाना प्रकारके प्रमादों से व्यभिचा-
रादिक करते हैं तथा अनेक प्रकारके जालों से लोगोंका धन हरण क-
रलेते हैं एक चक्रांकितोंने मंदिर रचवाया है उनके दरवाजोंका ना-
म वैकुंठद्वार इत्यादिक रक्खे हैं और सकल पुंगव सब मनुष्य मिलके
इकट्ठे खाते हैं सकलपुंगव उसका नाम है कि कच्चा पक्का सब प्रकार का
पक्का कच्चा अन्न रनता है फिर ब्राह्मणसे लेके अंत्यज पर्यन्त उनके जितने
शिष्य हैं उनकी पंक्ति लग जाती है उनके हाथके बीच में थोडा २ सब प-
दार्थ सबको देदेते हैं और वे खालेते हैं उनमें से कोई जलसे हाथ धो-
डालता है और कोई वस्त्र से पोंछलेता है और ठाकुरजीको झुलाबदे-
ते हैं उसमें भी बड़े २ अनर्थ सुननेमें आते हैं और एक रात वेश्याके घर
ठाकुरजी जाते हैं फिर उनको प्रायश्चित्त कराते हैं और यमुनाजीमें
डुवाके स्नान कराते हैं यह केवल उनका मिथ्या प्रपंच है परधन हरने
के वास्ते और मूर्खोंको बहकानेके वास्ते फिर उस मंदिर में बहुत लो-
गोंको शंखचक्रादिक तपाके दाग देदेते हैं ऐसे २ मिथ्या छलप्रपंच से
अपनी आजीविका करते हैं इनमें कुछ सत्य वा चमत्कार नहीं तथा गं-
गादिक तीर्थोंके विषयमें सब पापका छूटना वैकुंठमें जाना मुक्तिका
होना और ब्रह्मद्रव तथा साक्षात् भगवती का मानना यह बात मि-

थ्या है क्योंकि हिमवतः प्रभवति गंगा यह व्याकरण महाभाष्य का वचन है इसका यह अभिप्राय है कि हिमालय से गंगा उत्पन्न होती है तथा यमुनादिक नदियां बहुत हिमालय से उत्पन्न भई हैं और विन्ध्याचल में तथा तडागों से भी बहुत नदियां उत्पन्न होती हैं केवल जल सब में है उस जल में उत्तम मध्यम और नीचता भूमि के संयोग गुण से है इस से अधिक कुछ नहीं सो जल होता है वह जड क्या पाप को छोडा सके गा और मुक्ति को भी देसकेगा कुछ भी नहीं जैसा जिस जल में गुण है शीत उष्ण मिष्ट निर्मलता वैसा ही उस में होता है इनसे अधिक गुण न तो वेग रमिष्टादिक गुण सब भूमि के संयोग से हैं अन्यथा नहीं गंगे त्वद्दर्शनान्मुक्तिर्न जाने स्नानजं फलम् इत्यादिक नारदादिकों के नामों से मिथ्या २ श्लोक लोगों ने बनालिए हैं जो दर्शन से मुक्ति होती तो सब संसार की ही मुक्ति हो जाती और मुक्ति में कोई अधिक फल नहीं है कि संसार में स्नान से कुछ अधिक हो वै यह केवल मिथ्या कल्पना उनकी है कि काश्यां मरणान्मुक्तिः गंगे त्वद्दर्शनान्मुक्तिः सहस्रभगदर्शनान्मुक्तिः हरिस्मरणान्मुक्तिः ॥ इत्यादिक मिथ्या श्रुति लोगों ने बनालिई हैं किन्तु ऋते ज्ञानान्नमुक्तिः यह सत्य श्रुति है कि बिना ज्ञान से किसी की मुक्ति नहीं होती क्योंकि सत्यासत्य विवेक के बिना असत्य के दोषों का ज्ञान नहीं होता दोष ज्ञान के बिना मिथ्या व्यवहार और मिथ्या पदार्थों से कभी नहीं जो वक्रूटता इस से मुक्ति के वास्ते सत्यासत्य का विवेक परमेश्वर में प्रीति धर्म का अनुष्ठान अधर्म का त्याग सत्सङ्ग सद्विद्या जितेन्द्रियतादिक गुण इन में अत्यन्त पुरुषार्थ से मुक्ति हो सकी है अन्यथा नहीं और जिसको इस बात का निश्चय करना हो वै वह इस बात को करै कि जितने तीर्थों के पुरोहित और मंदिर स्थान के पुरोहित उनके प्राचीन पुस्तकों के देखने से सत्य २ निश्चय होता है क्योंकि वह यजमान देश गांव जाति दिन मास और संवत्सर इनका यथावत् पुस्तक जो बही खाता उस में लिखे रखते हैं उनके देखने से ठीक २ दिन मास और संवत्सर का निश्चय होता है कि इस तीर्थ वा इस मं-

दिरकाप्रारंभ इससंवत्सरमेंभयाहै क्योंकिजब जिसकाप्रारंभहोता हैतबउसकेपण्डे औरपुजारी तथापुरोहित उसीसमयबनजातेहैं देखनाचाहियेकि विंध्याचलमूर्ति केविषयमें लोगकहतेहैंकिएक दिनमें देबीतोनरूप धारणकरतीहै अर्थात्प्रातः कालमेंकन्या मध्यानमेंजवान औरसंध्याकालमेंबुढ्ढीबनजातीहै इनसेपूंछनाचाहियेकि रातमेंउसमूर्तिकी कौनअवस्थाहोतीहै सोकेवलपुजारीलोगोंकीधूर्त्तताहै क्योंकि जैसावस्त्रआभूषणधारणकरैं वैसाहीस्वरूपदेखपडताहै औरकहतेहैंकिइसमंदिरमेमक्खीनहीहोतीपरंतु असंख्यातमक्खीहोतीहैं सोकेवलझूठ बकाकतेहैं आजीविकाकेवास्ते तथा बैजनाथकेविषयमेंकहतेहैंकिकैलाससेरावणले आयाहैयहसबमिथ्याकल्पना लोगोंकीहै क्योंकिआजतक नये २ मंदिरनये २ मूर्त्तियोंकेनामधरतेहैं औरसंप्रदायीलोगोंनेअपने२ संप्रदायकेपुष्टिकेवास्ते बनालियेहैं उनकानाम रखदियापुराणऔरऐसा भीवेकहतेहैं कि अष्टादशपुराणानांकर्त्तासत्यवतीसुतः इसकायहअभिप्रायहैकिअठारहपुराणोंकेकर्त्ताव्यासजीहैं जोकिसत्यवतीके पुत्रहैं यहबातमिथ्याहै क्योंकिव्यासजीबडेपंडितथे और सत्यवादी सबपदार्थविद्या यथावत्जानतेथे उनका कथनयथावत्प्रमाणयुक्तहीहोताहै क्योंकिउनकेबनायेशारीरकसूत्रहैं औरमहाभारतमंजो२ स्लोकहैं वेभीयथावत्सत्यहीहैं प्रश्नमहाभारतमेंअन्यभीस्लोकहैं अथवासबव्यासजीकेबनायेहैं उत्तर कईहजारस्लोकसंप्रदायीलोगोंनेमहाभारतमें मिलादियेहैं अपने२ संप्रदायकेप्रमाणकेवास्ते क्योंकिशांतिपर्वमें विष्णुकीबडाईलिखीहैऔरसबकीन्यूनताऔरउसीमें सहस्रनामलिखेहैं इससे विरुद्धउसीपर्वमे शिवसहस्रनामजहांलिखेहैं वहांविष्णुकोतुच्छकरदियाहै तथाजहां विष्णुकी बडाईहै वहांमहादेवको तुच्छकरदियाहैऔरजहांगणेशऔरकार्तिकस्वामीकीस्तुतिकिईहै वहांअन्यसबकोतुच्छबनादियेहैं तथाभीष्मपर्व औरविराट्पर्वमे जहांदेवोकीकथालिखीहै वहांअन्यसब

तुच्छगिनेहैं एकभीमऔरधृतराष्ट्रकी कथालिखीहै किधृतराष्ट्रकेश-
रीरमें ६००० हाथीकाबलथा तथाभीमकेशरीरमे दसहजारहा-
थीकाबलथा औरएकगरुड पक्षीकाबल ऐसावर्णनकियाकि जिस-
कातोलन नहीहोसक्ता उसगरुडकाबलविष्णु केआगेतुच्छगिना-
तथाउसविष्णु काबल वीरभद्रकेआगे तुच्छकरदियाहै वीरभद्रका
रुद्रकेआगे औररुद्रकाविष्णु के विष्णु का वीरभद्रकेआगेऐसोप-
रस्परमिथ्याकथा व्यासजीकी बनाई महाभारत मेंनहीबनसक्ती-
औरभीऐसी २ कथालिखीहैं किभीमकोदुर्योधननेविषदानदिया-
जबवहमूर्च्छितहोगया तबउसकोबांधके गंगा जीमेंगिरादियासोव-
हपाताल कोचलागया वहांसर्पोंनेबहुतकाटा फिरजबउसकावि-
षउतरगया तबसर्पोंकोमारनेलगा उस्सेसर्पभागगयेवासुकीराजा
सेजाकेफिरकहा किएकमनुष्यका लड़काआयाहै सोबड़ा पराक्र-
मीहै तबवासुकी भीमकेपासगया औरपूंछाकि तूंकौनहै कहांसे-
आयाहै तबभीमनेकहा किमैंपराडु कापुत्रहूं औरयुधिष्ठिरकाभाई-
तबतोवासुकी बड़ेप्रसन्नभये औरभीमसेकहा किजितनातुमसेइ-
नकुराडोंमेंसेजल पीयाजाय उतनापी क्योंकियेनवकुराडअमृतसेभ-
रेहैंऐसासुनकेउठा औरनवकुराडोंका सबजलपीगया सोनवहजा-
रहाथीकाबलबढ़गया इसमेंबिचारनाचाहियेकि विषकेदेनेसे वह
भीम मरक्योंनगया औरजलमें एकघड़ीभरनहीजीसक्ता औरपा-
तालकामार्ग वहांकहांहोसक्ताहै औरजोहो सक्तातोगंगाकाजल
सब पातालमें चलाजाता ऐसी २ मिथ्याकथा व्यासजीकी कभी
नहीहोसक्ती औरजितनी सत्यकथाहै वेसबमहा भारतमें व्यास
जीकीहीकहीहैं औरजितने पुराणहैं उनमेंव्यास जीकाकियाएक
श्लोकभीनहीं क्योंकिशिव पुराणा दिक सबशैव लोगोंके बनायेहैं
उनमेंकेवल शिवकोही ईश्वरवर्णन कियाहै औरनारायणादिक
शिवकेदासहैं फिर रुद्राक्षभस्म नर्मदाकालिंग औरमृत्तिका का
लिंग बनाकेपूजने बिनाकिसीकी मुक्तिनही होतीयहकेवल शै-

वोंकी मिथ्या कल्पना है और इन बातों से कभी नहीं मुक्ति होती विना धर्मानुष्ठान विद्या और ज्ञानसे फिर वहो शिव जिसको कि ईश्वर वर्णन किया था पार्वतीके मरने में सर्वत्र रोता फिरा ऐसी कथा श्रेष्ठ पुरुषोंकी कभी नहीं होती किन्तु यह केवल शैवसंप्रदाय-वालोंकी बनाई है तथा शाक्त लोगोंने देवीभागवत तथा मार्कण्डेय पुराणादिक बनाए हैं उनमें ऐसी २ कथा झूठ लिखी है कि श्रीपुरमें एक भगवती परब्रह्मरूप थी उसने संसार रचने की इच्छा किई तब प्रथम ब्रह्माको उत्पन्न किया और कहा कि तूं मेरे से भोग कर तब ब्रह्माने कहा कि तूं मेरी माता है तुझसे मैं समागम नहीं कर सक्ता तब कोपसे भगवतीने ब्रह्माको भस्म कर दिया और दूसरा पुत्र उत्पन्न किया जिसका नाम विष्णु है उससे भी वैसा ही कहा फिर विष्णुने भी समागम न हीं किया इससे उसको भी भस्म कर दिया फिर तीसरा पुत्र उत्पन्न किया जिसका नाम शिव है उससे भी कहा कि तूं मुझसे समागम कर तब महादेवने कहा कि तूं तो मेरी माता है तेरे से मैं समागम नहीं कर सक्ता परन्तु तूं अपने अंगसे एक स्त्रीको पैदा कर उससे मैं समागम करूंगा फिर उसने पैदा किई और दोनोंका विवाह भी किया फिर महादेव नेदेखा कि ये दो भस्म क्या पडी हैं तब देवीने कहा कि तेरे भाई हैं इन दोनोंने मेरी आज्ञा नहीं मानी इससे इनको मैंने भस्म कर दिया फिर महादेवने कहा कि मेरे भाई हैं इनको जिलादेओ तब भगवतीने जिलादिये और फिर कहा कि और दो कन्या उत्पन्न करो कि मेरे भाई का भी विवाह होजाय भगवतीने उत्पन्न किई विवाह होगया एकका नाम उमा दूसरीका नाम लक्ष्मी तीसरी साविची इनके विषयमें ब्रह्मा नारायणकी नाभिसे उत्पन्न भया कहीं लिखा कि ब्रह्मासे रुद्र और नारायण उत्पन्न भये कहीं लिखा कि उमा दक्षकी कन्या कहीं लिखा हिमालय की कन्या है लक्ष्मी समुद्र कि कन्या है कहीं लिखा कि वरुणकी कन्या कहीं लिखा कि साविची सूर्यकी कन्या है कहीं लिखा कि ब्रह्मासे जगत उत्पन्न भया कहीं नारायणसे कहीं महादेवसे-

कहींगणेशसे कहींस्कंदसे ऐसे झूंठ २ कथापुराणोंमेंबनारक्खीहै प्रश्न इसमेंविरोधनहीं क्योंकियेसबकथाकल्पकल्पान्तरकीहैं उत्तर यहबातमिथ्याहै क्योंकि सूर्याचन्द्रमसौधातायथापूर्वमकल्पयत् जैसोसूर्यादिकसृष्टिपूर्वकल्पमेंभईथींवैसीसबकल्पमेंहोतीहै ऐसा जोकहोगेतोकिसीकल्पमें पगसेभीखातेहोंगेऔरमुखसेचलतेहोंगेनेत्रसेबोलतेहोंगे जीभसेनबोलतेहोंगे इत्यादिकसबजानलेना लोगोंनेमार्कण्डेयपुराणान्तर्गतजोदुर्गास्तोत्रहैजिसकानामरक्खाहैसप्तशती उसमेंऐसे २ झूंठकथा लिखाहै किरुधिरौघमहानद्यःसद्यस्तत्रप्रसुस्रुवुः रक्तबीजऔर देवीकेयुद्धमें रुधिरकीबडी २ नदियांचलीं इनसेपूंछना चाहिएकि रुधिरवायुकेस्पर्शसेजमजाताहै उसकीनदीकभीनहीचलसक्ती रक्तबीजइतनेबढेकिसबजगत्पूर्णहोगया उनकेशरीरसे उनसेपूंछनाचाहिएकिइत्तनगरगांव पर्वतभगवती भगवतीकासिंह कहांरहेथे यस्याःप्रभावमतुलंभगवाननन्तो ब्रह्माहरश्चनहिवक्तुमलंबलंचसा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय नाशायचाशुभभयस्यमतिंकरोतु इसश्लोकमेंब्रह्मा विष्णुऔरमहादेव कोतोमूर्खबनाया क्योंकिचंडिकाकाअतुलप्रभाव और बलकोवेनहीं जानतेहैं अर्थात् मूर्खहीभयेचंडिकोपेइसधातुसे चण्डिकाशब्द सिद्धहोताहै जोकोपरूपहै वहअधर्मकास्वरूपहीहै विष्णुःशरीरग्रहणमहमीशानएवच कारितास्तेयतोऽतस्त्वांकः स्तोतुंशक्तिमान्भवेत् ब्रह्माविष्णु औरमहादेवतैंनेहीशरीरधारणवालेकियेहैं फिरतेरीस्तुतिकरनेकोसमर्थकौनहोसक्ताहै ऐसाकहके त्वंस्वाहा त्वंस्वधा त्वंहि इत्यादिक स्तुतिकरनेभीलगा यहबडीभारी प्रमादकीबातहै किजिसकानिषेधकरैउसीकोअपनेकरनेलगजाय सर्वाबाधावि नर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः मनुष्योमत्प्रसादेन भविष्यतिनसंशयःपुछनाचाहिये उसभगवतीकीप्रतिज्ञाहैकिमेराइसस्तोत्रका पाठऔरमेरीभक्तिकरेगाअर्थात्सबदुःखोंसेछूटजायगा औरधान्यधनपुत्रोंसे युक्तहोताहैसो यह

प्रतिज्ञा नजानकहांगई किइसपाठककरने औरकरानेवाले अनेक दुःखोंमेपीडित देखनेमेंआतेहैं धनधान्यपुत्रोंको इच्छाभी अत्यन्त होतीहै और मिलताकुछनहीं यहांतककिपेटभीनहींभरताऐसे२ मिथ्याकथाओंमें विद्याहीनपुरुषोंको विश्वासहोजाताहै यहबडा एकआश्चर्यहै ऐसेहीविष्णुपुराण ब्रह्मवैवर्तऔर पद्मपुराणादिकों मेंअनेक २ झूंठकथा लिखीहैं तथाभागवतमें बहुतमिथ्या कथा लिखीहैं किशुकाचार्य व्यासजीकेपुत्र परीक्षितके जन्मसेसौ१०० वरसपहिलेमरगयाथा परीक्षितका जन्मपीछे भयाहैसोमोक्षधर्म में महाभारतकेलिखाहै फिरजोमनुष्य कहतेहैंकि शुकाचार्यने सप्ताहसुनाया सोकेवलमिथ्यावातहै क्योंकिउससमयशुकाचार्यका शरीरहीनहीथाऔर ऋषिकाशापथा कियमलोककोपरीक्षितजा य फिरभागवतमेंलिखा किपरीक्षितपरमधाम कोगयायहउनकी वातपूर्वापरविरुद्ध औरमिथ्याहै औरचतुःश्लोकीसबभागवतकामू-लमानतेहैंसोनारायणनेब्रह्मासे ब्रह्माननारदसेनारदने व्यासजी से व्यासजीनेशुकसे शुकनेपरीक्षितसे फिर भागवत संसारमेचल-निकसा सो यहबडाजाल रचलियाहैक्योंकि ज्ञानंपरमगुह्यं मेय-द्विज्ञानसमन्वितम् सरहस्यंतदंगंचगृहाणगदितंमया इत्यादिक चारश्लोक बनालियेहैं क्योंकिपरम और गुह्ययेदोनोंज्ञानकेविशे-षणहोनेसे वही विज्ञानहोजाता है फिर यद्विज्ञानसमन्वित यह जोउसकाकहना सोमिथ्याहोजाताहै औरगुह्य विशेषणसेसरह-स्यमिथ्याहोताहै क्योंकि रहस्यनामएकान्त और गुह्यकाहोहैप-रमज्ञानकेकहनेसेतदंग अर्थात मुक्तिकाअंगहै यहउसकाकहना मिथ्याहीहैक्योंकि परमज्ञानजोहोताहै सोमुक्तिकाअंगहीहोता-हैजैसायह श्लोकमिथ्याहै वैसासब भागवतभी मिथ्याहै क्योंकिजय-विजयकी कथाभागवतमें लिखीहै सनकादिकचारवैकुंठ कोगयेथे उससमयनारायण लक्ष्मीजीकेपासथे जयऔर विजययेदोनोंवैकुंठ केद्वारपालोंने उनकोरोकदिया तबउनको क्रोधभयाऔरशापज-

यविजयकोदियाकितुम जाओभूमिमेगिरपडोतबतोउनकोबडाभय भया औरउनकोप्रार्थनाकिई किमहाराजमेरे शापकाउद्धारकैसेहोगा तबसनकादिकोंनेकहाकि जोतुमप्रीतिसे नारायणकीभक्तिकरोगेतोसातवें जन्मतुमाराउद्धारहोगा औरजोवैरसेभक्तिकरोगे तोतीसरेजन्मतुमारा उद्धारहोगा इसमेंविचारनाचाहिये किसनकादिकसिद्धथे वेवायुवत् आकाशमार्गसे जहांचाहेंवहांजातेथे उनकानिरोधकैसेहोसक्ताहै तथाजयविजयनेबालकरूपथेचारो कोक्योंरोका क्योंकिवेक्यादोनोंमूर्ख थे औरवेसाक्षातब्रह्मज्ञानीथे उनकोक्रोध क्योंहोता और कोईकिसीको प्रीतिसेसेवाकरै औरदूसराउसकोदण्डसेमारै उनमेंसेकिसके ऊपरवहप्रसन्नहोगाजोकिसेवाकर्त्ताहै औरजोदण्डामारताहैउसकेऊपरकभी किसीकोप्रसन्नतानहीहोसक्तीफिरवेहिरण्याक्ष औरहिरण्यकश्यपदोनोंभयेएककोवराहनेमारा औरदूसरेकोनृसिंहनेउसकापुत्रथाप्रल्हादउसकेविषयमेंबहुतझूंठकथाभागवतमेंलिखीहैकिउसकोकूएमेंगिरायाऔरपर्वतसेगिरायापरन्तुवहनमराफिरलोहेकाखंभअग्निसेतपाया औरप्रल्हादसेकहा कितूंइसकोपकड नहीतोतेरासिरमैकाटडारूंगाफिरप्रल्हादखंभकेसामनेचला औरचित्तमे डराभीकुछ किमैंजलनजांऊ सोनारायणने चिवटीउसकेऊपरचलाई उनकोदेखके प्रल्हादनिडरहोके खंबेकोपकडा तब खंभाफटगया औरबीचमेंसेनृसिंह निकलेसोउसकेपिताकोपकडकेपेटचीरडालाऔरनृसिंहकोबडाक्रोधआयासोब्रह्मामहादेवलक्ष्मीतथाइन्द्रादिकदेवोंसे नृसिंहकेकोपकोशांतिहीनहोभई फिरप्रल्हादसे सबने कहाकि तूंहीशान्तिकर सोप्रल्हाद नृसिंहकेपासगया औरनृसिंहशांतहोगया सोप्रल्हादको जीभसेचाटनेलगा औरकहाकि बरमांग तबप्रल्हादनेकहा किमेरेपिताकामोक्षहोयतबनृसिंहबोले किमेरेबरसे २१ पुरुषोंकामोक्ष होगयातेरेपितादिकोंकाइनसेपूंछनाचाहियेकिनारायणने शूकरऔरपशुकाशरीरक्योंधारणकि-

या और कैसे भार सकर सक्ते हिरण्याक्षपृथिवीको चटाई कोनाई भ र के सिराने सोगया सो किसके ऊपर सोया और पृथिवीको उठाई सो किसके ऊपर खडाहीके और पृथिवीको कोई उठा भी सकताहै और कोई नारायणके भक्त हो पर्वतसे गिरा देवा कूएमे डालदेव ह म रजायगा अथवा हाथगोडटूटजायगा रक्षा कोई नहीं करेगा खंभमें से नृसिंहका निकलना यह बात बडी मिथ्याहै और नृसिंह जो नारा- यणका अवतार और पूर्वजन्म होताती पहिली बातको क्यों भूलजाता जो सनकादिकोंने मानवातो नजन्ममें सद्गति कहोथी उननेपहिलेहो जन्ममें सद्गति क्यों देदिई और प्रथमही उनका जन्मथा उसकी २१पी ढो नहीं बनसक्ती और जो कश्यप मरीचिब्रह्मातक बिचारें तोभीचा- रपीढी होसक्तीहैं २१ तक कभो नहीं फिर उसने लिखा कि हिरण्या- क्षहिरण्यकश्यपही रावणकुंभकर्ण शिशुपाल और दन्तवक्त्र होते भ ये फिर सद्गति किनकी भई यह बडी मिथ्याकथा है अजामीलकी कथा मे लिखाहै कि अपने पुत्रको मरणसमयमें बोलाया उसकाभी नाम- नारायणथा सो नारायणने इतना नाना भी नहीं कि मेरेको पुकार- ताहै वा अपने पुत्रको और वह बडा पापीथा परन्तु एकसमय नारायण के नामसे उसको वैकुंठका वास देदिया सो बडाभारी अन्यायकिपा- पकरै और दण्डनहोय ऐसी कथा सुनके लोगोंकी भ्रष्टबुद्धि होजाती है क्योंकि एकबार नारायणके नामसे सबपापछुटजाते हैं फिर कोई पापकरनेसे भयकभी नहीं करेगां व्यासजीनेसब वेदवेदांग विद्याओं कोपढलिया और परमेश्वर पर्यन्त यथावत् पदार्थों का साक्षात्कार- कियाथा तथा अणिमादिक सिद्धिभी भईथी फिरभी सरस्वती नदीके तटमे एकवृक्षके नीचे शोकातुर होके जैसे रोताहोवै वैसे वैठेथे उ- ससमयमें वहां नारद आये और व्यासजीसे पूंछा कि आप ऐसी व्यव स्थामे क्यों बैठे हैं तब व्यासजी बोले किमैंनेसब विद्यापढी और सबप्र- कारका ज्ञानभी मुझको भया परन्तु मेरे चित्तकी शांति नहीं भई तब नारदजी बोले कि तुमने भगवतकथा नहीं किई और ऐसा ग्रन्थभीको

ईनहीबनायाजिसमेंभगवतकथाहोवै सोआपभागवतबनावें कृष्ण जीकेगुणयुक्त तबआपकाचित्त शान्तहोगा इसमेंविचारनाचाहि- येकियामजो जोनारायणका अवतारहोते तोउनकोअज्ञानशो- क औरमोह क्योंहोता और जोउनकोअज्ञानादिकथेतोअज्ञानी- काबनाया जोभागवतउसकाप्रमाणनहीहोसक्ता फिरइसकथामें वेदादिकोंकोकेवलनिन्दाआतोहै क्योंकिवेदादिकोंके पढ़नेसव्या- सजीकोज्ञान नहीभया तोहमलोगोंका कैसेहोगा फिरभीनिग- मकल्पतरोर्गलितंफलं इत्यादिकश्लोकोंसे केवलवेदोंकीनिन्दाही- किईहै क्योंकिवेदादिक सत्यशास्त्रोंका यहनिन्दानकरतातोइसम हामिथ्याजालरूपजोभागवतग्रन्थ उसको प्रवृत्तिहो नहीहोतीफि- रउसनेनृगराजकोकथालिखीकि यावत्यः सिकताभूमौयावन्तोदि वितारकाः यावत्योवर्षधाराश्च तावतीरददंस्मगाः॥ नृगराजाने इ- तनीगायदिईकिजितनेभूमिमेंकणिकाहैं इससे पूछनाचाहियेकिइ- तनीगायकहां खडोरहतीथीं क्योंकिएकगायतोनवाचारहाथके जगहमेंखडोरहतीहैं उर भूमिकेकणोंको सबभूमिकेमनुष्यकरो- डहांलाखहां वर्षतकगिनें तोभीपारावार नहीहोवै फिरभीउस मिथ्यावादीको संतोषनहीभया मिथ्याकहनेसेकि जितनेआकाश मेतारे औरजितने वृष्टिकेबिंदु उतनेगोदान नृगराजनेकिये फि- रभीवह दुर्गतिकोप्राप्तभया क्योंकिएकगाय एकब्राह्मणकोपहिले दिईथी फिरभूलके दूसरेकोदेदिई फिरदोनोंब्राह्मण लडनेलगे- किएक कहेयहमेरीगायहै दूसराकहेकिमेरी तबनृगराजनेकहा किदोनोंतुम समझकेएकतो इसगायकोलेलेओ दूसराएककबद- लेमें सौहजारलाख करोड़और सबराज्य लेलेओ परन्तुलडोमत वेदोनोऐसेमूर्खकिलडनेहीरहे किन्तुशान्तनभयेऔरफिर राजा कोआपदेदियाकितूदुर्गतिकोजाइसमबिचारनाचाहिये किएक- तोइसने कर्मकांडकीनिन्दाकिईकीथोडोसीभीभूलपडजायतोदुर्ग- तिकोजाय इससे कर्मकाण्डमेंकुछफलनहो ऐसाउसकोमिथ्या,द्वि

थीकिइसप्रकारकी मिथ्याकथाउसनेलिखी औरब्राह्मणोंकीनिन्दा
लिखीकिसदाहठीहोतेहैं औरराजाने उनकोदण्डभी नहीदिया
ऐसेपुरुषोंको दण्डदेनाचाहिये राजाकोफिरकभी हठदुराग्रहन
करैं औरराजाका अपराधक्याभयाथा किउसकोंश्रापलगा एक
गोदानके व्यतिक्रमसेदुर्गतीकोवहगया और असंख्यातगोदानका
पुन्यउसका कहांगयायह अन्धकारकीबात उनकीकिइतने उसने
गोदानकिये परन्तु सबउसकेनष्टहोगये बहुतगोदानोके पुन्यनेकु-
छसहायनहीकिया फिरउसनेएककथालिखीकि रथेनवायुवेगेन
जगामगोकुलंप्रति जबकंसनेअक्रुरजीको श्रीकृष्णकेलेनेकेवास्तेभेजा
तबमथुरासे सूर्योदयसमयमें बायुवेगरथके ऊपरबैठ केचलेदो-
कोस दूरगोकुलथासोचारप्रहरमेंअर्थात् सूर्यास्तसमयमेंगोकुल
कोआपहुचे इससेपूंछनाचाहियेकि रथकावायुवेगकहांनष्टहोगया
जोकोईकहेकि अक्रूरजीकोप्रेमहुआ सोदेरसेपहुंचेपरन्तु घोड़े-
कोऔर सहीसको प्रेमकहांसेआया और उसका बायुबेग उसने
क्योंमिथ्यालिखा फिरपूतनाको श्रीकृष्णने मारके गोकुलमथुरा
केबीचमें उसकाशरीर डालदिया सोछ: कोसतकउसशरीर की-
स्थूलतालिखी फिरकंसको मालूम भीनहीं भयाकि पूतनामारी
गई वानहीं जोछ:कोसको स्थूलताहोतीतो दोकोसकेबीचमें कैसे
समाताकिन्तु गोकुलमथुरा येदोनोंचूर्णहोजाते औरगोकुलमथु-
राके पारकोस २ तकशरीरगिरतासो ऐसी २ झूठकथा लिखीहैं
परन्तु कथाकरनेऔरकरानेवाले सबभांगपानकरकेमस्तहोगये-
हैं किऐसेझूठकोभीनहीं जानसक्ते ब्रह्माजीको नारायणजीनेवर
दियाकि। भवान्कल्पविकल्पेषु न विमुह्यतिकर्हिचित् जबतकसृष्टि
है इसकानामहै कल्पऔरजबतक प्रलयबनारहे उसकानामहै वि-
कल्पसोनरायणने ब्रह्माजीसेकहाकितुमको कभीमोहनहोगा फि-
रवत्सहरणकथामेंलिखा किब्रह्मामोहितहोगये और बछड़े कोह-
रलियाऔरउनीब्रह्मानेतोकहाथा किआपवासुदेवऔदेवकीकेघर

मेंजन्म लीजिये फिर कैसोगाढी भांगपी लिई कि झटभू लगये कि यह गोपहै वा विष्णु का अवतार है और भागवत बनानेवालने ऐसा नशा किया है कि बड़ा अंधकार इसके हृदय में है कि ऐसा बड़ा पूर्वापर विरुद्ध लिखता है और जानता भी नहीं प्रिय व्रत को कथा उसने लिखी कि सात दिनतक सूर्योदय नहीं भया तब प्रियव्रत रथ पै बैठके सूर्य की नांई प्रकाशित होके घूमने लगा सो उसके रथके पहिये के लीक से सात दिनतक घूमने से सात समुद्र सप्तद्वीप बनगये इससे पूंछना चाहिये कि रथके चक्र को इतनी बड़ी स्थूल लीक भई तो उस रथ के चक्र का क्या प्रमाण रथ अश्व और प्रियव्रत के शरीर का क्या प्रमाण होगा एक रथ इस कथा से इतना स्थूल होगा कि पृथ्वी के ऊपर अवकाश नहीं हो सक्ता और सूर्य आकाश में भ्रमण कर्त्ता है प्रियव्रत ने पृथ्वी के ऊपर भ्रमण किया फिर जितना सूर्य का प्रकाश उतना उससे कभी नहीं हो सक्ता और सूर्य लोक के इतना स्थूल भी कभी नहीं हो सक्ता भूगोल के विषय में जैसा उसने लिखा है वैसा उन्मत्त भी न लिखता तथा सुमेरु पर्वत के विषय में जैसा लिखा है वैसा बालक भी नहीं लिखेगा सो ऐसी असंभव और मिथ्या कथा भागवत का करनेवाला लिखता है श्रीकृष्ण विद्वान धर्मात्मा और जितेन्द्रिय थे ऐसा महाभारत की कथा से यथावत् निश्चय होता है सो श्रीकृष्ण की जैसी निन्दा इसने कराई ऐसी किसी की न होगी क्योंकि उसने रासमंडल की कथा लिखी उसमें ऐसी २ बात लिखी जिससे यथावत् श्रीकृष्ण की निन्दा होय जैसे कि वृन्दावन से महावन छः कोस है वृन्दावन में वंसी बजाई उस शब्द के कर २ गांव और मथुरा में किसी ने नहीं सुना किन्तु जैसा बांदर उड़के जाय वैसा शब्द उड़के महावन में कैसे गया होगा फिर उस शब्द को सुनके महावन की स्त्रियां व्याकुल होगई फिर उसके पतियों ने निरोध भी किया तो भी किसी ने न माना फिर उलटा आभूषण और वस्त्र धारण कर के वहां से चली सो छः कोस वृन्दावन में न जाने पक्षी की नांई उड़ गई होंगी पग का आभूषण नाक में नाक का आभूषण पग में कैसे धारण कर लेगी फिर श्रीकृ-

ष्णनेगोपियोंसेकहाकितुमनेबडाबुराकामकियाइस्से तुमअपनेर घ
रकोचलीजाओ औरअपनो२ पतिकोसेवाकरो पतियोंकीआज्ञा
भंगमतकरो फिरगोपियांबोलीं कियेझूठपतिहैं सत्यपतितोआ-
पहोहैं हमउनकेपासक्यों जाय आपकोछोडकेतबतोश्रीकृष्णभीप्र-
सन्नहोगये औरहाथसेहाथ पकडकेझटक्रीडा करनेलगेसो छः
मासकोरात्रिकरदिई क्योंकिस्त्रियांबहुतथीं औरकामातुरथीफि-
रश्रीकृष्णने भीविचाराकि इनमेंथोडेकालमें तृप्तिनहोगीइस्सेछः
मासकाक्रीडाकेवास्ते कालबनायाफिर क्रीडाकरते२ अन्तर्ध्यान
होगए फिरगोपियांबहुतव्याकुलहोनेलगींऔररोनेलगीं तबश्री
कृष्णफिरप्रसिद्धहोगये तबफिरगोपीप्रसन्नहोगईं फिरभीसबमि-
लके क्रीडाकरनेलगे फिरएकबारएकगोपीकोश्रीकृष्णकंधेपरले-
केबनमेंभागगए उसस्त्रीकावीर्यस्रावहोगयाइसमेंविचारनाचाहि-
एकि श्रीकृष्णकभीऐसी बातनकरेंगेइस्से बहुतजगत्काअनुपका-
रहोताहै क्योंकिस्त्रीलोगगोपियोंका दृष्टान्तसुनके व्यभिचारिणी
होजांयगीतथापुरुषभीश्रीकृष्णकादृष्टान्त सुनकेव्यभिचारीहोजां-
यगेऐसीकथासे बहुतजगतका अनुपकारहोताहै फिरवहांपरी-
क्षितनेप्रश्नकियाकियहधर्मकाउल्लंघनश्रीकृष्णने क्योंकियाउसका
शुकनेउत्तरदिया ॥ धर्मव्यतिक्रमोदृष्ट ईश्वराणांचसाहसम् तेजो-
यसांनदोषायवन्हेः सर्वभुजोयथा इसकायहअभिप्रायहै किजोई-
श्वरहोताहै सोधर्मकाउल्लंघनकर्त्ताहीहै किन्तुजैसाचाहेवैसा
करें परस्त्रीगमनकरले वाचोरीभीकरले उनकोदोषनहीं जैसे
तेजस्वीपुरुष जोचाहेसोकरले जैसेअग्निसबकोजलादेताहै औ-
रदोषनहीलगताहै वैसेकृष्णादिक समर्थयेउनकोभी दोषन-
हीलगताइनमेंविचारनाचाहिये किश्रीकृष्णधर्मात्माथेऐसाका-
मकभीनहीकरेंगे औरजोश्रीकृष्ण ऐसाकर्त्ततो कुंभीपाकसेकभी
ननिकलते इस्से श्रीकृष्णनेकभीऐसा कामनहीकियाथा क्योंकिवे
बडेधर्मात्माथे ईश्वराणांवच सत्यं तथैवाचरितंक्वचित् इसकायह

अभिप्रायहै किईश्वरकावचनकहीं २ जैसेसत्यहोताहै वैसेआचरणभीसत्यकहीं २होताहैसर्वथाईश्वर असत्यबोलताहैऔर अधर्मकोहोकर्तेहैंकिन्तु कदाचित् सत्यवचनबोलताहै ईश्वरऔरसत्यआचरणइनसेपूछनाचाहिये कोयहईश्वरकोबातहै वाउन्मत्तकिनेकहतेहैंकि जिसकेकण्ठमेंरुद्राक्ष वातुलसोकीमालानहोय वाललाटमेंतिलकउनकेमुख देखनेसेपापहोताहै उनकेकहोकि उनकीपीठदेखनेसेतोपुण्यहोताहोगा औरवेकहेंहैंकिउनकेहाथसे जललेनेमेंपापहोताहै तोउनसेकहोकी वहपगसेजलदेदे फिरतोकुछपापनहीहोगा ऐसी २ बातेंलोगोंनेमिथ्या बनालिईहैं औरभागवतकेविषयमेंहमनेथोडेसे दोषदेखाहै परन्तु भागवतसबदोष रूपहोहै वैसेहीअठारहपुराण अठारहउपपुराण औरसबतन्त्रग्रन्थवेनष्टहीहैं इससेकुछजगत् काउपकार नहीहोतासिवाय अनुपकारकेप्रश्नब्रह्माविष्णु महादेवादिक देवउनकानिवासस्थानकहांहैउत्तरमहाभारतकोरीतिसे औरयुक्तिसेभीयहनिश्चयहोताहैकिब्रह्मादिकसबहिमालयमें रहतेथेक्योंकि इसभूमिमें उनकेचिन्हपायेजातेहैंखाण्डवबन इन्द्रका बागथा पुष्करमेंब्रह्माने यज्ञकियाकुरुक्षेत्रमेंदेवोंने यज्ञकियाअर्जुन और श्रीकृष्णसे इन्द्रादिकोंकायुद्धहोनातथापाण्डवोंसेगान्धर्वोंका युद्धहोनादमयन्तीकेस्वयंवरमेंइन्द्रादिकोंकाआना अर्जुनकामहादेवसे पाशुपतास्त्रकासीखनातथादेवलोकमें जाकेविद्या कापढना भीमका कुबेर पुरीमे जानातथादशरथऔर कैकेयीका रथकेऊपरचढके देवासुरसंग्राम मेंजानासर्वत्रयुद्धदेखनेकेवास्ते विमानोंपरचढकेदेवोंका आनाइसदेशवासियोंका अनेकबार समागमका होनामहोदधि औरगंगाकाब्रह्मलोकसे आनास्वर्गारोहिणीका कैलासमेनिकलनाअलकनन्दाकाकुबेरपुरीसेआना वसुधाराकावसुपुरीसे गिरनानरऔरनारायणकाबदरिकाश्रममेंतपकाकरना युधिष्ठिरकाशरीर सहितस्वर्गमेंजाना नारदका देवलोकसे इसलोकमें आना यज्ञोंमें

देवोंका निमन्त्रण देना और उनोंका यज्ञोंमें आना नहुषके इन्द्रका होना युधिष्ठिर और यमराजका समागमका होना इसवक्ततक ब्रह्मलोक कैलाश वैकुंठ इन्द्र वरुण कुबेर वसु अग्न्यादिक आठ वसुपुरियोंका इनसबके आजतक उत्तरखण्डमें प्रसिद्ध विद्यमानोंका होना महाभारत और केदारखण्डादिकोंमें सबके जो २ चिन्ह लिखे हैं उनके प्रत्यक्षका होना हिमालयकी कन्या पार्वतीसे महादेवका विवाह होना वरुणकी कन्यासे नारायणका विवाह होना इत्यादिक हेतुओंसे हिमालयमें होदेवलोक निश्चित था इसमें कुछ सन्देह नहीं सो प्रथम जब सृष्टि भई थी इससे क्या आया कि प्रथम सृष्टि मनुष्योंकी हिमालयमें भई थी फिर धीरे २ बढ़ते चले वैसे २ सब भूगोलमें मनुष्य वास करते चले और फैलते भी चले सो जितने पुरुष हैं मनुष्य सृष्टिमें वसब हिमालय उत्तराखण्ड सेही बढे हैं सो उत्तराखण्डमें ३३ करोड़ मनुष्य प्रथम थे सब पर्वतोंमें मिलके फिर जब बहुत बढे तब चारों ओर मनुष्य फैल गए उनमें सबविद्या बल बुद्धि पराक्रमादिक गुणोंसे जायुक्त थे वे ब्रह्मादिक देव कहाते थे और उनकी गद्दीपर जो बैठता था उनका नाम ब्रह्मा पडता था वैसे ही महादेव विष्णु इन्द्र कुबेर और वरुणादिकनाम पडते थे जैसे मिथिलापुरीमें जो गद्दीपर बैठता था उसका नाम जनक पडता था तथा जो कोई राज्याभिषेक होके राजपर बैठे हैं उसका नाम पदवीके योग्य अबतक पडता जाता है जैसे अमात्योंका नाम दीवान लाटजज कलकटर इत्यादिक नाम प्रत्यक्ष पडते ही हैं परन्तु वे हिमालयवासी देव पदार्थविद्याको हस्तक्रियासहित अच्छी प्रकारसे जानते थे उनमेंसे विश्वकर्मा बडे पदार्थविद्यायुक्त थे अनेक प्रकारके यन्त्र अग्नि जल वायु इत्यादिकके योगसे विमानादिक रथ चलते थे धर्मात्मा तथा जितेन्द्रियादिक श्रेष्ठगुणवाले होते थे और बडे शूरवीर थे नाना प्रकारके आकाश पृथिवी और जलमें फिरनेके वास्ते बनाते थे आकाशमें जो यान रचते थे उसका नाम विमान रखते थे सो उन मनुष्योंमें जु बहुत दुष्टकर्म करनेवाले थे उनको हिमालयसे नि-

कालदिएथे सोहिमालयसे दक्षिणदेशमें आकरतेथेफिरउनकुकर्मकरनको लगगएथे उनकानाम राक्षसपडाथा और कुछउन डाकुओंसेसअच्छेथे उनकानामदैत्यपडगयाथा इनदैत्यऔरराक्षसोंसेहिमालयवासी देवोंकावैरबनगयाथा जबउनदेवोंकाबल होताथातबइनको मारतेथेऔरउनकाराज्य छीनलेतेथे जबदैत्यादिकोंकाबलहोताथा तबदेवोंकाराज्यछीनलेतेथे औरमारतभीथेएकशुक्राचार्यदैत्योंकागुरुथाऔरबृहस्पति देवोंकाथाउनदोनोंअपने२ चेलोंकोविद्यापढातेथे जबजिसकाबलबुद्धि पराक्रमबढताथाउनकाविजय होताथापरन्तु देवविद्याओंमें सदाश्रेष्ठहोतेथे औरहिमालयमें देवोंकेराज्यस्थानथे इससेदैत्योंकाअधिक बलनहींचलताथा सोअबउसहिमालय देवलोकमें कोईनहींहै किन्तु सबजोपर्वतवासीहैं देवोंकापरीवारवहीहै आर्यावर्त्तादिक देशोंमें जितने उत्तमआचारवालेमनुष्यहैं वेदेवोंकेपरीवारहैंऔरजितनेहवनोआदिक आजतकभी जोमनुष्योंकेमांसको खालेतेहैं वे राक्षसऔरदैत्यके कुलकेहैंसोमहाभारतादिक इतिहासोंसेस्पष्टनिश्चयहोताहै इसमेंकुछसंदेहनहीं एकजयपुरमेंनाभाडोमजातिकाथाजिसकागुरुअग्रदासथा सोउसकोंउननेचेलाकरलियाथा उनकानाम नाभादासरक्खाथा सोवैरागियोंकाजूठखाताथाऔरजहांवैरागीलोक मुखहातधोतेथे उसकाजलपीताथा सोवैरागियोंकेजूठअन्न औरजूठजलखानेपीनेसे सिद्धहोगया इसप्रमाणसेआजतकवैरागीलोक परस्परजूंठखातेहैं क्योंकिजैसनाभासिद्ध होगयावैसेहमलोगभी सिद्धहोजांयगे परन्तुआजतककोईजूंठके खानेऔरपीनेसे सिद्धनहीभया इससे यहभीनिश्चितभया किनाभाभीसिद्धनहीथा उननेएकग्रंथबनायाहै उसकानामभक्तमालरक्खाहैउसमेंवैरागियोंकानामसन्तरक्खाहैसोपीपाकीकथाउसनेलिखीहै उसकोस्त्रीकानाम सीताथाओउनकेपास बैरागीदसपांचआए उनकेखानपीनकेवास्ते पीपाकेपासकुछ नहींथासोउसकी स्त्रीके

पासकहाकि इनसाधुओंके खानेकेवास्ते कुछ लेआना चाहिये
क्योंकिउसकोकोई उधारवामांगनेमें नहींदेताथा औरउसकीस्त्री
सिताकरूपवतीथी सोएकदुकानदारके पासगईऔरकहाकिहमको
अन्नऔरघीतुमदेओतबवैश्यनेउसकोदेखके कहाकितूंएकरातभर
मेरेपासरहेतो तुझकोमैंदेऊं तबसीतानेकहाकि कुछचिन्तान-
हीसाधुओंकिसेवाकेवास्ते मेराशरीरहै तबवैश्यनेअन्नादिकदि-
यऔरउनवैरागियोंको भोजनउनने करायाफिरजब पहररात्रि
गईतबपीपासेकहाको ऐसीबातकहके मैंपदार्थलेआईहूं तबतोपी-
पानेधन्यवाददिया कितूंबडोसाधुओंकी सेवकहै परन्तुउसबक्तकु-
छ २ वृष्टिहोतीथीसोसीताको कंधेपरलेजाकेउसबनियेकेपासप-
हुंचादियातब बनियेनेकहाकि वृष्टिहोतीहैवृष्टिमेंतेरापगभीनहीं
भीजाफिरतूं कैसेआईतबसीतानेकहाकितुझको इसबातकाक्या
प्रयोजनहै तुझकोजोकरनाहोय सोकरतबवैश्यनेकहाकि तूंस-
चबोलसीताने कहाकिमेरा पतिकांधेपरचढाकेतेरेदुकानपैंपहुं-
चादिया तबतोवहवैश्य सीताकेचरणमें गिरपडाऔरकहाकितूं
औरतेरापतिधन्यहै क्योंकितुमने संतोकेवास्ते अपनाशरीरभीबे-
चडालायहसब बातउनकीअधर्मयुक्त औरझूंठहैक्योंकि यहश्रेष्ठ
पुरुषोंकाकामनहीं जोकिवेश्याऔर भडुओंकाकामकरै ऐसेहीध-
न्नाभगतकाविनाबीजसे खेतजमगयानामदेवको पाषाणकीमूर्त्ति
नेदूधपीलिया मीराबाईपाषाण कोमूर्त्तिमेंसमागई औरकोईभग-
तकेरासमेनारायण कुत्ताबनकेरोटी उठाकेभागे औरमीरा विष
पीनेसेभीनहीमरी इत्यादिकभगत मालकीबातझूंठहैऔरएकप-
रिकालउनसाधुओंकीसेवाकरताथा जोकिचक्रांकितथेवहभीच-
क्रांकितथा परन्तुवहपरिकाल डांकूपनेसेधनहरणकरकेसाधुओं-
कोदेताथा सोएकदिनचोरी सेवाडांकूपनसे धननहींपायाफिरब-
डाव्याकुलभया औरघोडे परचढके जहांतहांघूमताथा सोना-
रायणएकधनाढ्यके वेषसेरथपैंबैठके परिकालकोमिले सोझटप-

रिकालने उनको घेर लिया और कहा कि तुमको मार डालूंगा नहीं
तो तुम सब कुछ रख दो परन्तु उनके रखने में कुछ देर भई सो झट उ-
तर के नारायण के अंगुली में सोने की अंगुठियां थीं सो अंगूठी सहित
अंगुली को काट लिई तब नारायण बड़े प्रसन्न भये और दर्शन दिया कि
तू बड़ा भक्त है देखना चाहिये कि नारायण भी कैसे अन्यायकारी हैं डां-
कुओं के ऊपर कृपा करते हैं अर्थात् डांकू और चोरों के संगी हैं
फिर वे चक्रांकित लोग नित्य उपदेश सब करते हैं कि चोरी करके भी प-
दार्थ ले आवै और नारायण तथा वैष्णवों की सेवा में लगावै तो भी व-
ह बड़ा भक्त होता है और वैकुंठ को जाता है फिर वह परीकाल कोई ब-
निये के जहाज पर बैठके समुद्र पार बनियों के साथ चला गया वहां
बनियों ने जहाज में सुपारी भरी सो एक सुपारी का आधा खण्ड परि-
काल ने जहाज में धर दिया और वैश्यों से कह दिया कि मैं आधी सुपा-
री पार जाके ले लेऊंगा तब वैश्यों ने कहा कि एक क्या दश तुम ले लेना
तब परीकाल ने कहा कि नहीं मैं तो आधी ही लेऊंगा फिर जहाज पा-
र को आ गया जब सुपारी जहाज से उतारने लगे तब परिकाल ने क-
हा कि आधी सुपारी हमको दे दो तब वैश्य लोग सुपारी का आधा
खण्ड देने लगे सो परीकाल बड़ा क्रोध करके सबसे कहने लगा कि ये वै-
श्य मिथ्यावादी हैं क्योंकि देखो इस पत्र में आधी सुपारी मेरी लिखी है
सो ये देते नहीं सो अत्यन्त धूर्तता करने लगा और लड़ने को तैयार
भया। फिर जालसाजी करके आधी सुपारी नांव में से बटवा लिई उ-
न वैरागियों के सेवा में सब धन लगा दिया सो ऐसे परीकाल को च-
क्रांकित के संप्रदाय में बड़ी प्रतिष्ठा है सो चक्रांकित के मन्त्रार्थ ग्रंथ
में ऐसी बात लिखी है सो जितने संप्रदाई हैं वे अपने चेलेको। ऐसे २
उपदेश करके और ऐसे ग्रन्थों को सुना के पापों में लगा देते हैं फिर भ-
गतमाला में एक कथा लिखी है कि एक साधू एक ब्राह्मण के घर में
ठहरा था और ब्राह्मण उसकी सेवा करता था उसको एक कुमारी क-
न्या थी उसमें वह साधू मोहित हो गया सो उस कन्या को ले के र। किमें

कुकर्मकियाऔरखटियाकेउपरदोनोंनंगेसोगएथे सोजबउसकन्या
कापिताप्रात: कालउठातबदोनोंकोनंगे देखकेअपनीचादरदोनों
परओढादीई औसिपाहियोंसे कहाकियहसाधू भागनजाय फि-
रवहबाहरचलागया तबवेदोनोंउठे उठकेदेखा किवस्त्रकिननेडा-
लासोकन्याने पहिचानलिया किमेरेपिताकायहवस्त्रहै फिरवह-
कन्याडरकेभागगई भागकेछिपगई औरसाधूभीवहांसे निकलके
जानेलगा तबसिपाहियोंनेउसको रोकलिया तबतोसाधूबहुतड-
रा तबतक कन्याकापिता बाहरसेआया सोसाधू केपासआकेसा
ष्टांगनमस्कारकिया किमेराधन्यभाग्यहै जोकिआपनेमेरीकन्या-
काग्रहणकिया इस्सेमेराभी उद्धारहोजायगा सोआपआनन्दसेमे
रेघरमेंरहिये औरकन्याकोभी मैंनेआप कोसमर्पण करदिया त
बसाधूबडा प्रसन्नहोकेरहा औरविषय भोगकरनेलगा इसकोवि
चारना चाहिये किबड़े अनर्थकीबातहै क्योंकिऐसीकथा कोसुन
केसाधू औरगृहस्थलोग भ्रष्टहोजातेहैं इसमेंकुछसंदेहनही फि
रभक्तमालमेंएक कथालिखीहै किएकभक्तथा उसकेघरमें साधूपा
हुनेआये फिरउनकी सेवाकेवास्ते पितापुत्रदोनों चोरीकरनेके-
वास्तेगये सोएकबनिये कीदुकान कीभींतमें सुरंगदेकेपुत्रभीतर
घुसा औरपिताबाहरखडारहा सोभीतरसे घीचीनीअन्ननिका-
लकेदेताथा औरवहलेताथा जबभीतरसेबाहर निकलनेलगा त
बतक दुकानवालेजागउठे सोउसकेपगतो भीतरथे औरसिरबा-
हरनिकलाथा तबतकउसनेउसके पग पकडलिये औरसिरपकड़
लियापिताने दोनोंतर्फ खींचनेलगे सोउसकेपिताने विचारकि-
याकि हमपकडजांयगेतो साधूओंकी सेवामेंहरकतहोगी सोपुत्र
कासिरकाटके औरघृतादिक पदार्थोंकोलेके भागगयातबतकरा
जपुरुषआये और उनकाशरीर राजघरमेंलेगये औरखोजहोने-
लगा कियहकिसकाहै फिरवहअपनेघरमेंचलागया और साधु-
ओंकेवास्ते भोजनबनाया औरउन कीपंक्तीभई उस समयमेंसाधु

ओंनेपूंछाकि कहांहैतुमारालडका उसकीजलदी बोलाओ तबउ-सकेमाता और पिता जोचोर उन्नेकहाकि कहींचलागयाहोगा आ जायगा आपतबतकभोजनकोजिये तबसाधुओंनेकहाकि वहजबआवेगा तबहमलोग भोजनकरेंगे अन्यथानहीं तब उसकीमा-तानेरोकेकहा किवहतोमारागया तबसाधुओंनेपूंछा कैसे मारा गया किहमारेघरमेंआपकेसत्कारकेहेतु पदार्थनहोथा इससे वेदोनोंचोरीकरनेकोगयेथे वहांवह मारागया तबसाधुओंनेकहाकि उसकाशरोरकहांहै तब उन्ने कहाकि सिरहमारेघरमे हैऔरश-रीर राजघरमेंहै वेसाधूलोग राजघरमें जाके शरीरलेआयेशरीरऔरसिर कासन्धान करकेबीचमेंरखदिया फिरवेसाधूनाचने-कूदनेऔरगानेलगे फिरवहजीउठा और साधूओंनआनन्दसेभोजनकिया औरउनसेकहासाधुओंने कितुमबडेभक्तहो और स्वर्गमेंतुह्मारावासहोगा इसमेंबिचारनाचाहिये किसाधुओंकीआज्ञाहोनाऔरचोरीकाकरना फिरनरकमेंनजाना किन्तु स्वर्गमेंजा-ना यहबडोमिथ्याकथाहै ऐसीकथाकोसुनके लोगसब भ्रष्टबुद्धिहोजातेहैं ऐसी२ कथासबभ्रष्ट भक्तमालमेंलिखीहैं फिरभीलोगों-कीऐसीमूर्खताहैकिसुनतेहैं औरकतेहैं शिवपुराणमें त्रयोदशीप्र-दोषव्रत जोकोईनकरै वेनरकमेंजायगे तन्त्र और देवीभागवता-दिकोंमेलिखाहै नवरात्र काव्रत नकरैं वेनरकमेंजायगे तथापद्मपुराणादिकमेंलिखाहै किदशमी दिगपालोंका एकादशी विष्णु-का द्वादशीवामनका चतुर्दशीनृसिंह औरअनन्तका अमावस्या-पितृओंका पौर्णमासीचन्द्रका सो मतमतान्तरोंसे औरपुराणत-था उपपुराणोंसे यहआयाकि किसीतिथिमेंभोजननकरना औरजलभीनपोना औरजोकोईखाया वा पोयावहनरककोजायगा इसमेंवकहतेहैं किजिसकाबिवाह उसकोगीत इससे ऐसीकथामेंविरोधनहीआता उनसेपूछनाचाहियेकि जिसकाविवाह होताहै उसकेगोतगायेजातेहैं परन्तु पहिलेजिनके बिवाहभयेथे औरजिनके

होनेवालेहैं उनका खण्डनतोनहीहोता कियहीउत्तमहै वापहि ले जिसके बिवाह भये और जिनके होंगे उनको नीचतो नहो बनाते इस्से ऐसे२ मूर्खताकेदृष्टान्तसे कुछनहीहोता ऐसे२ स्लोक लोगोंनेबना।लियेहैंकि शीतलेत्वंजगन्माता शीतलेत्वंजगत्पिताशी तलेत्वंजगद्धात्री शीतलायैनमोनमः एक विस्फोटरोगहै उसका नामशीतलारक्खा याद्दशीशीतलादेवी तादृशोवाहनःखरः शीत लाअष्टमोकोगधेकीपूजाकर्तेहैं औरहनुमान् काउपमानके बानर कीपूजाकर्त्तेहैं भैरवकावाहनकुत्ताकोमानकेपूजाकर्त्तेहैंतथापाषा-णपिप्पलादिक वृक्षतुलस्यादिक औषधीदूब और कुशादिक घास-पित्तलादिक धातु चन्दनादिककाष्ठ,पृथिवी,जल,अग्नि,वायु,जूता, औरविष्टातकआर्यावर्त्त देशवालेपूजाकर्त्तेहैं इनकोसुखवाकल्याण कभीनहीहोसक्ता जबतकइन पाखण्डोंको आर्यावर्त्त बासीलोग न छोडेंगे तबतकइनकाअच्छा कुछनहीहोसक्ता फिरएकशालिग्राम पाषाण औरतुलसीघास दोनोंका बिवाहकरतेहैं तथा तडागबाग कूपादिकोंका बिवाहकरतेहैं औरनानाप्रकारकोमूर्तियांबनाकेमं-दिरमेंरखतेहैं उनकेनाम शिवऔर पार्वती नारायणऔर लक्ष्मी दुर्गा काली भैरव,बटुक ऋषिमुनि राधा औरकृष्णसीता औरराम-जगन्नाथ विश्वनाथ गणेश और ऋद्धिसिद्धि इत्यादिक रखलिये-हैं फिरइनकेपुजारीबहुतदरिद्र देखनेमेंआतेहैं और सबसंसारसे धनलेनेके हेतु उपदेश करतेहैं किआओ यजमान धनचढाओ दे-वताओंको नहीतोतुमको दर्शनका फलनहोगा आमनियालेओ ठाकुरजीकेहेतु बालभोगलेआओ तथाराजभोगके वास्ते देओऔ-रगहनाचढाओ तथाबस्त्र औरनारायण तथा माहादेवके वास्ते मंदिरबनवाओ औरखूबआजीविका लगवाओ हमकहतेहैंकि ऐ-सेदरिद्रदेवता औरमहंत तथापुजारीलोग आर्यावर्त्त के नाशके वास्ते कहांसेआगये औरकौनसा इसदेशकाअभाग्य औरपापथा किऐसे२ पाखण्डइसदेशमेंचलगये फिरइनकोलज्जाभीनहीआ-

तीकि अपने पुरुषोंका उपहासकर्त्ते हैं कि यह सीताराम हैं इत्यादि कनाम लेलेके दर्शनकराते हैं इसमें बडा उपहास है परन्तु समझते नही देखना चाहिये कि कृष्णतो धर्मात्माथे उनके ऊपर झूठ जाल भागवतमें लिखा हैं फिर उसी लीला को रासमण्डल बनाके कहते हैं उसमें किसी लड़केको कृष्ण बनाते हैं किसीको राधा और गोपियां बनालेते हैं तथा सीताराम और रावणादिक लडकोंको बनाके लीला करतेहैं सो केवल बड़े लोगोंका उपहास इसमें होता है और कुछ नही क्योंकि श्रीकृष्ण और रामादिकोंके जो सत्यभाषणादिक व्यवहार तथा राजनीतिका यथावत्पालना और जितेन्द्रियादिक सब विद्याओंका पढना इन सत्यव्यवहारोंका आचरण तो कुछ नही करते किन्तु केवल उपहासकी बातें तथा पापोंको प्रसिद्ध कर्त्ते हैं अपने कुगतिके वास्ते दशसूनासमंचक्रं दशचक्रसमोध्वजः दशध्वजसमोवेषो दशवेषसमोनृपः॥ यह मनुका श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि सूना नाम हत्या सो दश हत्याके तुल्य जीवोंको पीडा और हनन चक्रसे होता है सो तेली वा कुहांरके व्यवहारसे जीवोंको दशगुण पीडा वा हनन होता है इस्से दशगुण धोबो वा मद्यके निकालनेवाले के व्यवहारमें सौगुण हत्या होती है तथा इस्से दशगुण हत्या वेषमें होती है अर्थात् वेष किसको कहते हैं कि किसीका स्वरूप बनाना और नकल करना अर्थात् मूर्तिपूजन रामलीला और रासमण्डलादिक जितने व्यवहार हैं वे सब वेषमें ही गिने जाते हैं क्योंकि उनका वेष धारण ही किया जाता है इस्से वेषमें हजार हत्याका अपराध है तथा जो राजा न्यायसे पालन नही करता और अन्याय कर्त्ता है वह दस हजार हत्याका स्वरूप है इस्से वेष बनाना वा बनवाना तथा देखना भी सज्जनोंको न चाहिये और इन सब व्यवहारोंको छोडना चाहिये और अच्छे व्यवहारोंको करना चाहिये ऐसी इस देशमें नष्टप्रवृत्ति भई है कि कोई ऐसा कहता है मारण मोहन उच्चाटन वशीकरण और विद्वेषणादिक मैं जानता हूं इनसे पूंछना चाहिये कि तूं जीवन मरे भयका भी करा-

सक्ताहै वानही सोकोईदैवयोगसेमर जाताहै वाकपटछलसे वि-
षादिदेके मारडालतेहैं फिरकहतेहैं किमेरा पुरश्चरण सिद्ध हो
गया यहबातसबझूंठहै कोईरोगीहोताहै उसको बतलाताहै कि
भूतचढगयाहै फिर दूसरा बतलाता है किइसकेऊपर शनैश्चरा-
दिकग्रहचढेहैं तीसराकहताहै किसीदेवताकीखोरहै चौथा कह-
ताहै किकिसीकाआपलगाहै येसब बातमिथ्याहैं कोईकहताहैकि
मैंरसायन बनाताहूं औरदूसरा कहताहै किमैंपारेकोभस्मबना
ताहूं उसकोकोईखालेतो बुड्ढेकाजवान होजाताहै यह भीमि-
थ्याहीजानना औरबहुत सेपाखण्डीलोग बहुतपुरुषऔरस्त्रियों
सेकहतेहैं किजाओतुमकोपुत्र होजायगा सोसबतोबन्ध्याहोतीही
नहीहैं जोकिसीकोपुत्रहोजाताहै तबवहपाखण्डीकहता हैकिदे-
खमेरेवरसे पुत्रहोगया औरऐसेभी कहताहै किमेरवरसे पुत्रहो-
गया वहस्त्रीऔर उसका पतिभी बकतेरहतेहैं किबाबाजीके वरसे
मुझको पुत्रभया उनकीबातसुनके बहुतमूर्खलोग मोहित होके
बाबाजीकोपूजामें लगजातेहैं फिरवहपाखण्डी धनपाकेबडे२ अ-
नर्थकरतेहैं यहसबबातझूंठहै मुहालेऔरमुहई इनदोनोंसेधूर्त्त
लोगकहदेतेहैं कितुह्माराबिजयहोगा सोदोनोंकापराजयतोहो-
तानहीं जिसकाविजयहोताहै उससे खूबधनलेतेहैं किहमारेपुर-
श्चरणऔरवरसे तेराविजयभयाहै अन्यथाकभीनहोता फिरबहुत
बुद्धिहीनपुरुष इसबातमेंभी धननाशकरतेहैं कोईकहताहैकि जो
कुछहोताहैसो ईश्वरकीइच्छासेहीहोताहै जैसाचाहता है वैसा
करालेताहै औरकिसीकेकुछकरनेसेहोतानहींसबकोनचावैराम
गोसांई ऐसे २ झूंठवचनबनालियेहैं इनसेपूंछना चाहियेकि जो
वहमिथ्याभाषण चोरीपरस्त्रीगमनादिक करताहैतो वहबहुतबु
राहैवहकभीईश्वर वाश्रेष्ठनहीहोसक्ता कोईकहताहैकि जोकुछ
होताहैसोप्रारब्धसेही होताहै इनसेंपूंछनाचाहिये कितुमव्यवहा
रचेष्टाक्योंकरतेहो सोपुरुषार्थमेंहो सदाचित्तदेनाचाहियेअन्य-

चनहीचङ्गतऐसे २ बालकोंकोऔर स्त्रियोंकोबहकातेहैंकिवे जन्म तकनहो सुधरसक्ते ऐसाकहतेहैंकि वहमातापिता तोभूंडहैंतुम आजाओनारायणके शरणऔरएक२साधूहजार२कोमूडलेताहै औरबहकाके पतितकरदेतेहैंउनकामरणतक कुछसुकर्मनहीहोताक्योंकिसुधरेतो तबजोकुछ विद्यापढे औरबुद्धिहोतो फिरएक घरकोछोड़देतेहैं औरमातापिताकी सेवाभीछोडदेतेहैंफिरकुटी मठऔर मंदिरोंकोबनाके हजारहांप्रकारके जालमेंफसजातेहैं उनसेपूंछनाचाहियेकि तुमलोगोंनेघर औरमातापितादिकक्यों छोडेथेतबवेकहतेहैं किऐसासुखघरमेंनहीहै ठीकहै किघरमेंछप्परकेनोचेरहनापडताथा मजूरीमेहनतसेचना औरजवकाआटाभीपेटभरनही मिलताथा सोआर्य्यावर्त्तमेंअन्धकारपूर्णहै नित्य मोहनभोगमिलताहै औरनित्यनयेभोग ऐसासुखस्त्रीकाभी गृहाश्रमनमेंहोहोता इस्से गृहाश्रममेंकुछहै नहीदेखियेकिएकरुपैया कोईमंदिरमेंचढाताहै उसकोएकआनेका प्रसाददेतेहैं कभीनही देतेहैंपरन्तुहमलोगोंने इसकोविचारलियाहैकिसोलहपचाससौ औरहजारगुनातकभी इसमंदिरकेदुकानदारोमें तथातीर्थमें होताहै अन्यत्र कैसोहीदुकानदारोकरो तोभीऐसा लाभनहीहोता क्योंकिखाना नित्यनयीस्त्रियां औरनित्यनानाप्रकार केपदार्थोंकी प्राप्ति अन्यत्रकहीं नहीहोतो सिवायमंदिर पुराणादिकोंकोकथा और चेलोंकेमूड़नेमे इस्सेआपहजारकहो हमलोगइस आनन्दकोछोडनेवालेहैं नहीअच्छा हमनेभोजानलिया।हैकिजबतकयजमानविद्या औरबुद्धियुक्तनहोहोंगे तबतकतुम लोगकभीनहोछोडोगे परन्तुकभीदैवयोगसेविद्या औरबुद्धिआर्य्यावर्त्त मेंहोगी फिरतुमको औरतुमारे पाखण्डोंकोवे सेवकऔरयजमान होछोडेंगे तबपीछेभकमारकेतुमलोग भीछोडदेओगे ऐसे२ मिथ्या मत चलगयेहैं किकानकोफाडके मुद्राकोपहिरनेसे योगीऔर मुक्ति होतीहै सोइनकेमतमेंमत्से न्द्रनाथ औरगोरक्षनाथ दोआचार्य

भयेहैं उननेयहमतचलाया उनकोशिवकाअवतारऔर सिद्धमानतेहैं नमःशिवाय उनकामन्त्रहै औरअपने मतकादिग्विजयभीबनालियाहै औरजलंधर पुराण हठप्रदीपिका गोरक्षशतकादिकबनालियेहैं फिरकहतेहैं येग्रन्थमहादेवनेबनायेहैं उनकाअनाचारवाममार्गियोंकीनाईहै क्योंकिजैसेवाममार्गी लोग श्मशानमेपुरश्चरणकर्त्तेहैं तथामनुष्यकपाल खानेपीनेकेवास्ते रखतेहैं तथारजस्वलास्त्रीका वस्त्रशिखावाबाहुमें बांधरखतेहैंइससे अपनेकोधन्यमानतेहैं औरऐसे २ प्रमाण मानलेतेहैं रजस्वलास्तिपुष्करंचाण्डालीतुस्वयं काशीव्यभिचारिणीतुप्रज्ञास्यात्पुंश्चलीतुकुरुक्षेत्रं यमुनाचर्मकारिणी इत्यादिकवचनोंमे वेऐसामानतेहैं किइनस्त्रियोंकेसाथ समागम करनेसे इनतीर्थोंकाफलप्राप्त होताहैफिरवेऐसे २ श्लोककहतेहैं किहालांपिबतिदीक्षितस्यमंदिरेसुप्तोनिशायांगणिका गृहेषुदिक्षितनाम रक्खाहै मद्यबेचनेवालेकाउसकेघरमे जोपुरुषनिर्भयऔर निर्लज्ज होकेमद्यपीताहै फिरवेश्याकेघरमेजाके उससे समागमकरै औरवहींसोजाय उसका नामसिद्ध औरमहावीर रखतेहैं औरलज्जादिक आठपाशोंकोछोडदे तबवहशिवहोताहै इसमेंऐसा प्रमाणकहतेहैं॥ पाशबद्धोभवेज्जीवः पाशमुक्तःसदाशिवः अर्थात जितनेव्यभिचारादिकपापकर्महैंउनकेकरनेमें लज्जादिकजबतककर्त्ताहै तबतकवहजीवहै जबनिर्लज्जादिक दोषोंसेयुक्तहोताहै तबसदाशिवहोजाताहै देखनाचाहियेकि यहकैसीमिथ्याबातउनकीहै फिरउनने मद्यकानामतीर्थरक्खाहै मांसकानामशुद्धि मत्स्यकानामतृतीया रोटीकानामचतुर्थीऔरमैथुनकानामपंचमो जबवेआपसमेंबातकर्त्तेहैं किलेआओतीर्थऔरपीयो इसवास्तेइननेऐसेनाम रखलियेहैं किकोईऔरनजाने औरजितनेवाममार्गीहैं उनकेकौलवीर भैरवआदिऔरगणयेपांच नामरखलियेहैं स्त्रियोंकेनाम भगवती देवीदुर्गाकालीइत्यादिकरखलियेहैं औरजोउनकेमतमेंनहीहैंउनकानामप-

शु करटक शुष्क और विमुखादिक नाम रखलिये हैं सो केवल मिथ्या जाल उनका है इसको सज्जन लोग कभी न मानैं वैसे ही कान फटे नाथों का व्यवहार है क्योंकि वे भी श्मशान में रहते हैं मनुष्यों का कपाल रखते हैं वाममार्गियों से वे मिलते हैं इत्यादिक बहुत नष्ट व्यवहार-आर्यावर्त्त में चल जानेसें देशका श्रेष्ठ व्यवहार नष्ट होगया और सब देश खराब होगया परन्तु आजकाल अंगरेजके राज्यसे कुछ२ सुधरना और सुख भया है जो अब अच्छे २ ब्रह्मचर्याश्रमादिक व्यवहार-वेदादिक विद्या और पाखण्ड पाषाणपूजनादिकों का त्याग करैं तो इनको बहुत सुख हो जाय क्योंकि राज्यका आजकाल बहुत सुख है धर्म विषय में जो जैसा चाहै वैसा करै और नानाप्रकार के पुस्तक भी यन्त्रालयों के स्थापने से सुगमतासे मिलती हैं अच्छे २ मार्ग शुद्ध बनगये हैं तथा राजा और दरिद्र की भी बात राजघर में सुनी जाती है कोई किसीका जबरदस्तीसे पदार्थ नहीं छीन सक्ता अनेक प्रकार की पाठशाला विद्या पढने के वास्ते राजप्रबन्धसे बनती हैं और बनी भी हैं उन में बालकों की यथावत् शिक्षा होती है और पढने से आजीविका भी-राजघर में पढने वाले को होती है किसी का बन्धन वा दण्ड राजघर में नहीं होता जिसमें जिसको खुशी होय उसको वह करै अपनी प्रसन्नतासें अत्यन्त देश में मनुष्यों की वृद्धि भई है और पृथिवी भी खेत आदिकों से बहुत होगई है वनादिक नहीं रहे हैं लडाई बखेडा गदर कुछ इस वक्त नहीं होते हैं और व्यवस्था राजप्रबन्ध से सबप्रकार से अच्छी बनी है परन्तु कितनी बात हमको अपनी बुद्धि से अच्छी मालूम नहीं देती हैं उनको प्रकाश कर्त्ते हैं न जाने वे बडे बुद्धिमान् हैं उनने इन बातों में गुण समझा होगा परन्तु मेरी बुद्धि में गुण इन बातों में नहीं देखपडते हैं इसे इनबातों को मैं लिखता हूं एक तो यह बात है कि नोन और पौंन रोटी में जो कर लिया जाता है वह मुझको अच्छा नहीं मालूम देता क्योंकि नोनके बिना दरिद्र का भी निर्वाह नहीं होता किन्तु सबको नोन का आवश्यक होता है और वे मजूरी मेहनत से जैसे तैसे

निर्वाहकर्ते हैं उनके ऊपर भी यह नोन का दण्ड तुल्य रहता है इससे दरिद्रोंको क्लेश पहुंचता है इससे ऐसा होय कि मद्य अफीम गांजा भांग इनके ऊपर चौगुना कर स्थापन होय तो अच्छी बात है क्योंकि नशादिकों का छूटना ही अच्छा है और जो मद्यादिक बिलकुल छूट जांय तो मनुष्योंका बडा भाग्य है क्योंकि नशासे किसीको कुछ उपकार नहीं होता परन्तु रोगनिवृत्तिके वास्ते औषधार्थ तो मद्यादिकों की प्रवृत्ति रहना चाहिये क्योंकि बहुत से ऐसे रोग हैं कि जिनके मद्यादिकही निवृत्तिकारक औषध हैं सो वैद्यकशास्त्रकी रीतिसे उन रोगोंकी निवृत्ति हो सक्ती है तो उनको ग्रहण करैं जबतक रोग न छूटे फिर रोगके छूटनेसे पीछे मद्यादिकोंको कभी ग्रहण न करें क्योंकि जितने नशाकारनेवाले पदार्थ हैं वे सब बुध्यादिकोंके नाशक हैं इससे इनके ऊपरही कर लगाना चाहिये और लवणादिकोंके ऊपर न चाहिये पौनरोटीसे भी गरीबलोगोंको बहुत क्लेश होता है क्योंकि गरीबलोग कहींसे घास छेदन करके लेआये वा लकडीका भार उनके ऊपर कौडियोंके लगनेसे उनको अवश्य क्लेश होता होगा इससे पौनरोटीका जो कर स्थापन करना सो भी हमारी समझसे अच्छा नहीं तथा चोरडाकू परस्त्रीगामी और जूआके करनेवाले इनके ऊपर ऐसा दण्ड होना चाहिये कि जिसको देख वा सुनके सब लोगोंको भय होजाय और उनकामोंको छोडदें क्योंकि जितने अनर्थ होते हैं वे सब उनसेंही होते हैं सो जैसा मनुस्मृति राजधर्ममें दण्ड लिखा है वैसा ही करना चाहिये जब कोई चोरी करै तब यथावत् निश्चय करके कि इसने अवश्य चोरी की है कुत्ते के पंजेको नांई लोहेका चिन्ह राजा बनाय रखे उसको अग्निमें तपाके ललाटके भौंके बीचमें लगादे कुछ बेत भी उसको मारदे और गधे पै चढाके नगरके बीचमें बजारमें जूतियां भी लगती जाय और घुमाया करै फिर उसके कुछ धन दण्ड दे अथवा थोडे दिन जहलखानेमें रक्खे वहां सूखे चने पाव भरतक खाने को दे और रातभर पिसवावै न पीसे तो वहां भी उसको जूते दें और दिन-

समेंभीकठिनकाम उस्से करावे जबतकवह निर्बलनहोजाय परन्तु
ऐसाबहुतदिननरक्खे जिस्से किमरनजायफिरउसको दोतीनदि-
नतक शिक्षाकरै किसुनभाई तैंनेमनुष्यहोके ऐसाबुराकामकिया
कितेरेऊपर ऐसादण्डहुआ हमकोभीतेरा दण्डदेखकेबडाहृद-
यमेंदुःखभया औरआपभलेआदमी होकेव्यवहारकरना फिरऐ-
साकाम कभीनकरनाचाहिये अच्छे २ कामकरनाचाहिये जिस्से
राजघरमें औरसभामें तथाप्रजामें तुमलोगोंको प्रतिष्ठाहोय और
आपलोगोंके ऊपरऐसाकठिन जोदण्ड दियागया सोकेवलआप-
लोगोंकेऊपरनही किन्तुसबसंसारकेऊपर यहदण्डभयाहै जिस्से
इसदण्डकोदेखवासुनके सबलोगभयकरैं औरफिर ऐसा काम
कोईनकरै ऐसे शिक्षाजितनेबुरे कर्मकरनेवालेहैं उनको दण्डके
पीछेअवश्यकरनीचाहिये क्योंकि दण्डकातोसदाउसकोस्मरणरहै
औरहठी वाविरोधीमबनजाय इसवास्ते शिक्षा अवश्यकरनाचा-
हिये केवलशिक्षा वाकेवलअत्यन्तदण्डसे दोनोसुधरनहींसक्ते कि-
न्तुदोनोंसे मनुष्यसुधरसक्ते हैं फिरभीवहीचोरीकरै तोउसकाहा-
थकाटडालनाचाहिये फिरभी वहनमानेतोउसको बुरीहवालसे
मारडालनाचाहिये किसीदिनउसकी आंखेंनिकालडाले किसी-
दिनकान किसीदिननाक औरसबजगह घुमानाचाहिये किजिस
कोसबदेखें फिरबहुतमनुष्योंके सामनेउसकोकुत्तेसेचिथवाडालें
ऐसादण्ड एकपुरुषकोहोयतो उसके राजभरमें कोई चोरीकोइ-
च्छाभीनकरेगा और राजाकोभी इनकेप्रबन्धमेंबडाआनन्दहोगा
नहीतो बडेप्रबन्धमेंलगाहोतेहैं साधारण दण्डसे वेकभीसूधेहोंगे
नही डाकुओंकोभी चोरकीनांईदण्ड देनाचाहियेऔर जुआकर-
नेवालोंको एकबारकरनसेहो बुरीहवालसे जैसाकोचोरीकालि-
खा गधेपरचढानादिकसब करकेफिरकुत्ते सेचिथवाडालनाचा-
हिये क्योंकि जोपरस्त्रीगमन औरजितनेबुरेकर्महैं वेजुआरीसे-
हीहोतेहैं इस्से उनकेसहाय करनेवालेकोभी ऐसादण्ड देनाचा-

लिये क्योंकि जितने लड़ाई दंगा चोरी परस्त्रीगमनादिक इनसे होते उ-
त्पन्न होते हैं इससे इनके ऊपर राजा दण्ड देने में कुछ थोड़ा भी आल-
स्य न करै सदा तत्पर रहै महाभारत में एक दृष्टान्त लिखा है कि सो-
ने चांदी और अच्छे २ पदार्थ धरे रहैं उसको कोई न स्पर्श करै तब जा-
नना कि राजा है और धनाढ्य लोग लाखहां रुपैयों को दुकान का कि-
वाड़ कभी न ही लगावै और रातदिन कोई किसी का पदार्थ न उठावै
तब जानना कि राजा है धर्मात्मा इसवास्ते ऐसा उग्र दण्ड चाहिये कि
सब मनुष्य न्याय से चलैं अन्याय में कोई न हो जब स्त्री वा पुरुष व्यभिचार
करैं अर्थात परपुरुष से स्त्री गमन करै परस्त्री से पुरुष जब उनका ठी-
क २ निश्चय होजाय तब स्त्री के ललाट में अर्थात् भौं के बीच में पुरुष के
लिंगेन्द्रिय का चिन्ह लोहे का अग्नि में तपा के लगा दे तथा पुरुष के ल-
लाट में स्त्री के इन्द्रिय का चिन्ह लगा दे फिर जिसको सब देखा करैं फि-
र उनको भी खूब फजीहत करैं और कुछ धनदण्ड भी करैं पीछे उसी प्र-
कार से शिक्षा भी करैं सबको फिर भी वे न मानैं और ऐसा काम करैं त-
ब बहुत स्त्रियों के सामने उस स्त्री को कुत्तों से चिथवा डाले और पुरुष को
बहुत पुरुषों के सामने लोहे के तख्त को अग्नि से तपा के सोवा दे उसके
ऊपर फिर उसके ऊपर घुमावै उसी पर्यंक के ऊपर उसका मरण हो
जाय फिर कोई पुरुष व्यभिचार कभी न करेगा ऐसा दण्ड देख के वा सु-
न के और सरकार कागद को बेचती है और बहुत सा कागजों पर धन
बढ़ा दिया है इससे गरीब लोगों को बहुत क्लेश पहुंचता है सो यह बात
राजा को करनी उचित नहीं क्योंकि इसके होने से बहुत गरीब लोग
दुःख पाके बैठे रहते हैं कचहरी में बिना धन से कुछ बात होती नहीं इ-
स से कागजों के ऊपर जो बहुत धन लगाना है सो मुझ को अच्छा मालू-
म नहीं देता इसको छोड़ने से ही प्रजा में आनन्द होता है क्योंकि था-
ने से ले के आगे २ धन का ही खर्च देख पड़ता है न्याय होना तो पीछे फि-
र नाना प्रकार के लोग साक्षी झूंठ सच बना लेते हैं यहां तक कि सत्तू
खाने को दे देओ और झूंठ गवाही हजार बक्ता देवा देओ जो जैसा मनु

मेंदण्डलिखाहै वैसादण्डचलेतो खानेपीनेके वास्तेझूंठोसाचोदे-
नेकोकोई तैयारनहोहोय अवाङ्नरकमध्येतिप्रेत्यस्वर्गाच्चहीयते
इसकायहअभिप्रायहैकि जबयहनिश्चयहोजायकिइसनेझूंठसा-
चोदिई तबउसकोगोभ कचहरीकेबीचमें काटलेवहीअवाक् नाम
शोभरहित जोनरकभोगउस कोप्रत्यक्षहोय क्योंकिराजा प्रत्यक्ष-
न्यायकर्त्ताहै उसीवक्तउसकोप्रत्यक्ष हीफलहोनाचाहियेऔर जि-
तने अमात्यविचारपति राजघरमेंहोवेंउनके ऊपरभीकुछदण्डव्य-
वस्था रखनीचाहिये क्योंकिवेभीअत्यन्तसच झूंठकेविचारमें तत्पर
होके न्यायहीकरनेलगें देखनाचाहियेकि एककेयहांअर्जीपचदि-
याउसकेऊपर विचारपतिने विचारकरकेअपनीबुद्धि औरकानून
कोरीतिसे एककीजीतकिई और दूसरेकापराजय जिसकापराज-
यभयाउसनेउसकेऊपर जोहाकिमहोताहै उसके पासफिरअपी-
लकरी सोप्राय:जिसकाप्रथम विजयभयाथा उसकोदूसरेस्थानमें
पराजयहोताहै औरजिसका पराजयहोताहै उसकाविजय फिर
ऐसेही जबतकधननहीचूकता दोनोंका तबतकविलायततकलडते
हीचलेजातेहैं प्राय:रहीसलोग इसबातसेहठकेमारे बिगड़जाते
हैं इससे क्याचाहियेकि बिचारकरनेवालेके ऊपरभीदण्डकी व्यव-
स्थाहोनीचाहिये जिससे वे अत्यन्त बिचारकरकेन्यायहीकरें ऐसा
आलस्यनकरें किजैसाहमारीबुद्धिमें आया वैसाकरदिया तुमको
इच्छाहोयतो तुमजाओ अपीलकरदेओ ऐसीबातोंसेबिचारपति
भीआलस्यमेंआजातेहैं औरबिचारपतिको अत्यन्तपरीक्षा करनी
चाहिये किअधर्मसेडरतेहोंय औरविद्याबुद्धिसे युक्तहोयकामक्रो-
धलोभ मोहभय शोकादिकदोषजिनमेंनहोयऔर अन्तर्यामीजो
सबका परमेश्वर उससे हीजिनकोभयहोय औरमेनहीसोपक्षपात
कभीनकरैं किसीप्रकारसे तबउसराजाकीप्रजाको सुखहोसक्ताहै
अन्यथानही और पुलिसका जोदरजाहै उसमें अत्यन्तभद्रपुरुषों
कोरखनाचाहिये क्योंकिप्रथमस्थानन्यायकायहीहैइससे ही आगे

प्रायः वादविवादकेव्यवहार चलतेहैं इसस्थानमेंजोपक्षपातसेअ-
नर्थ लिखा पढ़ाजायगा सोआगेभोअन्यथा प्रायःलिखापढ़ाजायगा
औरअन्यथा व्यवहारभी प्रायः होजायगाइसपुलीसमें अत्यन्तश्रे-
ष्ठपुरुषोंको रखनाचाहिये अथवा पहिलेजैसे चौकोदारमहल्ले २
मेंएक२ रहताथा उस्सेबहुधा अन्यायनहींहोताथा जबसे पुलिस
काप्रबन्धभयाहै तबसेबहुधा अन्यथा व्यवहारभी सुननेमेंआताहै
और गाय बैल भैंसोछेरी और भेंडोआदिक मारेजातेहैं इस्से प्र-
जाको बहुतक्लेशप्राप्तहोताहै औरअनेकपदार्थोंकी हानिभी होती
हैक्योंकिएकगैयादस१०सेरदूधदेतीहैकोई८सेरछः६सेरपांनपुस-
रऔरदो२सेरतक उन केमध्यछः६सेरनित्य दूधगिनाजाय कोई
दस१० मासतकदूधदेतोहै कोईछः६ मासतकउसका मध्यस्थआ-
ठमासतक गिनाजाताहै सोएकमासभरमें सवाचारमन दूधहो-
ताहै उसमेंचावलडालके चीनीभीडालदेंतो सैापुरुषतृप्त होसक्ते
हैं जोऐसेहीपीये तो ८० पुरुषतृप्त होजांयगे और ८०० वा ६४०
पुरुषतृप्तहोसक्ते हैं कोईगाय १५ दफेबियातीहै कोईदसदफे उस
काहमने १२ बक्तारखलिये सो ९६०० सैपुरुषतृप्त होसक्ते हैंफिर
उसके बछडेऔरबछियांबढेंगे उनसेबहुतबैल औरगाय बढेंगेए-
कगायसे लाख मनुष्योंका पालन होसक्ताहै उसको मारके मां-
ससे ८० पुरुषतृप्तहोसक्ते हैंफिरदूधऔर पशुओंकीउत्पत्तिकामूल
हीनष्टहोजाताहैजोबैलआर्यावर्त्तमेंपांचरुपैयोंमेंआताथासोअब
३०सेभीनहीआता औरकुछगांव औरनगरकेपास पशुओंकेचर-
नेकेवास्तेउसकीसोमामेंभूमिरखनीचाहियेजिससेंकिवपशुचरैंजै-
सोदुग्धादिकसेमनुष्यके शरीरकीपुष्टिहोतोहै वैसोसूखे अन्नादि-
कोंसेनहींहोती औरबुद्धिभीनहीबढती इस्सेराजाकोयहबात अव-
श्यकरनीचाहिये किजिनपशुओंसे मनुष्यके व्यवहारसिद्ध होतेहैं
औरउपकारहोताहै वकभीनमारेजांय ऐसाप्रबन्धकरनाचाहिये
जिस्सेसबमनुष्योंकोसुखहोय वैसाहीप्रजास्थ पुरुषोंकोभीकरनाउ-

चितहै सोराजासेप्रजाजिससे प्रसन्नरहे औरप्रजासेराजा प्रसन्न-
रहै यहीबातकरनी सबकोउचितहै देखनाचाहियेकि महाभार-
तमेंसगरराजाको एककथालिखीहै उसकाएकपुत्र असमंजानाम
था।उसकोअत्यन्त शिक्षाकिईगई परन्तु उसनेअच्छाआचारवावि-
द्याग्रहणनहिं किई औरप्रमादमेंहीचित्तदेताथा सोउसकीयुवाव-
स्थाभीहोगई परन्तु उसकोशिक्षा कुछनलगी राजादिकश्रेष्ठपुरु-
षोंकोउसकेऊपर प्रसन्नतानहीभई फिरउसका।विवाहभीकरादि-
याएकदिनसर्जूमें असमंजास्नानकेलिये गयाथा वहांप्रजाके बाल-
कआठ २ दश २ बरसकेजलमें स्नानकरतेथे औरक्रीडाभीकर्तेथे
सोउनमेंसेएक बालकबाहरनिकला उसकोपकडके असमंजानेग-
हिरेजलमें फेंकदिया सोबालकडूबनेलगा तबतककोईप्रजास्थपु-
रुषनेबालकको पकडलिया उसकेशरीरमें जल प्रविष्टहोनेसे वह
मूर्छितहोगया उसकीदशादेखके असमंजाबहुत प्रसन्नभया औ-
रहसकेघरकोचलागया कोईबालकउसकेपिताके पासगया और
कहाकितुमारे बालककोयहदशाहै राजाकेपुत्रनेंकरदिई सुनके
उसकीमातापिता औरसब कुटुंबकेलोग दुःखीभये उसको देखके
फिरउसबालकको उठाकेजहांसगरराजाकीसभालगीथी वहांको
चले राजासभाकेबीचमें सिंहासनपैंबैठेथेसोउनकोआतेदूरसेदेख
केझटउठकेउनकेसामचलेगयेऔरपूंछाकि इसबालकको क्याभया
तबउनकीमातारोंनेलगी राजानेदेखके बहुतउनकोधैर्यदियाकि
तुमरोओमत बातकहदेओकिक्याभयातबबालककापिताबोलाकि
हमारेबडेभाग्यहैंकिआपकेजैसेराजाहमलोगकेऊपरहैं दूरसेदेख
केप्रजाकेऊपरकृपाकरकेपूंछना औरदौडकेआनायहबडाप्रजाका
भाग्यहैइसप्रकारकाराजाहोना फिरराजानेपूंछाकितुमअपनीबा-
तकहो तबउसनेराजाकोकहाकोएकतोआपहैं औरएकआपकापु-
त्रहै जोकिअपनेहाथसेहोप्रजाकोमारनेलगा औरजैसाभयाथावै-
सासत्य २ हालराजासेकहदियातबराजानेंवैद्योंकोबोलाकेउसका

जलनिकलवाडाला और औषधोंसे उसीवक्त स्वस्थ बालकहोगया
फिरसभाकेबीचमेंबालक उसकी मात पिता और राजाने बालकनि-
कालाथा वह भी वहांथा फिर राजाने सिपाहियोंको आज्ञा दिई कि अ-
समंजाकि मुसकें चढ़ाके लेआओ सिपाहीलोग गये और वैसेही उसको
बांधके लेआये असमंजाको स्त्री भी संग २ चली आई और सभामें खड़-
कर दिये राजाने पुत्रकी स्त्रीसे पूछा कि तू इसके साथ जानेमें प्रसन्न है वा
नहीं तब उसने कहा कि अब जो दुःख वा सुख है सो होय परन्तु मेरे अभा-
ग्यसे ऐसा पति मिला सो मैं साथ होरहूंगी पृथक् न हों तब राजाने अस-
मंजासे कहा कि तेरा कुछ भाग्य अच्छा था कि यह बालक मरा नहीं जो
यह मरजाता तो तुझको बुरेहवालसे चोरकी नाईं मैं मारडालता प-
रन्तु तुझको मैं मरणतक बनवास देताहूं सो तू कभी गांवमें वा नगरमें
अथवा मनुष्योंके पास खडारहा वा गया तो तुझको चोरकी नाईं
मारडालेंगे इससे तू ऐसे वनमें जाके रह कि जहां मनुष्य का दर्शन भी न
होय सिपाहियोंसे हुकुम देदिया कि जाओ तुम घोर वनमें इनदोनों
को छोडआओ उसको न वस्त्र दिये अच्छे २ न स्वारी दिई न धन दिये
किन्तु जैसे सभामें दोनों खडे थे वैसेही छोडआये फिर वे वनमें रहे
और उनदोनोंसे वनमें जो पुत्र भया उसको स्त्री अच्छी रीतिसे अपने पा-
सही बालकको रक्खा और शिक्षा भी किई जब पांच वर्षका भया तब
ऋषियोंके पास पुत्रको वह स्त्री रखआई और ऋषियोंसे कहा कि म-
हाराज यह आपका ही बालक है जैसे यह अच्छा बने वैसा कीजिये त-
ब ऋषिलोग बहुत प्रसन्न होके उसको रक्खा कि इसको अच्छे प्रका-
रसे शिक्षा किई जायगी क्योंकि यह सगरका पौत्र है फिर स्त्री चली गई
अपने स्थान पर और ऋषिलोगोंने उस बालकके यथावत् संस्कार कि-
ये विद्या पढ़ाई और सब प्रकारकी शिक्षा भी किई और उसने यथावत्
ग्रहण किई जब वह ३२ बरसका होगया तब उसको लेके सगर राजा
के पास ऋषिलोग गये और कहा कि यह आपका पौत्र है इसकी परी-
क्षा कीजिये सो राजाने उसकी परीक्षा किई और प्रजा सब श्रेष्ठ पुरु-

षोंनेभी सोसबगुणऔरविद्यामें योग्यहोठहरा तबप्रजास्थपुरुषों-
नेंराजासेकहा किअसमंजा नजो आपकापौत्र सोराजाहोनेंकेंयो-
ग्यहै तबराजानेकहाकि सब बुद्धिमानप्रजास्थजोश्रेष्ठपुरुष उनको
प्रसन्नता औरसम्मतिहोयतो इसकाराज्याभिषेकहोजायफिरसब
श्रेष्ठलोगोंने सम्मतिदिईऔर उसकाराज्याभिषेकभीहोगया।क्यों-
किसगरराजा अत्यन्तवृद्धहोगयेथे राज्यकार्यमें बहुतपरिश्रमपड-
ताथा सोसबअधिकार उसकेऊपरदेदिये परन्तुअपनभी जितना
होसकाथा उतनाकर्त्तेथें राजाऐसाहीहोनाचाहिये किएकभर्त्त
राजाथा जिसकेनामसे इसदेशकाभरतखण्डनामरक्खागया।हैउ-
सकेभीनवपुत्रथे सो २५ वर्षकेऊपरसब होगयेथेपरन्तुमूर्खऔरप्र-
मादीथे राजानेऔर प्रजास्थपुरुषोंने विचारकियाकि इनमेंसेएक
भीराजाहोनेके योग्यनहीसो भरतराजाने इस्तिहार करकेपुरुष-
औरस्त्रीलोगोंको बोलाया जोप्रतिष्ठितराजाऔरप्रजास्थथे सोंएक
मैदानमें समाजस्थानबनाया उसकेबीचमें एकमंचानभीगाडदि-
या सोजबसबलोग एकदिनइकट्ठे भये परन्तु किसीकोंविदितनभ-
याकिराजाक्याकरेगा औरक्याकहेगा फिरमंचानके ऊपरराजा
चढकेसबसे कहाकिजितनेराजा अथवाप्रजास्थ रहोसबलोगोंका पुत्र
इसप्रकारकादुष्टहोय उसकाऐसाही दण्डदेना उचितहै जोकिइ-
सवक्तहम अपनेपुत्रोंकोदेंगे सोसदा सबसज्जन लोगइस नीतिको
मानैं औरकरैं फिर मंचानसेउतरे औरनवपुत्रभीबीचमें खडेंथे
सब समाजवालेदेखभीरहेथे औरउनकीमाताभी सोसबकेसाम-
नेखड्गहाथमेंलेके नवोंकासिरकाटके औरमंचानकेऊपरबांधदि-
ये फिरभीसबसेकहाकि जोकिसीकापुत्रऐसादुष्टहोय उसकोऐसा
हीदण्डदेनाचाहिये क्योंकि जोहमइनका सिर नकाटते तोयेह-
मारेपीछेआपसमें लडते राज्यकानाशकरतेऔरधर्मकीमर्यादा-
कोतोडडालते इससे राजपुत्र वाप्रजास्थजोश्रेष्ठ धनाढ्यलोग उन
कोऐसाहीकरना उचितहै अन्यथाराज्यधन औरधर्मसबनष्टहो-

जांयगे इसमेंकुछसन्देहनहीं देखनाचाहिये किआर्यावर्त्त देशमें
ऐसे २ राजाऔर प्रजाथश्रेष्ठपुरुषहोतेथे सोइसवक्त आर्यावर्त्त
देशमें ऐसेभ्रष्टाचारहोगयेहैं कोजिनकी संख्याभीनहीं होसक्तीऐ-
सासर्वत्र भूगोलमें देशकोईनहीं ऐसाश्रेष्ठआचारभीकिसीदेशमें
नहींथा परन्तु इसवक्त पाषाणादिक मूर्तिपूजनादिक पाखण्डोंसे
चक्रांकितादिक संप्रदायोंके वादविवादोंसे भागवतादिक ग्रन्थोंके
प्रचारसे ब्रह्मचर्याश्रम औरविद्याके छोडनेसेऐसादेशबिगडाहैकि
भूगोलमें किसीदेशकीनहीं जैसीकिदुर्दशा महाभारतकेयुद्धकेपी-
छेआर्यावर्त्तदेशकीभईहै सोआजकालअंगरेजकेराज्यमेंकुछ २ सु
खआर्यावर्त्त देशमेंभयाहै जोइसवक्तवेदादिक पढनेलगें ब्रह्मचर्या-
श्रम आश्रम चालीसवर्षतककरें कन्याऔर बालकसब श्रेष्ठशिक्षा
औरविद्यावालेहोवें इनमत मतान्तरोंके वादविवाद आग्रहोंको
छोडेंसत्यधर्म औरपरमेश्वरकी उपासनामें तत्परहोवें तोइसदेश
कीउन्नति औरसुखहोसक्ताहै अन्यथानहीं क्योंकिविनाश्रेष्ठव्यव
हारविद्यादिकगुणोंसे सुखनहींहोता आजकालजोकोई राजा ज
मीदार वाधनाढ्यहोताहै उनकेपास मतमतान्तरके पुरुष और
खुशामदीलोग बहुतरहतेहैंवबुद्धिधनऔरधर्मनष्टकरदेतेहैंइससे
सज्जनलोग इनवार्तोंको विचारकेसमझलें औरकरनेकेव्यवहा-
रोंकोकरें अन्यथानहीं एकब्रह्मसमाज मतचलाहै वेऐसामानते
हैं नित्यपरमेश्वर सृष्टिकर्त्ताहै अर्थात जीवादिकनये २ नित्यउत्प
न्नकर्त्ताहै जीवपदार्थऐसाहै किजड औरचेतनमिलाभया उत्पन्न
ईश्वरकर्त्ताहै जबवह शरीर धारणकर्त्ताहै तबजडांशसे शरीरबन
ताहै और चेतनांशजोहै सोआत्मारहताहै जबशरीरछूटताहैतब
केवलचेतन औरमनआदिक पदार्थरहतेहैं फिरजन्मदूसरा नहीं
होता किन्तुपापोंकाभोग पश्चात्तापसेकरलेताहै ऐसेहोक्रमसे अ-
नन्तउन्नतिकोप्राप्तहोताहै यहबातउनकीयुक्ति औरविचारसेवि-
रुद्धहै क्योंकिजोनित्य २ नईसृष्टि ईश्वरकर्त्ताहो सूर्य चन्द्रपृथिव्या-

दिकपदार्थोंकीभी सृष्टिनई२ देखनेमेंआतीजैसे पृथिव्यादिककीसृ-
ष्टिनई २ देखनेमनहीआती ऐसेजीवकी सृष्टीभीईश्वरने एकोवे
रकिईहै सोकेवल कल्पनामात्रसे ऐसाकथनवेलोगकहतेहैं किन्तु
सिद्धान्तबातयहनहीहै इससे ईश्वरमें नित्यउत्पत्तिका विक्षेपदोष
आवेगा औरसर्वशक्तिमत्वादिकगुणभीईश्वरमेंनहीरहेंगे क्योंकि
जैसेजीव क्रमसेशिल्पविद्यासे पदार्थोंकीरचनाकर्त्ताहै वैसाईश्वर
भीहोजायगा इससे यहबात सज्जनोंकीमाननेके योग्य नहीं और
एकजन्मवादजोहै सोभी विचारविरुद्धहै क्योंकि अनेकजन्महोतेहैं
सोप्रथमपूर्वोक्तमेंविचारकियाहैवहीदेखलेनाऔरपश्चात्तापसेपा-
पोंकोनिवृत्तिमानना यहभीयुक्तिविरुद्धहै सोप्रथम लिखदियाहैकि
पश्चात्तापजो होताहैसो क्रियमाणपापोंका निवर्त्तकनहीहोताकि-
न्तुआगेकर्त्तव्य पापोंकानिवर्त्तकहोताहै विनाशरीरसेपापपुण्यों
काफलभोग कभीनहीहोसक्ता औरविना शरीरके जीवरहताही
नही जोमनमेंपश्चात्तापसे पापोंकाफल जीवभोक्ता तोजिस २ दे
श कालऔर जिनजीवोंकेसाथ पापऔरपुण्यकियेथे उनकाभीस
रनसेस्मरणहोता औरजोस्मरणहोतातो फिरभीजीव मोहकेहो
नेसेवहीं अपनेपुत्र स्त्रियादिकसंबन्धियों के पासआजाता सोकोई
आतानही इससे यहबातभी उनकीप्रमाणविरुद्धहै और वर्णाश्रम
कोजोसत्यव्यवस्था शास्त्रकीरीतिसे उसकाछेदनकरताहै सोसबम
नुष्योंके अनुपकारकाकर्महै यहदृतीयसमुल्लासमें विस्तारसेलिख
दियाहै वहीदेखलेना यज्ञोपवीत केवलविद्या दिक गुणोंका और
अधिकार काचिन्हहै उसकातोडनासाहससे इससे भी अत्यन्तमनु
ष्योंका उपकारनहीहोता किन्तु विद्यादिक गुणोंसेवर्णाश्रम का
स्थापनकरना शास्त्रकीरीतिसे इससे जोमनुष्योंका उपकारहोसक्ता
है संसाराचारकी रीतिसे नहीं वेब्राह्मणादिकवर्णवाच जोशब्द
हैंउनकोजातिवाचि वाह्मलोगजानके निषेधकतेहैं सोकेवल उन
कोभ्रमहै किन्तु शास्त्रकीरीतिसे मनुष्यादिक जातिवाचकशब्द हैं

सोमनुष्यपशुहस्त्यादिककी एकताकोई नहीकरसक्ता सोईमनुष्या-
दिकशब्दजातिवाचकशास्त्रमेंलिखेहैं सोसत्यहीहै औरखानेपीने से
धर्मकिसीका बढतानहीं औरनकिसीकाघटता इसमेंभीअत्यन्तजो
आग्रहकरना किसबके साथखानाअथवाकिसीकेसाथनहीखानाव
हीधर्ममानतेनायहभी अनुचितबातहै किन्तुनष्टभ्रष्टसंस्कारहो
नपदार्थोंकखाने औरपीनेसे मनुष्यकाअनुपकार होताहै अन्यत्र
नहीऔरवार्षिकउत्सवादिकोंमेमेलाकरनाइसमेंभी हमकोअत्यन्त
अेष्ठगुणमालूमनहोदेता क्योंकिइसमें मनुष्यकी बुद्धिबहिर्मुखहो
जातीहै औरधनभीअत्यन्तखर्चहोताहै केवलअंगरेजीपढन मेंसं-
तोषकरलेनायहभी अच्छीबातउनकीनहीहैं किन्तुसबप्रकारकीपु
स्तकपढनाचाहिये परन्तुजबतकवेदादिक सनातन सत्यसंस्कृतपु-
स्तकोकोंनपढेंगे तबतकपरमेश्वरधर्म अधर्मकर्त्तव्य औरअकर्त्त-
व्यविषयोंको यथावत् नहीजानेंगेइससे सबपुरुषार्थसेइन वेदादि-
कोंकोपढनाऔरपढानाचाहिये इससेसबविघ्ननष्टहोजांयगेअन्यथा
नहीऔर हमकोऐसा मालूमदेताहैकि थोडेहीदिनोंमे ब्राह्मस-
माजकेदोतीनभेदचलगयेहैं औरउनकाचित्तभी परस्परप्रसन्नन-
हीहै किन्तुईर्ष्याहोएकसे दूसरेकीहोतीहै सोजैनबैरागयादिकों-
मेंअनेकभेदोंकेहोनेसे अनेकप्रमादऔरविरुद्ध व्यवहारहोगयेहैंऐ-
साउनकाभी कुछकालमेंहोजायगा क्योंकिविरोधसेहीविरुद्धव्यव-
हारमनुष्योंकेहोतेहैं अन्यथानहीसोवेदादिक सत्यशास्त्रोंको ऋ-
षिमुनियोंकेव्याख्यान सनातनरीतिसे अर्थसहितपढेंतोअत्यन्तउ-
पकारहोजाय अन्यथानहीतो आगे २ व्यवहारहोजायगा ईसा
मूसामहम्मदनानक चैतन्यप्रभृतियोंकोही साधुमानना और जै-
गीषव्यपंचशिखा आसुरिऋषिऔर मुनियोंकोनही गिननायह
भीउनकीभूलहै अन्यबातजेपरमेश्वरको उपासनादिक बसबउन-
कीअच्छी हैं इसके आगे जैनमतके विषय मेंलिखा जायगा ।।

इतिश्री मद्दयानन्द सरस्वतिस्वामि कृते स

त्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते एकादशःसमुल्लासःसंपूर्णः ॥ ११ ॥

अथजैनमतविषयाव्याख्यास्यामः॥ सब संप्रदायोंसे जैनकामत-प्रथमचलाहै उसकोसाढेतीनहजार वर्षअनुमानसेभयेहैं सोउ-नके २४ तिर्थङ्कर अर्थात् आचार्य भयेहैं जैनेन्द्र परशनाथ ऋ-षभदेव गौतमऔर बौधादिक उनके नामहैं उन्ने यहिंसाधर्मप-रममानाहै इसविषयमेंवेऐसा कहतेहैं किएकबिन्दुजलमेंअथवाए कअन्नकेकणमें असंख्यातजीवहैं उनजीवोंके पांख आजायतो एक बिन्दुऔर एककणकेजीव ब्रह्माण्डमें नसमावैं इतनेहैं इससेमुखके ऊपर कपड बांधरखतेहैं जलकोवस्त्रतछानतेहैं औरसबपदार्थों-को शुद्धरखतेहैं और ईश्वरकोनहीमानते ऐसाकहतेहैं किजगत् स्वभावसेसनातनहै इसकाकर्त्ताकोईनही जब जीवकर्मबन्धनसेछू-टजाताहै औरसिद्धहोताहै तब उसकानाम कैवलीरखतेहैं और उसीको ईश्वरमानतेहैं अनादिईश्वर कोईनहीहै किन्तुतपोबलसे जीवईश्वररूपहोजाताहै जगत्काकर्त्ताकोईनही जगत्अनादिहै जैसेघासवृक्ष पाषाणादिक पर्वत बनादिकोंमें आपसे आपहीहोजा तेहैं ऐसेपृथिव्यादिक भूतभीआपसे आपबनजातेहैं परमाणुका नाम पुद्गलरक्खाहै सोपृथिव्यादिकोंके पुद्गल मानतेहैं जबप्रलय होताहै तब पुद्गलजुदे २ होजातेहैं औरजबवेमिलतेहैं तबपृथि व्यादिक स्थूलभूतबनजातेहैं औरजीवकर्मयोगसे अपना २ शरी-रधारणकरलेतेहैं जैसाजोकर्म करताहै उसकोवैसाफलमिलता है आकाशमें चौदहराज्यमानतेहैं उनकेऊपर शापद्मशिला उ-सकोमोक्ष स्थानमानतेहैं जबशुभकर्मजीवकर्ताहै तब उनकर्मोंके बेगसेचौदह राज्योंकोउल्लंघन करके पद्मशिलाके ऊपर विराज मानहोतेहैं चराचरकोअपनी ज्ञानदृष्टिसेदेखतेहैं फिर संसार दुःखजन्ममरणमेंनहीआते वहीआनन्दकरतेहैं ऐसीमुक्तिजैनलो-गमानतेहैं और ऐसाभीकहतेहैं किधर्मजोहैसोजैनकाहीहैऔर

सबहिंसकहैं तथाअधर्मी क्योंकिजे हिंसाकरतेहैं वेधर्मात्मानहो
जे यज्ञमेंपशुमारतेहैं और ऐसो २ बातेंकहतेहैं केयज्ञमें जोपशु
माराजाताहै सोस्वर्गको जाताहोय तो अपनापुत्रवा पिता का
नमारडालेंस्वर्गको जानेकेवास्ते ऐसे २ श्लोकउनने बनारक्खे हैं
चयोवेदस्य कर्त्तारो धूर्त्तभण्ड निशाचराः इसकायह अभिप्रायहै
किईश्वर विषयकिजितनी बातवेदमेंहैं वहधूर्त्तकीबनाईहै जित-
नीफलस्तुति अर्थात् इसयज्ञकोकरैंतो स्वर्गमेंजाय यह बातभा-
ण्डोंनबनारक्खीहै औरजितना मांसभक्षण पशुमारनेकाविधि-
हैवेदमें सोराक्षसोंबनानयाहै क्योंकि मांसभोजनराक्षसोंकाबडा
प्रियहै सबबातअपने खानेपोनेऔरजीविका केवास्तेलोगोंनेबना-
ई है औरजैनमतहै सोसनातनहै औरयहीधर्महै इसकेविनाकि
सीकोमुक्ति वासुखकभोनहीहोसक्ता ऐसे २ वेबातेंकहतेहैं इन-
सेपूंछनाचाहिये किहिंसातुमलोग किसको कहतेहो जोवेकहेंकि
किजोजीवकोपीडादेना सोतोविनापीडाके किसीप्राणिका कुछव्य
वहारसिद्धनहीहोता क्योंकिआपलोगोंकेमतमेंहीलिखाहै किए-
कबिन्दुमेंअसंख्यात जीवहैं उसकोलाखवक्तछाने तोभीवजीवष्टथ-
कनहीहोसके फिरजलपान अवश्यकियाजाताहै तथा भोजनादि-
कव्यवहार औरनेत्रादिकोंकी चेष्टाअवश्यकिईजातीहै फिरतुमा-
राअहिंसाधर्मतोनहोबना प्रश्न जितनेजोव बचायजातेहैं उतनेब-
चातेहैं जिसकोहमलोग देखतेहोनहो उनकोपोडामें हमलोगों
कोअपराधनहो उत्तर ऐसाव्यवहार सबमनुष्योंकाहैजेमांसाहा-
रीहैंवेभोअश्वादिक पशुओंकोबचालेतेहैं वैसेतुमलोगभी जिनजी-
वोंसेकुछव्यवहारका प्रयोजननहीहै जहांअपनाप्रयोजनहैवहांम-
नुष्यादिकोंको नहीबचातेहो फिर तुमारो अहिंसानहीरही प्रश्न
मनुष्यादिकोंकोज्ञानहै ज्ञानसेवेअपराधकर्त्ताहैं इससेउनकोपीडा
देनेमेंकुछअपराधनहो वेपश्वादिकजीव बिनाअपराधहैंउनकोपी-
डादेनाउचितनही उत्तर यहबात तुमलोगोंकोविरुद्धहैक्योंकिज्ञा-

नवालोंकोपीडादेना और ज्ञानहीनपशुओंको पीडा न देनायहबा-
तविचारशून्यपुरुषोंकीहै क्योंकि जितने प्राणीदेहधारीहैं उनमेंसे
मनुष्य अत्यन्तश्रेष्ठहै सोमनुष्योंका उपकारकरना औरपीडाका
नकरना सबकोआवश्यकहै हिंसानामहै वैरकासो योगशास्त्र व्या
सजीके भाष्यमेंलिखाहै सर्वथासर्वदा सर्वभूतेष्वनभिद्रोहः अहिं-
सा यहअहिंसाधर्म कालक्षणहै इसकायह अभिप्रायहैकि सबप्र-
कारसे सबकालमें सबभूतोंमेंअनभिद्रोह अर्थात् वैरका जोत्याग
सोकहाताहै अहिंसासो आपलोगअपने संप्रदायमेंतोप्रीतिकरते
हो और अन्यसंप्रदायोंमेंद्वेष तथा वेदादिकसत्यशास्त्र तथाईश्वर
पर्यन्त आपलोगोंको वैरऔरद्वेषहै फिरअहिंसाधर्म आपलोगों
काकहनेमात्रहै अपनेसंप्रदायोंके पुस्तकतथाबातभी अन्यपुरुषोंके
पासप्रकाशितनहींकरते हो यह भीआपलोगोंमें हिंसासिद्धहैईश्वर
कोआपलोगनहीमानतेहैं यह आपलोगोंकी बडीभूलहैऔर स्व
भावसे जगतकीउत्पत्तिकामनना यहभीतुमलोगोंकोझूंठबातहैइ-
सकाउत्तर ईश्वरऔरजगत्की उत्पत्तिके विषयमेंदेखलेना प्रथम
जीवकाहोना औरसाधनोंकाकरना पश्चात् वहसिद्धहोना जबजी-
वादिक जगत्बिनाकर्त्ताके उत्पन्नहीनहीहोता औरप्रत्यक्षजगत्में
नियमोंकेजगत्में देखनेसे सनातन जगत्कानियन्ता ईश्वर अवश्य
है फिरउसकोईश्वर नहीमानना औरसाधनोंसे सिद्धजोभयाउ-
सीकोहीईश्वरमानना यहबात आपलोगोंकोसबझूंठहै आपसेआ
पजीवशरीरधारणकरलेतेहैं तोशरीर धारणमेंजीव स्वतन्त्रठह-
रे फिरछोडक्योंदेतेहैं क्योंकिस्वाधीनतासे शरीरधारणकरलेते
हैं फिरकभी उसशरीरकोजीव छोडताहीनहीं जोआपकहैंकिक-
र्मोंकेप्रभावसे शरीरकाहोना और छोडनाभीहोताहै तोपापोंके
फलजीवकभीनहीग्रहणकर्त्ता क्योंकि दुःखकी इच्छाकिसीकोनहीं
होतीसदा सुखकीइच्छाहीरहतीहै जबसनातन न्यायकारीईश्वर
कर्मफलकी व्यवस्थाकाकरनेवालानहोगा तोयहबातकभीनबनेगी

आकाशमें चौदहराज्य तथा पञ्चशिला मुक्तिकास्थान मानना यह बात प्रमाण और युक्तिसे विरुद्ध है केवल कपोलकल्पनामात्र है और उसके ऊपर बैठके चराचरका देखना और कर्मबंधसे वहां चलाजाना यहभी बात आपलोगोंकी असत्य है यज्ञोंके विषयोंमें आपकुतर्क कर्त्ते हैं सो पदार्थविद्याके नहीं होनेसे क्योंकि घृत दूध और मांसादिकोंके यथावत् गुण जानते और यज्ञका उपकार कि पशुओंको मारनेमें थोडासा दुःख होता है परन्तु यज्ञमें चराचरका अत्यन्त उपकार होता है इनको जो जानते तो कभी यज्ञ विषयमें तर्क कर्त्ते वेदोंका यथावत अर्थके नहीं जाननेसे ऐसी बात तुमलोग कहते हो कि धूर्त्त भांड और निशाचरोंने लिखा है यह बात केवल अपने अज्ञान और संप्रदायोंके दुराग्रहसे कहते हो और वेद जो है सो सबके वास्ते हितकारी है कि सो संप्रदायका ग्रन्थ वेद नहीं है किन्तु केवल पदार्थविद्या और सब मनुष्योंके हितके वास्ते वेदपुस्तक है पक्षपात उसमें कुछ नहीं इन बातोंको जानते तो वेदोंका त्याग और खण्डन कभी न करते सो वेदविषयमें सब लिख दिया है वहीं देख लेना और यज्ञमें पशुको मारनेसे स्वर्गमें जाता है यह बात किसी मूर्खके मुखसे सुन लिई होगी ऐसी बात वेदमें कहीं नहीं लिखी जीवोंके विषयमें वे ऐसा कहते हैं कि जीव जितने शरीरधारी हैं उनके पांच भेद हैं एकइन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जडमें एक इन्द्रिय मानते हैं अर्थात् वृक्षादिकोंमें सो यह बात जैनोंकी विचारशून्य है क्योंकि इन्द्रिय सूक्ष्म है जैसे कभी नहीं देख पडते परन्तु इन्द्रियका काम देखनेसे अनुमान होता है कि इन्द्रिय अवश्य है सो जितने वृक्षादिकोंके बीज हैं उनको पृथिवीमें जब बोते हैं तब अङ्कुर ऊपर आता है और मूल नीचे जाता है जो नेत्रेन्द्रिय उनको न होता तो ऊपर नीचेको कैसे देखता इस कामसे निश्चित जाना जाता है कि नेत्रेन्द्रिय जड वृक्षादिकोंमेंभी है तथा बहुत लता होती हैं सो वृक्ष और भित्तोंके ऊपर चढ जाती हैं जो नेत्रेन्द्रिय न होता तो उसको कैसे देखता तथा स्पर्शेन्द्रिय तो सभी

मानते हैं जो भई इन्द्रियभी वृक्षादिकों में हैं क्योंकि मधुर जल में बागा दिकों में जितने वृक्ष होते हैं उनमें खारा जल देने से सूख जाते हैं जो भ इन्द्रिय न होता तो स्वाद खारे वा मीठे का कैसे जानते तथा श्रोत्रे-न्द्रिय भी वृक्षादिकों में है क्योंकि जो कोई मनुष्य सोता होय उसको अत्यन्त शब्द करने से जान लेता है तथा तोप आदिक शब्द से भी वृक्षों में कम्प होता है जो श्रोत्रेन्द्रिय न होता तो कम्प क्यों होता क्योंकि अक-स्मात् भयङ्कर शब्द के सुनने से मनुष्य पशु पक्षी अधिक कम्प जाते हैं वै-से वृक्षादिक भी कम्प जाते हैं जो वे कहें कि वायु के कम्प से वृक्ष में चेष्टा हो जाती है अच्छा तो मनुष्यादिकों का भी वायु की चेष्टा से शब्द सुन पड-ता है इससे वृक्षादिकों में भी श्रोत्रेन्द्रिय है तथा नासिकाइन्द्रिय भी है क्योंकि वृक्षों को रोग धूप के देने से छूट जाता है जो नासिकेन्द्रिय न हो-ता तो गन्ध का ग्रहण कैसे करता इससे नासिकाइन्द्रिय भी वृक्षादिकों में है तथा त्वचाइन्द्रिय भी है क्योंकि कुमोदिनि कमल लज्जावन्ती अर्था-त् छुई मुई औषधि और सूर्यमुखी आदिक पुष्पों में और शीत तथा उष्णा वृक्षादिकों में भी जान पडते हैं क्योंकि शीत तथा अत्यन्त उष्णता से वृ-क्षादिक कुम्हला जाते हैं और सूख भी जाते हैं इससे तत्तत इन्द्रियों का कर्म देखने से तत्तत् इन्द्रिय वृक्षादिकों में अवश्य मानना चाहिये यह भ्रम जैन संप्रदाय वालों को स्थूल गोलक इन्द्रियों के नहीं देखने से हु-आ है सो इससे जैन लोग इन्द्रियों को नहीं जान सके परन्तु कार्य द्वारा सब बुद्धिमान लोग वृक्षादिकों में भी इन्द्रिय जानते हैं इसमें कुछ संदे-ह नहीं और जहां जो होगा वहां इन्द्रिय अवश्य होंगी क्योंकि इन सब वर्णाश्रयों का जो संघात इसी को जीव कहते हैं जहां जीव होगा वहां इ-न्द्रियां अवश्य होंगी जैनों का ऐसा भी कहना है कि ताला वा बावली कु-आ नहीं बनवाना क्योंकि उनमें बहुत जीव मरते हैं जैसे तालाब कर-चने से भैंस सो उसमें बैठेगी उसके ऊपर मेघा बैठेगा उसको कौआ ले-जायगा और मार भी डालेगा उसका पाप तालाब बनाने वाले को हो-गा क्योंकि बहुत तालाब न बनाता तो यह हत्या न होती इससे उन्ने कुछ

नहीसमझा क्योंकिउसतालावकेजलसे असंख्यातजीवसुखी होंगे उसकापुण्य कहांजायगा सोपापके वास्ततालावकोई नहीबनाता किन्तु जीवोंकेसुखके वास्तेबनातेहैं इस्से पाप नहीहोसक्ता परन्तु जिस देशमेंजल नहीमिलताहोय उसदेशमें बनानेमे पुण्यहोता-है जिसदेशमें बहुत जल मिलताहोवै उसदेशमें तडागादिकोंका बनानाव्यर्थहै औरवेबडे २ मंदिरऔरबडे २ घरबनातेहैं उनमें क्याजीवनहीमरतेहोंगे सोलाखहांरुपैयें मन्दिरादिकोंमें मिथ्या लगादेतेहैं जिनसेकुछसंसारका उपकारनहीहोता और जोउप-कारकीबातहै उसमेदोषलगातेहैं फिरकहतेहैं किजैनकाधर्मश्रे-ष्ठहै औरइसकेबिनामुक्तिभी किसीकोनहीहोती सोयहबातउन-कीमिथ्याहै क्योंकिकिसीबात औरऐसेकर्मों सेमुक्तिकभीनहीहोस-क्ती मुक्तितो मुक्तिकेकर्मोंसेसर्वत्रहोतीहै अन्यथानही जितनामूर्ति पूजनचलाहै सोजैनोंसेहीचलाहै यहभीअनुपकार काकर्महै इस्से कुछउपकारनहो संसारमेंबिनाअनुपकारके सोजैनोंको बडाभा रीआग्रहहै जोकोईकुछपुण्य कियाचाहताहै धनाढ्य सोमन्दिर-हीबनादेताहै औरप्रकारका दानपुण्यनहीकर्त्तेहैं उनने जैनगा-यत्रीभी एकबनालिईहै औरएकयतीहोतेहैं उनकोश्वेताम्बर कह तेहैं दूसराहोताहैदिगम्बर जिसकोमुनिऔर स्रावककहतेहैंउ-नमेंसेढूंढियेलोगमूर्तिपूजन कोनहीमानते औरलोग मानतेहैं उनमें एकश्रीपूज्यहोताहै उसका ऐसा नियमहोताहै किइतना धन जबसेवकलोगदें तबउसकेघरमेंजाय और मुनिदिगम्बरहोते हैं वेभी उनकेघरमें जबजातेहैं तबआगे२थानबिछातेचलेजाते-हैं औरउनकेमतमें नहोय वहश्रेष्ठभीहोयतो भीउसकोसेवा अ-र्थात् जलतकभीनहीदेते यहउनका पक्षपातसेअनर्थहै किन्तु जो श्रेष्ठहोय उसाकीसेवा करनीचाहिये दुष्टकीकभीनही यहसबम-नुष्योंकेवास्ते उचितहै जेढूंढयहोतेहैं उनके केशमें जूआंपडजां-यतो भीनहीनिकालते औरहजामत नहीबनवाते किन्तु उनका

साधु जब आता है तब जैनी लोग उसकी दाढ़ी मूंछ और सिर के बाल सब नोंच लेते हैं जो उस बक्त बड़ा शारीरिक कष्ट पावै अथवा नेत्र से जल गिरावै तब सब कहते हैं कि यह साधु नहीं भया है क्योंकि इसको शरीर के ऊपर मोह है विचार करना चाहिये कि ऐसी २ पीडा और साधुओं को दुःख देना और उनके हृदय में दयाका लेश भी न होना यह उनकी बात बहुत मिथ्या है क्योंकि बालों के नोंचने से कुछ नहीं होता जब तक काम क्रोध लोभ मोह भय शोकादिक दोष हृदय से नहीं नीं चे जायंगे यह ऊपर का सब ढोंग है उनमें जितने आचार्य भये हैं उनके रनाये ग्रन्थों को वेद मानते हैं सो अठारह ग्रन्थ वे हैं तथा महाभारत रामायण पुराण स्मृतियां भी उन लोगों ने अपने मत के अनुकूल ग्रन्थ बना लिये हैं अन्य भगवती गीता ज्ञानचरित्रादिक भी ग्रन्थ नाना प्रकार के बना लिये हैं बहुत संस्कृत में ग्रन्थ हैं और बहुत प्राकृत भाषा में रच लिये हैं उनमें अपने सम्प्रदाय की पुष्टि और अन्य संप्रदायों का खण्डन कपोलकल्पना से अनेक प्रकार लिखा है जैसे कि जैन मार्ग सनातन है प्रथम सब संसार जैनमार्ग में था परन्तु कुछ दिनों से जैनमार्ग को छोड़ दिया है लोगों ने सो बडा अन्याय है क्योंकि जैनमार्ग छोडना किसी को उचित नहीं ऐसी २ कथा अपने ग्रन्थों में जैनों ने लिखी हैं सो सब संप्रदाय वाले अपनी २ कथा ऐसी ही लिखते हैं और कहते हैं इसमें प्रायः अपने मत लाभ के लिये बातें मिथ्या २ बना लिई हैं यावज्जीवं सुखं जीवेन्नास्ति मृत्योरगोचरः। भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः॥ यावज्जीवेत्सुखं जीवेदृणं कृत्वा घृतं पिबेत्। अग्निहोत्रं त्रयो वेदा त्रिदण्डं भस्मगुण्ठनम्॥ बुद्धिपौरुषहीनानां जीविकेति बृहस्पतिः। अग्निरुष्णो जलं शीतं शीतस्पर्शस्तथानिलः॥ केनेदं चित्रितं तस्मात् स्वभावात्तद्व्यवस्थितिः। न स्वर्गो नापवर्गो वा नैवात्मा पारलौकिकः। नैव वर्णाश्रमादीनां क्रियाश्च फलदायकाः। अग्निहोत्रं त्रयो वेदा त्रिदण्डं भस्मगुण्ठनम्॥ बुद्धिपौरुषहीनानां जीविका धातृनिर्मिता। पशुश्च

न्निहत:स्वर्गं ज्योतिष्टोमेगमिष्यति ॥ स्वपितायजमानेन तत्रक-स्मान्नहिंस्यते । मृतानामपिजंतूनां श्राद्धं चेत्तृप्तिकारणम् ॥ गच्छतामिहजंतूनां व्यर्थंपाथेयकल्पनम् । स्वर्गःस्थितायदातृप्तिं गच्छेयुस्तत्रदानत: ॥ प्रासादस्योपरिस्थाना मत्रकस्मान्नदीयते । यदिगच्छत्परंलोकं देहादेषविनिर्गत: ॥ कस्माद्भूयानचायाति बन्धुस्नेहसमाकुल: । मतश्च जीवनोपायो ब्राह्मणैर्विहितस्त्विह ॥ मृतानां प्रेतकार्याणि नत्वन्यद्विद्यते क्वचित् । त्रयोवेदस्यकर्तारो भण्डधूर्त्तनिशाचराः ॥ जर्फरीतुर्फरीत्यादि पंडितानां वच:स्मृतम् । अश्वस्यात्रहिशिश्नन्तु पत्नीग्राह्यंप्रकीर्त्तितम् ॥ भण्डैस्तद्वत्परंचैव ग्राह्यजातिंप्रकीर्त्तितम् । मांसानांखादनंतद्व न्निशाचरसमीरितम् । इत्यादिकश्लोक जैनोंकेबनायेहुवे हैं और अर्थ तथा काम दोनोंपदार्थमानतेहैं लोकसिद्ध जोराजासोईपरमेश्वर औरईश्वरनहीपृथवी जल अग्नि वायु इन केसंयोगसे चेतनउत्पन्नहोके इन मेंलोनहोजाताहै और चेतनपृथक् पदार्थनहो ऐसे २ प्राकृतदृष्टान्तदेकनिर्बुद्धि पुरुषोंकोबहकादेतेहैं जोचारभूतोंकेयोगसे चेतनउत्पन्नहोता तो अबभीकोई चारभूतोंकोमिलाके चेतनदेखलादे सो कभीनहीदेखपड़ेगा इनस्वभावसे जगतकीउत्पत्तिआदिकका उत्तर ईश्वर और सृष्टिकेविषयमें लिखदियाहै वहींदेखलेना भूतेभ्योमूर्त्युपादान वत्तदुपादानम् इत्यादिक गोतममुनिजीके कियेसूत्र नास्तिकोंकेमतदेखाने कवास्तेलिखेजातेहैं औरउनकाखण्डनभी सोजानलेना जैसेपृथिव्यादिक भूतोंसेबालु पाषाण गेरुअञ्जनादिक स्वभावसेकर्त्ताकेबिना उत्पन्नहोतेहैं वैसेमनुष्यादिकभीस्वभावसे उत्पन्नहोतेहैं नपूर्वापरजन्म नकर्म औरनउनकासंस्कार किन्तु जैसे जलमेंफेन तरंग और बुद्बुदादिक अपने आपसे उत्पन्नहोतेहैं वैसेभूतोंसे शरीरभीउत्पन्नहोताहै उसमें जीवभी स्वभावसेउत्पन्नहोताहै उत्तर नसाध्यसमत्वात् २ गो० जैसेशरीरकीउत्पत्ति कर्मसंस्कारकेबिना सिद्धमानतेहो वैसेबालुकादिक

को उत्पत्तिसिद्धकरो वालुकादिकोंके पृथिव्यादिकप्रत्यक्ष निमित्त और कारणहै वैसे पृथिव्यादिक स्थूलभूतोंका कारणभी सूक्ष्ममानना होगा ऐसे अनवस्थादोषभी आजायगा और साध्य समहेत्वाभास केनांई यह कथनहोगा और इससे देहोत्पत्तिमें निमित्तान्तरअवश्यतुमको माननाचाहिये नोत्पत्तिनिमित्तत्वान्माता पित्रोः ३ गो० यह नास्तिकका अपने पक्षकासमाधानहै कि शरीरकी उत्पत्तिका निमित्त माताऔर पिताहैं जिनसेकि शरीर उत्पन्नहोताहै और वालुकादिक निर्बीज उत्पन्नहोतेहैं इससे साध्यसम दोषहमारेपक्षमे नहीआता क्योंकि मातापिता खानापीनाकर्त्ते हैं उससे वीर्य बीजशरीरका होजयागा उत्तर प्राप्तौचानियमात् ४ गो० ऐसातुम मतकहो क्योंकि इसकानियमनहो माताऔरपिताका संयोगहोताहै और वीर्यभी होताहै तोभीसर्वत्र पुत्रोत्पत्तिनहीदेखनेमेआती इससे यहजोआपका कहानियमसो भङ्गहोगया इत्यादिकनास्तिक केखण्डनसें न्यायदर्शनमेंलिखाहै जोदेखाचाहै सो देखले दूसरे नास्तिकका ऐसामतहै किअभावाद्भावोत्पत्तिर्नानुपमृद्यप्रादुर्भावात् ५ गो० अभाव अर्थात्असत्यसे जगत् कीउत्पत्ति होतीहै क्योंकि जैसेबीजका नाशकरके अङ्कुर उत्पन्नहोताहै वैसे जगत् कीउत्पत्तिहोतीहै उत्तर व्याघातादप्रयोगः ६ गो० यहतुमाराकहना अयुक्तहै क्योंकि व्याघातकेहोनेसे जिसकामर्द्दनहोताहै बोजकेऊपरभागका यहप्रकटनहीहोता औरजोअङ्कुरप्रकटहोताहैं उसकामर्द्दननहीहोता इससे यहकहना आपकामिथ्या है तीसरानास्तिक कामत ऐसाहै ईश्वरःकारणं पुरुषकर्माफल्यदर्शनात ७ गो० जीवजितना कर्मकर्ताहै उसकाफल ईश्वरदेता है जो ईश्वरकर्मफल नदेतातोकर्मकाफलकभीनहोता क्योंकिजिसकर्मकाफल ईश्वर देताहै उसकातोहोताहै और जिसकानही देता उसकानहीहोता इससे ईश्वर कर्मकाफल देनेमेंकारणहै उत्तर पुरुषकर्माभावफलानिष्पत्तेः ८ गो० जोकर्मफलदेनेमेंईश्व-

र कारणहोता तो पुरुषकर्मकर्त्ता तोभोईश्वर फलदेता सो बि-
नाकर्म करनेसे जीवकोफलनहि देता इस्से क्याजानाजाताहै कि
जोजीव कर्मजैसाकर्त्ताहै वैसा फल आपहोप्राप्तहोताहै इस्से ऐ-
साकहनाव्यर्थहै फिरभीवह अपनेपक्षको स्थापनकरने केवास्ते क
हताहै कि तत कारितत्वादहेतुः ९ गो० ईश्वरही कर्मका फल
औरकर्मकरानेमें कारणहै जैसा कर्मकराताहै वैसा जीवकर्त्ताहै
अन्यथानहीं उत्तर जोईश्वकराता तोपापक्योंकराता और ईश्व-
रके सत्यसंकल्पके होनेसे जोजिव जैसाचाहता वैसाहीहोजाता
और ईश्वर पापकर्मकराके फिर जीवकोदण्डदेता तोईश्वरकोभी
जीवसेअधिक अपराधहोता उसअपराधका फलजो दुःखसो ईश्व
रकोभीहोनाचाहिये और केवल छली कपटी औरपापोंके करा-
नेसे पापीहोजाता इस्से ऐसा कभी कहनाचाहिये किईश्वर करा
ताहै चौथे नास्तिकका ऐसामतहै कि अनिमित्ततो भावोत्प
त्तिः कण्टकतैक्ष्ण्यादिदर्शनात् १० गो० निमित्तके बिनापदार्थों
की उत्पत्तिहोतीहै क्योंकिवृक्षमें कांटहोतेहैंवेभीनिमित्तकेबिना
ही तीक्ष्णहोतेहैं कण्टकोंकी तीक्ष्णता पर्वतधातुओंको चित्रता
पाषाणोंकोचिक्कनता जैसे निमित्त देखनेमेआतीहै वैसेहीशरीरा
दिकसंसारको उत्पत्तिकर्त्ता केबिनाहोतीहै इसका कर्त्ताकोईनही
उत्तर अनिमित्त अनिमित्तत्वान्ना निमित्ततः ११ गो० बिननि-
मित्तके सृष्टिहोतीहै ऐसामतकहो क्योंकि जिस्से जो उत्पन्नहोता
है वहीउसका निमित्तहै वृक्ष पर्वत पृथिव्यादिक उनके निमित्त-
जाननाचाहिये वैसेही पृथिव्यादिककी उत्पत्तिकानिमित्तपरमेश्व
रहीहै इस्से तुमारा कहनामिथ्याहै पांचवे नास्तिकका ऐसाम
तहै कि सर्वमनित्य मुत्पत्ति विनाशधर्मकत्वात् १२ गो० सबजगत्
अनित्यहै क्योंकि सबकीउत्पत्ति और विनाशदेखनेमें आताहैजो
उत्पत्ति धर्मवालाहै सो अनुत्पन्न नहीहोता जो अविनाशधर्मवा
लाहै सो विनाशी कभीनहीहोता आकाशादिभूत शरीर पर्यन्त

स्थूलजितना जगत है और बुद्ध्यादि सूक्ष्म जितना जगत् है सो सब अनित्य ही जानना चाहिये उत्तर नानित्यता नित्यत्वात् १३ गो० सब अनित्य नहीं हैं क्योंकि सबकी अनित्यता जो नित्य होगी तो उसके नित्य होने से सब अनित्य नहीं भया और जो अनित्यता अनित्य होगी तो उसके अनित्य होने से सब जगत नित्य भया इससे सब अनित्य है है ऐसा जो आपका कहना सो अयुक्त है फिर भी वह अपने मत को स्थापन करने लगा तदनित्यत्वमग्नेर्दाह्यं विनाश्यानु विनाशवत् १४ गो० वह जो हमने अनित्यता जगत् की कही सो भी अनित्य है क्योंकि जैसे अग्नि काष्ठादिक का नाश करके अपने भी नष्ट हो जाता है वैसे जगत् को अनित्य करके आप भी अनित्यता नष्ट हो जाती है उत्तर नित्यस्याप्रत्याख्यानं यथोपलब्धिव्यवस्थानात् १५ गो० नित्य का प्रत्याख्यान अर्थात् निषेध कभी नहीं हो सक्ता क्योंकि जिसकी उपलब्धि होती है और जो व्यवस्थित पदार्थ है उसकी अनित्यता नहीं हो सक्ती जो नित्य है प्रमाणों से और जो अनित्य सो नित्य २ ही होता है और अनित्य २ ही होता है क्योंकि परम सूक्ष्म कारण जो है सो अनित्य कभी नहीं हो सक्ता और नित्य के गुण भी नित्य हैं तथा जो संयोग से उत्पन्न होता है और संयुक्त के गुण वे सब अनित्य हैं नित्य कभी नहीं हो सक्ते क्योंकि पृथक् पदार्थों का संयोग होता है वे फिर भी पृथक् हो जाते हैं इसमें कुछ संदेह नहीं छःटहा नास्तिक यह है कि सर्वं नित्यं पंचभूतनित्यत्वात् १६ गो० जितना आकाशादिक यह जगत है जो कुछ इन्द्रियों से स्थूल वा सूक्ष्म जान पड़ता है सो सब नित्य ही है पांचभूतों के नित्य होने से क्योंकि पांचभूत नित्य हैं उनसे उत्पन्न भया जो जगत् सो भी नित्य ही होगा उत्तर नोत्पत्तिविनाशकारणोपलब्धेः १७ गो० जिसका उत्पत्तिकारण देख पड़ता है और विनाशकारण वह नित्य कभी नहीं हो सक्ता इत्यादिक समाधान न्यायदर्शन में लिखे हैं सो देख लेना सातवां नास्तिक का मत यह है कि सर्वं पृथक् भाव लक्षणपृथक्त्वात् १८ गो० सब पदार्थ जगत् में पृथ-

होहैं क्योंकि घटपटादिक पदार्थोंकेपृथक् २ चिन्हदेखपडते
हैं सबवस्तु पृथक् २ होहैं एकनहीं उत्तर नास्तिकजन औरक
हतेहैं: १९ गो० यहबात आपकीअयुक्तहै क्योंकि घडेमें
अनेक गुण है और मुख आदिक घडेके अवयव भी अनेक प-
रंतु उसमें एक पदार्थ युक्त प्रत्यक्ष देख पड़ता हैं इससे सबपदार्थ पृ-
थक् २ हैं ऐसाजो कहनासो आपका व्यर्थहै अठवां नास्तिकका
कहना है कि सर्वमभावाभाव व्यितरेतराभवसिद्धे: २० गो० या-
जगतहै सोसब अभावहीहै क्योंकि घडेमें वस्त्रकाअभाव और
वस्त्रमें घडेका अभाव तथा गायमें घोडेका और घोडेमें गायकाअ-
भावहै इससे सबअभावहीहै उत्तर नस्वभावसिद्धे भावानाम् २१
गो० सबअभाव नहींहै क्योंकि अपनेमें अपना अभाव कभीनहीं
होता जैसे घडेमें घडेका और घोडेमें घोडेका अभाव नहीं होता
और जो अभावहोता तो उसकीप्राप्ति और उससे व्यवहार सि-
द्धभी नहीं होतो इससे सबअभावहै ऐसाजोकहनासो व्यर्थहै क्यों-
कि आपहीअभावहो फिर आपकहते और सुनतेहो सो कैसेबन
सकता कभीनहींबनता ऐसे २ वादविवाद मिथ्याजेकर्त्ते हैं वेना-
स्तिक गिनेजातेहैं सोजैनसंप्रदायमें अथवा किसीसंप्रदायमेंऐसा-
वाला पुरुषहोयउसको नास्तिकहीजानलेना जैनलोगोंमेंप्रा-
यइसप्रकारकेवादहैं वेसबमिथ्याही सज्जनोंको जानना चाहिये य
जैनकीपत्नी अग्निकेगिरनेको पकडै यहबात मिथ्याहै तथा संसारमें
राजाहै सोईपरमेश्वरहै यहभीबात उनकीमिथ्याहै क्योंकिमनु-
ष्यपरमेश्वर कभीहोसक्ताहै धर्मकोबडानसमझना और अर्थत-
थाकामकोही उत्तमसमझनायहभीउनकीबात मिथ्याहै इत्यादिक
बात उनकेमतमें मिथ्या २ कल्पना है उनको सज्जन लोगक भीनमानैं

इतिश्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिकृतेसत्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते द्वादशः समुल्लासः संपूर्णः ॥ १२ ॥


इति



